

- (१३) भोग, तम्बाकू, धर्फीम पोख, गोंजा, चरस, सुल्फा आदि नशों से तथा मास मलिन जूआ आदि सर्व व्यसनों से रहित होना । और व्यसनी व घुरे पुरुषों की संगति से बचना ।
- (१४) बाग्याडंबर में रत न हो शुद्ध अथवा सात्विकी रंग रंजित वस्त्र धारण करना और हर समय ईश्वर को याद करते रहना ।
- (१५) भ्रमात्मक मीठता में न पड़ कर सहस्रद्वारा प्राप्त वेदानुकूल सत्य का अनुसरण करना ।

(गुरुवाणीसे उद्धृत)

फल तरुतें तूटों पड़ै यधै न बिलगे जाय ।
 गुरुवेमुख नहिं नीपजै, भावै गोविन्द गाय ॥ १ ॥
 गुरुधर्म सिखका किया, गुरुका किया न मान ।
 जनहरिया गुरुधमको, इसे बारसे जान ॥ २ ॥
 हरिया करणी क्या करै, गुरुसे वेमुख धाय ।
 तोरे तूटी घरत ज्यों, खपडखत्त को जाय ॥ ३ ॥

(गीहति. वाक्यम्)

तुम सहस्र मैं शिष्य हों, मेरा किया न होय ।
 सघर देख शरणो लियो, भव डर डारो खोय ॥ ४ ॥
 (धीराम वाक्यम्)

के दिन वीतां कह्यो मोर भोपो हुय भाई ।
 नहिँतौ सान्यो करौ गुसाईं मना न लाई ॥
 तब विकल चित्त सुधि नहिँ तन पीपाइ भ्रमतो आपन्यो ।
 प्रेमदास सतसंगते देवपुरीको दुख टन्यो ॥ २ ॥
 नित नेम हजुरी महन्त गुरु, देह लग तिनके संग रह्यो ।
 प्रेमदास ता प्रती पूछ सव कह्यो राम भज ।
 देवपुरी दड़ धार राम मुख रख्यो रात मँझ ॥
 भैरव दूरे हृत क्रोध कर बहुत इराये ।
 राम टेक विश्वास धार गुरु दरशन आये ॥
 गुरु रामदास महाराजकी ले दीक्षा आनन्द भयो ।
 नित नेम हजुरी महन्त गुरु देह लग तिनके संग रह्यो ॥ ३ ॥

छन्द मनहर ।

राजगुरु पुरोहित नाम सगरामदास ।
 ईडरके मध्यवास साधुसंग भयो है ॥
 देवी देव मात त्याग साचो राम इष्ट जान ।
 सत्तगुरु रामदास शरण आन लयो है ॥
 राजा शिवसिंह कहै पूज तमें बेचरा की ।
 छोड़दई ताको फल अबी पाय गयो है ॥
 आत रामसिंह हू की वधू स्थानगत हुई ।
 साधु शोभाराम पास दुःख सवे कयो है ॥ १ ॥
 तवै साधु कह्यो एम भास एक मध्य खेम ।
 धरो प्रण प्रीति नेम गुरु साच आनियो ॥
 ताहीदिन रामसिंह लियो खण मिष्टहू को ।
 जाऊँ रामधाम तवै पाऊँ एम जानियो ॥
 एक दिन भूलचूक वटत प्रसाद साथ ।
 लेतही शयन माँझ गैव छड़ी हानियो ॥
 बोल कह्यो मूढ तुम किरी चूक गयो अहो ।
 ऊठ के किवाड़ देखे जळ्यो हाथ जानियो ॥ २ ॥
 दोहा ।

भास दिवस आयो जवै, शुद्ध भई ता नार ।
 फिर गुरुदर्शन आयके, लह्या दर्श सुखसार ॥ १ ॥
 दास सगराम जु भक्तिभल, गुर्जर वधी सर्वोय ।
 अनता जीव चेतायके, मिले मोक्षके माँय ॥ २ ॥

वाणी-विषय-सूची ।

(प्रथमपरिच्छेदः)

	पृष्ठ		पृष्ठ
श्रीरामानन्दजी महाराजकी अनुभववाणी.	४४	१ प्राणायामवर्णन.	९७
श्रीजैमलदासजी महाराजकी अनुभववाणी.	४६	१० पूरक कुंभक रेचक लक्षणवर्णन.	१०
श्रीहरिरामदासजी महाराजकी अनुभववाणी.	५०	११ घ्राटक ध्यानवर्णन.	९८
१ ब्रह्मस्तुति.	५१	१२ सुपुष्पावर्णन.	१०१
२ श्रीगुरुदेवजीको अंग.	५५	१३ जालन्धराश्विनवर्णन.	१०२
३ गुरुशिष्यको प्रसंग.	५६	१४ भैरवगुफावर्णन.	१०३
४ उपदेशको अंग.	५८	१५ पट्टचक्रवर्णन.	१०६
५ ज्ञानसंयोगविरहको अंग.	६०	१६ सहस्रदलकमलवर्णन.	१०८
६ परचेको अंग.	६३	१७ नाड़ीवर्णन.	१०९
७ चैतावनीको अंग.	७१	१८ कुंडलिनीनाड़ीवर्णन.	११०
८ ज्ञानविचारको अंग.	७२	१९ कुंडलिनी जाग्रतके कई उपाय वर्णन.	१११
९ शून्यसरोवरको अंग.	७३	२० ब्रह्मप्रन्धिआदि प्रन्धियाँ वर्णन.	११२
१० मायाब्रह्मनिर्णयको अंग.	७५	२१ शून्यसरोवरवर्णन.	११३
११ वेदको अंग.	७६	२२ नादकी आरम्भादि चार अवस्था वर्णन.	११४
१२ भ्रमनिश्चयको प्रसंग.	७७	२३ पुरुषाधारवर्णन.	११५
१३ निर्गुणको प्रसंग.	७८	२४ द्विलक्ष्यवर्णन.	११६
१४ ब्रह्मसमाधिको प्रसंग.	८२	२५ व्योमपंचकवर्णन.	११७
१५ ग्रंथ-निसाणी.	८३	२६ अनहदनाद तथा याजाओंका वर्णन.	११८
१ सद्गुरुलक्षणवर्णन.	८४	२७ ध्यानवर्णन.	११९
२ सारशब्दवर्णन.	८५	२८ पूर्व पश्चिम मार्गवर्णन.	१२०
३ श्रुतिस्मृत्यादिप्रमाणद्वारा रामनामस्मरणवर्णन.	८६	२९ आसनवर्णन.	१२१
४ रसनासे रामनामस्मरणवर्णन.	८७	३० विशेषपत्तेन सिद्धासनवर्णन.	१२२
५ स्मरणस्थान व भेदवर्णन.	८८	३१ पंचमुद्रावर्णन.	१२३
६ छुट्टमवेद वर्णन.	८९	३२ समाधिबर्णन.	१२४
७ ओंकारं सोढे अर्थात् हंसः सोढे नामक अजपागायत्रीवर्णन.	९०	३३ पुनः संक्षेपपत्तेन योगके वाधांगवर्णन.	१२५
८ अध्यामवर्णन.	९१	३४ त्रिकुटिवर्णन.	१२६
		३५ लयावस्थावर्णन.	१२७
		३६ जीवनमुक्तिवर्णन.	१२८

नापरमात्मासे यही प्रार्थना है कि कठिन कुटिल कलिकालकी कुचालसे अनामान्त हमारे इस रामखेहधर्मको सिंहयल सैढापेके आचार्य अपनी छत्रछायामें प्रथमतः जिसप्रकार सुरक्षित रखते आएहैं उसीप्रकार पुनरपि रखतेहुए सुखी समृद्धिशाली और चिरंजीवी होवें ।

इन गुरुधामठिकानोंमें साधुसेवा, शिष्टाचार, सद्धर्मोपदेश, विद्याध्ययन, अतिथिसत्कार, अनाथोंका पालन, रोगियोंको औषधिप्रदान, गरीबोंको सदावर्त, गौरक्षा, पक्षियोंको चूण आदिके प्रबंधकी परंपरासे जैसी मर्यादा चली आरही है और उदारबुद्धिसे जिसका पालन हो रहा है इसी प्रकार प्रभु सदाकाल इसको निभाते रहें ।

शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिस्तु ।

विनीत
राम नारायण वैद्य.

	पृष्ठ		पृष्ठ
३७ योगारूपा महास्वर्णन	१२५	११ मद्भाष्यताको अंग	१९६
३८ परब्रह्मवर्णन	१२५	१२ प्रथम गुरुमहिमा	१९७
३९ गुरुदेवका परमात्मप्रवर्णन	१२६	१३ प्रथम भक्तमाल	२०१
४० प्रथमकी समाप्तिमें अमेद		१४ अन्य ब्रह्मजिज्ञासा	२१२
दृष्टिसे इश्वरप्रार्थना	१२७	१५ रेखता	२१५
१६ प्रथम नाम परचा	१२८	१६ पद	२१६
१७ प्रथम पदवत्तीसी	१३४	श्रीसुन्दर साखी	२२१
१८ प्रथम प्रश्नोत्तर	१३६	श्रीदयानुदासजी महाराजकी	
१९ रेखता, छंद, सवैया,		अनुभववाणी	२२२
कवित्त	१३७	१ ब्रह्मस्तुति	"
२० पद	१४१	२ गुरुखोजमन	२१४
श्रीनारायणदासजी महाराज		३ सिंहायउग्राम महिमा	२१६
की अनुभववाणी		४ सिंहायलघामहमहिमा	,
१ साख	१६४	५ श्रीहरिरामदासजी महाराजके	
२ प्रथम चैतावनी		नामकी महिमा	,
३ प्रथम प्राणपरचा	१६९	६ श्रीहरिरामदासजी महाराजकी	
श्रीहरदेवदासजी महाराज		महिमाका अष्टक	२२७
की अनुभववाणी	१७३	७ उभयगुरुमहिमाष्टक	२२८
१ ब्रह्मस्तुति		८ श्रीरामदासजी महाराजकी	
२ गुरुस्तुति	१७५	महिमा	२२९
३ प्रथम करणानिधान	१७६	९ गुरुअष्टक	२३०
४ प्रथम प्रश्नोत्तर	१७९	१० पुनः गुरुअष्टक	२३१
५ प्रथम आत्मकृत	१८०	११ साधुको अंग	२३२
(द्वितीयपरिच्छेद)		१२ साधु महिमाको अंग	२३३
श्रीरामदासजी महाराजकी		१३ साधु दर्शन साहाय्यको अंग	२३७
अनुभववाणी	१८५	१४ सुखगामी आख्यान	२३८
१ खोजमन	,	१५ भक्तिभावको अंग	२३९
२ गुरुदेवको अंग	,	१६ टेकको अंग	२४१
३ गुरुद्वन्द्वको अंग	१८८	१७ चैतावनीको अंग	२४३
४ गुरुधर्मको अंग	१८९	१८ काल चैतावनीको अंग	२४६
५ सुमरणको अंग		१९ पद	२४८
६ विरहको अंग	१९१	२० प्रथम करणसागर	२५६
७ मनमृतकको अंग	१९३	२१ प्रथम प्रणवबोध	२६७
८ सुन्मार्गको अंग	१९४	२२ रत्नावलीखी	२७०
९ पिउपद्विचानको अंग	१९५		
१० शब्दको अंग	"	१ करणसागरमें ५२ कथाएँ और २	
		दृष्टांत हैं ।	

श्रीहरि० पद

राग कैदारो ।

पद ३१

रहियै राम रंग में डूब चंगा राखि तन मन खूब ॥ टेक ॥
 साँचा पीला लाल सपेता केता रंग लगाया ।
 जबलग राम रंग नहीं लगा उड़ताँ वार न लाया ॥ १ ॥
 सिरपर सांग पहिरि भयो स्वामी छापा तिलक बणाय ।
 जबलग हरि की भक्ति न जानी संग दुनी के जाय ॥ २ ॥
 करि करता पूजै छत्रिम कूं हेत घणै हितकार ।
 जबलग प्रेम पियास न हरिका मोह्या मोह विकार ॥ ३ ॥
 वेद कथा बहु करत उचारा अनुभव ज्ञान सुणाय ।
 जबलग आपा खोजत नाही भूलो और भुलाय ॥ ४ ॥
 बाजा राग छतीसूं सा रे करि तणतण तांत बजाय ।
 जब अंतर अनुराग न उपज्यो गाय भाँवै मत गाय ॥ ५ ॥
 जन हरिराम रची है रंगत करि करि अधिकी ख्याँति ।
 प्रेम पास दे रंगी पिछोरी लगै न दूजी भाँति ॥ ६ ॥

पद ३२

रहियै नाम में गलतान नहि तो जाहिंगो निसतान ॥ टेक ॥
 माथि छंदर मेढ दुबध्या धारि अधरा ध्यान ।
 होइ तन मन माहि परचा दाखिया गुर ज्ञान ॥ १ ॥
 शब्द कुहाड़ी खड़ साँसो सुकत करि किरसान ।
 नाम निज कण बहुत नैपै भूख दुःख नसान ॥ २ ॥
 मन पवना मिल लियो लाटो लिखर आई साख ।
 ज्ञान की भरि गुण गाढी लदे वालद लाख ॥ ३ ॥
 तख ताँडै तणो नायक जाय समदाँ पार ।
 हरिरामां जब आय बैठा आर भार उतार ॥ ४ ॥

पद ३३

जिदरिया जाहिंगी रहता है हरिनाम ॥ टेक ॥
 जिद थकी नहि जाणियो प्राण आपणो पीव ।
 ओथ पड़ै करु पारकै जम लेजासी जीव ॥ १ ॥
 बालपणै नहि जाणियो भर जीवनमें काम ।
 तन तरुणा वृद्धा भयो तोइ न चेतै राम ॥ २ ॥

कालो । २ एक प्रकार का निरुद्ध लोहा ।

	पृष्ठ		पृष्ठ
श्रीपूरणदासजी महाराजकी अनुभववाणी.	३०७	श्रीकवीर साहवकी अनुभव-वाणी रेखता.	३७८
१ छन्द चित्तलोल.	३०७	श्रीनामदेवजी महाराजके अनुभव पद.	३८३
२ ग्रन्थ-जन्मलीला.	३०	श्रीरैदासजी महाराजके अनुभव पद.	३८५
श्रीअर्जुनदासजी महाराजकी अनुभववाणी.	३०९	मंत्रद्वारा कठीधारणदंडवतादिविधान	३८९
१ ग्रन्थ-पूर्वजन्म.	३०९	(संग्रह-सार)	
२ ग्रन्थ-परचीसार.	१६	निर्गुणभजनमाला.	१
श्रीपरसरामजी महाराजकी अनुभववाणी.	३१३	विनयवैराग्योपदेशमंजरी	५५
श्रीसेवगरामजी महाराजकी अनुभववाणी.	३१५	चौरासी बोल.	८६
(तृतीयपरिच्छेदः)		विविध पुष्पगुच्छ.	९६
रामरक्षाएँ.	३१६	उपयोगी अनुकमणिका	१०४
आरतीएँ.	३२२	नादगृक्ष (वंशगृक्ष)	
श्रीहरिरामदासजी महाराज की परची	३२४	१ अज्ञात वश कोई टहनी हट गई हो तो अपराध क्षमा करें ।	

राग रागनियें गाने का समय ।

(चार बजे से सूर्योदक तक)

विभास, जोनिया, ललित, कालिंगडा, भैरव ।

(सूर्योदय से १० बजे तक)

आसावरी, टोही, भैरवी, विलावल ।

(दिनके ११ से २ बजे तक)

सूहासुधराई, सारंग, भीमपलासी, जिंशोटी ।

(दिनके ३ बजे से सूर्यास्त तक)

जयश्री (जैतश्री) धनाश्री, पीलू, पूरवी, पूरिया, पहाड़ी, गौड़ी ।

(सूर्यास्त से लेके रात्रि के १० बजे तक)

कल्याण, इमनकल्याण, केदारा, हमीर, खम्बायच, पहाड़, नट,

छायानट, भोपाली ।

(रात्रि के १० बजे से १२ बजे तक)

जैजैवन्ती, कान्हड़ा, माढ, गिरनारी, देश, सोरठ, विहाग, मारु ।

(रात्रि के १२ बजे से ४ बजे तक)

मालकोंस, सोहनी, परज ।

नोट—परिचय १३ पृष्ठके लाइन २२ मे (शासनी और खुदव) के स्थानमें संभव और खुदवह पाठ जानना । इस पुस्तकमें समस्त पद ३०० हैं ।

अथ प्रश्नोत्तर ।

चौपाई ।

निधल	कहा	ब्रह्म गुरा सोई ।	चचल	कहा	माया है भाई ॥
जीवन	कहा	सुजग भल जानो ।	मृतक	कहा	अपयगहि वरानो ॥ १ ॥
जार्ग	कौन	मिचेनी होई ।	सोवै	कौन	मूडमति सोई ॥
बडा	कौन	जरणा उरपेरो ।	दाना	कौन	सत्यगुरु देखो ॥ २ ॥
गहियै	कहा	वचन गुरुमानो ।	तजियै	कहा	विकर्म अजानो ॥
सहुरु	कौन	तल के वेता ।	धन्य	कौन	ब्रह्म निज हेता ॥ ३ ॥
बुधिवत	कौन	जोनिसे टारै ।	मोक्ष	कहा	निजज्ञान विचारै ॥
जानै	कहा	साख्य विधिसारी ।	सार्ध	कहा	मन पवन विचारी ॥ ४ ॥
शुचिहै	कौन	दमन दुंश्या सो ।	पंडित	कौन	विचारै नीको ॥
कौन	विचारै	निल अनिल ।	विपमु	कहा	गुरु निन्दा चित्त ॥ ५ ॥
कृतघ्न	कौन	प्रीतिही चोरै ।	नदी	कहा	तृष्णा गहु बोरे ॥
सार	कहा	चित शुद्ध विचारै ।	वचन	कहा	सत वचन उचारै ॥ ६ ॥
अव	कौन	अति क्रोध अनीता ।	सूर	कौन	मनसे जुध जीता ॥
सुनै	कहा	हरिगुन उपदेश ।	पीयै	कहा	प्रेम रस वैश ॥ ७ ॥
जिह्वरस	कहा	वचन सुध भासै ।	दान	कहा	ज्ञानागुण दासै ॥
शीतल	कहा	हिरदे सन्तोष ।	तप्त	कहा	आहूँ अतिदोष ॥ ८ ॥
सुखी	कौन	जग वाछा तजै ।	दुखी	कौन	भव बन्धन भजै ॥
अधिर	कहा	धन जोवन जानो ।	गरवा	कौन	सन्त सो मानो ॥ ९ ॥
नरक	कहा	गर्भवास सोई ।	वन्धन	कहा	पराधिन होई ॥
सुखि	कहा	स्वाधीन अदोष ।	भूषण	कहा	शील सन्तोष ॥ १० ॥
करिथै	कहा	सत्सगति सोई ।	सन्त	कौन	उपकारी होई ॥
मित्र	कौन	अशुभते टारै ।	वैरी	कौन	बालस ठग मारै ॥ ११ ॥
बुरा	कौन	हरि विमुख विराम ।	चिन्ता	कहा	चिन्तवन साम ॥
निदियै	कहा	मिथ्या ससार ।	बंदिथै	कहा	सन्तजन सार ॥ १२ ॥
दुर्लभ	कहा	प्रीति निरवाय ।	सुमारियै	कहा	राम निज राय ॥
विसरियै	कहा	पर अगुण सोई ।	पापमूल	कहा	लोमहि होई ॥ १३ ॥
दुःखमूल	कहा	मूर्ख से प्रीति ।	तीर्थ	कहा	सत्सगति नीत ॥
शुभहि	कहा	सबसे मित्राई ।	धन्य	कहा	हरिनाम सदाई ॥ १४ ॥
पडियै	कहा	भगवन्त वाच ।	सुनियै	कहा	हरि कथा सु सच ॥
जीतिय	कहा	लोभ अरु मोह ।	सोभ	कहा	हरि भजन अदोह ॥ १५ ॥
उरसो	कहा	कालको मानो ।	तपभय	कहा	विषय सो जानो ॥
बश	कहा	कीजै मन मतवारो ।	नीठो	कहा	जग चाह विचारो ॥ १६ ॥

सहस्र विन अजपा नहिं जाणै । रोम रोम रस किसविधि माणै ।
 सहस्र विना वंश नहिं पीवै । कैसे मिलकर जुगजुग जीवै ॥ १२ ॥
 सहस्र विना पंच नहिं उलटै । काग वंश कहु किसविधि पलटै ।
 सहस्र विना अधः नहिं जाणै । ऊर्ध्व कमल कहै किसविधि माणै ॥ १३ ॥
 सहस्र विना मेख नहिं छेदै । आकाश कमल कहु किसविधि भेदै ।
 सहस्र विन अनहद नहिं वावै । त्रिवेणी तट कैसे न्हावै ॥ १४ ॥
 सहस्र विना लिख नहिं लागै । ब्रह्मजोति कहु किसविधि जाणै ।
 सहस्र विन दशमा नहिं जाणै । सहज समाधि किसीविधि माणै ॥ १५ ॥

साखी

सहस्र विन सुधि ना लहै, कोटिक करो उपाय ।
 रामदास सहस्र विना, सब जग जमपुर जाय ॥ १ ॥

चौपाई ।

कोटि कोटि बहु ज्ञान दिढावै । कोटि कोटि धुन ध्यान लगावै ।
 कोटि कोटि बहु देव अराधै । कोटि कोटि किरिया जो साधै ।
 तोहि गुरु गोविंद विन मुक्ति न जावै । सतगुरु विना काल सब खावै ॥ १ ॥
 कोटि कोटि तीरथ फिर आवै । कोटि कोटि असनान करावै ।
 कोटिइक दै पृथ्वी परदखिणा । निज नाम विन प्रेम न चखणा ॥ २ ॥ तो० ।
 कोटि कोटि बहु तुलाविसावै । सोना रूपा दान दिरावै ।
 और द्रव्य बहुतेरा देवै । सहस्र नाम निशीदिनलेवै ॥ ३ ॥ तोहि० ।
 कोटि कोटि जिग होम करावै । कोटिक ब्राह्मण नोति जिमावै ।
 कोटिक गउवाँ दान दिरावै । कोटि कोटि बहु हेत लगावै ॥ ४ ॥ तोहि० ।
 धर्म करै कन्या परणावै । दत्त दायजो कोटि दिरावै ।
 कोटि कोटि कन्या फल लेवै । सर्व भेष कुँ बहु धन देवै ॥ ५ ॥ तोहि० ।
 कोटि कोटि जत सत्त कमावै । कोटिक तपस्या तप्प करावै ।
 कोटिक घरत करै बहुतेरा । पोत पहर लूटावत डेरा ॥ ६ ॥ तोहि० ।
 कोटि कोटि ऋषि सिद्धि कमावै । कोटि कोटि भंडार भरावै ।
 सदावरत बहुतेरा देवै । कानगुरुकुँ निशिदिन सेवै ॥ ७ ॥ तोहि० ।
 कोटिक कहत कहत बहु कहणी । कोटिक रहत रहत बहु रहणी ।
 रेचक कुंभक जोगजु साजै । ताटक ध्यान धरै मन छाजै ॥ ८ ॥ तोहि० ।
 कोटि कोटि उडता बहु गडिता । कोटिक पढ़या होय जो पंडिता ।
 कोटिक अगम निगम की सूझै । कोटि कोटि सूर्य हुय जूझै ॥ ९ ॥ तोहि० ।
 कोटि करै बारै पतसाई । नवाँ खंडामें नोबत वाई ।

॥ ॐ नमः श्रीमदाचार्येभ्यः ॥

परिचय

नित्यं शुद्धं निराभासं निराकारं निरंजनम् ॥
नित्यबोधचिदानंदं गुरुं ब्रह्म नमाम्यहम् ॥ १ ॥
यावदायुस्त्रयो वन्द्या वेदान्तो गुरुरीश्वरः ॥
आदौ ज्ञानप्रसिद्ध्यर्थं कृतमत्वापनुत्तये ॥ २ ॥

श्रीसंप्रदायाचार्य श्रीरामानुजस्वामी की २३ वीं पद्धति में श्रीरामानंदस्वामी हुए। और इनकी ११ वीं पद्धति में कोडमदेसर (वीकानेर) के रामानंदी वैष्णव महंत श्रीचरणदासजी महाराज के शिष्य श्रीजैमलदासजी महाराज हुए। आप सांवतसर ग्राम में विराजमान होकर परंपरानुसार वैष्णवधर्म की मूर्तिपूजनादि सगुणोपासना बाल्यावस्था में ही करने लगे। स० १७६० के चौमासे में दोपहरी के समय श्रीगोपालजी के मंदिर में आप श्रीमद्भगवद्गीता की कथा कर रहे थे। उसीसमय परब्रह्मराम पथिक का रूप धारण कर वहां पधारे। और श्रीजैमलदासजी महाराज को सम्बोधन करके कहा “अरे जैतराम! जल ला”। आपने पथिक की ओर देखा तो अलौकिक दिव्यमूर्ति योगिराज दिखाई दिए। आपने झट अलांबु (तूम्बी) पात्र में जल ला हाजर किया। योगिराजने प्रेमदत्त जल पानकर कहा कि भाई! अगले ग्राम जाने का मनोरथ है रास्ता बतावें।

१—संप्रदाय चार हैं:—

१ श्रीसंप्रदाय, २ शिवसंप्रदाय, ३ सनकादिकसंप्रदाय, और ४ ब्रह्मसंप्रदाय।
जिनके चार ही आचार्य हैं।

१ श्रीरामानुजस्वामी, २ श्रीविष्णुस्वामी, ३ श्रीनिम्बार्कस्वामी, ४ श्रीमध्वाचार्य।

रमा पद्धति रामानुज, विष्णुस्वामी त्रिपुरारि।

निम्बादित्य सनकादिका, माधव गुरुमुख चारि ॥ १ ॥

२—वीक्षाके प्रथम का नाम है।

वक्तव्य ।

एकसमय पहाड़ की गुफा में विराजे हुए श्रीदयालुदासजी महाराज भजन कर रहेथे । उससमय देवताओंसे जिद्द कर महाराज को छलनेके लिये एक देवांगना खर्गसे उतरी और हाव भाव कटाक्ष से मोहित करने को अनेक यत्न किये परंतु सारे निष्फल हुए । उसने कहा कि मैं देवताओं से जिद्द करके आई हूं एकवेर नेत्र भरकर मुझे देखतो लै । पर आप नहीं माने । तब देवांगनानें कुपित होकर शाप दिया कि आप असह्य नेत्रों की वेदना से पीडित होवो । यों कह पीछी चली गई । और उसीक्षण आप के नेत्रों में व्यथा शुरु होगई । तो इस कदर हुई कि आप उसे सह नहि सके । अनेक उपचार किये गये किसीसे कुछ भी नहि हुआ और दृष्टिभी नष्ट होगई । तब तो अत्यंत दुःखित होकर जिसके अक्षर अक्षर मैं करुणारस भरा है उस “करुणासागरग्रन्थ” की रचना कर भगवत् को सुनाया । तब तो श्रीराममहाराजने ऐसी आप की करुणा सुनी कि उसीक्षण आप के नेत्र खुल गये और नेत्रों की सारी व्यथा मिट गई । बड़ा भारी परचा हुआ । वह भक्तिप्रधान यही करुणासागर ग्रंथ है जिसका पाठ करनेसे त्रयतापादि अनेक बाधाएँ दूर होजाती है । और आबालवृद्ध राम-खेह धर्मावलंबी साधु सद्गृहस्थ जिसका नित्यंप्रति पाठ करते हैं । अर्थज्ञान सहित पाठ करनेका शास्त्रों में अधिक माहात्म्य लिखा है । इस लिये सर्व साधारण के लाभार्थ करुणासागर की तरणी नामक टीका सेवा में सुसज्जित कीगई है पाठकवृन्द अवगाहन करै ।

इस के निर्माण में रतलामनिवासी श्रीमान् आत्मारामजी महोदय व रामविलासजी महोदयने पूर्णरीति से सहायता दी है जिसका आभारी हूं ।

विनीत—

चतुर्भुजदास वैद्य.

यों कहकर आप खाने होगये और जैमलदासजी महाराज को साथ लेलिये । फिर उनको एकांत में शमी (सेनडी) वृक्षके नीचे ले जाकर कहा “अवधू तुम क्या साधन करते हो ?” जैमलदासजी महाराजने अपना आघोषात साग वृक्षात कह सुनाया । भगवान् ने कहा, इनके करनेसे तुमको कुछ निश्चय हुआ या नहीं ? आपने कहा कि, भगवन् ! आपही बतलायें । तब महापुरुष परब्रह्मराम ने शुद्धान्त करण देख ब्रह्म की प्राप्तिके लिये योग-क्रियामहित मूलतारकमन्त्रका उपदेश दिया । पूननादि सब क्रियाकाड गुडवाकर आप वहीं अतर्धान होगये । इस बात का जैमलदासजी महाराज को बड़ा आश्चर्य हुआ और उनकी चारों ओर बहुत खोज की परन्तु कुछ पता नहीं मिला । फिर आप मंदिरमें पधारे तो भी आपको यही चिन्ता थी कि मुझे कहीं स्वप्न तो नहीं आगया है ! अथवा किसी ने मुझको धोरे से छला है । इस विचारमें उन्होंने ने कुछ न खाया न पिया निराहार ही रहे । निद्रा ना नहीं आये । अर्धरात्रि होगई तब विचार आया कि स्वयम् ईश्वर ही ने ऐसा किया है परन्तु मेरा ऐसा भाग्य कहाँ ? मैंने ऐसा कौनसा जप तप किया है जिससे ऐसा होता । उसी समय आकाशवाणी हुई “हे बालक ! तू मेरी स्तोन में इतना आतुर क्यों हो रहा है ? साक्षात् सच्चिदानन्द अविनाशी पूर्णब्रह्म प्रकाशमान महापुरुष मैंने ही दिव्यरूप धरकर उपदेश और दर्शन दिया है और सत्य २ कहता हूँ, आदि अन्त में तू मेरा ही जन है । सकल विकल्प छोड़ दे । तेरा अन्त-करण शुद्ध होगया है । इसलिये ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिये सगुणउपासना को छोड़ कर ध्यानारसित हो और राम राम रटता हुआ निर्गुण-भक्ति कर” । इस आकाशवाणी को सुनते ही चित्त में शान्ति आगई और भेष पथका सारा झमेला छोड़कर योगाभ्यासपूर्वक राम राम रटण करते हुए योगारूढ होगए । और अलौकिक वैराग्योत्पादक निगुण पद वाणी का वणन किया । दर्शनाथ यात्रियों की भीड़ अधिक रहने से आप मित

१—भेषपथ का संग तज दीया ।

होय निरंतर हरिपद लीया ।

(श्रीराम परबी निराम १)

(अरुणजी की कथा)

(१) जिसपर ईश्वर की कृपा होती है उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है, जैसे सूर्य भगवान् के सारथी अरुण उसकी माता ने जब कि अरुण का अण्डा कच्चा ही था अज्ञान वश पका समझ कर फोड़ दिया उस समय अरुण उसमें से पोंगले निकले । अरुण का विचार हुआ कि क्या मैं भी इस पंगु अवस्थामें कभी पर्वतोंको उछेंघन कर सकुंगा ? पर ईश्वर की कृपा से वह सूर्य का सारथी हुआ और उसकी मनोकामना सिद्ध होगई और भगवान् ने उसे अक्षयलोक का वास दिया ।

एक समय कश्यपजी ने यज्ञ करने के लिये इंद्रादि देवताओं को आज्ञा दी कि, तुम सब मिलकर यज्ञकाष्ठ लाओ तब सब चले, आज्ञा पाकर अशुष्ठ प्रमाण साठ हजार बालखिल्य भी चले । वन में जाकर एक लकड़ी उठा कूदते फादते पीछे आरहेथे इतनेमेंही अकस्मात् रास्तेमें जलसे भरा हुआ एक गऊका खुर आगया उसमें सबके सब साठहजार ही डूबगए, उधर से इंद्र भी आ पहुचा । बालखिल्यों को तलफते हुए देखकर हंसी की । ओहो इनके लिए हुए काष्ठ से ही यज्ञ पूर्ण होगा । यों कह इंद्र तो चलवना । इधर डूबते हुए बालखिल्यों ने भगवान् से प्रार्थना की तब हरि अवतार धार उस खुर समुद्र से उन्हें बाहर निकाले, तब बालखिल्य इंद्र पर कुपित होकर दूसरा इन्द्र बनाने के लिये तपस्या करने लगे और दूसरा इन्द्र बनाही दिया । यह सुन इंद्र सहित कश्यपजी वहा आए और कहा इन्द्र पर क्षमा प्रदान करो, आपका बनाया हुआ इन्द्र पक्षियों का राजा होगा । वस बालखिल्य प्रसन्न हो तपस्या के बलसे दो अडे रच कश्यपजी द्वारा पक्षीमाता विनता को दिलवादिये । तब तो इंद्रादि सब प्रसन्न हो वापिस चले आए । कुछ समय बीतने पर अज्ञान वश माताने कच्चा ही अंडा फोड़ डाला तब उसमें से एक पंगला अरुण नाम का बालक निकला और कहने लगा कि माता ! गजब करदिया । अब दूसरे अंडे को तो पूरा पकने देना जिससे तुमको सुख होगा ऐसा कह अरुण तो भगवान् कृपासे सूर्य का सारथी बन पंगू था तो भी गिरे आदिकों को उछेंघन करता हुआ अंत में अक्षय लोक को प्राप्त होता भया । तथा हजार वर्ष बीतने पर दूसरे अंडे से पक्षिराज गरुड़जी उत्पन्न हुए जो कि भगवान् के वाहन बने । इति ।

(जटायु की कथा)

(२) मरणोन्मुख जटायु जिसको भगवान् रामचंद्रजी के दर्शन की उत्कट इच्छा थी उसको श्रीभगवान् ने अंतकाल में दर्शन दिया और परम धाम का वासी बनाया ॥ ६ ॥

दोहा ।

गोद शीश धरि पितुसखा, जानि कृपाके धाम ।

झारी धूरि जटायु की, निज जटानसे राम ॥ १ ॥

होकर दुलचासर पधार गए। कुए पर एक हजार प्रेत रहतेथे उनकी गति कर आप धोरे (टीवे) पर निवास करने लगे। यहाँ पर भी मीड अधिक होने लगी तब तो आप रोड़े ग्राम में पधार गए। और यहीं संवत् १८१० में पांचभौतिक शरीर को त्यागकर परमधाम पधारे।

भगवद्दर्शनोपदेश से पहले आपके एक रामदासजी नामक शिष्य हुए थे। जो दीक्षा लेते ही अयोध्याजी की तरफ चले गए और आपने जीवन का सारा समय भगवद्भक्ति आदि सगुणोपासना में उधर ही बिताया। वृद्धावस्था होने पर आप दुलचासर पधारे उस समय गुरुदेव तो परमधाम पधार ही चुके थे। फिर आपने यहाँ पर एक ठाकुरमंदिर बनवाया और उनकी सेवा पूजा में लवलीन रहने लगे। अकस्मात् एक-दिन मंदिर के चारे में एक राजपूत से बोल चाल होगई तब केवल मंदिर की सेवा के लिए आपने एक शिष्य को वहाँ छोड़ कर आप रोड़े को मुख्य गुरुस्थान समझकर वही पधारे। और वहाँ भगवन्मंदिर बनवाय भगवत् सेवा में समय व्यतीत किया और दो चार नये शिष्य भी होगए। आपके परलोक पधारनेपर रोड़ा दुलचासर में आपकी दो गद्दी हुई जो अमीतक चली आती हैं और उनके गद्दीघर रामानंदी बैरागियों में (रामावत साधुओं में) महंत कहलाते हैं। गुरुपरंपरा से ये दोनों सिंह-थल के गुरुस्थान हैं और सिंहथल में जब दोनो स्वामीजी महाराजको पधराते हैं तब वधावणा भेट पूजादि क्रम प्राचीन रीतिअनुसार किया जाता है।



(श्रीहरिरामदासजीमहाराज)

बीकानेर राज्यातर्गत सिंहयल नामक ग्रामके ब्राह्मण भाग्यचदजी जोशी के घर आपने शुभनक्षत्र में शरीर धारण किया । पिता ने शास्त्रविहित संपूर्ण सन्कार कराकर शुभनाम श्रीहरिरामदासजी महाराज रक्खा । अत्युन्नत बुद्धि होने से बाल्यावस्था में ही वेदादि शास्त्रों में पारंगत हो गये और गणित (ज्योतिष) विद्या में प्रथमश्रेणी के पंडित गिने जाते थे । पूर्वजन्मोपाजित पुण्यप्रभाव से छोटी अवस्थामें ही योगागों में योग्यता संपादन कर लेने के बाद किसी ब्रह्मनिष्ठगुरुदेवके शरण होने की अभिलाषा प्रगट की तो रामसर ग्राम के उदयरामजी नामक सद्गुरु ने आपको साथ दुल्हासर ग्राम ले जाकर श्रीजैमलदासजी महाराज के दर्शन करवाये । आपने साष्टांग दंडवत प्रणाम पूर्वक विनय की और

१—रामानंद अजानंद कर्मचंद देवाकर ।
 पूरणमालवि शिष्य दामोदरदास उचामर ॥
 नारायण मोहनदास दाम माधव मैदानी ।
 ता शिष्य सुंदरदास चरणनाथ निज शानी ॥
 जिन पैमल प्रगटे नमो हरिरामदास के सर छतन ।
 रामदास वंदन करत पदपङ्कज अनुचर यत्न ॥ १ ॥

२ साष्टांग दंडवत प्रणाम —

दे पुनि पांच प्रदक्षिणा अष्ट अंग परणाम ।
 खापी जैमलदास के, परछे पद हरिराम ॥ १ ॥

३ विनय —

धन्य २ मम भाग आज अनुराम दरस्ते ।
 धन्य २ मम भाग मिले बैराग्यपुरुस्ते ॥
 धन्य २ मम भाग प्रेम अरु क्षेम प्रकाश ।
 धन्य २ मम भाग जाग अब मर्म बिनास ॥
 धन्य आज मम जन्म धन्य तारें तुम दर्शन मयो ।
 आ काज सकल पूछन फिरत सो मनवांछित फल लयो ॥ १ ॥

I चर छिरें दृष्टी चर्चन मैं न पैद कर जानु प्रमान ।

अष्ट अंग हैं होत दै नमस्कार सविधान ॥ १ ॥



Sri Hari Ramdasji Maharaj Achariya
(Singhthal).

नम्रता के साथ श्रीजैमलदासजी महाराज के उपदेश से अपनी शंकाओं का निवारण कर संवत् सत्रहसौ के सईके में आपाठ कृष्णा त्रयोदशी को दीक्षा धारण की । श्रीगुरुदेव ने प्रसन्न हो औशीर्वाद प्रदान किया । बाद आप आज्ञा मांग सिंहथल पधारे । और नियम किया कि सिंहथल से दुलचासर जो ७ कोश है वहांपर संध्या होते ही श्रीगुरुदेवजी के पास चला जाना और रातभर गुरु सत्संगति कर प्रातः सूर्योदय से पहले ही वापिस आजाना इस प्रकार छः मास बीत गये । श्रीगुरुदेव ने आपको कहा कि तुम अब वहीं पर भजन किया करो पर आप माने नहीं तो दश दश दिन का नियम किया । इस के कुछ दिन बाद फिर गुरुदेव ने एक एक मास से आने की आज्ञा दी तो आपने हट करना अनुचित समझ शिरोधार्य की और उसीपर चलते रहे । शिलोच्छवृत्ति से निर्वाह कर भजन करते करते थोड़े ही काल में दशमद्वारसमाधिस्थ पूर्ण योगिराज होगये । और जीवों के परमकल्याणार्थ वेद वेदान्त उप-

छप्पय ।

- १—परा परम को धरम गुरु उर परम गुनायो ।
 दे करमें परसाद राम निज मंत्र सुनायो ॥
 नासा निरतहु सुरति आन घर एक हुयातैं ।
 जोग जुगति की बात कही सब परम कृपातैं ॥
 उर भये जवहु मंगल परम, करम मरम सब कपिया ।
 हरिरामदासकुं परमगुरु, यह उपदेश जु अपिया ॥ १ ॥
 मंत्र सजीवन जास, जो गिरिजाप्रति शिव कथो ।
 श्रीगुरु जैमलदास, (सो) यह उपदेशजु अपियो ॥ १ ॥

कुंडलिया ।

- २—धन्य २ शिषधर्म यह, कहे निगम लछ जेम ।
 परसो भम तुम उरन मध, परा परम जन प्रेम ॥
 परा परम जन प्रेम, नेम नित क्षेम निवासा ।
 बहुत बढै परताप मान, सत वचन सुदासा ॥
 निज हरिजन दिनकर धरनि, गुप्त रहै सो केम ।
 धन्य २ शिषधर्म यह, कहे निगम लछ जेम ॥ १ ॥

निपद योगसारगर्भित अनुभववाणी का प्रकाश किया । आपके सैंकड़ों शिष्य हुए, अनेक परचे हुए, परंतु विस्तारमयसे थोड़ेसे लिखने में आते हैं ।

एकवार आप भजन कर रहे थे कि देवताओं की भेजी हुई एक अप्सरा परीक्षा के लिये आई और आपके पास बैठ गई । ध्यानसे आप की आख खुली तो मालूम हुआ कि छलने के लिये माया आई है तो आपने उसके उलटे हाथों आप मारी और पूर्ववत् ध्यानावस्थित होगये ।

एकवार आपके शिष्य विहारीदासजी महाराज से एक विद्वेपी निष्कारण द्वेष करने लगा तो आप अनुचित समझ वहा से एक कोश दूरी पर नापासर भ्राम भ पधार गये । वहा पर ठाकुर देवीसिंहजी ने भ्रामसहित आपका बहुत स्वागत किया । पीछे से उस पुरुष के तीन पुत्र एकही दिनमें पंचत्व को प्राप्त होगये और अग्नि के प्रकोपसे घर घन सन खाहा होगया तन घनराकर विलाप कलाप करने लगा । लोगोंने उसे समझाया कि यह फल महात्माओं से विद्वेष करनेका है । सारे गाव के लोग डरने लगे । तब तो करणीदानजी ने ढोल बजवाकर पाचों वास इक्के मिये और उस को साथ लेकर नापासर आये और श्रीहरिवानदजी महाराज के चरणों में पड़कर अपराध क्षमा कराकर वापस पधराये ।

बीकानेर शहर के दो वैश्य जिनका नाम नेतराम और मुरलीदास था उन्होंने विचार लिया कि रातही रातमें चलकर सिंहयल श्रीजी महाराज के दर्शन कर आवें । ऐसी सलाह कर घरवाला से कहदिया कि हम लक्ष्मीनाथ भगवान् के दरबारमें ही आज जागरण करेंगे और सिंह-यल का रास्ता लिया । बीकानेर से ९ कोस दूरी होने के कारण अर्धरात्रि को वहां पहुंचे । श्रीमहाराज ध्यानावस्थित हो चुके थे और दीपक रोजनी का कुछ भी प्रकाश नहीं था तो उनके लिये यह बहुत दुःख की बात हुई कि

१—पुत्र युवा अग्नि दुष्ट पत्न्यो छीन भयो घन साज ।

पर छिरणाओ हुयगयो कहा हम कियो अज्ञान ॥ १ ॥

(भीदति. परची)

हम विना दर्शन किये पीछे कैसे जाँय । श्रीजी महाराज ने उनकी ऐसी उत्कट इच्छा जान एक ऐसा दिव्य प्रकाश प्रकट किया कि वे आश्चर्य में भरगये और आपके दर्शन किये और स्तुति की । तब श्री-महाराज ने उनसे फरमाया कि यह सब ईश्वर की माया है इसके विषय में किसीसे कुछ मत कहना । इस आज्ञा को शिरोधार्यकर रातकी रात में वे दोनों पीछे वीकानेर आगये ।

स्वरूपसिंहजी नामक चारट जो दैवयोगसे निर्धन हो गये थे अतः उनके घर चारादि सब गिरवी होगये । जब बहुतही दुःखित होकर आप श्रीजी महाराज के पास आये और अपना सारा वृत्तांत कह सुनाया तब श्रीमहाराज दयार्द्रचित्त हो उनको शिष्य बनाकर लक्ष्मीपान्न बनादिया ।

एकवार सब शिष्यों ने आपके जीवितमहोत्सव (मेला) के लिये संवत् १८३४ चैत्रकृष्णा ७ का निश्चयकर सब को आमंत्रण देदिया । मेले की सारी तय्यारियां होने लगी । अकस्मात् ऐसा हुआ कि आप १५ दिन पहले ही शरीर को छोड़ परलोक पधार गये । शिष्यों को बहुत दुःख और चिंता हुई । उनकी ऐसी स्थिति देख आप भगवान् से एकमास की आज्ञा लेकर पीछे पधारे तब तो सारे काम बड़ी धूमधाम से होने लगे । नियत तिथि पर सारा आमंत्रित समाज एकत्रित होगया । और जिनको पानीका ठेका दिया गयाथा वे पर्याप्त पानी नहीं देसके । इसलिये लोगों को पानी विना बड़ा कष्ट होने लगा । शिष्यों ने ये सारी बातें श्रीगुरुदेव से अर्ज की । आपने फरमाया कि ईश्वर सब इच्छाओं को पूर्ण करेगा । और आप अपनी कुटी में ध्यान लगाकर

१—गायो गुण गोविंद को, पायो द्रव्य अमाप ।

आयो साच स्वरूप के, सतगुरु दयाल प्रताप ॥ १ ॥

(श्रीहरि. परची)

२—कारज करवा कारणे, शरणायक रिछपाल ।

करवाचा करतार सँ, आये यहा दयाल ॥ २ ॥

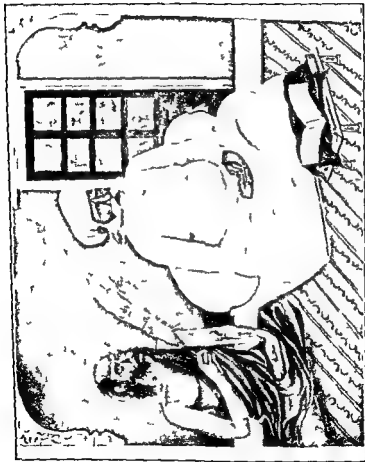
(श्रीहरि. परची)

विराजगये । इसके दो घड़ी बादही उत्तर की तरफ से एक छोटी सी बादली उठी और उसका द्रतना बिस्तार हुआ कि उसने वहा बरस कर पानी ही पानी कर दिया । फिर महोत्सव पाच दिन तक बड़े समारोह के साथ मनाकर सब लोग अपने अपने स्थान को चले गये । तब कई दिन के बाद आप अपनी प्रतिष्ठा को यादकर सबत् १८३५ मिति चैत्रशुक्ला ७ शुक्रवार को तीन पहर पहिले से ही अन्त्येष्टि क्रिया की सारी सामग्री मगवाली । दर्शनाथ हजारों पुरुष इकट्ठे हुए । उस समय बीठू चारणों ने आपकी घड़ी सेवा बनाई । तब आपने जीवनदान चारण को बुलवाया और उसे उठ सनमे कहा । वह जहा जन देवल बने हैं उस स्थानको गया और वहा पर बेरी वृक्ष के पास एक रेत का दूबा जो महोत्सव के पहिले ही से बनाया यह ज्यों का त्यों मिला । और जैसे ही उसके हाथ लगाया इधर श्रीनी महाराज ने इस पंच-मौक्तिक शरीर को त्याग दिया । आपका विमान जो बनाया गया वह बड़ा बनगया । लोगों को चिंता हुई इसको बारणे (दरवाने) में से किस तरह से निकालेंगे । तब पूर्ण विश्वस्त बीठा नामक सुधार ने कहा आपकी गती अपरपार है “कैतो होय बारणो चोडो के बैकुंठ होय जावै सोडो” यों कह विमान बाहर पधराया तो श्रुत बाहर आगया । देवलोके स्थान में पधराकर अगर कपूर घृत रोपरा (गिरी) चंदनादि से आपकी अन्त्येष्टि क्रिया की । चिता ठडी होनेपर नारायणदासजी महाराज की प्रार्थनानुसार अबोट एक नारियल एक गादी और पाच साठ पटल-दर्शनार्थ मिले । और भी ऐसे आपके अनेक परचे हुए ।

भूत ग्रह दुज पीटा पगुल, अध मूक जड़ तीन ।

दृष्टि देखता किये सुम्बारी, पर उपकार प्रचीन ॥ १ ॥





Sri Chet 1 j M baraf
(S g e bar)

(श्रीरामदासजी महाराज)

जोधपुर राज्य के बीकानेर नामक ग्राम में राष्ट्रीय शार्दूलनी के घर में सन् १७८३ फाल्गुण कृष्णा १३ के दिन गुम मुहूर्त में आप प्रगट हुए । आपके जन्मसमयमें बहुत आनन्दोत्सव हुआ । बड़े होनेपर थोड़े काल में विद्या प्राप्त करली और शक्तिरु मत्तापलवा होकर वैराग्य धारण कर जहा सहा निचरने लगे । द्वादश गुरु किये परन्तु चित्त की शक्ति कहीं भी नहीं हुई । ऐसे निचरते विचरते बीकानेर पधारे गये । वहा एक सद्गृहस्थ के मुगसे श्रीहरिरामदासजी महाराजका रेखता सुना । सुनते ही उस गृहस्थसे सारा पता पूछ आप साधे सिंहखल पधारे । और श्रीहरिरामदासजी महाराज के चरणों में पड निनय की कि महाराज ! मैं

१—लेन भक्त प्रथमसुन नामा मुरधरदत्त प्रकट तनु धामा ।

अवनीपति इस ऋषि जगो, अचगुण नाम प्रवट दरसानो ॥

उदय अचूर अनवरत वरदा भयो मुकाद भक्तजन हरपा ।

सादनाम लकार सिधता, धन धन पिता पुन बमता ॥

(श्रीराम परची)

१ रेसता —

अगम अगाध में ज्ञान पोयी पढ्या भरम अज्ञान कू दूर दाम्या ।

नाम निरधार आधार मेरे भया गहर शुम्भान मन मोह माया ॥

तीन चक्र धूर करि चित्त चौधे गया नाभि अध्यान धुवि घम्मकारा ।

सात उरसाय में नास निरभै किया रम रता एक आत्मम मारा ॥

सदज में साम सुमरास ऐसे भडे रोम म रोम रंरकार पागे ।

दास हरिराम गुरुदेव प्रनाथ ते दहकू नीत वेदद लागे ॥ १ ॥

३ छन्दय — भले होण के काज लाज छांदी जगजेरी ।

दठ पन किया अनक तुषा उर भिमी न मेरी ॥

द्वादश गुरु फिर किया किया मत भित्ति स जोड़ ।

मन उदग अपार काज सत्रिया नहि कोड़ ॥

अनुक्रम सिधात कायब अनन व्याप अप्र माछे सरे ।

अनाथ नाथ अगारण शरण महारान हूज आवे ॥ १ ॥

दोहा — अरज हमारी एह निज दुण्डर कगिन तरास ।

लाधा बातों बात इक, वस्यो सवरे नास ॥ १ ॥

(श्रीराम परची)

बहुत जगह भटक लिया और द्वादश गुरु भी करचुका परंतु मुझे सच्चा और पूरण ज्ञान किसी से नहीं मिला । अब मुझको सिवाय आपके कहीं पर भी आश्रय नहीं है अतः कृपाकर इस दास को दीक्षा दीजिये । श्रीजी महाराज ने आपके ओघड रूप को देखकर फरमाया-भाई ! रामखेही ऐसा रूप नहीं रखते हैं । यह सुनते ही आपने सेली, सिंगी, टामण, टूणादि सारे आडंबरों को दूर फेंक दिये । तब श्रीगुरुदेव ने आज्ञा दी कि एक वर्ष के अनंतर तुम शिष्य बनाए जावोगे । तब आपने अधीर होकर प्रतिज्ञा के साथ कहा कि, या तो आप अपना शिष्य बनालें, नहीं तो अन्न और जल परित्याग कर शरीर छोड़दूंगा । यह सुन एक दूसरे शिष्य को परीक्षा लेने के वास्ते आज्ञा दी कि वास्तव में इनकी दीक्षा लेने की सच्ची इच्छा है या नहीं । परंतु सोने को जितना तपाया जाय उतना ही वह उत्तम होता है इसी तरह आपभी कसोटी पर पूर्ण उतरे । तब तो आपको सच्चे जिज्ञासू समझ संवत् १८०९ वैशाख शुक्ला ११ को प्रातःकाल सिद्धियोग में सन्मुख आसन लगवाकर राममंत्रोपदेश दे शिष्य बना लिये । और राममंत्र का प्रभाव भक्ति ज्ञान योग क्रिया सहित भजन की सारी विधि बताकर सदुपदेश दे रामखेहधर्म के संपूर्ण नियम बतलाये । और फरमाया कि इस रामखेह संगत में आजसे तुम्हारा

१—गुरु धर्म मर्यादारीति अनुसार सैडापाके महन्त आज दिनपर्यंत सिंहथल में मन्मुख ही विराजते हैं ।

२—रामदास तोहि नाम सदाई । राम सनेह सगति के मोई ॥ १ ॥

आन सनेह जाल जग झूटा । जामण मरण काल क्रम कूटा ॥ २ ॥

मोह सनेह जन्म धर धरणा । जाति सनेह चौरासी फिरणा ॥ ३ ॥

काम क्रोध के लोभ सनेही । खान पान अन मनू मिलेही ॥ ४ ॥

देह अवस्था प्रकृति सनेहा । कर्म प्रधान सजोग मिलेहा ॥ ५ ॥

पाच पचीस सनेह सनेहा । पाच कोस मध चितवन देहा ॥ ६ ॥

एता नेह तजैरे भाई । एक प्रीति गुरुचरण सभाई ॥ ७ ॥

रामसनेही जाको नामा । हरि गुरु साधु सगति विश्रामा ॥ ८ ॥

श्रीगुरुदेव कृपा भइ भारी । मान लई सिख परा परारी ॥ ९ ॥

(श्रीराम. परची विश्राम ८)

नाम रामदासजी है। ऐसा सुनते ही आप तो कृतकृत्य होगये। श्रीजी महाराज के फरमाए हुए सारे उपदेशों को शिरपर चढ़ा प्रणाम कर आज्ञा ले विनयकर मारवाड में महलागे ग्राम पधारे। लोगों ने एक पण्डुटी बनवा दी तो आप वहीं पर श्वामोच्छ्वास मन्त्र करने लगे। दो मास के अनन्तर कुछ घट चिट्ठ दिखाई दिण और गुरुदर्शन की इच्छा हुई तब तो आप खाने होकर रामनर गाँव जो गुरुधाम से चार कोश है वहीं से पनही परित्याग कर दड़वत प्रणाम करते हुए सिंहथल पधारे और श्रीगुरुदेवजी के चरणारविंदा में पड़कर साष्टांग दड़वत प्रणाम किया और तब गुरु माइयों से मिले। गुरुदेव ने सन्तोषन किया तो आपने और कुछ नहीं कहा। केवल यही कहा कि "परबै नाद हमारे स्वामी"। तब श्रीगुरुदेव ने आज्ञा दी कि अभी तुम भ्रम में हो। दूसरे शिष्यों के साथ तुम्हारी भी परीक्षा ली जायगी। ओर लै गई। उसमें आप सब से पाँछे रहगये। तो आपको इस बात का अत्यन्त रोद हुआ। श्रीगुरुदेव ने आप की ऐसा स्थिति देख फरमाया कि तुम इस बात का क्या दुःख करते हो? तुम्हारी भक्ति मेरे प्रति सबसे अधिक है। और आगे चलकर तुमही सबसे बढ़कर होवोगे। ऐसे आशीर्वादार्थक गुरुवाक्य सुनकर आप बड़े प्रसन्न हो एक परगवाड़ा और कुछदिन गुरुचरणों में निवास कर पाँछे महलागे ही पधार गये। छ मास के अनन्तर आप फिर गुरुदण्डनाथ सिंहथल पधारे तब श्रीगुरुदेवने आपको अपने उत्तम शिष्य

१—बार बार कर जोर के बहु विधि कथो प्रणाम ।

श्रीगुरु चरण रात्रियो खाना पाद गुणम ॥ १ ॥

(श्रीराम परची विधाय ११)

२—अधिकारीजन विहारीदास तासु मिले रामजनदास ।

गुरु माई बुध होत जता, सबसु मिले परस्पर हेता ॥

(श्रीराम परची विधाय १२)

३—भीर भरका दूर करण । श्रीगुरु सनमुख दास नैठाए ।

अब सनमुख होय भजन कराओ । अन्तम परब सुरत लगावो ।

(श्रीराम परची विधाय १३)

बताये । और शिष्य बनाने तथा उपदेश देने की आज्ञा दी । आप कई दिन गुरुधाम में निवास कर पीछे ही पधार गए । और भजन करने लगे । नामीचिन्ह प्रगट होने पर फिर सिंहथल पधारे । अपना बनाया हुआ "ज्ञानविवेक" ग्रंथ श्रीजी महाराज को सुनाया, सुनकर महाराज ने फरमाया कि पुत्र ! तुम्हारे घट में ज्ञान प्रगट होगया है ।

दोहा ।

नाभि लयो विश्राम मन, वंक नाल रस लेत ।
रामदास पच्छिम दिशा, शब्द चलण का नेत ॥ १ ॥

चौपाई ।

श्रीगुरु आगम यों चरणै । तिरसी जीव तुम्हारे शरणै ॥ १ ॥
रामदास कहै मैं जु अनाथा । आप प्रताप आप मम नाथा ॥ २ ॥
(श्रीराम. परची विश्राम १४)

आज्ञा ले फिर पीछे पधार गए । इस भांति श्रीगुरुदेवजी के दर्शनार्थ आप कई बार पधारे । बहुत से पुरुष आपके शिष्य होने को पहले आए थे पर आपने उनको दीक्षा नहीं दी । फिर श्रीगुरुदेवजी की आज्ञा से दीक्षा देनी आरंभ कर दी । आपके ५२ शिष्य हुए । शिष्यों के आग्रह से मालवा, मेवाड़ आदि देशों में रामत कराते हुए पहिले गुरुदर्शनार्थ सिंहथल पधारे, फिर मारवाड़ बड़ग्राम पधारे, वहां कुछ समय विराजे और वहां से आसोप पधार गए । वहीं पर आपके दशवें द्वार की समाधि सिद्ध हुई । और गुरुमहिमा, भक्तमाल, चैतावनी, जमफारगती आदि अनेक ग्रंथ तथा अंगवद्ध अनुभव वाणी की रचना हुई । जिन वाणी के दास, उदास, शांभवी, और खुदव करके चार भेद हैं । इस प्रकार वाणी-रचना के बाद फिर आप सिंहथल पधारे । यहां एक दिन बाहिर की तरफ आप सध्या करा रहे थे इतने में ही तो आपको श्रीकबीर साहब का

१—दो उपदेश जिंग्यासी आवैं । गुरुपद दरसा गुरुपद पावैं ।

(श्रीराम. परची विश्राम १३)

२—रामभजन को दो उपदेसा, परा परायण गावत शेसा ।

(श्रीराम. परची विश्राम १५)

लौटते हैं। बड़े मुश्किल से पीछे लोटवाये। ऐसा माति श्रीगुरुदेवजी महाराज की पधरावणा कई बार हुई। एकबार आपने श्रीगुरुदेव से अर्प की कि महाराज! गांव क जदर का स्थान आपके परिवार के लिये छोटा है अब अब कोई बड़ा स्थान बनवाने की आज्ञा फरमावें। तब आपने ग्रामसे पूर्व की ओर पहाड़ी की तरलहटी में जगह बतलाई कि यहा बनग लो। तब तो श्रीश्री महाराज की आज्ञा से वही पर सन् १८३४ फाल्गुण कृष्णा ४ के दिन स्थान की नींव डालदी गई। और कई वर्षों में जाकर वह आलिशान स्थान संपूर्ण हुआ। आप के जीवन-काल में नितने परचे हुए हैं वे सब परची में श्रीदयालदासजी महाराजने सविरसृत बणन दिष्ट है। जिनका सक्षिप्त सार जो श्रीअर्जुनदास जी महाराज करके बनाया गया है वह यहा पर उद्धृत किया जाता है।

अथ परची सार ।

धीहरि गुरु हरिराम धिन, रामदास मुक्त नाम ।
पालपुरपूरण प्रती, अजुन की परणाम ॥ १ ॥

दोहा ।

नित अथतारी सन धिन, जीवा करण उधार ।
भरतखड मुरधर धरा, आन लियो अथतार ॥ १ ॥

छप्पय ।

सयन सतरहसो जान थप तैयासो कहिये ।
फागण वद प्रयोदशी रामदास जनमस्ये ॥
शोचत थप पत्नीस सिले गुरु हरियानदा ।
मय को धर्य प्रसिद्ध गुरु वैशाख लहदा ॥
लेर ग्यारस थग्या रमता आप देशमज ।
गाय मेलाने निराजकर सुमरण विघ एस्त भज ॥ १ ॥
थप तीन इम भये जुगलमत अतिग सधीरा ।
थप दुबाल जु माहि नाजनी अतिशय बीरा ॥
नारयान जदुवश सुभी है गौरज राकर ।
उपज भावना ताह भेट रुपियो ले मार ॥
कहे साधु हम राखी नहीं करो पुण्य दूजा घणा ।
रामराय पूरे सवन हम शरणागत त्या तणा ॥ २ ॥

इंदव छंद ।

मान लई सत बात तिही दिन नित्य रसोई सु आन जिमावै ।
 काल चारोतड़ लोक दुखी तव संत को चित अत्यन्त दुखावै ॥
 लेत उदे कण पंच पियै जल पूछ तिनानां प्रति सांच बतावै ।
 एम भये दिन सात अखंडसु तो पण ध्यान अडिग लगावै ॥ १ ॥
 सेवगरूप धरे तव माधव चून गेहं घृत दाल ले आए ।
 साधु हि राम रसोई करो तुम राम गुरु पति भोग लगाए ॥
 आजहुं ते दुख दूरि भयो तुम कहकर आपन धाम सिधाए ।
 नार जु खान आए ढलते दिन संतहुते सब दुःख जु गाये ॥ २ ॥

मनहर छंद ।

कहै नारखान अहो बड़ो दुःख समय मांहि
 पुसी गूघरी जु पाय आज हमें आये हैं ।
 साधूराम कहे तुम आये परभात इहां
 लायके रसोई हमें कह्यो गांव जाये हैं ॥
 तवै नारखान भाखै गांव जो विराई हंत
 आए तुमे पास जेज घड़ी नाहि लाये हैं ।
 साधूराम हंत कह्यो रामदास बोल एम
 इनै केश वधे पटफटे देख थाये हैं ॥ १ ॥

दोहा ।

नारखान मन विसम हुय, अद्भुत बात निहार ।
 भाग बड़ो मेरो अहो, इसे संत हम द्वार ॥ १ ॥

कवित्त ।

ताहि समें देशमाँझ दिखणी फौज लेख आए
 राज विरोध राज काज देश पेसवार है ।
 गाम जो मेलाणा हत लोक सबै भाग चले
 भाटी आय संत पास खाल एम डार है ॥
 मात आजा देहु सो तो चलत कवीला साथ
 आप हमें चढां पाड़ वहाँ सँभ्या सार है ।
 रामदास कहै तुम मेरी चित्त करो नाहि
 तुम्हें घट सोई राम उनमें निहार है ॥ १ ॥

श्रीरामदेवधर्मप्रकाश-

तरे नारस्त्रान कहै आका आप सोई करू
 भोज सन कह्यो साहा जाय जाय कीजिये।
 भले भासा पाय तबी जायके बकार माँही
 बस तुम्हें जुस है बकार बदल दीजिये ॥
 पीते शीरा हाथ देख मरु में निराक अब
 तोहि मोहि जोद कहा गदूपति छीजिये।
 तथे शीगपति पाग बदल जु आत भयो
 ऐसो रजपूत कहा मिले मोहि रीसिये ॥ २ ॥
 भाय गाँव कहै तोहि कोन ऐसी मत्त भई
 तथे नारस्त्रान कहै गुरु परतापही।
 भाय सेनापति सग सत को नवाय दीक्षा
 धरी भेट कहै ये तो रामरूप आपही ॥
 छई माँहि सत सोई कियो हठ घेर यह
 ऐसेही अचाही ताके दर्श जाय पापही।
 नारस्त्रान हठ धार लेऊ दीक्षा आज भयो
 लायके मसाद कह्यो देखो मत्र आपही ॥ ३ ॥
 तथे रामदास मान गुरु कह्यो सत्य सोई
 भादू रीत जान नारस्त्रान दीक्षा दण्ड हैं।
 धन्यो दाम ताके घर साधुराम किया जयै
 जान राम हेत सत दास आस रूप हैं ॥
 भाय शिष्यशाखा यहु रामत करत गए
 रहे यह गाँवमाँह घाल जम भए हैं।
 घेर कई मास गाँव आसोए विधाम ल्यो
 परे भाय भक्ति जहा सत आय रूप हैं ॥ ४ ॥

इदव छंद ।

पण दिमाँ संत आये खेदापे हि, मोहित नाम धर्मम सिलान्तो ।
 मोल कहै यह गाँव तुमारो हि, यादि शृपाकर बासहि जानो ॥
 आनि भाँपूर उई जहा विराजत, वष थाईम के घाम बघानो ।
 शिष्यशाखा यहुते मिलवा प्रति, श्रीगुरु आखत मो गुरु आनो ॥ १ ॥

दोहा ।

हरियानन्द आप यहाँ, उच्छव करे अपार ।
 वष समय जा प्रातः गुरु शिष्य गुरु विचार ॥ १ ॥

रामदास कीनी अरज, आशा दीजै मोय ।
 आप काथ माँच नहीं, कराँज अस्थल सोय ॥ २ ॥
 गाँव हूत पूर्व दिशा, पँचशत पैडसु जाय ।
 शुभ पुल इच्छा जोय के, सतगुरु दर्ई वताय ॥ ३ ॥

छंद पद्धरी ।

शुभ संवत अठारहसो प्रवान । भल वरप तिये चोके निधान ॥
 फागन चद चौधज नीँव दीध । यह राम चौक कोठार कीध ॥ १ ॥
 उतराद दपिन भंडार सोय । चहुं कोट इन्द्र पौलसजु होय ॥
 फिर उरधखंड महलौ झरोख । छवि अद्भुत वरनूँ केम गोख ॥ २ ॥
 तहां ब्राजमान गुरुदेव आप । शिष्यहंत मेट तन त्रिविध ताप ॥
 अब राम भजनको बन्यो ठाट । चत वरण न्हाय गुरु चरण घाट ॥ ३ ॥
 कर रामत मुरधर देश मॉहि । लद उष्टर घोड़ा बहल तॉहि ॥
 तंबू कनात सब रीत जोय । डेपी तब देखे दुखी होय ॥ ४ ॥
 इस भाव अभावी पक्ष दोय । कोउ साध असाधहु कहै सोय ॥
 कोउ भुरकी मोहनिमंत्र भाख । कोउ आदि अवीको पंथ आख ॥ ५ ॥
 इन तीर्थ मंदिर सेव नॉहि । सब शूद्र विप्र मिल एक ठॉहि ॥
 इस दुष्ट जाय गुरुराज पास । सब अधिक्री ओछी कही तास ॥ ६ ॥
 एक आज खैड़ापे पंथ जोय । सो वजै आप महाराज होय ॥
 इनको नहिं पूछै कोन जाय । नव विजयसिंह राजा रिसाय ॥ ७ ॥
 लिख हुकुम दिवाणीपत्र जोय । चत अश्व चढे भृत चले सोय ॥
 उन राम महोलै आय देख । अद्भुत सतसंगति भजन पेख ॥ ८ ॥
 मुखसे अति सेवक भाव वात । कित स्वामीजी को दरश पात ॥
 सब घाल दीन आगम जनाय । जन सेवादासहि को सुनाय ॥ ९ ॥
 सर राम कुंड मरमत्त जान । श्रीरामदास तहां विराजमान ॥
 कर दरश बोल नॉहिन कहाय । जो लिख्यो पत्रिका मॉय ताय ॥ १० ॥

दोहा ।

कौन जाति पुज्यक पधति, यो कैसो उपदेश ।
 कोप नृपति ऐसो कह्यो, छोडो म्हारो देश ॥ १ ॥
 पद्धति जानो रामजी, रामजनों उपदेश ।
 रामजनों ऐसो कह्यो, ओ लै थारो देश ॥ २ ॥

(परची)

चौपाई ।

इतना कहकर चले ते सारा । राम जनागति अगम अपारा ॥
 जैसे सग सराय घसेरा । पनग कावली दृष्टि न हेरा ॥ १ ॥
 आवनद्वारा देखत वाता । कल जानू का करिहि दाता ॥
 पैदल हुय कर सग चलाये । रामदास जुत शिप सरमाये ॥ २ ॥
 कोस तीन पैदल सत्र आप । बहासे बल दास जोताप ॥
 आगेहुता घाट सवापा । दिनदिन निमो चरत दरशाया ॥ ३ ॥
 देवगढ़में भक्त सवाप । राज रैत सत्र यदत पाप ॥
 प्रेत इग्यारै भयो उछारह । निराजे एक मास दिन तेरह ॥ ४ ॥
 बहासे आगे गाँव फरेदे । रात्र गापालदास तहाँ तेरे ॥
 दिन तेबीस निराजे स्वामी । दिन दिन प्रेम भाव निध पामी ॥ ५ ॥
 आधा भाग चले गुरुदरसन । मिहथल महत मिले मन परसन ॥
 माँढेल्यामें आन निराजे । सेरन भाय घरप दोय राजे ॥ ६ ॥

दोहा ।

मडलायत ठापुर शुभी, इन्द्रसिंह तेहि नाम ।
 सारुडे हितभात्र पर, परचो पायो ताम ॥ १ ॥
 सत छोड चाले जघी, मारवाड दुय थाय ।
 पितापुत्र भृत यदल सत्र, खोसा रिलमिल घाय ॥ २ ॥
 दखिणी जात न पाति रतु, ओण फिरी तिण घेर ।
 यद्दी जात सो रत गया, हरि की गति नहिं हेर ॥ ३ ॥
 बीकाणे का राजमें, सुरा सपति घरताय ।
 सारुडे में आयकर, मुरघर रहे तुसाय ॥ ४ ॥

चौपाई ।

मुलक घोमने करिहि निदा । जैसे भाव फलै कर यदा ॥
 हिंदू राममहोले माँही । मारे जीय मरजाद हटौही ॥ १ ॥
 ठापुर मूरति निफसी तामें । परचो भयो देख भय पामे ॥
 अद्भुत भक्तचरित गुन जाने । हरिमरजाद ताहि फो भाने ॥ २ ॥

१—श्रीगुरुभ्यो परणाम करि, हरियानदप्रणाम ।

रामदेवमें रामचंद्र राम हमारे छार ॥ १ ॥

हाथ छडी गुरुदेवकी कबडी गुरु अस्थान ।

मैंठे ज्यूह उठबले हरि धनवीवनप्रान ॥ २ ॥

(श्रीराम परजी लि २५)

अस्थल मांहि चीज थी सारी । रामदास हरिजन सब डारी ॥
 संगी जानर लीन्ही सोई । अजरी भोजन जिमि गति होई ॥ ३ ॥
 लीज हरिजन माल तुमारो । नहिं लॉ हरिअरपन है सारो ॥
 रामदास ऐसे अनचाही । सुरतसिंह ऐसी सुन पाई ॥ ४ ॥
 हे महाराज हाल का मेरो । धिन धिन धनी रामजी तेरो ॥
 रामदास कै नहीं सिधाई । जिसी भावना फलै सदाई ॥ ५ ॥
 रामदास ऐसे अनचाई । सुरतसिंह मनभाव जु थाई ॥
 चातुर्मास की अर्ज करावो । लिखो पत्रिका तुरत बुलावो ॥ ६ ॥
 संत भाव बस जानो सारा । करी वीनती आवनहारा ॥
 रामदास संग शिप ले सबही । वीकानेर पधारे तवही ॥ ७ ॥
 राजा के विश्वास विशेषा । विन वरपा निंदक कर घेपा ॥
 स्वतः शिष्य सांघी जन आई । सो सुरतेश सुनी मनभाई ॥ ८ ॥
 दिवस तीसरे मेह जु कीयो । सूरसागर सूता भरदीयो ॥
 दिन दिन भाव उछाह जु सारा । सतसंगति बहु भीर अपारा ॥ ९ ॥
 दिन प्रति राज रसोई आवै । पंच पकवान मिठाई लावै ॥
 राजस भोजन कामन काई । रामदास यों कहे समुझाई ॥ १० ॥
 मोदी एक बुलायो राजा । रुचै रसोई सो विधि साजा ॥
 चातुरमास दिन दिन अधिकाई । राजा परजा भाव बधाई ॥ ११ ॥

दोहा ।

विजयसिंह भृत सयनसों, कही हमें दुख काय ॥
 गढ़ छूटो सुत बदलियो, पासवान मरवाय ॥ १ ॥
 चंडावल ठाकुर शुभी, कहि हरिसिंह बखान ।
 रामदास कूं सीख दी, ता दिनते दुख जान ॥ २ ॥
 कह राजा साची कही, क्यों ऐसी बुधि आय ।
 होनहार सो नाँ टरै, कहो अब कौन उपाय ॥ ३ ॥
 संत पधारै सो विधी, कीजै राज विजेश ।
 ता दिन अपने आश्रमहिं, आयौ सब सुख देश ॥ ४ ॥

छंद पद्धरी ।

लिख पत्र भाव भक्ती समेत, दे भेट पठाये संत हेत ।
 सो पांच पत्रिका संत राज, लखि भाव चलनको कियो साज ॥ १ ॥

१—मेह वरपायो चापजी, दुनिया पावै दुःख ।

रामदास की वीनती, जना ऊपजै सुख ॥ १ ॥

मेह बूझ हरिया हुआ, भाजगया भयकाल ।

रामदास सुख ऊपज्या, जहँ तहँ भया सुकाल ॥ २ ॥

सुरतेश नृपति बहु भाग लाय, दिन सत केर धिरता कराय ।
 मो भाव सफल कीजै दयाल, धर अग्र वसन दुपटा दुसाल ॥ २ ॥
 सैजुप रथ उष्टर लदाय तम्बू बनात पयक साय ।
 गदराजु बिछायत भट फीन, हठवाई परतन अति नवीन ॥ ३ ॥
 बहुभाति विनय फीनी नरेश, तब सत शिष्य ज्ञानोपदेश ।
 पुनि पूरव राजपु सिन्धु आय, फिर कीजै कमज्या समझ राय ॥ ४ ॥
 लख लोक दुस्ममें चले सोय, ज्यू राज करे त्यू रैत जोय ।
 द्वै देग फनै तिन तेग जीत, गुरु ज्ञान रखै मो चले नीत ॥ ५ ॥
 प्रसिधोय यह जन उचर साम, प्रिचरत्त भये गुरु राम साम ।
 पधरायण आये सोई पास, गुरुधाम चला कह रामदास ॥ ६ ॥
 सिद्धधर नगर पहुचेसु जाय, गुरु गादी महँता मिले आय ।
 निजधर्म जान तहा भेट नीन, हरिवेय महँत सो सग लीन ॥ ७ ॥
 हुय गाय गाय मनहारताय, भूत विनयसिंह खापर क्राय ।
 नृपभाय जान तन देश लोय, धन धन्य करत नरनारि सोय ॥ ८ ॥

दोहा ।

खेडापै आयत भये, पुरोहितजी कर भाय ।
 रामसनेही हरप बहु, राम महोले थाय ॥ १ ॥
 सवत अठारहसो प्रसिध, यरप उनचासो जान ।
 पाती यह चौधहु दिने, अखल बिराजे आन ॥ २ ॥
 भाटी रणछोडहु सुनुधि, जालम रीची ताय ।
 जोघाणे जायत भया, सताँ सीख नुपाय ॥ ३ ॥
 भूत रात्रिपै जायकर, कही अनुक्रम यात ।
 सत बिराने सदन में, आनद में गुनगात ॥ ४ ॥
 कहत भूप सुण गोरधन, यह रिधि करो बिचार ।
 मेरो पातक दूर न्है, सत सेवा यण सार ॥ ५ ॥

चौपाई ।

भूप पडये भूत रामननावे, आये अखल भाव तिनाके ।
 कही वीतती भूप कही सो, लीजे अपनी वस्तु रहीसो ॥ १ ॥
 भेट गाम इव अखल लारे, सत धचनसे काज हमारे ।
 राम जना कह पटा सदाई, चढ़ै ऊतरे नाँहि कदाई ॥ २ ॥

१—और कन डिगडामका चल्नी ऊनर जाय ।

राम पय है रामदास, दिन दिन दुषा थाय ॥ १ ॥

(श्रीरामवाक्यम्)

दोहा ।

भाव माँहि सब जान ज्यो, व्है निश्चै मन थाय ।
गढ़ चढ़ नौवत याजसी, वार प्रताप सवाय ॥ १ ॥
परगट परचो दीसियो, भाव अभाव कराय ।
आगे अचै नजीक है, भक्तीवस हरि राय ॥ २ ॥
फिर सिख पीथो दास की, पूरन कीनी आस ।
रामत कर रतलाम दिशि, अनत जीव सुख रास ॥ ३ ॥

छन्द पद्वरी ।

जन चले पंथ निर्भय सदाय, मँझ गाम गाम विधाम थाय ।
मिल राम सनेही भाव चाव, रतलाम धाम उच्छव वनाव ॥ १ ॥
सिप कनीराम गुरु धर्म काज, तन मन धन अरपे सर्व साज ।
नित प्रति रसोई नवी विद्धि, गुरु भोग धरै अक्खूट ऋद्धि ॥ २ ॥
तहाँ अलै राजप्रोहित प्रवीन, उच्छव में उच्छव करसु लीन ।
फिर गाँव सारंगी दासभाव, पधराय संतकर चित्त चाव ॥ ३ ॥
इक गाँव दोतरिये दुष्ट पत्ति, बहु विकट घाट झाड़ीसु अत्ति ।
उन तेढ़े संताँ पत्र मेल, हरिजन के हरिका करै खेल ॥ ४ ॥
मनमाँहि हुतो खोसण विचार, कर दरश पलट सब कुबुधि टार ।
पढ़ चरन माँहि कर गुना माफ, मै दास तुम्हारो गुरु आप ॥ ५ ॥
जिन भाव रसोई सेट कीन, संग सचिव मेल पहुंचाय दीन ।
हुइ महिमा सबही मुलक माँय, फिर संत शहर रतलाम आय ॥ ६ ॥

दोहा ।

दिन तेवीश विराजिया, रामदास महाराज ।
सिप पीथल परिवार के, पहुंचावन संग काज ॥ १ ॥
सोंखेढ़े आये जना, दुष्टी चित ललचाय ।
सारंगी भाटी प्रसिध, ठीकरियाके माँय ॥ २ ॥
रिल मिल खोसा सामठा, दोवे दबिया आय ।
याँसे वावा जावसी, लेसां माल छिनाय ॥ ३ ॥
लछमण कहै दयालसों, दुई दिन विराजो और ।
इतने बीखर जावसी, गाँव मरजादन तोर ॥ ४ ॥

छन्द भुजंगी ।

तबै घाल थोले सुणो दास सांची, कहूं घात तोकूं कदे नाहि काची ।
इमै राम रिच्छा नितूपत्ति करही, उन्हें दुष्ट इच्छा दिनां तीन भरही ॥ १ ॥

अधू पात्र भरियो अये नाश पामी, सवै लोन मोहू बडे सिद्ध गासी ।
 तुमे मच चिन्ता करो दास मेरी निहे शरण ली हों तिहे लाज बेरी ॥२॥
 हरी मच फेरी खोसा और सूजी लग जेज साधा करो घाढ हूजी ।
 चले रात आधी खोसे गाम जाई, एनो ठोढ माँझी धसे गेह माई ॥३॥
 तहा हाथ नारी पट्यो शीश जोये, लखै सगगाल मना मोहिरोये ।
 रुफ्यो कउ दुखियो नहीं नीर पायो, मरे निवस तीजे बचन सत गायो ॥४॥

दोहा ।

रामदास महाराज हम, सयकू कह्यो सुनाय ।
 चलो अमी जेनन करो, हुइ आज्ञा हरि गाय ॥ १ ॥

छन्द गोटक ।

हरि पाय आसा विचरे जयही, सय दास उदास भये तरही ।
 पहुँचावण हाथम आदि सह, कह ठाकुर के दिन साथ रह ॥ १ ॥
 महाराज कहे तुम भाय इसो, रछ पाल गुरु तय शरु किसो ।
 धिरताय सयै सेंट पय लयो, हम आनद मगा न दुख भयो ॥ २ ॥
 कहै लोन तुमै सिधराज परे, उन महाजन राजमें बुड भरे ।
 फिर धोविय नाम न लेत कहँ, जहँ जायत जोरत हाथ सहँ ॥ ३ ॥

दोहा ।

माणरोल चीतोड हूय, घाटे उतरे आय ।
 खेबापै अथल महीं, उच्छर करे सगाय ॥ १ ॥
 रामदास महाराज का परचा अगम अपार ।
 मो दुधिसम वरणन कया, पष्ठ छद् अनुसार ॥ २ ॥

कवित्त मूल ।

रामदास महाराज का फिर परचा वरणन कया ।
 प्रेमदास शिष व्याधि अन जमदूत जु आये ।
 करि करुणा गुरु हूत तमन्डित आन वचाये ॥
 यो पालन है राम तुम्हारो काम न कोई ।
 गुरु धेसुग अघपाम मोघ तुम लेजो खोई ॥
 मुख केर हाथ धिर ताय सिर व्याधि व्याधि दूरे ह्व्या ।
 रामदास महाराज का परचा फिर वरणन कया ॥ १ ॥
 प्रेमदास भक्तमगते देउपुरी को दुग दयो ।
 वैश्य वरणमें जम गुसाई भेष बनायो ।
 भैरव जुग बस करे जगतम परचो घायो ॥

कवित्त ।

विप्र एक याही शहर राज कामन्दार हुतो ।
 देव चूक भाउसीमें बेठी घाल टार है ॥
 कहत सगराम ताहि सुनो रात मेरी अहो ।
 गुरु रामदास तोहि दु पसे निवार है ॥
 ताही निशा जाम दोय गयाँ भयो दश दिव्य ।
 कह्यो ताहि आय अर टन्यो ताहि पार है ॥
 तीसरी निशाह फेर भयो दर्श वाही बेर ।
 काढ भारसीसैं बेठी काढ कीयो पार है ॥ १ ॥

ढोहा ।

यह परयो इडर मरी, जानत अजह लोय ।
 राम गुरु अतर नहीं, शिष रिग्वास जु होय ॥ १ ॥

कवित्त ।

रामाराम शिष्य नदी इयत पुनार सुन ।
 धाररूप गहे यौह कन्यो गुरु क्षेम ही ॥
 एक समय मानी गाँव डेरो सर पाल शोभै ।
 ब्याल दीरि आय मोदमाहि फीयो प्रेम ही ॥
 जीम हूत घरण चाट गयो घृक्ष तणी घाट ।
 कहै सत इने जीम ठढी गबे जेमही ॥
 कहाँ लग गाऊ परवा रामदास गुरु तणा ।
 फाल आदि बदे पाँन और कह्यो जेमही ॥ १ ॥
 सप एक गाँव जो पैदाया माँझ कह सोय ।
 झाल्यो झले नाँहि कोऊ सगी हार याकोहैं ॥
 गुरु रामदास आय कहै साध राम सुनो ।
 यानक तुझारे जर्मा आय हम नाये हैं ॥
 सुन्यो खाल सत मुख नसजु पसार वह ।
 झाल डार ताही बेर फेर नहीं झारे हैं ॥
 शीन काल ऊट पन सत पथ आन अन्यो ।
 रवे यद्दो दूर एम रामदास भाये हैं ॥ २ ॥

बुडलिया ।

उष्टर चन्यो न पेंड इक, धनि आयो पचिहार ।
 पिनय करी सता प्रती, कह इनको उपचार ॥

कहो इनको उपचार तवै सो छड़ी झलाई ।
या तुम देहु लगाय होय आगे जिम जाई ॥
(उन) जाय सोई विधि करि तवै, उष्टर चल टोलै गयो ।
रामदास महाराजको अद्भुत परचो सब लयो ॥ १ ॥

छंद मनहर ।

शिष्य फेर सेवादास पुत्र सोधनेकी आस ।
गुरु रामदासपास मांग आझा चाले हैं ॥
विकट पहाड़ झाड़ी अकेलो चलत तहां ।
देख सिंह रूख आय आगे रीछ भाले हैं ॥
टेर रामदास हूंत मीचसे बचाय अवी ।
करत हुंकार यहां तहां दुःख टाले हैं ॥
पायके अंदेश जु शिष्य अर्ज करत भये ।
फरमायो राम कहो तवै चुप्प झाले हैं ॥ १ ॥
चढ़ां रूप धार छड़ी हाथ साम ताम मारे ।
गये भालु सिंह दोऊं दास सुख भयो है ॥
गाँव चटपाड़ी माँझ संत विराजमान भए ।
आयके दरश लह्यो कह्यो दुःख पयो है ॥
अहो अंतर्यामी आप जानत सबै ही बात ।
पूछे शिष दूसरा हू तवै भर्म गयो है ॥
संत राम एकरूप भिन्न भेद नाहि कवै ।
आगे अवै देखि लेहु कछु नाहि नयो है ॥ २ ॥

॥ इति ॥

इसप्रकार आपके अनेक परचे हुए । आप एक अद्वितीय महात्मा थे । सम्बत् १८५५ आषाढ कृष्ण ७ मंगलवारको आप परम धाम पधारे । आपका इस संसारमें प्राकट्य लोगोंके कल्याणार्थ ही हुआ था । आप गुरुधर्मी भी एकही थे । आपके वचन जो श्रीगुरुदेवजीके प्रति कहे गये हैं वे कितने गुरु भक्तिसे सराबोर हो रहे हैं । यथा—

“अमर लोक सँ आय सिंहथल माँहि विराजे ।
तेज पुंज परकास बजे अनहद के वाजे ॥”

“सता समाधि अंगम जहाँ आसण सुखमण सहज समादी ।
आय रामियो चरणाँ लागो सिख है आद अनादी ॥”

“चरणा चाकर रामियो, सतगुरु है महाराज ।
चार चक्र चयदै मयन, ताहि परे सतराज ॥”

(श्रीगुरुमहिमा)

“मैं अबला हूँ रामदास, आधो अत अचेत ।
तुम सतगुरु हो शीशपर, हमसे करो सचेत ॥”

(श्रीमधुमाल)

“सतगुरु मेरे शिर तपै, मैं चरणासी रख ।
शरणे आयो रामियो, लखचौरासी तज ॥”

(जमफारगती)

“सतगुरु दीनदयालु कहीजे, समुख करसू सेवा ।
पार अपपर पाये नाहीं, किस विधि लहिये मेया ॥”

(मनएक)

“सतगुरु है हरिरामजी, मेरा प्राण अघार ।
चौरासीका जीव था, शरणे लिया समार ॥”

(श्रीमहाजिज्ञास)

कहाँतक लिखा जाय ? जबतक आपका पाचभौतिक शरीर इस पृथिवीतलपर निराजमान रहा तबतक तो गुरुधर्मको निमाना ही था, परंतु परमधाम पधारने के उपरांत भी आपने विचार कि मेरा सनातन गुरुशिष्यधर्म मेरेतक ही न रह जाय । जहाँतक मेरा नाम रहे तहाँतक मेरे शिष्य गुरुस्नान सिंहयलको न भूलें । इस लिये परमधाम पधारने के तीन दिन बाद असंख्य निरहवेदना से पीड़ित श्रीदयालुदासजी महाराज की कर्तव्यता देख साक्षात् अपना स्वरूप धारण कर दर्शन दिया और मस्तकपर हस्तकमल धर सत्त्वज्ञानोपदेश दे धीरे बघाई । और फरमाया कि मैंने जो सद्गुरु गादी की टेक निमाई है वेसी ही सर्वदा तुम भी निभाते रहना । और अंतसमय में जेसी मेरी साँच भावना

१—कह काइ अपधान मन तन चित अति विकल्पा ।

रूपो ॥ सतगुरु साथ, यो कारन बैसे मयो ॥ १ ॥

पूरणब्रह्म दयाल बाबाजी कीन कृपा ।

यो जिव डेहु संमाउ, नहितर यो तन लागसू ॥ २ ॥

(श्रीराम परचो भि० ४१)

फली है उसका मेद आजसे चौथे दिन सिंहयलसे श्रीहरदेवदासजी महाराज पधारकर तुमको जतावेंगे । ऐसा फरमाकर आप अंतर्धान होगये ।

ऐसे गुरुधर्मी सत्पुरुषों को घन्य है और उनको कोटिशः दंडवत् प्रणाम है ।

घन्य है उस धाम को जिसमें आपने वास किया । साक्षात् उस धामके दर्शन करने से मुक्त हो जाय इसमें तो आश्चर्य ही क्या है । अगर स्वप्नमें भी दर्शन हो जाय तो वह प्राणी कृतकृत्य हो जाता है । उस धामका आजतक भी इतना प्रभाव है कि कोई भी प्राणी भूत प्रेत डाकिनी शाकिनी आदिसे पीड़ित हो और वह धाम की शरण में आता है तो उपरोक्त सब दुःखों से मुक्त हो परम पदवी को प्राप्त होता है ।



१—श्रीरामदासजी महाराज इस पांचमौतिक शरीर को त्याग कर दिव्य शरीरसे प्रथम सिंहयल श्रीगुरु धामके दर्शनकर फिर बैकुंठ पधारये । इस मेदकूं श्रीहरदेव दासजी महाराज जानते थे और आप आजसे चतुर्थदिन खड़ापेह्कनेवाले थे इस लिये श्रीरामदासजी महाराज ने फरमाया किः—

साच भावना फलै सदाई, सो देसी हरिदेव जनाई, चोथै दिवस समझ में वायक, सिख तुम जानो साच सदाइक, शीश नमावो गुरुखस्थाना, मनवचक्रमलग एक विधाना, आदि संप्रदामेद विचारो, सतगुरु गादी टेक निमारो ।

(श्रीराम. परची वि० ४१)

(श्रीदयालुदासजी महाराज)

श्रीदयालुदासजी महाराज की अगाध महिमा का वर्णन करना अति कठिन है । आप ब्रह्मवेत्ता अनुमवी बड़े ही सचरित्र महात्मा हुए । श्रीपूर्णदासजी महाराज की बनाई हुई जन्मलीला नामक ग्रंथ से अनुभव कर सकते हैं कि आप कैसे प्रभावशाली गुरुभक्त अद्वितीय तेजोमयी दिव्य मूर्ति थे ।

दूसी जन्मलीला का यहाँ उल्लेख किया जाता है ।

॥ अथ जन्मलीला ॥

हरिरामा रामा नमो, चालंगल मुमसाम ।
मन बच भ्रम करिये सदा, पूर्ण ताहि प्रणाम ॥ १ ॥

दोहा ।

षट्पद श्री परमेश्वर को, पुनि गुरु को परणाम ।
सय सताँ तिर नाथ हूँ, सानाजाद गुलाम ॥ १ ॥
रामदास महाराज के, चाल शिरोमणि शिष्य ।
जन्म सुलीला यणि हूँ, निज गुन रूप प्रत्यक्ष ॥ २ ॥
दयारूप धरि प्रगटे, पूरण के शिरताज ।
जीव अनेन उधारणे, प्रगट किये यह साज ॥ ३ ॥

छप्पय ।

निगुण निज निरकार दृष्टि कहूँ मुष्टि न आवे ।
अपरम्पार अलेख नेति तिहि निगमसुगावे ॥
जोगधारणा धार ध्यान कर ध्याउत कोई ।
हुरलम दुप्पर वतिन ताहि दरशन नहि होई ॥
सय प्रह्न अवतार घर चाल अवनि प्रगटे प्रत्यक्ष ।
पेसो ॥ फोड़ देख्यो अवर देख्यो दीनदयाल इह ॥ १ ॥
अविगत आशंकरा प्रगट भय भरी धीजै ।
बलीबालप्रियार ताहिको शिक्षा दीजै ॥
कामी बुटिब बुजात अधम अधगामी सार ।
दो भरी उपदेश राम निज मय हमारा ॥
तय आयमु शिर पर धारिके चाल लिप अवतार इह ।
रामदास पितु पाय धिन सुदर माता कृप मल ॥ २ ॥

बहू गाँव शुभ वास जहाँ एक सदन कहीजै ।
 नमो दाल तहाँ जन्म प्रथम परचो सु लहीजै ॥
 सुरपति घन वरसाय गढ़ा जहाँ पड़्या अपारा ।
 सदन निकट ही नाहि दूर धरनी दल गारा ॥
 चरणामृत गुटकी दई महाप्रसाद गुरुदेव भल ।
 दाल जन्म उच्छव भयो नर सुर कीरति करत कल ॥ ३ ॥
 समत अठारह जान वरप पोडश परवानो ।
 तामध सिंगसर मास शुक्ल एकादशि जानो ॥
 भृगू वार परसिद्ध रेवती नखत भणीजै ।
 अमृत पुल सिध्दियोग गुरु लगनेश गिणीजै ॥
 सब सोम ग्रह शुभ ठौरपर दाल लिप अवतार तव ।
 कहुं सुक्ष्म स्थूल जिव चर अचर हर्ष मान हुय मुदित सब ॥४॥
 आनंद अगम अपार अनत जहाँ वाजा वाजे ।
 अनत उदित अंकूर सकल शुभ मंगल साजे ॥
 सर तरु नदी निवान घनी परवत घन धारा ।
 चापी कूप तड़ाग अमी अमृतरस सारा ॥
 उद्योतकार जीवां सकल संत प्रगट अवतार हरि ।
 नरदेह धन्यां विन हरिहुते संत भये नरदेह धरि ॥ ५ ॥
 भरतखंड परसिद्ध द्वीप जांवू सुखकंदन ।
 देश मुरधरा नमो गाँव खैड़ापो वंदन ॥
 गामधणी पति नाम पदमसिंह प्रोहित राजे ।
 विजयसिंह नरनाथ वार परताप सदा जे ॥
 नर नारि सकल धरधाम धिन तहाँ संत अवतार धर ।
 आनंद अपार उच्छव अनत मंगल परम विनोद कर ॥ ६ ॥
 ज्यों दशरथ के राम सूर कश्यपके राजे ।
 परशुराम जमदग्नि कपिल करदमके छाजे ॥
 कृष्णजन्म वसुदेव व्यासके शुक मुनि त्यागी ॥
 उद्दालकके प्रगट नासकेत जु बडभागी ॥
 हंसरूप हंसा धरे मित्रभेद नहि सार है ।
 परब्रह्मपूरणकला सागे अंश अवतार है ॥ ७ ॥
 उदित वंश मध सूर मिटे अज्ञान अंधारा ।
 कमलरूप निजदास उत्तम सिख चकवा सारा ॥
 विमुक्त कमोदनि जान इन्द्रि उडगन सब मुरझे ।
 वाद उलू भ्रम भूत चंद्रमन तामें उरझे ॥

शिशुमारचक्र प्राणसु प्रगट काम क्रोध मोह चोर है ।
 वेद पढ़वा सोय रहे सत सूर बड जोर है ॥ ८ ॥
 सतजुग सतवत सार तप्य भेताजुगमाही ।
 द्वापर दान विशेष क्रिया कर्म सब चरताही ॥
 तीन जुगनमो धर्म प्रगट सारे चरतायो ।
 कलीकाल त्रिकाल नीति गति भाग दुरायो ॥
 अद्यतान कोइ पमो नहीं कलीराज धाना थपे ।
 तब घाल सत करुनाअयन नीशान भक्तिनिधालरूपे ॥ ९ ॥

दोहा ।

ठौर डार सय ठाम पर, भक्ति प्रगट परमाव ।
 चक्रे राज नरेश पद, गुरुधर्म सुमरण चाव ॥ १ ॥

छंद पद्धरी ।

नृप भय चक्रवर्ती सुजान । जिन प्रगट कन्यो गुरुधर्म ज्ञान ।
 उपदेश जीव दे मुक्तिदान । धिर भक्ति राज अविचल निशान ॥ १ ॥
 कलि रह्यो नाहि कहु ठाँ प्रवेश । शुभ जाग माग धानोपदेश ।
 सत्र भगे घोर जारान मार । तपतेज नीति धिर धपे वार ॥ २ ॥
 मुग्य अम्र आन कोड जुन्यो नार्हि । परमानंद उपज्यो आप मौहि ।
 महाज्ञान ध्यान धीरज अपार । गम अगम बचन आगम उचार ॥ ३ ॥
 गुरुधर्म देख धारण सधीर । गिरिगोम व्योमगगा गमीर ।
 सोभायमान गुरुगुरोभाय । सत्र ग्रथ अथ निरणे चत्ताय ॥ ४ ॥
 अरि मित्र सये धिन धिन उचार । कर नाम सदा साधे प्रकार ।
 कहु नैना नहि देखे दयाल । सत्र नख चर देखो दास घाल ॥ ५ ॥
 जिन बचन घाल तन मन दया । शयनधवन हृदय धाहु विशाल ।
 सोभायमान शिर उतुग माल । कप्योल पूर विम्वौष्ठ लाल ॥ ६ ॥
 भूषक अक नर तीख जान । चितुक अर कवूप्रमान ।
 उर घट निशाल नामी गमीर । कटि जघ जानु गुल्फाँ अमीर ॥ ७ ॥
 पदप्रज रज्ज अलि शिप सुचाय । रज चरन परस मिल मोक्ष मौय ।
 अनुभव प्रकाश उद्योतगार । अरिरल अनूप नहि चार पार ॥ ८ ॥
 धन धारा पट्टमी रह न पार । यों अनुभव बाणी सत्र सार ।
 उदक्यो पयाल गरज्यो समद । फाट्यो अकाश बरप्यो सु छंद ॥ ९ ॥
 धन ठिनवे क्रोडाँ मेघमाल । गिरि मेरु झडी अमृत रसाल ।
 कूटो अकाश हनुमत वीर । उडुयो समेश बन चप्रधीर ॥ १० ॥
 तूटो यज्ञाँक रुने मदेश । फीनो अम्र खडन काम देश ।
 छूटो रघुपतिनर वान पानि । सोख्यो सर मोहा आदि मानि ॥ ११ ॥

उचक्यो उडाल मुचक्यो मराल । सुचक्यो सुरेश रसना वयाल ।
 उछल्यो क्षिरोद हाल्यो समीर । घन घटा घोर भादाँ गँभीर ॥ १२ ॥
 कर घेद चार निरणै विचार । दश अठ पुराण पट भाप सार ।
 व्याकरण अष्ट निरताय सोय । पट शास्त्र भिन भिन लिये जोय ॥ १३ ॥
 रस रामायण शिर मोर सार । भागवत वचन भगवत उचार ।
 भारत भगवद्गीता विशेष । सो सार सार सब लिया देख ॥ १४ ॥
 करि प्रश्न दियो निर्णय वताय । अनधन नहि ऊणत रखी काय ।
 दत्त दान मान करुणादि आधि । दुखिया दे आपध मेढ व्याधि ॥ १५ ॥
 जाके शिर कर धर कह्यो सोय । अजगमर आनंद नुरत होय ।
 दैत्यादि भूत डाकिनी नारि । मरजाद सींच नहिँ पाँच धारि ॥ १६ ॥
 हिड्क्यो तन मिरगी अबुध होय । फीयो लिप बहुविधि रोग कोय ।
 नर नारि पशू जो शरण आय । जल पियाँ तृपा ज्युँ रोग जाय ॥ १७ ॥
 जाच्यो नहिँ ऊणत रखी कोय । लघु दीरघ भिन्न न भेद होय ।
 अनवी नुय लागे आन पाय । कर दरशन चरचा पोष थाय ॥ १८ ॥
 उपदेश राम निज मंत्रसार । दशहू दिशि सिपसाखा अपार ।
 कर रामत मालागर मँझार । नृप गूड देश दक्षिन सुढार ॥ १९ ॥
 गुर्जर धर पावन करी सोय । थलवट मुरधर धिन धन्य होय ।
 दिग्विजय अंगंजी भक्ति साज । कहुँ जगत मेख तप तेज राज ॥ २० ॥
 निःशंक सदा आनंद सोय । औघट विन घाटी विकट होय ।
 सुख दुख हरप न शोक मान । शत्रूज मित्र सब एक जान ॥ २१ ॥
 निज धर्म सनातन सारसार । गहिलयो हंस ज्युँ खीर बार ।
 अज चींटी कुंजर एक जान । कहुँ हानि वृद्धि नहिँ भेद मान ॥ २२ ॥
 सब विश्व ब्रह्ममय दृष्टि देख । उर उपज महा उद्योत एक ।
 रत ब्रह्मवाद विद्या प्रकाश । मद मोह द्रोह कर काम नाश ॥ २३ ॥
 रह प्रसन्न सदा सम भाव दास । विज्ञान ज्ञान पूरण प्रकास ।
 मत अडिग सदा कूटस्थ जान । मिथ्या भ्रम ग्रंथी हृदय भान ॥ २४ ॥
 मन वाच काय पीयूष प्रवीन । त्रय भवन सबै उपकार कीन ।
 सब वृक्ष साधुपद गमन कीन । पापान मान मद सजा दीन ॥ २५ ॥
 मान्या न मान संत सेव कीन । अति दुखी दरिद्री सार लीन ।
 लूले कहुँ पंगू मूक सोय । चपहीन बधिर पुनि वृद्ध होय ॥ २६ ॥
 कहुँ ठीक ठौर ताके न काय । बल विना निबल चाल्यो न जाय ।
 निरधारो आधार जान । सबहीके रक्षक ढाल मान ॥ २७ ॥
 बुधि भल क्षम मति चित उक्तसार । वानी विवेक अविरल उचार ।
 अनुभव रस छोलों जुगति जोर । नित वधे पंचालीचीर कोर ॥ २८ ॥

दीरघ चपु दरशन दीपमान । उद्योत कर ज्यों प्रगट भान ।
 सोमत समाको रूप सार । मोहत करत चरचा उचार ॥ २९ ॥
 काव्य जु बँध करिता छंदसार । ततकाल कहत नहि लइत पार ।
 सरस्वति गनपति गुरु वेदव्यास । शिव बालमीकि कवि गुरु जास ॥ ३० ॥
 यह भए कवी आगे प्रत्यक्ष । देख्यो दयाल सशय न चिन्त ।
 नहि हुते प्रगट पटुमी क्या । कलि दाव देत भकी पयाल ॥ ३१ ॥
 निज राममय प्रगट प्रताप । घटघट प्रति व्यापक ग्रह आप ।
 कुन जानत निगुन सगुन जोत । कलि काल दाल सँत गाहि होत ॥ ३२ ॥
 कधि मथ कर काव्या घृत्तसार । लीनो तत छोई दई डार ।
 फल कतर करत करदम निछोर । निरमल जल परिहे शक्ति जोर ॥ ३३ ॥
 गुनमयी ज्ञान भक्ती निरोल । या भिन भिन कीहा तोल तोल ।
 सज सुखि चेताए जठर जीव । मिट गये दोष सुखिया सदीप ॥ ३४ ॥
 कटि गये परम सय भरम भान । दूयत ले तारे नाम ज्याज ।
 तिर आप श्रीर तारे कितान । तरणी इष्टान्त गुरु साख भास ॥ ३५ ॥
 कर भजन प्रथम निर्मल शरीर । रसना रस अमृत लहे सीर ।
 परफार धार सुमरण विधान । अघ मध उतम अति उतम जान ॥ ३६ ॥
 मुखकमल पलकी चार भास । कँठ कमल पलकी पट प्रकास ।
 खुल अष्ट पलकी उरमँहार । नामी खुल पोइश पल सार ॥ ३७ ॥
 मन पवन मिले दोनों प्रकार । हुन सुख हुन मेला कर गुँजार ।
 फिर शब्द गमन आगे खलाय । मिद मूलचक्र पाताल जाय ॥ ३८ ॥
 उलटा सु पलट यह अगम खेल । जीता गढ़ घनी मेर पेल ।
 मिगिया इन्वीसु छेद जाय । निकसे गज भाजे सुई माँय ॥ ३९ ॥
 यहा कमल पल यत्नीस होय । शत्रू सब मित्री भया सोय ।
 आगे चल त्रिगुटी तख्त माँय । तहा जीय शिव मिल एक थाय ॥ ४० ॥
 सहस्रादि पलकी कमल भास । जहा जममरणनी मिटी जास ।
 जहा सुरत शब्द मिल करत बैल । मिल हस परमईस अगम खेल ॥ ४१ ॥
 नवधाम परे अपरम अपार । सो मता समाधी सत सार ।
 महामाया ज्योती प्रकृति सार । गुन आतम इच्छा भावपार ॥ ४२ ॥
 पर भावे बैरल ग्रह होय । जहा जीय शीत मिल नहीं दोय ।
 आया जहा मिलिया सत जाय । कर बैरल भक्ती मुक्ति माँय ॥ ४३ ॥
 कर विष्णुउज्ज वैकुण्ठमाँहि । गम प्राण चलम लीजे घघाँहि ।
 लक्ष्मी ले परकर सय साय । धन धन्य करत वैकुण्ठनाथ ॥ ४४ ॥

कर भक्ति प्रगट मम नाम सोय । वंशोधर सुत सम नहीं कोय ।
 यों उर्ध्व लोक उच्छ्व अपार । यहां छाल आप निज सुरत धार ॥ ४५ ॥
 दे सैन प्रथम सबको जनाय । इक पद फरमायो राग माँय ।
 हम हैं परदेशी लोक साध । कब आन मिलेंगे मेढि व्याध ॥ ४६ ॥
 ततकाल दर्ई पत्री लिखाय । निजगुरुद्वारेसुं महुंत आय ।
 सब भाई चाई मिले जाय । करदरशन परसन पोष पाय ॥ ४७ ॥

दोहा ।

इह प्रकार निरधार करि, आदि अंत मध सोय ।
 दीन दयाल दयालु बिच, भिन्न भेद नहीं कोय ॥ १ ॥

छंद गीतक ।

घिन छाल सतगुरु प्रगट इल पर मनुज तन धर आविया ।
 अंकुर जीवाँ उदय कारन भूरि मोसर पाविया ॥
 अरु समत एके आठ ऊपर वर्ष पोडश सारही ।
 पुनि मास मिंगसर तिथि उजाली अग्यारस भृगुवारही ॥
 ता दिवस धर अवतार नर तनु जगत सारो जीतिया ।
 महा अगंजी दिग्विजय करिके वरप गुनतर वीतिया ॥
 इक मास ऊपर प्रगट पुनि ता दिवस पनरे पर भए ।
 तब करी इच्छा मोक्ष की निज लोक की चितवन ठए ॥
 तहाँ माघ वद तिथि भई दशमी मध्यदिनमणि आवियो ।
 तब स्पर्शन उर्धा लैचिके निज सुरत शब्द मिलावियो ॥
 सब भये विलखे रामजन किमु दर्श बिजुरन सहि सके ।
 विन नीर मच्छी कमल विन दिन बचन बानी सब थके ॥
 है नैन सहजल हियो भरभर रुदन कर कर उच्चरे ।
 इक बेर छाल कृपालु दरशन देहु सब संकट टरे ॥
 पुनि सभामंडन भर्म खंडन तार ग्रंथों कुन करे ।
 पेवास सर तरु नारि नर अरु सकल दुख दूभर भरे ॥
 निज जान अनुचर कृपा कर कर हाथ शिर धर दाखियो ।
 वरदान पूरणदास माँगे सदा चरणों राखियो ॥ १ ॥

सोरठा ।

रटके मनके माँहि, चित भटके दशहूँ दिशा ।
 किनके खटके नाँहि, छाल तणा दुख दरद की ॥ १ ॥

तटवे तूटो नाँहि फटवे नहि फूटो हिया ।
 अटवे किम उरमाहि, लटवे लोह लगर जडयो ॥ २ ॥
 शरणागतकी लाज, आन परी हे आपरू ।
 ले वहियो महारान, पतती पूरणदास कू ॥ ३ ॥

दोहा ।

लीला जन्म दयालुकी, को करि सने विचार ।
 बुधि प्रमाण धर्मेन करी, सतगुरु अमम अपार ॥ १ ॥

॥ इति ॥

इस उक्त जन्मलीलाप्रयसे निश्चय होता है कि, आप भाक्षात् भगवत् अवतार ही थे । आपके अनेक परचे हुए और आपने जगद्वितीय बहुतसी अनुभवनाणी प्रगट की ।

आप की सिंहथलधाममें जो गुरुभक्ति थी वह तो गुरुप्रकण और बाणीसे स्पष्टही प्रगट हो रही है । सम्बत् १८५५ आषाढ शुक्ल ८ गुरुवार को श्रीहरदेव दासजी महाराज के आग्रहसे आप गादी निराजे ।

और सबसे पहिले दर्शनाथ गुरुधाम सिंहथल पधारकर फिर रामत बगेरह में पधारे । बीसोहीवार खैरापे तथा अन्य भेलों में महत्त महाराज श्रीरघुनाथ-दासजी महाराज को पधराए । सम्बत् १८८० में मालवा व गूडवाणे की बड़ी रामत तथा सम्बत् १८८३ में गुजरात की बड़ी रामत साथ ही में करवाई ।

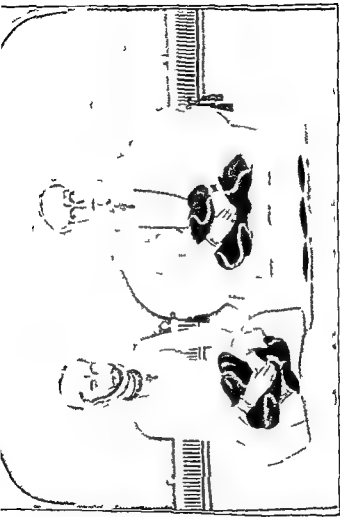
कहाँतक आपका गुरुधाम में प्रेम वणन किया जाय : धामपधारने के समय श्रीगुरुधाम सिंहथल पत्रिका में महन्त महाराज श्रीरघुनाथ दासजी महाराज को पधराय दर्शन कर फिर परलोक पधारे ।

(श्रीपूर्णदामजी महाराज)

आपने मालवा प्रान्त ग्राम भेलकी में सम्बत् १८२८ चैत्र कृष्ण २ को वैश्यकुल में जन्म धारण किया । सम्बत् १८३८ के

१—देशाटन । जिस रामतसे सं० १८८३ पाणव १ १३ को दोनों महन्त महाराज पीछे खैरापे पधारेये ।

२—संवत् १९ ६ में एक सिंहथल महत्त महाराज कीही मालवा और गूडवाने की रामत हुई ।



Sgt II of ID of Vietnam
(Ned p)

Sgt I of ID of Vietnam
(Ned p)

श्रीमहन्त महाराजके सामिल आपने तीन चौमासे जोधपुर करवाए । राजामहाराजाओं मे कई पधरावणियें साथ मे हुई । और कई रामते सामिल करवाई । और मेलोंपर साथमे पधारनेकी तो गिनती ही क्या है ।

आपने सम्बत् १९४६ में जीविन महोत्सव (मेला) करवाया जिसमें श्रीगुरुधाम सिंहथल महन्तमहाराज श्रीचेतनदामजी महाराजका हाथी होटे वधावणा, मुहर मोतीयोसे तिलक, आरती, जरी पग मडा भेट पूजा, शाल दुशाला ओढावणी आदिसे कितने सत्कार के साथ स्वागत किया उस समय के उत्सव आनन्दको वही जान सकते हैं जिन्होंने दर्शन कीए हैं । सम्बत् १९५० में आप धाम पधारे ।

सोरठा ।

यहाँ मदा सुख ऐन, प्रसिद्ध आपरे तेजही ।
 वहाँ सदा सुखचेन, सदाघणाभल चाहिए ॥ १ ॥
 तमतो करुणानिधान, ज्योतिरूप जगदीश हो ।
 कागदमोहि विधान, हमको लिखियो चाहिए ॥ २ ॥
 कागद लिखत समाज, आप कृपानित राखजो ।
 बाह गल्लोंकी लाज, विरद गवरो जानिके ॥ ३ ॥

अहो महाराज । आपरे शरीर रो जल प्रसाद सुगवाम सुख पोदन सुख असवारी आनन्द रा परम जतन रखावसी । जतन तो श्रीरामगुरुदयालजी करण समर्थ छे । परन्तु दासरो योही परापरी धर्म छे सु हाथ जोड अर्ज मालूम करी चाहिर्जे । अहो महा राज । उठे साध थानारामजी रतनदासजी जेसारामजी भुगारामजी लछीरामजी मगनी-रामजी दयारामदासजी पीतमदास निर्भेराम नेतराम हीरदास मोहनदास निश्चलदास आशाराम जैतराम जसुराम रतिराम जुगतिराम छोटियो आशाराम आदि राम परिवार में सर्वेने राम राम फरमावसी । और अठे साध ब्रह्मदामजी खरूपदासजी तुलसीदासजी श्रद्धादास जसारामजी जगजीवनदासजी जैतराम रामरतन आत्माराम हारलाल नगा राम दूजो आत्माराम दूजो तुलसीदास भगवानदास कोमलदाम खरूपराम विरक्त श्यामदास चतुर्दास जानदास मुकुन्ददास आशाराम मोहनदाम केशवदाम सेवादास रामजीदास भगनीराम रामकृष्णदास गजाराम रामप्रताप दुर्गदास शिवरामदाम नान-गदास हिम्मताराम ओर हाली विसर्जो देवो चतुरो रूपाराम आदि सर्वका दउवत् परि-कमासहित रामराम मालूम होसी । कृपा अनुग्रह घणी रखावसी ओर मेह पाणी मोकला छे । शाखा वाड़ी छोटकी छे और समाचार आत्माराम मालूम करसी सो जगावसी सम्बत् १९१३ भादवासुदि १ वार अदितवार

चाहते थे । और नितनी भावना व नम्रता के साथ आप गुरुधाम को विनयपत्र लिखाया करते थे ।

१ विनयपत्र —

॥ श्रीरामजी ॥

स्वस्ति श्रीविद्यल राम मोहाय नमः । अद्य बुद्धि जयो मंगल रामधाम साकेत धाम परम पुनीत सप्त थोत गंगा अङ्गसठ तीर्थ आनन्दधाम सार २ स्थान रामजीक मङ्गलानन्द विराजतम् त्रिविधताप जन्माजन्म कल्मष पाप हरता ऐसी २ अनेक ओपमा गुरु दयालु विराजते त्रिगुणि हमारे प्रणाम धारम्बार श्रीगुरुदयालजी बाणी निहाल कारण कृपाळु बन्दी छोड़ना सहृदय महाराज परउपकारी सिधकारी सचिदानन्द आनन्दधाम श्रीगुरुसाहिब भक्तिपुत्र अज्ञानहरणकारण करण ज्ञानमूर्ति ध्यानमूर्ति जत सत साब शील सतोय दिव्य सविप्रकाश भग्नार ज्योतिरूप महत्त भगवन्त पूर्ण कलाजीवम मुक्तिगामी निर्धार आधार अनुचो गुवि अनाथो सनाथ कर्ता विप्रदर्ता गुरु ॥ भगवन्त गुरुप्रेम दाता दशदोषहर्ता शान वैराग्य भक्ति के दाता सर्व सिद्धिकारी आत्मशांति मनभावन सिद्धिस्थायी धारणप्रतिपालक श्रीगुरुमहाराज श्रीगुरुभ्यो प्रणम्य नमस्तु ते दिव्यके साधारणमुरतके ज्योति मन समेदताके सुधानक मीनके भीर आधार बगके पर आधार प्राणके स्वास आधार प्रज्ञाके राज प्रतिपालक आधार राजाके तपस्या संपुनीत आधार सर्वके मणि आधार पतित विद्या आधार कृपाणके कृपि आधार कमलके सूरज आधार चक्षोरके सवि आधार जोगी के योगबल आधार सर सरके जल आधार दिव्यके श्रीगुरुदेवजी महाराजको आधार हृदभावना आधार श्रीमह तामहाराज स्वप्नदमनगुरु पद सरोज प्रकाश चरणारविन्द आनन्दद श्रीगुरु दयालजी जीवोती जहाज तरणनार मुक्तिके दाता महाराज राजनके राजा हो ।

चन्द्रायणा ।

ओपम और अनेक मन्त्रों कहत है तमकुं सबही शोम बदायुण मदन्त है ।

धीरज मेदसमन तरणिज्यु मास हो हरिहो जीतल्वन्द समान शीलकी रास हो ॥ १ ॥

नीर क्षीर निरताय हृदमतिज्ञान है साँव झूठ करमिध सर्व विधि जान है ।

धीरज स्थान समाधि हृदिमन जीतहो हरिहो निराकार मिलेय व्रत अद्वैत हो ॥ २ ॥

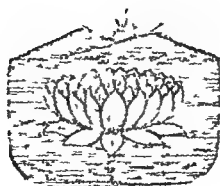
अहो महाराज श्रीदयालु पूर्णरत्न कृपाविधान स्वयं भग्न सचिदानन्द श्री श्री श्री श्री श्री १०८ एति श्रीशोभिनम् देहरूप नाम महाराज श्रीमहत्तमहाराज श्रीचेतन दासजी महाराज के हजर लिखितम् मैरणा राममोहनजी साक्षात्शब्द गुणम पदरज

१०८ चरणोंको अठ्ठार हाथलुहास अर्जुनदास शम्भुदासदास दत्तद विनयीसहित रामराम माठम होसी ।

श्रीगुरुधाम महन्ताँ महाराज श्रीरामप्रतापजी महाराजके चरणारविंदोंमें जो आपका प्रेम था वह प्रशसनीय था । साथहीमें मेले महोत्सव जोधपुर राममहोले चातुर्मास आदि करवाए बूढ़ी रतलाम आदि रजवाड़ों की पधरावणीमें साथ ही पधारे ।

श्रीअर्जुनदासजी महाराजके समानही आपने सम्वत् १९८१ में जीवित महोत्सव (मेला) किया जिसमें गुरुधाम सिंहथल महन्ताँ महाराज श्रीरामप्रतापजी महाराजकू पधराय हाथी होदेवधावणा, मुहर मोति-थोंसे तिलक, जरीपगमंडा, भेट पूजा आदि उत्सव कर गुरुद्वारा सिंहथल के साधुसन्तों को अपने हाथसे चादर, ओढावणी ओढाकर मेलेमें देशी परदेशी सब साधु रामस्नेही भावस्नेही आयेंथे तिन सबको दर्शन दे पाँच महीनेवाद जोधपुर विष्णुदासजीके चातुर्मासकी पधरावणीमें स० १९८२ भाद्रपद कृष्णा ४ को मध्यान्हके २ वजे श्रीसिंहथल महन्ता महाराजके चरणारविन्दोंमें मस्तक रख जिस तरह परगाम जाते हो इसतरह परलोक जानेकी आज्ञा मांग तत्क्षण परलोक पधारगये ।

ज्योंही महन्त महाराज अपने हस्तकमलसे आपका मस्तक उठातेहैं तो आप सचमुचही इस लोकसे विदा होगए । धन्य हैं गुरुभक्त हो तो ऐसेही हो ।



(श्रीहरलालदासजी महाराज)

आपमी गुरुमहाराजके समान प्रभावशाली शुद्धान्त करण सुशील महात्मा हुए । आप दयालुता वात्सल्यता औदार्यता की तो मानो मूर्ति ही थे । आपके अहंकाराभिमान का तो नाम निशान ही नहीं था । सम्बत् १९५० में आप गादी विराजे । साधुओंपर आपका अगाध प्रेम था । देशी परदेशी दर्शनाथ आए हुए कोई भी साधु पीछा जानेके लिए आज्ञा मागता तो आप फरमाते माई ! जाने का नाम मतलो, जानेके नामसे ही मेरा चित्त दुस्वित होता है । मेरी आज्ञा तो यही है कि इसी घाम में मेरे पास निवास करो यों फरमाते २ ही प्रेमसे गद्गद बाणी हो जाते । जब कि आपका ऐसा भाईतपणा स्पर्ण हो आता है तो हृदय थाँभने के लिए सिवाय आँखों में से पानी निकालने के दूसरा उपाय ही क्या है ।

गुरुधर्मी भी आप पूण थे । गुरुधाम सिंहयलमें आपकी पूरी गुरुभावना थी । श्रीमहन्ताँ महाराज के चरणाबिंदोंमें जिसकदर आपका प्रेम था वह लेखनीसे लिखना अशक्य है ।

आपका प्रेम था वैसाही श्रीमहन्ताँ महाराज का आपपर प्रेम था । प्राय आप दोनों साथ ही विराजे । साथही मेलोंपर पधारते । साथही रामत करवाते । जोधपुर चातुर्मासा करवाया तो साथ ही करवाया । यहाँ तक प्रेम था परलोक पधारते समय भी सिंहयल से श्रीमहन्ताँ महाराज को पधराय दशनकर परलोक पधारे ।

(श्रीलालदासजी महाराज)

देश हूडाह घाडनामक ग्राममें सोलहवीं सरदारके घर आपका । जन्म हुआ । सम्बत् १९६८ में गादी विराजे । आपमी बड़े वैराग्यवान् भजनानन्दी महात्मा हुए । गुरुधर्म और नित्यनियमके धारण करने में तो आप जैसे आप ही थे । हर समय ईश्वरचिन्तनमें लवलीन रहा करते थे ।

करणासागरका पाठ तो आपके मनहीमनमें होताही रहताथा ।



Sri Kewal Ramji Maharaj
(Khed ipa)

(श्री १०८ श्रीकेवलरामजी महाराज)

वर्तमान समयमें आप गादीपर विराजमान हैं। आपकी जितेन्द्रियता और दयालुता तो बड़ीही सराहनीय है। आप पट्टशास्त्रनिष्णात हैं। आपके धर्मोपदेशकी कथाकी छटाकी घटाका आनदामृत बरसाना तो अपूर्वही है। आपका श्रीगुरुधाम सिंहयलमें जो प्रेम है वह अनहद है। सिंहयल पधारना, श्रीमहन्तों महाराजको पधारना परंपरासे जो सनातन गुरुधर्म बला आरहा है उसको आप अछी तरहसे निमा रहे हैं और निमाते रहेंगे।

सिंहयल सैदापाके गुरुशिष्यभावका जहा इतना घनिष्ठ सबध है जहा परस्पर इतना प्रेमभाव है तो भला दो कैसे कहेजाय "गिरा अर्थ जलवीचि सम कहियत भिन न भिन्न" "अर्थात् जैसे बाणी और अर्थ ये दोनों जल और उसकी तरंगके समान कहने में जुदे हैं किंतु मधार्धमें जुदे नहीं है" इसीलिए थाँभायत रालशाही ठिकानोंके संत महात्मा मेलेमहोत्सव चालुर्मास आदिमें सिंहयल सैदापा गुरुधामके दोनों आवा-योंको जैसे पहिले पधारते थे तैसेही आजदिनपर्यंत पधारते हैं।

सिंहयलधाममें तो आप सबका यहातक प्रेम है मेलेपर सिंहयल महन्तों महाराजको पधारनेके वास्ते खुद आप तो विनयपत्र देतेही हैं परंतु अवश्य पधारनेके वास्ते सैदापा महन्त महाराजके हस्तकमलसे भी दिरवाते हैं।

फिर देखिये कैसे गुरुधाममें भावना है अधिकारीसहित हाजरीमें सात सात मूर्तियोंसे छठीसवारी श्रीमहन्तों महाराजोंको पधारनेमें इमेशह धामकी टहल बंदगी करनेवाले साथ नहीं आसकते तो वे ऐसा न समझें कि हमको मूल गए इसलिये उन बडमागी बन्दगीदारोंको प्रसन्न रखनेके लिये धर्ममर्यादानुसार प्रत्येक मेलेकी चार चार चदरें वहीं भेज देते हैं। धन्य है साधुओंमें परस्पर प्रेम हो तो ऐसाही हो।

श्रीरामगुरुदेवजी महाराज! आप सब महात्माओंकी गुरुधाममें निरंतर ऐसी ही अटल मक्ति बनाए रखें।

दोहा ।

लिवलागी परब्रह्मसूँ, रतीनखंडे तार ।
रामानंद आनंदमें, गुरुगोविंद आधार ॥ १ ॥
इति ।

सुखमाया सूँ खरो पियारो । कबहु न सुमन्यो सिरजन हारो ॥
जोवन मद मातो अभिमानी । पर घर भटकत शंक न आनी ॥ ३ ॥
स्वारथ माँहिं चहँ दिशि ध्यायो । गोविंद को गुण कबहु न गायो ॥
ऐसे ऐसे करत व्यवहारा । आया साहिव का हलकारा ॥ ४ ॥
बांध्यो काल कियो चौरंगा । सुत ब्रेठी नारि न कोइ संगी ॥
जे तैं कर्म किया है भारी । सो अय संग सु चलै तुम्हारी ॥ ५ ॥
जम आगै ले ठाढो कीनो । धर्म राय वृद्धणकुं लीनो ॥
कीधा कौल किया तुम कर्मा । सिरजनहार न भज्यो निशर्मा ॥ ६ ॥
जिन पाणी सूँ पैदा कीयो । नर सो रूप तोहिकुं दीयो ॥
जो तूं विसन्यो मूरख अंधा । तो तूं आयो जम के बंधा ॥ ७ ॥
हरि की कथा सुणी नहिं काना । तो तूं नाहीं जम सूँ छाना ॥
साधुसंगति में कबहु न रह्यो । मुख सूँ राम कबहु नहिं कह्यो ॥ ८ ॥
हरिकी भक्ति करो नर नारी । धर्मराज यों कहै विचारी ॥
मोक्कुं दोष न दीजो कोई । जैसा कर्म भुगताऊ सोई ॥ ९ ॥
पाप पुण्यकुं न्यारा ठाणूं । जो तुम कर्म करो सो जाणूं ॥
तुमरा कर्म तुम्हें भुगताऊं । आदिपुरुष की आज्ञा पाऊं ॥ १० ॥
साहिव की आज्ञा है मोक्कुं । महा कसोटी देह तोक्कुं ॥
घड़ी घड़ी का लेखा लेऊं । कर्मादिक तेरा भरि देऊं ॥ ११ ॥
है हरि बिना कौन रखवारो । चित दे सुमिरो सर्जनहारो ।
संकटतैं हरि लेहि उचारी । निशिदिन सुमिरो नाम मुरारी ॥ १२ ॥
नाम निकेवल सब तैं न्यारा । रटत अघट घट होय उजारा ॥
रामानंद यों कहै समझाई । हरि सुमिरे जमलोक न जाई ॥ १३ ॥
इति ।

ॐ रौ रामाय नमः ।

रामानन्दमह चन्दे श्रीरामाशावतारकम् ।

आचार्याणां शिरोरत्न मन्त्रराजप्रचारकम् ॥ १ ॥

अथ श्री १०८ श्रीरामानन्दजी महाराजकृत मानसी सेवा ।

शालग्राम शब्द करि सेऊ तन तुलसी कर लीजै ।

भातम चदन घसि घसि चरचूँ इम विधि सेवा कीजै ॥ १ ॥

ज्ञानजनेऊ ध्यानधोयती शुचि का अंचला कीनै ।

काया कुम्भ प्रेम का पानी हरिवरिया भर लीजै ॥ २ ॥

दया आचार विवेक सुचीका उर अस्नान करीजै ।

इच्छा पुहुप चढाऊ पूजा मनसा सेवा कीजै ॥ ३ ॥

त्रिगुणी त्रिकुटी मन करि अर्घा सपुट ध्यान धरीजै ।

पाचों याती जोय करेनै इच्छा सेवा कीजै ॥ ४ ॥

कलह कल्पना धूप अगारी ग्रह अग्निकर खेऊ ।

उलटी घास गगन कू लागी इस विधि सेवा सेऊ ॥ ५ ॥

गुह गम मतर जाप अजप्पा हिरदा पुस्तक कीजै ।

अनुमन कथा कटु भाइ साधो इस विधि पाठ पढ़ीजै ॥ ६ ॥

बनइद घटा झालर याजै अल्प पुदप की सेवा ।

पुदप निरतर पैठा साधो रोम रोम में देवा ॥ ७ ॥

गंगा अमुना यहै सरस्वती जहँ जाय ध्यान धरीजै ।

त्रिपुटि मंदिर में पैठा साधो यहाँ जाय दर्शन कीजै ॥ ८ ॥

सहज सिद्धासन निमग्न सेऊ चित की चवरी कीजै ।

घण्टा माहि चम दलनाऊ धीरज वैठारीजै ॥ ९ ॥

कोई एक साधो मिलिया आई सब सतनका मेल ।

सतगुरु मेरे शिरपर ठाढ़ा मुँहड़ा आगै बेला ॥ १० ॥

या मेरि सेवा या मेरि पूजा ऐसी आरति कीजै ।

आत्मा तत्त्व विचारी लीजै ध्यान निरतर कीजै ॥ ११ ॥

जठ पायाण भरम की सेवा मूल मटक नहि मरना ।

सतगुरु मेरे श्रुति यताइ तय मजमागर तिरना ॥ १२ ॥

बादिर भरम कयहु नहि जाऊ अतर सेवा जागी ।

रामानन्द गंगा निर्मय आषी पारब्रह्मनिव लागी ॥ १३ ॥

संत गुणै सरधापणै वे, छिनही विसरै नांहि ।
 सुरनर मुनिजन रीझिया वे, लागिमगन धुन मांहि ॥ २ ॥
 घांसविहणी घांसली वे, बोलै अमृत वैण ।
 नितही नैडी बाजही वे, अंतर लगा नैण ॥ ३ ॥
 जैमलदास धुन ध्यानमें वे, ऊगा निर्मल सूर ।
 मुरली मांहि अगोचरी वे, ऊपर अनहद तूर ॥ ४ ॥

पद ४

मेरी जिन्द कुरवाण साईंदी सूरत पर चारी हो ॥ टेर.
 साईंदी सूरत मेरे दिलविच बसदी लागै मोहि पियारी हो ॥ १ ॥
 दर्शन तेरो जीवन मेरो मेटौ भरम अंधारी हो ॥ २ ॥
 आसन तेरो सहज सिंहासन पाँचूं प्रेम पुजारी हो ॥ ३ ॥
 जैमलदास करै अरदासा राखो शरण तुम्हारी हो ॥ ४ ॥

पद ५

कदे न उतरै खुमौर हरि रंग यूं लागो ।
 यूं लागो यूं लागो यो तो भ्रम यूं भागो ॥ टेर.
 चित्तमें चेतन ठाहन्या वे, परम तेज प्रकास ।
 वेद पुराणां गम नहीं वे, दरशन पावै दास ॥ १ ॥
 दूर ध्वजा धुन में खड़ीवे, घुरै दमामौ घोर ।
 मुरली बाजै सोहणी वे, लागि रह्या है टोर ॥ २ ॥
 मन ही में मनजानिया वे, कहवै कूं कछु नाहिं ।
 मूरख भूल्या भरम में वे, बाहिर हूंढण जाहिं ॥ ३ ॥
 गगन मंडल बादल क्षरेबे, बूठा नाम निरास ।
 पाँवस तूटा पेमका वे, भीना जैमलदास ॥ ४ ॥

पद ६

राम भजन में मन लावै संतो अनहद तार बजावै ॥ टेर.
 आतम मांही आप विचारै शब्द सुणै सुख रासी ।
 निरख निरख हिरदै में हरखै आय मिले अविनासी ॥ १ ॥
 साँचा ज्ञान ध्यान धरि हिरदै गगनमंडल मल छावै ।
 निर्मल नूर नैन रह लागी विन रसना गुण गावै ॥ २ ॥

१ तुरीका बाजा । २ छोक । ३ बाजा विशेष जिसको बजानेसे दमामी कहजाते हैं दमामा=तासा वा नगारा । ४ वर्षा । ५ तेज ।

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

अथ स्वामीजी श्री १००८ श्रीजैमलदासजी महाराज की

अनुमववाणी ।

राग काफी ।

पद १

दीस रहा दिलमोहि दर्शन साँईदा
 साँईदा साँईदा झिगमिग साँईदा ॥ टेर
 शून्यमडलमें सुण रह्याने, पाजै अनहद येण ।
 भया उजाला भैया ये, सहजा मिलिया सेण ॥ १ ॥
 निगम खोज पावै नहीने, जपतप लहे न कोय ।
 सो साँई तनमें यसेने, निमय न न्यारा होय ॥ २ ॥
 साचा साँई यूँ खडा ये सताँही सुखदेण ।
 सासाँ न्यारा करदियाने, देरया नैणा नैण ॥ ३ ॥
 जैमलदास अघसर मिल्याने, समुख सिरजणहार ।
 मरमज भागा जीयका ये, दरइया है दीदार ॥ ४ ॥

पद २

हागिरछा निजनेह दशरै द्यारीदा
 द्यारीदा द्यारीदा औघट द्यारीदा ॥ टेर
 घटमें औघट यूँ बसे ये, जैसे तिलमें तेल ।
 मैडा जगही जाणियाने, शय्या लागा सेल ॥ १ ॥
 शशिमें सूर समाइया ये, भागा है अघकार ।
 दीपक हवा निमलाने, निनघाती अगार ॥ २ ॥
 रत्न प्रभान प्रकाशिया ये, मिटिया सशय मोह ।
 किंचिन्हीं जिन जानियाने, तिन सहज पिछान्या सोह ॥ ३ ॥
 अरसे परम है मादिसमाणा, मनमिलिया उलटा उरसे ।
 जैमलदास जुगे जुग तेरा, आतम राम सदा दरसे ॥ ४ ॥

पद ३

दशरै द्वार मझार मुरली यावै सोहणी ।
 सोहणीरे सुनमाहि मुनिवर मोहणी ॥ टेर
 जधन पर कर धारिकै ये, सम आसण चितलाय ।
 निरंतरै निज नासिकाने, सुनमें मुरत समाय ॥ १ ॥

लटि धुनि है सारां निज सार ॥ २ ॥
 करि कानै करगहि दैगा तार ॥ ३ ॥
 गेहणी वाजी वणी असार ॥ ४ ॥

पद १२

हरी हरि सुमरै क्यों नाँहि ॥ टेर.
 हों अवसर वीतो जाँहि ॥ १ ॥
 जानै संपत्ति स्वप्नै माँहि ॥ २ ॥
 घणा संग ऊठि अकेलो जाँहि ॥ ३ ॥
 यो है हरि सुख विसरै काँहि ॥ ४ ॥
 तिरन को राम नाम घट माँहि ॥ ५ ॥

पद १३

आव घटंती जाय ॥ टेर.
 हरी काया देखत ही घटि जाय ॥ १ ॥
 नहिँ लामै पीछे ही पछिताय ॥ २ ॥
 करि कानै तैतही लेणा ताय ॥ ३ ॥

पद १४

नोसे साँद नैद्वारे ॥ टेर.
 हरि सोधो भवसागर में बेड़ा रे ॥ १ ॥
 में व्यापक ल्योंही है घट तेड़ा रे ॥ २ ॥
 ख पाया नित चरणों का चेड़ा रे ॥ ३ ॥

पद १५

निया सब भूली मोह्या है हृद ऊली ॥ टेर.
 पहिया चेतन विसन्या जाय ।
 ग्री ताकों देखै नाँहि ॥ १ ॥
 है ताहि न देखै कोय ।
 का नैड़ा ही निज होय ॥ २ ॥
 या जे कोइ लेवै खोज ।
 यै जव लागै मनमें मोज ॥ ३ ॥
 तिरणकुं आतमराम आधार ।
 अनुभव हूवा पार ॥ ४ ॥

अंगम निगम गति जाय न जानी पररणहार न फोई ।
जैमलदास अतर जिन सोया देखै अचरज सोई ॥ ३ ॥

राम गूढ़ी ।

पद ७

राम रक्षो गलेतान भयो ॥ टेढ
सारको सार सनल तै ऊँचो सो या तनमें साधि लयो ॥ १ ॥
आदि अनादि किता जन सी हो ताको सासो दूरि भयो ॥ २ ॥
वेद पुराण सकल में बोले भवि मुक्ति निधाम लयो ॥ ३ ॥
जैमलदास लयो चित निखे दीपन ज्यु परकास भयो ॥ ४ ॥

पद ८

मन रहै लागो मगसू ॥ टेढ
अतर माहि अगम घर देखे मेद रहै परघर सू ॥ १ ॥
चेतन में चित जाय समाधि निरख रहै निपया घन सू ॥ २ ॥
बिबुदी ध्यान लगावे ताली तोडि चले तातो तन सू ॥ ३ ॥
जैमलदास साइवे शरण पेसो मेद रहै जन सू ॥ ४ ॥

पद ९

देखो निरजन की छविनाइ ॥ टेढ
ज्यों ज्यों प्रीति लगी निशिवासर ह्यों ही मइ है ज्योति सदाई ॥ १ ॥
जोग विरोध विमोहको नातो यारों छेद रही निज पाई ॥ २ ॥
अवगति परस मया जे पेसा लागे नहीं शुभाशुभ काई ॥ ३ ॥
जैमलदास चरण चित लागा या निधिमें सतगुरु हीत पाई ॥ ४ ॥

पद १०

मेरो नेह लयो निर्मल धुन सू ॥ टेढ
तेज प्रकाश भयो या तनमें रीशुरहो मनही मन सू ॥ १ ॥
अतर ज्योति जगी झिगाभिग चित लयो उनही उन सू ॥ २ ॥
दिल माही दीया निज दर्शन क्या कहू किनही किन सू ॥ ३ ॥
जैमलदास परस पिउ प्यार आतम मित्र सदा तनही तनसू ॥ ४ ॥

पद ११

सुखे आय मिलेने रसना राम पुकारसी ॥ टेढ
तन मन लाय लाय चित चरणे तोडि कनैगा पार ॥ १ ॥

हरि है दाता देह का तार्ते भया सकाम ।
 गुरु है दाता ध्यान का मनका मेदि विराम ॥ ८ ॥
 जब तैं सर अमानता हरि सुख उपजै नॉहि ।
 जन हरिया गुरु ध्यान दे किया निदुख मन मॉहि ॥ ९ ॥
 सतगुरु जो मिलता नहीं हरिया होते रीछ ।
 आपो आप न ओलखै औरा इछ पलीछ ॥ १० ॥
 सतगुरु जो मिलता नहीं आती नाहि सुमति ।
 हरिया हरि स आतरो करते काय कुमति ॥ ११ ॥
 सतगुरु जो मिलते नहीं होती तनकी हानि ।
 ज्यू पासो चोपड़ तणो हरिया हाथ न जानि ॥ १२ ॥
 हरिया पासो हाथ को होथ न अपने हाथ ।
 सतगुरु केरे शब्द बिन मन आवै नहि हाथ ॥ १३ ॥
 जन हरिया चोपड़ तणा आवै दाय अनेक ।
 सतगुरु केरे शब्द सों औसर मिलेन एक ॥ १४ ॥
 सुरति सारी निरत चोपड़ सतगुरु दाय दिखाय ।
 हरिया पासो पेम का खेलज हरि स लाय ॥ १५ ॥
 पेसे दिनेकर भेटियाँ निश्चिंकर गय नसाय ।
 जन हरिया गुरुभेटियाँ अघ अधारा जाय ॥ १६ ॥
 जन हरिया गुरु भेटिया मेठ्या अघ अधार ।
 ध्यान गुरु प्रकासिया देख्या दिल दीवार ॥ १७ ॥
 घर घर में दीपक जगै दुनियाँ देखै नॉहि ।
 सतगुरु बिन भाजे नहीं पड़दा अतर मॉहि ॥ १८ ॥
 लखचौरासी नगर में कोडी भज कोइ साह ।
 लखा हजार एक सौ जग माही बहुताह ॥ १९ ॥
 सतगुरु साहकार है शिष सौदागर जान ।
 जन हरिया रखै नहीं रती न अतर कान ॥ २० ॥
 हरिया सौदो साह को लेसी सिखे मोल ।
 बिन तोल बिन ताऊड़ी तत्त तराजू तोल ॥ २१ ॥
 सौदा सतगुरु स किया राम नाम धन काज ।
 लाम न कोइ छेदेबो तोटा सयही भाज ॥ २२ ॥
 सतगुरु बिन सौदा किया जन हरिया बेकाम ।
 साफट पेसे सूकरा हाँड़े घर घर जाम ॥ २३ ॥

सतगुरु संग सौदा किया गाहिक ज्ञान विचार ।
 जन हरिया जय जाणिये पूंजी पार उतार ॥ २४ ॥
 राम नाम सौदागरी करि करि लीजै लाह ।
 जन हरिया हक साहके ना कोई अनहक राह ॥ २५ ॥
 हरिया सौदा शब्द का दूजा सौदा नाहि ।
 दूजा सौदा सो करै खांड परै मुखमाहि ॥ २६ ॥
 राम नाम सौदा किया दूजा दाण चुकाय ।
 जन हरिया गुरु ज्ञान का तौंडा देह लदाय ॥ २७ ॥
 तौंडे नार्यक नाम निज गुण की गूण भराय ।
 लदै पलाणै सुरति मन ज्ञान बलधिया थाय ॥ २८ ॥
 आढा पड़दा दूर करि अगम दिखाई वाट ।
 जन हरिया गुरु महर तें लंघिया अवघट घाट ॥ २९ ॥
 अवघट घाटी नीसन्या देख्या देव अपार ।
 जन हरिया शिर ऊपरै सतगुरु सिरजन द्वार ॥ ३० ॥
 सतगुरु मिलियो बाहिरो होती हाँसा खेल ।
 कूवै गोसी कोस ज्युं हरिया पाछो ठेल ॥ ३१ ॥
 जवरो गोसी कूप जग वारो आवै जाय ।
 हरिया गुरु बांही गहै आत जात अटकाय ॥ ३२ ॥
 सतगुरु मोकुं धीरदे एकजदाखी सीख ।
 जन हरिया गुरु सीख विन भरुं न दूजी वीख ॥ ३३ ॥
 सीख सुनाई सुध भई तन आपो विसराय ।
 जन हरिया मन गैक हुय तर्क फेक नहिं थाय ॥ ३४ ॥
 सतगुरु बाह्या शब्द सर मूक्यो हृदय मझार ।
 भौंदू था सो भाजिग्या भेदी रखा विचार ॥ ३५ ॥
 सतगुरु बाह्या शब्द सर सनमुख लागा आय ।
 सुगुरा सोई चेतसी निगुरां गम्भ न काय ॥ ३६ ॥

१ खांड व्यंग है अर्थात् वृद्ध । २ कर । ३ बालद, सोचत । ४ मुखिया । ५ छटिया ।
 ६ विनो । ७ चवस खेलनेवाला । ८ धक्कादेना । ९ डग । १० अपनापन । ११ मम ।
 १२ वादविवाद । १३ छोडा । १४ अज्ञानी ।

१५ गुरु उपदेश कहाकरै दुराराध्य ससार ।

बसै सदा जाके उदर जीव पचपरकार ॥ १ ॥

हैषा प्रभु चूषा चतुर सैषा रोचक शुद्ध ।

कैषा दुर्वृद्धी विकल घैषा घोर अबुद्ध ॥ २ ॥

हरि है दाता देह का तार्ते भया सकाम ।
 गुरु है दाता ध्यान का मनका भेटि विराम ॥ ८ ॥
 जब तें सर अघानता हरि सुख उपजै नॉहि ।
 जन हरिया गुरु ध्यान दे किया निदुख मन मॉहि ॥ ९ ॥
 सतगुरु जो मिलता नहीं हरिया होते रीछ ।
 आपो आप न ओलखै और ईछे पलीछ ॥ १० ॥
 सतगुरु जो मिलता नहीं आती नाहि सुमति ।
 हरिया हरि स आतरो करते काय उमति ॥ ११ ॥
 सतगुरु जो मिलते नहीं होती तनफी हानि ।
 ज्यू पासो चोपड़ तणो हरिया हाथ न जानि ॥ १२ ॥
 हरिया पासो हाथ को होय न अपने हाथ ।
 सतगुरु केरे शब्द बिन मन आवै नहि हाथ ॥ १३ ॥
 जन हरिया चोपड़ तणा आवै दाय अनेक ।
 सतगुरु केरे शब्द सों ओसर मिलेन एक ॥ १४ ॥
 झुरति सारी निरत चोपड़ सतगुरु दाय दिखाय ।
 हरिया पासो पेम का खेलज हरि सू लाय ॥ १५ ॥
 ऐसे दिनेकर भेटियां निश्चिंकर गए नसाय ।
 जन हरिया गुरुभेटियां अघ अघारा जाय ॥ १६ ॥
 जन हरिया गुरु भेटिया भेट्या अघ अघार ।
 ध्यान गुरु प्रकासिया देख्या दिल दीदार ॥ १७ ॥
 घर घर में दीपक जगै दुनियाँ देखै नॉहि ।
 सतगुरु बिन भाजै नहीं पढ़दा अतर मॉहि ॥ १८ ॥
 लखचौरासी नगर में कोही धज कोइ साह ।
 लखा हजार पक सौ जग माही चहुताह ॥ १९ ॥
 सतगुरु साहकार है शिप सौदागर जान ।
 जन हरिया राखै नहीं रती न अतर कान ॥ २० ॥
 हरिया सौदो साह को लेसी सिरदे मोल ।
 बिन तोला बिन ताकड़ी तत्त तराजू तोल ॥ २१ ॥
 सौदा सतगुरु सू किया राम नाम धन काज ।
 लाम न कोई छेदड़ो तोटा सबही भाज ॥ २२ ॥
 सतगुरु बिन सौदा किया जन हरिया बेकाम ।
 साफट ऐसे सूकरा हाँड़े घर घर जाम ॥ २३ ॥

जन हरिया सतगुरु इसा जैसा होवे भृंग ।
 कीट परांसे पोखदे करै आप से रंग ॥ ५२ ॥
 जिन गुरु ती हरि प्रामियाँ भरम न राख्या कोय ।
 जन हरिया क्या अरपिये दीजै तन मन दोय ॥ ५३ ॥
 जन हरिया भव जुगन में सतगुरु करी सहाय ।
 आदू अपना जानिके हाथ लिया विलमाय ॥ ५४ ॥
 लोह पलट कंचन भया पारस का परताप ।
 जन हरिया सतगुरु करै आप सरीपा आप ॥ ५५ ॥
 जन हरिया सतगुरु करै ऐसा है इकतार ।
 जैसे कूं तैसा करै ज्यों दरपन दीदार ॥ ५६ ॥

इति ।

अथ गुरु शिष्य को प्रसंग ।

शिष सतगुरु पै जायके चरण नवाए शीश ।
 जन हरिया सतगुरु किया चेला राम चरीश ॥ १ ॥
 शिष सेती सतगुरु कहै परा परीकी रीत ।
 और भरम कूं छांडि दे राम नाम सूं ग्रीत ॥ २ ॥
 शिष मन को नारेल करि ले गुरुचरणां चाढि ।
 हरिया सतगुरु देत है अपना अंतर काढि ॥ ३ ॥
 अंतर जिसकूं दीजिये हरिया अंतर देह ।
 आपा अंतर बाहिरो जासूं किसान सनेह ॥ ४ ॥
 हरिया भेद न दीजिये बाकै अंतर खोट ।
 तन तैं नान्हा हुय मिलै मन तैं बड़िममोट ॥ ५ ॥
 हरिया तन का क्या दिया जो मन दुर्विधा आनि ।
 तन मन भीतर एक है ताहि दिया सब जानि ॥ ६ ॥
 ताहि दिया सब जानिया बाकै अंतर साच ।
 हरिया कबहुं मुख ते अर्सेत न आखै वाच ॥ ७ ॥
 मुख तैं मीठा चोलणा अंदर भरिया खार ।
 बाकै कूड़ रु कपट का हरिया बहुत व्योहार ॥ ८ ॥
 हरिया तन हरि का दिया मन हरि कै नहिं हाथ ।
 मन कूं गुरु परबोधिके दई नाम सी आथ ॥ ९ ॥

१ श्रेष्ठ । २ चरीश=समुद्र । ३ छोटा । ४ बडप्पन । ५ भेदभाव । ६ झूठ ।
 ७ प्रबोधिके=सचेतकर । ८ संपत्ति ।

हरिया सतगुरु शब्द की मुखमर चाहे मूठ ।
 आगे शिप सामा खड़ा दिया जगत ऊँ पूठ ॥ ३७ ॥
 जन हरिया गुरु सूरवा करे शब्द की चोट ।
 सिख सूर तन जो लहै आनि धरे नहि ओट ॥ ३८ ॥
 सतगुरु का सिख सूरवा त्यागै तन मन प्रान ।
 हरिया साँलै रैन दिन शब्द लगाया वान ॥ ३९ ॥
 भागा सूर न बज्जई भागा गुरु ने गाल ।
 भणिया पफ़ल मल लखे दोऊ दल विचाल ॥ ४० ॥
 सतगुरु वाछा मूठ भर शब्द सताणा एक ।
 जन हरिया उर बीच में करिया लेक अनेक ॥ ४१ ॥
 पर उपकारी गुरु मिल्या भक्ति यत्नाया भेष ।
 योही सुमरण हरि कया याही सहजों सेव ॥ ४२ ॥
 जन्म जन्म के बीचरे अब न्यू आवै ठाय ।
 जन हरिया गुरु आपना पलमाही समझाय ॥ ४३ ॥
 जन हरिया गुरु आपना लेपहुँचे पर गाँव ।
 जिन गुरु शब्द न जानिया घका बीचमें खोव ॥ ४४ ॥
 कीड़े जाई लकड़ी ज्यू काया कू काल ।
 गुरु बिन कोइ न ऊँरि मध्य स्वय पाताल ॥ ४५ ॥
 ब्रह्म अग्नि तन बीच में मयूरि काढे कोय ।
 उलटि काल कू खात है हरिया गुरु गम होय ॥ ४६ ॥
 सतगुरुती ससा मिट्या भया निससै जीव ।
 जन हरिया मुझि प्रामिया आदि अतका पीव ॥ ४७ ॥
 सतगुरु जो मिलता नहीं तो लेते कुल खोज ।
 जन हरिया सतगुरु मिल्या इसोन आनै रोज ॥ ४८ ॥
 जन हरिया सतगुरु इसा जिसा कैमागर होय ।
 शब्द मैसकला फेर करि दाग न राखे कोय ॥ ४९ ॥
 जन हरिया सतगुरु इसा जैसा होय लोहार ।
 तन लोहा ज्यू ताव दे काट न राखण हार ॥ ५० ॥
 जन हरिया सतगुरु इसा जिसा सरैरु होय ।
 मन तरकस का तीर ज्यों पाव न राखे कोय ॥ ५१ ॥

हैंषा सिद्ध कहै सब कोऊ सैंषा लेंषा मूरख दोऊ ।

पैंषा थोर बिकट ससारी पैंषा जीव मोझ अशिकरी ॥ १ ॥

१ मुनीभरकर । २ जोसे । ३ बिकलीगर । ४ शाण । ५ बाणवनानेदार ।

राम नाम कूं छांडि कै, हरिया धरै न और ।
 जे कोई धरै दूसरा, हरि दरंगै नहि ठौर ॥ ४ ॥
 अविनाशी कूं याद करि, परिहरि दूजी आस ।
 हरिया गुरु समझाय के, दीया नाम निरास ॥ ५ ॥
 पोथी पुस्तक टीपणो, जग पंडित को काम ।
 हरिया हिरदै संतके, रामनाम विश्राम ॥ ६ ॥
 जैसा भोजन जीमिये, तैसा आवै खाद ।
 या तन का सारा नहीं, मनसा इसी मुराद ॥ ७ ॥
 जाके मन जैसी वसै, तैसी मन वरताय ।
 जन हरिया जो आदि है, अंत खड़ी है आय ॥ ८ ॥
 रामनाम विन मुक्ति की, जुक्ति न ऐसी और ।
 जन हरिया निशिदिन भजो, तजो दूसरी ठौर ॥ ९ ॥
 जन हरिया समझाय कै, गुरु बताया मेव ।
 रामनाम तुल दूसरा, देव न कोई सेव ॥ १० ॥
 रामनाम जपता रहै, तजै न आसा आन ।
 जन हरिया उन जीव की, मिटै न खांचा तान ॥ ११ ॥
 रामनाम ज्यों ज्यों भजै, त्यों त्यों तजै सकाम ।
 जन हरिया सुन सेइमें, मनवा करै मुकाम ॥ १२ ॥
 जोजरै वेडै वैसतां, जल में जोखा होय ।
 हरिया हरि सुमिरन विना, भवजल तिरै न कोय ॥ १३ ॥
 जानीतल कूं जाणि कै, मारग बूझ्या नाहिं ।
 जन हरिया विन बूझियों, आंधा ऊझड़ जाहिं ॥ १४ ॥
 रामनाम कूं सुमरियै, आपो तन मन सोध ।
 हरिया मारग मुक्ति का, याही गुरु परबोध ॥ १५ ॥
 रामनाम निज मूल है, और सकल विस्तार ।
 जन हरिया फल मुक्ति कूं, लीजै सार संभार ॥ १६ ॥
 जन हरिया निशि दिन भजो, रसना सेती राम ।
 नाम विना जीतव किसो, आय जाय बेकाम ॥ १७ ॥
 हरिया जव लग जीविये, तव लग नाम उचार ।
 तन सूं पड़सी अंतरो, पीछै कौन विचार ॥ १८ ॥
 जन हरिया पहली करो, गुरु गोविंद सूं प्रीति ।
 ता पीछै मन सूं तजो, लोक लाज कुल रीति ॥ १९ ॥

या गुरु कू क्या दीजिये दीजे अपनो मन्त्र ।
 मन के पृष्ठे सब दिया हरिया तनरु बचध ॥ १० ॥
 मन को देवो दुलभ है जो कोइ मन कू देत ।
 जन हरिया मन देत है तन करि जानै रेव ॥ ११ ॥
 मन मेरा सेवग भया लग्या शब्द गुरु कान ।
 रोम रोम में भिद गया हरिया किधून जान ॥ १२ ॥
 दास भाव सब ही किया दीया मन अरु तन्त्र ।
 हरिया पीछे क्या रखा गुरु दरशन परसध ॥ १३ ॥
 हरिया गुरु दरशन कियो कटे कोटि अपराध ।
 सोई निशि दिन धिन घडी होय समागम साध ॥ १४ ॥
 साधु समागम सफल है हरिया तन मन जानि ।
 जैसा चाहि बीज कू तैसा लुणसी जानि ॥ १५ ॥
 हरिया गुरु का सत शब्द साँचे मनसु धारि ।
 भवसागर में झूयतों लेसी पार उतारि ॥ १६ ॥
 जन हरिया गुरु आपनै शब्द कहा समझाय ।
 वृजा भ्रम अरु कर्म कू पल में देह बहाय ॥ १७ ॥
 हरिया जैमलदास गुरु राम निरजन देव ।
 काया बेचल देहरो सहज हमारे सेव ॥ १८ ॥

चद्रायणा ।

सतगुरु का शिष जानि रिचारे ज्ञान कू ।
 तन मन सौंपे सीस धर उर ध्यान कू ॥
 निशि दिन सुमरे राम क्यू नहि भूलरे ।
 हरिदा दास कहै हरिराम ताहि नहि तूलरे ॥ १९ ॥
 इति ।

अथ उपदेश को अंग ।

तन मन का अपण फरै, घाचा सूर नरेश ।
 जन हरिया हरिनाम का, पसा है उपदेश ॥ १ ॥
 कारन कारनयत के, उर आपस में आन ।
 जन हरिया यों ब्रह्म है, सही हृदय करि जान ॥ २ ॥
 तेरु जल तिर नीसरै, का बेरै सिर घेठि ।
 जन हरिया जग क्यू तिरै, विना ज्ञान गुरु पैठि ॥ ३ ॥

देहा=हृदा ।

है, सो जाणै तन पीर ।
 विन, क्या जाणै बेपीर ॥ १० ॥
 ना तन पीरा होय ।
 , पीर न बूझै कोय ॥ ११ ॥
 , हरिया अंतर माँहि ।
 , ऊठण की सुधि नाँहि ॥ १२ ॥
 , अंग अंग में एक ।
 , करिगी छेक अनेक ॥ १३ ॥
 , करिया देह दुसारै ।
 का ऊ चाहण द्वार ॥ १४ ॥
 सूर सत सुजाण ।
 ड़घा तलपकै प्राण ॥ १५ ॥
 रहा मेरे अंग ।
 रगै न दूजा रंग ॥ १६ ॥
 रिया अंतर माँहि ।
 और किसी की नाँहि ॥ १७ ॥
 सुधि बुधि विसरी सार ।
 रै चीर सिणगार ॥ १८ ॥
 नतैं जरजर होय ।
 म निजर भरि जोय ॥ १९ ॥
 काम न होय ।
 हरिया अंग थकोय ॥ २० ॥
 , धूआं निकसै नाँहि ।
 जिसकै घट माँहि ॥ २१ ॥
 , जमुन की तीर ।
 नि, अब कहै जाऊं वीर ॥ २२ ॥
 शैं विरह का खेल ।
 , जाल न मच्छी झेल ॥ २३ ॥
 रे रहा कदे न जाय ।
 कुं काल न खाय ॥ २४ ॥
 ,
 , तार ॥ २५ ॥

या गुरु कू क्या दीजिये दीजे अपनो मध ।
 मन के पूछे सब दिया हरिया तनरु बचध ॥ १० ॥
 मन को देवो दुलभ है जो कोइ मन कू देत ।
 जन हरिया मन देत है तन करि जानै रेत ॥ ११ ॥
 मन मेरा सेवग भया लग्या शब्द गुरु कान ।
 रोम रोम में भिद गया हरिया किधून जान ॥ १२ ॥
 दास भाव सब ही किया दीया मन अरु तन ।
 हरिया पीछे क्या रह्या गुरु दरशन परसध ॥ १३ ॥
 हरिया गुरु दरशन कियो कटे कोटि अपराध ।
 सोइ निशि दिन धिन घडी होय समागम साध ॥ १४ ॥
 साधु समागम सफल है हरिया तन मन जानि ।
 जैसा पाई बीज कू तैसा लुणसी आनि ॥ १५ ॥
 हरिया गुरु का सत शब्द साँचे मनसु धारि ।
 भयसागर में झूयतों लेती पार उतारि ॥ १६ ॥
 जन हरिया गुरु आपनै शब्द कहा समझाय ।
 वृजा भ्रम अरु कम कू पल में देह वहाय ॥ १७ ॥
 हरिया जैमलदास गुरु राम निरजन देव ।
 काया देवल बहरो सहज हमारे सेव ॥ १८ ॥

चद्रायणा ।

सतगुरु का शिष जानि विचारै गान कू ।
 तन मन सौंपे सीस धरे उर ध्यान कू ॥
 निशि दिन सुमरै राम कबू नहि भूलरे ।
 हरिदा दास कहै हरिराम ताहि नहि तूलरे ॥ १९ ॥
 इति ।

अथ उपदेश को अग ।

तन मन का अर्पण करै, वाचा सूर नरेश ।
 जन हरिया हरिनाम का, पसा है उपदेश ॥ १ ॥
 कारन कारनवत कै, उर आपस में जान ।
 जन हरिया यों ब्रह्म है, सही हृदय करि जान ॥ २ ॥
 तेरु जल तिर नीसरे, का वेरै सिर पेठि ।
 जन हरिया जग फ्यू तिरै, विना गान गुरु पैठि ॥ ३ ॥

राम नाम कूं छांडि कै, हरिया धरै न और ।
 जे कोई धरै दूसरा, हरि दरंगै नहि ठौर ॥ ४ ॥
 अविनाशी कूं याद करि, परिहरि दूजी आस ।
 हरिया गुरु समझाय कै, दीया नाम निरास ॥ ५ ॥
 पोथी पुस्तक टीपणो, जग पंडित को काम ।
 हरिया हिरदै संतके, रामनाम विश्राम ॥ ६ ॥
 जैसा भोजन जीमिये, तैसा आवै स्वाद ।
 या तन का सारा नहीं, मनसा इसी मुराद ॥ ७ ॥
 जाकै मन जैसी वसै, तैसी मन बरताय ।
 जन हरिया जो आदि है, अंत खड़ी है आय ॥ ८ ॥
 रामनाम विन मुक्ति की, जुक्ति न ऐसी और ।
 जन हरिया निशिदिन भजो, तजो दूसरी ठौर ॥ ९ ॥
 जन हरिया समझाय कै, गुरु बताया मेव ।
 रामनाम तुल दूसरा, देव न कोई सेव ॥ १० ॥
 रामनाम जपता रहै, तजै न आसा आन ।
 जन हरिया उन जीव की, मिटै न खांचा तान ॥ ११ ॥
 रामनाम ज्यों ज्यों भजै, त्यों त्यों तजै सकाम ।
 जन हरिया सुन सेझमें, मनवा करै मुकाम ॥ १२ ॥
 जोजरै वेडै वैसतां, जल में जोखा होय ।
 हरिया हरि सुमिरन विना, भवजल तिरै न कोय ॥ १३ ॥
 जानीतल कूं जाणि कै, मारग बूझ्या नाहिं ।
 जन हरिया विन बूझियाँ, आंधा ऊझड़ जाहिं ॥ १४ ॥
 रामनाम कूं सुमरियै, आपो तन मन सोध ।
 हरिया मारग मुक्ति का, याही गुरु परबोध ॥ १५ ॥
 रामनाम निज मूल है, और सकल विस्तार ।
 जन हरिया फल मुक्ति कूं, लीजै सार संभार ॥ १६ ॥
 जन हरिया निशि दिन भजो, रसना सेती राम ।
 नाम विना जीतव किसो, आय जाय बेकाम ॥ १७ ॥
 हरिया जब लग जीविये, तब लग नाम उचार ।
 तन सुं पड़सी अंतरो, पीछै कौन विचार ॥ १८ ॥
 जन हरिया पहली करो, गुरु गोविंद सुं प्रीति ।
 ता पीछै मन सुं तजो, लोक लाज कुल रीति ॥ १९ ॥

राम नाम निशि दिन भजो, तजो विद्याणी तात ।
 जन हरिया नर देह सो, औसर वीतो जात ॥ २० ॥
 राम अनो रे प्राणियों, मन परतीति लगाय ।
 जन हरिया परतीति विन, जन्मबन्धकारय जाय ॥ २१ ॥
 इन औसर भजि राम कू, करि करि मन में ख्याति ।
 हरिया पेम पियास विन, चढे न चोली भाति ॥ २२ ॥
 बदा करिये यदगी, आतम सू आधीन ।
 जन हरिया दम दम घटे, यो तन होसी छीन ॥ २३ ॥
 सहजा सार्ह सुभिरिये, आलस ऊघ न आन ।
 जन हरिया तन पेसणो ज्यो जलपडर जान ॥ २४ ॥
 हरिया राम सभारिये, वूजी चिंत निवार ।
 वूजी चिंता जो करे, तो तन जासी द्वार ॥ २५ ॥

इति ।

अथ ज्ञान सजोग विरह को अम ।

दीपक पावक तेल भरि, पिच याती सजोग ।
 जन हरिया जय यकटा, पढे पतगा जोय ॥ १ ॥
 तन दीपक मन तेल भरि, जीव पतगा जेम ।
 पावक रूपी राम है, हरिये लाया पेम ॥ २ ॥
 विरहा भाया ज्ञान का, आपो अतर मेढ ।
 जन हरिया जव विरहिनी, पिउ परमानद मेढ ॥ ३ ॥
 विरह सजोगा ज्ञानका, सुधि बुधि गुणा गंभीर ।
 जन हरिया अज्ञान कू, काढ़ि निरुसै तीर ॥ ४ ॥
 और विरह किस काम का, विना विचान्या ज्ञान ।
 जन हरिया विरह जाणिये, अतर उपजै ध्यान ॥ ५ ॥
 विरहा मेरे सिरधणी, उडैत छोंड़ नाहि ।
 जन हरिया विरह लेचले, सुखसागर के मोंहि ॥ ६ ॥
 इनको प्याणो दुलम है, ज्या खाडा की धार ।
 हरिया सरसर नीर कू, निरही पीवन द्वार ॥ ७ ॥
 जन हरिया वन वन फिरी, सोंह कारण तुज्जि ।
 विरहा ज्ञान प्रकासिया अदर पाया मुज्जि ॥ ८ ॥
 हरिया मेरे को नहीं, तमसा आतम राम ।
 तू घट घट में रमि रहा, सारत है सन काम ॥ ९ ॥

विरह स तीरा तन बहै, सो जाणै तन पीर ।
 जन हरिया तन पीर विन, क्या जाणै बेपीर ॥ १० ॥
 पीर पराई सो लहै, ता तन पीरा होय ।
 जन हरिया बेपीर तन, पीर न बूझै कोय ॥ ११ ॥
 विरह सतीरा बहिगया, हरिया अंतर माँहि ।
 लागत ही सँ गिर पन्या, ऊठण की सुधि नाँहि ॥ १२ ॥
 विरह भाल जाकै लगी, अंग अंग में एक ।
 जन हरिया तन बीचमें, करिगी छेक अनेक ॥ १३ ॥
 विरह भालेका बहि गया, करिग्या देह दुसारै ।
 का लागी सो जाणसी, का ऊ वाहण द्वार ॥ १४ ॥
 विरह भाल सँ मरिगया, सूर सत सुजाण ।
 जन हरिया सेजीवता, पढ़या तलपकै प्राण ॥ १५ ॥
 भली करी तैं आवतैं, विरहा मेरे अंग ।
 एक रामैयो रमि रह्यो, लगै न दूजा रंग ॥ १६ ॥
 विरहा तू आयो भलाँ, हरिया अंतर माँहि ।
 राम दिवानी करि गयो, और किसी की नाँहि ॥ १७ ॥
 विरहनि मारी विरह की, सुधि बुधि विसरी सार ।
 हरिया सिर सँ डारिया, हीर चीर सिणगार ॥ १८ ॥
 जन हरिया जोवन गयो, तनतैं जरजर होय ।
 मारी मरुं न विरह की, राम निजर भरि जोय ॥ १९ ॥
 पाँवां सेती पंगली, कर सँ काम न होय ।
 वाहण बहिग्यो विरह को, हरिया अंग थकोय ॥ २० ॥
 जन हरिया विरह परजल्या, धूआं निकसै नाँहि ।
 का झल लाई सो लहै, का जिसकै घट माँहि ॥ २१ ॥
 विरहा मोकुं ले चल्या, गंग जमुन की तीर ।
 जन हरिया जल विच अगनि, अव कहँ जाऊं वीर ॥ २२ ॥
 ब्रह्म अगनि जलमें जगै, जहाँ विरह का खेल ।
 जन हरिया जहां विलंबिया, जाल न मच्छी झेल ॥ २३ ॥
 जहाँ झीवर का जाल है, विरहा कदे न जाय ।
 हरिया घट विरहा बसै, जाकुं काल न खाय ॥ २४ ॥
 मुँहरेड़ी आया भलाँ, विरहा ज्ञान विचार ।
 जन हरिया अव आवसी, सुखसागर भरतार ॥ २५ ॥

इति ।

अथ परचै को जग ।

प्रथम ध्यान पूरव दिसा, गगन गरजिया जाय ।
 ठाम ठाम पाताल कू, पछै पछिम कू थाय ॥ १ ॥
 सुरति चली आकास कू, दे जालधर वध ।
 जन हरिया जहँ जाणिये, हृद बेहद की सध ॥ २ ॥
 बीच मेरु ते गिर पडधा, घरणी घरै न पाव ।
 जन हरिया जव सूर कू, खरै खेत का दाव ॥ ३ ॥
 लगी चोट मन मरम की, खूला ब्रह्मकपाट ।
 मेयासा सय जीत कै, बस्या नगर वैराट ॥ ४ ॥
 घाट बिफट पैराट की, पोहँखेगा कोई सूर ।
 हरिया कायर एक रक्षा, दरगै रहिया दूर ॥ ५ ॥
 दृष्टि देख सकको कहै, सुपनेऊ कह सोय ।
 जन हरिया गम अगम कू, ताहि धतावै कोय ॥ ६ ॥
 सुरति धतावै ब्रह्म कू, रुहै अगम की यात ।
 जन हरिया जहँ की रुहै, तदा नहीं दिन रात ॥ ७ ॥
 सुरत वसी अमरा पुरी, यरत ब्रह्म की आण ।
 विन घाणी हरियो पडे, जहँ नहि वेद पुराण ॥ ८ ॥
 तीन पोलं तर्फिया सिरै, बीच मेंडे मैदान ।
 जन हरिया घर दान्य में, सहज धुरे नीसान ॥ ९ ॥
 जीव सीय की सध में, लगे पात उछान ।
 जन हरिया जहँ होत है, केती विधि का तान ॥ १० ॥
 झालर ताल मृदग डफ, धन अनहद की घोर ।
 हरिया एक अखड है, ररकार की डोर ॥ ११ ॥
 शब्द एक ररकार की, महिमा वही न जाय ।
 जन हरिया विन देखिया, और न को पति आय ॥ १२ ॥
 शब्द एक ररकार की, महिमा कोटि अनत ।
 कहि कहि थाके मुनि जना, हरिया आदि न अत ॥ १३ ॥
 अखड एक ररकार की, रोम रोम धुनि होय ।
 जन हरिया जा विच लगी, ता तन जानै सोय ॥ १४ ॥

१ पथिमतन । २ त्रिजुटी । ३ युद्ध । ४ सुप्रगुणाद्वार । ५ गड । ६ लबा चौडा,
 विस्तृत । ७ मुख हृदय वस्त्र । ८ आश्रय देने का स्थान । ९ योगसाधन की एक
 । १० उनबाध तानोसे ८१ • कृतान निकले हैं ।

देखत ही दिल परचिया, मिट्या अपरचा मन्न ।
 जन हरिया विन देखियो, ताहि न परचै तन्न ॥ १५ ॥
 विन पाँवाँ जहाँ नाचिवो, विन कर ताल बजाय ।
 विना राग रीझायवो, विना कंठ सुर गाय ॥ १६ ॥
 विना ज्ञान गुण बूझिवो, विना सीख समझाय ।
 विना दृष्टि जहाँ देखिवो, हरिया ध्यान लगाय ॥ १७ ॥
 विना नीच जहाँ देहरो, विना पूज जहँ देव ।
 विन वाती दीपक जगै, विन मूरति जहँ सेव ॥ १८ ॥
 विना पेड जहाँ वृक्ष है, विना फूल फल लाय ।
 विना पंख जहाँ भँवर है, अधर विलंबे आय ॥ १९ ॥
 विना नीर जहाँ कमल है, विन वरपा वरसाल ।
 विना मास विन रैत्त है, मात पिता विन बाल ॥ २० ॥
 विना जात विन वरण है, विना भ्रात विन बैन ।
 हरिया ऐसा ब्रह्म है, सुन्या न देख्या नैन ॥ २१ ॥
 हरिया बाल न बृद्ध ऊ, ना तरणा ऊ तन्न ।
 निरालंब सुन में रमै, निराकार निरंजन्न ॥ २२ ॥
 विन तीरथ जहँ न्हाइयो, विना वाट विन घाट ।
 जहँ कोइ शहर न सोवती, हरिया विणज न द्वाट ॥ २३ ॥
 वहँ कोइ भर्म न कर्म है, वहँ कोइ लिपै न लेस ।
 जन हरिया जहँ की कहै, तहँ नहि देस न बेस ॥ २४ ॥
 जहँ कोइ जोग न जुगति है, जहँ नहि देग न तेग ।
 हरिया दवा न वेदवा, जहँ नहि पौन न वेग ॥ २५ ॥
 वहँ नहि राग न दोष है, वहँ नहि राज न तेज ।
 वहँ नहि नारि न पुरुष है, हरिया लेज न देज ॥ २६ ॥
 वहँ कोइ रिद्धि न सिद्धि है, वहँ नहि पुण्य न पाप ।
 हरिया विषय न वासना, वहँ उत्थप नहि थाप ॥ २७ ॥
 वहाँ न हृद वेहद है, वहाँ नाद नहि विंद ।
 जन हरिया वहाँ ब्रह्म है, जरा न व्यापै जिंद ॥ २८ ॥
 वहँ कोइ चंद न सूर है, वहँ नहि धर आकास ।
 हरिया एको अधर है, ब्रह्मानंद विलास ॥ २९ ॥
 तीन लोक चवदै भवन, उत्पति परलै होय ।
 हरिया एको अमर है, मरै न जीवै कोय ॥ ३० ॥

वहँ कोइ ऊच न नीच है, वहँ नहि नाम न ठाम ।
 हरिया आपो आप है, सतन का बिधाम ॥ ३१ ॥
 यधन तँ निर्वध भया, मिल्या सून्य घर जाय ।
 हरिया सुरति रु शब्द का, निमय ध्यान लगाय ॥ ३२ ॥
 लगी सुरति सत शब्द सु, कबहु खडे नाहि ।
 जन हरिया मन मिल रखा, आर पार पद माहि ॥ ३३ ॥
 अध ऊरध के बीच में, हरिया झिलमिल जोत ।
 सुरति शब्द परचा भया, मिले जोत अरु पोत ॥ ३४ ॥
 सुरति समाधी ग्रह में, ग्रह निरतर वास ।
 जन हरिया जहँ काल का, जोर जवर नहि जास ॥ ३५ ॥
 जन हरिया दिल भीतरै, दोसत अपना राम ।
 करु न दूजा दोसती, या जग जाया जाम ॥ ३६ ॥
 आतम का सुख जाणिया, भया परम सतोष ।
 जन हरिया जय जाणिये, याही जीवतमोष ॥ ३७ ॥
 पाख्रह के देस का, दो राहा बिच राह ।
 जन हरिया मन सचरे, भेटण दिल दरगाह ॥ ३८ ॥
 पाख्रह के देसहै, अदल नको फदलाह ।
 हरिया जामण मरणरा, भेट्या दुइ धदलाह ॥ ३९ ॥
 जन हरिया उन देसहै, पारह मास घसत ।
 सदा फलैगी वनस्पति, बिलैप्या जीव न चित ॥ ४० ॥
 जन हरिया उन देसहै, पारै मास सुकाल ।
 भूख रुपा नहि व्यापहै, दुभस पड़े न काल ॥ ४१ ॥
 जन हरिया उन देसहै, मास दिवस नहि रिच ।
 है जहँ गाज न बीनरी, सरवर भरिया निच ॥ ४२ ॥
 जन हरिया उन देसहै, अविनासी की आन ।
 और किसी रा डर नहीं, हिंदु न मुस्सलमान ॥ ४३ ॥
 जन हरिया उन देसहै, आतम पको पार ।
 दानव कोइ न देवता, निरदावै ससार ॥ ४४ ॥
 लख चौपसी नगर का, हरिया ग्रह नरेरा ।
 है जहँ चूरु न चामरी, पटा न पलटै देश ॥ ४५ ॥
 हरिया पाटन पुर नगर, राव रुक नहि भूप ।
 अलख अमगी आप है नारि न पुरुषारूप ॥ ४६ ॥

१ इसक । २ गैर इबादत । ३ प्राचीन बना शहर । पुर, पुरी नगर, न
 पल पटनेदन, निगम, कटक, स्थानीय, पट, इनमें कुछकुछ भेद है ।

हरिया हरिजन एक है जीव सीव नहिं दोय ।
नीर मिलाना नीर में, फिर न्यारा नहिं होय ॥ ४७ ॥
जन हरिया मन मेरु करि, चढ़या त्रिवेणी गंग ।
गंगा जमुना गोमती, नाहत है अण भंग ॥ ४८ ॥
उलटा चढ़ असमान कुं, मिले त्रिवेणीतट ।
जन हरिया जहँ मंडिया, सुरति शब्द का मट ॥ ४९ ॥
सुरति शब्द के मट की, है अजरायल चाट ।
जन हरिये जहँ घर किया, लोक वेद सूँ फाट ॥ ५० ॥
सुरति शब्द मिल एकठा, ता विच रही न काण ।
जन हरिया सुन सेइ का, सहजाई सुख माण ॥ ५१ ॥
तट त्रिवेणी नीर की, चलै सीर चहुँ ओर ।
जन हरियै सो चखिया, चिखै न रखी कोर ॥ ५२ ॥
पड़ै पुबंग तहँ पेम की, एक अखंडी धार ।
हरिया हरिजन पीवसी, दुनिया सुधी न सार ॥ ५३ ॥
बादल बूठा पेम का, नख सिख भीना रोम ।
हरिया सो सुख जाणसी, जिन पाई पर भोम ॥ ५४ ॥
अरध कमल में बैस करि, भँवरो रह्यो लिपट ।
जन हरिया जव जीवको, सांसो गयो सिमट ॥ ५५ ॥
भँवरो वास बिलंचियो, फूल न आयो गट्टि ।
हरिया आशा छाड़िके, रह्यो निराशा मट्टि ॥ ५६ ॥

इति ।

अथ चैतावनी को अंग ।

मेर नगारा आरवी, केते गये वजाय ।
जन हरिया किन बहुरि के, वात न वूझी आय ॥ १ ॥
वात बटाऊ देसकी, कहै सुनै सब कोय ।
जन हरिया उन देसकी, कहै सुनै नहिं कोय ॥ २ ॥
नैणा नेह निहारती, न्यारी निमिष न होय ।
जन हरिया तन भीतरै, पड़या दिनंतर जोय ॥ ३ ॥
पान तंवोली चाबते, मसी कबोड़े दंत ।
जन हरिया दिन एक में, मुख धूडी वूंकंत ॥ ४ ॥
जन हरिया कर कंपिया, डोलण लगा शीश ।
तोइ न अंधा चेतही, आपनपौ जगदीश ॥ ५ ॥

निसि दिन दोढ़े धन करै, सहै धाम सिर सीत ।
 जन हरिया नर छोड़िग्यो, खाट खटाऊ मीत ॥ ६ ॥
 खाटी दाटी रहगइ, उछी न चाली साथ ।
 जन हरिया जग दीन बिन, हाथ्यो रीते हाथ ॥ ७ ॥
 ओछे पाणी मच्छली, किसी निंदकी आस ।
 हरिया सास सरीर मे, वसै किता दिन घास ॥ ८ ॥
 ऊचा नीची सफल में, एक किसी म नहिं ।
 जन हरिया जामण मरण, लख चौरासी माहिं ॥ ९ ॥
 लख चौरासी जीवहा, सवे काल की चारि ।
 जन हरिया जब ऊरै, सत का शब्द सँमारि ॥ १० ॥
 सब जग यध्या जेबैसी, निर्बंधन नहिं सोय ।
 हरिया सो निर्बंध है, राम सनेही होय ॥ ११ ॥
 जग माही केता धरु, टाभ्या केम डरत ।
 जन हरिया गहु राम कू, पडि पडि भी ऊठत ॥ १२ ॥
 पाच सात पचीस में, बरष एउसो बीस ।
 घरटी ऊन्या अन्न ज्यों, कै पीसा कर पीस ॥ १३ ॥
 पड़ितायेंगो प्राणिया, हरिखू पडि से दूर ।
 जन हरिया मन चेतलै, है तन सास हजूर ॥ १४ ॥
 कुल के मारण जग चले, ज्यों फीदी कुल नाल ।
 हरिया टले त ऊरै, नहि तो लूटे काल ॥ १५ ॥
 पान पड़ते यू कल्यो, सुण तरवर की टाल ।
 मेरो तो दिन पूजिग्यो तेरो आयो काल ॥ १६ ॥
 टाल पुकारे डाढ कू, सुणो हमारी बात ।
 मेरी ऊमर खूटिगी, तेरी आई घात ॥ १७ ॥
 डाढ पुकारे मूल कू, वारी आइ तुज्झ ।
 जन हरिया अब चेतलै, जगम मरणो मुज्झ ॥ १८ ॥
 चारो घारी ऊठिगे, कली काल के लोग ।
 हरिया पूठे पुगड़ा, उनका आया जोग ॥ १९ ॥
 हरिया राग न रीझियो वेद न विद्या पाठ ।
 पाया जाती एउली, साथै कप्फण काठ ॥ २० ॥

१ खाट खटोला=बधना मोरिया, गृहस्थीका सामान । २ श्रीकृष्ण कहाइ । ३ दाटी
 हुइ । ४ खाडी । ५ रस्सी । ६ चडी । ७ छोटी टहनी । ८ मालु खर गइ । ९ पीछे ।
 १० बधा बधी ।

पलंग पथरणे पौढ़ते, लेले सीरख सौढ़ ।
 सोवे सीढ़ी साथरे, दौड़ि सके तो दौड़ ॥ २१ ॥
 मीठा मेवा जीमते, बहु भोजन बहु भांत ।
 तासुं तन छेती पड़े, जन हरिया कर ख्यांत ॥ २२ ॥
 अमल कटोरा गालते, माचा भरि भरि लेह ।
 जन हरिया दिन दस्सके, का कोइ घरस करेह ॥ २३ ॥
 प्याला भरि भरि पद्मणी, पिवै पिलावै पीव ।
 जन हरिया जव क्या करै, जम लेजासी जीव ॥ २४ ॥
 पैड़ी पैड़ी पाँव दे, सूते मन्दिर माहिं ।
 जन हरिया तोइ जीवकी, घात टरैगी नाहिं ॥ २५ ॥
 कनक महल ता बीच में, ढोले अंगन काच ।
 हरिया एकै नाम विन, नाच गये बहु नाच ॥ २६ ॥
 खासा कपड़ा पहरते, सोंधा अंग लगाय ।
 जन हरिया वे मानवी, मिले खाक दरँ जाय ॥ २७ ॥
 आडे तेढे चालते, खांगी पाघ झुकाय ।
 हरिया छाया निरखते, सेभी गये विलाय ॥ २८ ॥
 ऊँचा मंदिर बीच घर, जहँ करते घरवास ।
 होसी घोरां बीच घर, लेण नदै इक सास ॥ २९ ॥
 सुंदरि विना न सारते, निशि दिन करते नेह ।
 से जंगल में पोढ़िया, हरिया एकल देह ॥ ३० ॥
 कुल मरजाद न लोपते, मरते लोका लाज ।
 नागा करि करि काढ़सी, हरिया कालक आज ॥ ३१ ॥
 माटीका देवल किया, काची कली लगाय ।
 नहीं भरोसा रहनका, हरिया वार न लाय ॥ ३२ ॥
 माँझ्या, सो ढह जायगा, माटी तणा मँझाण ।
 जन हरिया जमरायका, आवैगा फरमाँण ॥ ३३ ॥
 पाँटण मंडँप पुर नगर, ढहि ढहि होसी ढेर ।
 जन हरिया जग जावसी, जे कोइ लावै घेर ॥ ३४ ॥
 देवल ढहता देखिया, देख न भया उदास ।
 जन हरिया उन मूढ़को, हृदौ न खलै जास ॥ ३५ ॥
 नहीं गरीबी दीनता, साहिव को डर नाहिं ।
 जन हरिया, तन लूटसी, गाम गली के माहिं ॥ ३६ ॥

निसि दिन दोहै धन करै, सहै धाम सिर सीत ।
 जन हरिया नर छोडिग्यो, खाट खटाऊ मीत ॥ ६ ॥
 खाटी दौटी रहगइ, कुछी न चाली साथ ।
 जन हरिया जग दीन बिन, हाल्यो रीते हाथ ॥ ७ ॥
 ओले पाणी मच्छली, किसी जिंदकी आस ।
 हरिया सास सगरि में, बसै किता दिन वास ॥ ८ ॥
 ऊचा नीची सकल में, एक किसी में नाहिं ।
 जन हरिया जामण मरण, लख चौरासी माहिं ॥ ९ ॥
 लख चौरासी जीवड़ा, सरी काल की चारि ।
 जन हरिया जय ऊरै, सत का शब्द सँभारि ॥ १० ॥
 सत्र जग बध्या जेबेडी, नियधन नहिं कोय ।
 हरिया सो निर्वंध है, राम सनेही होय ॥ ११ ॥
 जग माही केता धका, टान्या बेम डरत ।
 जन हरिया गहु राम कू, पडि पडि भी ऊठत ॥ १२ ॥
 पाच सात पबीस में, वरप एरुसो बीस ।
 घरीटी ऊन्या अत्र ज्यों, के पीस्या फइ पीस ॥ १३ ॥
 पडितावेगो प्राणिया, हरिस् पडि से दूर ।
 जन हरिया मन चेतलै, है तन सास हजूर ॥ १४ ॥
 कुल के मारग जग चलै, ज्यों कीडी कुल नाल ।
 हरिया टले त ऊरै, नहि तो लूटै काल ॥ १५ ॥
 पान पड़ते यू बहो, सुण तरवर की टाल ।
 मेरो तो दिन पूजिग्यो तेरो आयो काल ॥ १६ ॥
 टाल पुरारि डाल कू, सुणो हमारी बात ।
 मेरी ऊमर खुटिगी, तेरी आई घात ॥ १७ ॥
 डाल पुरारि मूल कू, वारी आई तुज्जि ।
 जन हरिया अत्र चेतलै, जगम मरणो मुज्जि ॥ १८ ॥
 वारो वारी ऊठिगे, कली काल के लोग ।
 हरिया पूठै पुगड़ा, उनका आया जोग ॥ १९ ॥
 हरिया राग न रीक्षियो वेद न बिद्या पाठ ।
 काया जासी एकली, साथै कण्फण काठ ॥ २० ॥

१ खाट खटोना=बनाता बरिया गृहस्थीका सामान । २ श्रीगुरु कमाइ । ३ दटी
 दुई । ४ खाटी । ५ रस्ती । ६ बडी । ७ डोरी टहनरी । ८ आयु खूब बढ़ । ९ पीछे ।
 १० बधा बधी ।

पलंग पथरणे पौढ़ते, लेले सीरख सौड़ ।
 सोवे सीढ़ी साथरे, दौड़ि सके तो दौड़ ॥ २१ ॥
 मीठा मेवा जीमते, बहु भोजन बहु भांत ।
 तासूं तन छेती पड़ै, जन हरिया कर ख्यांत ॥ २२ ॥
 अमल कटोरा गालते, माचा भरि भरि लेह ।
 जन हरिया दिन दस्सके, का कोइ वरस करेह ॥ २३ ॥
 प्याला भरि भरि पद्मणी, पियै पिलावै पीव ।
 जन हरिया जव क्या करै, जम लेजासी जीव ॥ २४ ॥
 पैड़ी पैड़ी पाँव दे, सूते मन्दिर माहिं ।
 जन हरिया तोइ जीवकी, घात टरैगी नाहिं ॥ २५ ॥
 कनक महल ता बीच मे, ढोले अंगन काच ।
 हरिया एकै नाम विन, नाच गये बहु नाच ॥ २६ ॥
 खासा कपड़ा पहरते, सोंधा अंग लगाय ।
 जन हरिया वे मानवी, मिले खाक दर जाय ॥ २७ ॥
 आडे तेढे चालते, खांगी पाघ झुकाय ।
 हरिया छाया निरखते, सेभी गये विलाय ॥ २८ ॥
 ऊंचा मंदिर बीच घर, जहँ करते घरवास ।
 होसी घोरां बीच घर, लेण नदै इक सास ॥ २९ ॥
 सुंदरि विना न सारते, निशि दिन करते नेह ।
 से जंगल में पोढ़िया, हरिया एकल देह ॥ ३० ॥
 कुल मरजाद न लोपते, मरते लोका लाज ।
 नागा करि करि काढ़सी, हरिया कालक आज ॥ ३१ ॥
 माटीका देवल किया, काची कली लगाय ।
 नहीं भरोसा रहनका, हरिया वार न लाय ॥ ३२ ॥
 मांड्या सो ढह जायगा, माटी तणा मँड़ाण ।
 जन हरिया जमरायका, आवैगा फरमाँण ॥ ३३ ॥
 पाँटण मंडँप पुर नगर, ढहि ढहि होसी ढेर ।
 जन हरिया जग जावसी, जे कोइ लावै घेर ॥ ३४ ॥
 देवल ढहता देखिया, देख न भया उदास ।
 जन हरिया उन मूढ़को, हृदौ न खूलै जास ॥ ३५ ॥
 नहीं गरीबी दीनता, साहिव को डर नाहिं ।
 जन हरिया तन लूटसी, गाम गली के माहिं ॥ ३६ ॥

१. शरीक । २. सुगंधित मसाला । ३. राख । ४. गढ़ा । ५. फरमान=परवाना=राज-
 कीय आज्ञापत्र । ६. छत, दूसरी मजिल । ७. वारह दरी ।

हरिया सौई सुमरिये, परहरिये पर निंद ।
 साचै सौई बाहिरो, झूठी तेरी जिंद ॥ ३७ ॥
 जन लग सौई याद कर, तय लग पिंजर सास ।
 हरिया पाणी ओस का, ऐसी तन की आस ॥ ३८ ॥
 चाल पणै नहीं चेतियो, तन तरुणापोयाय ।
 जन हरिया वृद्धहि भयो, तोइ न चेत्यो जाय ॥ ३९ ॥
 हाथ पाँव सिर कपिया, आख्या भयो अघार ।
 फाँलों ती पडर भया, हरिया चेत गिघार ॥ ४० ॥
 मात न तात न भ्रात सुत, सगा न सुदरि साथ ।
 हरिया आसी एकलो, करि बोलाऊ हाथ ॥ ४१ ॥
 घाट घटाऊ सन चले, बिन्मं वासो होय ।
 जन हरिया सौई विना, बार न तेरा कोय ॥ ४२ ॥
 जन हरिया ससारमें, देख पाँख मत भूल ।
 तेरा सज्जन को नहीं, नारायणसे तुल ॥ ४३ ॥
 घाट बिड़ोणी लोरु रिह, बिड़ही बिन्मं वास ।
 हरिया हरि विन दूसरा, ताहि किसो बिभ्वास ॥ ४४ ॥
 हरिया सगी राम गिन, या फलि मोहि न कोय ।
 काल पकड़ि ले जावसी, ऊभा देखे लोय ॥ ४५ ॥
 हरिया सगी राम है, का सतगुरु की सीप ।
 जिन पैंडे दुनियाँ चले, भरु न काई बीछ ॥ ४६ ॥
 बगो धका ॥ चेतिया, मदा क्या पठिताय ।
 हरिया लागी लाय ज्युँ, बार न काढ़या जाय ॥ ४७ ॥
 राय एक बड़ भूपती, वासो बसे सराय ।
 आये ज्युँ सब ऊठिगे, हरिया धिर नहि धाय ॥ ४८ ॥
 खड खड हुय जाहिगे, नाना नव परमार ।
 जन हरिया निरकार धिर, और अधिर आकार ॥ ४९ ॥
 रामनाम चेत्यो नहीं, माफिरपणै मँगार ।
 हरिया रहिसी पारकं, हाँली घर घर वार ॥ ५० ॥
 रामनाम नहीं चेतियो, करि करि मनकी झील ।
 जन हरिया सर जल नखो, प्यासा मरै पिपीले ॥ ५१ ॥

१ साची । २ पराया । ३ पड़ । ४ दुन्य । ५ विपना । ६ बदम ।
 ७ विरोध । ८ मुन्ध, मूख । ९ नव प्रकारके छड़ । १० नीकर ।
 ११ चिउँदी ।

रामनाम नहिं चेतियो, करी विहाणी आस ।
 हरिया से घर गोरवें, सरैयां सेती वास ॥ ५२ ॥
 रामनाम चेत्यो नहीं, आलस करि करि अंग ।
 हरिया से रीता रह्या, शूरां कूकर संग ॥ ५३ ॥
 रामनाम नहिं जाणियो, कीया और कलौष ।
 हरिया जा घर संपदा, होसी साँडा साप ॥ ५४ ॥
 रामनाम नहिं जाणियो, हाल्यो अवसर हारि ।
 बंध्यो बार नरेश के, गज सिर धूरी डारि ॥ ५५ ॥
 गज पाँवाँ सिर चंपियो, करि अंकुसकी मार ।
 हरि अंकुस मान्यो नहीं, हरिया सहसी भार ॥ ५६ ॥
 रामनाम चिन जाणिया, वासो बसै बबूल ।
 जे पागोये पग धरुं, हरिया भाजै सूल ॥ ५७ ॥
 रामनाम चिन जाणिया, वात विणंठी मूल ।
 हरिया जब होसी कहा, अंत भयो अस्थूल ॥ ५८ ॥
 या जगमाँही जीवणो, ज्युं तरवर का फूल ।
 जन हरिया इन जीव का, तन कर पहिली सूल ॥ ५९ ॥
 रूप रंग ज्यों फूलड़ा, तन तरवर ज्यों पान ।
 हरिया झोलो काल को, झड़ि झड़ि हुवै झफान ॥ ६० ॥
 हरिया झोलो कालको, सबही निकसै माँहि ।
 कोइक हरि जन ऊवरै, जाके दिशा न जाँहि ॥ ६१ ॥
 हरिया कलिमें आयकै, कहा करत है कूर ।
 आसी विरिया अंतकी, मुखाँ परैगी धूर ॥ ६२ ॥
 धकाधकीमें दिन गया, सूतां रैन विहाय ।
 हरिया हरि की भक्ति विन, कहा कियो नर आय ॥ ६३ ॥
 सूती सपनै रैन के, पाय विरलंवी सैन ।
 हरिया जाणूँ उठि मिलूं, ऊघरि आये नैन ॥ ६४ ॥
 सूती सपनै ओझंकी, बोली अटपट वैन ।
 जन हरिया घर आंगनै, सही पधारे सैन ॥ ६५ ॥
 जेतूँ सपना साँच है, साँचा सैन मिलाय ।
 जब नहिं देखूं नैन भरि, तब कैसे पति आय ॥ ६६ ॥

१-गौवका किनारा । २-सरकनेकी छपरी । ३-क्रियाकलाप, समूह । ४-नाश ।
 ५-मला । ६-डोली । ७-वनस्पतिको नाश करनेवाली हवा । ८-समय । ९-विल-
 मना । १०-सज्जन । ११-चोंकना ।

सपने ही सौई मिले, सो सौई का मित ।
 जन हरिया सो चितवै, सौई जाय मिलत ॥ ६७ ॥
 जा दिन राम न जाणियो, ता दिन भयो अकाज ।
 जन हरिया ससारमें, आय मुवा नहिं लाज ॥ ६८ ॥
 जन हरिया कायम किया, मानव तेरा मुख ।
 मुखत करता ना भजै, कैसे होय निदु ख ॥ ६९ ॥
 साँचा मुख मानव तणा, जा मुख निरुस राम ।
 जन हरिया मुख राम विन, सौई मुख वेकाम ॥ ७० ॥
 सौई मुख पमुवै दिया, सोइ मुख नरदेह ।
 शुक्लमुख सुमरे रामरू, पसषा चाय भरेह ॥ ७१ ॥
 चरन पिघनरू मुख दिया, उदर भरनके काज ।
 हरिया राम न सघरे, सो मुख जाणि अकाज ॥ ७२ ॥
 अधम उधारण याद करि, नर तेरा निस्तार ।
 हरिया अधम उधार विन, और किसो आधार ॥ ७३ ॥
 अधम उधारण याद करि, तन मन राखि निचित ।
 जन हरिया कुण भेटसी, सौई बिना सचित ॥ ७४ ॥
 अधम उधारण एक हे, दूजा उधप याप ।
 हरिया थापी यापना, जाका जपिये जाप ॥ ७५ ॥
 एक रामरू सुमरिये, दूजा धरो न चित ।
 जन हरिया नहिं राम विन, तो रखवाला निच ॥ ७६ ॥
 राम बिना कुण राखसी, ज्यु खेती फिरसान ।
 नहि तो चिटै विगाइसी, हरिया चेत अजान ॥ ७७ ॥
 हरिया निज मन चेतले, जो परबलै दौर ।
 एके सौई यादियो, धणी न दूजा ओर ॥ ७८ ॥
 धणी विहुँषा धवलहर, दहि दहि डेर घियाह ।
 हरिया पाछा आयक, वास न को बसियाह ॥ ७९ ॥
 हरिया तन को गीरेयो, कहा करै नर देख ।
 बेहमाता दाणो दले, जोरा लिपती छेप ॥ ८० ॥
 इन कायाको गीरयो, मूढ़ करो मति कोय ।
 हरिया राखणके घरा, हुई जिहा नर जोय ॥ ८१ ॥

हकों बेली हँक है, वे हकां वे हक ।
 हरिया एकै हक विन, सब दिन जाहि अनहँक ॥ ८२ ॥
 एता सुख संसार का, जेता सुख न जानि ।
 जन हरिया सोइ सुख है, जो कोइ विरला जानि ॥ ८३ ॥
 सब कोइ चाहै सुख कुं, दुःख न कोई चाहि ।
 हरिया दुख सुख सिरजिया, सोई ले निरवाहि ॥ ८४ ॥
 दुनिया रोवै रोवणा, देखि विड़ाणी खाल ।
 हरिया नाम सनेह विन, यो तन होय विहाल ॥ ८५ ॥
 हरिया रोयज रोवणा, किसके आगे जाय ।
 मात पिता सुत बंधवा, सबही जॉहि विलाय ॥ ८६ ॥
 दुनिया रोवै रोवणा, रोय रोय करै पुकार ।
 हरिया ऊ भांजै बड़ै, ज्युं भांडा कुंभार ॥ ८७ ॥
 आवण जावण आदि का, आज काल का नाहिं ।
 हरिया क्या पछिताइये, मौत सकल के माहिं ॥ ८८ ॥
 घर घर लागो लायणो, घर घर धाँह पुकार ।
 जन हरिया घर आपणो, राखै सो दुशियार ॥ ८९ ॥
 यो भिनखा तन पाइकै, भज्यो नहीं भगवान ।
 जन हरिया तन मानखो, मिलै नहीं आँसान ॥ ९० ॥
 यो तन जोवन देख नर, क्या परफूलत होय ।
 जन हरिया जलवाहला, बहतां चार न कोय ॥ ९१ ॥
 तू क्यों सूतो नींद भरि, कहा निचिंतो होय ।
 हरिया जगमें जीवका, साथी सैण न कोय ॥ ९२ ॥
 कुण बेली संसारमें, जीव एकलो जाय ।
 हरिया हरि विन दूसरा, स्वारथ केरा थाय ॥ ९३ ॥
 रामनाम विन दूसरा, संग न कोई वंग ।
 हरिया तन जोवन थकै, करो जीवका दंग ॥ ९४ ॥
 सबही स्थाणा हुय रह्या, नहीं अयाणो कोय ।
 स्थाणो सोई जाणिये, अलख ओलखै सोय ॥ ९५ ॥
 राज पाट सुत वित सबै, सुंदरि महल विलास ।
 जन हरिया हरि सुख विना, ज्यों जंगल का घास ॥ ९६ ॥

हरिया जगल घासकूँ, हखा देख मति भूल ।
 दिष्टि गहै दिन च्यार का, जाय जडा सू खूल ॥ ९७ ॥
 जन हरिया जग जात है, रहता कोऊ नाहि ।
 रहता एको राम है, न्यारा सब घटमाहि ॥ ९८ ॥
 हरि थोढो करि जाणियो, इन ओसर नर आय ।
 हरिया घणौ चितारसी, पर हथ पबसी जाय ॥ ९९ ॥
 हाथ पढ़ै जय और के, बीचैभी तन मोंहि ।
 हरिया कोली पालि जल, पहला यधी नोंहि ॥ १०० ॥
 हरिया पाल तलाव की, फाटी जव क्या होय ।
 पहल किया सो खूब है, पीछे दोंय न कोय ॥ १०१ ॥
 हरिया तन जोयन थकै, किया दिया जो जाय ।
 कीजै सुमरण रामको, दीजै हाथ उठाय ॥ १०२ ॥
 हरिया दीया हाथ का, आडा आसी तोय ।
 राम नाम कू सुमरता, पार उतारै सोय ॥ १०३ ॥
 हरिया राम सभारियै, कील करो मति कोय ।
 साम्रा पीच सघेरमें, क्या जानू क्या होय ॥ १०४ ॥
 हरिया राम सभारियै, जव लग पिंजर सास ।
 सास सदा नहि पाहुणा, ज्यू सावण का घास ॥ १०५ ॥
 जन हरिया खड़ू सावणू, सदा न हरियो होय ।
 ऐसे सास सगीरम, धिर नहि दीस कोय ॥ १०६ ॥
 हरिया हरिसो को नही, सज्जन तेरे और ।
 भेटै जामण मरण कू, दै अमरापुर दौर ॥ १०७ ॥
 हरिया जदँ अमरापुरी, तहँ हरि भक्ति सुहाय ।
 से नर हरि की भक्ति बिन, दौडथा जमपुर जाय ॥ १०८ ॥
 हरिया हरि सुभरत रदो, हालो अपने हक ।
 पहिली तन का यल यकै, पीछे रसना यक ॥ १०९ ॥
 हरिया थाके जीमड़ी, जाती सुमरण छूटि ।
 किया जाय सो कीजिये, छेसी तन धन लूटि ॥ ११० ॥
 तन कू जमरो लूटसी, लूटै धनहू लोर ।
 नान्हो करि करि वालसी, हरिया हाड ठडोक ॥ १११ ॥
 खावण पीवण छोड़िया, छोड़या घर घर यास ।
 हरिया यसती छाडिबे, करसी जगल वास ॥ ११२ ॥

हरिया सास सरीरमें, चास किता दिन होय ।
 सासो सासा घटत है, कहा निर्वितो सोय ॥ ११३ ॥
 हरिया दोली कीजिये, राम नाम की वाढ़ ।
 नहि तो जेमरो आइके, वाड़ी जाय विगाड़ ॥ ११४ ॥
 हरिया वाड़ी वीगढ़ै, सिरपर धणी न होय ।
 चिड़ियां खाया खेतड़ा, होंकल करै न कोय ॥ ११५ ॥
 जन हरिया सिर पर धणी, खड़ा खेतके माहिं ।
 करि टोहौली नामकी, विगड़न कूं कुछ नाहिं ॥ ११६ ॥

इति ।

अथ ज्ञानविचारको अंग ।

तिसिर गया रवि तेज तें, तेज गया निशि पास ।
 हरिया ज्ञान विचार तें, होय कर्म का नास ॥ १ ॥
 नाम लिया गुण ना मिट्या, तिसिर न भागा तेज ।
 हरिया ज्ञान विचार विन, रही जेज की जेज ॥ २ ॥
 गुरु पै ज्ञान न बूझिया, बूझ न किया विचार ।
 हरिया कर दीपक दिया, अंधे के अंधार ॥ ३ ॥
 उर अंधारो जहँ नराँ, सतगुरु कूं नहि भेट ।
 आये थे हरि मिलन कूं, लगी और ही फेट ॥ ४ ॥
 कहियाँ माया संपजै, मनसुं जाण्या ब्रह्म ।
 हरिया होवे मुक्खतें, उदक्यां सेती धर्म ॥ ५ ॥
 कहाँ न माया संपजै, जाण्याँ ब्रह्म न होय ।
 हरिया सुख तें उदकियां, धर्म न हूवा कोय ॥ ६ ॥
 माया दत्तवतें भई, राम भज्या सुं ब्रह्म ।
 जन हरिया कुछि होत है, कर सुं दीया धर्म ॥ ७ ॥
 कहा सुण्या तो क्या भया, बिना सुद्धबुध सार ।
 हरिया आपो उलटि के, आत्मज्ञान विचार ॥ ८ ॥

इति ।

१ निश्चित । २ घेरा । ३ मृत्यु, काल । ४ होंक मारना । ५ किलकारी ।
 ६ अंधेरा । ७ रात्रि । ८ पूछा । ९ झपट । १० दान । ११ सुधबुध=
 होस हवास ।

अथ शून्य सरोवरको अंग ।

साँसा सोय सताय तज, जाया होय अंबीह ।
 शून्य सेजमें पाइया, हरिया अविनाशीह ॥ १ ॥
 हरिया मन साँसे पडयो, कहि समझावै कोन ।
 इसतो रमतो बोलतो, ऊ रहैं करिग्यो गौन ॥ २ ॥
 हरिया सब साँसा मिट्या, गुन मिलग्या निर्गुन ।
 आघन जायन रहित हुय, सुरति समाप्ती सुध ॥ ३ ॥
 सुन सरवर बहु फेरमें, सुख सीतलता सीर ।
 हरिया एक मलडमें, ध्यान धरू ता तीर ॥ ४ ॥
 विल हरिया मन मच्छली, नीर सिरजन हार ।
 हरिया सयसू ठूँफै, विरला जाणै सार ॥ ५ ॥
 जन हरिया मन जहैं किया, सुन सरवरमें वास ।
 भेले न जामण मरण की, धरै न इसो आस ॥ ६ ॥
 जन हरिया सरवर सधै, ठाम ठाम भरपूर ।
 जहैं पायो तहैं परम सुख, दुखी रक्षा से दूर ॥ ७ ॥
 अपने घरकी गम नहीं, परघर धौंगी फौय ।
 हस हस की गम चले, काग फाग की पाय ॥ ८ ॥
 हस गयो उडि आप घर, करि सायर की सुधि ।
 हरिया सरयर सुधि विन, बूडो फाग कुजुधि ॥ ९ ॥
 जन हरिया जल पठिये, पीयो बधु भराय ।
 ऐसा कोह न देखिया, सब सरवर पी जाय ॥ १० ॥
 इति ।

अथ माया ब्रह्म निर्णयको अंग ।

ज्यों माया सू ब्रह्म है, त्यों काया से जीव ।
 जन हरिया जब अतरे, पाया जीव रु सीव ॥ १ ॥
 माया ओलै ब्रह्म है, आकारे निरकार ।
 हरिये देख्या जुगति सू, न्याय दिल दीदोर ॥ २ ॥
 माया जब काया खड़ी, काया जब लग जीव ।
 हरिया जीव रु सीव का, मेला कैसे धीव ॥ ३ ॥

१ निर्णय । २ शब्दा । ३ गमन । ४ पानीका सोता । ५ नजदीक
 ६ छिर । ७ खोजता है । ८ राह । ९ ब्रह्म । १० व्यापक । ११ दर्शन
 १२ होवै ।

काया माया कारंवी, जैसे करंवा जान ।
 जन हरिया भागों पछे, चाक न चड़सी आन ॥ ४ ॥
 जिन जलती भांडा किया, करत न लाई चार ।
 हरिया बाकूं सुमरिये, सब का सिरजनहार ॥ ५ ॥
 काया छाया एकठी, ज्यों माया से ब्रह्म ।
 हरिया न्यारा जाणसी, जिन पाई गुरु गम्म ॥ ६ ॥
 जन हरिया चाल्यां चलै, धिर सेती धिर होय ।
 काया बंधी कर्म सुं, छाया लिपै न कोय ॥ ७ ॥
 माया जोड़ो ब्रह्म सुं, छाया जोड़ो देह ।
 काया माया जावती, हरिया देखंतेह ॥ ८ ॥
 शस्तर सुं नहिं छेदियै, पावक लगै न शीत ।
 हरिया कहियै ब्रह्म की, पेसी अद्भुत रीत ॥ ९ ॥
 रहता नारि न को पुरुष, रहै न तैऊँ लोर्य ।
 रहता एको ब्रह्म है, हरिया सब घट सोय ॥ १० ॥
 रहता सोई जाणिये, रहता सुं मिल जाय ।
 हरिया रहता राम बिन, काल गिरासै आय ॥ ११ ॥
 इति ।

अथ वेहदको अंग ।

हरिया हृद आसामुखी, ताहि न करिये हेत ।
 वेहद वास निरास घर, ताकूं अंतर देत ॥ १ ॥
 केइ बावों केइ दाहणा, हृद बहु मारग होय ।
 जन हरिया इन बीचमें, भटक मुवा तिहुँ लोय ॥ २ ॥
 हरिया हृद का जीव कूं, वेहद की गम नाहिं ।
 कीड़ी केरै नाल ज्युं, कइ आवै कइ जाहिं ॥ ३ ॥
 हरिया हृद कूं छाँडि के, वेहद पहुँता जाय ।
 दिल दरगा दीवान में, धका न धूमी काय ॥ ४ ॥
 हृद छाँडी वेहद भया, हरिया राम हुँजूर ।
 अखंड उजाला गैर्व का, निसा न ऊगे सूर ॥ ५ ॥
 हृद का रत्ता हृद में, वेहद का वेहद ।
 हरिया वेहद पाइके, हृद भई सब रह ॥ ६ ॥

१ बनावटी, झूठी कारखाई । २ मट्टीका बनाहुआ हंडीदार लोटा, आफ तावा ।
 ३ कुलालचक्र । ४ वातण । ५ तीन । ६ लोक । ७ आसगीर । ८ तीन ।
 ९ दरवार, राजतभा । १० समझता । ११ परोक्ष ।

अथ शून्य सरोवरको जग ।

साँसा सोग सताप तज, आपा होय अँबीह ।
 शून्य सेजमें पाइया, हरिया अविनाशीह ॥ १ ॥
 हरिया मन साँसे पढ्यो, कहि समझावै कौन ।
 इसतो रमतो बोलतो, ऊ कहँ करिग्यो गौन ॥ २ ॥
 हरिया सब सासा मिट्या, गुन मिलग्या निर्गुन ।
 आवन जावन रहित हुय, सुरति समाणी सुन ॥ ३ ॥
 सुन सरवर बहु फेरमें, सुख सीतलता सीर ।
 हरिया एक मलझमें, भ्यान धरु ता तीर ॥ ४ ॥
 बिल हरिया मन मच्छली, नीर सिरजन हार ।
 हरिया सबसु बूँरुदै, बिरला जाणै सार ॥ ५ ॥
 जन हरिया मन जहँ किया, सुन सरवरमें वास ।
 भले न जामण मरण की, धरै न इसो आस ॥ ६ ॥
 जन हरिया सरवर सधै, ठाम ठाम भरपूर ।
 जहँ पायो तहँ परम सुख, दुखी रह्या से दूर ॥ ७ ॥
 अपने घरकी गम नहीं, परधर धौंगै कौय ।
 हस हस की गर्म चले, काग काग की पाय ॥ ८ ॥
 हस गयो उडि आप घर, करि सायर की सुखि ।
 हरिया सरवर सुखि विन, बूडो काग कुजुखि ॥ ९ ॥
 जन हरिया जल पठियै, पीयो चनु भराय ।
 देखा कोइ न देखिया, सब सरवर पी जाय ॥ १० ॥
 इति ।

अथ माया नद निर्णयको जग ।

ज्याँ माया सु ब्रह्म है, त्यों काया से जीव ।
 जन हरिया जब अतरे, पाया जीव रु सीव ॥ १ ॥
 माया ओलै ब्रह्म है, आकारे निरकार ।
 हरियै देख्या जुगति सु, न्यारा दिख दीदार ॥ २ ॥
 माया जन काया खड़ी, काया जब लग जीव ।
 हरिया जीव रु सीव का, मेला कैसे धीव ॥ ३ ॥

१ निभय । २ शय्या । ३ गमन । ४ पानीका सोता । ५ नजदीक ।
 ६ छिट । ७ खोजता है । ८ राह । ९ नद । १० ओट । ११ दशन ।
 १२ होने ।

बेहद कूँ पहुँचै नहीं, हरिया हृद के लोग ।
तन तो माटीमें मिल्यो, मन गयो सांसै सोग ॥ २२ ॥
इति ।

अथ भ्रमनिश्चयको प्रसंग ।

हरिया घट में घड़त है, केताई नर घाट ।
आडा पड़दा भर्म का, ब्रह्म न दरसै वाट ॥ १ ॥
हरिया आतम एक है, दूजा कोऊ नाहिं ।
मनकी मैं तैं भेटि करि, पद पाया घट माहिं ॥ २ ॥
घट में तारा चन्द रवि, घट माहीं ब्रह्मंड ।
हरिया घट में राम है, जाकी ज्योति अखंड ॥ ३ ॥
हरिया आवै देखमें, ए तो माया रूप ।
आतम दृष्टि न मुष्टि है, अनुभव अकल अरूप ॥ ४ ॥
हरिया घट में अघट है, वाकी ठोड़ विकट ।
धिन गुरुगम खूल्है नहीं, भर्म कर्म का पट ॥ ५ ॥
भर्म भूत भागा विनां, कर्म कटै नहिं काहि ।
हरिया पड़ल आपि में, ताका तिमर न जाहि ॥ ६ ॥
दत्तव ते धन पाइये, धर्म दया ते होइ ।
हरिया हरिजन औरका, भर्म गमावै सोइ ॥ ७ ॥
हरिया तन मन वचन ते, आतम निश्चय जानि ।
वाकों नित्य आनन्द है, शोक न संशय आनि ॥ ८ ॥
जन हरिया निश्चय भया, भर्म दूसरा नाहिं ।
आस पास की सिट गई, आतम आपा माहिं ॥ ९ ॥
जल खाने वहि नीसरै, हरिया तेरु होइ ।
वहियो खाने भर्मके, हाथ पड़ै नहिं कोइ ॥ १० ॥
हरिया भोजै भर्मकूँ, सतगुरु मिलै सधीर ।
भवसागर में डूवतां, पार उतारै तीर ॥ ११ ॥
इति ।

अथ निर्गुणगुणको प्रसंग ।

निर्गुण तैं गुण ऊपजै, गुण तैं निर्गुण ताहिं ।
जन हरिया फल बेल तैं, फल विन बेली नाहिं ॥ १ ॥
हरिया निर्गुण मूल है, सगुणजु साखा पान ।
भक्ति बीज फल मुक्ति है, और धर्म सब आन ॥ २ ॥

हृद सू हरि दूरै वसै, बेहद ठावो ठीक ।
 हृद बेहद की पाह सुधि, हरिया राम नजीक ॥ ७ ॥
 हरिया बेहद के घर, नही हृद की आस ।
 ससा सोग न ताप तन, नाम निरासा वास ॥ ८ ॥
 जन हरिया बेहद घर, घन अनहद की घोर ।
 बाजा राग अखड धुनि, एक अखडी टोरे ॥ ९ ॥
 जन हरिया हृदमें घणा, सुख दुख भरम सनेह ।
 बेहद काम न कल्पना, अति आनद अछेह ॥ १० ॥
 बेहद कोठे घर किया, निज सुख पाया नाम ।
 हरिया भागी भरमना, भया सकल सिध काम ॥ ११ ॥
 चित चंचल निश्चल भया, पूरी मनकी आस ।
 हरिया हृद कू छाडिके, बेहद की द्वा यास ॥ १२ ॥
 हृद बैठा हृद की कहै, वेद पुराना योचि ।
 हरिया बेहद यात्रा, रखा राम सू राखि ॥ १३ ॥
 जन हरिया बेहद कथा, किन सू कहियै बोल ।
 महंरम भागै दाखियै, दिल का पुस्तक खोल ॥ १४ ॥
 यचन सुन्या बेहद का, हृद न आवै दाय ।
 हरिया सुनर्म साँझा, तासू ध्यान लगाय ॥ १५ ॥
 सुरत बसी बेहद में, हरिया एक भगन ।
 पके पुबगा पेम की, भीना बस सिख अग ॥ १६ ॥
 हरिया अनहद शब्द की, तार कबू नहिं सृदि ।
 घोर सुनत है गगनमें, सुर बाहिर नहिं फूटि ॥ १७ ॥
 हरिया हृद का जीबना, ठाकू घना जनत ।
 जई गुह पाया बेहदी, ले निरवाणे चबत ॥ १८ ॥
 जन हरिया हमकू कहा, सतगुरु पेसा दाय ।
 हृद का पासा छाडि दे, बेहद साम्हा आच ॥ १९ ॥
 हरिया हृद सागर तणो, रंग योहो वहरैह ।
 जग सारो तिसियो फिरै, जल बूडो घारेह ॥ २० ॥
 बेहद सुख सागर भखो, पथ न पग पारेह ।
 हरिया हरिजन पीयसी, हृद सू हुय न्यारेह ॥ २१ ॥

१ स्थान, ठिछना । २ चात । ३ झिझरे । ४ मेदी मरपी । ५ मोड़ ।
 ६ पाह । ७ कम । ८ बाहरा=जोगहरा न हो । ९ परेवा=तेज बढनेवाला पक्षी ।

बेहद कुँ पहुँचे नहीं, हरिया हृद के लोग ।
तन तो माटीमें मिल्यो, मन गयो सांसे सोग ॥ २२ ॥

इति ।

अथ अमनिश्चयको प्रसंग ।

हरिया घट में घड़त है, केताई नर घाट ।
आडा पड़दा भर्म का, ब्रह्म न दरसे घाट ॥ १ ॥
हरिया आतम एक है, दूजा कोऊ नाहिं ।
मनकी मैं तैं भेटि करि, पद पाया घट माहिं ॥ २ ॥
घट में तारा चन्द रवि, घट माहीं ब्रह्मंड ।
हरिया घट में राम है, जाकी ज्योति अखंड ॥ ३ ॥
हरिया आवै देखमें, ए तो माया रूप ।
आतम दृष्टि न मुष्टि है, अनुभव अकल अरूप ॥ ४ ॥
हरिया घट में अघट है, वाकी ठोड़ चिकट ।
घिन गुरुगम खूहै नहीं, भर्म कर्म का पट ॥ ५ ॥
भर्म भूत भागा विनां, कर्म कटै नहिं काहि ।
हरिया पड़ल आपि में, ताका तिमर न जाहि ॥ ६ ॥
दत्तव ते धन पाइये, धर्म दया ते होइ ।
हरिया हरिजन औरका, भर्म गमावै सोइ ॥ ७ ॥
हरिया तन मन वचन ते, आतम निश्चय जानि ।
वाकों निल आनन्द है, शोक न संशय जानि ॥ ८ ॥
जन हरिया निश्चय भया, भर्म दूसरा नाहिं ।
आस पास की मिट गई, आतम आपा माहिं ॥ ९ ॥
जल खाने वहि नीसरै, हरिया तेरु होइ ।
बहिन्यो खाने भर्मके, हाथ पड़ै नहिं कोइ ॥ १० ॥
हरिया भोजै भर्मकुं, सतगुरु मिलै सधीर ।
भवसागर में डूबतां, पार उतारै तीर ॥ ११ ॥

इति ।

अथ निर्गुणगुणको प्रसंग ।

निर्गुण तैं गुण ऊपजै, गुण तैं निर्गुण ताहिं ।
जन हरिया फल बेल तैं, फल विन बेली नाहिं ॥ १ ॥
हरिया निर्गुण मूल है, सगुणजु साखा पान ।
भक्ति बीज फल मुक्ति है, और धर्म सब आन ॥ २ ॥

सोरठा ।

फूल डाल तजि पान, एक पकड़ रहू पेड़ कुँ ।
ऊँचा चढ़ असमान, हरिया निज फल चाहिये ॥ ३ ॥

साखी ।

बेइक पाना फूलदों, केई विलंब्या डाल ।
हरिया मूल बिलबिया, फल पाया असराल ॥ ४ ॥
बड़ि ऊँचा फल चाखिया, हाव पाव विन मूँह ।
हरिया निगुण रूपदो, कह गुण माँहि किसुँह ॥ ५ ॥
सगुणा मँ सगुणो सिरै, रूप माहि न रँख ।
जन हरिया फल चाखिया, फेर न आवे कूँख ॥ ६ ॥
गुण मँ ओगुण अनंत है, आपा भुगतै आय ।
जन हरिया निगुण बसै, जग मँ जाय न जाय ॥ ७ ॥

इति ।

अथ नक्षसमाधिको प्रसंग ।

चित मन पयना धिर करै, उलटि पवँ कुँ साधि ।
जन हरिया जय जाणियै, याही ब्रह्म समाधि ॥ १ ॥
मन पयना मिल एकठा, शब्दे सुगति मिलाय ।
हरिया ब्रह्म समाधि का, जय सहजा घर पाय ॥ २ ॥
हरिया ब्रह्म समाधि को, है सुख सहज जनत ।
काम न ऊँठे कल्पना, तन की सुधि रिसरत ॥ ३ ॥
जन हरिया मुख द्वार तै चली शब्द की तीर ।
जाय मिली सुख सहज में, गग जमुन की तीर ॥ ४ ॥
गगा जमुना सरस्वती, निवको न्हावन होय ।
जन हरिया जहँ न्हाइया, घाट वाट नहिँ कोय ॥ ५ ॥
सीरा छूटी चहुँ दिखाँ, अत न फोड़ पार ।
जन हरिया पी भगन हुय, तन की सुधी न सार ॥ ६ ॥
रसना नख सिख बीच मँ, रोम रोम रँकार ।
जन हरिया सुख ब्रह्म का, होत नही मर्मकार ॥ ७ ॥
इडा पिंगला बीचर्म, सुप्रमण ददा घाट ।
हरिया ब्रह्म समाधि की, सहजा पाई वाट ॥ ८ ॥

चंद विना जहां चाँदणा, सूर विना अहंवास ।
 जन हरिया घर ब्रह्म का, तेजपुंज परकास ॥ ९ ॥
 पवन न पाणी चंद रवि, जहँ नहिँ धरा अकास ।
 जन हरिया घर ब्रह्म का, आस न पास निरास ॥ १० ॥
 सुरति चड़ी असमान कुँ, जाय मिली निरकार ।
 जन हरिया घर ब्रह्म का, ओथि नहीं आकार ॥ ११ ॥
 हरिया धुं धुं धुनि उठै, तैनक थैइततकार ।
 बाजै पिड ब्रह्मंड में, एक अखंडी तार ॥ १२ ॥
 इला दुहारी पिंगला, पोईश द्वादश गाय ।
 जन हरिया मति मट्ट की, लिया तत्तकुँ ताय ॥ १३ ॥
 संतन की गति संत कुँ, दुनियन की दुनियौह ।
 जन हरिया अविगंत की, गंत न को सुनियौह ॥ १४ ॥
 पाँव विना जहँ चालियो, राह विना जहँ राह ।
 जन हरिया घर ब्रह्म का, सुर नर सकै न जाह ॥ १५ ॥

इति ।



१ अवास=घर । २ आकाश । ३ वहाँ । ४ नगारेका शब्द । ५ मेघ-
 रागकी रागिनी । ६ ततकारसहित येई अर्थात् ततताथेई=नृत्यका शब्द, नाचका
 बोल । ७ दोहनेवाली । ८ त्रद्वकला । ९ सूर्यकला । १० अविगत=त्रिकालाऽबाध्य ।
 ११ गंत=नाश ।

निसाणी का भूमा ।

यह निसाणी नामक ग्रन्थ योग के विषय का है । योग शब्द संस्कृत के युज धातु से बना है (युजिद् योगे) जिसका अर्थ जोड़ना है । अपने मनको एक ध्येयसे जोड़ना अर्थात् मनको स्थिर करना ही योग है । भगवान् पतञ्जलि ने ऐसा कहा है “योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः” । एकाम्रता योग का शरीर है, जिसमें केवल एकाम्रता ही हो वह व्यावहारिक योग, और जिसमें अहता ममता का नाम लेश भी न हो वह पारमार्थिक योग है । गीताके साम्यगर्भित कर्मयोग में यही कथन है । ज्ञानयोग ही श्रेष्ठ है, बिनाज्ञानका योग निष्फल है । योग के पहले का ज्ञान अस्पष्ट होता है इसलिये गीता में ज्ञानी से योगी को ही अधिक कहा, वास्तव में सच्चा ज्ञानी वही है जो योगी है इसी का गीता में वर्णन है । ब्रह्मविद्योपनिषद्, क्षुरिकोपनिषद्, बूलिकोपनिषद्, नादविन्दु, ब्रह्मविन्दु, अमृतविन्दु, ध्यानविन्दु, तेजोविन्दु, योगसिखा, योगतत्त्व, इस आदि उपनिषद् भी इसी का वर्णन करती हैं । अतएव ज्ञानकी एक मात्र कुञ्जी योगही है । योगवाशिष्ठ में लिखा है कि योग बिनाका ज्ञानी ज्ञानवधु है अर्थात् ज्ञानियों

- १ योगस्य कुरु कर्माणि सत्रं सक्ता धनञ्जय ।
विदपविदयो समो भूत्वा समस्त योग उच्यते ॥
(गीता अ० २-४८)
- २ तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिक ।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद् योगी भवानुत ॥
(गीता अ० ६-४६)
- ३ यत्साध्वै प्राप्स्यते स्थानं तद्योगैरपि यम्यते ।
एक सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति ॥
(गीता अ० ५-५)
- ४ व्याचष्टे यः पठति च ध्यातुं भोषाय लिप्तिवत् ।
यत्पदे न सनुज्ञाने ज्ञानवधुः स उच्यते ॥ १ ॥
आत्मज्ञानमनासाद्य ज्ञानान्तरत्वेन ये ।
सन्तुष्टा कश्चेष्टते ते स्मृता ज्ञानवधवाः ॥ २ ॥
(योगवाशिष्ठ निवाणप्रकरण उत्तरार्ध सर्ग २१-)

में अधम है। ज्ञान और योग का बहुत अधिक सम्बन्ध है इसीलिये “ज्ञान-क्रियाभ्यां मोक्षः” ज्ञान और क्रियासेही मोक्ष होना कहा गया है। इसी योग का वर्णन भिन्न भिन्न शास्त्रकारोंने भिन्न भिन्न प्रकार से किया है। भगवान् पतंजलिविरचित “पातंजलयोगदर्शन” तो खास योगकाही ग्रन्थ ठहरा अतएव इसमें तो सांगोपांग वर्णन होना ही चाहिये। और दूसरे शास्त्रकारोंने भी योग के विषय में विशेष जानने के लिये योगदर्शन

१ ज्ञान किया करि ऊनरे हरिया हरिजन पार ।

ऐसे अन्धे कन्ध करि, पंगो आन उतार ॥ १ ॥

पंगा सोई ज्ञान है, किरिया अधी जान ।

जन हरिया मिल एकठा, मुक्ति भई आसान ॥ २ ॥

ज्ञान बिना किरिया न कुछ, किरिया बिना न ज्ञान ।

हरिया किरिया ज्ञान बिन, यो ही आतमध्यान ॥ ३ ॥

ज्ञान ब्रह्म की दृष्टि है, किरिया ध्यान स्वरूप ।

जन हरिया मिल एकठा, आतम तत्त्व अनूप ॥ ४ ॥

ज्ञान सहित किरिया भई, मोक्ष मोहि पद जान ।

हरिया किरिया ज्ञान बिन, भक्ति भई आसान ॥ ५ ॥

(श्री हरि० वाक्यम्)

जो बिन ज्ञान किया अवगाहै, जो बिन किया मोक्षपद चाहै ।

जो बिन मोक्ष कहै मैं सुखिया, सो अज्ञान मूढन मैं सुखिया ॥ १ ॥

२ न्यायदर्शनः—

सामाधिविशेषाभ्यासात् ४-२-३८ । अरण्यगुहापुलिनादिषु योगाभ्यासोपदेशः ४-२-४२ । तदर्थं यमनियमाभ्यामात्मसंस्कारो योमात्राध्यात्मविध्युपायैः ४-२-४६ ॥

वैशेषिकदर्शनः—

अभिषेचनोपवास-ब्रह्मचर्यगुरुकुलवास-वानप्रस्थ-यज्ञदान-प्रोक्षण-दिङ्मन्त्र-मन्त्र-काल-नियमाश्वाद्याय ६-२-२ अयतस्य शुचिभोजनादभ्युदयो न विद्यते नियमामावाद्, विद्यते वाऽर्शान्तरत्नाद्-यमस्य ६-२-८

सांख्यसूत्रः—

रागोपहृतिर्ध्यानम् ३-३० । वृत्तिनिरोधात् तत्सिद्धिः ३-३१ । धारणासनस्वकर्मणा तत्सिद्धिः ३-३२ । निरोधाद्बुद्धिर्विधारणाभ्याम् ३-३३ स्थिरसुखमासनम् ३-३४ ।

ब्रह्मसूत्रः—

आसीनः सम्भवात् ४-१-७ । ध्यानाच्च ४-१-८ । अचलत्वं चापेक्ष्य । ४-१-९ अरन्ति च ४-१-१० । यत्रैकाग्रता तत्राविशेषात् ४-१-११

देखने की आज्ञा दी है । जिस योग का वर्णन उपनिषदों में व सूत्रों में भलीप्रकार किया गया है उसीका श्रीमद्भगवद्गीता के तीनों पट्कों में कर्म, भक्ति और ज्ञान के साथ श्रीभगवानने समावेश कर दिया है, समावेश क्या कर दिया है, गीता के ठठे ओर तेरहवें अध्याय में तो योग के सारे मौलिक सिद्धान्त और प्रक्रियाएँ ही वर्णन कर दी हैं ।

योगवाशिष्ठ तो बस “यथा नाम तथा गुण ” खास योग का ग्रन्थराज ही है । श्रीमद्भगवत् के स्कन्ध ३ अध्याय २८ । स्कन्ध ११ अध्याय १५-१९-२० में योग का ही वर्णन है । इतना ही नहीं इसके उपरांत योगवृक्ष इतना फैला कि उसकी कई शाखाएँ बन गई और उनके अलग ही ग्रन्थ बन गये जैसे तन्त्रशास्त्रमें “महानिर्माणतन्त्र” और “पट्चक्रनिरूपणतन्त्र” बहुत ही उत्तम योग के तान्त्रिक ग्रन्थ हैं । इनके सिवाय और भी कितने ही योग के ग्रन्थ बन गये हैं, हठयोगप्रदीपिका, शिवसहिता, घेरण्डसहिता, गोरक्षपद्धति, गोरक्षसतक, योगतारावली, निन्दुयोग, योग-बीज, योगकल्पद्रुम, योगनिनय आदि अनेक योग के ग्रन्थ हैं ।

योग यही तक नहीं बढ़ा किन्तु देशी और विदेशी महात्माओंने अपने अपने अनुभव के अनुसार लोगोंको ज्ञान कराने के लिये महाराष्ट्री, गुजराती, बगला, तैलगी, तामिली, औत्कली, द्रानिडी और इंग्लिश आदि अलग अलग भाषाओंमें योगका वर्णन किया । कबीर साहब, नानकसाहब, दादूनी, हरिदासजी, सुन्दरदासजी, जनतुरसीनी, चरणदासजी, सेवादासजी, सन्तदासजी, दरियासाजी आदि महात्माओंने हिन्दी साहित्यमें उसी योगवाणी का वर्णन किया कि नितसे मुमुक्षुओं को बढ़ा ही लाभ पहुँचा और पहुँच रहा है ।

जिस योग की मुक्कठ से प्रशसा की गई और जिस योग की मासि महापुरुष परब्रह्मराम के उपदेश द्वारा श्रीवैमल्यदासजी महाराज को हुई

१. योगशास्त्राचार्यत्वमिति प्रतिपत्तय (न्यायद० २-४-४६ माध्य)

२. मुझे बालक बाल हमारी, तोऊ दाख गुप्त हदारी ।

नेत्रे में गुह्र ज्ञान मुग्धाया, जोग सहित निजनाम बताना ॥

(श्रीराम० बख्शमात्र)

आपने पूर्ण कृपा करके श्रीहरिरामदासजी महाराज को उसीका तारकमंत्र सहित उपदेश देकर रामस्नेह सम्प्रदाय प्रवृत्त करने की नींव लगाई । उसी योग का वर्णन लोकोद्धार के अर्थ पूज्यपाद श्रीहरिरामदासजी महाराजने इस ग्रन्थके निशानी नामक छन्दों में किया है । अतएव इस ग्रन्थ को अत्यन्त ही उपयोगी समझकर इस की टीका बनाकर सर्व साधारणके लाभार्थ प्रगट की गई ।

श्रीमान् माननीय ज्योतिषी पं० श्रीनिवासजी पाठक महोदय रतलाम-निवासी का मैं विशेष आभारी हूं जिन्होंने बहुत कष्ट उठाकर इसकी टीका करने में परिश्रम किया है ।

जिन पुस्तकों से या जिन महात्माओंसे सहायता ली गई है उनके प्रणेताओं तथा उन महात्माओं का भी विशेष आभारी हूं ।

भवदीय

चौकस राम वैद्य.

१ तारकमंत्रः—ॐ नमः सत्यरामाय चिदानन्दैकमूर्तये ।

अत्यक्षतत्त्वबोधाय गुरुवेदोक्तलब्धये ॥ १ ॥

॥ श्री० ॥

प्यानमूठ गुरोमूर्त पूजामूल गुरो पदम् ।
मन्त्रमूठ गुरोवाक्य मोक्षमूठ गुरो कृपा ॥ १ ॥

घघरं निसाणी प्रारभः ॥



पैत्रापूजितपादपद्मयुगल राम दधत् हृदि
रागद्वेषकरालजालमखिल वृद्ध रिपूणा हरम् ।
याता धे क्षरण विशुद्धमनसस्तेषा प्रनोधादिद
वदे श्रीहरिरामदासमनिष्ठ रामाय सन्मन्त्रदम् ॥ १ ॥
हरिराम गुरु नत्वा कृत्वा चारुपदक्षिणाम् ।
निसानीनामग्रन्थस्य भाषाटीका करोम्यहम् ॥ १ ॥

साखी ।

हरिया सम्यक् सत्रहसे यय सर्गको जान ।
तिथि तेरस आपाद यदि सतगुरु पकी पिछान ॥ १ ॥

१ चटपट । २ चिह्न । ३ ५० दिग्वारेण रनितमिद पद्यम् । ४ रामदासाय ।

५ सङ्कलक्षण —

श्रीगुरु परमेशानि गुह्येशो मनोहर ।
खवलक्षणसमुक्त सवानयवशोभित ॥ १ ॥
सर्पागमार्यतत्त्वज्ञ स्वमन्त्रप्रधानवित् ।
ठाकुरसमोहनकरो देववद्रिप्रयदर्शन ॥ २ ॥
समुद्यः मुग्ध खच्छ गुह्यतरिष्ठप्रसन्नम् ।
इगिताकारतत्त्वज्ञो दूरत कृतदुजन ॥ ३ ॥
नतमुखा बहिरिष्टि सवज्ञो देशकालवित् ।
आज्ञासिद्धिप्रकालज्ञो निग्रहानुग्रहज्ञम् ॥ ४ ॥
वैदवेदांतविद्यांत सवजीवदयापर ।
स्वाधीनंदिमसंचार यदुपविजयधम ॥ ५ ॥
अप्रगण्योऽप्रतिगमीर पात्रापात्रविशेषवित् ।
निर्दोषो निरसंगुथो निर्दोषो निरसक्तिमात्र ॥ ६ ॥
सङ्कलनतरो धीर-रूपाष्ट भितपूर्ववाक् ।

श्रीहरिरामदासजी महाराज स्वयं अपने मुखारविंद से अपने को ही संबोधित कर वर्णन करते हैं कि, संवत् सत्रह सौ का सईका वर्ष अर्थात् अठारहवीं शताब्दी के आषाढ कृष्णा त्रयोदशी के दिन मेरे को सद्गुरु की पहिचान पड़ी ॥ १ ॥

छंद निसानी ।

सतगुरु पहिचानी परचे प्रानी सब सिध काम सरंदा है ॥ १ ॥

(सद्गुरु की पहिचान होने से सर्व कार्य सिद्ध होगये ऐसा परचा (प्रत्यक्षबोध) जीवको होगया अर्थात् अनुभव प्राप्त होगया ॥ १ ॥

सतगुरु से मिलिया अंतरभिलिया सारंशब्द ओलखंदा है ।

भक्तिप्रियः सर्वसमो दयालुः शिष्यशासिता ॥ ७ ॥

स्वैष्टदेवगुरुः प्राज्ञो विनयी पूजनोत्सुकः ।

नित्ये नैमित्तिके काम्ये रतः कर्मण्यनिदिते ॥ ८ ॥

रागद्वेषभयक्रोधदंभाहंकारवर्जितः ।

सद्विद्यानुष्ठानरतो विद्याना च प्रकाशकः ॥ ९ ॥

यदृच्छालाभसमुद्यो गुणदोषविभेदकः ।

स्त्रीद्विगेष्वनासक्तो दुःसंगव्यसनोज्झितः ॥ १० ॥

अलोलुपोऽर्हिसकश्चापक्षपाती विचक्षणः ।

वित्तविद्यादिभिर्मंत्रयंत्रतंत्राद्यविक्रयी ॥ ११ ॥

निःसंकल्पो निर्विकल्पो निर्णोतात्माऽतिधार्मिकः ।

तुल्यनिदास्तुतिर्मौनी निष्प्रक्षोऽतिनियामकः ॥ १२ ॥

इत्यादिलक्षणोपेतः श्रीगुरुः कथितः प्रिये ।

(कुलाणैव)

सारशब्द—

एक शब्द में कहि समझाऊं, सुनहो सब संसारा ।

समनाम सो सारशब्द है, और कथन है छारा ॥ १ ॥

(श्रीहरि० वाक्यम्)

कहै कवीर सुनो हो साधो, परगट कहूं वजाई ।

रामनाम सो सारशब्द है, और कथन सब वाई ॥ १ ॥

(कवीर)

स्वप्रकाशः स्वयंज्योतिः स्वानुभूत्यैकचिन्मयः ।

तदेष मंत्रराजस्य अनुराद् बाहरः स्मृतः ॥ १ ॥

अखंडकरसानंदस्तारकी ब्रह्मवाचकः । (रामोपनिषद्)

मुपकतेषुभिरतिर्वितिष्ठिन् ह्यद्विर्वर्णैरमिराममभ्यात् ।

अर्थः—राम कृष्णवर्णं शब्दं तस्य अभ्यस्त्यात् साय होयकाले अभिभूय तिष्ठति इति तद्भाष्ये सायणाचार्या (जिनस्य उत्तराश्रमस्यै विद्यारण्यस्वामी नाम हे) ।

(ऋग्वेद १० अ ३ व ३)

गाणपत्येषु जैवेषु शाकसौरेष्वमीष्टद ।

वैष्णवेष्वपि मनेषु राममत्र कर्माधिक ॥ १ ॥ (श्रीहयस्त्रीवचन)

शतघोष्यो महामन्त्रो उपमन्त्राद्योदय ।

एक एव महामन्त्रो रामनाम परात्परम् ॥ १ ॥ (शिवतन्त्र)

गाणपत्यादिसौरास्य हरि शेष शिव शिवा ।

तेषां प्राणो महामन्त्रो रायेति चाक्षरद्वयम् ॥ १ ॥

गणेशो भास्करे चैव शिवे शाक्तो हरावपि ।

राममन्त्रप्रभावेण सामर्थ्यं जायते पुनम् ॥ २ ॥ (भारद्वाजसंहिता)

विना शक्तिं कथं काय किं कस्येन वा बलम् ।

तदाकाशाद्भवेद्वाणी रामनाम इदं कुर्व ॥ १ ॥

तदावसराति विद्मस्य याति सुसुप्ताभिः ।

तस्माद्रामं महामन्त्रं आदिमन्त्रं उदाहृत ॥ २ ॥ (जैमिनि)

धीरामेति परं मन्त्रं तदेव परमं पदम् ।

तदेव तारकं विद्धि जन्ममृत्युमयापहम् ॥ १ ॥ (हिरण्यगर्भसंहिता)

धीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्मसहस्रम् ।

ब्रह्महत्यादिपापप्रमितिं वेदविदो विदुः ॥ १ ॥ (चन्द्रिकुमारसंहिता)

यथा घटस्य कलशः पदार्थस्याभिधायकः ।

तथैव ब्रह्मरामस्य नूनमेकार्थतत्परः ॥ १ ॥ (भगवत्संहिता)

रामन्ते योगिनो यत्र निखानदे विदात्मनि ।

इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते ॥ १ ॥ (रामतापिनी)

राम एव परं ब्रह्म राम एव परं तपः ।

राम एव परं तत्त्व धीरामो ब्रह्म तारक ॥ १ ॥ (इन्द्रमुनिपद)

श्रीराममन्त्रयज्ञस्य भाद्रहृत्य गिरिजापतिः ।

जानाति भगवान्शुभं दुःखकलामकलोचन ॥ १ ॥ (उदयसंहिता)

मन्त्रयज्ञं प्रवक्ष्यामि शृणु नारद तत्परः ।

रक्षारदिर्मन्त्रयज्ञो मन्त्रं पदुणेश्वरपुत्र ॥ १ ॥

अकार प्रयासरो भवति उकारो द्वितीयाक्षरो भवति मकारस्तृतीयाक्षरो भवति अर्धमात्रायतुषाक्षरो भवति विंदुः पंचमाक्षरो भवति नाद षष्ठाक्षरो भवति तारकज्ञा तारको भवति ।

प्रणवं केवलमकारोकारोर्धमानासहितं तस्मात्प्रणवस्याकारस्योकारस्य च रकारः मकार-
धार्थमात्रस्य इति । (रामोपनिषद्)

अंशांशौ रामनाम्नश्च त्रयः सिद्धा भवन्ति हि ।

बीजमोकारः सोहं च सूत्रसूक्तमिति श्रुतिः ॥ १ ॥

रामनाम्नः समुत्पन्नः प्रणवो मोक्षदायकः ।

रूपं तत्त्वमसेधासौ वेदतत्त्वाधिकारिणः ॥ २ ॥ (महाप्रभुसंहिता)

रकारश्च परब्रह्म नादमोकारसंयुतम् ।

ॐ विदुष्व मकारोयं जातं रामाक्षरद्वयम् ॥ १ ॥

रकारस्तत्पदं ज्ञेयं त्वंपदाकार उच्यते ।

मकारोत्पिपदं ज्ञेयं तत्त्वमसि सुलोचने ॥ १ ॥

चिद्वाचको रकारः स्यात्सद्वाच्याकार उच्यते ।

मकारानन्दवाच्यं स्यात्सच्चिदानन्दमव्ययम् ॥ २ ॥ (श्रीमहारामायण)

प्रणवं केचिदाहुर्वै बीजश्रेष्ठं तथापरे ।

तत्त्वतो रामवर्णाभ्यां सिद्धिमाप्नोति मे मतम् ॥ १ ॥ (महाशंभुसंहिता)

ॐ मृगुर्वै वारुणिः । वरुणं पितरमुपससार । अधीहि भगवो ब्रह्मेति । सोऽब्रवीद्ब्रह्म
एव परं ब्रह्म रामादन्यन्न किञ्चन यत एते रामादेवा उत्पद्यन्ते राम एव विलीयन्ते राम
एव स्थितिं वसन्ति तस्माद्ब्रह्म एव विभुरिति तैत्तिरीयश्रुतिः (रामतापनी)

यथैव वटबीजस्थः प्राकृतोऽस्ति महाद्रुमः ।

तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चराचरम् ॥ १ ॥ (याज्ञवल्क्य)

रकाराज्यायते ब्रह्मा रकाराज्यायते हरिः ।

रकाराज्यायते शंभू रकारात्सर्वशक्तयः ॥ १ ॥ (रुद्रयामलक)

ब्रह्मविष्णुमहेशाद्या यस्यांशा लोकसाधकाः ।

तं रामं सच्चिदानन्दं नित्यं रामेश्वर भजेत् ॥ १ ॥ (हनुमत्संहिता)

रामनाम परं जाप्यं ज्ञेयं ध्येयं निरंतरम् ।

कीर्तनीयं च बहुधा सुमुक्षुभिरहर्निशम् ॥ १ ॥ (जावालिंसंहिता)

अद्यापि रुद्रः काश्यां वै सर्वेषां त्यक्तजीविनाम् ।

दिशस्येतन्महामन्त्रं तारकं ब्रह्मनामकम् ॥ १ ॥

विनैव वीक्षां विप्रेन्द्र पुरश्चर्यां विनैव हि ।

विनैव न्यासविधिना जपमात्रेण सिद्धिदम् ॥ २ ॥

तस्मात् सर्वार्थमात्रा रामनामरूपं परं प्रियम् ।

मन्त्रं जपेत्सदा धीमान् संविद्यायान्यसाधनान् ॥ ३ ॥ (हारीतस्मृति)

जपतः सर्ववेदांश्च सर्वमन्त्रांश्च पार्वति ।

तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं रामनामैव लभ्यते ॥ १ ॥

सुप्रकेतेषुभिरभिर्विचित्रिन् ह्यद्विर्वर्णैरभिराममस्यात् ।

अर्थः—राम वृष्णवर्णं शर्व्वरं तम ध्वज्यस्यात् साय होमकाले अभिभूय तिष्ठति इति तद्भाष्ये सायणान्वया (जिनका उत्तराश्रममें विचारण्यस्वामी नाम है) ।

(ऋग्वेद १० अ ३ व २)

गाणपत्येषु शैवेषु शाकसौरेष्वभीष्टद् ।

वैष्णवेष्वपि भजेषु राममत्र कलाधिक ॥ १ ॥ (श्रीहमशीर्षपंचरात्र)

शतक्षेत्र्यो महामन्त्रो राममन्त्राक्षयोदश ।

एक एव महामन्त्रो रामनाम परस्परम् ॥ १ ॥

(शिवतन्त्र)

गाणपत्यादिशैराद्य हरि शेष शिव शिवा ।

तेषां प्राणो महामन्त्रो रामेति चापरद्वयम् ॥ १ ॥

गणेशो भास्करे चैव शिवे शक्तौ हरौवपि ।

राममन्त्रप्रभावेण सामर्थ्यं जायते ध्रुवम् ॥ २ ॥

(भारद्वाजसंहिता)

विना शक्तिं कथं कार्यं किं कृतव्येन वा बलम् ।

तदाकाशाद्भवेद्वाणी रामनाम इदं कुर्व ॥ १ ॥

तदासंसर्गतिं निश्च लयं याति मुमुक्षुभिः ।

तस्माद्राम महामन्त्र आदिमन्त्र उदाहृत ॥ २ ॥

(जैमिनि)

श्रीरामेति परं मन्त्रं तदेव परमं पदम् ।

तदेव तारकं विद्धि जन्ममृत्युमयारहम् ॥ १ ॥

(हिरण्यगर्भसंहिता)

श्रीरामेति परं आप्य तारकं ब्रह्मसहस्रम् ।

ब्रह्महत्यादिपापमिति वेदविदो विदुः ॥ १ ॥

(सनत्कुमारसंहिता)

यमा घटश्च कलशं पदार्थस्याभिधायकः ।

तमेव ब्रह्मरामश्च भूतमेकार्थतत्परः ॥ १ ॥

(अगस्त्यसंहिता)

राम-ते योगिनो यत्र नित्यमिदं चिदात्मनि ।

इति रामपदेनामौ परं ब्रह्माभिधीयते ॥ १ ॥

(रामतापिनी)

राम एव परं ब्रह्म राम एव परं तपः ।

राम एव परं तस्य श्रीरामो ब्रह्म तारक ॥ १ ॥

(हनुमदुपनिषद्)

श्रीराममन्त्ररात्रस्तु माहात्म्यं निरिवापति ।

जनाति मगवाष्ट्रमुज्ज्वलत्पावकलोचन ॥ १ ॥

(बृहद्ब्रह्मसंहिता)

मन्त्ररात्रं प्रवक्ष्यामि शृणु नारद तत्परः ।

रकारादिर्भकारातो मन्त्रं पदुर्णैर्षयुत ॥ १ ॥

अकार प्रथमाक्षरो भवति उकारो द्वितीयाक्षरो भवति मकारस्तृतीयाक्षरो भवति अथमात्राचतुर्थाक्षरो भवति विंदुः पञ्चमाक्षरो भवति नाद षष्ठाक्षरो भवति तारकला सारक्ये भवति सदेव रामेति तारकं ब्रह्म स विद्धि ।

प्रणवं केवलमकारोकारोर्धमात्रासहितं तस्मात्प्रणवस्याकारस्योकारस्य च रकारः मकार-
धार्धमात्रस्य इति । (रामोपनिषद्)

अंशांशौ रामनाम्नश्च त्रयः सिद्धा भवन्ति हि ।

बीजमोकारः सोऽहं च सूत्रसूक्तमिति श्रुतिः ॥ १ ॥

रामनाम्नः समुत्पन्नः प्रणवो मोक्षदायकः ।

रूपं तत्त्वमसेध्यासौ वेदतत्त्वाधिकारिणः ॥ २ ॥ (महाप्रभुसंहिता)

रकारश्च परब्रह्म नादमोकारसंयुतम् ।

अविद्युद्व्य मकारोऽयं जातं रामाक्षरद्वयम् ॥ १ ॥

रकारस्त्वपदं हेयं त्वंपदाकार उच्यते ।

मकारोऽपि पदं हेयं तत्त्वमसि सुलोचने ॥ १ ॥

चिद्वाचको रकारः स्यात्सद्वाच्याकार उच्यते ।

मकारानन्दवाच्यं स्यात्सन्निधानन्दमव्ययम् ॥ २ ॥ (श्रीमहारामायण)

प्रणवं केचिदाहुर्वै बीजश्रेष्ठं तथापरे ।

योगिनो ज्ञानिनो भक्ता मुक्तर्मानेराथ ये ।

रामनाम्नि स्ता सर्वे रसुर्ध्वं त एव य ॥ २ ॥

(पद्मपुराण)

रामेत्स्ररयुग्मं हि सवमनाधिकं द्विन ।

यदुच्चारणमात्रेण पापी याति परा गतिम् ॥ १ ॥

(क्रियामोगसार)

श्रद्धया हेलया नाम वदति मनुजा भुवि ।

तेषा नास्ति भय पार्थ रामनामप्रसादत ॥ १ ॥

प्रसादादपि स्रष्टो यथानलकणो दहेत् ।

तथाष्टपुटस्रष्ट रामनाम दहेदयम् ॥ २ ॥

(आदिपुराण)

रकारोऽनन्वीज स्यात् सर्वे वदनादय ।

हृत्ता मनोमत सब भस्म धर्म गुमागुमम् ॥ १ ॥

आकारो भातुवीन स्यात् वेदशास्त्रप्रकाशक ।

माधयलैव सो दीप्ता ह्यस्थमज्ञानन तम ॥ २ ॥

मकारध्रवीज स्यात्तदपा परिपूरणम् ।

त्रिताप हरते निस्त्र शीतल करोति च ॥ ३ ॥

वैराग्यहेतु परमो रकार कथ्यते पुनै ।

अकारो ज्ञानहेतुश्च मकारो भक्तिहेतुक ॥ ४ ॥

आकृष्टि कृतचेतसां मुमहतामुच्चाटन चाहवा

भावादात्ममूढलोडमुल्लभो वदयथ मोक्षधिय ।

नो दीक्षा न च दक्षिणा न च पुरश्चयामनागीभवे

मन्त्रेण रसनास्त्रगेव फलति श्रीरामनामात्मक ॥ ५ ॥

(भीमदास्मीकीयउमायण)

छत्ररूपो रकारोऽस्ति अनुस्वार निरोमणि ।

राजराजाधिराजसि तस्योऽयं शिरोमणि ॥ १ ॥

(पद्मपुराण)

निर्वर्ण रामनामेद केवल च स्वरधिकम् ।

एवेषा मुमुट छत्र मकारो रैष्वचनम् ॥ १ ॥

यनामर्षसगवगादिवन्

नष्टस्वरो मूर्ध्निगती स्वराणाम् ।

तन्नामपादो हृदय निधाय

देही कथ नोष्वगति प्रयाति ॥ २ ॥

रैष्वोच्चारणमात्रेण बहिर्निजाति पातकम् ।

पुन प्रवेसददेहात् मकारय कस्यत् ॥ १ ॥

(नारदचरित)

मुलसी राके कहत ही, निवसत पय बहार ।

पिर आवन पावन वहीं देन मकार किवर ॥ १ ॥

पेय पेय थवणपुटके रामनामाभिराम

ध्येय ध्येय मनसि सतत तारक ब्रह्मरूपम् ।

जल्प जल्प प्रकृतिविकृतौ प्राणिना कर्णमूले

वीथ्यां वीथ्यामटति जटिल कोऽपि काशीनिवासी ॥ १ ॥ (काशीखट)

रामनाम परं ब्रह्म सर्वदेवप्रपूजितम् ।

महेद्य एव जानाति नान्यो जानाति वै मुने ॥ १ ॥

(जैमिनि० व्यासवाक्यम्)

रामेति ब्रह्मरं नाम यत्र सच्रीर्लते कुचै ।

तत्राभिभूय भगवान् सबहु स विनाशयेत् ॥ १ ॥ (लोमशसंहिता)

यस्य नामप्रभावेण सब्रह्मेऽहं वरानने ।

रामनाम् परं तत्त्व नास्ति किञ्चिजगत्रये ॥ १ ॥ (शिववा०)

रामेति वर्षद्वयमादरेण सदा स्मरन्मक्तिमुपैति जनु ।

कलौ युगे कल्मषमानसानामन्वत्र धर्मे सक्त नाधिकार ॥ १ ॥

कवळे कवळे कुबन् रामनामानुधीतनम् ।

य कश्चिदुरयोऽधाति सोऽन्नदोषैर्न लिप्यते ॥ २ ॥

सिक्कये सिक्कये लम्भे मल्लो महायज्ञादिक फलम् ।

य स्मरेद्रामनामाख्य मन्त्रराजमनुत्तमम् ॥ २ ॥ (वैष्णवस्मृतौ)

देवाच्छूकरशावकेन निहतो म्लेच्छो जराजर्जरो

हा रामेति हतोस्मि भूमिपतितो जलस्त्रनु क्षपवान् ।

दीर्घो गोष्पदवद्भुवार्णवमहो नात्र प्रमावात्सुन

किं चित्र यदि रामनामस्मिन्नस्ते याति रामाख्यम् ॥ १ ॥ (बरहपुराण)

द्विभो वा राक्षसो वापि पापी वा धार्मिकोऽपि वा ।

सामन्वटेवर् राम स्मृत्वा याति परं पदम् ॥ १ ॥ (अष्टात्मरामायण)

ॐ अथाह भारद्वाजो याज्ञवल्क्य सहोवाच श्रीराममन्त्रस्य महात्म्यं नो ब्रूहि भगवत्
सह उवाच याज्ञवल्क्य तारकतात्पारको भवति तदेव तारकं ब्रह्म त्वं विदि तदेवोपास्य
य एतत्तारकं ब्रह्मणो नित्यमधीते स पाप्मानं तरति स मृत्युं तरति स ब्रह्महत्यां तपति
स भ्रूणहत्यां तरति स वीरहत्यां तरति स सर्वहत्यां तरति स संसारं तरति स विमुक्तत्वा
भवति स महान् भवति सोऽमृतत्वं च गच्छतीति (सामवेदपिप्पलायनशास्त्रा)

हरिः ॐ द्वापरराजे नारदो ब्रह्मण्य जगाम कथं भगवन् गो पर्वतं कठिंसं तरेय
मिति । सहोवाच ब्रह्मा शाश्वतं पृथोस्मि सर्वं श्रुतिरहस्यं गोप्यं तच्छृणु । येन कठिंसंसारं
तरिष्यसि भगवत् आदिपुरुषस्य आरायणस्य नामोच्चारणमात्रेण निर्धूतकठिंभवति । नारद
पुनः पश्य । तत्राम किमिति । स होवाच हिरण्यवर्गम् —

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

इति षोडशकं नाम्नां कलिऋत्मपनाशनम् । नातः परतरं प्रायः सर्ववेदेषु दृढयत इति
षोडशकलाट्टतस्य पुरुषस्यावरणविनाशनं । ततः प्रकाशते पर ब्रह्म मेघापाये रविरदिम-
मंडलीवेति । पुनर्नारदः पप्रच्छ भगवन्कोऽस्य विधिरिति । तत्र होवाच नास्य विधिरिति ।
सर्वदा शुचिरशुचिर्वा पठन् ब्रह्मणः सलोकता समीपता सरूपता सायुज्यतामेति । यदास्य
षोडशकस्य सार्धत्रिकोटिर्जपति । तदा ब्रह्महत्यायास्तरति । स्वर्णस्तेयात् पूतो भवति ।
वृषलीगमनात्पूतो भवति । सर्वधर्मपरित्यागपाप्मासद्यः शुचितामामुयात् । सद्यो मुच्यते
सद्यो मुच्यत इत्युपनिषत् । हरिः ॐ सहनाववल्लिति शान्ति शान्तिः शान्तिः । हरिः ॐ
(कलिसंतारणोपनिषद्)

राम एव परं ब्रह्म परमात्मानिधीयते ।
रामात्परतरं नास्ति यत्किञ्चित्स्थूलसूक्ष्मकम् ॥ १ ॥ (पराशरस्मृति)
रामाश्चास्ति परो देवो रामाश्चास्ति परं व्रतम् ।
नहि रामात्परो योगो नहि रामात्परो मन्त्रः ॥ १ ॥
राशब्दो विश्ववचनो मन्थापीश्वरवाचकः ।

१ १ १ १ १ १ १ १

रकारार्थो रामः सगुणपरमैश्वर्यजलधिः ।
मकारार्थो जीवः सकलविधैकैक्यनिपुणः ॥
तयोर्मध्याकारो युगलमय सर्वधप्रमुख
अनन्याहो ब्रूते त्रिनिगमसरूपोऽयमतुलः ॥ १ ॥ (आचार्यवाक्यम्)
श्रीराम ये च हिला खलमतिनिरता ब्रह्मजीवं वदन्ति
ते मूढा नास्तिकास्ते शुभगुणरहिता सर्वबुद्धयतिरिक्ताः ॥
पापिष्ठा धर्महीना गुरुजनविमुखा वेदशास्त्रैर्विरुद्धा-
स्ते हिला गांगमंभो रविकिरणजलं पातुमिच्छन्ति व्रस्ताः ॥ १ ॥
(शिववाक्यम्)

श्रीमद्भानुसुतातटे प्रविलसद्दिव्यं महत्पत्तनं
तत्क्रंसस्य जगत्रयेऽपि विदितं वर्णं शुभैर्वह्निभिः ।
अन्याद्यौ विबुधाः स्मरन्ति भुवि ये धन्याः कुलं पावितं
तौ तेषां न भजन्ति स्याच्च वदने मध्यस्थितं चाक्षरम् ॥ १ ॥
पठति सकलशास्त्रं वेदपारं गतोपि
यमनियमपरो वा धर्मशास्त्रार्थवेत्ता ।
अटति सकलतीर्थं राजिता वा हुताग्नि-
र्यदि भजति न रामं सर्वमेतद्धृत्वा स्यात् ॥ २ ॥
१२

- करीर कसौटी रामकी झूठा टिकै न कोय ।
 राम कसौगी सो सदै 'ना मरजीवा होय ॥ १ ॥
- करीर कहताहूँ कहजातहूँ सुणता ह सब कोय ।
 राम कसौ मल होवगा नहिँतर मला न होय ॥ २ ॥ (कबीर)
- गूरख तन घर कहा कयायो ।
 राम भजन विन जन्म गुमायो ॥ (श्रीरामानन्दजी)
- रचना राम उचार रे तुझे आयमिलेगे ।
 लपनाम उच्चार करेगा, नहिँ तो फिरिफिरि जन्म घरेगो ॥
 (श्रीमलदासजी म०)
- रामनाम निजमूल है और सकल बिलार ।
 जन हरिया फल मुक्ति कू लीजे सार समार ॥ १ ॥
 (श्रीहरि वाक्यम्)
- राम कया सबही सज्ञा सयहि राम के माहि ।
 रामदास एक राम विन दूजा कोऊ नाहि ॥ १ ॥
- धिन साधू संसार में सुवराये निजनाम ।
 रामदास सत गान्ध दे पहुचावे सुन गाम ॥ २ ॥
- कहा बहेरा मन्का जगना सिष्णु महेष्ट ।
 रामदास वन भी कसो, राम सर्व उपदेश ॥ ३ ॥ (श्रीराम० वाक्यम्)
- एक राम के नाम विन निवटै जरनि न जाय ।
 दादू केत पवि मरे करि कार बहुत उपाय ॥ १ ॥
- रामनाम गुरु चन्द सु, रे मन पेठ मरम् ।
 निहृदानी सु मन मित्वा दादू काट करम् ॥ २ ॥ (दादू दयाल)
- राम नाम जपिनो धवनन मुनिवा सङ्किमोहमे बहि नहि जावो ।
 (नामदेव)
- रे मन राम नाम समार माया के अम कहा भूले बढेगो कर पार ।
 (रेशमजी)
- दया बोधमोहौ कही करि करि कबी बौह ॥
 दयावत जिनके वगे राम राम वरमोह ॥ १ ॥ (गोरखनाथजी)
- शुनर कहत एक दियो जिन राम नाम ।
 गुस्सो उदार कोठ देखो नहिँ सुन्यो है । (शुनरदासजी)
- रजब मिनखा देह कृत् आनमराम न जनिया । (रजबजी)
- हारदा बाबीद राममज में देह गले तो गाठिये । (बाबीदजी)
- रचना रटै न रामकू न कया मुख चोळ ।
 जन हरिदास वे मानवी कया मिलाइ कोळ ॥ १ ॥ (हरिदासजी)

सद्गुरु के मिलने से (साक्षात्कार हो जाने से) जीवात्मा में जो भेदभाव का अंतर था वह सब मिटगया और अभेद (अद्वैत) भाव होकर सारशब्द जो ब्रह्मवाचक राम नाम है जिसकी श्रुति, स्मृति, उपनिषद्, इतिहास, पुराण, आसवाक्य (महापुरुषवाक्य) सस्मृत प्राकृत सर्व ग्रंथों में मुक्तकथ से प्रशंसा की है उस रामनाम की ओलखान हो गई।

तन मन कर हेती रसना सेती रामहि राम रटदा है ॥ २ ॥

तब तन मन उसी में तल्लीन होगया और अनन्य प्रेमपूर्वक रसना (जिह्वा) से राम ही राम शब्द की रटना अहर्निश (दिनरात) होने लग गई ॥ २ ॥

१ रसना से राम नाम रटन—

राम नाम को कीजिये, आठों पहर उचार ।

हरिया बरीबान प्यो करिये कूक पुकार ॥ १ ॥ (भीहरि० वाक्यम्)

रसना सो रटियो करे आठों पहर अभग ।

रामदास उण सत को राम न छोड़े सग ॥ १ ॥ (श्रीराम वाक्यम्)

कनीर राम राम कहि कूकिये ना सोइये असरार ।

रात दिवस के कूकने कबहुक लगे पुकार ॥ १ ॥

राम नाम जपते रहो नव लग घटमं ग्रान ।

कबहुक चीन दयालुके भनक परेगी कान ॥ १ ॥

रामनामको नित भजो रसना होट समेत ।

हरिया जोग ब जुगति विन सहज न को सिखरेत ॥ १ ॥

राम नाम रसना रटै, सोइ जग में साध ।

हरिया सुमिरन सहज का, बाका भता अगाध ॥ २ ॥

स्मरण के स्थान—१ रसना २ कंठ ३ हृदय ४ नाभी ।

स्मरण के भेद—१ अधम २ मध्यम ३ उत्तम ४ अत्युत्तम ।

प्रथम राम रसना सुमरि दितिये कठ न्याय ।

तुतिये हिरदै ध्यान धरि चौथे नाभि मिंगय ॥ १ ॥

प्रथम सो प्रथम अथ नाम रसना लिया दूसरे नाम मध कठ धार ।

तीसरे उत्तम सो नाम हिरदै कड़ा चतुरथे नाभि अतिउत्तमपारा ॥

(भीहरि० वाक्यम्)

दुसरी अथ सुमरेण चौं यह रसना राम राम जपिदेह ।

यह धालवन तीनों करै, मध सुमिरन की सोझी परै ॥ १ ॥

तदनन्तर हृदयस्थान (अनाहत चक्र) में श्वास और उच्छ्वास की गति का ठहरना हुवा और मन ही मनमें स्मरण का ध्यान करने लगा, हृदय में स्मरण होने के पश्चात् नाभिस्थान (मणिपुरचक्र) में स्मरण करता हुवा प्राणवायु समानवायु में आकर मिला (प्राणवायु समानवायु के घर में अर्थात् नाभिस्थान में जब आया) तब अनेक प्रकार के नाच नचाने लगा और सहज में ही आपसे आप मुग्धसे रामनाम का स्मरण होने लग गया ॥४॥

रग रग आरमा मया अचभा छुच्छम वेद भणदा है ।

और ध्यानवायु जो सर्व शरीर में व्यापक हो रहा है उससे प्राण और समानवायु का योग होनेसे रग रग में (नस नसमें) आश्चर्यजनक एक क्रिया का आरम्भ हुवा जिसका भेद वर्णन करना बड़ा सूक्ष्म है ।

ओऊँ अरु सोऊँ देरया दोऊँ पारग्रह परसदा है ॥ ५ ॥

ऐसी स्थिति होने के पश्चात् ओऊँ=हस और सोऊँ=सोह इन दोनों

समस्तरीय इति अथान् कठ में उदानवायु और सब शरीरमें ध्यानवायु निवास करता है ।

६ नाभि स्थान में जब स्मरण होने लगता है तब सहज स्मरण होता है ।

ररकार सुमरण सहज नाभि कमल अस्थान ।

हरिया पच्छिमदेशकों पहुँचन का परमान ॥ १ ॥

क्यू जल सेही सिंधुका बाका थाह न कोय ।

हरिया सुमिरन सहजका निशिदिन घटमें होय ॥ २ ॥

सोरठा ।

हरिया मुख ममकार, जब सहनों सुमिरन नहीं ।

मरे घरे आकार, मेला जीव न जीव दिन ॥ १ ॥

अर्थात् सहज सुमिरन नाभिस्थान में जब ररकारका स्मरण होने लग जाय तो पश्चिम देश की पहुँचने का प्रमाण समझना । सहज सुमरण में मकार का स्मरण बढ़ होकर केवल ररकार शब्द की रात दिन रटना होने लग जाती है सभी जीव और शिव एक हो जाते हैं ।

१ सुष्ठम वेद — यह महात्माजोंछ सांकेतिक शब्द है जिसमें सूक्ष्म भेद (वार्ताओं) का वर्णन है अथवा स्वस्वेष गुण को भी कहते हैं अथवा भगवानके आधोच्छ्वास रूप वेदको भी कहते हैं अथवा छदासि यस्त पणानि यस्त वेद ॥ वेदविद इत्येको भी कहते हैं ।

मात हाथ स परब्रह्म परमात्मा क दशनका प्राप्त हाताह वह हुइ ॥ ५ ॥

१ अजपा के जप से परब्रह्म परसता है—

ओजं सोजं जाप अजप्पा, घटमें कीया सप असपा । (श्रीहरि० वाक्यम्)
ओजं सोजं अर्थात् हंसः सोहं अजपा जप है इसने घट में असप (जीव ब्रह्मका मेद) का सप (अमेद) करदिया ठीक वाच्यार्थ सफल कर दिया ।

सलटा अजपा जाप जपाया । हृद को जीत वेहदमें आया ॥

(श्रीराम० वाक्यम्)

नासापथसमारुष्टः पवनः फुस्फुसं गतः ।

शोधयेच्छोणितं दुष्टं तेन जीवन्ति जतव ॥ १ ॥

सोहंशब्देन जीवानां श्वाभोच्छ्वासौ निरतरम् ।

स्यात् वा हंशब्देनोच्छ्वासश्वासौ विपर्ययात् ॥ २ ॥

इत्थयं धक्षरो मंत्रो जीवजप्योऽजपा मता ।

जपारभो हि जननं मरणं तत्समापनम् ॥ ३ ॥

इसी अजपा मंत्र को अजपा गायत्री कहते हैं ।

एकविंशतिसाहस्रं पदशताविकमीश्वरि ।

जपते ब्रह्महं प्राणी सान्द्रानन्दमयी पराम् ॥ ४ ॥

विना जपेन देवेशि जपो भवति मन्त्रिणः ।

अजपेयं ततः प्रोक्ता भवपाशनिकुंतनी ॥ ५ ॥ (दक्षिणामूर्तिसहिता)

अजपा नाम गायत्री जीवो जपति सर्वदा ।

पद शतानि दिवारात्रौ सहस्राण्येकविंशतिः ॥ १ ॥

एतत्संख्यान्वित मंत्रं हंसः सोहं क्रमेण वै ।

(कुलार्णव)

जातः स इति वैशब्दमुच्चार्यारभते जपम् ।

महाप्रयाणसमये ह्युच्चार्य समापयेत् ॥ १ ॥ (दक्षिणामूर्तिसहिता)

यह अजपा जप तो स्वाभाविक रीत्या अहर्निश होता ही रहता है, परंतु यही अजपा जप राममंत्र के सहित जपने से फलदायक होता है ।

ओजं सोजं ऊंवरा, दोऊ खाली ओइ ।

नाम विना ऊंगै नहीं, पच पच मरो करोइ ॥

(रजवजी)

ओजं सोजं देह लग, निशि दिन आवे जाय ।

एक अखंडी शब्द में, हरिया सुरति समाय ॥ १ ॥

अर्थात् हंसः सोहं यह श्वाभोच्छ्वास शब्द, शरीर है तबतक रात दिन आता जाता रहता है, इसी के द्वारा एक अखंडी शब्द जो रंकार आत्मा स वाचक शब्द है उसमें सुरति समाय दो यानी समावेश करदो—

मम्मा हुय पासै कमल विकासै अथ नाम आखदा है ।

ऊ नामज केवल बडे महारल रोम रोम उचरदा है ॥ ६ ॥

जिससे राम राम शब्द जो मैं जपताथा उसमें से मकार बोरना बढ होगया अर्थात् माया से रहित अद्वैतरूप अर्धनाम जो केवल रकार है उसा रकार का (राँ राँ राँ राँ राँ राँ) स्मरण होने लग गया नाभिकमल का विकास होगया जिससे शुद्ध निर्गुण (माया रहित) पार परब्रह्म का दर्शन हुवा तब महान्तशाली अर्धनाम रकार जो अद्वैतरूप है केवल उसी का उच्चारण रोम रोम में होरहा है ऐसा माखस होने लगा ॥ ६ ॥

रहता से रत्ता है निज तत्ता न्यारा हुय निरपदा है ।

ऐसा अविनासी आय न जासी भाग बडे भेटदा है ॥ ७ ॥

यह रकार का स्मरण इस शरीर में रहनेवाले आत्मामें रत (स्वलीन) होने से निज तत्त्व रूप होजाने के कारण न्यारा होकर देखने लग गया अर्थात् द्रष्टा होकर अपने आपको देखने लगा, जिस परब्रह्मको अलग होकर देखने लगा वह परब्रह्म ऐसा अविनाशी है जो न तो कहीं से आता है न कहीं जाता है अपने में ही सदा सर्वदा विराजमान रहता है उस परब्रह्म की भेट बडे महामग्य होते हैं तब ही होती है ॥ ७ ॥

भोज सोऊ शब्द की सहजो मुणी अवाच ।

अन हरिया इन ऊरै ररकार का राच ॥ १ ॥

भोज सोऊ शब्द की, तीन शोक लग सोय ।

अन हरिया ररकारका, आर पार नहिं सोय ॥ १ ॥ (श्रीहरि वाक्यम्)

अनपात्रपनिष्ठ लक्षण—

अन पवना अरु मुरति से, आत्म पकने आय ।

रज्जव लगे मुरति से, एहे अजनाचाय ॥ १ ॥

(रज्जवती)

अजनाचाय लगवे हेत नीरक्षीर न्यारा करिदेत ।

बिष छाडे अमृत कू पीवे खमस पिछाणे सुमरिण साच ।

अन्तर एक राय सुख राखे, और सकल सुख माने काच ॥

(श्रीजगन्नाथजी महाराज)

१ मनुष्याणां सहस्रेषु कथिततति सिद्धये ।

यत्तमपि सिद्धानां कथिमा वेति वक्षत ॥ १ ॥

बहुनां जन्मानामते जन्मवार्मा प्रपद्यते ।

माधुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥ १ ॥

(गीता)

रेचक अरु पूरक कर विन कुंभक आप उलटि पलटंदा है ।
विना हाथ की सहायता के जब आपसे आप स्वयं बाँये से दहिना और
दहिने से बाँई तरफ उलट पुलट रेचक पूरक होकर कुंभक होने लगता है,
अथवा रेचक और पूरक के करे विना “केवल कुंभक” ही होने लगे ।

प्राणायामः—

प्राणायामत्रिधा प्रोक्तो रेचपूरककुंभकैः ।

सहितः केवलश्चेति कुंभको द्विविधो मतः ॥ १ ॥

यावत्केवलसिद्धिः स्यात्सहितं तावदभ्यसेत् ।

रेचकं पूरकं सुक्ता सुखं यद्वायुधारणम् ॥ २ ॥

न रेचको नैव च पूरकोऽत्र नासापुटे सस्थितमेव वायुम् ।

सुनिश्चलं धारयते क्रमेण कुंभाख्यमेतत्प्रवदंति तज्ज्ञाः ॥ ३ ॥

(हठयोगप्रदीपिका)

अर्थात् जबतक “केवल कुंभक” सिद्ध न हो तबतक रेचक पूरकादि क्रिया करके
कुंभक का अभ्यास करता रहै, जब रेचक और पूरक के विना ही स्वयं वायु नासापुट
में ही सुनिश्चल स्थिर होकर कुंभक होजावे उसको केवल कुंभक कहते हैं, यह जिसके
सिद्ध हो जाता है उसको—

कुंभके केवले सिद्धे रेचपूरकवर्जिते ।

न तस्य दुर्लभं किञ्चिन्निपु लोकेषु विद्यते ।

शक्तः केवलकुंभेन यथेष्टं वायुधारणात् ॥

राजयोगपदं चापि लभते नात्र संशयः ।

कुंभकात् कुंडलीबोधः कुंडलीबोधतो भवेत् ॥

अनर्गला सुपुत्रा च हठसिद्धिश्च जायते ।

हठं विना राजयोगो राजयोगं विना हठः ॥

न सिध्यति ततो युग्ममानिष्यतेः समभ्यसेत् ।

पण लोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं होता है । जो केवल कुंभक करने को समर्थ हो
जाता है और जो यथेष्ट वायु धारण कर सकता है वह राजयोग के पदको प्राप्त होता है
इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं । कुंभक से कुंडली का प्रबोध होता है और कुंडली
के प्रबोध होनेसे सुपुत्रा सरल हो जाती है जिसमें हठयोग की सिद्धि हो जाती है ।

1. स्पर्शान्कृत्वा वहिर्वाह्योश्चक्षुश्चैवातरे भ्रुवोः ।

प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥

यत्तैर्द्वियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः ।

विगतैर्लभ्यक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ॥ (श्रीमद्भगवद्गीता)

घाटक हुय ध्यानू चात विद्वानू आपा पट खुलदा है ॥ ८ ॥

घाटक (विना पलक झपकाये एक सरीखे नेत्र किसी सूक्ष्म लक्ष्य की ओर जमाकर एकाग्र अनन्य भाव का चित्त हो) ध्यान करने से विज्ञान (भूतभविष्यवर्तमानज्ञान) प्राप्त होता है तब अपने आपका पटदा खुल जाता है और अपने आपको पहिचानने लग जाता है । अर्थात् "अहं ब्रह्मास्मि" ज्ञान होजाता है ।

सुषुप्तमण की घाटी बढियाघाटी भरसघरा ठहरदा है ।

उपरोक्त प्रकार से प्राण वायु का झुमक एकाग्रता से रकार रटण पूरक होता हुवा सुषुम्णा की महाघाटी के पथ में जब प्राणवायु अपानवायु के

१ घाटक —

निरीक्षेन्निधिलक्ष्या सूक्ष्मलक्ष्य समाहित ।

अधुसपातपथतमाचार्यैर्घ्राटन स्मृतम् ॥ १ ॥

मोक्षन नेत्ररोगाणां तद्वादीना भ्रष्टाटकम् ।

यज्ञतत्त्वाटक गोप्य यथा हाटकपेटकम् ॥ २ ॥ (हठयोगप्रदीपिका)

अर्थात् इसर उधर नहीं देखते हुए बिना पलक झपकाये निधिल दृष्टि से किसी लक्ष्य को एकाग्र चित्त होकर जब तक नेत्रों में से पानी टपकने में आजाय तब तक देखते रहने को आचार्यों ने घ्राटन कहा है । यह घ्राटक नेत्र के सब रोग को और तद्वा आदि को मिटाने वाला यज्ञपूषक गुप्त रखनेयोग्य है ।

पुत्रौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मन ।

नत्सुच्छिद्रत नातिनीच चैलात्रिनङ्गोत्तरम् ॥ ११ ॥

सर्त्रकाग्र मन कृत्वा यतचित्तद्रियक्रिय ।

उपविश्यासने युज्याधागमात्मनिःपुद्गले ॥ १२ ॥

सम कायशिरोग्रीव धारयन्मूल स्थिर ।

सुश्रेण्य नासिकाग्र स्तु निःश्वानवलोकयन् ॥ १३ ॥

प्रसात्तात्मा भिमतभीमदाचारिण्ये स्थित ।

भन सयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्पर ॥ १४ ॥

युजनेव सदात्मान योगी नियतमानस ।

धाति निवाणपरमां भूतसंस्थामधिगच्छति ॥ १५ ॥

(भगवद्गीता अध्याय ६)

२ सुषुम्णा — इहा और विगग नासी के मध्य में सुषुम्णा है ।

१ कितनेक लडाट देभर्म प्राण निरोध करने को भी घ्राटक कहत ह ।

दोहा ।

इला चंद रवि पिंगला, मध सुखमण का घाट ।

हरिया गुरु परसाद ते, खूला सहज कपाट ॥ १ ॥ (श्रीहरि० वाक्यम्)

इडा भगवती गंगा, पिंगला यमुना नदी ।

तयोर्मध्ये प्रयागस्तु यस्तं वेद स वेदवित् ॥ १ ॥ (बृहत्सामब्राह्मण)

सुषु इत्यव्यक्त शब्दं प्रायति त्रा-कः मेरुदंड बाह्ये इडा पिंगला नाडी मध्यस्थ नाडी-विशेषः ।

मेरोर्बाह्यप्रदेशे शशिमिहिरशिरे सव्यदक्षे निपण्णे ।

मध्ये नाडी सुषुम्ना त्रितयगुणमयी चंद्रसूर्याभिरूपा ॥ १ ॥

(शब्दकल्पद्रुम)

मेरुबाह्ये इडा नाडी पिंगला या समन्विता ।

सुषुम्ना भानुमार्गेण ब्रह्मद्वारावधिस्थिता ॥ १ ॥

(योगसूत्रोदय)

नाडीर्दश विदुस्तासु मुख्यास्तिष्ठः प्रकीर्तिताः ।

इडा वामे तनोर्मध्ये सुषुम्णा पिंगला परे ॥

मध्या तास्वपि नाडी स्यादभिसोमस्वरूपिणी ॥ १ ॥

अत्रेडा वामवृक्षाधःस्था धनुर्वक्रा वामनासापर्यंतगता, एवं पिंगला दक्षिणांडाधःस्था धनुर्वक्रा दक्षिणनासांतं गता, पृष्ठवंशातर्गता सुषुम्णा इत्यर्थः । (शारदातिलक)

तात्पर्य यह है कि, मेरुदंड के बाहर के बाँये भागमें इडा नाम की नाडी बाँये अंड के मूलसे निकलकर धनुष के समान टेढ़ी होकर वामनासा के अंतपर्यंत गई है, एवं दक्षिण अंडके मूलसे निकलकर धनुषके समान टेढ़ी होकर मेरुदंडके दक्षिणभागमें रहकर पिंगलानामकी नाडी दक्षिणनासिका के अंतपर्यंत गई है, और इन दोनों (चंद्र-सूर्यस्वरूपिणी) इडा पिंगला नाडी के मध्यमें (मेरुदंड के बीचमें) अर्थात् मेरुदंड के भीतर के मध्यभागमें अभिरूपिणी सुषुम्नानाडी मूलधार से निकलकर ब्रह्मद्वारपर्यंत गई हुई है, यह नाडी त्रिगुणात्मिका चंद्रसूर्याभिरूपा है । मेरुदंड को ही पृष्ठवंश कहते हैं । इसी पृष्ठवंश के भीतर के भागमें सुषुम्णा नाडी रहती है और बाहर के भागमें बाँई ओर इडा दहिनी और पिंगला नाम की नाडिये आजु बाजु मिली हुई रहती हैं । इन्हीं तीनों नाडियों को गंगा यमुना और प्रयाग भी कहते हैं ।

सुषुम्णा को पश्चिमद्वार अथवा वंकनाल अभिरूपिणी भी कहते हैं । इसके और भी कई नाम शास्त्रों में इस प्रकार कहे हैं—

सुषुम्ना शून्यपदवी ब्रह्मरभ्रं महापथः ।

श्मशानं शांभवी मध्यमार्गस्थेलेकवाचकाः ॥ १ ॥

इस सुषुम्णा नाडी के विषय में विशेष विवेचन इस प्रकार है—

मस्तिष्क का स्वल्प कतुए की खोपड़ी के समान है इस में खेत रूढ़ के समान चरबी की गिलिया चारीक शिथिलों में छिपटी हुई मरी हैं जिनको मेजा कहते हैं। इसके चौड़ाई में दो भाग नरली की फावों की समान हैं और उम्बाई में भी दो भाग हैं। सामने का भाग पेचानी की तरफवाल डाक्टरीमें (CEREBRUM) सेरीब्रम कहलाता है और पिछला भाग (CEREBELLUM) सेरीब्रम कहलाता है। यह पिछला भाग पतला होता हुआ चारीक सूतकी तरह रीढ़ की हड्डी में फला हुआ है। जिसको हराम मगन कहते हैं। इस रीढ़ की हड्डीमें शरीर की सम्पूर्ण शक्तियों और प्रत्येक प्रकार के साधुओं के केंद्र हैं। सम्पूर्ण केंद्रों में गाठ लगी हुई है जिससे मनुष्य अपनी शक्ति को प्रयोग में नहीं ला सकता। बुद्धिनी नाम केंद्र यदि जगाया जावे तो यह जोर में भरकर इन गाठों को तोड़ सकता है क्योंकि जीवात्मा इसी में छिपटा हुआ अवत रहता है जो इच्छाओं की वक्तोंकी जरीर में बघकर शरीर के अंदर रुद है। शरीर में ऐसे आत्मिक केंद्र तो बाइह हैं परंतु इनमें से अधिक विख्यात हैं जो पदचक्र कहलाते हैं। डाक्टरों की सम्मति में ये ये स्थान हैं जहां किसी प्रकार के साधु के मुँह बाहर इच्छे होते हैं और जहां अलग अधिक बल दूसरे भागों की अपेक्षा इकट्ठा रहता है और इनमें प्रतिबन्ध शक्ति मरी और बढ़ती रहती है।

रीढ़ की मेरुदक (SPIINAL CORD) साइनल कोड में जो हराम मगन भर है उसका पीचों बीच बाज बराबर चारीक नाली मस्तिष्क से लेकर नीचे सुदातक चली गई है जिसको अमेजीम (CANAL OF SPIING) केनाल आफ स्पिंग और सरुत में सुपुत्रा कहते हैं यह रग लेनी से मरी हुई है और यही स्थान शक्ति व निदानी का घर है। और जिस प्रकार बत में गाठ होती है इसी तरह इस में पदचक्रों का साधु केंद्र है और इनके स्थान की ठीक पहिचान यह है कि इन स्थान के सामने शरीर में जरासा गड्ढा व खाली स्थान अवश्य होता है। (पदचक्रों का विशेषवर्णन पदचक्रवर्णन के प्रसंग में आगे लिखन में आया)। इस नाम की नाडी सुपुत्रा का बाइ तरफ होती हुई आकावक तक आती है फिर वहा से मुड़कर सीधे नयने में पहुचती है। और पिछला सुपुत्रा के सीधी तरफ छिपटी हुई आती है फिर वहा से मुड़कर बोये नयने में जाती है। सुपुत्रा रीढ़ के भीतर होकर जाती है। इसके मध्यमें खाली स्थान है जिसको चित्रा कहते हैं इसी में आत्मा रहता है। इस भाइके ३३ दरन हैं जिनमें केवल पांच साधारणतया प्रगट किय जा सकते हैं। डाक्टरी मत में तो नाडियों धरि के जनेका काम करती हैं परंतु योगशास्त्र में ऐसा माना है कि वे बाधु और शक्ति भी के आती हैं। यह निती में सब चौंदा हैं परंतु इनमें से उपरोक्त (इसा पिछला सुपुत्रा) तीन अधिक विख्यात और आवश्यक हैं। यह नाडियां चारीक सूतके समान साधु हैं जो कि हड्डियों से निकलती हैं। मोती का अमीठ यह होता है कि रीढ़ की नली अर्थात् सुपुत्रा को अच्छ रखते जिससे लेनी की नहर बराबर जारी रहे और सम्पूर्ण केंद्र सतत और रुद रहे जिससे इच्छानुसार काम दे सके।

साथ मिलकर सुषुम्णा नाड़ी के मार्ग में चढ़ा तब अरसधर (शून्यस्थान) में जाकर ठहरा।

फिरिया मन पूरव चले अपूरव ठाम ठाम ठमकंदा है ॥ ९ ॥

तत्पश्चात् पूर्व से मन फिरकर कंठ हृदय नाभि में क्रमसे ऊपर से नीचे स्थान २ पर श्वास ठहरता हुआ (स्थिर होता हुआ) पश्चिम के तरफ जाने सुषुम्णा मार्ग के द्वार की ओर चलने लगा ॥ ९ ॥

जालंधर बंधा उरधे कंधा मन अरु पवन मिलंदा है।

उलट्या है आसण पलट्या वासण सुरत शब्द परसंदा है ॥ १० ॥

कंधे के ऊपर का जालंधर बंध करने से प्राणवायु की ऊर्ध्वगति रुक जाती है और पश्चिमतानसे ब्रह्मनाड़ी में जाने लगता है। तथा मूलबंध करने से अपानवायु उलटकर ऊर्ध्व गामी होता है एवं जालंधरबंध और मूलबंध करने पर प्राण अपान वायु के आसन उलट पुलट होने के कारण दोनों मिलजाने से सुरत शब्द का स्पर्श हुआ।

इस प्रकार सुषुम्णा के स्वरूप का वर्णन योगशास्त्र में किया हुआ है। इस परसे सुषुम्णा का मार्ग कितना अधिक कठिन है यह सहज ही ध्यान में नहीं आसकता है। इसी अति कठिन मार्ग की घाटी को अर्थात् गांठे बीच बीचमें जो आडमारनेवाली हैं उनको लांघ के छेदन करके प्राण की गति जब सुषुम्णा में होती है तब शनैः शनैः ठहरता हुआ ब्रह्मद्वार पर त्रिकुटी में पहुंचता है।

प्रथम ध्यान पूरव दिशा, गगन गर्जिया जाय।

ठाम ठाम पाताल कूं, पछे पिछम कूं थाय ॥ १ ॥

१ बंध तीन प्रकार के होते हैं जालंधर, मूल, और उद्विग्नान।

१ जालंधर बंधः—

कंठको सिकोड़ कर मजबूती से चिबुक अर्थात् ठोड़ीको हृदय में जमा के सीधा बैठने को जालंधर बंध कहते हैं।

कंठमाकुंच्य हृदये स्थापयेचिबुकं दृढम्।

बंधो जालंधराख्योऽयं जरामृत्युविनाशक ॥ १ ॥

है जालंधर बंध में, मन पवना की गांठ।

हरिया मिल्या उतान में, सुरत शब्द की सांठ ॥ १ ॥

सुरत चली आकाश कूं, दे जालंधर बंध।

जन हरिया जहां जाणियै, हृद बेहृद की संघ ॥ २ ॥

यहती बॅरनाही खुली किनाही मँवरगुफा मणकदा है ।

उलुध्या मेरा गुरुमिलचेरा चहुँ चरुडोल फिरदा है ॥ ११ ॥

चलती हुई एक नाडी (सुपुम्मा) की जिवाही खुलगई (सुपुम्मा नाडी का द्वार खुल गया) जिमसे मँवर गुफा (नक्षत्रप्रस्थान) में पहुँचने का

हरिया शब्द पयाल को चल्या गगनतँ होय ।

बध कालघर बध को, फिरला जाने कोय ॥ १ ॥

(श्रीहरि० शक्तिम्)

१ मूलबध -

एही से योनिस्थान को दबाकर गुदाको संकोचकर और नीचे जाने वाले क्षण वायु को बन्पूर्वक ऊपर खींचके चगाते रहने को मूलबध कहते हैं ।

पार्थिवभागेन सपीड्य योनिमाकुचयेद्बुद्धम् ।

अपानमूर्ध्वमाकृष्य मूलबधोऽभिधीयते ॥ १ ॥

अधोगतिमग्नान् वा ऊर्ध्वेण कुरुते बलात् ।

आकुचनेन त प्राहुर्मूलबधं हि योगिन ॥ २ ॥

२ उड्डियानबध -

नाभी के ऊपर के भागको पीठ की ओर खींचके विपश्चा रखने को उड्डियानबध कहते हैं ।

उदरे पश्चिम तान नाभेरूर्ध्वं च कारयेत् ।

उड्डियानो ह्यसौ बधो मृत्युमातङ्गकेसरी ॥ १ ॥

मूलस्थान समाकुच्य उड्डियानं तु कारयेत् ।

इवा च पिग्गा यच्चा नाहयेत्पश्चिमे पथि ॥ २ ॥

बधत्रयमिदं त्रैशु महासिद्धैश्च सेवितम् ॥ ३ ॥

इन तीनो बधों के करने से सुपुम्माभाग में दोनों वायु का गमन हो जाता है ।

मूलनभारिपानस्य गतिरूर्ध्वं प्राप्यते ।

नाभ्यधरात्तया प्राणस्त्वधोगामो भवेत्पुन ॥ १ ॥

प्राणपानौ मिलेच्चाऽथ सुपुम्मावदनातरे ।

उड्डियानेन बधेन विशते नात्र सग्य ॥ २ ॥

एवमभ्यासतो निल कुमकस्य निरंतरम् ।

अद्वरं प्रविश्याथ प्राणो भवति निश्च ॥ ३ ॥

(मोक्षगीता)

मूलबधसे अपान वायु की ऊर्ध्वगति होती है और जालघरबधसे प्राणकी अधोगति होती है एवं दोनों प्राण अगान मिलके सुपुम्मा के मुनके भीतर उड्डियान बध के करने से नि संशय प्रवेश होत है । इन प्रकार निल कुमक करने का अभ्यास निरंतर करते रहने से प्राण अक्षरार्थ में प्रवेशकर निश्चय हो जाता है ।

ज्ञान होगया । तत्पश्चात् जालंधर बंध और मूलबंध के करने से प्राणवायु अपानवायु से मिलके उड्डियान बंधद्वारा सुषुम्ना नाडी के खुले हुए द्वार प्रवेश करगया । उड्डियानबंध के अभ्यास से प्राण को कहीं जाने का मार्ग नहीं मिला अतः वह पीठ की तरफ से मेरुदंड मध्यस्थित सुषुम्ना नाडी मेरु को उलंघ कर गुरु चेला दोनों (प्राण अपान वा प्राण मन) मिलके च्यारों तरफ चकडोल (नीचेसे ऊपर ऊपरसे नीचे) चक्र के अंगान फिरने लगे । अर्थात् तीनों प्रकार के बंधनों के साधनद्वारा कुंडलिनी नागृत हो जो अपने मुखसे सुषुम्ना के मार्ग को रोक रखा है उस को बुला करदेती है और प्राण अपान दोनों मिलके उस सुषुम्ना के विवर में प्रवेश कर नीचे से ऊपर और ऊपरसे नीचे फिरने लगते हैं ।

पेटचक्र मेघा भवदुख छेद्या साँसा शोक नसंदा है ॥

गरजत है गेणूं चरजतवेणूं सरवर शून्य वसंदा है ॥ १२ ॥

१ पदकः—

१ मूलाधार २ उपस्थ ३ नाभिमूल ४ हृदय ५ तालुमूल ६ ललाट इन छः स्थानों में एकत्रित हुए ज्ञायुसमूह मूल के केंद्रों को पदक कहते हैं ।

आधारे लिंगनाभौ प्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे

द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्धे चतुर्के ।

वासांते बालमध्ये ङफकठसहिते कंठदेशे खराणां

हंसंतत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ॥ १ ॥

पदकों का कोष्टक ।

संख्या	नामचक्र	स्थान	पद्मपत्र- संख्या	ॐ	ॐ	मूर्ति
१	मूलाधार	मूलाधार	४	व से स पर्यंत	उत्पत्तिशक्ति	अधःशक्ति
२	स्वाधिष्ठान	लिंग	६	व से ल	ब्रह्मा	शिव
३	मणिपुर	नाभि	१०	ड से फ	विष्णु	
४	अनहद	हृदय	१२	क से ठ	महादेव	ब्रह्मा
५	विशुद्ध	तालुमूल	१६	खर सोलह	दुर्गा	सुषुम्णा
६	आज्ञा	ललाट	२	ह क्ष	शून्यस्थान	

सहस्रारचक्र (सहस्रदल) यह सातवां चक्र है इसका ब्रह्मरंध्र स्थान है इसके सहस्र १०००० दल हैं और परमपद इसकी शक्ति है । इनके उपरांत किसी किसी ने सूर्यचक्र और मनश्चक्र नामक २ चक्र और माने हैं ।

शरीरस्य पञ्चाकार पदप्रकारचक्रम् ।

सप्त पदानि तत्रैव सन्ति त्रैका इव प्रभो ।

१ गुदे पृथ्वीसम चक्र इरिद्रण चतुदलम् ॥ १ ॥

२ लिंगे तु पददल चक्र स्वाधिष्ठानमिति स्मृतम् ।

त्रिगोडयद्दिनिलय तप्तचामीकरप्रभम् ॥ २ ॥

३ नाभौ दशदल चक्र कुम्भलिन्या समवितम् ।

नीलापनदिम ब्रह्मम्बनपूर्वकमन्दिरम् ॥ ३ ॥

मणिपूरामिध सख्य जलस्थानं प्रधीततम् ।

४ उदरादित्स्रस्रश्च हृदिचक्रमनाहतम् ॥ ४ ॥

कुम्भकाल्य द्वादशारे मणव वातुमन्दिरम् ।

५ कटे विगुह्यधारण षोडशारे पुरोदयम् ॥ ५ ॥

शामबी वरचम्राह्य चद्रबिन्दुविभूषितम् ।

६ षष्ठमाङ्गल्य चक्र त्रिदल त्रेतमुत्तमम् ॥ ६ ॥

पदचक्राणीह मेघानि नैतद्वेद्य कथयन् ।

राधाचक्रमिति दयात मन म्यान प्रकीर्तितम् ॥ ७ ॥

७ सहस्रदलमेकल परमामप्रकाशकम् ।

निलहानमय सख्य सहस्रादित्स्रस्रमम् ॥ ८ ॥

पहिला—मूलाधार चक्र=यह रीठ की हड्डी के आसीर या सबसे नीचेवाला स्थान है जो गुदा का कमल भी कहलाता है इसको अंग्रेजी में SACRAI PLEXUS सेक्रे ट्रेनसस कहते हैं । योगी लोग इसको सूरज का स्थान कहते हैं । इसमें सत-रज-तम तीनो का भंडार समझते हैं । इसीतर सपूर्ण जीवन निर्भर मानते हैं । इस स्थान पर कुछछिनी देवी साते तीन आटे देके लिपनी है या उत्पत्ति की शक्ति रखती है । इसका चक्र पृथ्वी के समान हरे रंग का है इसमें चतुर्दल कमल है उनमें व, श, ए, उ ये चार वर्ण हैं इसको ब्रह्मचक्र भी कहते हैं ।

द्वितीय—स्वाधिष्ठान नाम का चक्र है=यह उपस्थ हड्डी के ऊपर दधाने से जो खाली स्थान हात हाता है इसके ठीक सामन रीठ की हड्डी में है यह कमल ८ दल का है, इसमें व, भ, म, य, र, ल, य, छ व्यञ्जनामर हैं इसको ब्रह्मा का स्थान बत लाते हैं । कोई कोई शिव का स्थान भी कहते हैं । यह संपूर्ण ससार का उत्पत्त कर नेवाला है और यही त्रिलोक र्म अग्नि का स्थान है और तनाये हुए सुवर्ण के समान रंगवाला है ।

तीसरा—मणिपुर नाम का चक्र है=यह नाभि के मुकाबले में है, इसको अंग्रेजी में SOLAR PEXUS सोलर पेक्सस कहते हैं । इसमें दशदल का कमल चक्र है । त्रिनमें ह, द, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ये दश अक्षर क्रम से विराजमान हैं

यह विष्णु का स्थान है और नील कमल के समान घनश्याम वर्ण का है इस को स्वच्छ जल का स्थान और ब्रह्मस्थान भी कहते हैं ।

चौथा:—अनाहत नाम का चक्र है=इसको अग्नेयी में *CARDIAC PLEXUS* कहिये प्लेक्सेस कहते हैं । यह छाती के मध्यमें जो गद्दा कौड़ी कहलाता है उसके मुकाबिले में है और महादेव का स्थान है, इस में द्वादश १२ दल का कमल है, बारहों दलों में क्रमसे क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ये बारह वर्ण हैं, इसका रंग उदय होते हुए सूर्य के समान है. और इसको कुम्भक स्थान वायु का स्थान तथा विष्णु का स्थान भी कहते हैं । कितनेक इसको ब्रह्मा का भी स्थान कहते हैं ।

पाँचवाँ:—विशुद्धि नाम का चक्र है यह गले में हँसली की हड्डी के ऊपर जो गद्दासा है इसके मुकाबिले में है । इसमें सोलह १६ दल का कमल है जिनमें क्रमसे सोलह ही स्वर अनुस्वारयुक्त विराजमान हैं (अ, आं, इं, ईं, उं, ऊं, ऋं, एं, लं, लं, एं, ऐं, औं, औं, अं, अः,) इसको दुर्गाका स्थान कई पार्वतीपति का स्थान तथा सुषुम्नाका स्थान भी कहते हैं । यह महत्प्रभ धूम्रवर्ण का है, कितनेक शुक्ल वर्ण का भी कहते हैं । यह जीव की विशुद्धि करने वाला है । कंठ में सुषुम्ना, इडा, पिंगला इन तीनों नाडियों का चेष्टन, मनुष्यों के रहता है । यह पट्टेण आकृतिका और छः अगुल प्रमाण का है ।

छठा:—आज्ञा नाम का चक्र है=यह दोनों भ्रुवों के मध्यमें नाक की जड़ के स्थान पर है । यहा इडा, पिंगला, सुषुम्ना इन तीनों नाडियों का प्रांत आकर मिला है इस कारण इस को त्रिपथ स्थान कहते हैं । यह पद्मकोणाकृति चार अगुल का रक्षवर्ण है । इसमें दो दल का उत्तम श्वेतवर्ण का कमल है इसमें ह और क्ष इन दो अक्षरों का निवास है । इसको राधाचक्र तथा मनका स्थान व शून्य स्थान अथवा शून्य सरोवरभी कहते हैं । इसका ध्यान करने से वायु, जल, अग्नि पर अधिकार होता है, भय जाता रहता है और कर्म के बंधन से छूट जाता है ।

सातवाँ:—सहस्रदल कमल चक्र का स्थान वह है=जो ईश्वरी ज्ञान से संबंध रखता है जिसका वर्णन करना जिह्वा और लेखनी से बाहर है, परंतु कुछ योगीजन ऐसा कहते हैं । कि तालू के ऊपर एक सहस्रदल का कमल है जिसमें चन्द्रमा का स्थान है और जो सुषुम्ना की जड़ है, इसीके ऊपर ब्रह्मरंध्र है इस चंद्रमा से प्रतिसमय अमृत वर्षा होती रहती है, जिसकी दो धार होकर नीचे सूरज के स्थान तक जाती है, एक रीढ़ की बाँई ओर को जो इडा कहलाती है. दूसरी रीढ़के अंदर होकर जो सुषुम्ना कहलाती है । रीढ़ के नीचे का केंद्र जो सूर्यस्थान कहलाता है, इसमें से एक आतशी किरण निकलती है जो सीधी होकर ऊपर चढ़ती है मानों स्रापु शक्ति की लहर बाई ओर से सीधी ओर को प्रतिसमय जाती और चक्कर लगाती रहती है । मूलाधार कमल से एक प्रकार का विष निकलता है । जो सीधे नयने में आता है और नाशकारी है, परंतु उसको चंद्र का अमृत प्रभावित करता रहता है इसीसे उसका

अवर जाता रहता है। सहस्रदल पद्म एक महासागर के समान है इसमें परमात्म तत्त्व का प्रकाश हो रहा है जो नित्य 'नानमय सलक्षरूप एक हजार सूर्य के प्रकाश के' मुख्य प्रकाशाला है यही ब्रह्मस्थान है इसी को परमपद स्थान कहते हैं, इसमें जो योगी अपनी योगसाधन क्रियाद्वारा पहुँचता है वह परमपद को प्राप्त होता है और जन्म मरण से रहित होजाता है। यद्वाता न निवर्तते तद्वाय परम भवम्"।

इस प्रकार के ये पदचक्र ८ इनको भेदकर जो सातवें प्रद्वार प्र चक्र में पहुँच जाता है उसको कुछमी कष्टसाध्य नहीं रहता है।

मूलाधार चक्र की विवेचना—पीछे कह आये हैं कि छ स्थानों में एकत्रित हुए सायुधसमूह मूलके केन्द्रों को पदचक्र कहते हैं।

सायु (नाडी) समूह ७२००० बहत्तर हजार हैं उनमें से २४ मुख्य हैं। उनमें से भी १० मुख्य हैं।

माहीना सबहो देवि कञ्जयोनि वगान्भवत् ।

तत्र नाम्न्य सपुत्रस्य सहस्राणां त्रिसप्तति ॥ १ ॥

प्रधाना दशबाहिन्या मूलस्य दश सृता ।

इनां च विंशत्यै चैव सुपुत्रां च तृतीयका ॥ २ ॥

पाषाणै हस्तिजिह्वै च पूषा चैव यशस्विनी ।

अश्वकुर्वा कुहूधैव शशिनी च दश सृता ॥ ३ ॥

एव माहीमय चक्र विधेय शक्तिचक्रके ।

इहाया विन्दायाच भव्ये या सा सुपुत्रिका ॥ ४ ॥

इय च त्रिगुण हेमा मद्रथिष्णुशिवारिन्ध्र ।

रत्नोष्णा च वज्रास्त्रा विद्रिणी सखसयुता ॥ ५ ॥

तनोष्णा मर्दिनी च कामनेश्वरी च ॥

(विस्तारतः)

संक्षेप यह है कि बहत्तर हजार नाडियों में इना १ विपला २ सुपुत्रा ३ पाषाण ४ हस्तिजिह्वा ५ पूषा ६ यशस्विनी ७ अश्वकुशा ८ कुहू ९ शशिनी १० ये दश नाडी और इनके अतिरिक्त वज्रा ११ विद्रिणी १२ और वज्रनदी १३ कुन्दी मुख्य नाडियाँ हैं, इनमें इना विपला के मध्य में त्रिगुणनिध सुपुत्रा रहती है, यह वज्र विष्णु निधनिध है। सुपुत्रा के मध्य को रोक के कुन्दिनी नहीं प्यित है। वज्रा इही के नाडीसमूहों में सब तक कुन्दिनी नहीं जगृत न हा तब तक सब योगसाधन व्या के समान ही होता है। अब यह कुन्दिनी नाडी जगृत होकर सुपुत्रा के द्वार को सुला कर सरल हो सुपुत्रा में प्रवेश करती है तब योगसाधन होता है। इसलिये प्रथम का प्रथम चक्र है उसमें कुन्दिनी का निवास रहता है उस प्रकार है—

कुंडली को कुंडलिनी, कुंडली, कुटिलांगी, भुजंगी, नागन, बालरंदा, शक्ति, ईश्वरी, और अरुंधती नाम से भी पुकारते हैं ।

गुणालिगयोर्मध्ये अंगुलिद्वयमितस्थानं । तत्तु शरीरस्थसकलनाडीनां मूलस्थानं । अत्र व-श-य-साक्षरयुक्तं स्वर्णवर्णं चतुर्दलपद्ममस्ति । तन्मध्ये इच्छा-ज्ञान-क्रिया-स्वरूपं त्रिकोणं वर्तते । तन्मध्ये कोटिसूर्यसमप्रभस्वयंभूर्लिङ्गमस्ति । अत्र पृथिवी वर्तते । तत्रैव मृणालसूत्रवत् सूक्ष्म-सार्धत्रिवलयकार-स्वयंभूर्लिङ्गवेष्टितविद्युत्तुल्यप्रभ-कुल-कुंड-लिनी वर्तते । यथा—

मूलाधारे त्रिकोणाख्ये इच्छाज्ञानक्रियात्मके ।

मध्ये स्वयंभूर्लिङ्गं तु कोटिसूर्यसमप्रभम् ॥

तद्वात्ये हेमवर्णामं वसवर्णं चतुर्दलम् ॥ १ ॥ (इति तंत्रसारः)

अथाधारपद्मं सुपुन्नाख्यलभं च्चजाधो गुदोर्ध्वं चतुःशोणपत्रम् ।

अधोवक्त्रमुद्यत्खुवर्णाभवर्णैर्वेकरादिसातैर्युतं वेदवर्णैः ॥ १ ॥

अमुष्मिन्धरायाश्चतुष्कोणचक्रं समुद्भासि श्लाष्टकैरावृतं तत् ।

लसत्पीतवर्णं तडित्कोमलागं तदंतः समास्ते धरायाः स्ववीजम् ॥ २ ॥

वज्राख्या वक्त्रदेशे विलसति सततं कर्णिकामध्यसंस्थम्

कोणं तत्रैपुराख्यं तडिदिव विलसत्कोमलं कामरूपम् ।

कन्दर्पो नाम वायुर्निवसति सततं तस्य मध्ये समंतात्

जीवेशो बंधुजीवप्रकरमभिहसन् कोटिसूर्यप्रकाशः ॥ ३ ॥

तन्मध्ये लिङ्गरूपिद्वतकनककलाकोमलः पश्चिमास्यो

ज्ञानध्यानप्रकाशः प्रथमकिसलयकाररूपः स्वयंभूः ।

विद्युत्पूर्णं दुर्विचप्रकरकरचयलिङ्गघसतान्हासी

काशीवासी विलासी विलसति सदिवान्वर्तरूपः प्रकारः ॥ ४ ॥

अस्योर्ध्वं विषतंतुसोदरलसत् सूक्ष्मा जगन्मोहिनी

ब्रह्मद्वारमुखं मुखेन मधुरं साञ्छादयंती स्वयम् ।

शंखावर्तनिभा नवीनचपला माला विलासासदा

सुप्ता सर्पसमा शिरोपरिलसत् सार्धत्रिवृत्ताकृतिः ॥ ५ ॥

(तत्त्वचिंतामणिः)

इत्यादि वचनों के भावार्थ पर से कुंडली मूलाधारस्थान में अर्थात् गुदा और लिङ्गके मध्यमें दो अंगुल प्रमाण का भगस्थान है, वह शरीरस्थ सकल नाडियों का मूलस्थान एक बालिस्त लम्बा और चार अंगुल चौड़ा शुभ्र और कोमल चेष्टनांबर (लपेटनेके वस्त्र) के समान (कंद) है । यहां चतुर्दल की आकृति का एक पद्म है उसमें चार दल हैं, उनमें व, श, य, स, ये चार वर्ण स्वर्ण के तुल्य देदीप्यमान हैं । उस चतुर्दल पद्म में इच्छा ज्ञान क्रिया स्वरूप एक त्रिकोण है और यह पश्चिममुखी है, अर्थात् पीछे

धार जाता रहता है। सहस्रदल पत्र एवं महासागर के समान है इनमें वायव्य तारु का प्रकाश हो रहा है जो जिस समय वायव्य एक हजार सूर्य के प्रकाश का प्रकाशवाला है वही महासागर है, वही को परमपद स्थान कहते हैं, इनमें जो भागी भगनी योगवाधन विवादाय पहुँच जाता है वह परमपद को प्राप्त हो जाता है और अमर मरण से रहित हो जाता है। 'यद्वा न विवर्तते तदात्र परमं मय'।

इस प्रकार व से पदचक्र हैं इनको नेदकर जो वायव्य महासागर चक्र में पहुँच जाते हैं वायव्य सुखी वृत्ताय नहीं रहता है।

गुणधारक वी विवेका—वीछे वह आवे हैं कि छ स्थानों में एकत्र हुए क्षणिक गुणों के भेदों को पदचक्र कहते हैं।

कायु (गौरी) समूह ७२० ० महार हजार हैं उनमें ३१५ गुण हैं। इनमें से १० गुण हैं।

गौरीगो रोवरो वदि वज्रयोनिः श्यामवदर ।

गज नाकाः समुद्रनाः सहस्राणां द्विगतरि ॥ १ ॥

अथात्र दशकान्तिभ्यो भूलात्र दश दशना ।

द्वेष्टा च विमोहा येन समुद्रो व तृतीयका ॥ २ ॥

गौरीगो हस्तिजिह्वा च पूषा येन वसतिर्गौरी ।

अष्टभुजा सुदुर्गेन शीमिनी च दश दशनाः ॥ ३ ॥

एवं गौरीमये अर्धे विद्येयं क्षतिचक्षणे ।

दशनाः विगतायाश्च सप्त वा या समुद्रिका ॥ ४ ॥

इयं च त्रिगुणा कृता वसतिष्णुविचारिका ।

रजोगुणा च कप्रेयना विमिनी रासवेयुगा ॥ ५ ॥

समो गुणा वसतिगौरी वसतिगौरी च ॥

(निरुत्तरार्ध)

सायने यह है कि महार हजार नावियों में दश १ विगता २ समुद्रा ३ गोपरी ४ हस्तिजिह्वा ५ पूषा ६ वसतिगौरी ७ अष्टभुजा ८ कुहू ९ शीमिनी १० ये दश गौरी और इनके अतिरिक्त गौरी ११ विमिनी १२ और वसतिगौरी १३ सुदुर्गी समूह नावियों हैं, हमें इस विगता के मध्य में त्रिगुणारिका समुद्रा रहती है, यह वसतिष्णु विचारिका है। समुद्रा व वायव्य को रोच के सुदुर्गी गौरी विवर्त है। गौरी वही व वायव्य में वार विमिनी (विगता) समुद्रा के मध्यमें वायव्य स्थान में रहती है। इन गौरीसमूहों में जब तक सुदुर्गी गौरी वायव्य व हो तक तक सब योगवाधन गुणों के प्रकाश हो जाता है। अथ यह -

कुंडली को कुंडलिनी, कुंडली, कुटिलांगी, भुजंगी, नागन, बालरंढा, शक्ति, ईश्वरी, और अरुंधती नाम से भी पुकारते हैं ।

गुह्यलिंगयोर्मध्ये अंगुलिद्वयमितस्थानं । तत्तु शरीरस्थसकलनाडीनां मूलस्थानं । अत्र व-श-ष-साक्षरयुक्तं स्वर्णवर्णं चतुर्दलपद्ममस्ति । तन्मध्ये इच्छा-ज्ञान-क्रिया-स्वरूपं त्रिकोणं वर्तते । तन्मध्ये कोटिसूर्यसमप्रभस्वयंभूलिंगमस्ति । अत्र पृथिवी वर्तते । तत्रैव मृणालसूत्रवत् सूक्ष्म-सार्धत्रिवलयाकार-स्वयंभूलिंगवेष्टितविद्युत्सुल्यप्रभ-कुल-कुंडलिनी वर्तते । यथा—

मूलाधारे त्रिकोणाख्ये इच्छाज्ञानक्रियात्मके ।

मध्ये स्वयंभूलिंगं तु कोटिसूर्यसमप्रभम् ॥

तद्वाह्ये हेमवर्णाभं वसवर्णं चतुर्दलम् ॥ १ ॥ (इति तंत्रसारः)

अथाधारपद्मं सुपुम्राख्यलभं ध्वजाधो गुदोर्ध्वं चतुःशोणपद्मम् ।

अधोवक्त्रमुद्यत्सुवर्णाभवर्णैर्वेकरादिसातैर्युतं वेदवर्णैः ॥ १ ॥

अमुष्मिन्धरायाश्चतुष्कोणचक्रं समुद्भासति शलाघकैरावृतं तत् ।

लसत्पीतवर्णं तडित्कोमलांगं तदंतः समास्ते धरायाः स्ववीजम् ॥ २ ॥

वज्राख्या वक्त्रदेशे विलसति सततं कर्णिकामध्यसंस्थम्

कोणं तत्रैपुराख्यं तडिदिव विलसत्कोमलं कामरूपम् ।

कन्दर्पो नाम वायुर्निवसति सततं तस्य मध्ये समंतात्

जीवेशो बंधुजीवप्रकरमभिहसन् कोटिसूर्यप्रकाशः ॥ ३ ॥

तन्मध्ये लिंगरूपिद्वतकनककलाकोमलं पश्चिमास्यो

ज्ञानध्यानप्रकाशः प्रथमकिसलयाकाररूपः स्वयंभूः ।

विद्युत्पूर्णदुर्ध्वप्रकरकरचयलिग्धसंतानहासी

काशीवासी विलासी विलसति सदिवावर्तरूपः प्रकारः ॥ ४ ॥

अस्योर्ध्वे विषतंतुसोदरलसत् सूक्ष्मा जगन्मोहिनी

प्रह्लादरमुख मुखेन मधुरं साच्छादयंती स्वयम् ।

शंखावर्तनिभा नवीनचपला माला विलासास्पदा

सुप्ता सर्पसमा शिरोपरिलसत् सार्धत्रिवृत्ताकृतिः ॥ ५ ॥

(तत्त्वचिंतामणिः)

इत्यादि वचनों के भावार्थ पर से कुंडली मूलाधारस्थान में अर्थात् गुदा और लिंगके मध्यमें दो अंगुल प्रमाण का भगस्थान है, वह शरीरस्थ सकल नाडियों का मूलस्थान एक बालिष्ठ लम्बा और चार अंगुल चौड़ा शुभ्र और कोमल वेष्टनावर (लपेटनेके वस्त्र) के समान (कंद) है । यहां चतुर्दल की आकृति का एक पद्म है उसमें चार

व, स, ये चार वर्ण स्वर्ण के तुल्य देखीप्यमान हैं । उस चतुर्दल

स्वरूप एक त्रिकोण है और यह पश्चिममुखी है अर्थात् पीछे

को मुख है ऐसे बकनाल में ही से ऊर्ध्वगमन होता है । इसकी कर्णिका में बज्रा नाम नाड़ी रहती है और त्रिकोणमें कोटिसूत्रसमप्रम खयभू लिंग है यहाँ पृथ्वी है इसी पर कमल के तनु के समान सूक्ष्म विद्युत्तुल्यप्रभावाली कुण्डलिना खयभू लिंग को और सब नाडियों को घेरकर साने तीन आटे देकर कुटिल आकृति से अपने मुख में पूछ को दबाकर ब्रह्मद्वार (सुषुम्ना का द्वार) को आच्छादित करके बँधी हुई है । इसके जाग्रत करने पर जब यह सुषुम्ना के मार्ग से अपना मुँह हटाती है तब ब्रह्मद्वार का कपाट खुलजाता है इसी कारण योगियों को इससे जानने और जगाने का प्रयत्न करते रहना चाहिये ।

अथवा यह कुण्डलिनी नाड़ी सब नाडियों के ऊपर स्थित होकर मणिपूरक चक्र कर्णिका को आश्रित करके जगत्त्रय के द्वारको सबदा रोके रहती है और सुषुम्ना के द्वार को बन्द किए रखती है । इसलिये प्राणवायु और अपानवायु को घोंकनेवाला अर्थात् संतोजित करनेवाला जो पुरुष है वह उस प्राण और अपानवायु की एकता से संतोजित हुई अग्नि से जाग्रत होकर मन और प्राण वायुसहित सुषुम्ना को सूचिततुल्याय से ऊपर खेजाता है इनके ऊपर जाने से वह अपने इच्छित परमानन्द को प्राप्त होजाता है ।

अथवा कुण्डलिनी नाड़ी सोते हुए सप के समान है उसको जाग्रत करने के लिये पहिले अपानवायु और प्राणवायु से विधिपूर्वक बीचकी अमियों के स्वरूप को तेज करे उनकी तेजी से उसे जगाकर वह पुरुष व्योमिर्मय स्वरूप होकर सुषुम्ना मार्ग से आत्मा में लय होजाता है ।

अथवा ब्रह्मासन (सिद्धासन) लगाकर हाथों से पावों की एबी पकड़ कर कन्दस्थान को रन्तासे दबावे और ब्रह्मासन से ही धोँकनी को कुम्भक वायु से प्रचलित करे उसके प्रचलित होने से अग्नि प्रग्वलित होता है । उसकी परमी से वह बालरंज मुख पैला देती है उस समय में सुषुम्नाद्वारा ही योगीश्वर अपने स्वरूप के आनन्द को पाते हैं ।

अथवा नाभिदेशमें सूर्य रहता है । उस का आकुचन कर चार पक्षोपर्यंत निराल निर्भय होकर शक्ति (कुन्नी) का चालन करे तो कुन्नी कुछ ऊपर को खिंचती है जिससे प्राणवायु स्वयं (आपही) सुषुम्ना में प्रवेश कर जाता है ।

मुक्ता गुह्यप्रसादेन यदा जायते कुन्नी ।

तदा सक्ताणि पद्मानि मितये प्रथयापि च ॥ १ ॥

(हठयोगप्रदीपिका)

इस प्रकार क्रिया करने से गुह्य की कृपासे जब सोती हुई कुन्नी जाग्रत हो जाती है तब सब पद्म (संपूर्ण पद्मक) मेदित होकर ब्रह्मप्रथि, विष्णुप्रथि, रुद्रप्रथि, ये तीनों प्रथियों भी मेदित होजाती हैं ।

1 जैसे सूर्य में कोय पिरोया हुआ हो तो वह सूर्य कपड़े के अनेक सूतों में से तनु सहित ऊपर को निकल जाती है उसको सूचिततुल्याय कहते हैं ।

उपरोक्त प्रकार से सुषुप्ता मार्ग में प्राण अपान दोनों मिलके प्रवेश करने के बाद मेरुदंड के मध्य जो पट्चक्र के स्थान की गाँठें सुषुप्ता में पहिले बता आये हैं उन ही पट्चक्र की गाँठों को शनैः शनैः क्रमसे भेदते (छेदते) हुए (प्राण अपान मिलके) जब ब्रह्मरंध्रमें पहुँच गये तब सर्व भवसागर का दुःख छेदन (नाश) होगया और संशय तथा शोक नष्ट होगया और जिस शून्य सरोवर में अकथनीय गगन गर्जना का अलौकिक गंभीर नाद होरहा है उसमें वास (निश्चल निवास) प्राप्त होगया ।

हंसा सुन होती मंझे मोती मुख विन चूण चुगंदा है ॥

आतम ब्रह्मंडा एक अखंडा विन रसना गावंदा है ॥ १३ ॥

अंबर घर आये ब्रह्म वधाये अनहद नाद घुरंदा है ॥

नोवत नीसाणा दिल दीवाणा बाजा मेरि बजंदा है ॥ १४ ॥

१ नादकी चार अवस्था—

आरंभश्च घटश्चैव तथा परिचयोऽपि च ।

निष्पत्तिः सर्वयोगेषु स्यादवस्थाचतुष्टयम् ॥ १ ॥

१ आरंभावस्था—

ब्रह्मप्रत्येर्भवेद्भेदो ह्यानंदः शून्यसंभवः ।

विचित्रः कणको देहेऽनाहतः श्रूयते घृतिः ॥ १ ॥

हृदय स्थान के द्वादशदल अनाहत चक्र में ब्रह्मप्रति है । जब प्राणायाम के अभ्यास से सुषुप्ता मार्गद्वारा इस प्रंथी को प्राण भेदन करता है तब शून्य हृदयाकाश में आनंद हो जाता है और उस हृदाकाशोत्पन्न आनंद में विचित्र (नानाविध) प्रकार का आभूषण का नाद अर्थात् स्त्रियों के पाँव में पहनने के आभूषणों की मधुरध्वनि श्रवण होने लगती है इस को आरंभावस्था कहते हैं । जब आरंभावस्था प्राप्त हो जाती है तब वह पुरुष दिव्य देहवाला, तेजस्वी (प्रतापवान्) उत्तम सुगंधिवाला और रोग-रहितदेहवाला होजाता है । और जब हृदाकाश में नाद का आरंभ होजाता है उस समय हृदाकाश, विशुद्धाकाश, और श्रूमध्याकाश को योगीजन शून्य, अतिशून्य और महाशून्य पद के नाम से मानते हैं और उनके नाद का श्रवण क्रमसे करते जाते हैं ।

२ घटावस्था—जब प्राणवायु हृदाकाशस्थ ब्रह्मप्रति को भेदन कर प्राण, अपान और नादधिदु से मिलकर कंठस्थान के षोडशदल विशुद्धिनामक चक्र को जिसको मध्यचक्रमी कहते हैं और जो विष्णुप्रंथि का स्थान है इसको भेदन करता है तब परमानंद (ब्रह्मानंद) सूक्ष्म अतिशून्य नामक आकाश में अनेक प्रकार के नादों की

ध्वनि को समदन् करनेवाली मेरीछिरी ध्वनि सुनाई देने लगती है और वह योगी हृदासन और पूर्व की अपेक्षा विशेष ज्ञानी देव के समान दिव्यदेहवाला हो जाता है। यह मध्यचक्र षोडशाक्षर का बंधक है।

मध्यचक्रमिदं ज्ञेयं षोडशाक्षरबन्धनम् ॥

जो पट्टक, षोडशाक्षर, द्विलक्ष्य और पञ्चाकाशको नहीं जानता उसको योगसिद्धि कैसे हो सकती है—

पट्टक षोडशाक्षरं द्विलक्ष्यं ज्योमपचक्रम् ।

सुदेहे यो न जानाति कथं योगी स सिध्यति ॥ १ ॥

इतनी बातें योगी को अवश्य जान लेना चाहिये—

पट्टक—१ मूलाक्षर, २ स्वाधिष्ठान, ३ मणिपुर ४ अनाहत, ५ विशुद्ध ६ आज्ञाचक्र ।

सोलह आक्षर—१ पद्म का अगुष्ठ २ मूलाक्षर ३ गुग्गाक्षर, ४ बज्रोनी, ५ उडि यावध, ६ नाभिमहलाक्षर ७ हृदयाक्षर ८ कलाक्षर, ९ ध्रुवकलाक्षर १० जिह्वा मूलाक्षर, ११ जिह्वा का अधोभागाक्षर १२ अधदत्त मूलाक्षर १३ नासिकाप्राक्षर १४ नासिकालूनाक्षर, १५ भ्रूमध्याक्षर, और १६ नैऋतक्षर ।

मत्तातर से सोलह आक्षर—१ मूलाक्षर, २ स्वाधिष्ठान ३ मणिपुर, ४ अनाहत, ५ विशुद्ध, ६ आज्ञाचक्र, ७ बिंदु ८ अर्धेन्दु, ९ रोहिणी, १० नाद ११ नादात, १२ शक्ति, १३ व्यापिका १४ समनी १५ रोहिणी, १६ ध्रुवमण्डल ।

द्विलक्ष्य—१ बाह्यलक्ष्य (भ्रूमध्य तथा नासिकाग्र) २ आन्तरिकलक्ष्य (मूलाक्षरादिपट्टकों को अर्त्तष्टि से देखना)

पांच प्रकार के आकाश—

पहिला—श्वेतवर्ण ज्योतीरूप आकाश ।

दूसरा—पहिले के भीतर भूमवर्ण ज्योतीरूप महाकाश ।

तीसरा—दूसरेके भीतर नीलवर्ण ज्योतीरूप महत्तत्त्वाकाश ।

चौथा—तीसरेके भीतर पीतवर्ण ज्योतीरूप महाशून्याकाश ।

पाचवाँ—चौथे में विजृम्भीके वर्ण ज्योतीरूप स्याकाश ।

उपरोक्त प्रकार से शरीरमें ६ चक्र १६ आक्षर २ लक्ष्य और ५ आकाश हैं इनको जो योगी नहीं पहिचानता उसको योगकी सिद्धि नहीं होती है ।

३ परिचयावस्था—तब प्राण महाप्रणि और विष्णुप्रणि को भेदन कर भ्रूमध्यमें द्विदल आज्ञाचक्र को जो सर्वेश्वर का पीठस्थान है जिसमें रुद्रप्रणि है इस रुद्रप्रणि को प्राण भेदन करता है तब भ्रूमध्याकाश (महाशून्याकाश) में प्राण पहुचता है इसको परिचयावस्था कहते हैं । इसमें एक विशेष जानने योग्य मर्दल (एक प्रकार का बाजा) की ध्वनि सुनाई पड़ती है, इस अवस्था में सहजानन्द और सर्व सिद्धियों की

प्राप्ति, दोष, दुःख, जरा, व्याधि, भूय, प्यास और निद्रा का नाश हो जाता है और अहर्निश स्वाभाविक आत्मसुख में योगी मग्न हो जाता है ।

४ निष्पत्तिअवस्था—जब प्राणवायु ब्रह्म, विष्णु और रुद्र ग्रंथि के भेदने पर ब्रह्म-रंघ में प्रवेश करता है तब चतुर्थावस्था प्राप्त होती है । उस समय वंशी के समान मधुर शब्द मानों वही सुंदर मनमोहक वंशी का शब्द हो रहा हो (परब्रह्म श्रीकृष्ण परमात्मा की वंशी की अनुपम ध्वनि के समान जिसको सुनकर गोपियों ने मुग्ध होकर सांसारिक सर्व सुखों को भुला दिया) वैसी वंशी की ध्वनि होने लगती है तब अतःकरण एक तालीन हो जाता है । चित्तरी एकाग्रता को ही राजयोग कहते हैं । इस अवस्था में जो योगी प्राप्त हो जाता है वह सृष्टिकर्ता तथा सहारकर्ता अर्थात् “कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं” ईश्वर के समान समर्थ हो जाता है तथा अखंड सुख को पाजाता है ।

इस अवस्था में अनेक प्रकार के बाजों की ध्वनि सुनाई पड़ने लगती है सुंदर-घासजी ने इसका वर्णन इसभांति किया है ।

प्रथम भेंवर गुजार शंख ध्वनि दुतिय कहीजे ।

तृतिये वजई मृदंग चतुरथे ताल सुनीजे ॥

पंचम घंटानाद पष्ठ वीणाधुन होई ।

सप्तम वजई मेरि अष्टमे दुंदुभि दोई ॥

नवमे गर्ज समुद्र की दशम मेघ घोषह सुनै ।

कह सुंदर अनहदनाद को दशप्रकार योगी सुनै ॥ १ ॥

३६ प्रकार के कुल बाजे होते हैं—

--मंडल वीन रबाब अनोप तंबूर उपंगह ।

बख सुसुरह पिनाक कुमायच पुंग सुरंगह ॥

वंशी परगह वांश कानूटक ताल सुगिगी ।

तूर मेरि सहनाइ पाव रणसंग दर सिंगी ॥

करनाट पणव आनक मुरज डफ सुडाक डमरू छजै ।

जलतरंग जाँझ मजीर मिल खटहरिंशबाजा बजै ॥ १ ॥

कोई कहते हैं कि कुल बाजाओं का भेद साढ़े तीन प्रकारकाही है ।

ताल फूँक अरु तार के अर्ध नकीरी लीन ।

सब ही या संसार में बाजे साढ़े तीन ॥ १ ॥

चाहे जितने बाजे क्यों न हो अनहद नाद के आगे तो सर्व संसारभर के बाजे तुच्छ हैं, उसकी उपमा तो हृद के बाहर ही है इसीसे उसका नाम अनहद है । अथवा स्वयमेव बजने से अनाहत है इसलिये उसका वर्णन अवर्णनीय है । इस अनहद नाद की प्राप्ति होने के पश्चात् तो परमपद को प्राप्त हो ही जाता है—।

जब पट्चक्रों को भेदन करता हुआ प्राणरूपी हस शून्य सरोवर पर (त्रिकुटी में) पहुँच जाता है, तब वह सुन (निश्चल तथा शून्य स्थिति का) होजाता है और उस शून्य सरोवर में ब्रह्मानदरूपी मोती का चूण मुख के बिना ही हसरूपी प्राण चुगने लगता है (आनदास्वादन करने लगता है) जिस से आत्मा और अखिल ब्रह्माण्ड एकही मालूम होने लगता है, इसलिये “सर्वं खल्विदं ब्रह्म” “एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म” इत्यादि महावाक्यों का जो अर्थ है उसका ज्ञान प्राप्त होजाता है और बिना जिज्ञा के (“यतो वाचो निरर्तते अप्राप्य मनसा सह”) “प्रज्ञानमानन्द ब्रह्म” इस प्रकार आनन्ददायक पद के गुण माने लग जाता है ॥ १३ ॥

ऐसी स्थिति होने के पश्चात् जब प्राणरूपी हस अन्तर घर (ब्रह्मरंध्र रूपी महा आकाश) में प्रवेश करता है और ब्रह्मसे साक्षात्कार होने में सत्पर होता है तब मानों उसको परब्रह्म की ओर से तदाकार वृत्ति करने को बघाने के लिये अनहदनाद बचने लगता है । जिसमें नोबत, निसाण, दिल, दिवाण, मेरी, मृदग आदि अनेक बाजों का नाद सुनाई पड़ने लगता है ॥ १४ ॥

मन शिखर मिलिया अयगढ मिलिया पद जोधा पायदा है ॥

अध मिल उधा पवन निरुद्धा ध्यान समाधि लगदा है ॥ १५ ॥

धनाहतस्य गन्दस्य ध्वनिर्यं उपलभ्यते ।

ध्वनेरतर्गतं हेम हेयसातर्गतं मन ॥ १ ॥

मनस्तत्र लय याति तद्विष्णो परम पदम् ॥

(हठयोगप्रदीपिका प्र० उप० ४)

१ ध्यान और समाधि के लक्षण —

ध्यान—

१ तत्र प्रलयैकतानता ध्यानम् ।

नामि आदि देशों में ध्येय का जो ज्ञान होता है वह ध्यान है ।

२ ध्यात् ध्येय ध्यान-कलना वद् ध्यानम् ।

ध्यान करनेवाला और जिसका ध्यान किया जाय तथा ध्यान इन चीनों का प्रमेद जिसमें प्रतीत हो वह ध्यान कहगता है ।

३ धारणबोध्यदेशं अलङ्कृतलघाणवत् प्रवाहो ध्यानम् ।

३ ध्येय की और अरांड मनोवृत्ति तैलधारा के समान लगी रहे उसको ध्यान कहते हैं । तद्रहित समाधि कहाती है ।

१ ध्यान के मेद दो प्रकार के होते हैं—

१ एक पूर्व ध्यान ।

२ दूसरा पश्चिम ध्यान ।

पूर्वध्यान—नाभिदेश से तथा पादांगुष्ठ से हठ क्रियाद्वारा प्राण को ऊपर चढाने को कहते हैं । इसमें ध्वंकार का जप करना होता है और इस ध्यान में अनेक विघ्न उपस्थित होते हैं । पूर्व ध्यानी पुनर्जन्म पाता है ।

पश्चिमध्यान—राममंत्र का स्मरणपूर्वक पश्चिमतान से प्राण को ऊपर चढाने को कहते हैं इस से मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

द्वावेव शोभनौ मुक्तिपन्थानौ योगसंमतौ ।

एकस्तु पश्चिमधैव द्वितीय पूर्व उच्यते ॥ १ ॥

राममंत्रं चाधिकृत्य पन्थास्तिष्ठति पश्चिमः ॥

ओमित्यधिकृत्यास्ते पन्थास्तु पूर्वसंज्ञितः ॥ २ ॥

पूर्वस्मात् पुनरावृत्तिः पश्चिमान्मोक्षमश्नुते ॥ (गुह्योद्घाटनतंत्र)

पश्चिममार्ग का सविस्तर वर्णन देखना चाहें वह “योगशिखोपनिषत्” देखलेवे ।

पश्चिममार्ग के ध्यान की रीति कुछ वर्णन की जाती है—

योगशास्त्र में नाना प्रकार के आसन कहे हैं, जितने प्रकार के जीव हैं उतने ही प्रकार के आसन हैं । जीव चौरासी लाख बतलाये गये हैं अतः आसन भी उतने ही हैं, इन सब में से ८४ आसन मुख्य हैं । इनमें भी सिंहासन, भद्रासन, मयूरासन, कुकुदासनादि १६ आसन उत्तम माने हैं । इन सोलह में भी १ पद्मासन २ सिद्धासन सर्वोत्तम माना है । इन दो आसनों में भी सिद्धासन उत्तमोत्तम माना है । इस लिये पश्चिमध्यान साधन समय में सिद्धासन लगाकर बैठना चाहिये ।

सिद्धासन के लक्षण हठयोगप्रदीपिका में इस प्रकार लिखे हैं—

योनिस्थानकमंग्रिमूलघटितं कृत्वा दृढं विन्यसेत्

मेढ्रे पादमथैकमेव हृदये कृत्वा हनुं सुस्थिरम् ।

स्थाणुः संयमितेन्द्रियोऽचलदृशा पश्येद्भुवोरन्तरम्

क्षेतन्मोक्षकपाटमेदजनकं सिद्धासन प्रोच्यते ॥ १ ॥

तात्पर्य—बायें पाँव की एडी को योनिस्थान के मध्य में लगाके (गुदा और उपस्थेन्द्रिय के मध्य भाग का नाम भग किवा योनि है जिसको सीवन भी कहते हैं) उस स्थान को बाँये पाँव की एडी से जोर से दबावे और दहिने पाँव को उठाकर इंद्रि की जड़ में एडी को लगाकर नीचे को दबावे (मूलबंध करे) इस रीति से सीधा बैठकर फिर ठोड़ी को हृदय से ४ अंगुल ऊपर मजबूती से जमावे (जालंधरबंध करे)

और सूखे काष्ठके समान करता होकर सब इन्द्रियों को अपने कानू (वश) में करके नेत्रों को अचल दृष्टि से झुड़ुटी के मध्य में लगाकर बैठने को सिद्धासन कहते हैं। यह सिद्धासन मोक्षद्वार के कपाट को मेदन करनेवाला (मुक्ति को देनेवाला) कहा है।

योगशास्त्र में इस आसन का नाम सिद्धासन कहा है और इसको ही वज्रासन, मुष्ठासन, गुप्तासन आदि कई नामों से पुकारते हैं। और फलस्तुति में भी 'मोक्ष कपाटमेदजनकम्' यह वाक्य बहकर 'नासन सिद्धसदृशम्' परमावधि लिखा है इससे प्रमाणित होता है कि इस के समान कोई अन्य आसन नहीं है, परंतु इसकी जितनी महिमा वर्णन की है उतना उसका कारण नहीं बताया गया। यदि कारण बताया जाता तो इसकी महत्ता हृदयगम होने से सिद्धासन की सिद्धियों का पता चल जाता। इसको परमोत्तम बताने का कारण जानने योग्य है इसका सविस्तर वर्णन कहीं नहीं मिलता है अत एव यहाँ उस का वर्णन करना आवश्यक जानकर किया जाता है।

"योनिस्थानकमग्रिमूच्छटित" इस पूर्वोक्त श्लोक में सिद्धासनसाधन की ५ बातें मुख्य मानी गई हैं—

१—योनिस्थान को दृढ़ता से एड़ी से दबाना।

२—ठोड़ीको हृदयसे ४ अंगुल ऊपरवाले स्थानमें सुस्थिर (६") जमाना।

३—स्पाणु (काष्ठ) के समान सीधा करा होकर बैठना।

४—संयमितेंद्रिय अर्थात् इन्द्रियों को दमन करना।

५—नेत्रों को अचलदृष्टि से झुड़ुटी के मध्यमें जमाना।

इन पाँच बातों के करने से सिद्धासन होता है। इनका क्रमानुसार वर्णन इस तरह है।

पहिली—योनिस्थान को एड़ी से दबाने का प्रयोजन सुषुम्ना को जाग्रत करने का है। योनिस्थान (सीवन) में सुषुम्ना का ठीक विवरस्थान है। सुषुम्नाको सिद्ध करना ही योग का पर्यवसान है। इस प्रय में श्रीहरिरामदासजी महाराजने परमावा है—'सुख मग की घाटी बढिया बाढी अरस घटो टहरंदा है तथा "सुषुम्ना शून्यपदवी प्रभरंभ महापथ' इत्यादि वाक्यों से सुषुम्ना ही मोक्षपदवी है इसी सुषुम्ना के द्वारा पश्चिम योग प्यानसाधक योगी का वक्रनाल से ऊर्ध्वगमन होता है। सुषुम्ना के विवर में कुडलिनी नाडी साढे तीन आटे गगाकर कुटिलाकृति से सर्पिणी के समान अपने मुख में पूँछको दबाकर सुषुम्नामार्ग के द्वार (छिद्र) को रोके बंधी है जो योगीको सुषुम्नातक जाने देती नहीं है इसीलिये बाँधे बाँध की एड़ी से योनिस्थान को दब दबाने से मूल बंध होगा और अगान वायु की ऊर्ध्वगति होगी जिससे एक प्रकार की प्रबल ऊष्मा उत्पन्न होती है उसी के कारण वह योनिस्थानस्व कुडलिनी जाग्रत होकर सुषुम्नामाग को अपना मुख हटाकर राखा दे देती है। जिससे योगीश्वर सुषुम्नामार्ग में प्राण अपान को प्रवेशकर अपने स्वरूप के आनंद को प्राप्त होते हैं।

दूसरी—हृदय में बिबुक्त को दृढ़ता से जमाने की है—उससे जाग्रतपथ होता है। अलपरवच होने से प्राण वायु की गति अयोगाविनी होती है और प्राण अपान

वायु से मिलकर सुपुत्रा के द्वार में प्रवेश करने योग्य हो जाता है इस कारण हृदयमें चित्तुक (ठोड़ी) को दृढता से जमा के बैठने के लिये लिखा है ।

तीसरी—स्थाणु के समान सीधा बैठना=उसका प्रयोजन है, कि सीधा अकड़ कर बैठने से श्वासोच्छ्वास की गति बराबर सीधी आने जाने से सुपुत्रा में प्रवेश होने में कठिनाई नहीं पड़ती, तथा अन्य किसी नाडी में प्राण अपान प्रवेश नहीं कर सकते अगर (ऋजुकाय नहीं बैठने से) अन्य नाडी में वायु प्रवेश हो जावे तो मृत्यु तथा महाव्याधियों का उत्पन्न होना संभव है ।

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः ।

संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् ॥ १ ॥

प्रशांतात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः ।

मनः सयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत् मत्परः ॥ २ ॥

श्रीमद्भगवद्गीता के उक्त श्लोकों में भी ऋजुकाय (सीधा अकड़कर) बैठकर योग-भ्यास करने के लिये लिखा है जिससे कुंभकादि साधन अच्छी तरह से हो जाय ।

और प्राण अपान वायु दूसरी नाडियों में प्रवेश न करे इसी कारण स्थाणु पद देकर भी सिद्धासन में बैठना लिखा है । सच पूछो तो एक सिद्धासन ही सर्व योग-साधन की कुंजी है । इसीलिये सिद्धासन मोक्षद्वार के किवाड़ तोड़ने का बड़ा वज्रासन है ।

चौथी—इंद्रियों को काबू में रखकर बैठने की है । अगर इनको स्वाधीन न की जाय तो मन स्थिर नहीं होगा और इसके स्थिर न होने से योग की सिद्धि प्राप्त करना भी असंभव है । अतः इंद्रियों का दमन करना ही पहिला काम है ।

यततो ह्यपि कौंतेय पुरुषस्य विपश्चितः ।

इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरति प्रसभं मन ॥ १ ॥

तानि सर्वाणि सयम्य युक्त आसीत् मत्परः ।

वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ २ ॥ (श्रीमद्भगवद्गीता)

इंद्रियों के दमन करने के लिये प्रयत्न करनेवाले विद्वान् के भी मन को हे कुंतीपुत्र ! ये प्रबल इंद्रियां बलात्कार से मनमानी और खींच ले जाती हैं । अतएव इन सब इंद्रियों का सयमन कर युक्त अर्थात् योगयुक्त और मत्परायण होकर रहना चाहिये । इस प्रकार जिसकी इंद्रिया अपने स्वाधीन हो जाँय (कहना चाहिये) उस की बुद्धि स्थिर होगई ।

ऐसा स्थिर बुद्धि होकर बैठने के लिये ही “सयमितेंद्रिय” यह पद सिद्धासन में दिया है ।

इतना तो मालूम हो ही गया है कि इंद्रियों का वेग बड़ा ही बलवान् होता है परन्तु इनमें भी शिश्न और रसना दो इन्द्रियाँ बड़ी प्रबल हैं प्रायः इन्हीं से सैतानी

और चपलता होती है। इन नादियों का स्थान पोंव के पीछे बाहर की तरफ टपने और नडे के बीच में है। जो यहाँ से ये नादियाँ पिंडली और जघा में से ऊपर को जाती हैं। और इहीं से इन्द्रियों को प्रचलता प्राप्त होती है। (डाक्टर लोग भी सैतान आदिमियों की इन नादियों को फाट देते हैं जिससे उनकी ये इन्द्रिया निकम्मी हो जाती हैं) योगमें इसके लिए बहुत ही सरल उपाय बताया गया है। जिससे किसी प्रकार की तकलीफ न हो और वे प्रचल इन्द्रियें स्वाधीन हो जाती हैं। योगिराज श्रीजैमलदासजी महाराज ने सिद्धासन में भी एक नया लक्षण दिखाया है जिससे ये प्रचल इन्द्रिया स्वयं बिना कठिनाई के स्वाधीन हो जाती हैं—

“नपनपर कर धारि के वे सम आसण चितलाय”

अर्थात् हठयोगप्रदीपिका के अनुसार ही सिद्धासन कर के बैठो परंतु दोनों हथेलियों के तलवों को जोंधोंपर धारणा करो। तात्पर्य यह है कि हथेली तलके दबाव से एक प्रकार की विद्युत् शक्ति उत्पन्न होती है वह सब शरीर में अपने प्रभाव का प्रसार कर उन प्रचल इन्द्रियों के योग को दमन कर अपने स्वाधीन कर लेती है। अत एव सिद्धासन से बैठकर सब इन्द्रियों का दमन और मन को समाहित करने के लिये दोनों हाथों की हथेलियों को पोर से जाघों पर जमा कर बैठना चाहिये।

पाँचवीं—नेत्रों को अचलदृष्टि से मूडटी के मध्य जमाकर बैठने की है। ऐसा करने का मुख्य प्रयोजन मन की चंचल शक्ति को स्थिर करना और मन में तमीनता प्राप्त कर समाधि अवस्था प्राप्त करना है।

भ्रूमध्यस्थान में नेत्रों को अचल दृष्टि से जमा कर बैठने से खेचरी नामकी मुद्रा होती है।

सूर्याचन्द्रमसोर्मध्ये निरालम्बातरं पुन ।

सुस्थिता व्योमचके या सा मुद्रा नाम खेचरी ॥ १ ॥

(हठयोगप्रदीपिका)

अर्थात् इस विंगला नाडी के बीच में निरालम्ब भ्रूप्रदेश (आकाशस्थान) में मनो हृत्ति स्थित हो जाने को खेचरी मुद्रा कहते हैं।

इस खेचरी मुद्रा के अभ्यास से उमनी अवस्था स्वयंचिद हो जाती है।

‘अभ्यस्ता खेचरी मुद्राप्युन्मनी सप्रजायते

इसलिये खेचरी का एक मेद उन्मनी है ऐसा कहसकते हैं।

शखडुडुभिनाद च न शृणोति कदाचन ।

काठवजायते देह उमन्यवस्थया ध्रुवम् ॥ १ ॥

उमनी अवस्थामें अक्षप्रज्ञात निर्विकल्प समाधि के लक्षण हो जाते हैं इससे चतुर्थपद की प्राप्ति होती है।

चतुर्थ पद के लक्षण—

भ्रुवोर्मध्ये शिवस्थानं मनस्तत्र विलीयते ।

ज्ञातव्यं तत्पदं तुर्यं तत्र कालो न विद्यते ॥ १ ॥

भ्रूमध्यस्थान में शिव का स्थान है उसमें जब मन विलीन हो जाता है तब तुर्य पद (चतुर्थपद) प्राप्त हो जाता है ऐसा जानो । इसमें कोई कालकी (समयकी) अवधि नहीं है । क्योंकि भ्रूमध्यस्थानमें अचलदृष्टि जमाके मनको उसमें विलीन करनेसे ही चतुर्थपद की प्राप्ति होती है । इसीलिये सिद्धासन में अचल दृष्टिसे भ्रूमध्यको देखना बतलाया है ।

रामकेशिंहप्रदायके आदि योगिराज श्रीजैमलदासजी महाराज ने भी चाचरी अगोचरी मुद्रा को इंगितकर यही बात कही है—

“निरत धरे निजनासिका वे सुनमें सुरत समाय”

अर्थात् निज नासाग्रभाग पर दृष्टि जमा के स्थिर होने को चाचरी मुद्रा कहते हैं । गीताजी में भी इसीको जमानेका लिखाहै—

“संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं खं दिशस्थानवलोकयन्”

तथा “सुनमें सुरत समाय” इस पदसे चाँधी अगोचरी मुद्रा बताई है ।

मुद्रा पाँच होती हैंः—

चाचरि, भूचरि, खेचरी, और अगोचरि नाम ।

उन्मनि मिल यह मुद्रिका, पंच लखहु सुखधाम ॥ १ ॥

अब सुन मुद्रा पंचविध, प्रथम खेचरी होय ।

मुखमें तास निवास है, बढवे जीभ विलेय ॥ २ ॥

दूसरि मुद्रा भूचरी, नासा जासु निवास ।

प्राणापान जुदी जुदी, कर देवे इक पास ॥ ३ ॥

तीजी मुद्रा चाचरी, वसे हगन विच सोपि ।

नासा आगे दृष्टि धरि, देखे अचरज कोपि ॥ ४ ॥

चौथी मुद्राऽगोचरी, करत श्रवणमें वास ।

ज्ञान सुरत इक होत है, अनहद शब्द प्रकाश ॥ ५ ॥

पाँचवीं उन्मनी मुद्रा है जिसका स्थान दशमद्वार है, इसकी सिद्धिके लिये ही तो सब कुछ करना पड़ता है । समाधि की सिद्धि इसी से ही होती है । यह स्वयं समाधिरूप है । इस प्रकार पाँचों मुद्राओं का साधन सिद्धासन से सिद्ध होता है । ये पाँचों मुद्रा निश्चल दृष्टि से नासांत (भ्रूमध्यभाग) वा नासाग्रभाग में दृष्टि जमाने से सिद्ध होती है । अतएव भ्रूमध्यमें निश्चल दृष्टि जमा के सिद्धासन में बैठने से सर्व मुद्रा सिद्ध होना बतलाया है । उपरोक्त पाँचों बातों को लक्ष्य में रखकर देखा जाय तो सिद्धासन कोई साधारण नहीं है, क्योंकि योगशास्त्रमें सारभूत और मोक्षद्वार के कपाट का मेदन कर सिद्धिका दाता यही कहा है, इसलिये ऐसा विश्वास है कि जिसको

वेचल यह सिद्ध हो जाता है, वह परमपदका भागी होता है। इस प्रकार सिद्धासन लगाकर पश्चिमध्यानाभ्यासी योगी बैठे और मुखसे राममंत्र का जप करता हुआ रचना १ कठ २ हृदय ३ नाभि ४ इन चार स्थान में क्रम से प्राणों का निरोध करे। प्रथम एवं ध्यान जो नाभि से सीधा हृदयाभि स्थान में होकर श्रुतीदेश में जाता है वहीं नाटक ध्यान होता है।

पूर्व ध्यान भया जब ताटक।

सुखा सहज गगन का फटक ॥

धूमध्य में प्राण के रुकने को नाटक कहते हैं यह होने के पश्चात् क्रम से जिन जिन स्थानों में होता हुआ ऊपर गयाथा उन्हीं स्थानों में ही होता हुआ नीचे नानी में आकर पाताल में (आधार चक्र से नीचे के अंगों की पातालसंज्ञा मानी है, जैसे कटिप्रदेश को अतल, लिंगप्रदेश को वितल, गुहाप्रदेश को सुतल, अघाप्रदेश को तलातल, गुफाप्रदेशको रघातल, पादप्रदेश को महातल, पादतल को पाताल माना है) जाकर फिर बकनाल में पृष्ठ वधातरगत छुपुत्रा में प्रवेश होकर मेरुद्व में ओ २१ प्रविष्ट हैं उनकी छेदन करता हुआ पृष्ठ त्रिकुटी में पहुँच कर छुपुत्रा नाली के द्वारा दधमद्वार (मङ्गरप्र) में प्रवेश करता है। तब योगी जीवमुक्त हो जाता है। त्रिकुटी तक तो माया तथा मृत्यु है।

त्रिकुटी तौई रामदास, पड़े काल की घात।

त्रिकुटी पहुँचा सुन गया, जाकी पूरण काल ॥ १ ॥

मन मनसा का रामदास त्रिकुटी तौई सुत।

आगे केवल ब्रह्म है जहाँ माया नहीं भूत ॥ २ ॥

रामदास बीसोवरण (१८२०) तामें काती मास।

ता दिन छँकी त्रिकुटी किया ब्रह्म में वास ॥ ३ ॥

(श्रीरामबान्धवम्)

इस प्रकार ध्यान करने को पश्चिमध्यान कहते हैं इस ध्यान को करनेवाले मुक्त हो जाते हैं। एवं ध्येय का ध्यान करते करते जब व्याप्ता की शक्ति अनेदात्मक स्थिर हो जाती है तभी समाधि अवस्था प्राप्त होती है।

२ समाधि—

१ तदेवार्पमात्रनिर्मास स्वरूपश्चैवमिव समाधि।

२ धातु-ध्येय-ध्यान-कल्पनवद् ध्यान तद्रूपिण समाधि।

ध्यान अर्प मात्र रहजाय और स्वरूप शून्यता प्रतीत हो उसे समाधि कहते हैं। ध्येय में एकाग्रचित्तवृत्ति की स्थिति को समाधि कहते हैं। इस स्थिति में व्याप्ता (योगी) ध्यान (चितवन) ध्येय (वस्तु) इन त्रिपुटी की कल्पना विषम हो वह सन्निकल्प तथा संश्रद्धा समाधि कहाती है। और विषम व्याप्ता आदि त्रिपुटी का

स्फुरण तक नहीं हो वह निर्विकल्प समाधि तथा असंप्रज्ञात समाधि कहाती है । उसके लक्षण योगशास्त्र में ये हैं ।

सलिले सैधवं यद्वत् सात्म्यं भजति योगतः ।

तथात्ममनसोरैक्यं समाधिरभिधीयते ॥ १ ॥

अर्थात् जिस प्रकार जलमें सैधव (नमक का टुकड़ा) एकरूप हो जाता है इसी प्रकार योगी समाधि अवस्थामें आत्मा और मनकी एकता को प्राप्त हो ब्रह्ममें लीन हो जाता है । और उसको देहसंबंधी कुछ भी ध्यान नहीं रहता उसी को समाधि अवस्था कहते हैं ।

यह समाधि दो प्रकार की होती है ।

एक जड़समाधि, दूसरी चेतनसमाधि,

चेतनसमाधि के दो भेद हैं,

एक पिपीलिकामार्ग, दूसरा विहंगममार्ग,

विहंगममार्ग के भी दो भेद हैं—

एक युंजानयोगी, दूसरा युक्तयोगी,

परंतु ये सब भेद संप्रज्ञात तथा असंप्रज्ञात समाधिके अंतर्गत आचुके हैं । अतएव मुख्य समाधि दो प्रकार की ही हैं

समाधि के पर्यायवाचक शब्द १५ हैं—१ राजयोग २ समाधि ३ उन्मनी ४ मनउन्मनी ५ अमरत्व ६ लय ७ शून्याशून्य ८ परंपद ९ अमनस्क १० अद्वैत ११ निरालंब १२ निरंजन १३ जीवन्मुक्ति १४ सहजावस्था १५ तुर्या ।

समाधि का दूसरा क्रम स्कंदपुराण में इस प्रकार लिखा है ।

एकश्वासमयी मात्रा प्राणायामे निगद्यते ।

प्राणायामद्विषट्केन प्रत्याहार उदाहृतः ॥ १ ॥

प्रत्याहारद्विषट्केन धारणा परिकीर्तिता ।

भवेदीश्वरसंगलौ ध्यानं द्वादशधारणम् ॥ २ ॥

ध्यानद्वादशकेनैव समाधिरभिधीयते ।

यत् समाधौ परं ज्योतिरनंतं स्वप्रकाशकम् ॥ ३ ॥

प्राणायाम में एक श्वास की मात्रा ।

बारह प्राणायाम का एक प्रत्याहार ।

बारह प्रत्याहार करने से एक धारणा ।

बारह धारणा का साधन करने से एक ईश्वर से संगति प्राप्त करनेवाला ध्यान प्राप्त होता है ।

इस प्रकार के ध्यान बारंबार करने से एक समाधि होती है । इस समाधि अवस्थामें परमज्योति अनंत स्वप्रकाशमय परब्रह्म परमात्मामें तत्त्वता प्राप्त हो जाती है ।

धारणा पञ्चमासीमिध्यान् पष्टिकनाडिकम् ।

दिनद्वादशकेन स्यात्समाधि प्राणसयमात् ॥ १ ॥ (गोरक्षपद्धति)

निगुणो ध्यानसपन्न समाधिं च ततोऽभ्यसेत् ।

दिनद्वादशकेनैव समाधिं समवाप्नुयात् ॥ १ ॥ (मार्कण्डेयपुराण)

पद आसा की एक पल इसा सास सो खाय ।

छठे महीने छेतसी सुरति मेरु चढ जाय ॥ १ ॥ (छेतसीयोगीराज)

ऐसी दशा प्राप्त होने का मुरख साधन योग है । इस विषय में सबच न पहिले बहुत कुछ लिखा जा चुका है उससे ओ कुछ अवशिष्ट रह गया है उसीका दिग्दर्शन संक्षेप से यहा कराया जाता है ।

योग का सब खेल बयावत् मन और वायु के ऐक्य होनेसे ही सिद्ध होता है । क्योंकि जब इनकी एकता होगी तब चित्त एकाम्र होकर जिस काम में लगेगा तो वह काम अवश्य ही सफल होगा । भगवान् पतञ्जलि ने भी योगदर्शन में लिखा है ।

१ योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ।

२ युज्यतेऽसौ योगः ।

चित्त की वृत्ति के निरोध को योग कहते हैं । १ ।

जो युक्त किया जाय उसको योग कहते हैं । २ ।

योग दो प्रकार का होता है—

एक हठयोग और दूसरा राजयोग ।

हठयोग में आसनाभ्यास की तथा आत्महयुष और हठयुक्त नियमों की प्रधानता होती है ।

राजयोग में ध्यानधारणाद्वारा मन सामर्थ्य बढ़ानेका महत्त्व विशेष है तथा आत्मशक्ति का अनुभव लेना मुख्यतया होता है इन दोनों में से राजयोगकी प्रशंसा अधिक की है । राजयोग को ही सहजयोग, सहजावस्था और समाधि कहते हैं । सर्व हठयोग के उपाय राजयोगकी सिद्धि के लिये ही किये जाते हैं जब राजयोगसिद्ध हो जाता है तो पुरुष मृत्यु को भी जीत लेनेवाला हो जाता है ।

सर्वे हठयोगाया राजयोगस्य सिद्धये ।

राजयोगसमारूढ पुरुष कालवचक ॥ १ ॥

अतएव राजयोग ही योगों में प्रधान माना गया है ।

योग के अष्टांग

१ यम, २ नियम, ३ आसन ४ प्राणायाम, ५ प्रत्याहार ६ धारणा, ७ ध्यान, ८ समाधि ।

यम—१ अहिंसा २ सत्य ३ अस्तेय ४ ब्रह्मचर्य ५ अपरिग्रह ।

नियम—१ शौच २ सतीव ३ तप ४ स्वाभ्यास ५ इन्द्रप्रस्थिधान ।

आसन—चौरासी लक्ष हैं उनमें से जो मुख्य हैं उन का वर्णन पश्चिमध्यान साधन में देखिये ।

प्राणायाम—तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोगतिविच्छेदः प्राणायामः । पद्मासन सिद्धासन में से कोई भी आसन लगाके श्वास प्रश्वास की गति को रोक कर बैठने को प्राणायाम कहते हैं । इसके तीन प्रकार हैं १ पूरक २ कुम्भक और ३ रेचक ।

लक्षण—

इडया पवनं पिव पोडशभिश्चतुर्गुणैरपष्टिकमौदरकम् ।

त्यज पिङ्गलया शनकैः शनकैर्दशभिर्दशभिर्दशभिर्धधिकैः ॥ १ ॥

अर्थात्—वाम नासापुट से सोलहवार प्रणवस्मरण करता हुवा वायु को ऊपर खींच कर पान करे (इसी को पूरक कहते हैं) तत्पश्चात् उस वायु को ६४ चौंसठ बार ॐकार का स्मरण करने पर्यंत उदर के भीतर धारण कर रखे (इसको कुम्भक कहते हैं) तत्पश्चात् दाहिने नासापुट से उस वायु को धीरे धीरे बत्तीस बार ॐकार स्मरण की मात्रा के प्रमाण से बाहर निकाले फिर कुछ देर बाहर श्वास को रखे फिर दाहिने नासापुट से १६ सोलह बार वायु खींचे । इस भाँति ६४ बार में कुम्भक (धारण करना) ३२ बार में रेचक और १६ बार में पूरक करे ऐसा तीन बार करने से एक प्राणायाम होता है ।

इस प्राणायाम के दो भेद हैं सगर्भ और अगर्भ । जिस में ॐकार तथा राममंत्र का जप और ध्यान हो वह सगर्भ है । और जिसमें प्राणायाम के सिवाय जप ध्यान वगैरह कुछ भी नहीं किया जाता है वह अगर्भ है । अगर्भ से सगर्भ प्राणायाम १०० गुणा अधिक फलदायक है ।

जपध्यानं विनाऽगर्भं सगर्भस्तत्समन्वयात् ।

अगर्भात् गर्भसयुक्तं प्राणायामं शताधिकः ॥ १ ॥ (महाभारत)

जाप्येन तु जपं कुर्यादविलंबितमद्भुतम् ।

मनसैव प्रसख्यात प्राणायामविधौ सदा ॥ २ ॥ (नंदिपुराण)

अर्थात् सगर्भ प्राणायाम में जप करना वह न तो अधिक धीरे से न अधिक जल्दी से करना समानशक्ति से मन ही मन में गिनती लगाके जप करना चाहिये । इस रीति के साधन को प्राणायाम कहते हैं । इसके और भी कई भेद हैं यथा १ जघन्य, २ मध्यम, ३ उत्कृष्ट । और कुम्भक ८ प्रकार का है १ सूर्यभेदन, २ उज्ज्वै, ३ सीत्कारी, ४ शीतली, ५ भ्रमिका, ६ भ्रामरी, ७ मूर्छा, ८ श्वावनी, इनके करने से कुडलिनी जाग्रत होती है ।

प्रत्याहार—जो पाँचों इंद्रियों के शब्दादि विषयों से मनको हटाने से होता है । इसके भी पाँच भेद हैं कई कई इसके अठारह भेद भी कहते हैं ।

ऐसे अनहद नाद को श्रवण करता हुआ मन जब ब्रह्मरूप में प्रवेश कर परब्रह्म से मिलजाता है तब त्रिगुण अर्थात् हृदय, कठ, मूत्राध्य, स्थानस्य तीनों प्रबल ग्रथिरूप गठ (किले) को भेदकर ब्रह्मपद, विष्णुपद और रुद्रपदरूपी तीनों पदसे भी पर परब्रह्मरूपी चौथे परमानन्द पद को प्राप्त हो जाता है । इस प्रकार से जब अपानवायु प्राणवायु से मिलकर कुम्भकद्वारा निरुद्ध होता है तब चित्तका ध्यान उस परब्रह्म परमात्मा की ओर लगने और ध्येयाकार वृत्ति प्राप्त होने से समाधि लगाने की अवस्था प्राप्त हो जाती है ।

अष्टादशसु यद्वायोर्ममस्थानेषु धारणम् ।

स्थानात् स्थानात् समाह्वय प्रत्याहारो निगद्यते ॥ १ ॥

धारणा—एक लक्ष्य पर वा श्लेष पर चित्तवृत्ति स्थिर करने को कहते हैं । यह धारणा ५ प्रकार की है—१ स्वप्नी २ द्राविणी ३ दाहिनी ४ शोषणी ५ भ्रामणी । ये पृथिव्यादि पञ्चभूतों की है । शरीर में इनके ये स्थान हैं

१ पादादिजालुपर्यंत पृथिवीस्थानमुच्यते ।

२ आज्ञा नो पायुपर्यंतमपांस्थान प्रकीर्तितम् ॥ १ ॥

३ आपायोर्हृदयान्त यद्वह्निस्थान तदुच्यते ।

४ ह्रमध्यातु भुवोर्मध्ये वायुद्वालुल भवेत् ॥ २ ॥

५ आग्रमध्यातु मूर्ध्ना तमाकाशस्थानमुच्यते ॥

इन पाँचों स्थानों में पांच पांच घटिकापर्यंत प्राण रोक कर ब्रह्माग्नि देवता का ध्यान करने से भूमि आदि पांच तत्वों का जग हो जाता है ।

ध्यान—तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम् ।

समाधि—सदेवार्थमात्रनिभास स्वरूपशून्यमिव समाधि । इनके सिवाय नेती, घोटी, ब्रह्मदोतन मज्जकर्म, नौली वस्ती गणेशक्रिया, वागीशकर्म शम्भुपलाठी, श्राटक आदि साधन तथा १ महासुप्त २ वधमुद्रा ३ महावेधमुद्रा ४ खेचरीमुद्रा ५ उग्रियानमुद्रा ६ मूलबधमुद्रा ७ आलम्बरमुद्रा ८ विपरीतकरणीमुद्रा ९ वज्रोलीमुद्रा १० शोभनीमुद्रा ये दस महासुप्त हैं । इनका साधन करने से चित्तको शांति प्राप्त होती है । और लयावस्था भी शीघ्र प्राप्त होती है इनका विस्तारपूर्वक वर्णन ' गोरक्षपदति ' ' हठयोगप्रदीपिका ' ' सिद्धोपनिषद् ' आदि योग के ग्रंथों में देखिये । इन पूर्वोक्त साधनोंके क्रमाभ्याससे लयावस्था प्राप्त होती है ।

आज कल के घूर्त योगी पाण्डे शरीररूपिपूर्वक आत्मानुभव के लिये नहीं किन्तु लोकमान्यता के लिये केवल नेती, घोटी ब्रह्मदोतन उग्रियानवध श्राटकादि क्रिया

धरिया नहीं धारुं अधर आधारुं सहजाँ सेवकरंदा है ।
 दशमें मिल द्वारी लाई तारी अम्मर बींद वरंदा है ॥ १६ ॥
 मनवा यिर पचना पांचूं दमना प्याला अजर पिवंदा है ।
 निरमल जहां नूरा उदय अंकूरा परमानंद परसंदा है ॥ १७ ॥
 तिरवेणी छाजै ब्रह्म विराजै निरमै राज करंदा है ।
 झिलमिला जोती ओत रु पोती जीव रु शीव मिलंदा है ॥ १८ ॥

जब समाधि अवस्था प्राप्त होती है उस समय नाम रूप धारण करने-
 वाले सगुण ब्रह्म की ध्यान धारणा मिटजाती है । और नाम रूप रहित
 निरंजन निराकार परब्रह्म परमात्मा का आश्रय (अवलंबन) प्राप्त कर
 स्वतः स्वाभाविक रीति से ही (आपसे आप) सेवा करने लगता है । एवं
 दशम द्वार (ब्रह्मरंध) में मन और प्राण मिलकर अमर बींद (परम पुरुष

दिखाकर योगकी बड़ी बड़ी डोंगें मारते हैं । उन फरो बाजोंको योगी मत समझो, ये
 तो पेटभराई का रस्ता इन्होंने निकाल लिया है । इन धूर्तचालाक योगियों के फन्दे में
 आगये तो जर और जान दोनों से ही हाथ धो बैठोगे, सिवाय लोकमान्यताके खाली
 इन दिखाने की क्रियाओं में क्या पड़ा है—

मनकी मिटी न वासना नवतत कियो न नास ।
 तुलसी केते पचिमरे देदे तनकों नास ॥ १ ॥
 पाणीमांही परगटी पार्वक एक प्रचंड ।
 सातैं द्वीप साबत रखा दग्धमया नवखंड ॥ २ ॥

यदि आपको इसकी चाट लग गई है अभ्यास करना चाहते हैं तो चेदकमेटक बातें
 बनानेवाले चुरमुष्टियों के कथन को छोड़कर अच्छे भजनानंदी योगिराज सद्गुरु की
 तलास करो कि जिस गुरु के पास अभ्यास करने से अपना जन्म सफल कर आप
 कृतकृत्य होजाँय ।

(टिप्पणीकार)

१ जाप न अजपा जहँ नहीं, तहँ नहीं सास उसास ।

हरिया जीव रु शीव का, एक अखंडी वास ॥ १ ॥

(हरि० वाक्यम्)

सी अवस्था को निर्विकल्प समाधि कहते हैं ।

१ अंतःकरण । २ ब्रह्मज्ञान । ३ सात धातु । ४ नव तल ।

परमात्मा) का करमेलन करता है। मानों मन प्राणरूपी स्त्री ने परब्रह्म रूपी वरसे कर मेलन (हथ लेवा जोड़) कर विवाह किया है ॥ १६ ॥

मन की गति स्थिर होजाती है तब पाचों ही पवन (प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान नाम के वायु) दमन (वशीभूत अथवा काबूमैं) होजाते हैं। और अजर प्याला (ब्रह्मानन्द रूपी प्याला) पीने लगजाते हैं। जहाँ निर्मल निर्विकार शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूपी नूट (ज्योति) के दर्शन का अकुर उदय होता है वहाँ परमानन्द परब्रह्म की प्राप्ति होती है ॥ १७ ॥

जहाँ त्रिवेणी (त्रिकुटी स्थान) पर परब्रह्म विराजमान होकर निर्भय राज्य करता है उसी की शिलमिलज्योति (प्रकाशमानज्योति) में जीव और शिव (ब्रह्म) तिलमें तैल के समान ओतप्रोत होकर मिल जाते हैं ॥ १८ ॥

हरि हीरा पाया निणज हलाया तोल न मोल लहदा है।

हरि हीरा होती पारस्य कोती खोट न चोट चढदा है ॥ १९ ॥

मन पपे रहता मुखा न कहता अतर लिय लगदा है।

शुच शुच को विसरी सुरत न निसरी पूरण ब्रह्म अनदा है ॥ २० ॥

जीयत जहाँ मुक्ती शिवमिल शक्ती जन्म न केर भरदा है।

जम्मी रस पीया जुगजुग जीया दालिफ मिल खेलदा है ॥ २१ ॥

हरिरामदासजी महाराज ने कहाया कि मैंने ध्याता ध्यान ध्येय इस त्रिपुटी के ऐक्यतारूपी अनमोल हीरे को पाया फिर उसका विणज (व्यापार) शुरू किया तो न तो तोल ही ज्ञात हुआ और न मोल ही ज्ञात हुआ (अर्न्तत् अतुल अमूल्य है) इस हीरे की परीक्षा कठिन है। यह हीरा ऐसा प्राप्त हुआ कि जो न तो कमी खोज होवे न कमी चोट ही चढ़ने का प्रसंग आवे ॥ १९ ॥

पच=पचायत में बैठकर निर्णय करनेवाला विचार करता जैसे मध्यस्थ पुरुष होता है वैसे ही इस शरीर में अतः करण का अगुआ मन-

रूपी पंच है उस हीरे की परीक्षा करनेवाला रहते हुए भी वह (मन) अपने मुखसे कुछभी वर्णन नहीं कर सका और भीतर ही भीतर लो लगादी और सब सुध बुध भूलगया, परंतु जो सुरत पूरण ब्रह्म आनंदरूप में बस गई थी वह नहीं निकली ॥ २० ॥

शिव और जीव का योग (मेल) सुपुत्रा में जहाँ हुआ बस यही जीवन्मुक्ति है और इसीसे जन्म मरण का फेरा मिट जाता है और अमृतरस का पान कर युगोयुग जीवित रह अखिल ब्रह्मांड के स्वामी सच्चिदानंद आनंदकंद पूरण परब्रह्म परमात्मा से मिलकर खेलता जाता है ॥ २१ ॥

हंसा परहंसा एको अंसा सुन पर सुन सोहंदा है ।

उड़े विन पंखा मिले असंखा पार न को पावंदा है ॥ २२ ॥

जाहर जुग जोगी है अणभोगी ओघट घाट रमंदा है ।

नाथन के नाथू मस्तक हाथू शिव ब्रह्मा सेवंदा है ॥ २३ ॥

हरिजन हरि जाणी वेद बखाणी शेष विष्णु ध्यावंदा है ।

धरिया अवतारु अनंत न पारु रहता एक रहंदा है ॥ २४ ॥

जब आत्मा और परमात्मा दोनों एकरूप होकर परम शून्य स्थानमें विराजमान (सुशोभित) होते हैं अर्थात् आत्मा परमात्मा में तदाकार हो जाता है तब उसको विना पंख के उड़नेकी सामर्थ्य प्राप्त हो जाती है । ऐसे अनगिनत आत्मा इस प्रकार लय होजाते हैं जिनका कोई पार नहीं है ॥ २२ ॥

जाहिरात में (प्रकटरूपमें) योगाभ्यासी योगी जान पड़ता है, परंतु अभोक्ता होकर वह औघट घाट में रमता रहता है । जिस के मस्तक पर ईश्वर के भी ईश्वर परमेश्वर का हाथ होजाता है । (परब्रह्म परमात्मा की जिसपर पूर्ण कृपा होजाती है) उसकी शिव ब्रह्मादि सर्व देवता सेवा करने लगजाते हैं ॥ २३ ॥

वेद कहते हैं जिनका शेष और विष्णु ध्यान करते हैं उन भगवान् को हरि के जनों ही ने जाना है । जिसने अनेक अवतार धारण किए जिसका न आदि है और न अंत है और जो सर्वदा एकही रहता है ॥ २४ ॥

अत नहि करणू बाल न तरणू धृज न को यरपदा है ।
 पापाण न पाती छाप न ताती धान न आन थपदा है ॥ २५ ॥
 अणघड अजातू मात न तातू निरामार निर्ददा है ।
 हाट ॥ कोइ शहरू विणज न बोहोरू सरच न को खूटदा है ॥ २६ ॥
 सूर नहि सत्ती जोग न जत्ती जरा न जम पूजदा है ।
 तीरथ नहि यरतू आभ न घरतू अमल कला आपदा है ॥ २७ ॥
 नारि न को पुरुषा चतुर न मुरखा वेद न चार वचदा है ।
 अनुभव पद बोल्या अतर सोल्या विधि विरला धूसदा है ॥ २८ ॥

जिसके अत करण (मन, बुद्धि, चित्त, अहकार) नहीं हैं । और जो न बालक, न तरुण, (जवान) न वृद्ध है न आयुवाला है । और जो न पापाण न पाता है और तसमुद्रा भी जिसके नहीं है और न जिसके कोई स्थान है न आन है ॥ २५ ॥

यह अनघड (आकाररहित) अजात (अनमा) माता पिता-रहित है । जो निराकार निर्द्वंद्वस्वरूप है । उसका न कोई शहर है न कोई दुकान है । न वाणिज्य करनेवाला है न लेन देन करनेवाला बोहरा है । न उसके खरच है न कमी उसके खूट ही आती है ॥ २६ ॥

न वह शूर है न सती (दानादि देनेवाला) है, ॥ वह जोगी है न जत्ती है, और जिसके पास न कमी जरा (बुढ़ापा) और जम (मृत्यु) पहुच सकते हैं । न वह तीर्थ है न कोई घात है । न आकाश है और न घरती (पृथ्वी) है अर्थात् निरञ्जन निराकार निर्विकल्प निर्गुण आदि मध्यातरहित वह अजन्मा और अकल है और कला का देनेवाला है ॥ २७ ॥

न स्त्री है न पुरुष है न चतुर है न मूर्ख है और चारों वेद भी जिसकी महिमा नहीं बाच सकते हैं और नेति २ कहते हैं । यह अनुभव की वार्ता जो गुप्त थी उस को पदों में और छंदों में प्रकट की है जिसकी विधि कोई विरला ही समझ सकता है ॥ २८ ॥

मिलिया गुरु आदू पाय अनादू पूरयले लेखदा है ।

जाण्या हम जैसा कहिये कैसा कहू एक मन सरमदा है ॥ २९ ॥

कायम कुर्याणी कर आसाणी तुहि तुहि काम कमंदा है ।

तूही है रामा तु ही रहीमा जन हरिराम जपंदा है ॥ ३० ॥

पूर्व जन्म के लेख से आदिगुरु मिलगये और उनकी कृपा से अनादि रूप को पाया (जाना) जैसा हमने जाना है उसको कैसे वर्णन किया जाय ? क्योंकि वह अवर्ण्य है इसलिये मन बतलाने में कुछ संकोच करता है ॥ २९ ॥

यदि उपरोक्त विधि से स्थिर होकर अपने को इस पर कुर्बान कर-दोगे तभी आसानी से सफलता प्राप्त करोगे । ग्रंथ की समाप्ति में श्रीहरि-रामदासजी महाराज ईश्वरके प्रति प्रार्थना करते हैं कि हे भगवन् ! आपही राम हो आपही रहीम हो और जो कुछ हो सो आप ही आप हो ॥ ३० ॥

॥ इति श्रीहरिरामदासजी महाराजकृतनिसानी संपूर्णा ॥

पद.

भाई नाम समझीने बैसी रहिये आत्मा चीन्हीने मनमा मगन थईये । टेक रामने रहिमान तमे एक कर जानज्यो कृष्ण ने करीम एक कहिये ।

विष्णु विस्मिला में मेद नथि भाई अल्लाह अलख एक लहिये ॥ १ ॥ भाई० ॥

गफूर गोविंद तमे एक कर जानज्यो मोलाने माधव गुण गहिये ।

हरि हक़ ताला नो मेद तमे जान्यो हवे चोरासी मार नव सहिये ॥ २ ॥ भाई० ।

परवरदिगार प्रभु एक कर जानिये नब्बी नारायण चोव्यो हइये ।

चावल ने चोखा पण डांगर छे एक एखु समझे तेना थई रहिये ॥ ३ ॥ भाई० ।

साहेब नाम पाकछे प्रभु नो बीजो नापाक सब कहिये ।

जे जे साधन कीधा तेमा पडे छे सांसो एथी ब्रह्मज्ञान नित न्हइये ॥ ४ ॥ भाई० ।

अथ ग्रथ नाम परचा प्रारम्भ ।

सत गुरु के सत शब्द तेँ, उपन्यो मन विश्वास ।
राम नाम छौं नही, धरु न दूजा पास ॥ १ ॥
प्रथम राम रसना सुमर, द्वितिये कठ लगाय ।
तृतिये हिरदै ध्यान धरि, चौथे नाभि मिलाय ॥ २ ॥

चौपाई ।

अध मध उत्तम ग्रथ घर ठानू । चौथे अति उत्तम अस्थानू ॥
यह छहुँ भिन देखे आसरमा । राममति को पावै मरमा ॥ १ ॥
अध सुमरन जू पेसे कहिये । रसना राम राम कू गहिये ॥
निशिदिन रसना गम उचारा । ज्यों देर यदीयान पुकारा ॥ २ ॥
ज्यों रसना तन यो तृण बेली । तन तृण सग तनु था मेली ॥
बेली पान फूल फल लागा । रसना राम सुमिरि भन भागा ॥ ३ ॥
अध सुमरन रसना से करिया । कर्तौई मुझि पार उतरिया ॥
रसना राम सुमर अध तालू । मध सुमरन की आया नालू ॥ ४ ॥
मध सुमरन जू पेसा भाइ । मुख सुमरन हालत रह जाई ॥
गदगद कठहि कमल निजासा । पाया प्रम भया परनासा ॥ ५ ॥
ज्यों घायल उर सालेपीरा । त्यों त्यों व्यापे राम सररीरा ॥
घायल की घायल सो जानै । राम भजै सोई मन मानै ॥ ६ ॥
निश्चय रामनाम लिय लागी । भ्रमना कठ कमल की भागी ॥
मध सुमरन की ये परतीति । अत्र उत्तम सुमरन की रीति ॥ ७ ॥
उत्तम सुमरन हृदय स्थानू । माँहो माँहि भया धरि ध्यानू ॥
रसना लेत राम का नामा । उर भीतर पाया निधामा ॥ ८ ॥
सहजाँ सासा शब्द पिछानी । रसना सहत नाम निगानी ॥
उत्तम सुख सुमरन हिरदामें । यू नारी पुरुषा मन कामे ॥ ९ ॥
उत्तम सुमरन की मुधि आइ । दुनि इक ध्यान रसा ठहराई ॥
अध मध उत्तम सुमर सुजाना । अति उत्तम के माँहि मिलाना ॥ १० ॥
अति उत्तम सुमरन जू एसा । या उपमा वरनू में कैसा ॥
अति उत्तम सुमरन परकारा । रोम रोम लागा रँगरा ॥ ११ ॥
अति उत्तम नामी अस्थानू । मन सकल्य विकल्य न ठानू ॥
अति उत्तम सुमरन सरगा । अक्षर एक भया अणभगा ॥ १२ ॥

साखी ।

सुमरन मारग संतका, ताते भरम नसाय ।
हरिरामा हरि बंदगी, करिहों चित्त लगाय ॥ १ ॥

छंद प्रयात भुजंगी ।

नाम चेतन कूं चेत भाई । नाम तें चित्त चौथे मिलाई ॥ १ ॥
नाम तें केवला होय भजना । नाम तें सहज सुमिरन रसना ॥ २ ॥
नाम तें अज्ञपा जाप ओऊं । नाम तें सास उस्सास सोऊं ॥ ३ ॥
नाम तें हक है एक अह्ला । नाम महमान की आखि गह्ला ॥ ४ ॥
नाम तें चंद सूर समेला । नाम तें करत मन सुख केला ॥ ५ ॥
नाम तें खोलि कप्पाट नैणूं । नाम तें ध्यान ताटक नैणूं ॥ ६ ॥

साखी ।

नाभी परचा नामका, गुरु तें पाया ज्ञान ।
हरिया पूरव एक पल, धन्या गगनमें ध्यान ॥ १ ॥

छंद प्रयात भुजंगी ।

पलटि पूर्व अपुरव्व प्याणा । करि वंनली लिये मेरु थाणा ॥ ७ ॥
ध्यान आकास धरि अधर छाजै । सुरति अरु शब्दका एक राजै ॥ ८ ॥
मन बुद्धि चित्त अरु अहंकारा । पाँच पच्चीस मिल एक यारा ॥ ९ ॥
नाद अनहद जहाँ तूर वाजै । बिन वादलों बीज बिन अंबुं गाजै ॥ १० ॥
बिन गंग जमुना बहै नीर पारा । बलै सुपमणा सीर अमृत धारा ॥ ११ ॥
झिलमिला होत जहाँ अखंड ज्योती । निर्मला नूर तहाँ ओत पोती ॥ १२ ॥
अगम अप्पार अवगत यारा । मिला मुझमें मुझ पीतम्भ प्यारा ॥ १३ ॥
फदले कूं जीत पति अदल सौई । सुन्य का सहर निरभै बसौई ॥ १४ ॥

साखी ।

हंसा सुन सरवर मिल्ह्या, सरवर हंस मिलाय ।
हरिया पैर सर खेलताँ, सहजाँ रहे समाय ॥ १ ॥

छंद प्रयात भुजंगी ।

सहज तन मन्त्र करि सहज पूजा । सहज सा देव नहि और दूजा ॥ १५ ॥
सहज का जोग साझन पवना । सहज धिर नाद अरु विंद गगना ॥ १६ ॥
सहज तीर्थ जप तप ध्यानू । सहज पदकर्म सेवा सनानू ॥ १७ ॥
सहज कल काळ कीर्तन काजा । सहज का शब्द सुर वाय वाजा ॥ १८ ॥

सहज में नाच दे नृत्य ताली । सहज आकाश पर भोम भाली ॥ १९ ॥
 वदना सहज करि शीस धरिया । सहज हरिनाम वक्सीस करिया ॥ २० ॥
 सहज का भेद सोइ भेद भेद । सहज यिन और दूजा न रोदै ॥ २१ ॥
 सहज का भेद सोइ सत जाणै । हृद कू जीत वेहद माणे ॥ २२ ॥
 सहज आसण किया सहज वासा । सहज मे खेल अजीत पासा ॥ २३ ॥
 सहज का खेलणा खूब भाइ । सहज सम्माधि सहजा मिलाई ॥ २४ ॥

साखी ।

सहजाँ मारग सहज का, सहज किया विग्राम ।
 हरिया जीव रु सीव का, एन नाम अरु ठाम ॥ १ ॥

छंद प्रयात भुजगी ।

जीव अरु सीव मिल एक राई । पूरणा ग्रह जहाँ सुरख दाई ॥ २५ ॥
 आदि अरु अंत ना मध्य सोई । जीव जहाँ शिव मिल एक होई ॥ २६ ॥
 जीव अरु सीव का ओधि वासा । ना आम धरती न होने निरासा ॥ २७ ॥
 जीव अरु सीव करि एन जाणी । मिले सिंधु सिंधौ जिमि बूढ़ पाणी ॥ २८ ॥
 ग्रह निरपाय गुण गय गलिया । जरा नाहिं चप भय कप डलिया ॥ २९ ॥
 ग्रह भयतार भय रहत होई । ग्रह अगस्त आनद सोई ॥ ३० ॥
 ग्रह निर्बंध निगण निशु । ग्रह पी अपी परमा निरसु ॥ ३१ ॥
 ग्रह अनहद अनवी नपीसा । ग्रह अन्नाय के नाय ईसा ॥ ३२ ॥
 ग्रह बिहेद देवन देया । ग्रह निरपाप निरपुण्य लेया ॥ ३३ ॥
 ग्रह अहोल भय नाहिं डोले । ग्रह अहोल ता नाम योले ॥ ३४ ॥
 ग्रह अहोल नहि मोल माया । ग्रह अपार किन पार पाया ॥ ३५ ॥
 ग्रह निरंजन निगुण न्यारा । ग्रह परमात्मा आत्मम प्यारा ॥ ३६ ॥
 ग्रह अगाध कोइ साधु जाणी । ओर रुर घीस सिर नाक ताणी ॥ ३७ ॥

साखी ।

जीव सीव मिल एकठा, रहे निरंतर छाया ।
 हरिया ग्रहानन्द मे, ना कोद ओर समाया ॥ १ ॥

छंद भुजगी ।

न को रस भोगी । न को रहत न्यारा ॥
 न को आप हरत । न कर्तु व्यवहारा ॥ १ ॥

न को विष्णु ब्रह्मा । न कोई नगेशं ॥
 न को गादि शक्ती । न कोई महेशं ॥ २ ॥
 न को नाद चिंदु । न को जीव जिदा ॥
 न को आभ धरती । न कोई गिरिदा ॥ ३ ॥
 न को मोह माया । न को काम क्रोधं ॥
 न को वृद्ध तरुणा । न को बाल बोधं ॥ ४ ॥
 न को खाणि च्यारै । न को च्यार वाणी ॥
 न को चंद सूर । न को पौन पाणी ॥ ५ ॥
 न को मात्त पक्षं । न को तिथि वारा ॥
 न को राति दिनं । न को अधियारा ॥ ६ ॥
 न को सात ह्रीपं । न को नव्व खंडा ॥
 न को तेज तारा । न को ब्रह्म अंडा ॥ ७ ॥
 न को सिंधु सरिता । न को ढारं भारुं ॥
 न को तीन लोका । न को जुग च्यारुं ॥ ८ ॥
 न को क्रद्धि सिद्धं । न को मान धाता ॥
 न को आय जावै । न को नेह नाता ॥ ९ ॥
 न को नारि पुरुषा । न को जाति पाँती ॥
 न को उंच नीचा । न को छोति भ्रँती ॥ १० ॥
 न को लोक लजा । न को कुटुंब धर्मा ॥
 न को पित्त मातं । न को भर्म कर्मा ॥ ११ ॥
 न को थान मानं । न को पान पाती ॥
 न को देव दोखं । न को जग जाँती ॥ १२ ॥
 न को शुद्धि किरिया । न को वेद पाठं ॥
 न को मुख वाणी । न को मौन काठं ॥ १३ ॥
 न को तन्न त्यागी । न को गृह चारा ॥
 न को नव्व नाथुं । न को पंथ वारा ॥ १४ ॥
 न को जोग जुगता । न को जत्तजोखा ॥
 न को सात सुखं । न को दैश दोखा ॥ १५ ॥

१ सुमेरु आदि । २ अठारह भार वनस्पति । ३ एक चक्रवर्ती राजा । ४ जात देनेवाला । ५ काष्ठवत् मौन न बोले न चेष्टा करै । ६ नवनाथ=आदिनाथ, परमानन्दनाथ, प्रकाशानन्दनाथ, काकुलेश्वरानन्दनाथ, कोलेश्वरानन्दनाथ, भुगानन्दनाथ, सहजानन्दनाथ, गगनानन्दनाथ, विमलानन्दनाथ । ७ नाथोंके तथा वाममार्गमें १२ पन्थ हैं. चारहवाट अठारह पेडा । ८ जतजोखा=इन्द्रियदमनका हिसाब=नववाड यथा—

न को मग्न वाचा । न को खाल शरी ॥
 न को हृद माही । न को वेह हृदी ॥ १६ ॥
 न को राग दोष । न को वध मोषा ॥
 न को घाटि बाघ । न को आघ ओषा ॥ १७ ॥
 न को राज तेज । न को देश पत्ती ॥
 न को महल छात्रा । न को रूप रत्ती ॥ १८ ॥
 न को खनास दासी । न को आसपास ॥
 न को साथ संगी । न को सास यास ॥ १९ ॥
 न को राग घाग । न को पट्ट मापा ॥
 न को हारै माली । न को लक्ष्म पापा ॥ २० ॥
 न को सूर सत्ती । न को राग्न वारा ॥
 न को आगि लागे । न को जूझ मारा ॥ २१ ॥
 न को शाम सोइ । न को दूज दारै ॥
 न को जाति जूइ । न को पन्थ राखै ॥ २२ ॥

त्रियम्बास प्रेमरुचि निरखन द परिच्छ भालन मनु बैन
 पूर्वभोग केरिख सितन गुहज अहार डेत तित बैन ।
 करि मुचि तन शृंगार बनावत त्रिय परपक ॥ यमुखसन
 समयकथा उदर भरि भोजन ये नववाइ पानमत जैन ॥ १ ॥

अथवा यतिगोत्रा दशनामका हिसाब नहीं है । दशनाम=तीर्थ आश्रम वन अरण्य गिरि
 पर्वत सारंग सरस्वती भारती पुरी ये दशनाम शकराचार्य स्वामीके चार प्रधान शिष्योंसे
 चला है जिन चारोंके नाम=पद्मनादाचार्य इत्यामल्लकाराचार्य मण्डनाचार्य तोटकाचार्य ।

स्वामी पद्मनादके २ शिष्य तीर्थ आश्रम ।

इत्यामल्लके २ शिष्य वन अरण्य ।

मण्डनके ३ शिष्य गिरि पर्वत सागर ।

तोटकके ३ शिष्य सरस्वती भारती पुरी ।

स्वामी शकराचार्य के स्थापन किय हुए चार मठोंमें इन दस प्रशिष्योंकी शिष्य-परंपरा
 चली जाती है ।

मठ ४ — शृंगेरीमठ नारदामठ गोवर्धनमठ जाशीमठ पंथाय (बदिकाश्रम करवीर
 पुरी तीर्थ वन गिरि पीठे द्वारकापीठे चारदापीठे)
 भारती आश्रम अरण्य पर्वत
 सरस्वती सागर

१. प्रथममुख निरोगी काया शांति । १. कायिक वाचिक मनसांति ।

१ संपूर्ण । २ सहज प्रकृत नारसिंही मार्गधी वाचोती अर्पण । ३. परिस्थिति ।

४ मातदार अर्थात् माता हालन । ५ मुद । ६ गना माय । ७ सम्बन्ध, वही । ८ पुरी ।

न को ध्वज नेजा । न को तूरवाजै ॥
 न को मेघ चरपा । न को वीज गाजै ॥ २३ ॥
 न को दैत्य देवा । न को दसावतारा ॥
 न को खेल जूवा । न को जीत हारा ॥ २४ ॥
 न को भक्ति नवधा । न को पट्ट चरनूं ॥
 न को कान्ह गोपी । न को कीरतनूं ॥ २५ ॥
 न को मूर्ति सेवा । न को देव द्वारा ॥
 न को भोग चाढ़ै । न को राण हारा ॥ २६ ॥
 न को तीर्थ व्रत्त । न को असनाना ॥
 न को होम जापू । न को तप्प दाना ॥ २७ ॥
 न को पिंड पोहरा । न को चोर लागै ॥
 न को रैण सूता । न को दिन्न जागै ॥ २८ ॥
 न को च्यार वेदं । न को है पुराना ॥
 न को है कतेवा । न को है कुराना ॥ २९ ॥
 न को अवल हिंदु । न को कोल मुह्ला ॥
 न को दाय पालं । न को मँह रसुह्ला ॥ ३० ॥
 न को राह पीरां । न को तेग मरदां ॥
 न को हक्क मूवां । न को हक्क कंरदां ॥ ३१ ॥
 न को सुनत काजी । न को बंग न्वाजा ॥
 न को ईद रोजा । मका नाहिं खाजा ॥ ३२ ॥
 न को राव रंकू । न को सुह्लताना ॥
 न को खाक पाकं । न को मस्सताना ॥ ३३ ॥
 न को भूत प्रेतं । न को जक्षजूणा ॥
 न को काल जालं । न को तत्त दूणा ॥ ३४ ॥
 न को स्वप्न जागै । न को सुक्ख पत्ती ॥
 न को पद्द तुरिया । न को मोक्ष मुक्ती ॥ ३५ ॥

साखी ।

ज्यों देख्या त्यों मैं कहा काणं न राखी काय ।

हरिया परचा नाम का तन मन भीतर पाय ॥ १ ॥

१ निशान । २ तुरी, नगारा । ३ जोगी जगमै सेवड़ा सन्यासी दर्रवेण । छयें दर्शन
 विप्रैका जामे गीन न मेप ॥ १ ॥ ४ म्लेच्छजाति । ५ मुहम्मद । ६ रसूल=पैगवर ।
 ७ छुरी । ८ बादशाह, सम्राट् । ९ मर्यादा ।

दारैकर्म पावरु धसै यू आतम घट माहिं ।
हरिया पयमे घृत्त है विन मथियों कछु नाहिं ॥ २ ॥

इति नाम परचा ।

अथ पदवत्तीसी ।

चरण ।

पर शब्द में कहि समझाऊँ, सुनिहो सब ससारा ।
रामनाम सो सारशब्द है, और कवन है छारा ॥ १ ॥
आपा भेद विना सोइ सुरता, कहै सुनै सो झूठा ।
जबलग अनुभव तत्र न दरसै, मरि मरि आने पूठा ॥ २ ॥
मनरा उलटि गहै जो गाढा, पकड़े पाँखू घाँटा ।
तीन गुणा की माया न्यागै, पद पार्य निरखाना ॥ ३ ॥
माया मोह त्रिपय ससारा, दुस्तर मारग दूरा ।
फायर ताहि धीनम गड़िया, टाकि परे सो सूर ॥ ४ ॥
मूर महातम सशि सप्रामा, स्वामि काम इक धारा ।
राग त्यागि दोऊँ तब जाबे, मोहै खल दल मात ॥ ५ ॥
जोग जन जपतप अछाना, ये सब आशा यधी ।
पूरण ग्रह सकल ते न्यारा, दुनी न जानै वधी ॥ ६ ॥
निगुण पद ना भेद नियारा, कहा सुण्या नहिं पावै ।
आपा उलटि आपमे देखै, जग ते मन पतियारै ॥ ७ ॥
भाय हीण करि वृथिरी होसी, पूजा दामिर चाब ।
नानाविधि का मारग होसी, रामनाम घटचाब ॥ ८ ॥
मैं नहिं कहत कहन परखाना, सुनिहो सने सयाना ।
मैं ते रागद्वेष जग उधे, ये उलि के अहनाजा ॥ ९ ॥
दुनियाँ दुष्ट बुद्धिना होसी, मनमुख धान समथा ।
घता कौ कता करि जाने, अत्रा धरे अनर्या ॥ १० ॥
वत्ता वेद बकै बहुतेरा, महजाँ सुद्धि न आवै ।
नाटक चेटक करिकरि ऊला, पेला पार न पावै ॥ ११ ॥
बाबू पलटि नाम धरि बाबा, बहुरंग भस्मी लाया ।
देहदशा करि मया दिगजर, मन धैराग्य न पाया ॥ १२ ॥
बाहिर हेम रामका वाना भीतर मरा मँगारु ।
या तनको कारी नहिं लागै, मनजा भरा विकारु ॥ १३ ॥

शून्य सुभर में बालन जाया, तबचा हाह नहिं मौख ।
जाति पति धरण नहिं बाके नाम ज धरिये कौख ॥ ३० ॥
अगम निगम त्रिच खेल हमारा, जई एको निरवामा ।
रूप रेख नख शिख नहिं जाके, देह न मोह न सासा ॥ ३१ ॥
जैमलदास गुरु परतापे, तोडया भम किगारु ।
जन हरिराम कहत है सतो, पदवत्तीस विचारु ॥ ३२ ॥

साखी ।

पदवत्तीस विचारिये, उपप्यो आतम ध्यान ।
आपा छे उमन रहै, रहै परम निज ध्यान ॥ १ ॥

इति ।

अथ प्रश्नोत्तरी ।

चौपाई ।

प्रश्न ।

कहो कौन घर प्रेम निधासा । कहो कौन घर ध्यान प्रजासा ॥
कहो कौन घर मन मिल पजना । कहो कौन घर सहज सुमरना ॥ १ ॥
कहो कौन घर अमरा भरि है । कहो कौन घर नीशर हरि है ॥
कहो कौन घर अनहद नूरा । कहो कौन घर परमत नूरा ॥ २ ॥
कहो कौन घर उमनि लाई । कहो कौन घर सुरति समाई ॥
कहो कौन घर पीन मिलाने । कहो कौन घर आय न जाये ॥ ३ ॥

उत्तर ।

कह कमल घर प्रेम निधासा । हृदय कमल घर ध्यान प्रजासा ॥
नामि कमल घर मन मिल पजना । रोम रोम घर सहज सुमरना ॥ ४ ॥
यन नाल घर अमरा भरि है । अघ ऊरने घर नीशर हरि है ॥
सून्य शिखर घर अनहद नूरा । दशम द्वार घर परमत नूरा ॥ ५ ॥
ललाट घर उमनि लाई । सुरत निरत घर माहि समाई ॥
तिर्यगेणी घर पीन मिलाने । शिवमत्ता घर आय न जाये ॥ ६ ॥
जन हरिराम जगै घर पाया । जम मरण सदेह मिटाया ॥
निन गुरुगम देखे नर दूरा । ब्रह्म वताया आय हजूर ॥ ७ ॥

साखी ।

गुष्ट हमारी जो करै, सोई हमारा यार ।
हरिरामा दूजी दुनी, जाका ऊम खुदार ॥ ८ ॥
इति ।

अथ रेखता ।

(१)

जिंदरी भीतरै अजय जोगी वसै । जुक्ति विन जाणिया नाहिं जाई ।
प्रथम गुरुदेवकी आय सस्तूति करि । मध्र अरु तन्नकूं देत भाई ॥
रस्सना राम कूं सुमरि नहिं ढीलकरि । एक विन दूसरी आस नाहीं ।
पाट हिरदा खुलै कमल नाभी फुलै । बोलता पुरुष कूं देस माहीं ॥
आप गुरु देवका दस्तरे राखै नहीं । और कूं ज्ञान उपदेश देवै ।
आठही पहर हरिनाम जो उच्चरै । साच नहिं जानि गुरुविमुख सेवै ॥
आवता एक अरु एक ही जात है । अंध अज्ञान बहु करत मोहा ।
दास हरिराम निज भेद पायों विना । हाथ कंचन गह्या होत लोहा ॥

(२)

प्रथम गुरु ज्ञान अरदास तन वंदगी । शील संतोष लघु दीन यारा ।
राग अरु द्वेष तिहुं ताप मनतें तजै । झूठ अरु कपटसूं रहत न्यारा ॥
एक अभ्यास ढिल आस नहिं दूसरी । ब्रह्मका ध्यान मन सुरत सेती ।
जोग जिग दान तप नेम व्रत तीरथा । तुल्य तिहुं लोक नहि नाम जेती ॥
भर्म कूं भांजि कछु कर्म कूं काटिकरि । साहि शमंशेर सत शब्द सूरा ।
दास हरिराम कहै दिल दीवानमें । राज सोइ करत है संत पूरा ॥

(३)

आपकूं खोज पर ज्ञान की खबर करि । अलख आराध मन साधि प्यारा ।
जीव अरु जिंदकी झूठ यारी तजो । भेष भगवान करि देख न्यारा ॥
अणक्षरी वेद कूं निरख निरतायले । अगम अरु निगमका भेद वाचै ।
तन मन वचन तें दोष निर्दोष रहि । साम सूं सरपैरु संत साचै ॥
सौंझ सव्वेर क्या करत नर वावरे । वेग भजि वेग अव दाव आई ।
दास हरिराम तन खाक मिल जाहिंगे । चूक मत जानि जग चचुराई ॥

(४)

भरम अज्ञान की भीत कूं ढाहि के । ज्ञान चोगान में खेल सूरा ।
कूड़ अरु कपट की झण्ट कूं छोडिदे । त्रिगंड सिर बाय अनहद तूरा ॥
पांच पच्चीस गैनीमकूं साझिले । मन्न कूं जीत महरम्म होई ।
आदि जुग्गादि ले नाम निरभै भया । भरै सब संत वा साख सोई ॥

१ हाथ । २ तलवार । ३ सन्मुख । ४ हृदय, कठ, श्रूमध्य । ५ वजाना ।
६ दुश्मन । ७ महरम=मेदी ।

ब्रह्म कू मेद बहुत धर्म कू छेद करि । वेद कचेव से निरख न्यार ।
दास हरिराम यहै उलटि आपा निचै । परस लै परम दीदार प्यार ॥

(५)

मन की मूँठ पहँलूण गाढ़ी गहौ । तत्त का तीर करि हाथ साहो ।
ज्ञान कचाण कर ध्यान धोरा धरो । आन अज्ञान का दिग्ग दाहो ॥
अरसे का अश्व पर नृप्य नीका चढ़ो । नाम नीसाण सिर डक लारो ।
एक असवार अरु पच प्यादा पुत्रै । लारि ललमार हरि बेग ध्यावो ॥
तन की नालि करि चित्त दारु भरो । सुरति की जामँकी शत्रु गोला ।
भूमिया भरम कू मारि मुजरा करो । पाच परधान कू पालि पोला ॥
सत्त का सेल करि खाग क्षमा तणी । दोय दल मोबि गढ़ तीन तोढ़ो ।
दास हरिराम सय राज एषो भया । साम सम्मूह मिल हाथ जोढो ॥

(६)

सत्त का तख्त पर मन राजा भया । मान गुमान के महल माहीं ।
पाँच परधान पक्षीस चीरांगरी । करत है काम किल्लोल पार्हीं ॥
जाणिरे जाणि जग माहिँ जन सूरमा । दोय दल बीच में रोल घालै ।
निरति असवार अरु सुरति घोडा लिया । काम अरु क्रोध कू दबँदि पालै ॥
ज्ञानकी गुरज ले पाणि आपाधसे । तत्त तरवार करि हाथ साहै ।
पाच परधान मन मारि राजान कू । मान गुमान का महल दाहै ॥
नाम नृप फोट सिर घाटि ताये किया । नफख अरु सिकख रिच एक राई ।
दास हरिराम सय राज अपिबल भया । दशम द्वार नौबत्त पार्ई ॥

(७)

समझि रे समझि मन मूँठ मेरा कछा । कुटुंब परिवार कह कौन केरा ।
सकल ससार सारा की सोयती । एक पल माहिँ हुय फूच डेरा ॥
एक मन चित्त नित नाम निरभै भजो । तुनि सिरफाल नहिँ करत जोरा ।
बेद कचेव सय जानि काची रथा । देखि भूले मतै मग्न भोरा ॥
तप्य तीर्थ व्रत साक्षि पकादणी । सातही दीप नव खड डोलै ।
जोग जिग जाप पट्टम ग्वाली रखा । आपकू उलटि आपा न रोलै ॥
आदि अरु अत सतशत्रु कू ध्यायले । पायले ददशम द्वार सोई ।
दास हरिराम तहाँ मुक्ति ससा नहीं । जीव अरु सीव मिल पर होई ॥

(८)

सवर करि गवर गाफिल तुमसे कहँ । बहुरि नहिँ पाय नरदेह थारी ।
एक इफतार सिर घारि दूना नहीं । मानि मेरा कछा पुदय नारी ॥

१ प्रत्या । २ जिगा । ३ अरसनाम है महल का जहाँ राजा बैठे । ४ बती ।
प्रमदेवता वा भूमि का अरुल मालिक । ५ मगानवन । ७ दाट ।

लोभ लालच मद मोह लागे रहै । आपदा पासि पड़पंच ठाणै ।
आन उप्पाधि बहु ताप हिरदै उठै । राग अरु द्वेष मनमान ताणै ॥
काम अरु क्रोध भय जोध जोरावरी । जहर अरु कहँर जग माहिं जाडा ।
काल कव्वाण कसी सिर ऊपरै । मारसी जोय नहिं कोय आडा ॥
मात अरु तात सुत भ्रात भूत भामिनी । कुटुंब परिवार की प्रीति झूठी ।
दास हरिराम कहै खेल वीतां पछै । मैल सौह ऊठिग्यो आड़ि मूठी ॥

(९)

सत्तगुरु देव की गम्म कैसे लहै । कान गुरु फुंकिया मान लीया ।
भाव निज भक्तिकी गम्म कैसे लहै । सेव कृत्रिम कुल काज कीया ॥
साधु सतसंग की गम्म कैसे लहै । जगत जंजालमें फिरत हूला ।
ज्ञान विज्ञान की गम्म कैसे लहै । आन अज्ञानमें जात भूला ॥
अज्ञपा जाप की गम्म कैसे लहै । जुगति से जाप नहिं करत जाणी ।
आतमा देवकी गम्म कैसे लहै । वेद कत्तेव की देखे पुराणी ॥
रोम ररंकार की गम्म कैसे लहै । शब्दके संग ममकार होई ।
दास निर आस की गम्म कैसे लहै । आस दुनियानकी करत सोई ॥
नाम निर्गुण की गम्म कैसे लहै । ताप तिर्गुण के पंथ पुँलिया ।
उन्मनी ध्यान की गम्म कैसे लहै । नाम कूं लेत है कान सुणिया ॥
सुरति अरु निरत की गम्म कैसे लहै । विषय मन वासना रहत माहीं ।
अधः अरु ऊर्ध्व की गम्म कैसे लहै । कंठ रसना हृदै ध्यान नाहीं ॥
पिंड ब्रह्मंड की गम्म कैसे लहै । खंड फिर मंडका देख देखै ।
नाम निर्वाण की गम्म कैसे लहै । वाद वक्वाद के राग धेखै ॥
वात विदेह की गम्म कैसे लहै । हृद में रातदिन रहत राता ।
ब्रह्म आनंद की गम्म कैसे लहै । मोह माया तणै मद माता ॥
जाण विज्ञाण की गम्म कैसे लहै । शुद्ध बुधि आपणी सार चूका ।
दास हरिराम सिर भार कैसे मिटे । भर्म अरु कर्म के ढिग दूका ॥

(१०)

गुरु परचै विना ज्ञान कैसे गहै । नाम परचै विना ठाम नाहीं ।
जीव परचै विना पीव कैसे मिलै । आप परचै विना क्यूँ न काहीं ॥
मन परचै विना ध्यान कैसे धरै । त्याग परचै विना शान्ति नाचै ।
अधः परचै विना ऊर्ध्व कैसे चरै । नाद परचै विना विंद जाचै ॥
अखंड परचै विना अनहद कैसे घुरै । अगम परचै विना निगम बोलै ।
सांच परचै विना झूठ कैसे मिटे । दास हरिराम कहै दिहल खोलै ॥

(११)

सत्त का शब्द विन सहज दरसै नहीं । तत्त दरस्याँ विना मत डोलै ।
 सुरति उलटी विना ब्रह्म मेदै नहीं । दिल दरस्याँ विना सालं फोलै ॥
 पेम वरया विना नाम निपजे नहीं । आत्मा देव विन सेज दूजै ।
 भाष उपज्याँ विना भक्ति भावे नहीं । साधु दरस्याँ विना सिद्ध पूजै ॥
 छुक्ति जाणी विना जोग दरसै नहीं । एक दरस्याँ विना अनत धारै ।
 धार दरम्या विना पार कैसे लटै । दास हरिराम सज रँय सारै ॥

छप्पय ।

राम धर्यानै वेद राम कृ दास पुरानै ।
 राम शाखा स्मृति राम शारदा सुजामै ॥
 राम गीता भागवत राम रामायन रावै ।
 राम विष्णु शिव शेष राम ब्रह्मा मन भावै ॥
 राम नाम तिहुँलोखमें पेसा और न कोष ।
 जन हरिया गुर गम विना कहा सुण्यो क्या होय ॥ १ ॥
 प्रथम गुरु शिव जानि नाम पावेती दीया ।
 तासेती नारद नाम तन मन करि लीया ॥
 दे नारद उपदेस भाम सनमदिक जान्यो ।
 शुद्धतै जनन निदेह पीन उर माहि पिछान्यो ॥
 सतगुरुतै शुकदेव सुनि किया भम सब दूर ।
 जन हरिया शुद्धगम अगम ताहि लहै कोई खर ॥ २ ॥

छंद इदय ।

अग सुसोम पेम सरोवर चूप सनै चित रग चितारो ।
 साधु सती जति राग रसायन सूरक्षमा कबि दास दतारो ॥
 ज्ञान विमान ये जानि सबै निधि रूप तपो मन मोह धुतारो ।
 दास कहै हरिराम विना हरि होय नहीं नर को निस्तारो ॥ १ ॥
 राम न द्वेष न कोष कहँ पुनि मशय शोक न पिंड प्रकासै ।
 मै तै मान अमान न को उर कूट कपट को दूरि निकासै ॥
 आपा पासि न और लगी सतशब्द अकासै ।
 दास कहै हरिराम न दियो सोय सोसासै ॥ २ ॥

शील संतोष सदा तन शीतल आनंदरूप रहै जहँ तहीं ।
 प्रेम प्रवाह भये उर अंतर और विकार लिपै नहिं काहीं ॥
 छंद न को सुरा दुःख न हिंसा कष्ट कष्ट दिशा नहिं जाहीं ।
 दास कहै हरिराम वसो वन भावै वैसि रहो घर माहीं ॥ ३ ॥
 तू कहा चित करे नर तेरी हि तो करता सोइ चित करैगो ।
 जो मुख जानि दियो तुझि मानव सो सबहुनको पेट भरैगो ॥
 कूकर एक ही टूकके कारन नित्य घरोवर बार फिरैगो ।
 दास कहै हरिराम विना हरि कोई न तेरो काज सरैगो ॥ ४ ॥

मनहर छंद ।

राजी राव रंक भूप नारी ही पुरुष राजी
 झूठी सी बनाई वाजी खुसी सब खाल में ।
 संन्यासी दुहाई दंत जोगी आदिनाथ जानै
 जतीही बखानै जैन रता मता हाल में ॥
 भोपना शक्ति सेवै वैष्णव अवतार ध्यावै
 चंभना के वेद पाठ चतुराई चाल में ।
 पखाई पखी में लोक निरापखी जन कोई
 हरिया के राम एक नहीं लाल पाल में ॥ १ ॥

राग बिलावल ।

पद १

एकै माहिं अनंत है अनंता में एको ।
 मन महरम कूं पायके हुवा एक मेको ॥ १ ॥
 अच्छी माहीं छति है छति माहीं अच्छी ।
 बसती माहीं शून्य है शून्य माहीं बसती ॥ २ ॥
 या जल सेती लूण हुय लूणा फिर नीरा ।
 सतगुरु सेती सिख भया सिखसूं गुरु पीरा ॥ ३ ॥
 पाणी तें पाला हुवा पाला फिर पाणी ।
 यूं सीव हुतां जीव हुवा जीव सीव समाणी ॥ ४ ॥
 सासामाहिं उसास है उसास में सासा ।
 हरिरामां हरि मुझि में हरि में हरि दासा ॥ ५ ॥

१ भक्ति कल्पतरु पात गुण, कथा फूल बहु रंग ।

नारायण हरि प्रेमफल, चाखत सन्तविहग ॥ १ ॥

२ दत्तात्रेय ।

पद २

ता घर सताममाधि है हम सो घर लहिया ।
 एक अलख घट भीतरै अम्हा जु कहिया ॥ १ ॥
 रहता से रहता रहै जाता नहि जाणी ।
 रोम रोम ररकार हुय ताही सुपमाणी ॥ २ ॥
 उलघ मेरु आकाश में वाय अनहदा ।
 निदाये निर्द्वह हुय घसिया वेहदा ॥ ३ ॥
 पद परमानद परसिके जीवत ही भूया ।
 अपना आपा पलटि के निजमनया हूवा ॥ ४ ॥
 इष्टि न आये मुष्टि में नहि रूप न रेखा ।
 हरिगमा पर शून्य में मुक्ति मिल्या अलेखा ॥ ५ ॥

राग आषा ।

पद ३

सतो दोनू राह हरामी खन करे निन खामी ॥ १ ॥
 हिंदू घात करे अजका हरि हू बेपरमाणी ।
 मुप सू खाद करे मनसेती जीव दया नहि जाणी ॥ २ ॥
 पहली तरपण करे गऊको पुण्य के पाप नसाई ।
 पीछे धन धाबो करि लाये दुष्ट दया नहि आई ॥ ३ ॥
 सहजे जीव निंद बु छोटै ताकू कहत हरामा ।
 काजी करद गऊ सिर सारै पिना दोस बिसरामा ॥ ४ ॥
 मुई हराम कहै हब मारी पसुयो करत पुकारा ।
 काजी जाय कौनमा देसी साई के दरगारा ॥ ५ ॥
 मुहम्मद पीर जहँ गड कीही या फिर मारि जियाई ।
 दोनहार भिटे नहि जिय की तू सिर लै क्यों भाई ॥ ६ ॥
 भूई मटिया मुखार कहत है मारै हक निवाला ।
 देस देस दुनिया कर भूली काजी कौन हवाला ॥ ७ ॥
 हिंदू के पण जाणि गऊ को सो सुअर तुरकाणे ।
 दोऊ मारि भयै मुख मोंसा घट धधि कोन घराणै ॥ ८ ॥
 निपय कर्म कू सब कोउ आघा हरि धर्म सेती पाछा ।
 जन हरिगम राम रस पीजे छाडि सुअर गड बाछा ॥ ९ ॥

राग गोड़ी ।

पद ४

संतो ऐसे लोक निपूती ।
 अपनो साँई याद न आने औराँ जानि सपूती ॥ टेर ॥
 घर घर देवस्थान थापना नरनारी मिल पूजै ।
 आप स्वार्थ करै ईछना परमारथ सँ दूजै ॥ १ ॥
 गहली दुनिया धान विहणी गोगा पावू गावै ।
 पंचपीर पाखंड से राती राम भक्ति नहिं भावै ॥ २ ॥
 चाँवड आगै भँसा चाढै भलो आपणो भावै ।
 झूठे तन का जतन करत है जीव दया नहिं आवै ॥ ३ ॥
 आन देव कूँ करै ईछना पिता पूत के साँई ।
 जिन ऐ जीव सकल कूँ सिरज्या सो सुझै नहिं साँई ॥ ४ ॥
 मुचै मुड़े को घौसो राखै चेतन सेती चोरी ।
 खालिक छोडि खलक सँ लागा धोकै गौरां होरी ॥ ५ ॥
 आनदेव का आखा देखे आप न देखै माहीं ।
 आदम और नहीं कोई आडो जव जम एकटै बांही ॥ ६ ॥
 लाडो लाडी जाय लडावण राख्यो ओजक सारै ।
 जन हरिराम फिरै मन फोटी ध्यान न हरि का धारै ॥ ७ ॥

पद ५

संतो यूँतो भक्ति न होई ।
 इंद्री हठ निग्रह करि मूवा पारन पहुँता सोई ॥ टेर ॥
 नाडी निरख भया वैदंगर अनंत औपधी कीन्हा ।
 सारी धात रसायण करि करि आत्म एक न चीन्हा ॥ १ ॥
 गावण वावर्ण ताना तूनी करि करि लोक रिझावै ।
 मुख तें राग छतीस अलापै धुनि अधिकेरी लावै ॥ २ ॥
 वेद पाठ बहु करत विचारा ज्ञान ग्रंथ भरपूरा ।
 उडत गडत राखत थिर देहा साधु सती सिध सूरा ॥ ३ ॥
 ज्योतिष सीख ज्योतिषी हूवा अगम अगोचर आखै ।
 औराँ कूँ ग्रह गोचर लावै आप लैण की राखै ॥ ४ ॥

१ इच्छा करना । २ गोगा चोहाण, रामदेव तँवर, हर्षवू साँखला, मेहो मोंगलिया,
 पौवू मझीनाथ । ३ सिरजनहार । ४ इवरानी और अरवी लेखकों के अनुसार मनुष्यों
 का आदि प्रजापति । ५ वैद्यराज । ६ वजाना । ७ लगावै ।

तप तीरथ घत भरत कर्त्तृपा करि मत भरमो भाई ।
जन हरिराम राम भज निश्चै नहिँ तो परलै जाई ॥ ५ ॥

राग खेर ।

पद ६

हे जाए जिंदरी तैं जोगियो, न जान्यो भूडी मेर ।
जोगी आदि जुगादिरो, तू करि मुई कुसेव ॥ १ ॥
जोगी एरु न जाणियो, घहु मन वैठी लाय ।
जोगण जोगी याहिरो, पलमें गई विलाय ॥ २ ॥
चेतन घरी न चेतियो, पीठे भई अचेत ।
जो न गहेसी मौन मुख, रसना राम न लेत ॥ ३ ॥
सैणों सेती रोपणो, असैणों सू गुंझि ।
साम सनेही ना किया, आरों रही अलुंझि ॥ ४ ॥
निरजन देख्या जोगिया, रही निहार निहार ।
सारा तन फिर जोइया, नहीं जोगीरी उनिहार ॥ ५ ॥
जोगी राट्या ना रहे, जोगी रमता राम ।
सुरति निरति कर देखिया, जोगी तणा मुकाम ॥ ६ ॥
जननी जन्मो न जोगियो, पिता न इन के कोय ।
हरिरामा आत्म जोगी, जिंद भीतर जोय ॥ ७ ॥

पद ७

हसा सुन सरवर रय करे ।
बच जिना धुग धुग निमोती ध्यान न दूजा धरे ॥ १ ॥
पाँव द पाय जिना इक हसो वास किया सुन धरे ।
अघर महल जहाँ अनव शरोपा है हरि रास अटरे ॥ २ ॥
तहाँ नहिँ घर अर नहिँ तारा चंद न सूर सचर रे ।
वेद पुराण कथा नहिँ कीतन धहाँ अण अच्छर उचर रे ॥ ३ ॥
गर सुर असुर लोक नहिँ नाया दिवस रैन नहिँ पर रे ।
जन हरिराम मित्या परहसे जरा न जम का डर रे ॥ ४ ॥

पद ८

मनवा रामभजन करि बल रे ।
तज सकल विकल का तयही व्यापा हुय निरल रे ॥ १ ॥

देखि कुसंग पाँव नहिं दीजै जहाँ न हरि की गल रे ।
 जो नर मोक्ष मुक्ति कूं चाहै संतां वैसि मिसल रे ॥ १ ॥
 संशय शोक परै करि सबही द्वंद दूर करि दिल रे ।
 काम क्रोध भर्म करि कानै राम सुमर हक हल रे ॥ २ ॥
 मनवा उलटि मिल्या निजमनसुं पाया प्रेम अटल रे ।
 पांच पचीस एक रस कीना सहज भई सब सल रे ॥ ३ ॥
 नख सिख रोम रोम रग रग में ताली एक अटल रे ।
 जन हरिराम भये परमानंद सुरति शब्द सुं मिल रे ॥ ४ ॥

राग मल्हार ।

पद ९

रे नर सतगुरु सौदा कीजै ।
 इन सौदा में नफा बहुत है एक मना होय लीजै ॥ टेर ॥
 मात पिता सुत भ्रात सनेही चौरासी लख हीजै ॥ १ ॥
 जे कोइ चाहै रामभक्ति कूं गुरु की शरण गहीजै ॥ २ ॥
 गुरुविन भरम न भाजै भवका कर्म न काल कटीजै ॥ ३ ॥
 गुरु गोविंद विन मुक्ति न जिव की कहियो वेद सुनीजै ॥ ४ ॥
 जन हरिराम और सब कूकस राम शब्द सत वीजै ॥ ५ ॥

पद १०

रे नर राम नाम सुमरीजै ।
 यासूं आनै संत उधरिया वेदों साखि भरीजै ॥ टेर ॥
 यासूं धू प्रह्लाद उधरिया करणी साँच करीजै ॥ १ ॥
 यासूं दत्त मछंदर उधरे गोरख ज्ञान गहीजै ॥ २ ॥
 यासूं गोपीचंद भरथरी पैलै पार लंघीजै ॥ ३ ॥
 यासूं रंका वंका उधरे आपा अजर जरीजै ॥ ४ ॥
 यासूं रामानंद उधरिये पीपा जुग जुग जीजै ॥ ५ ॥
 यासूं दास कवीर नामदे जम का जाल कटीजै ॥ ६ ॥
 यासूं जन रिवदास उधरिये मीरां वात वनीजै ॥ ७ ॥
 यासूं कालू कीता उधरे वास अमरपुर कीजै ॥ ८ ॥
 यासूं जन हरिदास उधरिये दादू दीन भनीजै ॥ ९ ॥
 जन हरिराम कहै सबही कूं जपतां ढील न कीजै ॥ १० ॥

राम विभाष ।

पद ११

प्रभुजी प्राण सकल वे दाता ।
 दुजा देज किया दुनिया का तेरे तात न माता ॥ देर ॥
 जोतिस्वरूप सखल घट जोती रमता राम कहायो ।
 दृष्टि न मुष्टि सुन्यो नहि देख्यो आप ऊपनो आयो ॥ १ ॥
 साग्य योग भक्ति सख जान्या परते पर सवायो ।
 राममजन बिग कोइ न सीधा वेद पुराना गायो ॥ २ ॥
 तीन लोक में नाम न तुमसा हमसा सत अनेकू ।
 मुग भरि योल करू क्या महिमा रोम रोम रटि एकू ॥ ३ ॥
 तुम निर्मल दातार क्यानिधि मे मगन मल धारी ।
 जन हरिराम शरण तेरी आयो दोष दुख मेढि मुरारी ॥ ४ ॥

पद १२

प्रेम भक्ति मोहि जापो ।
 माग माग दाता हरि आगे जपू तुमारा जापो ॥ देर ॥
 आठ नये निधि रियि भडारा क्या मागूँ चिर नाहीं ।
 वे मोहूँ हरिनाम राजाना खूट क्यहु नहिं जाहीं ॥ १ ॥
 इन्द्र अपनरा सुरा तिलासा क्या मागूँ दिन भगा ।
 दीजे मोहिं परम सुरा दाता सेवत ही रहू सगा ॥ २ ॥
 तीन लोक राज तप तेजू क्या मागूँ जम प्रासा ।
 दीजे राज अभै गुह देवा अटल अमरपुर बाना ॥ ३ ॥
 आठ पहर बीलंग अणघड की ता सेती निस्तारू ।
 जन हरिराम स्वामि अह सेवक करुमेक दीदारू ॥ ४ ॥
 राग बहम ।

पद १३

प्राणी करगे राम खनेही ।
 रिनस जायगी एक पलकमे या गनी भरदेही ॥ देर ॥
 रातो मातो विषय स्वाद मं परकूलित मनमाहीं ।
 जीयतणा आया जमकिर पकड़ि लेगया घाहीं ॥ १ ॥
 भूरग मगन भयो माया मं मेरी करि करि मानै ।
 अतकाल मं भई विदाणी खतो जाय मसानै ॥ २ ॥

राग रंग रूप नर नारी सब हुय जाहिंगे खाका ।
जन हरिराम रहैगा अस्मर एको नाम अल्लाह का ॥ ३ ॥

पद १४

रे नर या घर में क्या तेरा ।
जीव जंतु न्यारा घर माहीं सोई कहै घर मेरा ॥ टेक ॥
चीटी चिड़ी कमेड़ी उंदर घर माहीं घर केता ।
आया ज्यों सबही उठि जासी वासो दिन दस लेता ॥ १ ॥
मैड़ी मंदिर महल चिणावै मारै ऊंडी नीवां ।
दिन पूगे नर छांडि चलैगो ज्यूं हाली हल सीवां ॥ २ ॥
नव रंग रूप सोलह सिणगारा माया विषै बिलासा ।
जन हरिराम राम विन दुनिया होसी खासर फासा ॥ ३ ॥

राग धनाश्री ।

पद १५

मँगन कूँ दान देवो राम राय ॥ टेक ॥
मैं मँगन जन द्वार तुझारे राखो हरि शरणाय ॥ १ ॥
मैं भिखियारी भया वापुरा तुम दातार सदाय ॥ २ ॥
दीजै दान अभय पद दाता ऊणत रहै न काय ॥ ३ ॥
आठ पहर औलंग हरि आगै करिहों चित्त लगाय ॥ ४ ॥
रीझैगा जब अमर गुसाँई दैगा पटा लिखाय ॥ ५ ॥
खातां कबू न खूटे रोजी दिन दिन अधिकी थाय ॥ ६ ॥
जन हरिराम भक्ति बगसीजै मुक्ति न मांगूँ काय ॥ ७ ॥

पद १६

ऐसे हैं राम गरीब निवाज ॥ टेक ॥
भीर परी प्रह्लाद उवारे हिरण्यकशिपु हण ताज ॥ १ ॥
मा उपदेस दियो ध्रुव सेती अटल वसायो राज ॥ २ ॥
टेर सुनत वेग हरि आये तार लियो गजराज ॥ ३ ॥
जन द्रौपां को चीर वधान्यो भई पंच भरताज ॥ ४ ॥
देवल फेर कियो जन साम्हो भक्तनामदे काज ॥ ५ ॥
दास कबीर घरे लदि वालद आन उतारे नाज ॥ ६ ॥
भीरां जहर कियो चरणोदक राखि भरोसो राज ॥ ७ ॥
सब संतन के कारज सारे भक्त विरद की लाज ॥ ८ ॥

श्रीरामसेहधर्मप्रकाश-

जन हरिराम सदा सिध कामा राम सुमर महाराज ॥ ९ ॥

पद १७

परम सनेही प्यारो प्रीतमो देरयो दिलड़ा वे भाहिं ॥ टेक ॥
 घादल वादळ पीजगी वसे घट घट राम ।
 मूरप मर्म न जाणियो पायो नाम न ठाम ॥ १ ॥
 सतगुरु तो चोहरा भया सिध सौदागर होय ।
 हरि सौदो चित छोददो तोल न मोल न कोय ॥ २ ॥
 सतगुरु चोहरा होय के वस्तु अमोलक देह ।
 सिध साचा गाहक भया मन अरु तन करि लेह ॥ ३ ॥
 निपम सरोवर नीर की अति ऊँची बहु धार ।
 एक मना तिर जाहिंगा वृजा झूवणहार ॥ ४ ॥
 अगम वेस अमरा पुरी जहाँ हरिजन का वास ।
 तहाँ हरिरामें घर किया जन्म मरण तजि आस ॥ ५ ॥

राग गोइवासी बनाथी ।

पद १८

प्रसन्न विदेही घालिमा जीय निवारो नाहिं ।
 एक अखड़ी रमिरहो धन्य सेशयियाँमाहिं ॥ टेक ॥
 सुरति सुहागिन सुदरी छाटो शब्द सुजाण ।
 सदा सनेही ऊपर धारु मन अरु प्राण ॥ १ ॥
 धरिया कूँ नहिं धारती धुनि अधरों सू धारि ।
 गगन मडल में घर किया सशय शोक निवारि ॥ २ ॥
 जन हरिरामा सुदरी घर अजरामर पाय ।
 अरुस परस हुय मिलरही आवण जाण मिठाय ॥ ३ ॥

राग आसा ।

पद १९

अप नर चेतो रे कहूँ भाई तोक वार वार समुझाई ॥ टेक ॥
 यो रासार भयो भवसागर उडो अधम अपारा ।
 बीच घई विषयन की लहरा के बहग्या के पारा ॥ १ ॥
 यो मन जानि भयो बाजीगर बाजी बहु विस्तारा ।
 सुरति निरति की राँमति मडी के जीता के हारा ॥ २ ॥
 मोद भाया की थाँवरि मडी भरम करम का फरा ।

श्रीहरि० पद

जाया जीव सब काल अहेरै के छूटा के बंधा ॥ ३ ॥
तूं नर कोन पसाय नचीतो जम सारीपा जोधा ।
जन हरिराम राम भजि लीजै तजियै काम रु क्रोधा ॥ ४ ॥

पद २०

पांडे देख पाखि मति भूलो आयो ओसर दूलो ॥ टेक ॥
एको पिंड एक है पाणी एक जोणि में आया ।
यामें ऊंच कौन है नीचा सब अवगत की माया ॥ १ ॥
कुल आचार करी कठिणार्ई ज्ञान विचार न पाया ।
वेद पुराण पढ़े पढ़ि पंडित आपा जग भरमाया ॥ २ ॥
चारों चरण चार आसरमा यामें आतम एक ।
जन हरिराम राम सुमरीजै या संतन की टेक ॥ ३ ॥

राग गवड़ी ।

पद २१

संतो देख पाख पग धरियै अंध कूप नहिं परियै ॥ टेक ॥
यो संसार भयो अंध कूपा पाँच विषय पनिहारी ।
तृष्णा घरत काम का चढ़सा सींचत है मन सारी ॥ १ ॥
माया मोह वण्णा कूसेटो कूड़ कपट की क्यारी ।
नेपै दुख सुख भया अनेका भुगतै नर अरु नारी ॥ २ ॥
तीन लोक अरु भवन चतुर्दश जनम जनम मरि जाती ।
जन हरिराम रहैगा सोई राम भजो अविनासी ॥ ३ ॥

पद २२

संतो है हक मरणा सबकुं ।
जो कुछ किया जाय अव करणा वेग सुमरणा खकुं ॥ टेक ॥
धंधे माहिं भयो नर अंधो मनवो माया सेती ।
एक राम नाम विन तेरे मुखां पड़ेगी रेती ॥ १ ॥
धुंधा गोली ज्युं धन गहला खिण खिण ऊंडा घालै ।
जब ते जीव पकड़ि ले जावै तब धन साथ न हालै ॥ २ ॥
वेद पुरान पढ़े पढ़ि पंडित खंडित करै न कोई ।
अच्छर एक अखंडित ही विन जावै दोझख सोई ॥ ३ ॥
वालापण तरुणा भयो बूढो तोइ न आपो चेती ।
जन हरिराम बीज विन बाह्यां कहा निपावै खेती ॥ ४ ॥

श्रीरामसेहधर्मप्रकाश-

पद २३

सतो माया सबकू छूटे ।
 है जगमें ऐसा जन कोई राम नाम कहि छूटे ॥ टेक ॥
 काया कोट दसुदरवाजा तारु भरम का भारी ।
 फाम करम की भोगल भारी खसि खसि गया ससारी ॥ १ ॥
 बलवत मोह मारने सबमें मन मेवासी राजा ।
 दोहै माहिं थनै गढ़ घाहिर एन न राखे साजा ॥ २ ॥
 आस पास माया को घेरो विच है जीवका घासा ।
 पाच पपीस मोरचा लगा बँचेगा कोई दासा ॥ ३ ॥
 जमरै आय जीव यस कीया देस दुहाई फेरी ।
 जन हरिराम एक पल मारि कोट भया बिग डेरी ॥ ४ ॥

पद २४

सतो ऐसा रे कोई सूरै काया गढ़ कू खुरै ॥ टेक ॥
 छूटा सारशब्दका गोला मुँही मोरचा भागा ।
 ध्यान ध्यान का हाथ रात्र ले मनसू लडवा लाग़ा ॥ १ ॥
 साथी सवल मारि सशय कू मन मोहादिक पावपा ।
 मान गुमान घालि मुँह आगे काम मोघ कू ताबपा ॥ २ ॥
 नाम किया गढ़ के विच डेरा अनहद नाद बजाया ।
 एने घरमें राग छतीसू आनद मगल गाया ॥ ३ ॥
 जन हरिराम बसि छवि छाजे अटल अमर पद पाया ।
 नाम नृपति की फेर दुहाई चहुँ दिस राज जमाया ॥ ४ ॥

रग मारु ।

पद २५

सयाने साच गहीजे हो ।
 झूठी माया मोह म काँह राख रहीजे हो ॥ टेक ॥
 मात पिता सुन बाधन को आगे को पूठ ।
 म्हारो थारो करतदाँ आय गये सत्र ऊठ ॥ १ ॥
 राम नाम कू सुमरिये और निवारो पध ।
 एवे साँई घाहरो जान सरल जग अध ॥ २ ॥
 बाद निरोध विचार कू घेवे नाहिं गियार ।
 अध बुध में बहिं गयो यिन गुरु धान विचार ॥ ३ ॥

श्रीहरि० पद

सुमति सुमारग सोध के चालैगा कोइ सूर ।
हरिरामा दरगाह में भेटेगा निज नूर ॥ ४ ॥

पद २६

इन मन कूँ जान न दीजै हो ।
मनसा साजन को नही तन भीतर लीजै हो ॥ टेक ॥
मन राख्यो सब रस रहै मन ग्याँ सब रस जाय ।
मन ही प्याला प्रेम का मन पीव प्यारा पाय ॥ १ ॥
सेहझियां सुख सुंदरी रमै राम दिन रैन ।
उर परमानंद ऊपजै अब और न को दुख दैन ॥ २ ॥
काम न काई कल्पना संसा गया नसाय ।
नैह लग्यो रहमान सँ दिल दूज न आवै दाय ॥ ३ ॥
मैं मनसुँ करि जानती सो मुझ मिलिया आय ।
हरिरामा निज मन विचै कुछ अंतर रही न काय ॥ ४ ॥

पद २७

पाऊं मुझ पीतम प्यारा हो ।
तन मन सोपूँ तुझिसुँ मिल यार हमारा हो ॥ टेक ॥
जो दम अहंता जात है सुमरन विन सारा हो ।
आपा उलटि विचारियै ब्रह्म वारंवार हो ॥ १ ॥
तन जोवन हुय जावसी छिनमाहीं छारा हो ।
सासोसास सँभारिये आतम आधारा हो ॥ २ ॥
सुख दुख सब संसार का अकूर अकारा हो ।
अधर विना धर को नहीं भर दूभर भारा हो ॥ ३ ॥
जन हरिराम प्रकासिया अंतर उजियारा हो ।
दर्शन हरि दीदार का दसवै हुय द्वारा हो ॥

पद २८

साजन सुख दीजै न्यारा हो ।
रोम रोम में रसि रहे पीरन के प्यारा हो ॥ टेक ॥
अवला अति आतुर भई आपनपो दीजै हो ।
साँझियां तुझ विन नाँ सरै मुझ वेग मिलीजै हो ॥ १ ॥

तन मन तेरा तू घणी मेरा नहिं सारा हो ।
 भली बुरी सब जीव की तुही जाननदाय हो ॥ २ ॥
 म मध्यम तन हीनता तुम उत्तम यारा हो ।
 प्रीति पूरवली जान के होवत नहिं न्यारा हो ॥ ३ ॥
 आपा अतर मेटिके अपनी करलीन्हीं हो ।
 जन हरिरामें दोस्ती आतम से कीहीं हो ॥ ४ ॥

रग विहागो ।

पद २९

देखा राम निरजन राया ।
 शोभा अनंत कही नहिं जायै बाजा अनहद बाया ॥ टेक ॥
 बाया कोट धन्यो यिन टोंची चूनो कली न लाया ।
 करता पुरुष भया कारीगर छाजा खूब बनाया ॥ १ ॥
 यामें एक निवेही पुरुषा इला पिंगला राणी ।
 सुपुमन सदा सुहागनि सुदरि मोक्ष मुक्ति जहाँ जाणी ॥ २ ॥
 अणमै राज करत अतिनाशी जहाँ चित चानर लाया ।
 जन हरिराम छाँड़ि हृदयासा बेहद वास बसाया ॥ ३ ॥

पद ३०

सतो सतगुरु करण सिद्धाई ।
 अतर माहिं निरतर देखा सहजों भेद बताई ॥ टेक ॥
 सहजों पुस्तक वेद पुराना सहजों अउर बाचे ।
 सहजों तार तबल धन सूर सहज नखइया नाचै ॥ १ ॥
 सहजों गग जमुन का भेला सहजों करत खाना ।
 सहजों देव सेन घट भीतर सहजों ब्रह्म ज्ञाना ॥ २ ॥
 सहजों जोग जुगति भी सहजों सहजों ऋषि सिद्धि दासी ।
 सहजों गगन ध्यान धुनि लागी सहज मिल्या अविनाशी ॥ ३ ॥
 सहजों सहजों एक भया सब रामनाम कू जाण्या ।
 मोक्ष मुक्तिका ना कोई ससा सहजों शब्द पिछाण्या ॥ ४ ॥
 सहजों सुरति निरत भी सहजों सहज भदिर म घासा ।
 सहज पिपा सू सेह रमता सहज किया घर वासा ॥ ५ ॥
 सहजों इला पिंगला सहजों सहजों सुपुमणि नारी ।
 जन हरिराम सहज घटभीतर पाया देव सुरति ॥ ६ ॥

हल चल सास सरीर में मन छाँड़्यो अहकार ।
 पूत पिता परिवार में सग न चालणहार ॥ ३ ॥
 पिंड धरती पोढ़ावियो कह तेरा नर कोन ।
 राम भजन विन दूसरा सब ही आवागौन ॥ ४ ॥
 हरिरामा सतगुरु मिल्या सतका शब्द सुनाय ।
 राम नाम कू सुमरतों जीव न परले जाय ॥ ५ ॥

पद ३४

गगरिया ज्ञान की जाग्रिच अधरा ध्यान ॥ टेक ॥
 काया काची बेलही रिच पाका फल जानि ।
 छात्रत ही चेतन भया अधा रया अजानि ॥ १ ॥
 नर मूरत निश्चै विना दूर दिसतर डोल ।
 सोसाहिय घट भीतरै ताहि न देखे सोल ॥ २ ॥
 जग सागर रिप लहरियाँ के आवै वे जाय ।
 हरि वैमुख से घटिगया हरिजन पार कराय ॥ ३ ॥
 पीय मिलन के कारणै लघिया अग्रघट घाट ।
 भगम भगोचर धामकी सहजाँ पाई याट ॥ ४ ॥
 हरिरामा हृद् छाँड़िवे बेहद मे लघलीन ।
 अल्प अजोनी आतमा सोई दोस्त कीन ॥ ५ ॥

राग सौराठ ।

पद ३५

कोई मन मृगे कू मारे रे ।
 सन देखी मे धरि चरि जावे हे नहिं मेरे सारै रे ॥ टेक ॥
 मृग पन पाँय हे हिरणै लारि पचीस लघारे रे ।
 भमं कर्म इनका हे सगी जे कोई दूरि बिडारै रे ॥ १ ॥
 निशि दिन नाम करत रुखवाली ज्ञान ध्यान शर धारै रे ।
 उलटी दृष्टि मुष्टि विन सधै सुरति निरति नहिं टारै रे ॥ २ ॥
 शील की यादु खँवार चहुँ दिशि प्रेम की पासी डारै रे ।
 जन हरिराम मारि मन मिरगा सब ही काम सुघारै रे ॥ ३ ॥

पद ३६

माधव का चारर मे हू हो ।
 आदि अत मध्य नाम तुम्हारे पार उतारण ते हू हो ॥ टेक ॥
 मैं दुखिया पादे दारिद्री तेरे कभी न काई ।
 दीनयशु दाता सगदी का भाग परापति पाई ॥ १ ॥

तीन लोक का ठाकुर तुम हो और किसी को जाचूँ ।
 तुम हरता तुमही करता नाच नचावो नाचूँ ॥ २ ॥
 का तो देश दिशंतर डोलूँ का बैठूँ घर माहीं ।
 डिग सिंग मिटै नहीं जंव जीवकी कारज सरै न काहीं ॥ ३ ॥
 जो मैं वास करुं वन वनमें मनवो रहण न पावै ।
 घरमें धका धूम बहुतेरी कहु कैसे बनिआवै ॥ ४ ॥
 मुझि औगुणका छेह न कोई तुझि गुणवंता साँई ।
 जन हरिराम कहै जहां राखो हरि तरवर की छाई ॥ ५ ॥

पद ३७

संतो करक कलेजा माहीं हरि बिन भाजै नाहीं ॥ टेक ॥
 सूती ही स्वप्ने में जानूँ सही पधारे सैन ।
 आघी हुय हुय मिलवा लागी ऊघरि आये नैन ॥ २ ॥
 तुम तो अंतरजामी कहियो मुझ माहिलैरी जानो ।
 मुद्रिकल होय हमारे मन में तुम करता आसानो ॥ ३ ॥
 राज पाट सुंदरि सुत बित ही दूजा सुख संसारा ।
 एता परंत न मांगूँ कबहु रामनाम बिन खारा ॥ ४ ॥
 जन हरिराम कहै सो कीजै दीजै दरशन तेरा ।
 अरस परस मिल मोहि मिटावो आवन जावन फेरा ॥ ५ ॥

पद ३८

जीव रे जुगति सों कर जीण ।
 पांच पायक पेल पैतल मान का गढ़ लीण ॥ टेक ॥
 सुरति घोड़ा निरति साखति क्षमा करि खोर्गीर ।
 पागड़ै पग देत सासा डाक पैलै तीर ॥ १ ॥
 चौकंडै चित धारि चौकस लगाम लिवकीलाय ।
 प्रेम की सिर पहर पारखर अगम दिशि कुँ ध्याय ॥ २ ॥
 तन तँरकस वांधि गाढा ज्ञान गह कव्वाण ।
 ध्यान मृठी धारि उन्मनि शब्द लावो बाण ॥ ३ ॥
 सांच की बंदूक साहो बचन गोली चाहि ।
 जामकी सिलगाय जतना दिग्गं ह्रंदर ढाहि ॥ ४ ॥

१ २ पेरोंके नीचे । ३ साटका, ताजना । ४ घोड़ेकी काठी के थड़े ।
 कुदान । ५ बख्तर । ६ भायाण । ७ कब्रजा, काबू । ८ दिग=दिशा या

सेल सुमरण साहि सहजो तत्त कर तरवार ।
हरिरामा जन यह औसर जीत भाबै द्वार ॥ ५ ॥

पद ३९

मन रे गुरु का उपकार ।
बिना कूची भोल ताला मुक्ति का भंडार ॥ टेक ॥
वेद बिन इक मेद मेघा कहा सुनिया नाहि ।
सहज ब्रह्मा पढै पोखी एक अक्षर माहि ॥ १ ॥
उलट हृद कू घड़या वेहद घमनाली पूर ।
इला पिंगला बीच सुपुमण निरख आतम नूर ॥ २ ॥
बिना घाती ज्योति मिलमिल अखंड दीया लोय ।
वेह बिन विवेह पुरुषा रहै महरम सोय ॥ ३ ॥
एक बिन इक जान भँवरा बिना घाबी घीच ।
हरिरामा रहु ऐसे न्यारा कमल कदम न फीच ॥ ४ ॥

पद ४०

भरम कोई सतगुरु भाजरे । साचो नाम सुनाय ॥ टेक ॥
सतगुरु मेरे सिरधणी मैं सतगुरु का दास ।
चाकै पास निलजिये काटे जम के पास ॥ १ ॥
योग यह जप तप करै अठ सठ तीरथ म्हाहि ।
उर आतम इन तार बिन जग के गेले जाहि ॥ २ ॥
वेद कथा सुन सीख के याचै देखै विचार ।
नाम नियारो रहिगयो करि करि लोकाचार ॥ ३ ॥
बिन गुरु गम निश्चय बिना कहै कहायै कूर ।
हरिरामा उन जीन स्र देख रहीजै दूर ॥ ४ ॥

राग जैतथी ।

पद ४१

सोई अमागिया रे हरि स्र नाहि सनेह ।
माया मोह मगन भयो मनमें विषया सेती नेह ॥ टेक ॥
रामनाम चेलो नहीं बालक तरुणा माहि ।
पीछे पाय यकै सिर कपै अँखिया सूझै नाहि ॥ १ ॥
औसर मिनसा वेह को भोंदूपणै न मूल ।
आयो हीरो गाठि स्र जाहि जतन गिन खूल ॥ २ ॥

कूड़ कपट फिर फिर किया जहँ तहँ आघा होय ।
 आवै चिरियां अंतकी कारज सरै न कोय ॥ ३ ॥
 विणज बटा धन बहु किया अपने स्वारथ जानि ।
 निज परमारथ वाहिरो आखिर द्वैगी हानि ॥ ४ ॥
 वार वार मैं क्या कहं कह्यो न मानै कोय ।
 ऐसे कीड़ो आक को अंव कहाँ रे होय ॥ ५ ॥
 या जग माहीं आयके केता काम कमाय ।
 जन हरिराम भजन विनएकै न्याय रीता नर जाय ॥ ६ ॥

पद ४२

सोई बडभागिया रे खालिक से मिल खेल ।
 द्वंद वाद से रहत है पाँच पचीसुं पेल ॥ टेक ॥
 उलटा मन गगन किया आसन हट पचि मरना नाहिं ।
 पिंड ब्रह्मंड अखंड भया परचा सुरति शब्द के माहिं ॥ १ ॥
 अष्ट प्रहर आनंद रहै मनमें रोम रोम जस गाय ।
 जाति न पाँति चरण नहिं वाकै तासे ध्यान लगाय ॥ २ ॥
 चोथे चित चेतन किया मेला योलै अनहद वैन ।
 आतम एक सकल करि देखै दुर्जन ना कोई सैन ॥ ३ ॥
 भर्म कर्म संशय नहिं सोगा आसा छांडि निरास ।
 जन हरिराम शब्द किया सुनमें एक निरंतर वास ॥ ४ ॥

पद ४३

सुणो नर नारिया रे अपनो पीव पुकार ।
 नहिं तो परलै जावसी लख चौरासी धार ॥ टेक ॥
 सतगुरु शब्दांनों कहै मनवा ताहि न भूल ।
 ऐसे जुगमें को नहीं रामनाम से तूल ॥ १ ॥
 साधु बिना कुन सीखवै रामभजन की रीति ।
 बूडा से नर वापड़ा करि करि जग सुं प्रीति ॥ २ ॥
 यारी हरि सुं कीजिये दूजा दाव निवारि ।
 पासो पिउसों खेलतां कदे न आवै हारि ॥ ३ ॥
 साधु मिल्या सुख संपज्या उपज्या परम आनंद ।
 जन हरिराम कहै बलि जाऊं जिन मेठ्या दुखद्वंद ॥ ४ ॥

इत्यपूर्णम् ।

अथ श्रीविहारीदासजी महाराज का झरझरा ।

वदत सत ररकार लगत रग धमक मृदग तत शब्द नचकता ।
 अध मध उतम उतमजति सुमरण कीतन करण कल्याण गरकता ॥
 कमडलु जल खान खल्ल जल निर्मल चरचत अग तिलकता ।
 अध कमल पर अमृत वर्षत छरुत अकथ छक अन्नक यकता ॥
 ऊर्ध्व घरर घर अवर घणणण भणण भृग मध सिंधु खलकता ।
 विधिविधि बाज अनंत गम उरमध घटघट प्रगट अघट ध्वनि गुनता ॥
 सध तनु घरर रोम रग रररर करर पचसखि रग रुचकता ।
 फ्रिगटि फिरत पग गूघर घणणण चणणण मधुरिसि डेर घजकता ॥
 करप्रह ताल स्तरर जर झरझर घरघर झणणण जीझ झणकता ।
 त्रिकुटि अघट ध्वनि मुनियर तणणण तार तवल ततकार तनकता ॥
 शिषपद् अचल अमल घट हल्लल यदन भठल वपु चन्द झलकता ।
 नमस्कार पद् परम धरित्र निल्य करत विहारी वारी तुमारि पलकता ॥१॥

॥ इत्यलम् ॥

श्रीसिंहथल धाम की जितनी पाठ-वाणी की पुस्तकें हैं उन सब का क्रम इस भांति है । श्रीरामानन्दजी महाराज, श्रीजैमलदासजी महाराज, श्रीहरिरामदासजी महाराज, श्रीनारायणदासजी महाराज, श्रीहरदेवदासजी महाराज, श्रीरामदासजी महाराज, श्रीदयालदासजी महाराज की वाणी तदनन्तर श्रीकबीर साहब, नामदेवजी, और रैदासजी की वाणी लिखी हुई हैं जिनका नित्य प्रति पाठ होता है । तथा श्रीखैड़ापा धाममें श्रीहरिरामदासजी महाराज, श्रीरामदासजी महाराज, श्रीदयालदासजी महाराज, श्रीपूरणदासजी महाराज, और श्रीअर्जुनदासजी महाराजकी वाणी का पाठ होता है बाकी पाठ पूर्वोक्त ही है । परन्तु अब कई महाभक्तों के हृदय में शंका होने लगी है कि श्रीनारायणदासजी महाराज थाभायत थे अतः श्रीसिंहथल पाटगादी पर विराजमान आचार्यों की वाणी से पहिले श्रीनारायणदासजी महाराज की वाणी का यह विपरीतक्रम किस कारण से हुआ । श्रीरामदासजी महाराजनें भक्तमाल में थाभायतों से पहिले पाटगादी ही का क्रम वर्णन किया है । यथा:—श्रीहरिरामदासजी महाराज के वर्णन के बाद—

“रोम रोम सहजाँ लिब लागी । व्यारीदास मिल्या बडभागी” ॥

पाटगादी के अधिकारीजी का वर्णन कर फिर थाभायतों के लिये फरमाया—

“दास नारायण अमी धियाया । आदूराम रामगुण गाया” ॥

इन क्रम वाक्यों से यह निश्चय हुआ कि पहिले पाटगादी का ओर फिर थाभायतों का वर्णन है ।

आगे चलकर श्री दयालदासजी महाराज की वाणी देखते हैं तो पहिला ही क्रम दिखाई देता है । श्रीहरिरामदासजी महाराज के बाद ही

“व्यारीदास अपार बुधि राम सत जस उच्चयो” ।

फिर हरदेवदासजी महाराज का वर्णन किया—

“हरदेव मेव सतगुरु कृपा भक्त अंश परगट भए” ।

इस प्रकार क्रमशः पाटगादी का लेख देकर पश्चात् संवत् १८०६ में सबसे पहिले दीक्षा धारण करने की वजह से थाभायतों में बडे जो श्रीनारायणदासजी महाराज हैं उनको स्थान दिया

“निर्मल दशा निर्दोषता नारायणदास विचार बुधि” ।

ऐसा नारायणदासजी महाराज के वास्ते लिखकर फिर श्रीरामदासजी महाराज के लिये वर्णन करते हैं ।

“भक्त समय भूमंडमें बलि बलि वारंवार नित ।

समत अठार प्रसिद्ध वर्ष नवको भल आयक ।

शुक्र पक्ष वैशाख तिथी एकादशि लायक ॥

१ श्रीखैड़ापा थाभायतों के ठिकानों में भी इसी प्रकार पाठ है । केवल थाभायत महात्माओं की वाणी अधिक हैं जिसका कई ठिकानों में अनुक्रम से श्रीदयालदासजी महाराजकी वाणीका पाठ न करके अपने महात्माओं की वाणीकाही पाठ करलेते हैं ।

अथ श्रीविहारीदासजी महाराज का झरझरा ।

वदत सत ररररर लगत रग धमक मृदग तत शब्द नचकता ।
 अध मध उतम उतमअति सुमरण कीर्तन करण कस्याण गवरुता ॥
 कमडलु जल छान चलल जल निर्मल चरचत अग तिलकता ।
 अध कमल पर अमृत वपत छरत अकथ छक अकबर वरुता ॥
 ऊर्ध्व घरर घर अवर घणणण भणण भृग मध सिंधु चलकता ।
 त्रिधित्रिधि घाज अनैत गम उरमध घटघट प्रगट अघट ध्वनि गुनता ॥
 सत्र तनु धरर रोम रग रररर फरर पचसखि रग रुचकता ।
 फ्रिगदि फिरत पंग गूघर घणणण चणणण मधुरिसि देर धजकता ॥
 करमह ताल स्तरक जय झरझर घरघर झणणण जीझ झणकता ।
 त्रिहुटि अघट ध्वनि मुनिर तणणण तार तरल ततनार तनकता ॥
 शिषपद अचल अमल घट हलल धन भलल यषु चन्द झलकता ।
 नमस्कार पद परमधरित्र नित्य करत विहारी घारी तुमारि पलकता ॥१॥

॥ इत्यलम् ॥

श्रीसिंहथल धाम की जितनी पाठ-वाणी की पुस्तकें हैं उन सब का क्रम इस भांति है । श्रीरामानन्दजी महाराज, श्रीजैमलदासजी महाराज, श्रीहरिरामदासजी महाराज, श्रीनारायणदासजी महाराज, श्रीहरदेवदासजी महाराज, श्रीरामदासजी महाराज, श्रीदयालदासजी महाराज की वाणी तदनन्तर श्रीकबीर साहब, नामदेवजी, और रैदासजी की वाणी लिखी हुई हैं जिनका निम्न प्रति पाठ होता है । तथा श्रीखैद्यापा धाममें श्रीहरिरामदासजी महाराज, श्रीरामदासजी महाराज, श्रीदयालदासजी महाराज, श्रीपूरणदासजी महाराज, और श्रीअर्जुनदासजी महाराजकी वाणी का पाठ होता है बाकी पाठ पूर्वोक्त ही हैं । परन्तु अब कई महानुभावों के हृदय में शका होने लगी है कि श्रीनारायणदासजी महाराज थाभायत ये अतः श्रीसिंहथल पाटगादी पर विराजमान आचार्यों की वाणी से पहिले श्रीनारायणदासजी महाराज की वाणी का यह विपरीतक्रम किस कारण से हुवा । श्रीरामदासजी महाराजनें भक्तमाल में थाभायतों से पहले पाटगादी ही का क्रम वर्णन किया है । यथा:—श्रीहरिरामदासजी महाराज के वर्णन के बाद—

“रोम रोम सहजाँ लिब लागी । व्यारीदास मिल्या वडभागी” ॥

पाटगादी के अधिकारीजी का वर्णन कर फिर थाभायतों के लिये फरमाया—

“दास नारायण अमी धियाया । आदूराम रामगुण गाया” ॥

इन क्रम वाक्यों से यह निश्चय हुवा कि पहिले पाटगादी का और फिर थाभायतों का वर्णन है ।

आगे चलकर श्री दयालदासजी महाराज की वाणी देखते हैं तो पहिला ही क्रम दिखाई देता है । श्रीहरिरामदासजी महाराज के बाद ही

“व्यारीदास अपार बुधि राम सत जस उच्च्यो” ।

फिर हरदेवदासजी महाराज का वर्णन किया—

“हरदेव मेव सतगुरु कृपा भक्त अश परगट भए” ।

इस प्रकार क्रमशः पाटगादी का लेख देकर पश्चात् संवत् १८०६ में सबसे पहिले वीक्षा धारण करने की वजह से थाभायतों में बड़े जो श्रीनारायणदासजी महाराज हैं उनको स्थान दिया

“निर्मल दश निदोषता नारायणदास विचार बुधि” ।

ऐसा नारायणदासजी महाराज के वास्ते लिखकर फिर श्रीरामदासजी महाराज के लिये वर्णन करते हैं ।

“भक्त समय भूमंडमें बलि बलि वारंवार नित ।

समत अठार प्रसिद्ध वर्ष नवको भल आयक ।

शुल पक्ष वैशाख तिथी एकादशि लायक ॥

१ श्रीखैद्यापा थाभायतों के ठिकानों में भी इसी प्रकार पाठ है । केवल थाभायत महात्माओं की वाणी अधिक हैं जिसका कई ठिकानों में अनुक्रम से श्रीदयालदासजी महाराजकी वाणीका पाठ न करके अपने महात्माओं की वाणीकाही पाठ करलेते हैं ।

तादिन उदय उद्योत परस सतगुरु पद पूरा ।
 आप आप मिल आप राम भज उदय अंकुरा ॥
 सद्गुरु मिल सद्गुरु भया बाल बाल घर ध्यान पित ।
 भक्त समय भूमध्यमें बलि बलि वारंवार नित ॥ १ ॥'

यह बाल महाराज विरचित भक्तमालका लेख है। आगे चलकर श्रीपूरणदासजी महाराज की वाणी को देखते हैं तो आपने भी यही क्रम दर्शाया है, श्रीहरिरामदासजी महाराजका वर्णन कर फिर

'दास विहारी विमल वाणी जागु सिख हरदेव ।
 तागु मोतीराम धिन रखनाथ सतगुरु सेव ।
 तो निजमेवभी निजमेव पायो भक्ति को निजमेव ॥ १ ॥'

इस प्रकार पाटगाड़ी का वर्णन कर फिर श्रीरामदासजी महाराजके लिये वर्णन करते हैं
 'हरिराम सिख धिन रामदासजु और नहिं कोई आज ।
 निरख सब निरताय निर्णय करण जीवा आज ।
 तो महाराज जी महाराज मर्म अवतरे महाराज ॥ १ ॥'

इस प्रकार श्रीरामदासजी महाराज श्रीदयालदासजी महाराज और श्रीपूरणदासजी महाराज के फरमाने के अनुसार पाटगाड़ी के क्रमसे उन उन आचार्यों की वाणीका यथाक्रम पाठ बग़ावर होता चलाआता है सिर्फ भीनारायणदासजी महाराज की वाणीके पाठ में पूर्वीक भाषाका होती है परंतु यह शक्य तो भीदयालदासजी महाराजने अपने गुरुप्रकरणके प्रकरण ७ में पहिलेही निवारण करीहै ।

स १८१४ के चनकृष्णा ७ को श्रीहरिरामदासजी महाराजके शिष्योंने श्रीगुरुदेवजी श्रीहरिरामदासजी महाराजका जीवित महोत्सव (मेला) मनाया जिसमें श्रीश्री महाराजके सब शिष्य प्रदिग्धोंको डुङ्गमपत्रिका दीगई संकने कोसों से हजारों यात्री दर्शनार्थ आये जिसके बारे में श्रीरामदासजी महाराजने अपनी वाणी में फरमाया है—

मेयो कर गुरुदेवजी सब को लिए बुलाय ।
 दर्शन दे पावन किए मिले ब्रह्म में नाय' ॥ १ ॥

श्रीहरिरामदासजी महाराजकी परची का वर्णन—

'भाये जबै महोत्सव भाये जहँ जहँ पूगे समचार ।
 भाइ भाइ रामसनेही सब भाये स्वामी के द्वार ॥
 रामप्रताप कभी नहिं काई इहाँ धन ईशतथा भंडार ।
 भावे नहीं लोक पुर माहीं ऐसो थटियो बाट अपार ॥ १ ॥

दोहा ।

अटकिदि नवनिधिजु पुनि हजार हुइ सो आन ।
 श्रीरामी के भजनमध्य सब विधि मए समान ॥ १ ॥'

इस प्रकार यहाँ धूम धाम के साथ पांच दिन तक मेलेका उच्छ्वसमाज होता रहा, इसका आनंद तो वेही जानते हैं जिन्होंने उसका अनुभव किया।

“वह शोभाजु समाज सुरा, कहत न वनै खगेश।

घरणै शारद शेष पुनि, सो रस जान महेश ॥ १ ॥ (रामायण)

महादेव के समान इस आनंदको पाकर लोक कृतकृत्य हो आज्ञा मोंग मोंग सब चले गए। तत्पश्चात् श्रीरामदासजी महाराजभी श्रीजीमहाराज श्रीहरियानंदजी महाराजसे आज्ञा लेकर दिव्य अलौकिक गुरुमूर्तिका ध्यान करते हुए पीछे खड़ापे पधार गये।

जीवित महोत्सव से पंद्रहवें दिन अर्थात् सवत् १८३५ के चैत्र शुक्ल ७ शुक्रवारके दिन श्रीहरिरामदासजी महाराज ने परम धाम पधारनेका दृढ निश्चयकर विरहदुःख से दुःखित श्रीनारायणदासजी महाराज को जिसप्रकार अंतिम शिक्षा, आज्ञा और जो महत्त्व प्रदान किया उनका वर्णन श्रीदयालुदासजी महाराज गुरुप्रकरणमें श्रीकृष्ण उद्धव रूपसे इस तरह करते हैं:—

निजपुर हरिजाताँह प्रसन्न हुई उद्धव कछो।

शब्द ब्रह्म साथाँह कलेवर हित कीज्यो मती ॥ १ ॥ (गुरुप्रकरण)

अर्थात् परमधाम पधारते हुए कृष्णस्वरूप गुरुमहाराज श्रीहरियानंदजी महाराज उद्धवरूप नारायणदासजी महाराजको निज विछोहके कारण अत्यंत दुःखित देखकर आपने उपदेश किया कि शब्दब्रह्म तो अपने साथ है और कलेवर (शरीर) के लिए सोच करना मत। क्योंकि यह तो पाचभौतिक नाशवान् ही है।

महापुरुषवाक्य है—जो तू चेला शब्द का शब्द ब्रह्म कर जान।

जोतू चेला देहका देह रेह की खान ॥ १ ॥

इसलिये सोच तो तीन ही कालमें नहीं करना चाहिये। फिर आप श्रीमुससे फरमाते हैं—

“मैत्रेय रामदास सखा एक मेरो यहाँ।

धीरज ध्यान प्रकास हरदेवो होसी इसो ॥ १ ॥ (गुरुप्रकरण)

अर्थात् हे नारायणदासजी, यहा एक मेरा रामदासजी जो है वह साक्षात् मैत्रेय

१. “यूँ रामै जन मागी आज्ञा। लागत जान गुरांकी जाग्या ॥

खामी कछो रहो तुम याहीं। इन कारण ठहरे जब नाहीं ॥

कर परणंत बहुत परकार। ध्याये मुरधर देश मँझार ॥

(परची श्रीहरि०)

२. इस सोरठेमें सखापद जो है सो उद्धव के लिये ही है क्योंकि भगवान् के सखा उद्धवजी ही थे—

नृपि हैं बड़े धैरवान् हैं औ ज्ञान का प्रकाश करने वाले हैं । तत्रापि उनके लिये भी यही कहना है कि इस नाशवत शरीरके लिये सोच न करें, और हरदेवजी रामदासजी के तुल्य ही भयवान् और ज्ञान का प्रकाशक होमा परंतु अभी बालक है इसलिये इसको घोरज निरासा बघाते रहना, इस प्रकार फरमाकर जैसे परमधाम पधारते हुए भगवान्ने उदवजी के लिये महत्त्व प्रदान किया—

नाद्वोऽपि मन्मूतो बहुयैर्नादित प्रभु ।

अतो मद्रुण श्लोक ग्राहयसि च त्रिष्टनु ॥

(भीमझागवत स्कंध १ अध्याय ४ श्लोक ११)

अर्थात् उदव गुप्तते अशुभाय भी 'यून' नहीं है क्योंकि यह विषयोते विकृत शोभयुक्त न हुआ, इसलिये यह समर्थ उदव लोकों को मद्रिपयक ज्ञानदा उपदेश करता यही रहना चाहिये ।

दयालदासजी महाराजने गुहप्रकरणमें इसका रूपक इस प्रकार वर्णन किया कि उदवरूप नारायणदासजी महाराजको महत्त्वता दिराते हुए भीजीमहाराज फरमाते हैं—

'नारायण आशा आदि, एण संज्ञा रहने यहाँ ।

दासा सेव समाधि, भक्ति प्रेम सुमरण सदा' ॥ (गुहप्रकरण)

है नारायणदासजी, तुम्हें आदि आशा है अर्थात् सबसे पहलही पहल तुम शिष्य हुए हो और दासासन, सेवा, समाधि तथा प्रेमभक्ति और सुमरणमें तुम सदैव बड़े उत्तर हो । भविष्यति निहारीदासजीका तो देहागत हो गया है और हरदेवजी छोटे १० वर्षके बालक हैं और यह गुहप्रकरण शिष्या प्रणाली लोकोद्धारार्थ गुह रचनेकी अकृत है इसलिये तुमसे अंतिम यही आज्ञा है कि तुम्हारे शिष्य वैद्यक धार्मागत वर्त परंतु तुम सब संज्ञामें इसी धाममें निवास करना । इस आज्ञाको सुनकर भीनारायणदासजी महाराज विरहसमुद्रमें विकृत होने लगे तब तो भीजीमहाराजने फिर उनको दिक्कसादे आशीर्वादात्मक दो शब्द परभाए—

प्रमाण — कृष्णीनां प्रवरो मन्त्री कृष्णस्य दयित सखा ।

शिष्यो बृहस्पते साक्षादुद्वो बुधिससम ॥

भीमझागवत स्कंध १० अध्याय ४६ श्लो १

अदि बुधि सीतो सुषो पराधम आभार ।

कृष्णसखा जेहि निधि रहत उदव बुदि उदार ॥ १ ॥

एव- मन्मथाल द्वापरखंड कथा २०

इस प्रमाण से सखा शब्द उदव काही संशोधन है ।

सोरठा ।

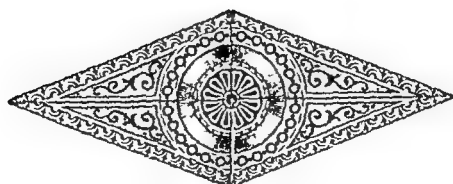
सब मेरा मुझ मोंग, रामशब्द राता जिके ।
दूरा कदे न धाय, शब्दरूप मिलसां उठे ॥ १ ॥

दोहा ।

आनंदमें रह ज्यो सदा, कहज्यो सुमरण सार ।
रामसनेही रामजन सोचो एह विचार ॥ १ ॥ (गुरुप्रकरण)

यह अंतिम उपदेश करमाकर अपनी वाक् वाणी बधकर मोक्ष पधैर गए । इस अंतिम गुरुवाक्योपदेशको धारणकर श्रीनारायणदासजी महाराजने जहाँतक आपका शरीर विद्यमान रहा तहाँतक श्रीसिंहधल निजधाम को छोडकर अन्यत्र कहींभी चरण न धरा । यहीं आप धाम पधारे; सिंहधल देवलोंने धीजीमहाराजके देवलके पास सामनेही आपपर छत्री बनीहुई है । सब थाभायतों का वर्षा मेला अपने अपने स्थान ठिकानोंमें होता है परंतु नारायणदासजी महाराजकी वर्षा तो सिंहधलमें ही श्रीपाट कोठारसे सालानी होती चली आती है ।

अब देखिये श्रीहरिरामदासजी महाराजने जिन नारायणदासजी महाराजको इतना महत्त्व दिया और श्रीदयालदासजी महाराजने गुरुप्रकरण में जिनके महत्त्वका पूरा पूरा वर्णन किया क्या ये वचन अप्रमाणिक समझे जा सकते हैं ? पाठकवृंद स्वयंही विचार करलें । वास्तवमें महात्माओंकी अनुभववाणीमें पहले-पीछेकी शंका करणी ही व्यर्थ है क्योंकि उन महापुरुषोंके अनुभवशब्द हृदयाधकारकी मिटानेके लिये साक्षात् सूर्यरूप हैं । उनमें पहिले पीछे क्या ।



अथ श्रीनारायणदासजी महाराज की अनुभव बाणी ।

साखी ।

सत्त गुरु अह सत्त जन, राम निरजन देव ।
 दास नारायण बीनवै, दीनै परभू सेव ॥ १ ॥
 नरिया मन का हु खडा, किसरू कहै सुनाय ।
 मन विषयारी निष दशा, हमदम दोह्यो जाय ॥ २ ॥
 मन माया के भग फिरै, अतर करै निकार ।
 मन करि मनरो मारिहो, हरि से करू पुनार ॥ ३ ॥
 सहृद फी आधा हुई, मुखसै सुमन्या राम ।
 नरिया निश्चो पाइयो, तजिया कुल पैकाम ॥ ४ ॥
 तीन खोर का राजनी, राम निरजन राय ।
 सतगुरु के परताप तै, नरिया तन में ध्याय ॥ ५ ॥
 नरिया गुरु आली बनी, चेतन चरण लगाय ।
 भरम विषे यह जायता, अपना जान समाय ॥ ६ ॥
 नरिया गुरु पेसी करी, नैसी करै न कोय ।
 जग सागर सग जानता, राखलियो है मोय ॥ ७ ॥
 नरिया रामहिं सुमरियै, टालै जमकी घात ।
 आरुख ऊध न कीजिये, अवसर धीतो जात ॥ ८ ॥
 नरिया रसना राम कह, कठ कमल सुमराय ।
 प्रेम पियाला भर पिया, पीरत पाप नशाय ॥ ९ ॥
 हिरदै धुन लागी रहै, सुमरै माहो माहिं ।
 तन सारो चेतन भयो, नरिया सुख उपजाहिं ॥ १० ॥
 नरिया नामी आवता, हुआ सास उसास ।
 मन तन सगही नाचिया, सुमरन रग रग पास ॥ ११ ॥
 रसना नामी पीचमै, एक अखड़ी तार ।
 नरिया रोम हि रोम में, सार शब्द शृणकार ॥ १२ ॥
 नरिया भाग्य उदय हुआ, घनि है विधी अपार ।
 रोम रोम में रम रघो, एक शब्द ररकार ॥ १३ ॥

अथ चेतावनी प्रारम्भ ।

चेतावनि सुन चेतरे, मूरख मय गँवार ।

राम निरजन ध्यायलै, दैगो सुकस अपार ॥ १ ॥

छन्द जाति ऊधोर ।

फिरियो जीव जन्मां माहिं । कित्ये चैन पायो नाहिं ।
 अब तो सिनख करि मोकूंह । साँई सुमरसूं तोकूंह ॥ १ ॥
 नायक जन्म देवो मोहि । हिरदै वीसरूं नहिं तोहि ।
 करसूं संत की सेवाक । भज सूं राम कूं देवाक ॥ २ ॥
 दीया गर्भ ही में वास । जठराअग्नि ही के पास ।
 कीया देह का आकार । सारा अंग ही सुधधार ॥ ३ ॥
 उद्गर माहिं कीवी सार । ऊंधे मुख अस्मी धार ।
 राख्यो मास ही नच जाण । उद्गर बीच ओखो प्राण ॥ ४ ॥
 माहीं करत है पुकार । बाहिर लाव हो कर्तार ।
 मेरे तोहि को आधार । करसूं याद प्रियतम यार ॥ ५ ॥
 श्वासोश्वास ही संभार । प्यारा राखसूं उरधार ।
 अब तो जन्मियो है बाल । दया करी है दय्याल ॥ ६ ॥
 दाई कहै सुधन्यो काम । बाहिर काढियो है जाम ।
 माता हर्ष करि परसैह । बालो कान्ह सो दरसैह ॥ ७ ॥
 पिता कहै हूओ न्याल । बेटो कमासी धनमाल ।
 भाई कहै अपनो वीर । बल तो बंधियो शरीर ॥ ८ ॥
 बहिनड़ बाल लेवै पास । राखै मनां मोटी आस ।
 कडुवै हुओ मंगलचार । गावै गीत बैठी नार ॥ ९ ॥
 माता पिता सेती प्यार । सबसैं करत है हितकार ।
 बालो रमै खेलै सोय । माता पिता बिकसै जोय ॥ १० ॥
 मही दूध पीवै आय । लाडू चूरमोही खाय ।
 अब तो साथियां में जात । खेलै बहुत ही दिनरात ॥ ११ ॥
 कूदै फैल ही करैक । किनता बिडूही मरैक ।
 राखै पिताही समझाय । मानै नहीं जोरै जाय ॥ १२ ॥
 ख्याली खलकसूं खुशियाल । अब तो वीसन्यो गोपाल ।
 खोंगी पाघ ही झुकाय । चंगा चौलणा लग्गाय ॥ १३ ॥
 आछो करत है शृंगार । जोवै रूप ही दीदार ।
 हूवो मरद ही मोट्यार । माहीं ऊपज्या विकार ॥ १४ ॥
 करमी करै जारी जाय । कसरौ काढ़सी जमराय ।
 राखै जोश ही मनमाहिं । मोसा और कोई नाहिं ॥ १५ ॥
 मुखसे बुरो ही भाखैह । सब सूं बैर ही राखैह ।
 हरि से हुओ गुनहै गार । जमरो मार करसी खवार ॥ १६ ॥

गाफिल समझ रे अज्ञाण । मायै राख पति कू जाण ।
 फीयो नीरसे पैदाइ । ताकू भल्लरे गन्दाक ॥ १७ ॥
 दोलत दिखी हे तोईक । गोविंद गाय रे सोईक ।
 अउ तो ध्याहि लायो नार । पासै बाधियो घट्यार ॥ १८ ॥
 माता पिता से करि जुड । माया बाँटि ली वेसुद्ध ।
 गाडै व्याज ही देवैज । दुणा दाम ही लेवैज ॥ १९ ॥
 पिय स्रु प्रेम ही भागोर । लोभ रु मोह स्रु लागोर ।
 नेहा नारि सें दिनरात । बूढो फामना मं जात ॥ २० ॥
 यदो घिरत रोटी पाय । सोधै नौद ही अघ्याय ।
 बाँयल पाय चगा माल । साइ बिना भूडो हाल ॥ २१ ॥
 हत्या करै मारै जीव । धदला मागसी रे पीव ।
 मासहु पाय पीवै मह । हैगो मरव ही गरह ॥ २२ ॥
 पीवै पोस्त ही को लाय । पोसत पिंड ही को पाय ।
 पीवै तमाहु अरु भग । जावै नीच जूणां सग ॥ २३ ॥
 पाचू पसरिया अण्यार । फीया कम ही हुशियार ।
 मनयो निपै स्रु भरियोह । स्वादो लागरे भरियोह ॥ २४ ॥
 यदा छौड मैला राज । माहे सुमर ले महाराज ।
 निश्च नाम ले निराश । नहिं तो हाय सस्यानाश ॥ २५ ॥
 दया दीनता कर भाय । माया राम लेख लाय ।
 मन को देत हे निचार । समझे नाहिं रे गव्यार ॥ २६ ॥
 फीयो सपदा बिस्तार । मेरै पूत पोता नार ।
 मेरै गाय गोधा अरु । मेरै ऊठ घोडा धन ॥ २७ ॥
 आघो अह में डोलैह । मुग ता राम नहिं योलैह ।
 कहारे भरमियो भइयाह । हरि से दूर ही रहियाह ॥ २८ ॥
 झुठे वधियो रे जाल । यदा पायसी रे काल ।
 हिरदै माहिं हरि का हेत । मुहडे पड़ेगी बहु रेत ॥ २९ ॥
 फीया श्याम से वचन । जासू झूठ पडियो मज ।
 रक्षा करी दोहरी माहिं । तासैं प्रीति फीवी नाहिं ॥ ३० ॥
 फीया गुण ही अण्यार । ऐसा मूलम्यो करतार ।
 जान्यो नाहिं सिजन द्वार । मायै पड़ेगी बहु मार ॥ ३१ ॥
 अउ तो जरा जोजर पाय । बूढो अग ही धुजाय ।
 कुडियो दागही समाय । आखे घुघ लागी जाय ॥ ३२ ॥
 बूढा काम होत नाहिं । आघो अकल नाहिं माहिं ।
 नारि कहै कैसे काम । नाघो छानवी में चाम ॥ ३३ ॥

बेटा कहै घरमें साल । पापी पड़यो है बेहाल ।
 शूको दूक देवै लाय । गल में ऊलड़ै नहिं भाय ॥ ३४ ॥
 तन से काम करता सच्च । आदर भाव करता जच्च ।
 अब तन थाकियो म्हारोक । सब कूं लागियो खारोक ॥ ३५ ॥
 यो तो स्वारथी संसार । तेरो नाहिं रे परिवार ।
 बूढो दुखी है मनमाहिं । यामें कोई मेरो नाहिं ॥ ३६ ॥
 घर में घणो रे कीतोक । कुछ इक छोह रे पूतोक ।
 पूतां कियो है विचार । पिता करांगा कुछ लार ॥ ३७ ॥
 दुनिया लोक बूझैआय । बूढ़ा व्यथा तेरै काय ।
 खोटा कर्म लागा आय । पीड़ा पिंड सारै दाय ॥ ३८ ॥
 बूढ़ा राम कहै भाईह । दुष्टी हायही लाईह ।
 अब तो मौतही आईह । संगी कोई नहीं भाईह ॥ ३९ ॥
 नर तूं वीसन्थो बेकाम । संगी नाहिं कीयो राम ।
 चेत्यो नाहिं रे गंवार । आछो जन्म चाल्यो हार ॥ ४० ॥
 नर तूं काहे कूं आयोह । हरि को नाम नहिं पायोह ।
 कंठ कूं काल रोक्यो आय । सब ही द्वार बूझा लाय ॥ ४१ ॥
 मारां दिवी मांहो माहिं । दोहरो पिंड छूटै नाहिं ।
 बहुतो कष्ट ही इवोह । माया मोह करि मूवोह ॥ ४२ ॥
 लोकां बाल कीयो छारि । देखा देखि रोवै नारि ।
 जमरो मारि लेग्यो जीव । आडो नाहिं आयो पीव ॥ ४३ ॥

साखी ।

पति सूं वे मुख होय करि, मिल्यो मायाके साथ ।
 अज्ञानी नर अहं मे, पड़यो पराये हाथ ॥ २ ॥

छंद जाति ऊधोर ।

अब तो लेचल्या जमदूत । कीयो मार करि घर पूत ।
 लेग्या धर्मके आगैह । लेखा सर्व ही मांगैह ॥ ४४ ॥
 झूठा बोल कह नहिं सोय । सुकृत नाहिं कीयो कोय ।
 मैला काम ही कीयाक । हरि का नाम नहिं लीयाक ॥ ४५ ॥
 जापर कोपिया जमराय । मारों दिवी जाझी लाय ।
 लातां मारियो पिच्छाड़ । गल में बाल घीस्यो नाड़ ॥ ४६ ॥
 ऊंधो ढेर दीवी मार । जम्मां जोर कूट्यो जार ।
 हिरदै नाहिं हरिका लेस । नाँव्यो मुगदरां सूं फेस ॥ ४७ ॥

आगै अग्नि का दब्बार । तपती भाय भाता सार ।
 ऊपर नाहिकै केन्योह । वदो चाल करि नेन्योह ॥ ४८ ॥
 नाख्यो नरक ऊँडै ताण । कीडा तोड़ चूटै प्राण ।
 कुरै एहँ मायै मार । वदा तोहि कू घिरवार ॥ ४९ ॥
 सापा रिच्छुवा का कुड । तामें डार दीयो रुड ।
 रिच्छू साँप पिंजरखाहि । दूता मुगदरां की लाहि ॥ ५० ॥
 पेसी ग्राम दीवी ताहि । प्राणी पर्योही विटलाहि ।
 एहा नरक ही भुगतहि । भुगतै बहुत जुगा माहि ॥ ५१ ॥
 जग में स्वाद ही लीयाह । साहिय याद गहि कीयाह ।
 थो तन फेर पायै काँय । पड़ियो अनत ऊँडै माँय ॥ ५२ ॥
 वदा राम सुमन्यो नाहि । दु रा पाग कैसे पाहि ।
 मनमें राखता अभिमान । जोधा गया मैली खान ॥ ५३ ॥
 करता गये ही गुम्मान । गया नरक ही निदान ।
 ऊँचा महल ही अव्यास । करता नारि नर निहास ॥ ५४ ॥
 खाता मेघा मीठा भात । प्याला पीरता निरुगत ।
 निगुण नाम राता नाहि । गया गदकी कै माहि ॥ ५५ ॥
 माही केई जुगा ताहि । पीछे चोरसी कू जाहि ।
 जूना अनेक ही भुगताय । जामें ऊपजे खपजाय ॥ ५६ ॥
 बहुतो दु ल पायै जीव । सुमन्यो माहिरे त पीव ।
 सातैं कष्ट तन पायोक् । जुग जुग माहि भटकायोक् ॥ ५७ ॥

सारसी ।

सतगुरु शरणै ऊन्या, नरिये सुमन्या राम ।
 नाहि सो भरम्या जायता, दुख पड़ता बे काम ॥ ३ ॥

छंद जाति ऊधोर ।

शरणै सत के आयाह । भावह भक्ति ही भायाह ।
 सेवा चाल की लगाह । दुविधा दोष ही भागाह ॥ ५८ ॥
 रसना नाम ही लीयाह । असृत फट ही पीयाह ।
 हिरदै ध्यान ही धरियाह । तन मन सहज धरहरियाह ॥ ५९ ॥
 नामी नाम ही निरधार । सुमरण सहज ही उधार ।
 सगी साँगही धान्याह । झुठा पास ही डान्याह ॥ ६० ॥
 पति स्रुप्रेम ही लायाह । हरि गुण हेत स्रु गायह ॥
 सदज्जो ज्ञान ही आयाह । मनवै शान्ति ही पायाह ॥ ६१ ॥

उलटा पछिम कूं ध्यायाह । ऊंचा मेरु करि थायाह ।
 चाजा गगन ही वायाह । निरंजन शून्य ही पायाह ॥ ६२ ॥
 सुन में शब्द ही निरकार । लागी सुरत ही इकतार ।
 गुन में सुख ही भइयाह । दूजा दुःख ही गइयाह ॥ ६३ ॥
 पूरण ब्रह्म ही कूं पाय । सहजा रहे सुख सम्माय ।
 मिटिगे जनम अरु मरणाक । अब तन फेर नहीं धरणाक ॥ ६४ ॥
 मिलिया नीर में हुय नीर । हंसा चुगत है हरि हीर ।
 पाया राम ही महाराज । सरिया सहज जनका काज ॥ ६५ ॥

साखी ।

सतगुरु के परताप तें, नरियै नाम पियाह ।
 प्यासा प्राण पिलाइया, पीवत ही जीयाह ॥ ४ ॥
 और सकल कूं छाँडि करि, परस्या आतमराम ।
 नरिया साँसा को नहीं, जाय मिल्या निजधाम ॥ ५ ॥

इति चेतावनी ।

अथ प्राण-परचा प्रारंभः ।

साखी ।

जन्म जन्म जिव भरमियो, माया मोह लगाय ।
 भवसागर में डूवताँ, सहुरु लियो रखाय ॥ १ ॥

चौपाई ।

सहुरु न्यारा है निर्वाणी । दे दे ज्ञान तारिया प्राणी ॥
 सहुरु पूरण ब्रह्म पियारा । दर्शन पायाँ विले विकारा ॥ १ ॥
 सहुरु एकमेक है साँई । भूल पड़्या जग जाणै नाँई ॥
 सहुरु सेव करौ मैं थौरा । मैं हौ तन मन जीव तुम्हारा ॥ २ ॥
 सहुरु मोकों शरण उवारो । निशिदिन मेरे तोहि अधारो ॥
 सहुरु मोकों डूवत तारो । भव सागर तें पार उतारो ॥ ३ ॥
 सहुरु पेसी दया उपावो । दुख दोऊक कों दूर गमावो ॥
 सहुरु काम क्रोध कों पालो । मैं तो कपटी विषय विहालो ॥ ४ ॥
 सहुरु आशा तृष्णा जालो । खादी मन माया मोह ढालो ॥
 सहुरु मैं तो अन्ध अज्ञानी । काटो कर्म करौ निज ज्ञानी ॥ ५ ॥
 सहुरु मो मन दौड़ मिटावो । लालच लोभ रु मोह हटावो ॥
 सहुरु देवो शील सन्तोषा । मारो मन्न करो निर्दोषा ॥ ६ ॥

सहृद दयो ज्ञान विचारा । अवगुण मेदि करौ निस्तारा ॥
जन हरिरामजु भर्म गमाया । सशय शोभ द कर्म नसाया ॥ ७ ॥

साखी ।

सहृदसिरजन हार है, सब का समय साम ।
अवगुण मेढवा चालजी, दिया मोदि निज नाम ॥ २ ॥

चौपाई ।

राम राम रसना मे लीया । प्रेम प्रकाश कठमें कीया ॥
मनवा माहि नाम से लाया । हिरदै सुमरण हेत लगाया ॥ १ ॥
नाभी भजन किया अधिकारा । पिट सारेमें रमे पियारा ॥
रोम रोम में अध उचारा । अग अग में है विस्तारा ॥ २ ॥
सहजाँ सुरति शब्द उलटाया । छाख्या देश निदशा ध्याया ॥
घसीनाल चलै हर धारा । मेरुद में हुआ बरारा ॥ ३ ॥
बपा सहज घणी चुहु खडे । उलटा नीर चढ्या ब्रह्मदे ॥
सुनभागर के माहि समाया । अनहद गाज गगन गणनाया ॥ ४ ॥
पहुँता सत अमीरस पीया । तृष्णा घटी जिरे नर जीया ॥
परब्रह्म से प्राण पिलाया । निशिदिन चरणे ध्यान लगाया ॥ ५ ॥
जित्ये काल कर्म नहिं काया । जित्ये दिपय बिन्न नहिं भाया ॥
राम निरजन जग से न्यारा । दिया नैरकों सुखस अपारा ॥ ६ ॥

साखी ।

मैं हूँ प्राणी आपना, कहा न कीजे दूर ।
प्रेम भवि नैरकों दियो, राखो नित्य हजूर ॥ ३ ॥

चौपाई ।

शरणै जाइ दीनता दाखे । सहृद मोकों चरणों राखे ॥
सो गुरु दीया ज्ञान विचारा । भर्म कर्म तैं कीया न्यारा ॥ १ ॥
सहृद मेरे किरपा कीनी । भाव भजन की आशा नीनी ॥
सहृद सतका शब्द सुणाया । मुखते रामनाम सुमराया ॥ २ ॥
रामनामसा नाम न कोई । भावे मोड सखल फिर जोई ॥
राम राम कहि राम मिलावै । लख चौगत्ती कबहु न जावै ॥ ३ ॥
सहृद ऐसा तत्त्व बताया । निश्चय पनो राम कहाया ॥
सहृद ऊपर प्राण अँवारी । तन मन शीश चरण मँ डारी ॥ ४ ॥
रसना रदत जु नेह लगाया । कठ कमल में सुमरण आया ॥
गद्गद होइ प्रेमरस पाया । पी पी प्राणी कर्म नसाया ॥ ५ ॥
मन इन्तार नाम निज भाया । हिरदै ध्यान घणी का आया ॥
दया दीनता ज्ञान विचारी । दिलनी दुमति दूर निचारी ॥ ६ ॥

चेतन चलकरि नाभि सिधाया । श्वास उश्वासे सुमरण लाया ॥
 तन मन सब ही सहज नचाया । भौंति भौंतिका नृत्य कराया ॥ ७ ॥
 रंग रंग भीतर सहज पसारा । रोम रोम में है ररकारा ॥
 नाड़ि नाड़ि में जीव जगाया । सारशब्द के संग लगाया ॥ ८ ॥
 जीव पलटिया ब्रह्म जु होई । और विकार लिपे नहीं कोई ॥
 विरहनि झूरी अती अपारा । अब तो पाया पीतम प्यारा ॥ ९ ॥
 दया करी मोहि दुःख मिटाया । चरणकमल के धीच रखाया ॥
 रंकार सहजों लिच लाया । प्राणी बहुत परम सुख पाया ॥ १० ॥
 पीया पेमी कृपा जु कीनी । शरणै सदा आपमें लीनी ॥
 सहाय करी अरु सुलटा थाया । पातोत्ताने बंध लगाया ॥ ११ ॥
 गिरखर चढ़िया पूरव ध्याना । ठाम ठाम का पाट खुलाना ॥
 खूला ध्यान धरणि कों आया । पातालां में पन्थ जु पाया ॥ १२ ॥
 उलटा शब्द पछिम कों ध्याया । मन पवनाका बंध लगाया ॥
 बंकनाल में सहजों बहिया । मेरु मंझि मेवासा दहिया ॥ १३ ॥
 अधः ऊर्ध्व विच राह चलाया । आकाशों में अनहद वाया ॥
 बंद रु सूर गगन घर लाया । नाद बिन्दु के माहिं समाया ॥ १४ ॥
 गहरी गाज गगन गणनाया । वर्षे अमृत प्राण पिलाया ॥
 पी पी सन्त शुन्य में आया । चित शान्ती घर सहज मिलया ॥ १५ ॥
 मन पवना स्थिर दशम द्वारा । पांच पचीसों बंध्या सारा ॥
 इडा पिंगला सुपमण मेला । सुरति शब्द जहँ हुआ मेला ॥ १६ ॥
 शब्द निरंजन काज सुधारा । भवसागर ते पार उतारा ॥
 शब्द नकेवल ऊपर वारी । अपना जान रु लिया उवारी ॥ १७ ॥
 उत्तर दक्षिण ध्यान मिलाना । पूर्व पश्चिम माहिं समाना ॥
 परम शून्य है सरजनहारा । सहजों मिलिया प्राण हमारा ॥ १८ ॥
 सुखसागर है निर्गुण राया । दर्शन किया परम सुख पाया ॥
 जिवेणी में पीव निवासा । मिली पियारी लील विलासा ॥ १९ ॥
 पत्नी ऐसी प्रीति लगाई । झिलमिल ज्योती से लिपटाई ॥
 भव कों बीसर चरणों आई । सहजों रहे अखंड लिबलाई ॥ २० ॥
 संशय शोक सकलही भेटा । निर्भय निराकार कों भेटा ॥
 पूर्ण भया परम सुख पाया । तातें अंतर ध्यान लगाया ॥ २१ ॥

साखी ।

जीव शीवमें मिल रहे, दूर कहाँ नहीं जाय ।
 नरियै नाम जु ध्याइया, सहजों रहे समाय ॥ ४ ॥

चौपाई ।

तहाँ न त्रिगुण मोह न माया । पाच तत्व नहिं कर्म न काया ॥
 धरती वायु न आम न तारा । राति दिवस नहिं अध न कारा ॥ १ ॥
 चंद सूर नहिं इद न पानी । घाट न वाट न दुख न प्रानी ॥
 जीव न जिंद न खानि न बानी । काम न क्रोध न लोभ न जानी ॥ २ ॥
 तीन लोक नहिं ब्रह्मडा । सात द्वीप नहिं नव खडा ॥
 सात समुद्र नहिं नगी नदाया । भार अठारह बनी न राया ॥ ३ ॥
 चार चक्र नहिं भटक न मरणा । जस न सत्त न मेप न घरणा ॥
 काजी कुरान न वेद न ब्रह्मा । राव न रक् न रूप न रभा ॥ ४ ॥
 योग यज्ञ जप तप नहिं यरता । सेज न पूज न मूर्ति न धरता ॥
 देव न दानव जोध न जुझा । जरा न जाल काल नहिं फधा ॥ ५ ॥

सारी ।

एकाएकी प्रह है, न्यारा सज घट माहिं ।
 सत सयाना मिल रहा, दुनिया को गम नहिं ॥ ५ ॥
 बाहिर भीतर एक है, घट घट में निरकार ।
 जिन पाया जिन सुमरि के, आप उपायनहार ॥ ६ ॥
 परचा यहूता प्रानमें, हुआ लेवतों नाम ।
 कहनी को आवे नहीं, नरियो मिल्यो मुकाम ॥ ७ ॥
 इति प्राणपरचा ।

पद १

गुह दशन दो महाराजा ।
 अथ प्राणी पर दया करीजै सार सकलही काजा ॥ टेक ॥
 सगुरु बिलइषाँ दु ख अपारा निशि दिन रहत उदासा ।
 हृपा करो जम बेहला कल्पत पल पल प्यासा ॥ १ ॥
 या जग माहीं सबै निदाणा किसका लेऊ अधारा ।
 हरिरामा निजधाम पहुँता प्राणी करत पुकारा ॥ २ ॥
 अथगुण गारो जीव हमारो शरणे करो सदाई ।
 झूरे तन मन माहिं त्रिगुण सतगुरु चरण लगाई ॥ ३ ॥
 दरशन पायाँ पावन होई भय साँसा सब जाई ।
 कहै नारायण गुरु सुखसागर सुखमें लौ जी मिलाई ॥ ४ ॥

पद २

मोहिं राखो राम हजूर ।
 जम जम के अथगुण मेरो जान न दीजै दूर ॥ टेक ॥

दया करी गुरुदेव हमारे रसना राम रटाया ।
 कंठ हिरदा विच सुमरण साइया प्रेम पियाला पाया ॥ १ ॥
 नाभिकमल निज नाम उचान्या रग रग में ररंकारा ।
 सारशब्द का सकल पसारा तन सारे ततकारा ॥ २ ॥
 करता ऐसी कृपा कीनी उलटा ध्यान लगाया ।
 दास नारायण निरभै नैड़ा चरणां चाकर लाया ॥ ३ ॥

॥ इत्यपूर्णम् ॥

अथ श्रीहरिदेवदासजी महाराजकृत ब्रह्मस्तुतिः ।

छप्पय ।

नमो आदि अविगत्त अगम हो आप अरूपी ।
 अवरण सदा अथाह लहै कुण थाह स्वरूपी ॥
 ब्रह्म सार निरकार परापर नूर पियारो ।
 वसो सर्व जहँ वास नाथ निज आप नियारो ॥
 अणदेह अखंड अजन्म अलख आप आप सम आचिण ।
 हरिदेव स्वामि सस्तूति निज वायक तन मन वाचिण ॥ १ ॥
 ब्रह्म नूर भरपूर सर्व निज इष्ट सधारा ।
 दृष्टि सार अनदृष्टि सृष्टि सब आप अधारा ॥
 जीवन जाति सजीव पीव सबही का पेखो ।
 परै सकल अणपार बीच तहाँ सार विसेखो ॥
 निज उहाँ नाथ अविगत अरस परम परा पुरुषोत्तमो ।
 हरिदेव स्वामि निज राम हो नमो नमो निर्गुण नमो ॥ २ ॥
 नमो नमो निरकार सकल सिर सार सहाई ।
 कला अकल अणक्रीत महा निज नीति कहाई ॥
 देखण हार दयालु सर्व गत पेख सयाना ।
 पोषण भरण विचार करै हरि सहज पयाना ॥
 परकार अघट घट घट प्रगट सुघट होय अणघट सता ।
 हरिदेव ब्रह्म हित उर प्रणम्य धर्म सबै निज हरि मता ॥ ३ ॥
 सुख सागर हरि सोइ अगम आगर अति आनंद ।
 सुमन्याँ देह संतोष प्रीति परस्याँ परमानंद ॥
 अह निशि ताहि आधार संत उर धार सदाई ।
 सुख आपण दुख हरण शरण शीतल हरि थाई ॥

मेढे जु मरण भय जा जनम सोइ भेदे साहिव सचा ।
 हरिदेव स्वामि हरि है सही कचहू नद फाई कचा ॥ ४ ॥
 अलख आप अण रूप पलख मे विश्व पसारे ।
 धारण आप कल्याण देन कारज उन सारे ॥
 समग्र्य नाम सचाह थाट ऐसो जग थाए ।
 घट भट एह अकार करे हरि सहज किनाए ॥
 आत्म आप आपै सहित रूप शक्ति एही रचे ।
 हरिदेव ताहि प्रणमै मरस साहिव हो साहिव सबे ॥ ५ ॥
 सखे रूप सखेह अग अन अग अनेका ।
 सग रहत नहिं सग रग अनरग है एका ॥
 अश आप अवनार धार जातम अनपारा ।
 गुणा रहित सो रूप रहे निज रूप नियारा ॥
 केताहि नूर निधि निधि कला करै नाथ सहजा मही ।
 हरिदेव दास यवै हृन्प सोइ स्वामि समग्र्य सही ॥ ६ ॥
 सहाय करण सर जान एक भगवान अनेका ।
 विश्व बहुत विस्तार आप सबही में एका ॥
 पोषे सहज प्रकार परम तोपे सोइ व्यारे ।
 आदि मध्य अंत घर आप हरि होय अधारे ॥
 निज पीर शीर जीवन सरय मेढे जन जामण मरण ।
 हरिदेव क्षाम आनंद कृष्ण नमो नाथ अक्षरण क्षरण ॥ ७ ॥
 हरि गहरा गभीर धीर हरि समा न होई ।
 सीर सुधा निज सार पीर एग जाणै सोई ॥
 हरि दीरघ दीदार पार हरि नको पुणीजे ।
 हरि बैंगट हथीम महा निज मूठ सुणीचे ॥
 हरि समा आप हरि है सही पाप जीव करि है पर ।
 हरिदेव बाप सब का अगम ताप नुरत सेइतरा ॥ ८ ॥
 दाता दीन दयालु जीव निरपातु सदाई ।
 अध मुँह उरमात होय हरि जहाँ सदाई ॥
 भए नित सौन सुरेश वणै हरि सहज बडाई ।
 दुई जान नर देह प्रीति पाली मोइ पाले ॥
 जीविया पुगत मूया मुगत हरि निन कुण ऐसी करे ।
 हरिदेव स्वामि सस्तुति निन तन धायक मन उच्चरे ॥ ९ ॥
 सखे कहा क्यहि सयानो ।
 अनपार पयानो ॥

हरि सायर गुण तोय कहा सुगुरा नर सारै ।
 उक्ती आपै प्यास वाच गुण पियै सुवारै ॥
 निज बाज ब्रह्म उर विच अवश्य कर उराह अवगाहियो ।
 हरिदेव धारि तन मन वचन चरण शरण हम चाहियो ॥ १० ॥
 इति ।

अथ गुरुस्तुतिः ।

गुरु दाता निज ज्ञान ब्रह्म सत्ता विधि वाचे ।
 अनुभव दत्त अपार लेह सिख जाचक जाचे ॥
 भक्ति सार सोइ वाच वयण कर देह विचारा ।
 गुरु यह गम गंभीर कुरंद अघ भेटण हारा ॥
 आत्म कला पेसी अगम सुगम करै संपति सची ।
 हरिदेव शिखाँ आनंद सरस वन्दन गुरु याविधि वची ॥ १ ॥
 गुरु विन भक्ति न भेव गुराँ विन जुक्ति अजुक्ती ।
 गुरु विन सिख ना सुखी परम गुरु विना न मुक्ती ॥
 गुरु विन सुधी न सार पार गुरु विना न पहुँचै ।
 गुरु विन किरिया कूर नाहिँ गुरु विना सुनिहचै ॥
 गुरु विना काय न है गमा शून्य समा गुरु विन सिको ।
 हरिदेव कहै गुरु विन तिके जग जल बूहा नर जिको ॥ २ ॥
 गुरु विन सर्व गँवार पुनः पंडित है प्यारे ।
 गुरु विन कथनी कूर विना गुरु कहा विचारे ॥
 गुरु विन अर्चा किसी विना गुरु चर्चा अंधी ।
 गुरु विन नहिँ व्यवहार सँज गुरु विना न संधी ॥
 गुरु विना जिको गुण है अगुण सर्व सगुण गुरु साहिबी ।
 हरिदेव दास गुरु के शरण चरण कमल चित चाहिबी ॥ ३ ॥
 गुरु है दीन दयाल करै सिखपाल सदाई ।
 अखै भक्ति परसंग सदा सेवक सुखदाई ॥
 गुरु पावन गुरु परम जीव सिख जीवन जानो ।
 गुरु का गुण गंभीर दिपै रस राम दिवानो ॥
 गुरु समा आप गुरु है गहर मिटै सर्व जग वासना ।
 महाराज गुराँ प्रणमूँ तुझै यह हरिदेव उपासना ॥ ४ ॥
 दर्पण भयाँ मलीन दृष्टि मुख नूर न दरशै ।
 हीर जवै अणघाट शोभ सागी नहिँ परशै ॥
 पंडित पूत अपाठ असत है जगमें आदर ।
 हय गति होय हठील मोल के समै वेआदर ॥

मेटे जु मरण भय जा जनम सोइ मेटे साहिब सचा ।
 हरिदेव स्वामि हरि है सही कजह नह काई कचा ॥ ४ ॥
 अलख आप अण रूप पलख में त्रिध्व पसारे ।
 कारण आप कल्याण देव कारण उन सारे ॥
 समरथ नाम सचाह थाट ऐसो जग थाप ।
 घट मठ यह अकार करे हरि सहज किनाप ॥
 आत्म आप आपे सहित रूप शक्ति एही रचे ।
 हरिदेव ताहि प्रणमै सरस साहिब हो साहिब सचे ॥ ५ ॥
 सर्व रूप सर्वेश अग अन अग अनेका ।
 सग रहत नहिं सग रग अनरग है एका ॥
 अश आप अघतार धार आत्म अनपार ।
 गुणा रहित सो रूप रहे निज रूप नियारा ॥
 केताहि नूर निधि निधि कथा करै नाथ सहजा मही ।
 हरिदेव दास बदै हरप सोइ स्वामि समरथ सही ॥ ६ ॥
 सहाय करण सब जान एक भगवान अनेका ।
 विश्व बहत त्रिलार आप सबही में एका ॥
 पावे सहज प्रकार परम तोपे सोइ प्यारे ।
 आदि मध्य अंत एक थाप हरि होय अधारे ॥
 निज पीव शीव जीवन सरथ मेटे जन जामण मरण ।
 हरिदेव दास आनंद धरण नमो नाथ अशरण शरण ॥ ७ ॥
 हरि गहरा गभीर धीर हरि समा न होई ।
 सीर सुधा निज सार पीर पर जाने सोइ ॥
 हरि दीरघ दीदार पार हरि नरो पुणीजे ।
 हरि पैराट हफीम महा निज मूल सुणीजे ॥
 हरि समा आप हरि है सही पाप जीव करि है परा ।
 हरिदेव थाप सग का अगम ताप तुरत भेटतरा ॥ ८ ॥
 दाता दीन दयातु जीव किरपातु सदाई ।
 अध मुँह उरमात होय हरि जहाँ सदाई ॥
 नप निख सौंज सुरेश वणे हरि सहज बडालै ।
 धई जान नर देह श्रीति पाली सोइ पालै ॥
 जीविया शुगत मूवा मुगत हरि तिन कुण पेसी करै ।
 हरिदेव स्वामि सस्तुति निज तन वायक मन उचरै ॥ ९ ॥
 हरि बयाह गुण होय सर्व कहा कथहि सयानो ।
 केइ अरवा जन कहै परम अनपार पयानो ॥

सुनिये जय नारण चक्र सँभारण कपे घधारण करमुकतम् ।

ब्रह्म हो अविनार्शी० ॥ ७ ॥

भवपुज के अंग कुलधर्म भंगा गणिकासंगा विपरंगा ।

वज्रमेल धनंगा दोष उपंगा कर्म कुसंगा नितसंगा ॥

हो नारण चंगा सुनहिन बंगा जय जम जंगा छूटेतम् ।

ब्रह्म हो अविनार्शी० ॥ ८ ॥

अमरीष भुवाले ऋषि मुग्धपाले जेहि करआले दुग्धटाले ।

चहो यह चाले उलटी भाले दुग्ध असराले तपघाले ॥

दुर्घासा पाले सोह भवनाले राजा टाले दुग्धदेतम् ।

ब्रह्म हो अविनार्शी० ॥ ९ ॥

आये जल अगरे सोइ ऋषि सगरा चाहन लगरे स्त्रीवगरे ।

तासुं ऋषि अगरे दीनी नगरे जलरत रगरे नय जगरे ॥

प्रिय रजवा उगरे शवरी पगरे परशत नगरे जलनेतम् ।

ब्रह्म हो अविनार्शी० ॥ १० ॥

कौरव मद भगिने है पंड हरिये द्रौपां उगिये थरहरिये ।

दुःशामन लरिये गहन कवरिये अंबर परिये कर अरिये ॥

विलखी जय तिरिये तो हरि तिरिये चीर वधगिये निजनेतम् ।

ब्रह्म हो अविनार्शी० ॥ ११ ॥

कौरव पंड भारे जुद्ध करारे गयंद हजारे जाई गामे ।

सुत बहँ दीटारे श्याम सँभारे गज घंट डारे दुग्धटारे ॥

राखे जय सारे इसा मुगारे तो कुण पामे पंथेतम् ।

ब्रह्म हो अविनार्शी० ॥ १२ ॥

तुरकज तन साले नर अनभाले ब्रह्मपगाले इह पाले ।

मगचल पयपाले दुग्धदुग्धटाले शुकग्याले मनयाले ॥

कहियो अंतकाले हराम आले जेहि भ्रमजाले छूटेतम् ।

ब्रह्म हो अविनार्शी० ॥ १३ ॥

चातक तर टाणे शिर अरि जाणे मारगि पाणे विरगपाणे ।

जाकूँ अहि द्वाणे शर छूटाणे जाय लगाने भीषाने ॥

पण्पीह जु पाणे दण्ड विचनाने हरिहि विछाने निजनेतम् ।

ब्रह्म हो अविनार्शी० ॥ १४ ॥

निज भक्ता नामा अरि पनि गामा छेँ पछामा विगमामा ।

जीवाये जामा तो तेहि गामा नमो दनामा इह पामा ॥

गोगमने धामा लाय लगामा सुगन्ध विदामा मारनेतम् ।

ब्रह्म हो अविनार्शी० ॥ १५ ॥

पता जु आदि कुरु है सगुण गुरु विन अगुण गिणीजिया ।
हरिदेव मिले जब गुरु सही तब गुणवान सुणीजिया ॥ ५ ॥
इति ।

अथ करणानिधान ग्रंथ प्रारम्भः ॥

आदि ब्रह्म जन अनंत के सारे कारण सोय ।
जेहि जेहि उर निश्चो घरे, तेहि दिग प्रगट होय ॥ १ ॥

छन्द त्रिभंगी ।

राक्षस बगवाने ब्रह्मा शाने जाय लुकाने अपधाने ।
मच्छा धरि माने जद भगवाने जलयहराने तिहटाने ॥
शाखासुर हाने निगम लराने दयाम दराने निधिसेतम् ।
ब्रह्म हो अग्निनाशी आनदराशी दोष विनाशी सुखदेतम् जिय० ॥ १ ॥
हिरण्य जय ठाढे कौन समाढ़े घर पय चाढ़े तय डाढ़े ।
घेरा हरिताढ़े आयस गाढ़े पारादगाढ़े तन पाढ़े ॥
राक्षस हणि दाढ इल गढ़ काढे मो बिर माढ़े निजदेतम् ।
ब्रह्म हो अग्निनाशी० ॥ २ ॥
अजनीकें तयरे अगनिज अयरे मज्जा कँबरे बिज मयरे ।
तिरियादे सिधरे हरि हित हियरे न्याही निधरे जो जियरे ॥
स्वालत सुन सँबरे वहँ निम भँबरे खेलत नँबरे निजखेतम् ।
ब्रह्म हो अग्निनाशी० ॥ ३ ॥
प्रह्लाद पुनारे जिह ररकारे निधय भारे गमसारे ।
हिरणाकश धारे नहीं हमारे शोच रिगारे रगसारे ॥
प्रगटे अवनारे रम प्रहारे राक्षस मारे जनहेतम् ।
ब्रह्म हो अग्निनाशी० ॥ ४ ॥
बालक धू ध्याये पिता वेढाये भौंइ रिसाये दुखपाये ।
गम पूछी माये हरि नहि गाये जय लिख लाये धनधाये ॥
धन घाम घमाये मथ छिटकाये हरि उर पाये निज हेतम् ।
ब्रह्म हो अग्निनाशी० ॥ ५ ॥
धूमर जय आये शिव भरमाये कँकण लराये उठघाये ।
सखीर जिताये लारि पठाये शम्भू माये हरि आये ॥
तिरिया तन पाये नाज नचाये कर शिर आप भसेतम् ।
ब्रह्म हो अग्निनाशी० ॥ ६ ॥
धाये तजि वारण करि जल कारण आह विदारण जुझ सारण ।
बूझत घटँ वारण परे पुकारण उर हक धारण ररकारण ॥

सुनिये जय तारण चक्र सँभारण कपे वधारण करमुक्तम् ।

ब्रह्म हो अविनाशी० ॥ ७ ॥

भवपुज के अंगा कुलधर्म भंगा गणिकासंगा विपरंगा ।

अजमेल अनंगा दोष उपंगा कर्म कुसंगा नितसंगा ॥

हो नारण चंगा सुतहित वंगा जय जम जंगा छूटेतम् ।

ब्रह्म हो अविनाशी० ॥ ८ ॥

अमरीष भुवाले ऋषि सुखपाले जेहि करआले दुखटाले ।

वह्नी बहु चाले उलटी भाले दुख असराले तपवाले ॥

दुर्वासा पाले सोह भवनाले राजा टाले दुखदेतम् ।

ब्रह्म हो अविनाशी० ॥ ९ ॥

आये जल अगरे सोइ ऋषि सगरे वाहरन लगरे स्त्रीवगरे ।

तासूं ऋषि झगरे दीनी तगरे जलरत रगरे नय जगरे ॥

प्रिय रजवा डगरे शवरी पगरे परशत सगरे जलनेतम् ।

ब्रह्म हो अविनाशी० ॥ १० ॥

कौरव मद भरिये है पंड हरिये द्रौपां डरिये थरहरिये ।

दुःशासन लरिये गहन कवरिये अंवर परिये कर अरिये ॥

बिलखी जय तिरिये तो हरि विरिये चीर वधरिये निजचेतम् ।

ब्रह्म हो अविनाशी० ॥ ११ ॥

कौरव पंड भारे जुद्ध करारे गयंद हजारे जहँ गारे ।

सुत वहँ टीटारे इयाम सँभारे गज घँट डारे दुखटारे ॥

राखे जय सारे इसा मुरारे तो कुण पारे पेखेतम् ।

ब्रह्म हो अविनाशी० ॥ १२ ॥

तुरकज तन साले नर अनभाले बेहपराले इह द्वाले ।

मगचल पयपाले डगडगटाले शूकरवाले हतयाले ॥

कहियो अँतकाले हराम आले जेहि जमजाले छूटेतम् ।

ब्रह्म हो अविनाशी० ॥ १३ ॥

चातक तरु ठाणे शिर अरि जाणे पारधि वाणे दिसताणे ।

जाँकुँ अहि हाणे शर छूटाणे जाय लगाणे सीचाणे ॥

पप्पीह जु प्राणे टल विधनाणे हरिहि पिछाणे निजहेतम् ।

ब्रह्म हो अविनाशी० ॥ १४ ॥

निज भक्ता नामा अरि पति गामा हते बछामा दिगतामा ।

जीवादे जामा तो तेहि रामा नतो हतामा इह कामा ॥

गोगमने धामा लाय लगामा मुगल सिलामा करिहेतम् ।

ब्रह्म हो अविनाशी० ॥ १५ ॥

कधीर जन भारे द्विज दुग धारे पतिया फारे दिश चारे ।
आये जग सारे भेष अपारे वणि निज प्यारे विणजारे ॥
यालव जन द्वारे आनि उतारे सोइ विधि सारे पोसेतम् ।
ब्रह्म हो अग्निनाशी० ॥ १६ ॥

रैदासजु लागी हरि प्रतिभागा ब्राह्मण जागा सग सागा ।
किन से नहिं रागा ना अणरागा घेपै लागी मंदभागा ॥
काढे उरतागा म्याम सुहागा जग द्विजभागा सबसेतम् ।
ब्रह्म हो अग्निनाशी० ॥ १७ ॥

मीरा सोइ नारी निज हरिप्यारी राणै विचारी विपगारी ।
अजलि भरि सारी मुखमें डारी हरि हितकारी दुख टारी ॥
भूपति पग हारी निज बलदारी भक्ति करारी भावेतम् ।
ब्रह्म हो अग्निनाशी० ॥ १८ ॥

जनसे दुख दाये कुलये ताये रामत भाये नर प्याये ।
नरसी ये नाये अरु लियेये हुडी आये जेहि गाये ॥
सौंजल बुध साये दिनी भराये सग मुख दाये जनसेतम् ।
ब्रह्म हो अग्निनाशी० ॥ १९ ॥

दाइ दुख धारे लोर पुकारे सुगल द्यारे दुख प्यारे ।
फीने सग रगारे तुल धर्म हारे यह विचारे देखारे ॥
जन दिश शोफारे महर्मत भारे यदन सारे शुबेतम् ।
ब्रह्म हो अग्निनाशी० ॥ २० ॥

तारे जन नारा अधम अपारा असप्य जुगाँरा नहिं पारा ।
आपे बुध सारा करे विचारा लह कुण पारा निदमारा ॥
एसे निरगारा जियरे प्यारा तारणहारा उरहेतम् ।
ब्रह्म हो अग्निनाशी० ॥ २१ ॥

दोहा ।

जहँ जिय उर करुणा धरे, धहँ करे हरिपाल ।
अपनो निरद विचारियो, करुणामयी कृपाल ॥ १ ॥
अधम जीउ तुम तारिया, तुम ही तारे सत ।
मग किरपा मोपर करहु या हरिदेव कहत ॥ २ ॥

बोवै को भव मान बढाइ । तारै को निर्मल बुधिताई ॥
 सन्त मिल्या सारा मुख भाइ । दुष्ट मिल्या होवै दुखदाई ॥ १७ ॥
 प्रश्नोत्तर माला सुन लीजै । वाच विचार हृदय गुण कीजै ॥
 ज्ञान सार बरष्यो इन माहीं । ज्ञान अज्ञान दियो छिटकाहीं ॥ १८ ॥

दोहा ।

प्रश्नोत्तर माग करी ज्ञान ध्यान को भेव ।
 जाये शुभ हिरदां हुवै दाखै जन हरिदेव ॥ १ ॥
 भक्ति ज्ञान बैराग्य भल, बुधि निर्मल चित्त सार ।
 सातौ हिरदां ६ सरस पावै करै विचार ॥ २ ॥
 प्रश्नोत्तर सतां करी, धर्म्य वचनझ ज्ञान ।
 सो हरिदेव विचारके कियो चोपड़ ज्ञान ॥ ३ ॥

इति प्रश्नोत्तर ।

अथ आत्मकृते विज्ञानकियाया पंचमः समुल्लासः ।

दोहा ।

विन भक्ती भगत विविध, जुक्ति सीध सय जानि ।
 पेसा आदिम जग अनत, अखू असिध सिध जानि ॥ १ ॥
 अक्षय उभय उचार निन, अतर सोक्षि अरूप ।
 निन पग पावे मया परसि, सागी दृष्टि स्वरूप ॥ २ ॥
 त्यागी तन भन तास विन, नास बहुत उर आन ।
 पास ब्रह्म किह मिथ रहत, नास रिना गमनान ॥ ३ ॥
 जोग अष्ट साइन जुगति, कष्ट देह अनकाज ।
 घयोदृढ द्वै सिध त्रिगति, जीर मुगति नै साज ॥ ४ ॥
 कारज गुम परता करम, अगुम कष्ट नहिं पद ।
 अशुभ गुम पावै अल्प, न को ताहि मिथ नेह ॥ ५ ॥
 करि छट मारै तन करम, इद्री भोग अनोह ।
 राजकाज को सिध शक्ति, भक्ति ब्रह्म नह कोह ॥ ६ ॥

छंद मुजगी ।

पयै सहज श्याम लहै सेव सारा । उमै अरु पेसा रहै जीह न्यास ।
 रहै सोय रत्ता सयै अग रासी । विना रामनाम न को ब्रह्मवासी ॥ १ ॥
 करै जोग अष्ट दिवै कष्ट फाया । सक्षै अग सारा सयै देह साया ।
 तनू सहन साक्षै पयै सहजतासी । विना रामनाम न को ब्रह्मवासी ॥ २ ॥

तजै वास आसा वने धाम तनू । रहै संग पाखै सदासोय रनू ।
 थपै सोय थानं जहाँ अडिगथासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥३॥
 धरै ध्यान ऐसे रहै एक सारा । सबै श्रुती साक्षन करै कृत्तकारा ।
 सबै धर्म सासाज आसा उसासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥४॥
 गहै सहज काया महा दोष साक्षै । वसै गेह न्यारा न को जाल वाक्षै ।
 पखै होय निचुं प्रियै देह पासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ ५ ॥
 सझै आप ऐसा सबै देह सरमा । कला सीख करणी करै नोलि करमा ।
 मलूं अंतर धोये सबै निर्मल थासी । विना रामनामं न को ब्रह्म वासी ॥६॥
 वसै सुरत सोई सदा जीव वासा । सबै अंग साक्षै गिनै आप सासा ।
 रहै माहिं राता सदा जोति रासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥७॥
 लहै भेव नासा सुरति श्वास लधुं । खरूं देख सोई करै काम सिधुं ।
 सबै खरजु फेरै एकै गृह लासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ ८ ॥
 फुरै वाक सोई करै बहुत फनूं । नमै लोक सारा सको सेव निचूं ।
 सबै सोय मानूं तवै तौह चासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ ९ ॥
 तजै आस तारां सजै सहज तनमां । अनंत सिद्धि आवै सहत सोय अनमां ।
 छडै आप काया परा देह थासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥१०॥
 चहै सोय आपा धरै आनि चितूं । नवी देह थापै सही आप निचूं ।
 जहं धार मझूं छिनक देह जासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥११॥
 धरै सोय धारै इती दृष्टि ध्याना । वसै वास देवा लहै स्वर्ग वाना ।
 रमै संग अमरा सदा रंगरासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ १२ ॥
 इसौ अंतर आना लहै भेव आपा । तनूं दोष बीया तजै सोय तापा ।
 करै ऋद्धि निरधं निरिधं ऋद्धि थासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥१३॥
 यही विध्व बहुती महासिद्धि आवै । धरै सोय अंगू गुणह तास ध्यावै ।
 यही भांति आपा महा मान आसी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥१४॥
 करै अंग आचार सुचार केता । लजा कर्म किरिया सबै साक्षि लेता ।
 इसा ब्रह्म या भव करै आन आसी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥१५॥
 विद्या वेद पाठी कदा ठीक वारा । सई होम जापा करै अंग सारा ।
 सबै आप धर्मा गहे अंग थासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ १६ ॥
 करै वेदअभ्यास जो द्विज केता । बडा सोय वाचीक सो ज्ञान वेत्ता ।
 सबै आप हेताज श्रोता सुनासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ १७ ॥
 वदै सोय आपा सही ब्रह्मवाना । विया लोक सारै तजै खानपाना ।
 गिनै आन छोती इसै हेत तासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ १८ ॥

नित् पाठ गीता करै आप नामी । प्रियै नेम सहत मनु धार पामी ।
 सही टेक वाचै सदा तेक प्यासी । विना रामनाम न को ब्रह्मवासी ॥ १९ ॥
 कथै मोय गाथा मुखी आप केती । हुयै अग हरपा घड़े नेम सेती ।
 परा ज्ञान साखा सब भाषिलासी । विना रामनाम न को ब्रह्मवासी ॥ २० ॥
 करै ईशपूजा सोई पट्टवमा । सझै हेन भूतादिका अग समा ।
 सरे सेय प्रतिमा करै रास कासी । विना रामनाम न को जगवामी ॥ २१ ॥
 नियै अग भक्ता करै सेव नामी । सझै भेज एली तनू भेष सामी ।
 त्रिण्णु सेव पूजा दियै हेत प्यासी । विना रामनाम न को ब्रह्मवासी ॥ २२ ॥
 मनु हेत नयधा मधे अग मानै । जिके सेज घमा सवे अंतर जानै ।
 सोई जहाँ सेज मनु माहिं यासी । विना रामनाम न को ब्रह्मवासी ॥ २३ ॥
 इति पूज्य प्रतिमा सरे अग आनै । मनु हेत सोई नाना भौंति मानै ।
 प्रिय प्रेम सलित स्वको नेम प्यासी । विना रामनाम न को ब्रह्मवासी ॥ २४ ॥
 सयै देवपूजा करै भाति सारी । नमै हेत हीयै सदा रीत न्यारी ।
 दियै देव परचा रमै निकट रामी । विना रामनाम न को ब्रह्मवासी ॥ २५ ॥
 पपे ब्रह्म लोका पुगै पय पारा । सठ अष्टीधू नहै देह सारा ।
 नऊ पड जोये फिरे ब्रह्म जामी । विना रामनाम न को ब्रह्मवासी ॥ २६ ॥
 दियै दान धिया सत्रै मानि देवा । सोई भाति सारी करै न्यात सेवा ।
 सरे आयि आपा छिजा पूज थामी । विना रामनाम न को ब्रह्मवासी ॥ २७ ॥
 घटे आयि बहुती जना लोख वाधै । जिके दूर सोभा तुने आय जाधै ।
 गुण लाय गाथा तिरे निरद गासी । विना रामनाम न को ब्रह्मवासी ॥ २८ ॥
 सती आग मझै करै गेह साचो । कने लोय कंता गिा नेह फाचो ।
 जरै आप काया तनू वाच प्यासी । विना रामनाम न को ब्रह्मवासी ॥ २९ ॥
 महाबुद्ध भौंहे करै माग मारौ । तजै आस काया सोई सूर तारौ ।
 लड़े हेत ऐसे पया नेह थासी । विना रामनाम न को ब्रह्मवासी ॥ ३० ॥
 सयै शुभ कमा सोई आप साझे । जने नाम पापे जपे नेह जाझै ।
 इना धर्म आना सयै भुगति आसी । विना रामनाम न को ब्रह्मवासी ॥ ३१ ॥

दोहा ।

आन धम साझै अनंत, मरम पपै निज नाम ।

कय वाकू हरिदेव कह, न को ब्रह्मको घाम ॥ १ ॥

ज्ञान कथं मीरै प्रय, अर्थ अगम का आखि ।

विना भजन नहिं ब्रह्मघर, ए हरिदेवो दाखि ॥ २ ॥

(अर्थ)

अथ हरिजस लिख्यते ।

राग आसा ।

पद १

रामराय मैं हूं मंगन तेरा तुम दानपती सबकेरा ॥ ढेर ॥
 तुम दाता मैं जाचक तोरा द्वार खड़ा निज देवा ।
 निशि दिन अडिग नूर तुम निखूं सदा करूं तोहि सेवा ॥ १ ॥
 तोरा संत विरद कहै आदू सो सुनि तो द्विग आयो ।
 मैं तो मनू चाच उरसेती साचो नाम संभायो ॥ २ ॥
 औलग करूं अभंग हरि आगै विरहवचन निशिवासा ।
 चाचूं विरद न को उर बीजा एक तुम्हारी आसा ॥ ३ ॥
 सुनिहो वचन दीनका साहिव अमै दान मोहि आपो ।
 दासै अरज इसी हरिदेवो । कुरंद करमरा कापो ॥ ४ ॥

पद २

राम राय मैं हूं बालक तोरा पिताज तुम हो मोरा ॥ ढेर ॥
 मैं बालक मति भोर रहे उर कह नहीं जानूं काई ।
 दीनबंधु देख हम शिशु मति आप विरद निरवाई ॥ १ ॥
 सेवा साज न जानूं साहिव है मति हीन हमारी ।
 करिहो अबै मुझै मांहि करता सो है रजा तुमारी ॥ २ ॥
 मैं तो बाल केलि संग राता का तो मन गृह मोहा ।
 का तो असन बार बछादिक ए उर सदा समोहा ॥ ३ ॥
 तुम हो पिता मुझै हरि नीका मैं मति भोर अजाना ।
 जानूं नहीं कछु हम काई तुम हो श्याम सुजाना ॥ ४ ॥
 मैं मतिहीन किया अति औगुण तुम ना गिनो दयाला ।
 कह हरिदेव पिता हरि सुनिज्यो बाल करो प्रतिपाला ॥ ५ ॥

राग सोरठ ।

पद ३

कृपा निधान करियो कछु कृपा दीन माथै ॥ टेक ।
 मैं आदि तुम के अंसा । अब विसर गए निजवंसा ॥
 सौसै मैं आव विहावै । प्रभु तोहि दया सुख थावै ॥ १ ॥
 तुम जीवों के प्रतिपाला । निज देवा देव दयाला ॥
 सब के जो अंतरजामी । अब मोहि दया करि स्वामी ॥ २ ॥

हम दीना दीन पुकारै । तुम सुनौ सिरजन हारै ॥
 अब तारण विरद विचारो । साँई वेश मुझै तुम तारो ॥ ३ ॥
 हमसू कुछ नाहिं लहीजै । तुम देव दया निज फीजै ॥
 हरिदेव सदा हरि तेरो । चित चरण कमलनो चैरो ॥ ४ ॥

पद ४

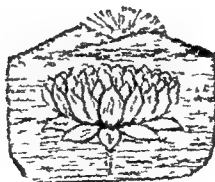
विरदा निधान पहियो निज विरदा आप बैरा ॥ टेक ॥
 अजामेल से अघमारै । अत पुत्र हेत पुमारै ॥
 साद सुणे सुण ध्याये । जमदूता पासि छुडाये ॥ १ ॥
 गजराज की सुनि पाणी । सो ध्याये सारगपाणी ॥
 निज भारी चक्र चलाये । गज ग्राह के दु ख मिटाये ॥ २ ॥
 आगे अधम अपारै । सो अर्घ टेर सुनि तारै ।
 हम औगुण अचिके यात । प्रभु साद सुणो नहिं तारै ॥ ३ ॥
 मुझ आंगुण तुझ ना लहियो । सो अधमतार तुम कहियो ।
 निज आपा विरद विचारो । हरिदेव दया करि तारो ॥ ४ ॥

इत्यपूर्णम् ।

द्वितीयपरिच्छेदः ।

धुरमेल ।

वानी सुखदानी विमल श्रीरामदास महाराजकी ।
अद्भुत आनन्दकंद इन्द्र मायाकृत कटि है ।
आदि अन्त सिद्धान्त दान्त ररकार सुरटि है ॥
अनआतम अध्यास भ्यासकृत निश्चय हट्टे ।
गुरुगम करत विचार पार भवमूल जु पट्टे ॥
मनुष्टुष्टि वृष्टि प्रश्न हु करत घनघुमंड मृदु गाजकी ।
वानी सुखदानी विमल श्रीरामदास महाराजकी ॥ १ ॥



॥ श्री ॥

पद १

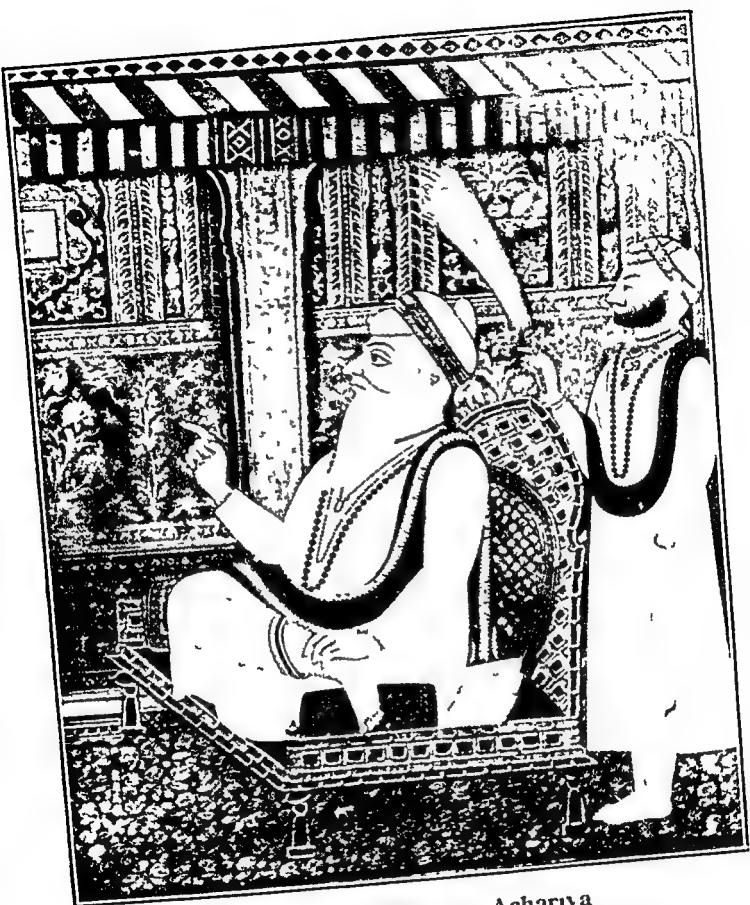
चेतनराम शरण मैं तेरी । अवफी घेर अरज सुन मेरी ॥ टेर
जो रीझो तो भक्ति मोहि दीजै । अपनो जानि कृपा हरि कीजै ॥ १ ॥
आदि अन्त मध्य सकल पसारा । सोई आत्मराम हमारा ॥ २ ॥
अचरज देख अचभो माहीं । तेरे जनको सशय नाहीं ॥ ३ ॥
जिने यात तनहीमें पाया । जैमलदास शरण सेरी आया ॥ ४ ॥

पद २

भन रे जो तू राम पिछानै । नेकहि सो निश्चय आनै ॥ टेर
पाख तत्त ले किया पसारा । जल स्थल जीव सकल ससारा ॥ १ ॥
तीन भयन के बाहिर माहीं । हरि बिन काज सरै को नाहीं ॥ २ ॥
पालन पोषण करण संहारण । दीन दया करि दुस्तर तारण ॥ ३ ॥
जैमलदाम साच मन भजिये । राम विमुख विषय रख तजिये ॥ ४ ॥

अष्टपदी ।

बाद विषयास्वाद तज मन, गहो ज्ञान विज्ञान रे ।
और ऐसो नाहि जगमें, राम सम कोर ध्यान रे ॥ १ ॥
भूल मत भ्रम माहिं भोंदु, अलग करिये बाद रे ।
उलटि आपा देख दिलमें, प्रेमत्रिन पशु बाद रे ॥ २ ॥
नाम निश्चय ध्याय निशि दिन, परम पीतम पाय रे ।
शोक सशय भेंट, सयही, भेंट त्रिभुवन राय रे ॥ ३ ॥
राम बिन त्रिधाम नाहीं, स्वर्ग मध्य पयाल रे ।
जीव हरि बिन वेम छूटै, कर्म कूटै काल रे ॥ ४ ॥
मलो पूरण भाग तेरो, जिन्द जगल्य जाग रे ।
आयु दम दम घटै निशिदिन, रहो निजमन लाग रे ॥ ५ ॥
मानुषो अवतार वीछुरि, बहुरि आवै नाहि रे ।
भक्ति बिन पशु मया दुखिया, चौरासी लख माहि रे ॥ ६ ॥
राम घट घट माहिं न्याय, रूप ताहि न देख रे ।
और माया सयै उपजै, आप अमर अलेख रे ॥ ७ ॥
अखड इफ धुन होइ सुनर्म, लगन लागी जाय रे ।
हरिराम प्रह्लानन्द माहीं, सुरति सहज समाय रे ॥ ८ ॥



Sri Ramdasji Maharaj Achariya
(Khedapa)

॥ श्रीरामो जयति ॥

विभुं पद्मनेत्रं दधानं तुरीयं प्रकाशस्वरूपं नतं विश्वदेवैः ।

श्रुतिज्ञानगम्यं गुप्तं विश्वनाथं स्तुवे वेदवेद्यं गुरुं रामदासम् ॥ १ ॥

अथ श्री १००८ श्रीरामदासजी महाराजकी
अनुभव गिरा प्रकाश ।

स्तोत्रमंत्र ।

सतगुरु सेती धीनती, परब्रह्मसुं परणाम ।

अनेत कोटि संत रामदास, निशिदिन करुं सलाम ॥ १ ॥

प्रथम वंदि परब्रह्म नित, जिना दिये सिरपाव ।

दुतिय वंदि गुरुदेवकुं, दिये भक्तिके भाव ॥ २ ॥

तृतीय वंदि धिन संतकुं, सब के लागू पाय ।

परब्रह्म गुरु संतकुं, रामदास नितगाय ॥ ३ ॥

प्रथम वंदि गुरुदेवकुं, जिना दियो ततज्ञान ।

दुतिय वंदि परब्रह्मकुं, अंतर प्रगटे आन ॥ ४ ॥

तृतीय वंदि सब संतकुं तिहुं ठोरलौ मान ।

नाम तीन वपु एक है, रामदास कह ज्ञान ॥ ५ ॥

नमस्कारतें रामदास, कर्म सबै कटिजाइ ।

जाइ मिलै परब्रह्ममें, आचागमन मिटाइ ॥ ६ ॥

परब्रह्म सब घट रम रह्या, दुजा कोऊ नाहिं ।

रामदास दुविधा मिठी, जब देख्या घटमाहिं ॥ ७ ॥

परब्रह्म गुरु संतकुं, एकमेक दरसाय ।

रामदास या ऊपजी, जदही मुक्ति कहाय ॥ ८ ॥

इति ।

अथ गुरुदेव को अंग ।

अटल बैण गुरुदेव के, रामदास सत मान ।

एता पूठा ना फिरै, गिरिवर गंग ज्ञान ॥ १ ॥

गिरी मेरु अरु गंगकी, या हृद ऊली बात ।

रामदास गुरुशब्दतें, मिलै निरंजन नाथ ॥ २ ॥

तिलक राम रस चरणामृत, लिया प्रेम निजनूर ।

सतगुरु शब्दाँ रामदास, दुखदारिद्र भव दूर ॥ ३ ॥

दु ख दादि भोजिगे, मिल्या निरजन नाथ ।
 ररकार रट रामदास, कर सतगुरु को साथ ॥ ४ ॥
 सतगुरु समंदस्वरूप है, सिर नहीं हुइ जाइ ।
 रामदास मिल एकता, सहजाँ रहे समाइ ॥ ५ ॥
 रामनाम तो दुलभ है, जैसी खाँडा घार ।
 सतगुरु सेती सगरमें, से जा उतरै पार ॥ ६ ॥
 सतगुरु सेती प्रीतबी, जे करि जाणै कोइ ।
 रामनाम धन पाइयो, आवागमन न होइ ॥ ७ ॥
 राम रसायन भरपिये, सतगुरु सेतीसग ।
 रामदास लागा रहै, रोम रोम विच रग ॥ ८ ॥
 रोम रोममें रुचि पिया, मनमें भया भग्न ।
 अध नाम रत्ता रहै, रामदास हरिजन ॥ ९ ॥
 गुरु जैसा गुरुदेव है, रामा दूजा नाहिं ।
 भयसागरमें डूबतों, पाढ़ि लिया गहि चाहिं ॥ १० ॥
 रामदास सतगुरु मिल्या, भरम किया सब दूर ।
 निशि आँधियारा मिटगया, ऊगा निर्मल सूर ॥ ११ ॥
 रामदास गुरुदेव की, में यलिहारी जाहिं ।
 साँसा सबही भेटकै, प्रहल यताया माहिं ॥ १२ ॥
 रामदास सतगुरु मिल्या, कहा भमोलक बैण ।
 सुन सागर साँई मिल्या, आदि आपना सैण ॥ १३ ॥
 सतगुरु का मुख देखता, पाप शरीर जाइ ।
 साधुसंगति सत राम दास, अटल पदी लेजाइ ॥ १४ ॥
 प्रहल बिलासी सत जन, अगमी गम्म अपार ।
 सायरसा सुमर मन्या, सतगुरु सिरजनहार ॥ १५ ॥
 सतगुरु मेरे शीसपर, में चरणानी रज्ज ।
 शरणे आयो रामियो, लख चौरासी तज्ज ॥ १६ ॥
 चौरासी का जीव था, शरणे लिया संभाय ।
 औगुण भेट्या रामदास, सतगुरु करी सहाय ॥ १७ ॥
 रामदास की बीनती, सोंमलिये गुरुदेव ।
 और कटू माँगू नहीं जुग जुग तुमरी सेव ॥ १८ ॥
 रामदास की बीनती, सोंमलिये गुरु दाल ।
 रामनाम सुमराइयै, भेटो निपय जजाल ॥ १९ ॥
 किरपा की गुरुदेवजी, शब्द दिया निजसार ।
 रामदास निशिदिन भजो, छाँडो सबै विकार ॥ २० ॥

भवसागर में डूबताँ, सतगुरु काढ़या आय ।
 रामदास गुरुदेव जी, सहजाँ करी सहाय ॥ २१ ॥
 गुरुकी महिमा रामदास, कहियै कहा वणाय ।
 हमसा पतित उधारिया, जमपै लिया लुडाय ॥ २२ ॥
 गुरुसा दूजा को नही, भवसागर के माहिं ।
 अनंता जीव उधारिया, मिल्या आदि घर जाहिं ॥ २३ ॥
 सतगुरु ऐसा रामदास, जैसा पारस जाणि ।
 लोहाती कंचन करै, तन मन सोंपै आनि ॥ २४ ॥
 सतगुरु ऐसा रामदास, जैसा सूर प्रकास ।
 रात अशान मिटाइ कर, अंतर करै उजास ॥ २५ ॥
 सतगुरु ऐसा रामदास, जैसा पूरण चंद ।
 सिखकुं अमृत पाइ कर, अमर किया आनंद ॥ २६ ॥
 सतगुरु ऐसा रामदास, जैसा इंदर जान ।
 किरपा करि वरपा करी, भीज गया सब प्रान ॥ २७ ॥
 दिया एकही रामदास, घर घर दीया जोय ।
 सबै अंधारा मिटगया, जगै अखंडित लोय ॥ २८ ॥
 सतगुरु दीपक रामदास, सिख चल आया पास ।
 अनंता जीव जगाइया, अंतर भया उजास ॥ २९ ॥
 गुरु जैसा गुरु देव है, सांची कहूं विचार ।
 गुरु मिलावै ब्रह्म कूं, और वार के वार ॥ ३० ॥
 सतगुरु ऐसा रामदास, जैसा चंदन होइ ।
 सिख सेती सीतल करै, विपिया डारै खोइ ॥ ३१ ॥
 सतगुरु ऐसा रामदास, जैसी तरुवर छाहिं ।
 शीतल छाया मुक्ति फल, ता विच केलि कराहिं ॥ ३२ ॥
 गुरुकी महिमा कहा कहूं, मोपै कही न जाय ।
 चौरासी का जीव कूं, मुक्ति देश लेजाय ॥ ३३ ॥
 गोविंदतै गुरु अधिक है, रामै कहा विचार ।
 गुरु मिलावै रामकूं, राम अमर भरतार ॥ ३४ ॥
 राम सबही सिरजिया, लख चौरासी जीव ।
 रामदास सतगुरु विना, परत न पावै पीव ॥ ३५ ॥
 लख चौरासी जोणिमें, सबही बंध्या जीव ।
 सतगुरु बंद छोडाइ कर, मेल्या आदू पीव ॥ ३६ ॥

रामदास सतगुरु मिल्या, मिलिया राम दयाल ।
 मुख सागर में रमरह्या, मेठ्या विषय जजाल ॥ ३७ ॥
 इति ।

अथ गुरुवदन को अग ।

गुरु वदनतें रामदास, मिटजाइ आल जजाल ।
 जाइ मिलै पछहमें, आठ पहर मत घाल ॥ १ ॥
 गुरुक वदन कीजिये, मुख सँ कहिये राम ।
 रामदास सो सिरस जन, पावै आदू धाम ॥ २ ॥
 सतगुरु वदन अधिर फल, जाना वार न पार ।
 रामदास में क्या कहू, कहिगए सत अपार ॥ ३ ॥
 सतगुरु बैदियाँ अधिक फल, घोरासी मिट जाइ ।
 स्वग नरक दोनों मिटे, जामण मरण मिटाइ ॥ ४ ॥
 सतगुरु बैदियाँ रामदास, टलि जाइ कोटि विकार ।
 करम कटै सबजीव का, मिलै मुक्ति के द्वार ॥ ५ ॥
 सतगुरु बैदियाँ बाहिरो, राम न पावै कोइ ।
 घोरासी में रामदास, जीव जूण बहू होइ ॥ ६ ॥
 वदन कर निंदा करै, जाना मूढ़ मदीठ ।
 रामदास का जीवकू, जम दरगा मे पीठ ॥ ७ ॥
 वदन कर निंदा करै, भुगतै नरक दुवार ।
 रामदास का दु ख को, है कोइ वार न पार ॥ ८ ॥
 किरपा की गुरु देवजी, अतर किया उजाल ।
 रामदास निंदा किया, ओंन भोपेटे काल ॥ ९ ॥
 सतगुरु जो सिख ऊपरै, कोष करै सोवार ।
 तोही सिख शीतल हुवै, आणे नहिं अहंकार ॥ १० ॥
 सतगुरु लोमी लालची, कोधरूप बहू होइ ।
 बलिराना प्रह्लाद कू, देव निवाया सोइ ॥ ११ ॥
 सतगुरु का गुण अनत है, औगुण एक न जाण ।
 रामदास घट भीतगै, आपा लेहू पिछाण ॥ १२ ॥
 सतगुरु दीया रामनाम, निराकार निराण ।
 या में औगुण को नहीं, आपालेहु पिछाण ॥ १३ ॥
 पारसरूपी सतगुरु, सिख है लोह निराट ।
 पलट और ही घाट ॥ १४ ॥

लोह पारस की क्या कहूं, सतगुरु अगम अपार ।
तन मन सोंप्या रामदास, करै आप दीदार ॥ १५ ॥
इति ।

अथ गुरुधर्म को अंग ।

सतगुरुसूं पूठा फिरै, जाकै अंतर काण ।
रामदास ताकुं वेंद्यां, बहुती हैगी हाण ॥ १ ॥
सतगुरु सूं पूठा फिरै, सो अपती बहु जीव ।
अति निंदा गुरुदेव की, परत न पावै पीव ॥ २ ॥
निंदक का मुंहडा बुरा, दीटां लागै पाप ।
गुरुद्रोहीसूं रामदास, अलगा रहियै आप ॥ ३ ॥
गुरुधर्मी का रामदास, दर्शण कीजै जाइ ।
दर्शण सूं अवगुण सिटै, कर्म विलै हुइजाइ ॥ ४ ॥
सतगुरु बड़ सिख साखहै, रुपी धरणि में आइ ।
रामदास बड़ लग गया, गगन गरजिया जाइ ॥ ५ ॥
गगन गरजिया रामदास, फूल्या सून्य मँझार ।
डाल चली चहुं कूंटमें, सिख फल लगे अपार ॥ ६ ॥
डाल चली बड़ पेडतें सब बड़ का विस्तार ।
रामा पेड जु सींचिया, सब हरियाली टार ॥ ७ ॥
बिट लागा सो नीपना, जल पड़ियां कंद जाइ ।
गुरु त्यागै हरि कूं भजै, निश्चय नरकां जाइ ॥ ८ ॥
गुरु हितकारी रामदास, दिन दिन दूणा थाइ ।
उलटि समावै ब्रह्म में, ओत पोत हुइ जाइ ॥ ९ ॥
सिख जो ऐसा चाहिये, रह सतगुरु सूं रत्त ।
सतगुरु जो न्यारा रहै, सिख न छांडै तत्त ॥ १० ॥
इति ।

अथ सुमरन को अंग ।

प्रथमहि सुमरन जीभसूं, चोड़ै करौ वजाइ ।
दो अक्षर रट रामदास, साँई साद सुणाइ ॥ १ ॥
सुमरन कीजै रामदास, रोम रोम भरपूर ।
सुमरन सूं साँई मिलै, सेवक सदा हजूर ॥ २ ॥
रामदास सुमरन क्रियां, रोम रोम सुख स्वाद ।
नाडि नाडि खर सांभलै, घुरै अनाहद नाद ॥ ३ ॥

रामदास सतगुरु मिल्या, मिलिया राम दयाल ।
 सुख सागर में रमरहा, मेट्या विषय जजाल ॥ ३७ ॥
 इति ।

अथ गुरुवदन को अग ।

गुरु वदनते रामदास, मिटजाइ आल जजाल ।
 जाइ मिलै परब्रह्ममें, आठ पहर मत थाल ॥ १ ॥
 गुरु वदन कीजिये, मुख स बहिये राम ।
 रामदास सो सिख जन, पावै आदू धाम ॥ २ ॥
 सतगुरु वदन अधिक फल, जाना बार न पार ।
 रामदास भे क्या कहू, कहिगए सत अपार ॥ ३ ॥
 सतगुरु बँदियाँ अधिक फल, चौरासी मिट जाइ ।
 लग नरक दोनो मिटे, जामण मरण मिटाइ ॥ ४ ॥
 सतगुरु बँदियाँ रामदास, टलि जाइ कोटि विकार ।
 करम बँदै सज्जीव का, मिलै मुक्ति के द्वार ॥ ५ ॥
 सतगुरु बँदियाँ याहिरो, राम न पावै कोइ ।
 चौरासी में रामदास, जीव जूण बहु होइ ॥ ६ ॥
 वदन कर निंदा करै, जाना मूढ़ मदीठ ।
 रामदास या जीवकू, जम दरगा मे पीठ ॥ ७ ॥
 वदन कर निंदा करै, भुगतै नरक दुवार ।
 रामदास या दु प को, है कोइ बार न पार ॥ ८ ॥
 किरपा की गुरु देवजी, अतर किया उजाल ।
 रामदास निंदा किया, आँन क्षपेटे काल ॥ ९ ॥
 सतगुरु जो सिख ऊपरै, कोष करै सोवार ।
 तोही सिख दीतल हुय, आणे नहिँ अहँकार ॥ १० ॥
 सतगुरु लोभी लालची, ओघरूप बहु होइ ।
 बलिराजा प्रह्लाद कू, देय निवाज्या सोइ ॥ ११ ॥
 सतगुरु का गुण अनत है, औगुण एक न जाण ।
 रामदास घट भीतरै, आपा लेह पिछाण ॥ १२ ॥
 सतगुरु दीया रामनाम, निराकार निरखान ।
 या में औगुण को नहीं, आपालेहु पिछाण ॥ १३ ॥
 पारसरूपी सतगुरु, सिख है लोह निराट ।
 रामदास मिलियाँ समा, पलट और ही घाट ॥ १४ ॥

लोह पारस की क्या कहें, सतगुरु अगम अपार ।
तन मन सोंप्या रामदास, करै आप दीदार ॥ १५ ॥
इति ।

अथ गुरुधर्म को अंग ।

सतगुरुसुं पूठा फिरै, जाके अंतर काण ।
रामदास ताकुं बँधां, बहुती हैगी हाण ॥ १ ॥
सतगुरु सुं पूठा फिरै, सो अपती बहु जीव ।
अति निंदा गुरुदेव की, परत न पावै पीव ॥ २ ॥
निंदक का मुंहडा बुरा, दीठां लागै पाप ।
गुरुद्रोहीसुं रामदास, अलगा रहियै आप ॥ ३ ॥
गुरुधर्मी का रामदास, दर्शण कीजै जाइ ।
दर्शण सुं अवगुण सिटै, कर्म विलै हुइजाइ ॥ ४ ॥
सतगुरु बड़ सिख साखहै, रुपी धरणि में आइ ।
रामदास बड़ लग गया, गगन गरजिया जाइ ॥ ५ ॥
गगन गरजिया रामदास, फूल्या सुन्य मँझार ।
डाल चली चहुं कूटमें, सिख फल लगे अपार ॥ ६ ॥
डाल चली बड़ पेडतैं सब बड़ का विस्तार ।
रामा पेड जु सींचिया, सब हरियाली टार ॥ ७ ॥
बिट लागा सो नीपना, जल पड़ियां कँद जाइ ।
गुरु त्यागै हरि कूं भजै, निश्चय नरकां जाइ ॥ ८ ॥
गुरु हितकारी रामदास, दिन दिन दूणा थाइ ।
उलटि समावै ब्रह्म में, ओत पोत हुइ जाइ ॥ ९ ॥
सिख जो ऐसा चाहिये, रह सतगुरु सुं रच ।
सतगुरु जो न्यारा रहै, सिक्ख न छांडै तत्त ॥ १० ॥
इति ।

अथ सुमरन को अंग ।

प्रथमहि सुमरन जीभसुं, चोड़ै करौ बजाइ ।
दो अक्षर रट रामदास, साँई साद सुणाइ ॥ १ ॥
सुमरन कीजै रामदास, रोम रोम भरपूर ।
सुमरन सुं साँई मिलै, सेवक सदा हजूर ॥ २ ॥
रामदास सुमरन कियां, रोम रोम सुख स्वाद ।
नाडि नाडि स्वर सांभलै, धुरै अनाहद नाद ॥ ३ ॥

रामदास सुमरन कियाँ, सुमरन निपजै साधि ।
 सुमरनसैं सुन गढ़ चढ़ै, सुमरन लगे समाधि ॥ ४ ॥
 भ्रवणों सुणियाँ रामदास, मुखसू सुमन्याँ राम ।
 रसना हिरदै नाभि रिच, सहज किया विश्राम ॥ ५ ॥
 रसना सू सुमरण किया, अंतर लागी तार ।
 रोम रोम विच रामदास, ऊठत एक पुनार ॥ ६ ॥
 मुख सेती सुमरण किया, मन आयो इतवार ।
 दूजा सब ही झूट है, रामा सुमरण सार ॥ ७ ॥
 रामा सुमरण सार है, श्वासोच्छ्वासाध्याय ।
 किया करम सबही कटै, दूजा लगै न आय ॥ ८ ॥
 क्रेताही कुकरम किया, जाण्या नहीं विचार ।
 सब पाप पल में पटे, रामनाम चितधार ॥ ९ ॥
 कुकरम करु न रिप भए लगी शङ्क की छोट ।
 सतगुरु शरण रामदास, पाई हरि की ओट ॥ १० ॥
 बुरा भला सब तुम किया, घटमें पड़े राम ।
 मैं तैं भिदगी रामदास, सहज मिल्या निज धाम ॥ ११ ॥
 गुन किया सब मैं किया, तुम केवल हो राम ।
 रामदास की वीनती, भेटो सकल विराम ॥ १२ ॥
 रामदास सुमरण विना, कदे न छूटै जीव ।
 अनंत जन्म जोइ पुण्य करै, तोइ न पावै पीव ॥ १३ ॥
 पाप पुण्य सू रामदास, स्वर्ग नरक में जाय ।
 सुमरण विन छूटै नहीं, कोदिक करो उपाय ॥ १४ ॥
 सुमरण एको सार है, दूजा आलज्जाल ।
 रामदास सब सोझिया हरिविन परलै काल ॥ १५ ॥
 हरि सुमरण कर लीजिये, सास उसासों ध्याय ।
 रामदास सुमरण किया, साहब मिलसी आय ॥ १६ ॥
 सब इंद्री सुमरण करै, मन ही करै पुकार ।
 रामदास अब पाविया, सुखसागर भरतार ॥ १७ ॥
 रामदास सुमरण तणा, विवरा देखै बताय ।
 घट माँहीं अजपा हुवै, सुणो सगल चित लाय ॥ १८ ॥
 रामदास सुमरण कियाँ, प्रथम जगी एक नार ।
 सहस्र एक चौबनमही, शब्द करत गुंजार ॥ १९ ॥
 पठ में प्रेम प्रकासिया, हृदै होत धमधार ।
 नाहि नाहि चेतन भई, मन आयो इतवार ॥ २० ॥

नाभि कमल में संचय्या, सहस्र चार परकास ।
 नाड़ि नाड़ि न्यारी घुरै, सुणत रामिया दास ॥ २१ ॥
 बहत्तर नाड़ी बंक फी, मिली बंक में आय ।
 रामदास सब घेरकै, उलटा अमर भराय ॥ २२ ॥
 नाड़ि सवासै एक ही, सहस्र पांच परवाण ।
 रामदास घट भीतरै, ष वडि नाड़ि बखाण ॥ २३ ॥
 मही नाड़ि दूजी घणी, तीन लोक विस्तार ।
 रामदास तन सोझकर, सब का करो विचार ॥ २४ ॥
 नाड़ी बहत्तर हजार है, सब ही तनके माहिं ।
 सबहि मिलानी तीनसूं, त्रिवेणी में जाहिं ॥ २५ ॥
 इडा पिंगला सुपमणा, त्रिवेणी के तट ।
 रामदास ता ऊपरै, मंड्या सहज ही मट ॥ २६ ॥
 वाँसे चल आघा गया, परम सून्य के माँय ।
 गगन कूप में रामदास, अमृत भरभर पाँय ॥ २७ ॥
 नाड़ि नाड़ि अमृत झरै, पीवत सबै सरीर ।
 रोम रोम बिच रामदास, चलत सुखम की सीर ॥ २८ ॥
 साढ़ा तीन करोड़ में, एक होत ररकार ।
 सहजे सुमरण रामदास, ताका अंत न पार ॥ २९ ॥
 उर अंतर नख सिख विचै, एक अजप्पा होय ।
 राम दास या संत गति, साधू जाणै कोय ॥ ३० ॥
 जाप कियाँ मुख द्वार तैं, रसना चाली सीर ।
 अजपा सुमरण घट विषै, को जाणै गुरु पीर ॥ ३१ ॥
 गगनमंडलमें रामदास, अनहद घुरिया नाद ।
 रोम रोम साँई मिल्या, सुमरण पायो स्वाद ॥ ३२ ॥

इति ।

अथ विरह को अंग ।

नैण हमारा रामदास पिव विन रह्या विसर ।
 अंतर दारुण विरह की तन इंद्रिय मनझर ॥ १ ॥
 अंतर दारुण अति घणी, पिंजर करै पुकार ।
 नैण रोय राता किया, तो कारण भरतार ॥ २ ॥
 घाव कलेजै भाल चिन, रामा सालै नित्त ।
 रात दिनां खटकत रहै, तुझ कारण मुझ मित्त ॥ ३ ॥
 विरह भाल उरमें लगी, अंतर सालै नित्त ।
 रामदास सुख उपजै, आप मिले मुझ मित्त ॥ ४ ॥

घात नारि कै पुत्र विन, नित झूरत दिन जाय ।
 रामदास यों तुझ विना, तालाघेली माँय ॥ ५ ॥
 निरधन झूरे धन विना, फल विन नागरजेल ।
 रामा झूरे राम विन, बिरही सालै सेल ॥ ६ ॥
 विरह आय घायल किया, रोम रोम में पीर ।
 रामदास दुखिया घणा, हृद खटूवै तीर ॥ ७ ॥
 कुजर झूरे वन कू, सूरा अवा काज ।
 विरहिन झूरे पीय कू, कयै मिलो महाराज ॥ ८ ॥
 बैनह झूरे वीर कू, बर कू झूरे नार ।
 रामा झूरे पीयकू, दरसन घो भरतार ॥ ९ ॥
 दरसन कारण रामजी, तलफतह दिनरात ।
 रामा पिय पायो नहीं, आन हुबो परमात ॥ १० ॥
 आठ प्रहर चोखड घडी, झूरत मेरा जीव ।
 रामदास दुखिया घणा, दरसन दो अथ पीन ॥ ११ ॥
 तुमरे दरसन बाहिरो, सब दिन अहला जाय ।
 सो दिन नीफा होयगा, तुमहि मिलोगा आय ॥ १२ ॥
 तुम मिलनके कारणै, रामा झूर सास ।
 तालाघेली जीयमें, फद पुरोमे आस ॥ १३ ॥
 विरह आय अतर घसे, सतगुरु के परताप ।
 रामदास सुख ऊपजै, आय मिलोगे आप ॥ १४ ॥
 तुमरे मिलियाँ बाहिरो, दाक्षी बारावाट ।
 रामा विरहन कारणै, आण मिलो भरतार ॥ १५ ॥
 तुम मिलिया विन मैं दुखी, बिरही ऊठै लाय ।
 रामदासवै तुम विना, दम दम अहला जाय ॥ १६ ॥
 रामा सारथ कारणै, झूरे सब ससार ।
 मैं झूरू परग्रह कू, अतर घो दीदार ॥ १७ ॥
 अतर दाखन विरह की, तुमकारण निज राम ।
 तुमरे दरसन बाहिरो, सकल अलूणो काम ॥ १८ ॥
 तुम मिलवा के कारणै, विरहन दूक्षे घाय ।
 राम तणो सदेसबो, कहो बटाऊ जाय ॥ १९ ॥
 घाट बटाऊ सन थफया, यनिया मेरा प्राण ।
 रामदास तन भीनै, विरहजु लागो बाण ॥ २० ॥
 पाँच पख भेरे नहीं, मैं अगला बल नाहि ।
 मिलवा की थदा नहीं, झुरणो पिजर माहि ॥ २१ ॥

मो झुरवाको जोर है, दूजो कछु न होहि ।
 तुम हो जैसा कीजिये, दरशण दीजै मोहि ॥ २२ ॥
 विरह बिलापां कर रही, दुखी होय बहु जन्न ।
 रामदास निजपीव कूं, झूरै रैण रु दिन्न ॥ २३ ॥
 रैण बिहाणी जोवतां, दिन भी बीतो जाय ।
 रामदास विरहिन झूरै, पीव न पाया मॉय ॥ २४ ॥
 रामदास विरहिन दुखी, दुखी होत बहु जिंद ।
 दुखी जीव करुणा करै, तोहि विना गोविंद ॥ २५ ॥
 रामदास कह विरहिनी, जाल करूं तन छार ।
 हरि दरसन पायां विना, धृक जीतव जम्मार ॥ २६ ॥
 धिक्क हमारा जीविया, भाँग करूं तन भुःख ।
 रामदास साँई विना, रोम रोम में दुःख ॥ २७ ॥
 विरही तणो संदेसड़ो, सुणो पियारे मित्त ।
 तुम विन झूरै रामियो, सास उसासा नित्त ॥ २८ ॥
 तुम आवो अव रामजी, तुम विन दुखिया जीव ।
 तुम विन झूरै विरहिनी, परम सनेही पीव ॥ २९ ॥
 तुम मिलवा के कारणै, दिन दिन दूणी चाय ।
 रामदास विरही भया, अंदर लागी लाय ॥ ३० ॥
 आठ प्रहर विरही जगै, जाका मोटा भाग ।
 रामा प्रीतम कारणै, उनमुन अति वैराग ॥ ३१ ॥
 अंतर दारुण विरहकी, ताकूं लखै न कोय ।
 रामदास सो जाणसी, जा घट लागी होय ॥ ३२ ॥
 लागी जवही जाणियै, आठों पहर विसूर ।
 रामा प्रीतम कारणै, रोम रोम सब झूर ॥ ३३ ॥
 पिव मिलवाके कारणै, विरहिन ऊठै लाय ।
 रामदास कैसे मिटै, पीव विना दुख पाय ॥ ३४ ॥
 तुम सुखसागर साँइयाँ, विरही दाह मिटाय ।
 दव लागो तन भीतरै, तुम मिलियाँ सुख थाय ॥ ३५ ॥
 रामदासके विरह की, अंतर लगी पुकार ।
 रात दिनां लागी रहै, सतगुरु के उपकार ॥ ३६ ॥
 इति ।

अथ मन मृतक को अंग ।

रामदास मन मारिया, मार रु कीया खवार ।
 मूयां पीछे भूत हुय, फेर ल्यार को ल्यार ॥ १ ॥
 २५

रामदास मन मारिया, मार रु दीया चाल ।
 घर लागो अग्नी बुझी, फेर उठेगी झाल ॥ २ ॥
 सरप मार अर नाखियो, रामा साम्ने वाय ।
 वायु लाग चेतन मयो, उल्ट उणीकों राय ॥ ३ ॥
 मन कू मृत्तक जाण कर, मत कीजो विश्वास ।
 रामदास मन सरप ज्यू, जद तद करै निनास ॥ ४ ॥
 रामदास मन मारियो, मार रु काडी खाल ।
 घायलिया खरगोस ज्यू, फेर ऊठियो चाल ॥ ५ ॥
 मन कू मृत्तक जाणकर, मत कोइ रहो नचीत ।
 रामदास कर ऊठ कर, अतर करै कुपीत ॥ ६ ॥
 मन मृत्तक सो जाणियै, घायल ज्यू फिरराय ।
 रामदास दुखिया रहै, हरि सुमिरत दिनजाय ॥ ७ ॥
 जन रामा सतगुरु मिल्या, अर्थ यताया एक ।
 मन मृत्तक हृथ लगि रह्यो, आइ अत या टेक ॥ ८ ॥
 इति ।

अथ सखम मारग को अग ।

सो मारग पाया नहीं, साधु पहूता घ्याय ।
 रामदास भाग रह्या, कलह फल्पना मोंय ॥ १ ॥
 रामदास घर अलग है, जाका थाह न कोय ।
 अतर निधाय किम दुखै, है चाना मग सोय ॥ २ ॥
 कोन दिसा सू आनिया, कहो कोन दिस जाय ।
 रामदास अब भूलग्या, इहाँ पडेहँ आय ॥ ३ ॥
 रामदास उण देस सू, चाल न आया कोय ।
 कहु पुण कू ले भूझिये, मेरे मन की सोय ॥ ४ ॥
 रामदास उण देस सू, जायै सब ससार ।
 मार सीस पर शीत को, जाकी सुद्ध न सार ॥ ५ ॥
 यादल आडा जगतवे, सर आम रिच नाहिं ।
 साधु देह ससार में ग्रह पटतर माहिं ॥ ६ ॥
 साधु राम तो एरु है, निरला जाणै कोय ।
 रामा साधु ग्रह में, ग्रह साधु में होय ॥ ७ ॥
 ग्रहदेस सू सतजन, आन धन्यो अवतार ।
 रामदास उणदेमरो, अनुमय रियो निचार ॥ ८ ॥
 रामदास यूँ समन कर, साधु शरण संमाय ।
 साँसा दूर गमाय कर, अमर देश लेनाय ॥ ९ ॥

धरती अरु असमान विच, उभय वेलि असराल ।
 रामदास सब सोधिया, तंतु चल्या चहुं नाल ॥ १० ॥
 सिध साधक जोगी जती, सबही किया विचार ।
 रामदास समझ्यो विना, धोखो वारंवार ॥ ११ ॥
 आशा तृष्णा वेलड़ी, जामण मरण अखूट ।
 समझ्या सो तो सिध हुवा, अणसमझ्या सो झूट ॥ १२ ॥
 मारग अगम अथाह सा, मोपै लख्या न जाय ।
 जन रामा सतगुरु मिल्या, पलमें दिया चताय ॥ १३ ॥
 इति ।

अथ पीव पहिचान को अंग ।

पड़दामें रहै रामदास, सोतो धणी न जाण ।
 सकल मंडमें रमरह्या, तासूं करो पिछाण ॥ १ ॥
 सब सँ न्यारा रामदास, दुनिया जाणै नाहिं ।
 मैं हूँ सेवग जासका, सकल मंड ता माहिं ॥ २ ॥
 माय बाप जाकै नहीं, है अणघड़ अल्लेख ।
 रामा पेसा झीण है, रंग रूप नहीं रेख ॥ ३ ॥
 सब का करता एक है, परब्रह्म निजदेव ।
 रामदास घड़िया तजो, करो जास की सेव ॥ ४ ॥
 रामा एक पिछाणिया, ताहींसुं लिवलाय ।
 जो दूजा मुख नीकसै, तो दूँ जीभ कटाय ॥ ५ ॥
 सतगुरु के परताप सँ, लीया पीव पिछाण ।
 रामदास मुख आपणे, दूजी चहुं न बाण ॥ ६ ॥
 इति ।

अथ शब्द को अंग ।

रामदास सतशब्द का, भीतर लागा भेद ।
 बाहिर घाव न दीसही, रोम रोम विच छेद ॥ १ ॥
 छेद पड़्या सत शब्द का, भेद गया तन माहिं ।
 रामदास लागी इसी, करक कलेजा माहिं ॥ २ ॥
 लगी शब्द की रामदास, अघःऊर्ध्व विच चोट ।
 रोम रोम रंकार की, सब घट एको दोट ॥ ३ ॥
 दोट लगी सत शब्द की, ब्रह्मांड निकसी जाय ।
 रामदास ब्रह्मांड में, शब्द रह्यो गुंजाय ॥ ४ ॥

सोरठा ।

शब्दतणी सव मार, साराई शरीर में ।
रामा अणी न धार, रोम रोम बिच बहगई ॥ १ ॥

साखी ।

शब्द बाण सू मारिया, सबही मनका खोट ।
रामदास आकाश में, लगी अखड इक चोट ॥ ५ ॥
घर अतर बिच रामदास, एक शब्द गुजार ।
उहाँसे बापी उलटि के, निजसी दशरथ द्वार ॥ ६ ॥
शब्द गाऊ प्रह्लाड में, जाण मणकी पीण ।
रामदास सुर समलै, महा झीण सू झीण ॥ ७ ॥
रामदास घायल भया, सच शब्द की मार ।
आठ पहर घूमत रहै, सारै हृदा थार ॥ ८ ॥
शब्द मार करबी घणी, विरला झेलै कोय ।
रामदास सो झेलसी, निरह विकलता होय ॥ ९ ॥

सोरठा ।

रामा शब्द सभाय, सतगुरु बाह्या तनमें ।
आठ प्रहर घूमाय, घायलगा सो जाणसी ॥ १ ॥

साखी ।

जन रामा सतगुरु भिन्या, शब्द जु बाह्या तीर ।
उर अतर नख सिख निचै, सारै भिया शरीर ॥ १० ॥
इति ।

अथ ब्रह्म एकता को अंग ।

सगुण ॥ निगुण रामदास, तू एको कर जाण ।
एक ब्रह्म सत्र बीच में, समरथ पद निरघाण ॥ १ ॥
सगुण जु माया रामदास निगुण भाहिं समाय ।
एक ब्रह्म विस्तार है दूजा कहा न जाय ॥ २ ॥
पाला गल पाणी हुवा, जीव पलट हुवा ब्रह्म ।
निगुण सगुण जु एक हुय, रामा छूटा भमे ॥ ३ ॥
जीव मिलाणा सीर में, पलट हुवा निन ब्रह्म ।
हरिजन हरितो एक है, रामा कहा है अम ॥ ४ ॥

एक ब्रह्म सब वीच में, ताका चार न पार ।
रामदास तासूं मिल्या, दुवध्या दूर निवार ॥ ५ ॥
इति ।

अथ ग्रंथ-गुरु-महिमा ।

आये संत सधीर, लिये जगमें अवतारा ।
खोले भक्ति भंडार, मिल्याहै तिमिर अंधारा ॥ १ ॥
अमर लोक सूं आय, सिंहथल माहिं विराजे ।
तेजपुंज परकास, वजे अनहदके वाजे ॥ २ ॥
सतासमाधि अगम जहँ आसण, सुखमण सहज समाधी ।
आय रामियो चरणों लागो, सिख है आदि अनादी ॥ ३ ॥
हरिरामा हरि है अवतारा, अंतर कला कवीरुं ।
नामदेवसा दृष्टि देखतां, सूर संत सधीरुं ॥ ४ ॥
पत प्रहलाद चाल सनकादिक, ज्ञान सहित शुकदेव ।
ध्रुवसा ध्यान अटल अनुरागी, गोरख जैसा भेवू ॥ ५ ॥
दादूसा दीदार दुरस, कोइ दर्शन पावै ।
काल जाल सब जाय, भरम अघ दूर गमावै ॥ ६ ॥
दीर्घसा दिगपाल, मेरुसा अविचल कहिये ।
सूरजसा परकास, समंदज्युं थाह न लहिये ॥ ७ ॥
समंद संख्यामें होय, सत्तगुरु असंख कहाये ।
गोविंदतें दीरघ, चंदतें शीतल थाये ॥ ८ ॥
ब्रह्म विलासी संत, ब्रह्म का है व्योपारी ।
ज्ञान ध्यान गलतान, दीसतां दर्शन भारी ॥ ९ ॥
मुरधरके मँह माहिं, प्रगट्या सच्चा सोई ।
देख्या जगत रु भेख, और ऐसा कुछ नाई ॥ १० ॥
ऐसा है कोई संत, सूरवाँ कहियै सादू ।
हरिरामा गुरुदेव, मिल्या पूरव पुन आदू ॥ ११ ॥
जो पावै दीदार, दुरस होय चरणा लागै ।
भर्म कर्म सब जाय, काल अघ दूरा भागै ॥ १२ ॥
सिख कुं ज्ञान बताय, ब्रह्म के माहिं मिलवै ।
ऐसी औपधि लाय, जन्मका रोग मिटावै ॥ १३ ॥
सुणिया था सुरलोक, देवता वायक पूगा ।
अधिक ज्योति परकास, अनंत जहँ सूरज उगा ॥ १४ ॥

मिटिया तिमिर अनेक, तेज परकास्या माँही ।
 रामाकू गुरुदेव मिल्या, एर सच्चा साँह ॥ १५ ॥
 देसा हे गुरुदेव, हमारे शीश विराजै ।
 जैती महिमा होय, गुरु कू पती छाजै ॥ १६ ॥

साखी ।

गुरुमहिमा सीलै सुनै, बापा लेह विचार ।
 भजन करै गुरुदेव को, सो जन उतरे पार ॥ १७ ॥
 गुरुकी महिमा रामदास, करता हे दिनरात ।
 सतगुरुसा दूजा नहीं, सत भाखतहु बात ॥ १८ ॥

चौपाई ।

सह्य समी नहीं पर-दरिणा । सह्य समा प्रेम नहीं चखणा ।
 सह्य समा तीर्थ नहीं तिरणा । सह्य समा और नहीं शरणा ॥ १ ॥
 सह्य समा धूप नहीं रूपम् । सह्य सम नहीं तत्व अनुपम् ।
 सह्य समा पुण्य नहीं दाना । सह्य समा ज्ञान नहीं ध्याना ॥ २ ॥
 सह्य समा जोग नहीं जग्गा । सह्य समा और नहीं सग्गा ।
 सह्य समी फरत नहीं कहणी । सह्य समी रहन नहीं रहणी ॥ ३ ॥
 सह्य समा उड़त नहीं गड़िता । सह्य समा पढ़ा नहीं पँडिता ।
 सह्य समा पिता नहीं माता । सह्य सा नहीं तस्य विधाता ॥ ४ ॥
 सह्य समा धीर नहीं बधू । सह्य समा और नहीं साधू ।
 सह्य निना नरक में जायै । सह्य निन कहु कौन छुडायै ॥ ५ ॥
 सह्य निना कहु नहीं छूटै । जहँ जायै जहँ जमरो लूटै ।
 सह्य निना बहुत फिर मटवै । जहँ जायै जहँ जमरो पटवै ॥ ६ ॥
 सह्य निना सबै कौ ध्यावै । गोमा पावू भात सरायै ।
 सह्य निना सबै कौ जाणै । क्षेत्रपाल बहु मृत घटाणै ॥ ७ ॥
 सह्य निना सब कौ मेरै । धूप रूप सो बहु दिन खेवै ।
 सह्य निना सबै कौ जोवै । करमात रुधि लिधि कौ सोवै ॥ ८ ॥
 सह्य निना एक नहीं सूनै । अनैत दयकों फिर फिर पूनै ।
 सह्य निना यह देव वखाणै । हदसी बात सफर कर जाणै ॥ ९ ॥
 सह्य निना राम नहीं पावै । रमना बठ किमु प्रेम मिलायै ।
 सह्य निना हृदय नहीं सूधा । निजनाम निन कमलबु ऊधा ॥ १० ॥
 सह्य निना नामि नहीं यावै । आसोछुडास कहो किमु लावै ।
 निन रगरग नहीं योवै । अतर ध्यान कहो किमु खोवै ॥ ११ ॥

उदय अस्त लग अदल चलावै । विधि लोक सुरलोक जावे ॥ १० ॥ तोहि० ।
सप्तद्वीप लो आँण सवाई । एक चक्रवर्ती ठडुराई ।

एको सुमुख कही नहिं भाया । फिर पाछा गमवासा आया ॥ ११ ॥ तोहि० ।
कोटिक ब्रह्मा विष्णू ध्यावै । शिव शक्ती सू ध्यान लगावै ।

और देव बहुतेरा सेवै । धूप रूप सो निशि दिन सेवै ॥ १२ ॥ तोहि० ।

चवदह भवन काल घर जाये । ब्रह्मा विष्णु महेश डरावै ।

काल डरे अणघड सू भाई । तासु सताँ सुरति लगाई ॥ १३ ॥ तोहि० ॥

साखी ।

ता मूरत पर रामदास, बार बार बलिजाय ।

विणज करै ता मामको, जाकुँ काल न खाय ॥ १ ॥

चौपाई ।

शून्य शिखरमें हाट मडाया । विणजण कू व्योपारी आया ।

हरि हीरों की धकड़ी लगाई । निजनाम की गूण भराई ॥ १ ॥

पाव पचीस बलधिया लाया । गूण घाल अरु लाव चलाया ।

सतगुरु कहै चेला तुम जायो । काया पाटण विणज हलायो ॥ २ ॥

चेला बलकर लारै आया । दिल भीतर याजार मडाया ।

चित्त चोहटै आण उतारी । फिर फिर जावै सब व्योपारी ॥ ३ ॥

ततफी तराजू दिल की डाँडी । उर भीतर हम हाट जो माँडी ।

कड़वा करम परा कर पावै । तत्त नाम एक हीर जु राखै ॥ ४ ॥

अध ऊर्ध्व विच रस्त चलाई । जमडाणी अय न्यारा भाई ।

विणजरै विणजारो जागै । जम डाणी का जोर न लागै ॥ ५ ॥

हाट मँडाई चोड़ै चोहटै । चोर न मुसै लाट नहिं बाटे ।

विणजण कू जग चलकर आवै । हीरा पारख कोई न पावै ॥ ६ ॥

जोहरि होय सो पारख पावै । तन मन दे हीरा ले जावै ।

हरि हीरा की नाव चलाई । जगभीतरमें धुरा बघाई ॥ ७ ॥

धुर घोहरे अय मेल घणेरा । विणज करै अरु सुनमें डेरा ।

आपहि धुर आपहि है चोरा । आपहि विणजै आपहि हीरा ॥ ८ ॥

हरि हीरा का मन्या मँडारा । विणज करै है अगम अपारा ।

विणज करै अरु सुनमें आया । सतगुरु सेती शीस नियाया ॥ ९ ॥

शून्य शिखर में गुरु विराजै । रात दिना नित नोबत यावै ।

सिख सतगुरु एक मिल दूया । विणज करै अरु कबू न जूया ॥ १० ॥

साखी ।

सतगुरु समाजु को नहीं, इण जुग ही के माहिं ।
 रामदास सतगुरु विना, दूजा दीसै नाहिं ॥ १ ॥
 सूरत शुद्ध कवीरसी, दादु सा दीदार ।
 हरिरामा हरि सारसा, अनंत जोत अधिकार ॥ २ ॥
 हरिरामा गुरु सूरवाँ, ज्ञान ध्यान भरपूर ।
 चौरासी सूं काढ कर, किया काल जम दूर ॥ ३ ॥
 पेसा साधू नामदे, जैसा है हरिराम ।
 रामैं कूं शरणै लियो, मेल निरंजन राम ॥ ४ ॥
 हरिरामा प्रह्लादसा, जैसा रामानंद ।
 चरण परस चित चेतिया, मनमें भया अनंद ॥ ५ ॥
 विष माया सब त्यागकरि, हिरदै ध्यान लगाय ।
 रामदास निरमै भया, सतगुरु शरणै आय ॥ ६ ॥
 सतगुरु केवल रामदास, मिल्या निकैवल माँय ।
 हरिरामा संत ब्रह्म है, सिखभी निरमै थाय ॥ ७ ॥
 चरणा चाकर रामियो, सतगुरु है महाराज ।
 च्यार चक्र चवदै भवन, ताहि परै संतराज ॥ ८ ॥
 सतगुरु को मुख देखतां, पाप शरीरां जाय ।
 साधुसंगति सत रामदास, अटल पदी लेजाय ॥ ९ ॥
 गुरु गोविंद की महरतें, रामा पड़ी पिछाण ।
 सब संतां के ऊपरै, वारुं मेरा प्राण ॥ १० ॥
 दरसन दीठां रामियां, भाज जाय सब भर्म ।
 पेसा गुरु हरिरामजी, परस्यां काटै कर्म ॥ ११ ॥
 पूरण ब्रह्म विराजिया, गाम सिंहथल माहिं ।
 रामदास जन जाणसी, दूजां कूं गम नाहिं ॥ १२ ॥
 इति ।

॥ श्रीरामभक्तैभ्यो नमः ॥

अथ श्रीभक्तमालप्रारंभः ।

साखी ।

मैं अबला हौं रामदास, आँघो अंत अचेत ।
 तुम सतगुरु हो शीश पर, हमकों करो सचेत ॥ १ ॥
 रामदास की वीनती तुमहो, अगम अपार ।
 भक्तमाल का मेव दो, सतगुरु करौं जुदार ॥ २ ॥

चौपाई ।

सतगुरु मिल्या नामनिज पाया । सत्तश इकों निशिदिन घ्याया ॥
 हृदय कमल घर लीया वासा । बीन मचि मोहि उपजी आसा ॥ १ ॥
 नाभिकमल में राम मिलाया । रोम रोम में रग लगाया ॥
 उलटि दाय्य पधिम दिशि फिरिया । अघ ऊर्ध्व प्रेमरस हरिया ॥ २ ॥
 मनवा उलटि अगम घर आया । सय सन्तन का दर्शन पाया ॥
 सय सैत मेरे शीश विराजै । सत्त शब्द सन्तों मुख छाजै ॥ ३ ॥
 सय सन्तन कों राम पियारा । भक्तमाल का करी उचारा ॥
 रामनाम सपति सुखदाई । सय सन्तों मिल साख दताई ॥ ४ ॥
 रामनाम घ्यावै कुल माई । सो बाधय है मेरा भाई ॥
 रामनाम कों निशिदिन घ्यावै । आधागमन यहुरि नहि आवै ॥ ५ ॥
 रामनाम कों निशिदिन घ्यावै । अटल पद अमरापुर पावै ॥
 रामनाम कों निशिदिन घ्यावै । दु ख दारिद्र हि दूरि गमावै ॥ ६ ॥
 रामनाम से बहुत तिरिया । अनंतकोटि अनेक उधरिया ॥
 रामनाम की सुनिये साया । अजामेल पुन जिन राखा ॥ ७ ॥
 रामनाम की कहाँ बढाई । अहिल्याकों जु निमान बढाई ॥
 रामनाम का मता अपारा । हीनर कुटुब सहैता तारा ॥ ८ ॥
 रामनाम गजराज उधारे । सय सन्तन का काज सुधारे ॥
 रामनाम से शिला तिराई । पाणी ऊपर पान बँदाई ॥ ९ ॥
 रामनाम केहा गुण गाऊ । जुग जुग भक्ति तुम्हारी पाऊ ॥
 रामनाम की महिमा भारी । मो अगला कों तार मुरारी ॥ १० ॥
 तीन लोक में राम घियाया । सो सत जु मेरे मन माया ॥
 रामदास कों राम पियारा । जो सुमरे सो प्राण हमारा ॥ ११ ॥

सारी ।

हरि की महिमा रामदास, कहिये कहा बनाय ।
 अनंतकोटि नर उद्धरे, रामनाम लिख लाय ॥ १ ॥

छंद नीसानी ।

सतगुरु स्वामी चौ निजनामी निज ही नाम घियावन्दा ।
 गणेश गरवा कानों सरधा अधि सिद्धि बुद्धि मिलावन्दा ॥ १ ॥
 दश अवतार ब्रह्म विचार करकार मिल जावन्दा ।
 पानी पवन ह धरती अवर चंद सूर गुन गावन्दा ॥ २ ॥
 नव मी नाथ बारह पथ परमल परमू घ्यावन्दा ।
 छठ मी जतियाँ सातों सतियाँ बेठ जानि जुग जीवन्दा ॥ ३ ॥

एको अच्छर मंडे मच्छर ॐकार उपावन्दा ।
 लखचौरासी है अविनासी पूर्णब्रह्म समावन्दा ॥ ४ ॥
 है भी न्यारा प्रियतम प्यारा जाहिर जोगी जाणन्दा ।
 कोटि अनन्तू मिले निरन्तू रोम रोम रस माणन्दा ॥ ५ ॥
 है जुग चारु सन्त अपारु दास दीनता गावन्दा ॥
 हम कीड़ी कायर हरि सुख सायर उलटा अमर भरावन्दा ॥ ६ ॥
 थाह न पाया ध्याय मिलाया समदाँ वृन्द समावन्दा ।
 रामादासू सतगुरुपासू नमि नमि शीश नमावन्दा ॥ ७ ॥

साखी ।

सतगुरु सेती वीनती, मनका मत्सर भेट ।
 रामदास कों दीजिये, भक्तमाल जश भेट ॥ १ ॥

चौपाई ।

प्रथम हि नाम सदाशिव लीया । पार्वती कों निज तत दिया ॥
 सो सुनि नाम सूबा ले भागा । उदरहि माहिँ राम लिव लागा ॥ १ ॥
 बाहिर आइ बसे वन जाई । रामनाम से प्रीति लगाई ॥
 वेदव्यास बहु ज्ञान उपाया । राम राम कहि उलटि समाया ॥ २ ॥
 ब्रह्मा विष्णु रामसे रत्ता । कुबेर जोगी राम सुमरता ॥
 शेषनाग गुरुज्ञान विचारा । सहस्र मुखों से राम उचारा ॥ ३ ॥
 राम रसायन नारद पीया । ऋषि सनकादिक हरिगुण लीया ॥
 मारकंड लोमश ऋषि भाई । रामनामसे प्रीति लगाई ॥ ४ ॥
 गर्ग ऋषी जु रामसे रत्ता । गौतम कागभुशुंडि सुमरता ॥
 जयदेव ऋषि की प्रीति पियारी । उद्धव हरिसे लाई तारी ॥ ५ ॥
 पिप्पलाद ऋषि हरि हर ध्याया । ज्ञान पाय अज्ञान मिटाया ॥
 कुंभी ऋषि काम को जीता । काया गढ ले भया वदीता ॥ ६ ॥
 करणवंध ऋषि राखी काया । नाद विन्द ले गांठ घुलाया ॥
 अगस्त्य ऋषि जुगे जुग जीया । सात समुँदका पाणी पीया ॥ ७ ॥
 भृगुजी ऋषि ब्रह्म को चीन्हा । विष्णुदेवका परचा लीन्हा ॥
 सेवा करी श्याम से लागा । काल क्रोध भय अंतर भागा ॥ ८ ॥
 नासकेत उद्दालकपूरा । आन मिल्या सुखसागर सूरा ॥
 ऋषि समीक भूमंडल गाया । रामनाम को निशिदिन ध्याया ॥ ९ ॥
 ऋषि दालभ्य एक धुन धारी । सत्तशब्द से प्रीति पियारी ॥
 मुनि वशिष्ठ समाधी सूरा । निशिदिन रहते हरी हजूरा ॥ १० ॥

ऋषभदेव रामसे राता । निजनामसे कीया नाता ॥
 गुरु गागेय राम गुण गाया । जिन माँई को भेद घताया ॥ ११ ॥
 विश्वामित्र हि ब्रह्म विचार । रोम रोम में राम उचार ॥
 बाहुबल बलबता हूया । मन को जीति सन्तों मिल बूया ॥ १२ ॥
 राजा भरत मद्दा पटरानी । दोना भक्ति निवेबल जानी ॥
 महावीर मद्दा तत पाया । केवल होइ मोक्षपद पाया ॥ १३ ॥
 केशौ कुँवर काम दल पाला । परदेशी सन्तों मिल हाला ॥
 चौबीस तियकर राम धियाया । केवल होइ मोक्षपद पाया ॥ १४ ॥
 भगवन्नाम निरजन मेल । निजनाम से कीया मेल ॥
 काल जाल जम का डर नहीं । भगवद् मित्या ताहि घर माहीं ॥ १५ ॥
 सरियादे प्रहाद उधरिया । रामनाम ले कहू न डरिया ॥
 मीठ पढी सन्तों पल आया । हिरण्यकशिपु को मार गुहाया ॥ १६ ॥
 सिंह रूप अवतार धारिया । तिलक दिया प्रहाद तारिया ॥
 कार्तिकेयमी हनुमत सूर । सीता लक्ष्मण राम हजूर ॥ १७ ॥
 त्यागा राज भरत बन लीया । राम रसायन निशिदिन पीया ॥
 रिपुह्न राम राम गुण गाया । मन्दोदरी रिभीषण पाया ॥ १८ ॥
 तुलसीदास राम का प्यारा । आठों पहर मगन मतवारा ॥
 भूत मित्या हरि भेद घताया । हनुमान हरि धरणाँ लाया ॥ १९ ॥
 राजा जनक राम का प्यासा । खट दिलीप प्रेम परकासा ॥
 परीक्षित प्रेम पियाला पीया । ज-मेजय निजतत ले जीया ॥ २० ॥
 पारायण सुनिवे पद पाया । आज गमन बहुरि नहि आया ॥
 रूपमागद पुँडरीक उधरिया । राजा शिवी सत्य से तिरिया ॥ २१ ॥
 गूँड राज गोविन्द गुण गाया । सुषसागर में सहज समाया ॥
 मोहमर्द निरमोही राजा । दीटा जाय अगम का छाजा ॥ २२ ॥
 परजादीप परम तत पाया । हाक्म सन्तों चरण लगाया ॥
 बटिया करम रामको गाया । दिन पतीसाँ मोक्ष मिलाया ॥ २३ ॥
 मोरघ्यज का मता करार । त्यागी देह राम का प्यारा ॥
 सदाचत दीया सुख पाया । सन्तन को बहु शीश नचाया ॥ २४ ॥
 प्रेम भक्ति सँ प्रीति लगाई । पैकुटाँ चढि नोयत घाई ॥
 जन अमरीष रामगुण गाया । चरणामृत लेखर सुख पाया ॥ २५ ॥
 दुखासा अपि शापन आए । उलटा दु ख उसीको घाए ॥
 तति लगी तनमें बहुभारी । सादिय सेती अरज गुदारी ॥ २६ ॥
 हरिजन हरि को बहुत पियारा । भक्काज धरिया अवतारा ॥
 उलटा करी लगाए पाए । सन्तन का कारज सुधराए ॥ २७ ॥

द्विज कन्या दिल माहीं दरस्या । उलटी मिली अगम घर परस्या ॥
 राजा हरिचंद सती कहाया । सत्त न हान्या हाट विकाया ॥ २८ ॥
 बलि जिग माहीं जाग रचाया । वावनरूप छलन को आया ॥
 बलि नहि छलिया आप छलाया । राज पयालों निश्चैपाया ॥ २९ ॥
 पांडव पाँच राम का प्यारा । कुन्ताँ माता अगम अपारा ॥
 पांडव जग में जाग रचाया । चार कौंट का ऋषी बुलाया ॥ ३० ॥
 जाग जीमिया शंख न बोला । स्वामी काहिन अन्तर खोला ॥
 स्वामी भेद सन्तका दीया । पांडव जाय बाल गुण लीया ॥ ३१ ॥
 बालमीकि की शोभा सारी । कीन्हो जाग सँपूरण भारी ॥
 दूजा बालमीकि इक हुआ । रामनाम कहि निरभै वृथा ॥ ३२ ॥
 शतकोटी रामायण कीन्ही । स्वर्ग मृत्यु पातालों दीन्ही ॥
 निश्चै नाम एक की आसा । रामनाम कह ब्रह्म विलासा ॥ ३३ ॥
 द्रौपदि प्रेम पियाला पीया । वीर बधार परम सुख लीया ॥
 विदुर जु मेव भक्ति का पाया । नाम निकेवल निशिदिन ध्याया ॥ ३४ ॥
 बथवै हन्दा शाक बनाया । साहिव को परसाद कराया ॥
 साहिव साधू प्रीति पियारी । कैरव हार गए अहँकारी ॥ ३५ ॥
 सूरदास सन्ताँ सुखदाई । रामनाम से प्रीति लगाई ॥
 कालू कीर राम का प्यारा । रोम रोम में लीया झारा ॥ ३६ ॥
 सँत हरिदास सुरति उलटाई । देवहुति भूमि सातवीं पाई ॥
 ध्रुवजी ध्यान धणीसे लाया । अटल पदी अमरापुर पाया ॥ ३७ ॥
 भक्त वंश में सन्त जु सूर । वैकुंठ मिलिया जन पूरा ॥
 रतनदास राम सों रत्ता । रोम रोम में लगा तत्ता ॥ ३८ ॥
 नरसीदास राम का प्यासा । प्रेम भक्ति पाई परकासा ॥
 साँई के सँत हुआ हजुरी । कर माहेरो आशा पूरी ॥ ३९ ॥
 तिलोकचंद की भक्ति करारी । लेखण स्याही आप मुरारी ॥
 सुदामा का दारिद हरिया । रामनाम पेसा गुण करिया ॥ ४० ॥
 प्रेम भीलणी भक्ति पियारी । बोर पायकर शिपा बधारी ॥
 सरिता नीर निरमला कीया । शबरी रघुवर दीका दीया ॥ ४१ ॥
 सर जहँ ऋषी सत्तगुरु पाया । ऋषि मिल हरि दर्शन को आया ॥
 शबरी भक्ति भली पण कीन्ही । सब ऋषियाँ मिल माँहे लीन्ही ॥ ४२ ॥
 ईश्वर बाप गधा कूँ कीया । पिता पुत्र खोला में लीया ॥
 नेमनाथ नारायण ध्याया । भेदी भेद ब्रह्म का पाया ॥ ४३ ॥
 आदिनाथ मिलिया अविनासी । केवल हुआ एक सुखरासी ॥
 गनिका गुरु सूवा को पाया । सत्तशब्द को निशिदिन ध्याया ॥ ४४ ॥

रका वका राम पियासा । नामा छीपा हरि का दासा ॥
 देवल फेर रु दूध पिलाया । ध्यान रूप हुइ भोजन पाया ॥ ४५ ॥
 परचा पूजा परज पतीनी । दशधा भक्ति नामदे कीनी ॥
 दत्त दरद दिल भीतर पाया । गुरु चोखीसु ले गुण गाया ॥ ४६ ॥
 निश्चय एक नाम की आसा । रामनाम कह ब्रह्म विलासा ॥
 विष्णुस्वामी माघवाचारा । सत्त शब्द ले किया पसारा ॥ ४७ ॥
 रामानुज निग्यारक भाई । कलियुग माहीं भक्ति हलाई ॥
 राघवानन्द राम का प्यारा । रोम रोम में लीया क्षारा ॥ ४८ ॥
 रामानन्द मुख राम उचारा । निगुण मकी किया प्रचारा ॥
 चार सप्रदा वायन द्वारा । हुआ शिष उजियागर सारा ॥ ४९ ॥
 भाषानन्द अनंतानंद दासा । रामनाम से लाई आसा ॥
 नरहरिनन्द निरैउल लीया । स्वामि गालथे हरि रस पीया ॥ ५० ॥
 धेनै सुरसैर सुरति लगाई । रामनाम मीठो रे भाई ॥
 सतन के मुख धीज बुहाया । खेती माहिं नाज निपजाया ॥ ५१ ॥
 दास बैबीर मगन मत पारा । सहज समाधि बणी इक धारा ॥
 सय सन्ताँ में चकथे हुआ । ब्रह्म गिलास कबू नहिं जूझा ॥ ५२ ॥
 हुइ निगनारा बालद लाया । सदायत दे सत्त सराया ॥
 कमाल कमाली हरि गुण गाया । सुखसागर में सहज समाया ॥ ५३ ॥
 कबीर कमाल जमाल जमहा । शेष करीद सुमरिया अहा ॥
 श्रीसहस्राक्ष गुरु गम पाई । यहचर शिष मिल पद्धति लाई ॥ ५४ ॥
 सेनै सुखा योगानंद भाई । आय मित्या सुखसागर माई ॥
 सीता पीपे प्रेम पियाया । रामनाम रटिया इक धारा ॥ ५५ ॥
 गेले माँहि किया सिद्ध चेला । रामनाम से वाप्या चेला ॥
 भ्रांपापात समंद में ली ही । छापा आय परगटी की ही ॥ ५६ ॥
 राम राम रैदास उचरिया । रोम रोम में नीझर झरिया ॥
 कादि जनेऊ विप्र जिमाया । शालग स्वामी मुखाँ बोलाया ॥ ५७ ॥
 पद्मारैती प्रेम रस पागी । सय संग छाँडि राम लिय लागी ॥
 मिश्र तणा चरणामृत दीया । साहिव सहजाँ अमृत पीया ॥ ५८ ॥
 अमृत उलटि मित्या घट माहीं । जन रैदास सत्तगुरु पाहीं ॥
 बुल मारग को बाने त्याग्या । मीरा चली गुण की आझा ॥ ५९ ॥
 रतना करमा मीरा याई । झाली प्रीति राम से लाई ॥
 पूली प्रेम पियाला पीया । सतगुरु से मिल निच तत लीया ॥ ६० ॥
 धमण मन की थिर करि राखा । रामनाम मनिया सुण साखा ॥
 धर्मदास ध्यान करि ध्याया । अनहद नाद अछडित बाया ॥ ६१ ॥

टीलमदास लगावै तत्ता । लाहदास राम से रत्ता ॥
 झानी झान चीन्हिया निर्गुण । माया दूर करी सब सर्गुण ॥ ६२ ॥
 गेवीराम नैव से मिलिया । सब सन्तों सुखदाई मिलिया ॥
 गोविन्दराम राम गुण गाया । केवलदास निकेवल पाया ॥ ६३ ॥
 अलहैदास अगम की आसा । भक्ति पदीमें कीन्हा वासा ॥
 कोल्ह गैस कुलशेखर सारा । मुकुन्ददास मिल्या तत तारा ॥ ६४ ॥
 मुरलीदास मलूका बेई । आन मिले सुखसागर तेई ॥
 चँदरै चित चेतन करि जाण्या । सतरै रोम रोम रस माण्या ॥ ६५ ॥
 मुख भीड़ पीया रस वंकी । चवड़े चपट मँज्या चित चोकी ॥
 चित से चित चेतन करि ध्याया । आतम में परमातम पाया ॥ ६६ ॥
 हीरदास हरि का हित कारी । सत्यशब्द से प्रीति पियारी ॥
 कान्हरदास काम कों त्यागा । रामनाम से निशिदिन लागा ॥ ६७ ॥
 मगनीराम मगन में रहणा । आठ पहर नित राम सुमरणा ॥
 जंगीराम जुक्ति करि जाना । ब्रह्म चीन्ह निज तत्व पिछाना ॥ ६८ ॥
 बालकदास ब्रह्म व्योपारी । उलटे आइ लगाई यारी ॥
 केशवदास काम कुण काजी । राम राव भजिया हुइ राजी ॥ ६९ ॥
 हरचँददास चरणा चित लाया । सतगुरु सेती प्रेम मिलाया ॥
 चेतनदास चेत जुग जीया । आतम राम रसायन पीया ॥ ७० ॥
 मोहनदास मानगढ मारा । रोम रोम में राम पुकारा ॥
 मानादास महा रस पीया । उलटे आइ अगम सुख लीया ॥ ७१ ॥
 दास मुरारि मिल्या तन मोंए । तिरवेणी चढि ध्यान लगाए ॥
 सत शिवदास श्यामसे सच्चा । सत्त शब्दसे निशिदिन रच्चा ॥ ७२ ॥
 घाणारसी राम सों लागा । उलटा मिल्या अगम घर आगा ॥
 दईदास दिल माहीं दरसा । रोम रोम में अमृत वरसा ॥ ७३ ॥
 जन पयहारी परिपक हुआ । ब्रह्म विलास कबहु नहि जूआ ॥
 कृष्णदास राम गुण गाया । वे गलते का महन्त कहाया ॥ ७४ ॥
 अगर कील्ह हुआ उजियागर । अनुभववानि मिल्या सुखसागर ॥
 घम्बर नामै हरि गुण गाया । भक्तमाल कर सन्त सराया ॥ ७५ ॥
 सस्मन सेज प्रेम पियारा । राम राम रटिया इक धारा ॥
 घाटमदास जातिका मेणा । सतगुरु सेती मिलिया सेणा ॥ ७६ ॥
 झाला भर गेहूँ का लाया । सन्तन को परसाद कराया ॥
 कीता मिल्या राम से राजी । रोम रोम में झालर वाजी ॥ ७७ ॥
 तापै तपस्या करी करारी । लोधिये जाय लगाई यारी ॥
 मानक गुरु नाम निज पाया । चार कौट में पन्थ हलाया ॥ ७८ ॥

ईश्वरदास रामका प्यारा । हरि गुण कथिया अगम अपारा ॥
 आशोदास अगम की आसा । बनक दडवत की बहुदासा ॥ ७२ ॥
 परमानंद आनंद हुए माई । रामनाम से प्रीति लगाई ॥
 धरि अवतार बूढ़ण हुए आया । दादू को निज नाम सुनाया ॥ ८० ॥
 दादूदास राम का प्यारा । चार पन्थ ले किया पसारा ॥
 धायन शिष्य हुए उजियागर । अनुभव धानि मिले सुखसागर ॥ ८१ ॥
 दासगरीब गुरु घर आया । मेदी मेद ब्रह्म का पाया ॥
 रज्जय पिया राम रस भारी । सतगुरु सेती प्रीति पियारी ॥ ८२ ॥
 प्रीति लगाय प्रेम रस पीया । नाम निवेचन निशिदिन लीया ॥
 सुन्दरदास मिल्या सुख माँप । नाम निकेरुल निशिदिन ध्याप ॥ ८३ ॥
 मुक्ति पथ का पाया मारग । दादूराम मिल्या गुरु तारग ॥
 पीये प्रेम पियाला पीया । गोरख जोगी दर्शन दीया ॥ ८४ ॥
 जो गोरख जोगी तुम आदू । उरभीतर में है गुरु दादू ॥
 छालदास लगा गुरु घाटी । फी-ही दूर भर्म की टाटी ॥ ८५ ॥
 नाहूराम निवेचन लीया । जन गोपाल जानि अंग जीया ॥
 दासप्रयाग परम पद पाया । जैमलदास नितो नित ध्याया ॥ ८६ ॥
 घबसी टीलमदास फरीरा । सतदास मिलिया सुखसीरा ॥
 बखना बाजीदा हरिदासा । सदनै राम भग्या इफ सासा ॥ ८७ ॥
 शोभाराम रामगुण गाया । हरिव्यासी हरि माहिं समाया ॥
 परशुराम राम मतयारा । सब सत्ताँ से मिलिया प्यारा ॥ ८८ ॥
 सतवेता निज तत्व पिछाना । घमडीराम राम भू जाना ॥
 पीरम त्यागी तन मन त्याग्या । राम राम भजिया गुरु आजा ॥ ८९ ॥
 हरदासी हरि से हित लाया । रामनाम को निशिदिन ध्याया ॥
 खोजी खोज पकडिया सेंठा । सब सत्ताँ माहिं मिलि बेठा ॥ ९० ॥
 केवल भूया ब्रह्म विलासी । उलटा अलरा मिल्या अविनासी ॥
 खेमदास की आशा पूरी । निशिदिन राया राम हजरी ॥ ९१ ॥
 शकर स्वामी सुमरण पीया । अजपाजाप रामरस पीया ॥
 गोपीचन्द भरतरी पूरा । अनहद अण्ड धजाया दूरा ॥ ९२ ॥
 गोरखनाथ मछंदर जोगी । रग रग मेद लिया रस भोगी ॥
 कोटि निमाणू राजाहुआ । गाया राम अगम घर बूआ ॥ ९३ ॥
 हरीदास पूरा गुरु पाया । नाम निरजन पथ कहाया ॥
 बारह शिष्य मिले सुखमाँई । पादू माता चेठी फाई ॥ ९४ ॥
 द्वादश पथ सठ बड भागी । छाप निरजन माया त्यागी ॥
 अजन त्यागि निरजन ध्याप । ताते निरजन पन्थ कहाप ॥ ९५ ॥

जगजीवन तुरसी अरु सेवा । रामरसायन पीया मेवा ॥
 भुवन मेव भक्तीका पाया । खाँडै खेरतणे लोह वाया ॥ ९६ ॥
 राजा जसू जुक्तिकरि जाना । ब्रह्म चीन्ह निज तत्त्व पिछाना ॥
 जगतसिंह की प्रीति पियारी । राव पलटि चरणाँ मति धारी ॥ ९७ ॥
 देवे पंडे प्रीति लगाई । पत्थर मूरति मूँछ अणाई ॥
 गूदड़ रूप होय हरि आया । सन्तदास सँत दरशण पाया ॥ ९८ ॥
 किरपा करी नाम निज दीया । सास उसास एक ध्वनि लीया ॥
 सन्तदास मिलिया सुख माँई । तिरबेनी चढि ध्यान लगाई ॥ ९९ ॥
 अनुभव शब्द सन्त बहु बोल्या । भक्ति पन्थका पड़दा खोल्या ॥
 गाँव दांतड़े का सँत वासी । चारों कौंट भक्ति परकासी ॥ १०० ॥
 बालकदास रामका प्यारा । प्रेम परम तत किया पसारा ॥
 गिरधरदास रु खेमकुमारी । परमानन्द लगाई यारी ॥ १०१ ॥
 जाहर जोगी जगमें जीता । शूरवीर सँत भया विदीता ॥
 दरियासा दिल माँही दरसा । उलटा मिल्या अगम घर परसा ॥ १०२ ॥
 सहज समाधी सन्त कहाया । प्रेम पियाला भरि भरि पाया ॥
 किलनदास कामकों मेंढ्या । उलटा चढ्या अगम घर मेंढ्या ॥ १०३ ॥
 नाद बिन्द में सन्त जु सूरा । दशमद्वार निज परसत नूरा ॥
 सुखरामा सतशब्द सँभाया । मनकों ले खुरसाण चढाया ॥ १०४ ॥
 कर्म काटि सब काने कीया । दीठा जाय अगम का दीया ॥
 नानकदास नाम निज पाया । श्वासोच्छ्वास नितो नित ध्याया ॥ १०५ ॥
 पूरणदास प्रेमरस पीया । सतगुरु संग मिल जुग जुग जीया ॥
 मोहनदास मिल्या सुख माँई । तिरबेनी चढि ध्यान लगाई ॥ १०६ ॥
 सेवादास मिल्या सुख माँई । बैकुण्ठों चढि नौबत वाई ॥
 सदाराम शून्यका वासी । परम ज्योति सहजाँ परकासी ॥ १०७ ॥
 घमडीराम घमड़ में रत्ता । रोम रोम में लगा तत्ता ॥
 चरणदास चरणाँ चित लाया । सतगुरु सेती प्रेम मिलाया ॥ १०८ ॥
 जैरामा जन मिलिया जाहीं । काल जाल जमका डर नाहीं ॥
 खेतादास खरा हुइ लागा । उलटा मिल्या अगम घर आगा ॥ १०९ ॥
 हेमदास हरिका हित कारी । सत्त शब्दसे प्रीति पियारी ॥
 हरीदास सन्त जु वडभागी । उलटी सुरति निरन्तर लागी ॥ ११० ॥
 साँवलदास मिल्या सुखमाँई । पारब्रह्म परमानंद पाई ॥
 दास पंचायन परिपक हुआ । हृदकों त्यागि बेहदकों चूआ ॥ १११ ॥
 टीलमदास रामका प्यारा । रोम रोम विच लीया झारा ॥
 पच्छिम दिसा मुसाफिर आए । जैमलदास भगत बतलाए ॥ ११२ ॥

सासेती जैमल जल पाया । जय बालक कों सग बुलाया ॥
 सुण रे बालक घात हमारी । तोनों दागूँ गुन हदारी ॥ ११३ ॥
 गेलैमें गुरुज्ञान सुणाया । योग सहित निज नाम घनाया ॥
 जैमलदास जानि जुग जीया । आतम राम रसायन पीया ॥ ११४ ॥
 पंचग्राहीके महन्त बढाये । सब सन्तन में सहज समाये ॥
 ब्रह्मध्यान सुणियो सुधि पाई । एको नाम सत्य है भाई ॥ ११५ ॥
 जयतै रसना राम धियाया । कठक्मल में प्रेम मिलाया ॥
 हृदयक्मल धमकार सुणीज । बाली सुरति मठगुरु कीज ॥ ११६ ॥
 जैमलदास सत्तगुरु पाया । जद मनरा मेरा पतियाया ॥
 हरिरामा हरि का हितकारी । सहज समाधि बनी अति भारी ॥ ११७ ॥
 ब्रह्म बिलासी हरिजन सूर । शिष्य शाखा मिल हुआ पूरा ॥
 सत्य शब्द ले किया पसारा । सतहीन नव नद निस्तारा ॥ ११८ ॥
 निज नाम की नाय चलाई । तारक भत्र भक्ति अति भाई ॥
 चाँपाँ माता चित करि पीया । उलटे आई अगम सुग लीया ॥ ११९ ॥
 रोम रोम सहजाँ लिय लागी । दास निहारि मिले बडमागी ॥
 दखियाँपाई रामपियारी । अनहद अखड लगाई तारी ॥ १२० ॥
 दासनरायण अमी धियाया । आदुराम रामगुण गाया ॥
 लक्ष्मणदास राम लिय लागी । ज्ञान विचार अप घैरागी ॥ १२१ ॥
 दईदास गुरुज्ञान सँभाया । मनमें ले गुरुवरण बढाया ॥
 सय सिफाँ सपति सुखदाई । सतगुरु सेती प्रीति लगाई ॥ १२२ ॥
 गाम सींहधल सतगुरु मिलिया । रामदासना अंतर भिलिया ॥
 सतगुरु ब्रह्म एक है साधो । रामनाम निशिदिन आराधो ॥ १२३ ॥
 रामदास सता शरणाई । मकमाल ले शीश बढाई ॥
 मकमाल भगपद मन भाई । अनैत कोटि मिलिया इन भाई ॥ १२४ ॥

मासी ।

रामदास रग से मिल्वा, सुन्दर सुर के भाई ।
 सहज है हरिरामजी, (चाँपा) माता सहज समाई ॥ १ ॥
 सहज मिल्वा गुरु घाटर्म, सुखसागरकी तीर ।
 सय सतनर्म मिल गद्या, चुगा नाम निज हीर ॥ २ ॥

छन्द अर्धशुनगी ।

हमै हीर पाया नितो सहज घ्याया ।
 गदो कठ लागी चली घुघ आगी ॥ १ ॥
 हृद जाय दिलिया मनो देव मिलिया ।
 लगी प्रीति प्यारी चल गग भारी ॥ २ ॥

बिना मात पिता इको राम राया ।
 अनैत कोटि साधू सबे माहिं आया ॥ २० ॥
 यहाँ यात पेनी सुणो पुरुष नारी ।
 सहजे मिलाय हुआ ब्रह्मचारी ॥ २१ ॥
 अनैत कोटि साधू सबे माहिं आई ।
 इको नाम नित्य निवेवह ध्याई ॥ २२ ॥

साखी ।

अनैत कोटि नर उदरे, रामनाम लिय लाइ ।
 भक्त पदीमें रामदास, सहजों रहे समाइ ॥ १ ॥
 ॐकार से ऊपना, दृष्टि फोट आकार ।
 बाके ऊपर रामदास, ररकार ततसार ॥ २ ॥
 ॐकार उत्पत्ति भाई, घर अवर कैलास ।
 बाके ऊपर रामदास, अलख पुरुषका घास ॥ ३ ॥
 अधर अलखी अलख है, रूप रेख नहिं रग ।
 रामदास जहाँ मिल रह्या, सतगुरु हवे लग ॥ ४ ॥
 अजय क्षरोखे अगमके, निरत ब्रह्मका घास ।
 ॐकार अजपा नहीं, नाद बिन्द नहिं सास ॥ ५ ॥
 शब्द सूर नहिं सचरे, पाणी पवन न जाहिं ।
 घर अवर भी घई नही, रामा जिस घर माहिं ॥ ६ ॥
 ॥ इति श्रीभक्तमाल सम्पूर्णम् ॥

अथ ब्रह्मजिज्ञासा ।

चौपाई ।

शब्द बाण सतगुरुका भाई । मन कृ थींध लिया छिन माँई ।
 मन थींधाँ पाँचूँ थींधाँ । पथीसामें उलट समाणों ॥ १ ॥
 ज्ञान पाय अज्ञान मिटाये । दुमंति दुविधा दूरि गमाय ॥
 काम क्रोध मारे अहंकार । राम राम रसना रट प्यारा ॥ २ ॥
 शील सतोप सहजमें आया । मान गुमान अमान गमाया ॥
 शका भूल भरम सब भागा । कटिया काम ध्यान उर लगा ॥ ३ ॥
 शब्द किया घट माहिं पसारा । रोम रोम लगिया ररकार ॥
 तीनों कोट किया चक्कूर । चोखे जाय भव्या सतसूरा ॥ ४ ॥
 एकल मह अमगज जूझ । चयदै कोइ जमपुरी घूजे ॥
 रसना हृदय नाभि लिख लागी । रोम रोम चेतन हुइ जागी ॥ ५ ॥

सप्त पयाल छेद छिन माँई । पातालाँ सुख सीर हलाई ॥
 मूल उलट औघट्टे आया । गुदा छेद पीठ वेंध लाया ॥ ६ ॥
 पूरव पलट पछिम दिशि लागा । चढिया शब्द मेरु हुय आगा ॥
 मेरु दंड हुय चढ्या अकाशा । सहज किया तिरवेणीवासा ॥ ७ ॥
 अधःऊर्ध्व विच खेल मँडाया । विना पंख इक पँखि उडाया ॥
 वंकनाल वहाँ अमृत धारा । पी पी संत भया मतवारा ॥ ८ ॥
 माया मूल उलट घर आए । ररंकारसुं ध्यान लगाए ॥
 ररंकारकी अमृत सीरा । पीवैगा कोइ संत सधीरा ॥ ९ ॥
 माला एक फिर तन माँई । आकाशाँ लिव ध्यान लगाई ॥
 रोम रोम विच अणरट लागी । संधि संधि महँ जीव स जागी ॥ १० ॥
 नाभि नैण विच झिलमिलजोती । सुखमण घाट चुगै हंस मोती ॥
 सुखमण सीर चहँ दिशि छूटै । रोम रोम अमृत रस फूटै ॥ ११ ॥
 धर अंबर विच अरट चलाया । उलटा नीर अकाशाँ आया ॥
 जहँ सुख सागर सहज भराया । रोम रोम सीची सब काया ॥ १२ ॥
 उलटी गंग अपूठी वाली । फूल्यो वाग बनी हरियाली ॥
 धरती माहीं बीज बुहाया । आकाशाँ फल फूल लगाया ॥ १३ ॥
 तीन लोकमें नाल पसारा । वेल किया बहुता विस्तारा ॥
 मनसा चाल अगम घर आई । जहँ निज मनवा रहा समाई ॥ १४ ॥
 उलटी सुरत मिली आकाशा । जहँ देख्या एको सुख रासा ॥
 तेज पुंज जहँ अपरम नूरा । सहस्रकला ले उगा सूरा ॥ १५ ॥
 चंद विहूणा देख्या चंदा । जहँ पहुंच्या निर्भय हुइ बंदा ॥
 अगम महलमें दीपक वाला । तीन लोक में भया उजाला ॥ १६ ॥
 दसवैं जाय परलिया देवा । जहँ मन सहज करत है सेवा ॥
 प्रेमहि पाती फूल चढ़ावै । भावहि भोजन भोग लगावै ॥ १७ ॥
 प्रेम पलीतो प्रेम हि लावै । प्रेमहि झालर ताल बजावै ॥
 प्रेम आरती प्रेमहि गावै । प्रेमहि शुनमें ध्यान लगावै ॥ १८ ॥
 घंट घूघरा घमक बजावै । राग छतीसों मंगल गावै ॥
 पांच पचीसों रास मंडाई । पडै नगारै नोवत घाई ॥ १९ ॥
 वाजै ढोल ढमढमै ढाई । मेर भृंगला शब्द सुणाई ॥
 तार तंदूर जंत्र इक डंका । वाजत बरघू हू हू वंका ॥ २० ॥
 सुनकै माँही शंख बजाए । श्रवणाँ मुरली टेर सुणाए ॥
 अंबर गाज करै घनघोरा । कोयल बोलै पपिहा मोरा ॥ २१ ॥
 चारहमास बहुत झड़ लाये । नदीनाल सब खाल चलाये ॥
 धुनकी ध्वजा नेज फहराया । गढजीता नीसाण घुराया ॥ २२ ॥

चवदैं लोक ऊपरैं राजा । जिनकैं वजैं अनाहद वाजा ॥
 देव दुनी सब दरशण आये । नमन करै बहु शीस निवाये ॥ २३ ॥
 घ्यार कौंट को हासल आवै । सतगुरु आगे आण चढावै ॥
 सैत का राज अदल गढ़ माहीं । परजा सुखी सरव सुख पाहीं ॥ २४ ॥
 घेतन चोरीदार दिराया । गहर चोर सब परुड मँगाया ॥
 तएत वैस अरु हुकम हलावै । सिंह यकरी सब सग चराये ॥ २५ ॥
 रोमरोममें राम बुहाई । सत करै निभय पतसाई ॥
 सुरत सुदरी सख सिणगारा । खाली महल पीव यहु प्यारा ॥ २६ ॥
 सुप्रमण सेन पिया सग खेले । पलक पर पीव नहिं मेले ॥
 पूरण घर पाया अविनासी । पाच पर्घासों करत खयासी ॥ २७ ॥
 सुरत शब्द शून्य में लोटै । नृदि सिद्धि दोउँ पाँच पलोटे ॥
 राजपाट पाया पट राणी । धरमिलिया है सारग पाणी ॥ २८ ॥
 जाकै रूप रग नहिं रेखा । गृह नहिं त्याग नहीं कोइ भेजा ॥
 ना कोइ पिता मात नहिं जाया । ना ऊ किन की कूजन आया ॥ २९ ॥
 देखा एक शून्यमें रूखा । पेड न डाल न लील न सूखा ॥
 फल नहिं फूल पान नहिं पाती । आपो आपहिं अमर अजाती ॥ ३० ॥
 जीय न जिद न करम न काया । नों कोइ मान मोह नहिं माया ॥
 धर अवर नहिं तेज न तारा । मेघ न बरपा द्रु न दारा ॥ ३१ ॥
 पयन न पाणी ध्व न सूर । घाऊ न वाजै ना कोइ तूर ॥
 एको ब्रह्म और नहिं काँई । ररकार सो सत है सोई ॥ ३२ ॥
 ररकार देवन का देवा । जिनरा छहे और नहिं मेवा ॥
 ररकार है प्राण अधारा । जाकू लखे सत जन प्यारा ॥ ३३ ॥
 ररकार सत शब्द हमारा । अनत कोटि मन उतरे पारा ॥
 ररकार गुरुदेव घताया । रामनाम हम निशिदिन ध्याया ॥ ३४ ॥
 हरिरामदास है गुरु हमारा । ज्ञान ध्यान यहु अगम अपारा ॥
 ब्रह्म जिज्ञास ग्रथ हम भाखू । उरमें गुरु सीस सत राखू ॥ ३५ ॥
 रामदास सतगुरु का चेरा । सतहै साहिव सिरपर मेरा ॥
 रामदास सतनका दासा । जुग जुग राम तुम्हारी आसा ॥ ३६ ॥

सारासी ।

रामदास की बीनती, सामलिये गुरुदेव ।
 और कछु माँगनहीं, जुग जुग तुम्हरी सेव ॥ १ ॥
 रामदासकी धीनती, सामलिये गुरु घाल ।
 रामनाम सुभराइये, भेटो विषय जजाल ॥ २ ॥

हरि ।

रेखता ।

(१)

गुरु परताप तैं राम हम पाविया । गुरु परताप तैं भर्म भागा ।
 गुरु परताप तैं काल दूरै गया । गुरु परताप तैं रटण लागा ॥
 गुरु परताप तैं कंठ परकासिया । गुरु परताप तैं जीव जागा ।
 गुरु परताप तैं चाल हिरदैगया । गुरु परताप तैं ध्यान लागा ॥
 गुरु परताप तैं नाभिमें संचन्या । गुरु परताप अजपाजु होई ।
 गुरु परताप तैं उलट ऊँचा चढ्या । गुरु परताप तैं अगम जोई ॥
 गुरु परताप तैं चंक नाली वहै । गुरु परताप तैं मेरु आया ।
 गुरु परताप आकासमें रम रह्या । गुरु परताप ब्रह्मांड छाया ॥
 गुरु परताप तैं तीन धारा मिली । गुरु परताप असनान होई ।
 गुरु परताप तैं गंग जमुना वहै । गुरु परताप सब कर्म खोई ॥
 गुरु परताप तैं जोति सूं मिलगया । गुरु परताप जम हाथ जोड़ै ।
 गुरु परताप रिधि सिद्धि दासी भई । गुरु परताप चढबान घोड़ै ॥
 गुरु परताप तैं अखंड नोवत वजै । गुरु परताप तिहुं लोक जीता ।
 गुरु परताप तैं राज निर्भै भया । गुरु परताप सबमें बदीता ॥
 गुरु परताप तैं जगत चरणाँ पड़ै । गुरु परताप सुर असुर बंदै ।
 गुरु परताप की संत महिमा करै । गुरु परताप सब बात खंदै ॥
 गुरु परताप की कहा महिमा कहूँ । गुरु परताप तैं ब्रह्म हूवा ।
 गुरु परताप तैं रामिया राम मिल । गुरु परताप तैं नाहिं जूवा ॥ १ ॥

(२)

प्रथम मुख द्वार हम सार सुमरण किया । आठ ही प्रहर हरि नाम ध्याया ।
 दूसरै कंठ में प्रेम परकासिया । गला में गदगदी स्वाद आया ॥
 तीसरै हृदामें जाय वासा किया । मन्त्रहीमन्त्र मिल झीण गाया ।
 बाज मुरली सुणी जोर नीकाँ गुणी । संतकूं बहुत इतवार आया ॥
 चतुर्थै नाभिमें शब्द परकासिया । भँवर गुंजार होय एक बाजा ।
 छेद पाताल अरु उलट पश्चिम दिसा । देखिया गैबका अगम छाजा ॥
 उल्लंघिया मेरु आकाशमें घर किया । सहज वरपा वणी एक धारा ।
 इला अरु पिंगला सुषम गंगा चलै । पीवता चन्न नखसिक्ख सारा ॥
 गगन अंबू गजै अनंत बाजा वजै । धिन्न अव धिन्न संत भागतेरा ।
 सद्गुरु महरतैं दास रामा कहै । जन्म अरु मरण भव सिट्वाफेरा ॥ २ ॥

(३)

राम ही आदि अरु अंत मध राम है । राम ही घरे अरु माहिं वारै ।
 रोम ही रोममें राम ही रम रह्या । राम ही राम मिल मुक्ति द्वारै ॥

राम ही जगत अरु भेष पट्टदर्शणी । राम ही ब्रह्म अरु त्याग मार्हीं ।
 राम ही जप्प अरु तप्प तीरथ सबे । राम ही राम विन और नाहीं ॥
 सप्त ही द्वीप नव राड में राम है । राम ही देश परदेश रमता ।
 हृद बेहृद में एक ही राम है । राम ही रद्धत परगट्ट गुप्ता ॥
 राम ही तेज अरु पुज सो देवता । राम आकार निरकार न्यारा ।
 राम ही दृष्टि अरु मुष्ट सो राम है । राम ही देख अदेख प्यारा ॥
 राम ही जल जीवादि अरु पवन है । राम ही चंद अरु सूर तारा ।
 राम ही केतु अरु राहु साक्षासती । राम ही राम सो सप्त धारा ॥
 राम ही मात अरु तात बाधय सबै । राम ही नारि अरु पुरुष होई ।
 राम ही राम सिद्ध लोक में रम रखा । राम विन और दूजा न कोई ॥
 राम ही स्वर्ग पाताल भूलोकमें । राम ही धरणि अरु राम गगना ।
 रामिया एक ही राम स्र मिल रखा । राम ही राम कछु नाहि विघना ॥३॥

(४)

शहर बाजार का खेल आछा मँझ्या । आपका आप साथी बुलाया ।
 हम्म भी सन के बीचमें खेलते । गुरापै जाय सत शब्द लाया ॥
 राम रसना कछा चाल हिरदै गया । पिंड भारी भया पाँच थके ।
 दृष्टि कर देखियो मग्न चाले नहीं । जाय अब खेल कुण जाय धके ॥
 और ही खेलता राम कुँ रटत है । थके सो थके हम पार धैठे ।
 सुरत सो उलटि सुन सिखर मँ सयरी । गुरु के घाट में जाय पैठे ॥
 सत ही बुद्धि स्र सोझ सोझी करै । एक ही पेड स्र ध्यान लायै ।
 सुरत उलटाय अरु अगम ऊँचा बढा । रामिया राम नीसाण बायै ॥४॥

इति ।

अथ हरिजस लिख्यते ।

राग निशावल ।

पद १

जाग जाग रे जोगिया, क्यों नहि नगर जगायै ।
 आठ प्रहर जागत रहो, सुन शहर बसायै ॥ टेक ॥
 मुख सेती सुमरण बिया, कठ में चल आया ।
 गद गद लहरा सुपम की, सूता जीन जगाया ॥ १ ॥
 हिरदै में हरि आगिया, चेतन तन सारा ।
 बुद्धि कमल परकासिया, जग सेती न्यारा ॥ २ ॥
 नाभि कमलमें सत जन, सहजौ चल आया ।
 नाद यनाहद समत्या, सुख रास मँढाया ॥ ३ ॥

स्वर्ग मृत्यु पाताल में, एको धुन होई
तीन लोक चेतन भया, जाग्या सब कोई ॥ ४ ॥
उलट पयाल आकासमें, चढ उलंघे मेरा ।
इला पिंगला सुषमणा, तिरवेणी डेरा ॥ ५ ॥
त्रिकुटी सं आगे गया, सुन माहिं समाया ।
सुख समाधि सहजाँ लगी, निरभै पद पाया ॥ ६ ॥
मन पवनां पहुँचै नहीं, बुधि जाण न पावै ।
रामदास धिन संतजन, ता घर लिव लावै ॥ ७ ॥

पद २

राम सुमर रे प्राणिया । भूले मत भाई ।
सुमरण विन छूटै नहीं । जम द्वारै जाई ॥ टेक
सब दुनियाँ भरमी फिरै । तीरथ अरु वरता ।
जैसा पाणी ओसका । कोइ काज न सरता ॥ १ ॥
तपसी त्यागी मुनीश्वरा । पढिया अरु पंडिता ।
नाम विना खाली रह्या । सिध उडता अरु गडता ॥ २ ॥
क्या आचार विचार है । क्या साधन सेवा ।
सतगुरु विन पावै नहीं । आत्म निज देवा ॥ ३ ॥
जगत भेख एको मता । एकै दिस जावै ।
तत्त नाम जाणै नहीं । फिर गोता खावै ॥ ४ ॥
साधु संगति निशि दिन करै । एक राम धियावै ।
रामदास धिन संतजन । निरभै पद पावै ॥ ५ ॥

रागसोरठ ।

पद ३

मनरे करो गुरां की सेव । उलटि परसो देव ॥ टेक ।
अज्ञानमें मद मोह माता । नामसुं नहिं नेह ।
संतका सत संग विन । होयगा सब खेह ॥ १ ॥
साधु सब ही वंस मेलै, कुवँस मूरख जाय ।
औघट घाटी लूटसी, सर्व कुं जम खाय ॥ २ ॥
वेद बावर मँडी आडी, हाक तीनों देव ।
पारधी जम काल लूटै, आन फररा खेव ॥ ३ ॥
तोड़ बावर ढाहि फररा, दोड़ बाहिर आय ।
रामिया गुर ज्ञान लाया, उलट सहज समाय ॥ ४ ॥

पद ४

मनरा तीरथ न्हायलै, क्या भटरणसू काम ।
 अठसठ तीरथ सब किया, एरु कहा मुख राम ॥ टेक ।
 मन माहीं मथुरा वसै, दिलहि द्वारका जान ।
 काया काशी न्हायलै, आठों पहर सिनान ॥ १ ॥
 यारै सोलै सहेलबी, मिलरु न्हावण जाय ।
 तिरवेणीरे घाटमें, नित्य स्नान कराय ॥ २ ॥
 पाँचों पापर पहरवे, चढे पचीसू लार ।
 नोयत याजे गैरफी, मारलियो अहंकार ॥ ३ ॥
 हृद छँड़ी बेहद गया, अगम रह्या लिच लाय ।
 जीव सीध मेला भया, सुखमें रह्या समाय ॥ ४ ॥
 दसयै देवल परसिया, जागी अदर ज्योति ।
 रामदास जहाँ रमरहा, पाप पुण्य नहिं छोति ॥ ५ ॥

पद ५

छाले मन उणदेस में । जहाँ सता का वास ।
 जहाँ पहुँच्यो निरमय हुयै । लगै न जमकी वास ॥ टेक ।
 पूरव दिशिस् छालिया । कठ किया परकास ।
 घर भीतर वासा लिया । गगन भया निजदास ॥ १ ॥
 अध कमल परकासिया । खुली धक की घाट ।
 धकनाल हुर छालिया । वस्या पठिमवे घाट ॥ २ ॥
 मेरुदंड उल्लधिया । ऊर्ध्व कमल परकास ।
 चँदसूर मेला भया । गगन किया जाय वास ॥ ३ ॥
 पाँच पचीसों एक हुय । मित्या त्रिकुटी मौय ।
 अनहद वाजा घुर रह्या । हस मित्या जहँ जाय ॥ ४ ॥
 हस मित्या परहसमें । लागी शून्य समाधि ।
 रामदास निर्मय भया । मित्या पून घर आदि ॥ ५ ॥

पद ६

छाले सताँ जहा जाइयै । गुरु गोरिंदके पास ।
 दशनसू सय दुष मिटै । हिरदै मति प्रकास ॥ टेक ।
 धपणाँ सुणिया सतगुरु । मनमें उठ्या हुलास ।
 सुणत समय पँडै चल्या । अति दशन की व्यास ॥ १ ॥
 दशनसू दुषिधा मिटै । नैणा वँच्या सनेह ।
 रोम रोम आनंद भया । दूधों बूझ मेह ॥ २ ॥

पद ४

मनरा तीरथ न्हायलै, क्या भटकणस् काम ।
 अटसठ तीरथ सब क्रिया, एक कहा मुख राम ॥ टेक ।
 मन माहीं मथुरा बसै, दिलहि द्वारका जान ।
 काया काशी न्हायलै, आठा पहर सिनान ॥ १ ॥
 घोर सोलै सहैलडी, मिलकर न्हावण जाय ।
 तिरवेणीके घाटमें, नित्य स्नान कराय ॥ २ ॥
 पाँचों पाखर पहरके, बड़े पचीस् लार ।
 नोयत बाजे गैरफी, मारलियो अहंकार ॥ ३ ॥
 हृद छँडी बेहद गया, अगम रखा लिय लाय ।
 जीव तीव्र मेला भया, सुखमें रखा समाय ॥ ४ ॥
 वसधै बेचल परतिया, जागी अदर ज्योति ।
 रामदास जहाँ रमरहा, पाप पुण्य नहिं छेति ॥ ५ ॥

पद ५

घालो मन उणवेस मैं । जहाँ सता का वास ।
 जहाँ एहुच्याँ निरभय हुयै । लगी न जमकी बास ॥ टेक ।
 पूरव दिशिस् चालिया । कठ किया परकास ।
 उर भीतर बासा लिया । मगन भया निजदास ॥ १ ॥
 अध कमल परकासिया । गुली धक की बाट ।
 धकनाल हुइ चालिया । बस्या पठिमके घाट ॥ २ ॥
 मेरुद उलुधिया । ऊब कमल परकास ।
 चंदसूर मेला भया । गगन किया जाय वास ॥ ३ ॥
 पाँच पचीसों एक हुय । मिल्या त्रिकुटी माँय ।
 अनहद बाजा घुर रखा । हस मिल्या जहँ जाय ॥ ४ ॥
 हस मिल्या परहसर्म । लागी शून्य समाधि ।
 रामदास निभय भया । मिल्या पूव घर आदि ॥ ५ ॥

पद ६

खले सताँ जहा जाइये । गुरु गोविंदके पास ।
 वशनस् सब दुख मिटै । हिरदै भक्ति प्रकास ॥ टेक ।
 धधणौ सुनिषा सतगुरु । मनमें उख्या हुलास ।
 सुगत समय पैंडे चल्या । बति दशन की प्यास ॥ १ ॥
 दुविधा मिटै । नैणा बँध्या सनेह ।
 रोम आनंद भया । दूधौ बूढा मेह ॥ २ ॥

परदक्षिणा दंडोत्तर कर । चरण निवाये शीस ।
 किरपा कर गुरु देवजी । नाम किया वकुशीस ॥ ३ ॥
 मुखसेती सुमरण किया । कंठ जगाया जीव ।
 हिरदै हिल मिल होत हैं । नाभि पधारे पीव ॥ ४ ॥
 सप्त पयाल हि छेद कै । उलट पछिम के देश ।
 अधःऊर्ध्व परकासिया । अगम किया परवेस ॥ ५ ॥
 अगम देशमें रम रह्या । गगन रह्या गरणाय ।
 त्रिवेणीके तखत पर । हंस विराज्या जाय ॥ ६ ॥
 गढ चढिया नौचत घुरी । थप्या ब्रह्म का राज ।
 तिहुं लोक कायम किया । मिल्या राममहाराज ॥ ७ ॥
 दसवें देवल परसिया । अरस परस दीदार ।
 सुरत मिली जाय ब्रह्म सूं । ब्रह्म आप निरकार ॥ ८ ॥
 तज आकार निरकार मिल । राम निरंजण राय ।
 रामदास केवल मिल्या । सुखमें रह्या समाय ॥ ९ ॥

राग सारंग ।

पद ७

संतों संचय करो हरि नामको ।
 इण संचयसूं बहुत सुख पावै आदि अंत यो काम को ॥ टेक
 दुनिया संचै गर्थ भंडारा सोना रूपा दाम रे ।
 संचो रह्यो धूलके माहीं जीव गयो बेकाम रे ॥ १ ॥
 जगत भेख मायाके कारण पञ्च मरै दिन रात रे ।
 अंतवेर नागा हुय चालै ना कोई संग न साथ रे ॥ २ ॥
 दुनियाँ करै आनकी सेवा दस दिन सरसा थाय रे ।
 अंतकाल आडा नहि आवै जम्म पकड़ लेजाय रे ॥ ३ ॥
 सांख्य जोग नवधा अरु तिरगुण स्वर्ग लोक लग जाय रे ।
 यासूं नहीं ब्रह्म सूं मेला जन्म धरै धर आय रे ॥ ४ ॥
 जोग जग्य जप तप व्रत दाना ये सब फूल कहाय रे ।
 फूल देख दुनियाँ लोभाणी अंतकाल कमलाय रे ॥ ५ ॥
 नाम विना सब संचय झूठा फास फूस होय जाय रे ।
 रामदास इक राम रटीजै अमर लोक लेजाय रे ॥ ६ ॥

पद ८

संतो सुणो संचयरो विवेक रे ।
 इण संचयसूं अनेक उधरिया पाया पुरुष अलेखरे । टेक

ब्रह्मा विष्णु शेष अरु शम्भु रहे राम लिय लाय रे ।
 सकल मड का करता कहिये ज्यों यो सचो पाय रे ॥ १ ॥
 गोपीचंद भरथरी सच्यो सच्यो गोरखनाथ रे ।
 नव नाथों के योही सचय मिल्या निरजन नाथ रे ॥ २ ॥
 चौबीस तिथकर्यों योही सचो केवल मिलिया जाय रे ।
 बहुरि जन्म धरणि नहिं आया सुखमें जाय समाय रे ॥ ३ ॥
 सनकादिक अरु सप्त ऋषीश्वर नवयोगेश्वर पाय रे ।
 जनक विदेह अरु ध्रुव प्रह्लादा रक्षा अटलमठ छाय रे ॥ ४ ॥
 पांडव हरिचंद बली विभीषण निहचै राज कमाय रे ।
 शुक्रदेव व्यास परीक्षित राजा मिल्या मुक्तिम जाय रे ॥ ५ ॥
 राज करतों अनेक उधरिया सुणी गुरु की सीख रे ।
 दुर्वासा ऋषि उलट मिलया भक्त हेत अवरीष रे ॥ ६ ॥
 बाल्मीकि अरु गनिका शबरी रक्षा बरु दास रे ।
 श्रीधर कुटुब सहैता ताच्या राखलिया हरि पास रे ॥ ७ ॥
 नामदेव अरु रामानदा पीपा धना कबीर रे ।
 सेना सद्ना अरु रैदासा मिलिया सुख की सीर रे ॥ ८ ॥
 बाबू जाय दीनसू मिलिया सिख साखा बहु लारै रे ।
 नामग हरीदास ततवेत्ता परसा खोजी पार रे ॥ ९ ॥
 दास मुरारि मल्लाका ज्ञानी सतदास दरियाय रे ।
 किसनदास सुखरामा नानग मिल्या ब्रह्म के भाय रे ॥ १० ॥
 अनैत कोटि साधू जन पढ़ुंता जाका अत न पार रे ।
 केता पतित पारगत ह्रषा मिल्या मुक्तिके द्वार रे ॥ ११ ॥
 जन हरिराम चरण हम लागे सय सतन का दास रे ।
 रामदास गुरु गोपिंद शरणै पूरी मनकी आस रे ॥ १२ ॥
 राय जानसे ।

पद ९

राम सरीसा और न कोइ । जिन सुमन्या सुख पावै सोई । टेक
 राम नामसू अनेक उधरिया । अनैत कोटि का कारज सरिया ॥ १ ॥
 जो हरि सेती लावै प्राता । राम नाम ताही का मीता ॥ २ ॥
 राम नाम जिण ही जिण लीया । तिण तिण वास ब्रह्म में लीया ॥ ३ ॥
 राम दास इकरामहि ध्याया । परम ज्योति के माहिं समाया ॥ ४ ॥

पद १०

पेसी जड़ी मोहि सतगुरु दीनी । तन मन अप अतरम लीनी । टेक
 भवणां सुषुप्त बहुत सुख पाया । निरपत जड़ी नयन गुल आया ॥ १ ॥

रोम रोममें रम गयो, नाद नाद निज नाम ।
 सुदर सुख में पाविया, जहँ अजपा की धाम ॥ ३ ॥
 पाँचों उलटा एक घर, पश्चिम दिशि फी बाट ।
 सुदर सहजों सोंपड़े, तिरिजेणीके घाट ॥ ४ ॥
 ॐ नहीं अजपा नहीं, नहि कहण सुनन की यात ।
 सुदर मिल्या समाधिमें, कर सतगुरुको साय ॥ ५ ॥

॥ थी ॥

अथ श्रीदयालुदासजीमहाराजकी
 फरमाईहुई अनुभवगिरा ।



नमस्तुति ।

नमो राम गुरुदेवजी, जन त्रिकालके वन्द ।
 विप्र हरण भगल करण, रामदास आनन्द ॥ १ ॥

छणय छद ।

नमो निरजन देव सेव किन पार न पायो ।
 अमित अथाह अतोल नमो अनमाप अजायो ॥
 एक अखड अमड नमो अणभग अनादम् ।
 जगमें ज्योति उद्योत नमो निर्भेय सुखादम् ॥
 नमो निरजन आपहो कारण करण अपार गत ।
 रामदास वदन करे नमो नूर भरपूर तत ॥ १ ॥
 नमो राम रमतीत भज्या आनन्द स्वरूपम् ।
 करणामय किरपाल प्रगट तत्काल अनूपम् ॥
 सत परम विग्राम राम आधार सदाई ।
 सदा दयालु निहाल काल व्यापे न कदाई ॥
 आप रूप जन जसकरण भगतों विरद वधारणा ।
 रामदास वदन करे नमो परम गति वारणा ॥ २ ॥
 नमो राम रमतीत प्रथम गुरुदेव दयालम् ।
 नमो साधु अघादि काल तीनों रिछपालम् ॥
 आदि अत पुनि एक मध्य दुइ भक्ति वधारत ।
 महिमा अमित अथाह पार घरणन किम पावत ॥

अथ गुरुस्तोत्र मन्त्र ।

छप्पय ।

राम सत गुरु साधु आदि परणाम सदाइ ।
 नमस्कार दडोत प्रेम भक्तों सुखदाइ ॥
 मन बच सेवन पूज्य सदा चरणोंको चरो ।
 रामखेदी दास मानज्यो वदन मेरो ॥
 सध्या माथ प्रभातलों सुमरों श्वास निकडना ।
 घालवाल शरणागती रामजनॉको वदना ॥ १ ॥
 अष्टभग वडोत होत गति आनद आतम ।
 पुनि सुपरिपमा भाष चाव गुरुगम परमात्म ॥
 शीश नमाय लगाय गुरू पदपक्कज परिमल ।
 यहुत भोति सस्तूति जोरि जुग तबता निरमल ॥
 अष्टजाम पल पल मही उदय कार सध्या लियर ।
 घालवालके उर बसो श्वास श्वास गुरुपद त्रियर ॥ २ ॥
 हरि सरवर जल भाउ भीन शिख मीठा कर्हीं ।
 प्रेम उमगा लेत हेत दूजा परहरही ॥
 मध सौप भ्रम जाल कालसा कीर न खावत ।
 निर्भय नित्य निगज सुधा सुमरण रस पावत ॥
 त्रिविध जलण शीतल करण सुखसागरम रमरहा ।
 रामदास गुरु वदना घालवाल शरणा लहा ॥ ३ ॥

१ नमस्कारमन्त्र—ब्राह्मि मां पापिन घोरे पमाचारविशमर्तम् ।

नमस्कारेण देवेश ससारणवपातकम् ॥ १ ॥

२ दडबतमन्त्र—अपराधसहस्रभाजन पतित मीममवर्णकोदरे ।

अयति शरणागत हरे कृपया केवलमात्मसात् गुरु ॥ १ ॥

दडबत अभिचार—प्रणवेदडबदूमी अक्षिप्रद्वेष चेतसा ।

दशवार जपे मन्त्र तत खोत्रमुदीरयेत् ॥ १२ ॥

(श्रीमद्भागवतस्क० ६ अ० १९)

जपेदद्योत्तरमूर्त सुवीर मुनिनि प्रभुम् ।

कृत्वा प्रदक्षिणां भूनी प्रणवेदडबदूमा ॥ ४२ ॥

(श्रीमद्भागवतस्क० ८ अ० १९)

इस पुसवन जेर पबोवतके प्रमाणसे शिबोखेनी दडबतक अभिचार है ।

३ प्रदक्षिणमन्त्र—यानि यानि च पापानि जमान्तरक्तानि च ।

तानि तानि प्रणदक्षिं प्रदक्षिणपदेपदे ॥ ३ ॥

हरि गुरु संत अनंत कौन वरणत यह शाखा ।
 नाम तीन वपु एक जीम नभ अक्षर भाखा ।
 भक्ति विलास प्रकाश दास हैतारथ कारण ।
 निर्गुण सहगुण रूप अंध अज्ञान विडारण ॥
 शब्द रूप परगट नमो निश्चल सद्गति सिद्ध गुरु ।
 यह सुस्तोत्र हि मंत्रको दास शिरोमणि वास उर ॥ ४ ॥

इति

धुरमेल ।

हरिरामदास सतगुरु नमो रामनाम परताप सिध ।
 भरथखंड उद्योत देस वागड वलिजाऊँ ।
 सिंहथल शहर सुथान जहाँ नित शीसनमाऊँ ॥
 सब संतनको धाम राम भजि भया विख्याता ।
 भक्ति मुक्ति दातार ज्ञान अनुभवके दाता ॥
 रामदासके प्राणपति अटलवाच भगवान विध ।
 हरिरामदास सतगुरु नमो रामनाम परताप सिध ॥ ५ ॥
 हरियानंद आनंदघन भक्तिपुंज परगट भये ।
 शील साच संतोष दया धीरज गुनवंता ।
 प्रेम नेम निज भाव दिव्य दृष्टी बुधिवंता ॥
 ब्रह्मज्ञान सनकादि तत्त्ववेत्ता शिव सागर ।
 निरभै नाम प्रताप हंस परमहंस उजागर ॥
 भरम भूत अज्ञान निशि काल चोर दूरे गए ।
 हरियानंद आनंद घन भक्ति पुंज परगट भए ॥ ६ ॥
 अनुभव किरण प्रकाश बहु तरणि उदय ब्रह्म नभ जहाँ ।
 भक्तिहि मानसरोत रमे निश्चल मन विरती ।
 गुरु आज्ञा अनुसार एक रस निर्भय जुगती ॥
 कर्म केतु डर नाहिं जलद माया सिट जाना ।
 ज्ञान हृदय चख खुले स्वप्न जिव भूल सिटाना ॥
 निज स्वरूप निखेत भए सिख सरोज फूले वहाँ ।
 अनुभव किरण प्रकाश बहु तरणि उदय ब्रह्म नभ जहाँ ॥ ७ ॥
 रामदासके मुकुट मणि नमो नमो हरिरामजी ।
 च्यार वरण आश्रम सर्वसुं निरपख न्यारा ।
 आशय अगम अगाध रामजन रामपियारा ॥
 घीका घी ज्यों भया छाल मायासे न्यारा ।
 जग छोई ज्यों डारि सर्व रस परे पियारा ॥
 २९

गुप्त भेद परगट करण आत्मके विधामजी ।

रामदासके मुकुटमणि नमो नमो हरिरामजी ॥ ८ ॥

सिंहधलग्राममहिमावर्णनम् ।

हरि कन्या पुनि जन्म धुर, त अतें कविता खेत ।

ईस ताहि पुर बटना, श्वेत द्वीप साकेत ॥ १ ॥

धाममहिमावर्णनम् ।

मन गज मारण साधु सिंह, इन्द्रिय पशु अहार ।

हेमगिरी अस्थान जैन, नवनिधि भक्ति प्रकार ॥ २ ॥

सो प्रथम भिन भिन कही, जन ही के परसाव ।

प्रेमलेंछन ऊमों जनम, परा शत्रु दोषाव ॥ ३ ॥

श्रीहरिरामदासजीमहाराजनाममहिमावर्णनम् ।

हरि पधार जिव अघ हन्या हरि गजराज सहाय ।

तार लियो भय सिंधुमें जमत मौसर पाय ॥ १ ॥

विघ्न हरण मंगल करण जनरुसुतोपति नाम ।

जय जय मंगल तासु पद कारनमो सर सांग ॥ २ ॥

कलीफाल निशि घोरम हरि हरि कियो प्रकास ।

सत प्रेता द्वापर अहों गुरु हरिरामादास ॥ ३ ॥

उपप ।

हरि भजत टरत सब फद द्रव उपाधि विनासत ।

हरि रटत हर न हुय अहर टेर मुख हरि ले निकासत ॥

हरि तत अति उज्जास ज्ञान परकास विद्वानस ।

हरि सत कल पोडश असुर सब मेढ अज्ञानस ॥

हरिराम स्वामि समथ शरण हरण विघ्न अप्रेक अव ।

जनरामा उछेरग अगम निगम साख भाखेंस सब ॥ १ ॥

१ समुद्र । २ रक्ष्मी । ३ सीता । ४ प्रथमाक्षर (सी) । ५ (य) । ६ एगल अत (त) । ७ नाम (सीवल) । ८ हिमाचल । ९ स्थल । १० श्रीहरिरामानन्दजी महाराज । ११ प्रेमच्छायाभक्ति । १२ उमा=पार्वती । १३ पराभक्ति । १४ जवाइ । १५ हरि । १६ राम । १७ (श्रीहरिरामदासजी महाराज) । १८ नमस्कार । १९ मालिक । २० स्व । २१ उच्छिन्न=कैंचा । २२ जायम=शास्त्र । २३ वेद और शास्त्र यही साजी देरहे हैं । २४ हरि नाम कैंचा है ।

अष्टक ।

छंद त्रिभंगी ।

अपरम ब्रह्म आपं हणत न कापं मंत्र न जापं सिटतापं ।
 परमं पद आपं निर्जन तापं मोल न मापं है आपं ॥
 रूपं नहि तापं लिप्त न छापं आपो आपं अप्पारं ।
 गुरू हमारं रत ररकारं निरकारं जिय निरकारम् ॥ १ ॥
 पूरन ब्रह्म आदू सहज समादू मेट उपादू ब्रह्मनादू ।
 अज्ञान सिटादू ब्रंद हटादू तत्त्व सिलादू प्रमसादू ॥
 दिपते जिमि दादू जोग जुगादू कौन वतादू सनकादू ।
 गुरू हमारं रत ररकारं निरकारं जिय निरकारम् ॥ २ ॥
 ब्रह्मा मुख बाणी सारंग पाणी तद्रत जाणी निरवाणी ।
 तिरधा विति जाणी आतम प्राणी घट मध आणी दरसाणी ॥
 ब्रह्म सुरत समाणी तहँ ठहराणी लिब्व लगाणी प्रमपारम् ।
 गुरू हमारं रत ररकारं निरकारं जिय निरकारम् ॥ ३ ॥
 परमं घर मायं उलट समायं सहज सुनायं थिरतायं ।
 अचलाचलमायं रतरररायं एककहायं उनमायम् ॥
 तद्रत पद गायं चितवृतिनायं तीन नथायं इकथारं ।
 गुरू हमारं रत ररकारं निरकारं जिय निरकारम् ॥ ४ ॥
 अगम अपारु कौन विचारु गाय न पारु गुनथारु ।
 सहजं ररकारु एक अधारु नमो सुखारु निजसारु ॥
 अपरम विस्तारु संत सिलारु नाय मकारु ततसारं ।
 गुरू हमारं रत ररकारं निरकारं जिय निरकारम् ॥ ५ ॥
 तहँ लिबलायं एक समायं निरँजन रायं मुखगायं ।
 प्राण प्रचायं चाह मिटायं द्वैत न थायं अखरायम् ॥
 अधरं घरपायं स्थिरता सायं भय नहि लायं इकतारं ।
 गुरू हमारं रत ररकारं निरकारं जिय निरकारम् ॥ ६ ॥
 संतन सब गायं एक वतायं धिन सो ध्यायं पदपायं ।
 उलट न आयं जुरा न खायं गर्भ न जायं सिटकायम् ॥
 साहिव तुम सायं मिले वधायं धिन धिन थायं विस्तारं ।
 गुरू हमारं रत ररकारं निरकारं जिय निरकारम् ॥ ७ ॥
 एकं तज अष्टं मिटे दुखष्टं सोई स्पष्टं सब सष्टं ।
 अष्टं पुनि दष्टं गावत नष्टं कहे घटतष्टं एकष्टम् ॥
 वेदं पति रष्टं मुरता चष्टं अंत एकष्टं सिधकारं ।
 गुरू हमारं रत ररकारं निरकारं जिय निरकारम् ॥ ८ ॥

दोहा ।

नमो तारणा जन समय, परब्रह्म अखिल अनाद ।
 यो समाधि मुनिद मिले, पूरण अगम अगाद ॥ १ ॥
 ज्वाला सुत नम मध मिले, फेर न सूतर माय ।
 यो हरिराम राम तत, उलट पलट नहिं याय ॥ २ ॥

अथ उभयगुरुमहिमाअष्टक ।

छंद गीतक ।

नमो नित अवतार हरि जन नमो वार प्रतापयम् ।
 सय हरण कलमप तरण तारण राम मतर जापयम् ॥
 जगजीयतारण दयाधारण दयापाल पधारयम् ।
 धिन लोक चयदै माहिं उच्छव भक्ति विरद घधारयम् ॥ १ ॥
 जुग सोइ धिन दिन साधुचपुधर समो ज्ञान प्रकाशयम् ।
 फुरदस्त अनुभव गस्त आतम त्रिविध ताप विनासयम् ॥
 धिन द्वीपजवू पडभरत वरण कमज्या भूमयम् ।
 उघोत सिद्धत पथ हरिपुर मेढ माया धूमयम् ॥ २ ॥
 तह देश माक मझ धिन धर गाम जहें विनामयम् ।
 धिन सदन हरिजन पतितपावन प्रगट रामसनामयम् ।
 धिन वश अशज तातमात सप्त गोतजु उद्धरे ।
 जन सकल पावन दश धावन साधु गमा अघ हरे ॥ ३ ॥
 जन राम निमल दश उज्वल चरण घाट सरोरयम् ।
 शिप हेत मायन उदय कारण मेदि पाप करोरयम् ॥
 नित द्वाद निर्मल साच आझा इष्ट मन वच धारयम् ।
 घत वरण नर अरु नाहि अत्यज परश सिद्धत पारयम् ॥ ४ ॥
 बड भाग जाग समाज हरिजन काल जीव वैचावना ।
 मिल अमरपद सिद्ध अगम आनंद राम अमृत पावना ॥
 मिल सय तीरथ पुरी सातु धाम क्षेत्र अनतयम् ।
 सय प्रथ अर्थ तत्वसार मूलमतर सतयम् ॥ ५ ॥
 धिन मोक्षगामी राह अपयग तुल न तोले जासकम् ।
 चय प्रह्ल शेष उचार मुख सुख नित्य महिमादासकम् ॥
 हुलसाय सो मन नमो सतगुरु नाम हरियानदयम् ।
 सुस्थान सिद्धथल प्रणम्य मन वच चारवार सुचदयम् ॥ ६ ॥
 जनपद प्रसाद साधु आद नमो रामादासयम् ।
 मो मुकुट मणि धिन करण कारण चरण शरण निवासयम् ॥

धिन भूमि जोजन पुर स्थानक साधु चरण सधारयम् ।
 धिन राम ग्गोलो विराजतं नित राम ज्ञान उचारयम् ॥ ७ ॥
 धिन दरश कर्ता विघ्न हर्ता दीनदाता आपयम् ।
 भव भरम आन उपास खंडण एक आतम जापयम् ॥
 परमात्मा परसाय सद्गुरु वार वार प्रणामयम् ।
 जिव द्यालवालं कर निहालं रामदासं रामयम् ॥ ८ ॥

दोहा ।

राम नाम औपम सदा, तुलै न तोलै आन ।
 रामदास पदकंज रज, द्यालवाल धर ध्यान ॥ १ ॥
 अथ श्रीरामदासजीमहाराजमहिमावर्णनम् ।

धुरमेल ।

कलि कवीर पुनि प्रगटे रामदास महाराज धिन ।
 भर्म कर्म भव भंज काज कारण जिवतारण ।
 राम नाम उपदेश भक्ति केवल विस्तारण ॥
 काजी पंडित भेख द्वैत पख झगरा मेढ्या ।
 आतम दृष्टि उद्योत परम परमातम मेढ्या ॥
 हंस ज्ञान शिवसिद्ध मुख नीर क्षीर निरताप भिन ।
 कलि कवीर पुनि प्रगटे रामदास महाराज धिन ॥ १ ॥
 मारु धर पावन करी रामदास अवतार नित ।
 आन उपाधि कुपंथ भरम अज्ञान सिटाया ।
 अनुभव सूर उद्योत नूर आतम दरशाया ॥
 चार वरण नर नारि राम भज कारज कीना ।
 साँव वाँच उपदेश साधु संगति लिव लीना ॥
 द्याल वाल बलि बलि समो मन वच क्रम उर ध्यानचित ।
 मारु धर पावन करी रामदास अवतार नित ॥ २ ॥
 भक्त समो भूमंडमे बलि बलि वारंवार नित ।
 समत अठार प्रसिद्ध वर्ष नवको भल आयक ।
 शुक्ल पक्ष वैशाख तिथी एकादशि लायक ॥
 तादिन उदै उद्योत परस सतगुरु पद पूरा ।
 आप आप मिल आय रामभज उदै अंकूरा ॥
 सद्गुरु मिल सद्गुरु भया द्याल वाल धरि ध्यानचित ।
 भक्त समो भूमंडमे बलि बलि वारंवार नित ॥ ३ ॥

अथ गुरुअष्टक ।

छंद त्रिभंगी

वदन गुरु दाता आप बिधाता सुखनिधि साता ततपता ।
 परम सिध दाता ना पछपाता वरण न जाता धिन दाता ॥
 सम दिष्टाता ब्रह्म निजदाता अक्षर दाता इम भारम् ।
 धिन करुणासार गुरु हमार रत ररकार जिय ररकारम् ॥ १ ॥
 जय जय अविगच्छू निर्गुन तत्तू निश्चल चित्तू नहि जत्तू ।
 अधर भरत्तू सृष्टि करत्तू सबही पत्तू गुढ रत्तू ॥
 निरकार निरत्तू कबू न अत्तू ब्रह्म न मत्तू नहपारम् ।
 धिन करुणासार गुरु हमार रत ररकार जिय ररकारम् ॥ २ ॥
 नमो अरगा रट जिम सगा छटि न अगा एक रगा ।
 नामी नगा सब गतरगा तत मत अगा अण रगा ॥
 अखर अमगा सब उपरगा नाहिन लघा आधारम् ।
 धिन करुणासार गुरु हमार रत ररकार जिय ररकारम् ॥ ३ ॥
 नमो व्याल शरण न जाल नाहिन काल गोपालम् ।
 सेंट रिछपाल करे निहाल तढण न बाल प्रतिपालम् ॥
 तारण ततकाल एक सघाल जानतयाल उरधारम् ।
 धिन करुणासार गुरु हमार रत ररकार जिय ररकारम् ॥ ४ ॥
 यह निज सरण कलाजु तरण अय मन हरण उजरणम् ।
 रट गत करण अजरजरण कदेन मरण नह डरणम् ॥
 सब सिध नरण जन उखरण बारु धरण नरनारम् ।
 धिन करुणासार गुरु हमारे रत ररकार जिय ररकारम् ॥ ५ ॥
 गुढ गम गाऊ मोसर पाऊ सीसनिधाऊ बलि जाऊ ।
 द्वासा लियलाऊ यह नितचाऊ सरणासाऊ मनभाऊ ॥
 ताते ताऊ यहि सराऊ परे न जाऊ जीवारम् ।
 धिन करुणासार गुरु हमार रत ररकार जिय ररकारम् ॥ ६ ॥
 जयजय गुरु वदन सब सुखसदन अप्पनिदन करकदन ।
 तुम भज्या तरदन लहर समदन एक मनदन कटफदन ॥
 नमो स वदन मेठण ददन सब घट मदन तू सारम् ।
 धिन करुणासार गुरु हमार रत ररकार जिय ररकारम् ॥ ७ ॥
 तुमही तुम सारे जीवनतारे प्राण अधारे अप्पारे ।
 तुम इच्छा धारे परा विचारे प्राण हमारे उगारे ॥
 नाहिन न्यारे प्रीतम प्यारे एही सवारे उजियारम् ।
 धिन करुणासार गुरु हमार रत ररकार जिय ररकारम् ॥ ८ ॥

दोहा ।

इष्टहि माहिं सुदिष्टता, करुणासागर राम ।

अवके मेरी मानज्यो, इन जिव सह्यो विराम ॥ १ ॥

छीन छीन छीनत भय, लीव लीन अघनास ।

अरज करुं हितचित सदा, सतगुरु रामादास ॥ २ ॥

अथअष्टक ।

छंदभुजंगी ।

नमस्ते नमस्ते सदासुखस्वामी । नमस्ते नमस्ते अहो अंतर्यामी ।

नमस्ते दयालं कृपालं च देवा । नमस्ते भगत्तं समुक्तं स मेवा ॥

नमस्ते पराधर्मं शब्दं अतीतं । नमस्ते पंचू तीन मनमोह जीतं ।

नमस्ते रामायं सदायं उधारं । मिले रामदासं सुदासं निर्कारम् ॥ १ ॥

प्रणम्यं च देवादि देवाधिदेवं । अष्टांग दंडोत उद्योत सेवं ।

वंदन निकंदन जीते संत सारे । त्रिकालं कृपालं भगत विरद्वारे ॥

जुगे जुगमायं सहायं सुदाता । नमस्ते दयालं कृपालं विख्याता ।

अचित्यं अमितं नमस्ते सवारं । मिले रामदासं सुदासं निर्कारम् ॥ २ ॥

मनःशील मीलं विहंगंबुहारं । रतेराम रमतीत भवसिंधुपारं ।

अद्रोहं अछोहं अनामं अकामं । समाधं सुखाधं अगाधं प्रणामं ॥

चतुर्पत्तिमेकं तजे दशदोषा । निराकार निर्लेप नहि कालजोषा ।

अभय धाम विश्राम आनंद पारं । मिले रामदासं सुदासं निर्कारम् ॥ ३ ॥

जितं सत्त्वतत्वं नमस्ते अघादं । धीरं गंभीरं सधीरं समादं ।

अडोलं अबोलं नहीं मान माया । दृष्टं न मुष्टं न कष्टं न काया ॥

अखंडं अमंडं प्रचंडं अपारं । निराकार निर्धार सर्वज्ञ सारं ।

तहाँ जीव सीवं अनेकं गतारं । मिले रामदासं सुदासं निर्कारम् ॥ ४ ॥

(जानं न सेवं अहो देव देवं । पन्यो पायपायं अहो रामरायं ।

नमो नाथनाथं भयो साथसाथं । कहा गाथ गातं रखोजीवजातं ।)

भो प्रभो पावन्न परमं दयालं । करते जहँ तहँ मेरी सँभालं ॥

विकारं हमारं मिटारं मुरारं । अहो देव आनंद आनंद कारं ।

सदा विरद वारू करो क्यों न सहायं । अपत्तं सु सिप्तं कहा मुक्ख गायं ।

अलामं गुलामं तमें भवन जायं । अहो रामरायं अहो रामरायम् ॥ ५ ॥

हमें राम इच्छा करो मन्न भायं । गरीवं निवाजं सदा सुखदायं ।

मेरी लाज लाजं तुमें महाराजं । जानो राय रायं सदायं सकाजं ॥

करी जीव रिच्छा सु इच्छा कृपालं । रुद्रादि इंद्रादि ब्रह्मादि खालं ।

मनु इंद्र चंद्रं कवीन्द्रं वतायं । अहो रामरायं अहो रामरायम् ॥ ६ ॥

सवै पात पात गुरुभ्यो प्रज्ञान । अनुभ्यो सुनभ्यो यही विद्यमान ।
 इष्ट स सिष्ट प्रतिष्ट प्रकास । सुपष्ट सुदिष्ट सुमिष्ट अभ्यास ॥
 दुसष्ट फसष्ट नमस्ते अधार । तिरष्ट हरष्ट मनष्ट इमार ।
 सुचष्ट गुरष्ट एही मत्र गाय । अहो रामराय अहो रामरायम् ॥ ७ ॥
 मत्रादि अत्रादि सासा सदाय । जत्रादि तत्रादि ग्रथादि गाय ।
 रकार मकार गुरु दस मत्त्व । अनाद जुगाद शिखौ शिखतत्त्व ॥
 अनुसार ससार अपार विकाल । इड खड मड अमड विचाल ।
 इमस्त शिषस्त गुरुदेव माय । अहो रामराय अहो रामरायम् ॥ ८ ॥

दोहा ।

कहा अनुज अस्तुति करै, तुम प्रभु अगम अगाद ।
 आदि अत भयतारणा, कारण करणा साद ॥ १ ॥
 अष्ट छद् आनद पढ, दूर होय नय ताप ।
 यहि विधि गावत प्रथ सय, सतगुरु समरय आप ॥ २ ॥
 इति अष्टक ।

अथ साधुको जग ।

प्रथम साधु मुख रामरत, साच वचन गुरु ज्ञान ।
 रामदास मन यच करम, परमात्म लिख ध्यान ॥ १ ॥
 ज्ञान गरीबी धारणा, मन सबसे निरदोष ।
 शील सत्य सतोपता, सरधा सुमरण मोष ॥ २ ॥
 साध साधना शम्भुकी, उर अतर मुख एक ।
 हितकारी समझा सजन, रामा ज्ञान विवेक ॥ ३ ॥
 कहै रहै इकरस दशा, आदि भष्य अंत पर ।
 रामा गुरुधर्म आसरै, राम नाम निज टेक ॥ ४ ॥
 दया भाव ठिम्या समद, गहरा अगम अधाद ।
 दुजनता लू की वज्रण, उण्य कवे नहि याद ॥ ५ ॥
 दादुर पर करि है कहा, आप हि शीतल होय ।
 कठिन घाण दुजन वचन, रामा भिदै न कोय ॥ ६ ॥
 बाढे फाटे छानिदै, चदन तजै न पास ।
 साधु कसोटी जन सहै, हीरा घणकी आस ॥ ७ ॥
 रामा घानी चढत है, फनक अग्निवे माय ।
 साधु कसोटी ज्ञान मन, कम मेल जल जाय ॥ ८ ॥
 प्रह्व नम्रि जनक उदय, जलै घासना मूर ।
 रामा साधक मननरा, अष्ट नष्ट मल दूर ॥ ९ ॥

जिम था तिम सहजों भया, मँद गुण सिट्वा विकार ।
 साधु सनेही रामका, रामा धिन दीदार ॥ १० ॥
 निर्मल नयन वायक विमल, अनुभव गिरा उचार ।
 रामा जनकी पारखा, निर्पख निरणै सार ॥ ११ ॥
 हंस दशा एको मता, उन्मत्ता अणराग ।
 वैर विरोध किणसे नहीं, रामा अगम अथाग ॥ १२ ॥
 हरप शोक भय भंजना, शत्रू मित्र समीप ।
 रामा दश दोषां रहित, हरिजन लखण महीप ॥ १३ ॥
 बाहर दशा मिलाप विधि, आतम ब्रह्म इकताय ।
 रामा सेवक साधुका, पूज्य परमपद पाय ॥ १४ ॥
 रामा स्वामी भक्तका, स्वामी अगम अपार ।
 तन स्वामी खामी घणी, देखो तत्त्व विचार ॥ १५ ॥
 स्वामी समर्थ एक है, ता रत स्वामी होय ।
 पुत्रजु पिता स्वरूप है, रामा पद्धति सोय ॥ १६ ॥
 अंश वंश भगवद भक्त, रामा छाना नाहिं ।
 आतम परमातम मिले, साधु परमपद माहिं ॥ १७ ॥
 साधु अंग हरि रंग है, परमारथ परकाज ।
 रामा सलिता सिद्ध तरु, जीव उधारण ज्याज ॥ १८ ॥
 मेह वूठा दूठा हरी, छाना नाहीं कोय ।
 रामा साखां सायदां, प्रगट पुकारै लोय ॥ १९ ॥
 साधू दुतिया नीर सम, उपला रेख असाद ।
 जल माहीं कोरा रद्या, रामा जड़ता आद ॥ २० ॥
 साधूका दिल मोंम सम, काटी हृदय असाधु ।
 रामा सोना होय कद, पारस मिल्यो न साधु ॥ २१ ॥
 काम क्रोध माया मगज, कदे न उपजै अंग ।
 रामा प्रेमी रामका, साधू मता अभंग ॥ २२ ॥

सोरठा ।

पेसा धिन जन आज, घालवाल शरणागती ।
 रामदास महाराज, भल आये जग तारवा ॥ १ ॥
 इति ।

अथ साधुमहिमाकोअंग ।

भक्तवछल विर्द रामजी, जन बिन कहता कोय ।
 संतों हित अवतार घर, भगवद्गीता सोय ॥ १ ॥
 ३०

रामभक्ति परगट करण, जुग जुग मारी सत ।
सतों महिमा रामदास, आशा की भगवत ॥ २ ॥

श्रीभगवानुचन ।

मैं छाधूँ सतों महीं, सत हमारी देह ।
जे मोहूँ वृत्ति करै, सतोंके मुख देह ॥ ३ ॥
शायरी जिग पाडय कथा, ठिलका विदुर द्वार ।
व्यास वचन साखी सदा, जाणै सय ससार ॥ ४ ॥
पालमीकि पच प्राप्तमें, तुल्यो न जिग असमेद ।
भाय प्रीतसे हम लिया, सतों माहीं मेद ॥ ५ ॥
पत्र पुष्प फल आदि दे, अन जल भाय विचार ।
साधु समर्पण मम करै, मान लेहु निरधार ॥ ६ ॥
भाय भोग सम भोग नहिं, सता के आधीन ।
प्राण सनेही रामजन, भक्ती परगट फीन ॥ ७ ॥
मम स्वरूप निश्चै करण, आदि अत निनधाम ।
सो सतों में देखियो, परगट साखी राम ॥ ८ ॥
लक्ष्मी आदि वैकुण्ठ दे, भक्त समी नहिं कोय ।
निज निवास निज निधि इहा, रामा परगट जोय ॥ ९ ॥
भक्ती ज्ञान पैराग्य सुत, परगट मेरो दास ।
मेरो भग मेरो दरश, परसै रामदास ॥ १० ॥
साधु शत्रु मेरी गिरा, अनुभव ग्रह अपार ।
जो भवणों नीका करै, जाय सतके द्वार ॥ ११ ॥
भक्तों नारी नाक मम, भक्तों साखी साज ।
आख नाक आनन यदन, सीस शिरोमणि राख ॥ १२ ॥
हाथ पाँव नख शिख हृदय, अष्टभग मन बुद्धि ।
सो यरणै जनु सगता, रामा परगट शुद्धि ॥ १३ ॥
भक्त कहै सोइ करु, यह मम टेक निधान ।
कुण प्यारो जय विजयसो, रामा धान्यो प्रान ॥ १४ ॥
मम पद मेरी ईशता, तजी भक्तक काज ।
याताह नरसिंह मीन हुह, हयप्रीय कुन साज ॥ १५ ॥
छाज प्रतिज्ञा प्राण मम, बोल बौह आधार ।
रामा परगट देखलो, जुग जुग जन विस्तार ॥ १६ ॥
शरम सह आशा चहूँ, रसवालो नित नेम ।
निरवधण वधणमह, वैभ्यो भावना मम ॥ १७ ॥

भक्त नचावै तो नचूं, जाचक बलिके द्वार ।
 वेढ्यो भयो मल्लूकके, रामा धिन करतार ॥ १८ ॥
 पनवाड़ा नाख्या अवश्य, पांडव जिगके माहिं ।
 रामा लज्जा द्रौपदी, आई तातें ताहिं ॥ १९ ॥
 हाली भयो क बालदी, दास खास जनहेत ।
 नीर पिलायो नारि हुय, रामा नरसी नेत ॥ २० ॥
 घट घट माहीं रामजी, जैमलके जुध भीर ।
 अश्व चढे धायो अवश्य, रामा अपणी पीर ॥ २१ ॥
 तनु कासी सारी करी, विपति सही धर रूप ।
 रामा माधोदासके, आप सिलावण चूप ॥ २२ ॥
 रूखो सूखो ना गिन्यो, लावण पुरस्यो खीच ।
 करमांकुं कीनी प्रगट, राम जनाके बीच ॥ २३ ॥
 भक्ताँ हित केता चरित, महिमा अनंत अपार ।
 शब्द ब्रह्म साखी सदा, परसापरस बुद्धार ॥ २४ ॥
 रामजना वक्ता जहाँ, श्रोता लक्ष्मी रूप ।
 रामा संशय भक्तके, वक्ता आप अनूप ॥ २५ ॥
 ठाढो राखै जहाँ रहैं, मेहहै जाऊं जेथ ।
 भक्तिमान् सो घर बडा, भक्ताँ बिना न केथ ॥ २६ ॥
 सब प्रतिपालक मै सदा, सबही मेरा जीव ।
 भक्ताँ द्रोही द्रोह मम, मेढूं पालण सीव ॥ २७ ॥
 मेरो वैरी जगतमें, निंदक सम नहि कोय ।
 जड़ा मूल खोजं अवश्य, रामा मारुं जोय ॥ २८ ॥
 प्राण घातकी जगतमें, भक्त द्रोह दुख दाय ।
 कहै भगवत छोड़ूं नहीं, तीन लोकके माँय ॥ २९ ॥
 वंचै न किनके आसरै, शिव कमला अज ठोर ।
 रामा रक्षा कुण करै, सब पातक को मोर ॥ ३० ॥
 दुरवासाकुं पूछिकै, कीज्यो कोई क्लेश ।
 शरणो द्विजवर दुखित को, मेढ्यो मनो अंदेश ॥ ३१ ॥
 जनद्रोह जनसे मिटै, हमसे मिटै न कोय ।
 हूं चाकर भक्ताँ तणो, महिमा प्रगट सोय ॥ ३२ ॥
 लक्ष्मी दासी भक्तकी, चवडै कीनी चाय ।
 च्यार पदारथ मुक्तिचत, रामा संताँ दाय ॥ ३३ ॥
 साधु शब्द मेढै दुष्ट, सो मेरे मुखथाप ।
 रामा देहकृत देखही, चख फोड़नको पाप ॥ ३४ ॥

जनका भाव चधारिकै, पीछै मोला होय ।
 रामा भगवत् धर्मर्म, बैरी कहिये सोय ॥ ३५ ॥
 हास्य करावै भक्तकी, मेरी नाकी घात ।
 मस्तक छेदण रामदास, आनदेवकी जात ॥ ३६ ॥
 गुरु आखा लोपै दुष्ट, हाथ हमारा लेह ।
 जुगुरो हुइ जनसे बिडै, रामा पगुल तेह ॥ ३७ ॥
 मेरा पग यादत अवश्य, दासों माहिं विछेप ।
 रामा भोजन साधुके, हरै स पेट दुछेप ॥ ३८ ॥
 याद करै गुरुदेवसे, जाणीतल मन मोद ।
 रामा हिरदै घातफी, लह्यो न उत्तम योद ॥ ३९ ॥
 आन मन भूता यजै, मूक हमारै सोय ।
 मम मारण सम जाणिय, साधू बेमुख होय ॥ ४० ॥
 देश कहा परदेशमें, चाहत घर कुशलात ।
 मेरो घर है रामजन, सदा हमारे साथ ॥ ४१ ॥
 घडे पुरुषके पुनकू, लाड लडावै कोय ।
 पैठा सूता रोठिया, दोनू परत मुख होय ॥ ४२ ॥
 राम जनॉके दासकी, मान लेउ अरदाम ।
 या लोकां परलोभमें, ब्रह्मानन्द बिलास ॥ ४३ ॥
 मोक्ष बाधे प्रीतबी, राम जनॉके सग ।
 मेरो प्यारो होय जद, रामा भक्ता रग ॥ ४४ ॥
 ब्रह्मड निधि दाता हरी, कमजा कर कोइ लेत ।
 कैवल्यपद दाता अवश्य, रामा सतों हेत ॥ ४५ ॥
 अश वश परगट करण, जहँ अवतार धरत ।
 रामा नित अवतार जन, महिमा कोटि अनत ॥ ४६ ॥
 कहा पारसका मोल है, कहा साधुसी जात ।
 लोहा जिमि कचन करै, हरिजन शान निर्यात ॥ ४७ ॥
 कामधेनु चिंतामणी, कहा सुरतदका मोल ।
 रामा गुण परगट करै, साधू शब्द अतोळ ॥ ४८ ॥
 हरिजनकू हीणो गिणै, मेरै हीणो सोय ।
 कहा ब्राह्मण क्षत्री वैश्य, कुल्को घटे न कोय ॥ ४९ ॥
 रामा धिन माता पिता, पुत्र भया ते साथ ।
 राममजन करता रक्षा, सस गोत मिट व्याध ॥ ५० ॥

सोरठा ।

धिन जननी जग माहिं, हरिजन जिनके पुत्र होय ।
 आन विपै दुख दाहि, राम विमुख गंडशूरड़ी ॥ ५१ ॥
 कूख सपूती सोय, सूर सती साधू भण ।
 पक्ष उजालै दोय, रामा वंश भलाइयाँ ॥ ५२ ॥
 इति ।

अथ साधुदर्शन-मिलाप-माहात्म्यकोअंग ।

दर्शण च्यार प्रकार जन, कहत मुनीश्वर वेद ।
 रामा गुरु प्रसादते, जीव उधारण मेद ॥ १ ॥
 श्रवण चक्षु दर्शण जनों, परसण ज्ञान विचार ।
 शब्द दर्श परगट भया, लह्या आप ततसार ॥ २ ॥
 प्रथम श्रवण सुण साधुका, दर्शण कीजै जाय ।
 रामा महात्म्य अगम है, भक्ति मुक्ति पद पाय ॥ ३ ॥
 जन चितवन फल सहस्र हुय, गमन करत लख होय ।
 रामा पद अश्वमेध यज्ञ, फलै मनोरथ सोय ॥ ४ ॥
 विघ्न हरै आनंद करै, रामा दर्शण साद ।
 चल ताहीं सुख ऊपजै, फलै मनोरथ आद ॥ ५ ॥
 आधि व्याधि विक्षेपता, देव चतुर्दश लाग ।
 सो सहाय मारग महीं, भक्ती दृढ अनुराग ॥ ६ ॥
 धरणि गगन पाणी पवन, चंद सूर पख होय ।
 लगन रामजन मिलनकी, उदै पदारथ सोय ॥ ७ ॥
 जम चौकी भाजत अवश्य, पंथ पारपद साथ ।
 साधू दर्शण जातरा, सहायक त्रिभुवन नाथ ॥ ८ ॥
 विघ्नहरण मंगलकरण, आनंद उदय अनंत ।
 रामा धिन दिन धिन घड़ी, साधु दर्श भगवंत ॥ ९ ॥
 साष्टांग दंडोत करि, देखत शीश नमाय ।
 राम राम महाराज मुख, रामा विघ्न विलाय ॥ १० ॥
 जन्म करम पातक सकल, हरा गया तत्काल ।
 रामा जोरत हाथ जुग, चंदन राम कृपाल ॥ ११ ॥
 जमदंड दूरै होय है, अष्टांग दंडोत ।
 चौरासी फेरा मिटै, परिक्रमा फल होत ॥ १२ ॥
 दर्शण परसण रामजन, अनंत कोटि संत ज्ञान ।
 रामा महात्म ज्ञानका, शब्द ब्रह्म आख्यान ॥ १३ ॥

साधू दर्शन देखतों, मन परसण हुय जाय ।
 अमी दृष्टि सतगुरु कृपा, राम बताया मोय ॥ १४ ॥
 सूर उदय रजनी मिटै, साधु द्वै अज्ञान ।
 रामा शशि दरखै अमी, शीतल ध्यान विज्ञान ॥ १५ ॥
 सय पदारथ सय सिद्धि, दशण च्यार मिलाप ।
 रामा महातम अगम है, परसै आपोआप ॥ १६ ॥
 रामा लाषा लोडसी, आतम उदै अहूर ।
 जम सफल जीवन सफल, नितप्रति साधु हजूर ॥ १७ ॥
 इति ।

वक्ताजिज्ञासुप्रतिवचन सुखगामीआख्यान ।

रामा जेज न कीजिये, मिलतों हरि के सत ।
 ज्ञान उदय अघ दूरि हुय, आज मिले भगवत ॥ १ ॥
 शब्द ग्रह परग्रहका, खोलै भक्ति भंडार ।
 रामदास ता भक्तिके, हरिजन बडा उदार ॥ २ ॥
 मनरे दासा बद्गी, करिये चित्त लगाय ।
 यह मोसर दिन पाहुणा, राम कृपाते पाय ॥ ३ ॥
 श्वास न्वास छीजत अउदय, दुष्कर काल फकर ।
 रामा याते ऊरै, समरय साधु हजूर ॥ ४ ॥
 क्षणभंगुरको ठाठ है, अरु आयु कलि काल ।
 रामा जेज न कीजिये, मिलता साधु सुफाल ॥ ५ ॥
 ज्ञान सीख मन धारिके, दशण कीजे साध ।
 रामा भाव बधारिये, यह है अर्म अगाध ॥ ६ ॥
 अहसठ तीर्थ शिरोमणी, गया निमल नीर ।
 सो चाहत जनके चरण शवरी पद रज खीर ॥ ७ ॥
 तुलै न तोलै धर्म कोउ, दशण साधु मिलाप ।
 ऊणत जमाजमकी, भेटण त्रिविधहि ताप ॥ ८ ॥
 जोग जड तप दान पुनि, अवन बदन सोय ।
 रामा तुलै न फल कोउ, राम साधु मिल होय ॥ ९ ॥
 राम मिल्या सतों मही, सतों बिना न राम ।
 आदि अत मध्य देखलो, रामा जन परणाम ॥ १० ॥
 सोरठा ।

घालवाल धिन सोय, ऋद्धा लाहा जमरा ।
 साधु मिल्या सुख होय, अमिट भाव रहज्यो सदा ॥ १ ॥
 इति ।

अथ भक्तिभावकोअंग ।

रामा भक्ती अंग यह, वरतै ज्ञान विचार ।
 मन क्रम वच इक धारणा, अमिट भाव इकतार ॥ १ ॥
 आर्जवता संतोषता, कदे न मन अभिमान ।
 श्रवण कथा रुचि राम रति, पूजा साधु विधान ॥ २ ॥
 साधु वैण सांचा हृदै, कदे न पलटै मन्न ।
 करै कीर्तन एक रस, राम भजन हरिजन्न ॥ ३ ॥
 चरणसेव पूजन जना, वदन दासा निन्न ।
 सखा समर्पन भावना, रामा साचे चित्त ॥ ४ ॥
 भलों पधारे रामजन, आनंद अगम अपार ।
 आज भयो पावन भवन, रामा भाव बधार ॥ ५ ॥
 रामा भाव बधावना, पलकों प्राण अवार ।
 आज भयो वैकुण्ठ घर, चरण रामजन धार ॥ ६ ॥
 पदरज जीव उधार मम, मन मंजन शुधि होय ।
 चार पदारथ मुक्तिचत, अब संशय नहिं कोय ॥ ७ ॥
 आज पधारे रामजी, अमर पुरी एवास ।
 रामा ब्राजै राम जन, हरै कठिण जम त्रास ॥ ८ ॥
 भूत प्रेत छल छिद्रता, डाकण स्यारी जोय ।
 मूठ मंत्र भाजै भरम, नवग्रह रहै न कोय ॥ ९ ॥
 लाग जाग सारी मिटै, खेड़ा राक्षस दूर ।
 आज भय पावन परम, साध चरण धिन धूर ॥ १० ॥
 अगड़ बगड़ धिन सोहना, पंथ संत महाराज ।
 भला विराजे रामजन, आनंद ब्रह्म समाज ॥ ११ ॥
 विष्णु ब्रह्मा शिव संत सब, आए सतगुरु संग ।
 रामा केवल भक्तका, प्राप्ती ज्ञान अभंग ॥ १२ ॥
 भक्त भाव कारण सफल, परमपदारथ साद ।
 रामा भक्ती भाव दृढ, धरम परायण आद ॥ १३ ॥
 भाव विना भक्ती नही, भक्ति विना नहि भाव ।
 रामा किरणों सूर मिल, दृगमध्ये दरसाव ॥ १४ ॥
 रामा भक्ती भाव मिल, यह सद्गतिके मूल ।
 रामभजन तत मूल है, मेढण संशय सूल ॥ १५ ॥
 रामा भक्ती अंग सब, प्रबल भावते होय ।
 राम दिसावर साधुमें, साखी प्रगट जोय ॥ १६ ॥

जल माही प्रतिविंब चंद, द्रवै अमी असड ।
 रामा ग्रहमंड साधु वषु, पूरण ग्रहा अमड ॥ १७ ॥
 परम पदारथ सत है, भाव दिसावर आद ।
 रामा मर्हगा भाव है, कारण भाव प्रसाद ॥ १८ ॥
 राम दिसावर साधु है, साधुभावके मोंय ।
 रामा परगट देखलो, साक्षात दरसाय ॥ १९ ॥
 लाखा पैसा भावमें, वस्तु देशातर जाय ।
 रामदास इक भाव विन, रोवे मूल ठगाय ॥ २० ॥
 हाथ पोंच नहिं वस्तु कै, नाहिं किणसु नेह ।
 भाव यिकायत रामदास, लाखा कोसा तेह ॥ २१ ॥
 वस्तु आपणै चाहती, जाको वृझे भाव ।
 रामा जाय घजारमें, वृझे नहिं सब भाव ॥ २२ ॥
 रामा शब्दा भावमें, ग्रहानंद गलतान ।
 राम मिल्यांकी पारखा, दरशण पसरण ज्ञान ॥ २३ ॥
 साधु मेह किनके घरे, राम त्रिपा तहें जाय ।
 रामदास आनंद उदय, लीजै भाव बधाय ॥ २४ ॥
 तहें सुगंध जहें अमर है, मीन नीर अस्थान ।
 रामा भक्ती भाव है जहां साधु प्रधान ॥ २५ ॥
 समर सिंह सुरा जहों, वणिक देस व्यवहार ।
 रामजनों विचरै अवस, भाव भक्ति जिण द्वार ॥ २६ ॥
 भूख वृषा देखै नहीं, जात पोंति धन धाम ।
 रामा साँधी भावना, सत जहों विधाम ॥ २७ ॥
 रामा भोजन भावरो, लगे रामके भोग ।
 भाव विना अमृत गरल, हरिजन जाणै रोग ॥ २८ ॥
 व्यजन चार प्रकारके, छप्पनभोग विलास ।
 रामा एरुण भावमें, जाणै हरिके दास ॥ २९ ॥
 कदा लूखा सूखा कदा भोजन भाव प्रसाद ।
 रामा महिमा विस्तरी, बोर केल फल आदि ॥ ३० ॥
 गव अहार समथ करै, भाव जिमावै सत ।
 रामा वृषी होय जह, नमो नमो भगवत ॥ ३१ ॥
 शीरख पधरणा सावटू, भाव समा नहिं कोय ।
 आसण बासण भावका, ता पीछै सब होय ॥ ३२ ॥
 राम सदन हरिजन अवश्य, रामा साचा भाव ।
 सुरत देव निजपद लियो, परसण जादय राव ॥ ३३ ॥

गोप ग्वाल भावन भवन, अवध पुरी तरि सोय ।
 राम दरस नौका भण, पातक रह्यो न कोय ॥ ३४ ॥
 राम रूप हरिजन प्रगट, भाव भक्ति आराध ।
 जुग जुग माहीं देखलो, रामा तारण साध ॥ ३५ ॥
 मन वच क्रम सरधा लियाँ, वणै सजनके हेत ।
 रामा साची भावना, जन्म सफल कर लेत ॥ ३६ ॥
 दृष्टि पदार्थ बुद्धि लौं, उत्तम ब्रह्मंड माहिं ।
 रामा अरपै भावसूं, सेवग संशय नाहिं ॥ ३७ ॥
 निगम पुराण शास्तर कहै, अनुक्रम भाव समेत ।
 जैसी विधि चित चाहना, जन्म सफल करलेत ॥ ३८ ॥

सोरठा ।

भक्ती भाव अपार । दिन जन सेवग साधुका ॥
 सहजो भवसिंधु पार । दयालवाल संशय नहीं ॥ ३९ ॥

इति ।

अथ टेकको अंग ।

टेक एक सारों सिरै, राम थंभ शिव शेष ।
 रामा सता अनेक है, ररंकार रत एष ॥ १ ॥
 ब्रह्मंड चवदै लोक सब, रामा एक अधार ।
 पनंग टेक अविचल सदा, जपै एक ररंकार ॥ २ ॥
 राम जना परतीत दृढ़, खरो भरोसो एक ।
 राम विना मानै नहीं, पचि पचि मरो अनेक ॥ ३ ॥
 रामा आदि अनादिमें, निरपख निर्भै एक ।
 राम सुमर अमर भया, जुग जुग संत अनेक ॥ ४ ॥
 नमो नमो ब्रह्मादकी, अविचल टेक सदाहि ।
 राम कहत रामै मिल्या, रामा बंदौं ताहि ॥ ५ ॥
 हिरण्यकशिपु पच पच मरा, कमजा खोई अंध ।
 अंत टेक साची रही, भक्त टेक परबंध ॥ ६ ॥
 रामा हरिजन अगम गति, राम नाम सब टेक ।
 एकै माहि अनेक है, एक विना शुन देक ॥ ७ ॥
 खंड करुं आकाशका, पछिम उगाऊं सूर ।
 राम विना मानूँ नहीं, हरिजन उदै अंकूर ॥ ८ ॥
 रामा कला अनेक करि, कोटि रचै ब्रह्मंड ।
 रामविना मानै नहीं, हरि जन टेक अखंड ॥ ९ ॥
 ३१

सता दिखायै विष्णुकी, आणधरै अवतार ।
 रामविना माने नहीं, हरिजनका मत सार ॥ १० ॥
 परगट साखी देखलो, खुदवे टेक कवीर ।
 रामा रत्ता एम्सू, दूरे झड़या जझीर ॥ ११ ॥
 बालमीकि इक आसरे, परगट परचो होय ।
 शय पचानन पूरियो, हरिजन समो न कोय ॥ १२ ॥
 देह धरो केती फरो, अतर गत कहि देत ।
 सत न मानै राम बिन, झूठ सिधाइ भेत ॥ १३ ॥
 उडै गडै जल पर चलै, लघु दीरघ दुइ जाय ।
 मानै नाहीं रामजन, रामा झूठ उपाय ॥ १४ ॥
 फोड़ पिंड परगट करै, फोड़ौं भुजा अनेक ।
 रामा हरिजन रामबिन, मानै नाहीं एक ॥ १५ ॥
 काल काल फी जपना, काल काल यतमान ।
 रामा एफण रामबिन, सयही फोरुट जान ॥ १६ ॥
 शक्ती माया मडही, नाना रूप अनेक ।
 हरि जन रता अरूपसू, रामा कारण एक ॥ १७ ॥
 राम टेक छाडै नहीं, आदि अत इक ध्यान ।
 रामा बचकै देखलो, सुर्य कैसा प्रान ॥ १८ ॥
 सती न प्यारा लूगड़ा, दाता मिणे न धन ।
 राम धारणै रामदास, सता कीनो भय ॥ १९ ॥
 जीव दियो इक राम कू, राम प्राण पति एरु ।
 तिरो मरो भाँनि गिरो, रामा डर नहिं नैक ॥ २० ॥
 स्वराग नर्क सदाय नहीं, जे नर रत्ता राम ।
 मुक्ति न चले रामदास, क्या करणीसे काम ॥ २१ ॥
 करणी एको राम है, राम विना शुन सोय ।
 रामा बेचल टेक इक, यामें आनद होय ॥ २२ ॥
 धरिया दिक् गावै लग्या, अपणी अपणी टेक ।
 जाति पाति कुल परपता, रामा करमा रेक ॥ २३ ॥
 जोनि धरै गुण गिस्तै, बाह्य जीव समाच ।
 रामा हरिजन फयो तजै, राम भजनको जाय ॥ २४ ॥
 शिव गुण कँठ लीया रहै, रास अज निगमेरु ।
 प्रतिपालक सात्विक विष्णु, रामा अपणी टेक ॥ २५ ॥
 चङ्गवानल सिंधु ना तनै, अग्री जुग चरोर ।
 रामा इदर गाजियाँ, प्रगट थोळ मोर ॥ २६ ॥

अनङ्ग टेक आकाश धिर, जलचर जलके माँय ।
 थलचर थलमें रहत है, रामा अपणै भाय ॥ २७ ॥
 कुरंग मरत है नाद रस, तजै न अपणी टेक ।
 साधु टेक कैसे तजै, रामा पतिव्रत एक ॥ २८ ॥
 देह गेह घर तजत है, कामक्रोधके हेत ।
 जगसे आया ज्ञानि जन, राम पियाके नेत ॥ २९ ॥
 लोभ मोहकी धारमें, झूलत मेंमत होय ।
 रामा हरिजल झूलता, हरिजन संकै न कोय ॥ ३० ॥
 जीव भूत कसणी सहै, श्वासा लेत निधान ।
 राम टेक जन श्वास है, रामा जीवन प्रान ॥ ३१ ॥
 राम टेक जुग जुग अमर, परगट भक्त निसाण ।
 भक्त विछल विरद विस्तन्यो, भगवद वचन प्रमाण ॥ ३२ ॥
 राम निभाज्यो टेक इक, यह मेरी अरदास ।
 जीवत तजै न रामदास, मूवां हरिके पास ॥ ३३ ॥
 टेक निभावो रामजी, तन जावो सोवार ।
 रामदास हरि गुरु कृपा, यह मत जनका सार ॥ ३४ ॥
 रामदास अरदास यह, यह सतगुरु वरदान ।
 मन वच क्रम इक धारणा, राम टेक पख प्रान ॥ ३५ ॥
 रामा भवके दुःख को, संशय नहीं लगाय ।
 राम टेक मेरी रखो, आदि अंत इकतार ॥ ३६ ॥
 जैसी धारी धारणा, ऐसी अंत निधान ।
 राम टेक निभज्यो सदा, रामदास गुरु ज्ञान ॥ ३७ ॥

सोरठा ।

श्री गुरु समरथ आप, एक भरोसो आसरो ।
 राम मंत्र जप जाप, घालवाल एकै मही ॥ ३८ ॥
 इति ।

अथचेतावणीकोअंग ।

छप्पय ।

क्षणिक वीत नरदेह तिनक टूटत कहा वारा ।
 ज्यों तुषार आदित्य क्षुभित प्रतिबिंब बुहारा ॥
 लकरी अग्नि प्रभाव तेल जरतां बुझ जाती ।
 सलिता नीरस तीर जात सासा दिन राती ॥
 अथ छाँह सुख सैन कहा यों जग देखत जाहि सब ।
 जन रामा मोसर दुलभ हरि भज लेखै लाय अब ॥ १ ॥

दुलभ दुलभ नर देह लेह सुमरण रट राम ।
 क्षणिक क्षणिक क्षण भग जगत अधिपति सत्र काम ॥
 भगवद् धायक गाय ध्याय दुतिया मध भाखे ।
 एकादश प्राकृत काव्य हरि निणय दाखे ॥
 गुरु प्रसाद सब जन कहि दुलभ देह परकर अवै ।
 जन रामा वीतौ अवधि फेर न आसी को करै ॥ २ ॥
 तब ते तूटा फूल डार धुर लगे न कोई ।
 कागद एक सकेल पुनि सकेला नहि होई ॥
 सती साह सिणगार तेल तिरिया इक वारा ।
 औला जल गल मित्या फेर होवै नहि सारा ॥
 मोह वासना नीर मक्षि नर देह कदे नहि गालिये ।
 जन रामा हरि प्रेम विच गल्या त मय दुख टालिये ॥ ३ ॥
 धरण जीव घट मरण राव राजा पतसाई ।
 घृणासुर हिरण्याक्ष जोध बलि गया बिलाई ॥
 दशरुधर मुर अघ हिरणकश्यपु चक्कचूरा ।
 पटचक्रवै पट होय वाणासुर मरने सूरा ॥
 छपन कोटि क्षोहणि अठार अवतार धरण सोभी गए ।
 जन रामा चयवै भजन अघनि अवधि कह्यो कुण रहे ॥ ४ ॥
 भजो भजोरे राम तजो जगफी चतुराई ।
 सजो सजोरे साज काच तन जात बिलाई ॥
 गया मिलै नहि बहुरि मुकर भजन नहि सदत ।
 फोब जतन मिल प्रज्ञा कहि सोई मति मदत ॥
 जाता निश्चै जाय सत्र रहता हरि संगी सदा ।
 चेत चिंतामणि उरमही ता पाया आतम मुदा ॥ ५ ॥
 रहता सतगुरु शब्द एक सरवग सदाई ।
 नमो राम रमतीत गया नहि भया कदाई ॥
 एकै रस अनादि साधु तासू लिवलायक ।
 राम शब्द आराध परम पूरण पद पायक ॥
 प्रान सूर भरपूर घट तम अग्रान अघ भेट है ।
 जन रामा जीवन सफल साचा साहिव भेट है ॥ ६ ॥
 जन्म सफल कर आज राज मिनसातनु पायो ।
 बाळित प्रज्ञा इद्र करम भोमस कुण नायो ॥
 अलभ्य परम अस्थान शान बेचल गति न्यायी ।
 योग यज्ञ धमन्य भरमणी बुद्धि हमारी ॥

नाग लोक तप देव कहा सब वांछित नरदेह धर ।
 जन रामा खंड भरतमें चोथो पद मिल सोइ कर ॥ ७ ॥
 खरची खावण ठोर और अस्थान अधिर इत ।
 कमज्या करण सुखेत हेत नरदेह चेत चित ॥
 केवल शब्द अराध साधु सब याकूं गावत ।
 निर्भय मिलै सुथान वहुनि भव दुख नहिं पावत ॥
 या सुखमें मत भूल नर मंडप मंड केता भया ।
 जन रामा मेरी मही अंत देख किण दिस गया ॥ ८ ॥
 कहाँ वे भोग संभोग कहाँ मंदिर वे माया ।
 हीर चीर सिणगार ग्रीत युवती रस छाया ॥
 चंद वदन तन कुंदन लजत कंदर्प चख सोहै ।
 कहाँ वे रूप किशोर कंज सुत अंत सको है ॥
 नव खंड डंड तप स्वर्ग गति इच्छा चक्र वरतत जगत ।
 मन प्रकार सुख शक लख जन रामा हरि विन अगत ॥ ९ ॥
 कहूंक ढरे मैदान चुणत कहूंक कली चढावत ।
 कहूंक सुन ऐवास कहूंक जग नगर वसावत ॥
 किसी और मन धीर गीरवो किनको करियै ।
 सब जाता संसार राम भज पार उतरियै ॥
 चेत हेत हरिनाम तूं झूठो मोह निवारियै ।
 जन रामा मन समझ कर साधु वचन उर धारियै ॥ १० ॥
 चेत चेत रे चेत नेति नित ऐसे गावै ।
 शेष एक आधार पलक वीसर नहिं जावै ॥
 ब्रह्मा विष्णु महेश धारणा एक धरावै ।
 सदा ध्यान सम्माधि आदि अन्नादि समावै ॥
 सो मौसर अवही मिल्यो चढ विमाण कह पारपद ।
 जन रामा गाफिल नरां जोंण चोरासी पारकद ॥ ११ ॥
 इन पुर तैं दोय माग इच्छा हुय सहजां जाना ।
 एक ब्रह्म अस्थान एक जम हाथ विकाना ॥
 उर विज्ञान जन साथ राम पँवडा भर लीजै ।
 निरभै नित आनंद अगम घर आसण कीजै ॥
 पर उपकारी संत धिन जीवन बंध छुडावना ।
 जन रामा आदू कवल कर सच्चा दिन पाहुना ॥ १२ ॥
 सूकर श्वान सियाल रासभा उपर जानो ।
 हरि वैमुख मतिअंध काल भख उनही मानो ॥

वायस आहार निहार साप घर मंदिर माया ।
 धैर्य गति चमगाद स्थूल अजगरसी काया ॥
 कुल बुहार मकरी प्रवय किण कारण नर तनु धन्यो ।
 जन रामा किरकट अग्रि नाहिं न हरि मुख उच्चन्यो ॥ १३ ॥
 औसर मोसर जाय जाय जग सग रसोई ।
 कुदुव मान मनुहार सजन उधू भूत सोई ॥
 कुवट कुपय कुप्यार प्यार ता और निभावत ।
 राज राज हमगीर लाज म वड म ध्यावत ॥
 आरम अनेक उद्यम अशेष मिनयातनु हिम्मत प्रबल ।
 जन रामा धृक् जासु पुधि हरि गुरु जन दरसन निबल ॥ १४ ॥
 इति ।

अथकालचेतावणीकोअंग ।

पुरुष कहत धर मुसह धरणि कह मुसह समावत ।
 उलट पलट व्ययहार मेद कोऊ नहिं पावत ॥
 घड़े अघ्य के अघ्य सेल राजस प्रभुताई ।
 अहू साज सम्माज परत धम कूपमें जाई ॥
 इद्र आदि भूपति कहा असुर नाग धर घपुजिता ।
 जनरामा सय्या वदन तिन विचार खावत खता ॥ १ ॥
 भरद गरद कह भया अजू होवणकी घारी ।
 महल मंदिर अन धाम रूप युवती सुत नारी ॥
 राज याजि गज कोट सहर सयका देशायक ।
 सुभट सचिव तप तेज गमन गति सूरज जायक ॥
 खलन दलन माया महा हाहाज काल सय पाय है ।
 जन रामा स्थिर प्रीति कर रहता राम सदाय है ॥ २ ॥
 वादे विणसे वेद नेह करियों क्या होइ ।
 जाती रहती नाहिं चिता करजो मत कोइ ॥
 कहता सतगुरु सत नाम नातो इक साचो ।
 सदा शब्द गुरु सग रग मनताके राचो ॥
 यह झूठे पड़ पच सवै किणतें सम्यध कीजिये ।
 जन रामा सासों यकों आदि मित्र कर लीजिये ॥ ३ ॥
 दितकारी भवसिंधु एक हरिजन है तेरा ।
 तात मात कुल भ्रात पुत्र युवती उरहेरा ॥
 मोद नीर मन प्राद तनु रुत जलचर जेता ।
 तो पावण हुसियार लार लगा अवतेता ॥

यज्ञ नाम नौका सधर मान वचन जन लेतिरै ।
 जन रामा दाता दयालु यह प्रकार कारज करै ॥ ४ ॥
 जाय जाय दिन जाय ताहि लेखै अब लावो ।
 गाय गाय इक राम बहुरि मौसर नहिं पावो ॥
 साय साय गुरु ज्ञान लाय एकण मन धारण ।
 ध्याय ध्याय अब ध्याय आय लागा जोधारण ॥
 कटक काल दुष्कर कही हरिजन पुरमध्य छूट है ।
 जन रामा पासे गयो सहीत जमरो लूट है ॥ ५ ॥
 लूट मंडी मैदान खूदग्या केइ जोधारा ।
 अतिरथी महारथी सरव कालानल चारा ॥
 केइ खाधा केइ खाय कई खावणकी वारी ।
 नर सुर असुरह नाग कहा पुरुषा रत नारी ॥
 सुख विलास रंजन मना भोग भोगावण सब गये ।
 जन रामा उर दृष्टि कर को को जनमत को रये ॥ ६ ॥
 चेत चेत नर चेत कहा तेरी ठकुराई ।
 ज्यों तीतरकुं वाज चुहाकुं लेत विलाई ॥
 तसकर देख्यो वार जाण दशरावै महीका ।
 वैश्य वाट पर भील सेर भख चीत सहीका ॥
 कहाँ गीदी बलखॉह अब मीच आय लागी निकट ।
 रामा सास सरीरमें के लीया लेसी झपट ॥ ७ ॥
 शिशर गई पोगंड किशोरहु तरुण विलायक ।
 वृद्ध जरा तनु क्षीण छीन बल रूप घटायक ॥
 भय कंपत सब हाड त्वचा सल नेतर झरि है ।
 बहरा चूंध विघाट ठीक बोलण नहिं परि है ॥
 श्याम पलट श्वेतहु भया सुधि बुधि अंग न सार है ।
 जन रामा चेतत नहीं आज काल जम मार है ॥ ८ ॥
 लख चौरासी जीव जात सब हीके होई ।
 जलचर अनचर पवन गगन अस्थिन भख सोई ॥
 तात मात मन कुटुंब मरत मोहकि सब धारा ।
 सूरवीर बलवंत सरव मै बडमें ख्वारा ॥
 हरप शोक जहँ तहँ सबै यामें कहो कहा झूठ है ।
 जन रामा अवरण बिना काल सकलकुं लूट है ॥ ९ ॥
 इति ।

अथ हरिजस ।

राग भैरव ।

पद १

श्रीगुरु रामदास नित दर्शन ऊठत उदय प्रभाते हो ।
 अष्ट अंग दडोत मदा ही त्रिविधि ताप मिटाते हो । टेढ़
 गुरुधर्म भाव परिक्रमा दीजे चौरासी मिट केरा हो ।
 दर्शन स्पर्शन मुक्ति ग्रामी जन्मजन्मका चेरा हो ॥ १ ॥
 भूरि भाग्य सिद्ध राम सभामें आनइ उदय सदाई हो ।
 निविधि पूजन करिये सतगुरु थडा भाव घडाई हो ॥ २ ॥
 येही नेम प्रेम उर मेरे चरण शरण जिय रहज्यो हो ।
 घालवाल पर परसन होकर भक्तिदान मोहि दीज्यो हो ॥ ३ ॥

पद २

रामदास गुरु चरणा माहीं रहज्यो चित्त हमारा हो ।
 यह घरदान जन्मभर चाह परचे प्राण अधारा हो ॥ टेढ़
 गुरु सेवा मोसर बड़ भागी धिनधिन आशा माहीं हो ।
 आये साधु धरम द्वारा सिध भाग्य बड़े ओलखाही हो ॥ १ ॥
 खलता सीध अपवग हरिजन रामरूपासे परसे हो ।
 जिंग अव्यमेधा फल इरु पायडे बड़भागी उर वरसे हो ॥ २ ॥
 भाव धधाया साधु उछाहा जाये लाये द्वारे हो ।
 घालवाल उधरण यह नाको गुरुमुख ज्ञान विचारे हो ॥ ३ ॥

पद ३

रातगई परमात भयो हे जागो जागण हारा हो ।
 सतगुरु ज्ञान दृष्टि दिखलाये राम उद्योत अपारा हो ॥ टेढ़
 साग असार पदार्थ भासे ब्रह्म शक्ति उर माहीं हो ।
 उत्तम सुमिरण सास उसासा कालतणा उर नाहीं हो ॥ १ ॥
 अथ अज्ञान भूत धम भागै शका डाकण दूरे हो ।
 ममता नाँद मोह मद सुपनो दोऊ दुखाहू चूर हो ॥ २ ॥
 वीजक दोय अरु उर साचा जीव आव पिनु पाये हो ।
 जन रामा अर जेज न कीजे सतगुरु ज्ञान जगाये हो ॥ ३ ॥

पद ४

चाँये भाग रहत जय रजनी राम सनेही जागै हो ।
 सतगुरु स्वरूप ध्यान उर धरिये राम भजन मं लागै हो । टेढ़

कारज येही रामसनेही गर्भ का कौल सुधारै हो ।
 या जगमें केता दिन रहणा मोह अज्ञान मिटारै हो ॥ १ ॥
 स्वप्ने सुख जगत सब रचना भूल भरम नहिं परिये हो ।
 राम संत गुरु रीझै तेरा सोई कारज करिये हो ॥ २ ॥
 मन वैराग लाग गुरुचरना काया माया झूठी हो ।
 लेखै हरि अरपण अब करियै मनसा फेर अपूठी हो ॥ ३ ॥
 जन्म सफल सोई बडभागी रामनाम लिव लावै हो ।
 द्यालवाल सतगुरुके शरणै साचा हरिजस गावै हो ॥ ४ ॥

पद ५

आवो मिलो मिल राम सनेही सतगुरु दरसन जाइये हो ।
 उदै अंकुर भक्ति उर उपजै राम अमीरस पाइये हो । डेर
 जामण मरण दोष दोय मेटै कल्मष जीव सिटाइये हो ।
 गंगा अठसठ तीर्थ यात्रा गुरुधाम परसाइये हो ॥ १ ॥
 उधरण घाट सतगुरु आज्ञा हरि जल ज्ञान झुलाइये हो ।
 प्रेम प्रवाह गलै मन जब ही भरम अज्ञान नसाइये हो ॥ २ ॥
 अनत कोटि जनको नित न्हावण परा परायण पही हो ।
 द्यालवाल मौसर बड भागी साचे भाव सनेही हो ॥ ३ ॥

पद ६

मौसर सिनखा देह मिल्यो है मत कोई गाफिल रहज्यो रे ।
 खूटा श्वास बहुरि नहिं आवै राम राम भज लीज्यो रे ॥
 जानत है शिर मोत खड़ी है चलणो सांझ सवेरो रे ।
 पांच पचीसूं बडे जोरावर लूटत है जिव डेरो रे ॥ १ ॥
 नर नारायण शहर मिल्यो है जामें सँज अपारा रे ।
 राम कृपाकर तोहि वसायो यामें काज तुह्यारा रे ॥ २ ॥
 जन्म जन्म का खाता चूकै हुय मन रामसनेही रे ।
 रामदास सतगुरुके शरणै जन्म सफल कर लेही रे ॥ ३ ॥

राग बरचरी ।

पद ७

जाग रे बडभागी जीव साधु सूर जगो ।
 ज्ञान पंखि सुरत श्रवण शब्द आदि पूगो ॥ डेर
 संत पंथ चलत बृंद मोक्ष द्वार खूलो ।
 जगत अगत मेढ स्वप्न स्वप्न दूर भूलो ॥ १ ॥

निशा भूत जमका दूत मिटी राम माया ।
 निशक दे प्रमात भयो राम नाम गाया ॥ २ ॥
 आन चोर जोर भाग भरम जलद नाहीं ।
 कमल सबल उदयकार दरस परस माहीं ॥ ३ ॥
 भजन काज कीजै आज जनम दरद जायै ।
 परिपूरण परम तत्र रामदास गायै ॥ ४ ॥

पद ८

प्रकट निरुट राम सन घटस भरम भागो ।
 नयन ज्योति राखि उद्योत चरण शरण लागो । टेढ
 दरश परश मरस नूर सूर साधु साई ।
 कमल उदित मुदित प्रभा गुलत प्रेम वाई ॥ १ ॥
 सुगधि भाय चिख चात्र अरव आनद पायो ।
 सिफल त्रिफल भेट मनकी अकल आप गायो ॥ २ ॥
 शब्द रन्द् होय परचै मुरत सरचे दरसै ।
 जमर अजर अजर पीन जीन शीव परसै ॥ ३ ॥
 कर कल्याण प्राण दान अचल ज्ञान गुरता ।
 रामदास यह विग्राम ताप भेट मुरता ॥ ४ ॥

पद ९

राखिये महाराज राज शरण राम तेरी ।
 कली काल जिव विहाल सार अरै मेरी ॥ टेढ
 मन असाध पच व्याध करत हूँ घणैरी ।
 नमै जाल कम काल ठगाम यसेरी ॥ १ ॥
 काम मोघ लह न बोध खुगल परु बेरी ।
 मोह द्वार अघफार जडता जहैरी ॥ २ ॥
 यस्यो पास काल पास सास लेत बेरी ।
 घाल फरियाद राम साध इच्छा आप केरी ॥ ३ ॥

पद १०

दीन छु जी दीनबधु दीन को नहेरो ।
 महरवान त्रिदजान प्राण भेट घेरो ॥ टेढ
 यह पुकार निराधार दरद भेट मेरो ।
 जम जम द्वार मार तार अरै तेरो ॥ १ ॥
 विपम घाट भय तिराद वेग ही निरेरो ।
 बुद्धो जात मैं अनाथ नाथ हाथ तरो ॥ २ ॥

बारवार क्यों विसार द्यालवाल चेरो ।
रामदास गुरु निवास भेट जन्म फेरो ॥ ३ ॥

पद ११

जुक्ति मुक्ति भक्ति दान शक्ति ब्रह्म दीजै ।
श्रीदयाल गुरु निहाल आज कृपा कीजै ॥ टेर
साधु संग मनूं रंग उमंग प्रेम धारा ।
भाव चाव जन उछाव गाव पीव प्यारा ॥ १ ॥
कुबुद्धि दुविधा अघ अज्ञान भेट माधो जिवका ।
शील सांच उर संतोष नाम दीजै शिवका ॥ २ ॥
मन मनोज मोह रोज जनम ता सतायो ।
दक्क सबक डाकनीके भय तैं दोर आयो ॥ ३ ॥
अभय राम जिव विश्राम रामदास साईं ।
द्यालवाल रिच्छपाल कठिन काल माईं ॥ ४ ॥

रागकालेरो ।

पद १२

सइयों म्हारी सतगुरु दरशण जासों ए । टेर
मन बैरी की एक न मानूं निज मन भाव बधासों ए ॥ १ ॥
सो दिन उदै जनम होय लेखै सनमुख शीस निवासों ए ॥ २ ॥
अष्ट अंग दंडोत वंदना परिक्रमा तिर जासों ए ॥ ३ ॥
पाय प्रसाद व्याध मिट तीनों आनंद मंगल गासों ए ॥ ४ ॥
श्रीगुरुचरण परस होय निर्मल पातक दूर सिटासों ए ॥ ५ ॥
निद्रा दारी है वटपारी तिनसूं युद्ध करासों ए ॥ ६ ॥
श्रद्धा दीजो सतगुरु म्हारा करुणा विरह जगासों ए ॥ ७ ॥
सुमरण परचेकी अभिलाषा प्रेम नेम वर पासों ए ॥ ८ ॥
द्यालवाल गुरु रामदास धिन आदि अंत निभजासों ए ॥ ९ ॥

पद १३

सजनी म्हारी रामसभा बलिहारी ए । टेर
रामसनेही परचै हरिजन चरणकमल बलिहारी ए ॥ १ ॥
तन मन धन निछरावल करसों अठसिधि नवनिधि सारी ए ॥ २ ॥
रचना ब्रह्मंड सज्जुं सँजीवन अरपू वार हजारी ए ॥ ३ ॥
सतगुरुसैं मै ऊरण नाहीं जिण दिया रामधन भारी ए ॥ ४ ॥
द्यालवाल नित लेऊं बलैया निभज्यो टेक हमारी ए ॥ ५ ॥

राग काफी ।

पद १४

मंदार रामजना घर आया हो ।

यलिजाऊ देख दरस सुख पाया हो ॥ टेक

अनत उछाह भयो मन आनद परम पदारव पाया हो ॥ १ ॥

हिरदो चौक पुराऊ सजनी चित चदन चरचाया हो ॥ २ ॥

भाव माट केसर रस घोरी महिमा सुगंधि सुहाया हो ॥ ३ ॥

सूयो प्रीति रीति हरिजनकी खान गुलाल सुवाया हो ॥ ४ ॥

पिचकारी बिरह प्रेम नीर भर नन उमग झबलाया हो ॥ ५ ॥

आज घसत सत धिन दरसन सखियों मंगल गाया हो ॥ ६ ॥

घालगाल यलि जाऊ बेला हरिजन राम मिलाया हो ॥ ७ ॥

राग कल्याण ।

पद १५

सनेहिया तुम आघो आघो राज महाराज ॥ टेक

निरधारा आधार गुसोई खरण शरणकी लाज ॥ १ ॥

जम जमकी प्रीति पुगतन फ्यों भूलत हो आज ॥ २ ॥

दीजै बरदा दयानिधि माधव मेरे है सिध काज ॥ ३ ॥

घालगाल पर ठपा कीजै राम गरीबनियाज ॥ ४ ॥

पद १६

रामइया शरणैनी प्रतिपाल । टेक

अबलग करी सोई अब कीजै अपने घरनी चाल ॥ १ ॥

जो सुरज परकासै गार्हा रात न कज विशाल ॥ २ ॥

शशि नहिं अभी द्रवै जो माधव तो निपजै केम रसाल ॥ ३ ॥

बिरह कमोदनि जीवन सोई सब लालों सिर लाल ॥ ४ ॥

घालगालके समरथ स्वामी रामदास किरपाल ॥ ५ ॥

कामिनी खोरठ ।

पद १७

विरहनि कू दरशन दीजै, साहिय अपनी करलीजै । टेक

मैं राम पिया बलिहारी, प्रभु मेटो तपत हमारी ।

दुरु दया रटि भर देखो, जोवानें तारन लेखो ॥ १ ॥

जिव जन्म जमको झूरे, आशावत आशा पूरे ।

हरि आदू बिरह बिचारो, अब पलका पलक पधारो ॥ २ ॥

मोहि श्वास कल्प सम जावै, कव प्रीतम दरश दिखावै ।
जन द्यालवाल बलि जावै, कव राम पिया घर आवै ॥ ३ ॥

पद १८

पूरवली प्रीति विचारो, पिया अब क्युं मोहि विसारो । टेढ़
धिनि प्राण पुरुषोत्तम प्यारा, सब आपहि किया पसारा ।
कायासा महल वणाया, जिव माया मोह लुभाया ॥ १ ॥
धिनि आदू सुरत संभारी, सो आयो शरण तुहारी ।
नित सहायक विदीं चारुं, यों भक्तवल्लता सारु ॥ २ ॥
जिव निर्वल बल अब काँई, सब राम समर्थ शरणाई ।
अब आप आझा सोइ कीजै, जन द्यालवाल जिव जीजै ॥ ३ ॥

पद १९

म्हारो वालो सदा सनेही, धिनि प्रीति पूरवली एही । टेढ़
जिव जन्म धन्या नहिं भूलूं, एक सहायक शरणै झूलूं ।
धिनि यो ठंभन जग माहीं, एक हरि विन दूजा नाहीं ॥ १ ॥
एक चंद कमोद पियासी, जव देख्यां मन परकासी ।
तन मन पियाजी सांचा, बलिजाऊं मनसा बाचा ॥ २ ॥
अब धनहर प्रीतम आवो, विरह चातक टेक निभावो ।
संतां धिनि सतगुरु गायो, जन द्यालवाल मन भायो ॥ ३ ॥

पद २०

पिया क्यों नहिं अवै पधारो, घर आदू रीति विचारो । टेढ़
है अबलाके बल साँई, धृक् जीव बिना देह काँई ।
हो अबलां प्राण अधारा, बलिजाऊं प्रेम प्रियारा ॥ १ ॥
प्रथुरोम सुधा मन भावे, इक नीर बिना मर जावे ।
धिनि हरिजन दर्शन तेरा, याहीमें जीवन मेरा ॥ २ ॥
विरहनि मन बच क्रम प्यासी, पिया जीवन जीव जियासी ।
तुम द्यालवालके स्वामी, अब आवो अंतरयामी ॥ ३ ॥

राग देश ।

पद २१

बलिजाऊं सिंहथल सहर सुथान ।

हरियानंद आनंद के करता अनुभव प्रगट्यो भान । टेढ़
मान सरोज नगर सोइ दीवो मेटी निशा अह्वान ॥ १ ॥

सयं पदारथ सूखन लागे आतम पायो ज्ञान ॥ २ ॥
 भर्म उलू कोचर मिट अविद्या निशिचर पखी हान ॥ ३ ॥
 शिप चकवा दिल आनद उपज्यो प्रेमी कज बिकसान ॥ ४ ॥
 विमुख कमोदनि सोइ अमूझ्यो वकता चख हरखान ॥ ५ ॥
 चालवाल गुरु तरणि एक रस विरदों भक्तिप्रवान ॥ ६ ॥

पद २२

ज्ञाने प्यारो लागेछै जी मुरघर आज ।
 रामभक्ति निज परगट की ही रामदास महाराज ॥ १ ॥
 चार वरणरू ज्ञान यतायो पावनपतित जहाज ॥ २ ॥
 घडभागी जानै ओ मोसर मडली सत समाज ॥ ३ ॥
 वरदान परसन रामसनेरी गुरु धर्म भाव सकाज ॥ ४ ॥
 अनुभव छोला उरमे प्रगटे आनद करता साज ॥ ५ ॥
 आन देवकी लाग मिटाई अदल यथाई पाज ॥ ६ ॥
 रसद यस्तु सुख सपति सारी राख काल न राज ॥ ७ ॥
 सदा सुमिक्ष दश में नयनिधि रामरायके राज ॥ ८ ॥
 सतगुरु चरण शरण घर साचो चालवालकी लाज ॥ ९ ॥

मगल २३

हम परदेसी लोक एक दिन उठ चल ।
 पहियो रामहि राम बहुरि करही मिल ॥ १ ॥
 यासो यसियो आय प्रभाते पथ परै ।
 गोलू गोलू सग नमस्कार ही अरे ॥ २ ॥
 डेरा है मैदान सराया बीच रे ।
 जागत रहियो वीर घाट बहु बीच रे ॥ ३ ॥
 राव रक मुलतान खोसिया भूपती ।
 काल महा बलवान सास अति सोखती ॥ ४ ॥
 सुखीर केतान गया सब लोग रे ।
 वारो चार विहाय सुपन को जोग रे ॥ ५ ॥
 आया परू ही एक परू ही जावणा ।
 किणसु हय न शोक यही मन लावणा ॥ ६ ॥
 रामा राम पुकार सतगुरुसग रे ।
 निमय रमिया सत ज्ञान अणभग रे ॥ ७ ॥

इति ।



Sri Dayalu Dasji Maharaj
(khetapa)

धमे विचालू तत्तकालू त्रिद घालू जाम ए ।

ऐसा गोविंदू ॥ ४ ॥

नक्खा विदारे उदर फारे असुर मारे आप ए ।

भक्तीवधारे सत सारे दु ग हारे काप ए ।

केतान तारे यों उवारे सबयारे काम ए ।

ऐसा गोविंदू ॥ ५ ॥

(प्रह्लादजी की कथा)

भक्त प्रह्लादने "नहि छाड़ू बाबा राम नाम" गाया तब असुर हिरण्यकशिपु सुनकर जला और बहुत रिसाया, प्रह्लाद को मारने के वाले सपों से रुनाया, जहर पाया, पहाड़ से गुहाया, अभिमें जलाया, और उनपर हाथी छुड़ाया, समुद्रमें बहाया, पर अहा तहा उसी नाम ने प्रह्लादजीको जिताया । तब वह अथा जाली हिरण्यकशिपु अत्यंत क्रुपित होकर बोला कि इस बालकको बाधलो । तब प्रह्लादजीने कहा नि-दयालु गोपाल परमात्मा सबमें व्यापक हैं । उस समय उसने प्रतिज्ञा की कि तुझ अमी मार बालता हू तब तत्काल धमे के बीरमें से विरदबहालू (भक्तवा बाबा वधारणे वाले) नृसिंह भगवान् प्रगट होकर असुर (हिरण्यकशिपु) के उदरका नखोंसे चीर फाड़के उसे मार दिया । जब इस प्रकार भक्ति को वधार सतों के काम सारे तब तो हेप्रभो ! मेरे दु ख को भी काटो । क्योंकि आपने कितने ही को धर और कितने ही को यों उवारे थे सब आप ही के काम हे ॥ ५ ॥

सबेया ।

बरतपाल कृपाल जो राम जहा सुमिरे वेहिछे तई अवे ।

नाम प्रताप महा महिना अकरे किय छटेठ छटेठ बाटे ॥

हेवक एक ठे एक अनेक भवे तुलसी सिद्धे तार न बाटे ।

प्रेम बसो प्रह्लादहि धे विन पाहन ते परमेश्वर बाटे ॥ १ ॥ (भक्तमाल)

देखो अरुण पा गिरि टलू मनी मगू सिद्ध ए ।

करनाथ रक्खू किये नक्खू गीन अक्खू तद ए ।

"इक निदू राघू किये साघू गीध आदू धाम ए ।"

ऐसा

सवैया ।

दीन मलीन अधीन है अंग विहग परेठ क्षिति खिल दुखारी ।

एषव" दीन दयाउ कृपाउ को देखि दुखी करुणा भई भारी ।

गीध को गोद में राखि कृपानिधि नन सरानन में भरि वारी ।

बारहि बार मुधारत पख 'जगयु' की धूरि जगनसों सारी ॥ १ ॥

दोहा ।

मुये मरत मरि ई सकल धरी पहर के बीच ।

उही न काहू आन ली नीबरज ही नीच ॥ १ ॥

रामविरह तन परिहरे सख प्रेम अवधेस ।

तैसाई तिय हित तनु तन सख सखा रुदेस ॥ २ ॥ (मछमाठ)

"शरीर सदाई भकि भाई अपि नयाई शीस ए" ।

"शिला तिराई नारि याई नाग मोंई बीस ए" ।

"सूरा पदाई पाप दाई गती याई पाम ए" ।

पेसा गोत्रिदू० ॥ ७ ॥

(भाई शरीर की कथा)

(१) शरीरभाईकी भक्ति सदैव हा भगवान् के मनभाई तिन शरीरभाई
को अपिया ने मगन मथाया ।

"याई एषवज एषवज गंगा कानन में पूछत फिरत कहे कहे नेरी सबए"
करिच ।

सचैया ।

प्रभु चाहत हैं निह केवल भक्ति न चाहत रूप कुलै बल हैं ।
रसरङ्गमणी चलि मीलिनको निज मातु समान मिले कल हैं ॥
रघुनन्दन भाव सु भूष भरे फल साय अघाय पिये जल हैं ।
शबरी के सुप्रेम पगे भल ये फल हैं कि चहुँ फल के फल हैं ॥ १ ॥

दोहा ।

प्रेम पगे चखि चार फल, कौशल्या के लाल ।
भक्तन की कबरीमणी, शबरी करी कृपाल ॥ १ ॥
अधिक बढ़ावत आपते, जन महिमा रघुवीर ।
शबरी पद रज परसिकै, शुद्ध भयो सरनीर ॥ २ ॥ (भक्तमाल)

(अहिल्याजी की कथा)

(२) जो अहिल्या शापवशात् शिला होगई थी वह भगवत्चरणरज के प्रभा से तिरकर उत्तम तपोमूर्ति श्री होकर पतिलोक को प्राप्त हुई ।

(३) कैवट ने एक नौका से ही अपने बीसों ही कुटुम्बियों का उद्धार कर लिया ।

छन्द ।

पद कमल धोइ चढाई नाव न नाथ उतराई चहौं ।
मोहि राम । राउरि आन दशरथ शपथ सब साची कहौं ॥
बर तीर मारहि लखन पै जब लगि न पाव पर्यारिहौं ।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पार उतारिहौं ॥ १ ॥

कवित्त ।

प्रभु रुख पाइकै बुलाइ बालक घरनि, वदि कै चरण चहुँदिशि बैठे घेरि घेरि ।
छोटो सो कठौता भरि आनि पानी गगाजू गो, धोय पायें पियत पुनीत वारि फेरिफेरि ॥
तुलसी सराहै ताको भाग सानुराग सुर, वरपि सुमन जय जय कहैं टेरि टेरि ।
निबुध सनेहसानी बानी असयानी सुनि, हँसे राघौ जानकी लखन तन हेरिहेरि ॥ १ ॥

दोहा ।

पद पखारि जल पान करि, आपु सहित परिवार ।
पितर पारकरि प्रभुहिं पुनि, मुदित गयउ लै पार ॥ १ ॥ (भक्तमाल)

(गणिका की कथा)

(४) पापरूप गनिकाने सूत्रको पढाया तिससे वह भी गति को प्राप्त होगई ॥ ७ ॥

सवैया ।

दीन मलीन अधीन है अग बिहग परेउ सिधि खिन दुखारी ।
 रापव" दीन दयाळु कृपालु को देखि दुखी करुणा भई भारी ।
 गीध को गोद में रखि कृगनिधि नन सरोजन मं भरि वारी ।
 बारहि बार सुधारत पख जटायु' की धूरि जटानसों झारी ॥ १ ॥
 दोहा ।

मुये मरत मरि हैं सकल धरी पहर के बीच ।
 "ही न काहू आज ल। गीधराज सी बीच ॥ १ ॥
 रामविरह तन परिहरे सल्ल प्रेम अवधेश ।
 तेसहिं सिय हित तनु सजे सल्ल सखा गृदस ॥ २ ॥ (भक्तमाल)

"शंखरी सदाई भक्ति भाई अपि नवाई शीस ए" ।
 "सिल्ला तिराई नारि धाई नाव माई बीस ए" ।
 "सूरा पढाई पाप द्वाई गती घाई पाम ए" ।
 ऐसा गोपिबु० ॥ ७ ॥

(वाई शंखरी की कथा)

(१) शंखरीबाईकी भक्ति सदैव ही भगवान् के मनभाई जिन शंखरीबा
 को ऋषियों न मलक नवाया ।

"छोड़ रघुराज रघुराज पपा कानन में पूछन फिरत कहो कहों मेरी शंखरी '
 रुचि ।

आगू चले राम जाहू आगू लेन शंखरी हू चरण परन धाई मित्रन को धाये हैं ।
 गिरि दह ही सो भुज दह सो उठाय लइ फेर क गिरि सो पुनि भुज पसराये हैं ॥
 प्रेमदसा कही नहीं जात रघुराज दोठ तनमन बचन की सुधि प्रिसराये हैं ।
 भले आप भिळे मोहि मधी मिठी तेहू यह कहत डुहून के भकारे भरि आये हैं ॥ १ ॥
 बेर बेर बेरले सगई जनि बरबेर रतिकविहारी देत कपु कई फेर फेर ।
 चाख चाख भाये यह बाहूते महान भीठो केहुतो उखण यों बघानत हैं हेर हेर ॥
 बेरबेर देवे बेर शंखरी भुवरबेर तोउ रघुवीर बेर बेर तेहू डेर डेर ।
 बेर जनि लवो बेर बेर जनि गयो बेर बेर जनि लवो डेर लवो कई बेर बेर ॥ २ ॥
 ब्रह्मके उपासी तपरासी बनवासी बर विपुल मुनीचन के आश्रय सिधायो मैं ।
 कीहे सनमान तिन सहित विधान तऊ काहू डेर कइ न पेठ भरि खायो मैं ॥
 अमृत समान शंखरी के इन नेरन में रखि कविहारी मन भायो खाद पायो मैं ।
 विहाय बन आयो जबत हूँ बसु तबते विचारो सल्ल आजही अघायो म ॥ ३ ॥

छन्दमें चार कथाएँ हैं ।

सवैया ।

प्रभु चाहत हैं निह केवल भक्ति न चाहत रूप कुलै बल हैं ।
रसरङ्गमणी चलि मीलिनको निज मातु समान मिले कल हैं ॥
रघुनन्दन भाव सु भूख भरे फल खाय अघाय पिये जल हैं ।
शबरी के सुप्रेम पगे भल ये फल हैं कि चहुँ फल के फल हैं ॥ १ ॥

दोहा ।

प्रेम पगे चखि चार फल, कौशल्या के लाल ।
भक्तन की कबरीमणी, शबरी करी कृपाल ॥ १ ॥
अधिक बढावत आपते, जन महिमा रघुवीर ।
शबरी पद रज परसिकै, शुद्ध भयो सरनीर ॥ २ ॥ (भक्तमाल)

(अहिल्याजी की कथा)

(२) जो अहिल्या शापवशात् शिला होगई थी वह भगवच्चरणरज के प्रभाव से तिरकर उत्तम तपोमूर्ति स्त्री होकर पतिलोक को प्राप्त हुई ।

(३) केवट ने एक नौका से ही अपने वीसों ही कुटुम्बियों का उद्धार कर लिया ।

छन्द ।

पद कमल धोइ चढाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ।
मोहि राम ! राउरि आन दशरथ शपथ सब साची कहौं ॥
बर तीर भारहिं लखन पै जब लगि न पाव पखारिहौं ।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पार उतारिहौं ॥ १ ॥

कवित्त ।

प्रभु रख पाइकै बुलाइ वालक घरनि, वंदि कै चरण चहुदिशि बैठे घेरि घेरि ।
छोटो सो कठौता भरि आनि पानी गगाजू को, धोय पायें पियत पुनीत वारि फेरिफेरि ॥
तुलसी सराहैं ताको भाग सानुराग सुर, बरवि सुमन जय जय कहैं टेरेि टेरेि ।
निबुध सनेहसानी बानी असयानी सुनि, हँसे राधौ जानकी लखन तन हेरेिहेरेि ॥ १ ॥

दोहा ।

पद पखारि जल पान करि, आपु सहित परिवार ।
पितर पारकरि प्रभुहिं पुनि, मुदित गयउ लै पार ॥ १ ॥ (भक्तमाल)

(गणिका की कथा)

(४) पापरूप गनिकाने सूत्रको पढाया तिससे वह भी गति को प्राप्त होगई ॥ ७ ॥

श्रीरामखेहघर्मप्रकाश-

एक गनिका ने सूने को राम राम पढ़ाना गुरु किया। एक समय रात्रि में पींजरा खुला रहने से सूने को तो गिनी लेगई और वहाँ एक सर्प धस गया। वैष्णव गनिका ने अपने में ही पींजरे में हाथ डाल सूने को पढ़ाना चाहा इतने ही में साप उसे डस गया। गनिका ने कहा सूना राम राम कह इस प्रकार कहते रहते साप के जहर से वह गनिका मरकर नाम के प्रताप से सद्गति को प्राप्त होगई। इति।

इक असुर वश्युं शरण लख्युं चिरजश्युं भाम् ५।
ता सुख दख्युं मोख भख्युं दोष नख्युं साख ५।
“भूत पीडा कर्युं” “भालु सख्युं प्रीति पख्युं जाम् ५”।
ऐसा गोविंद० ॥ ८ ॥

(विभीषणजी की कथा)

(१) एक असुर विभीषण ने रावण से भयभीत होकर रामजी की शरण ली। तब मगरान् उसे “चिरजीवी हू” इस प्रकार बहुर, अमर्यदानस्वी मुख दिया। बाली के दोषों के समान होते हुए भी उसके दोषों को न देखते हुए भगवान् ने अंत में उसे मोक्ष का भागी बना दिया। बाल्मीकि आदि ग्रंथों में ऐसी साक्षी है ॥

कवित्त ।

पाँकेगो हमेश अग बचन उतारे सबे चीन जाति अधिक कृपालु मत भाँकेगो ।
भाँकेगो अहेर सग धाँकेगो कटाँके पय दुःख पुनीत निल दैऊनको खाँकेगो ॥
खाँकेगो प्रसाद दास रामको कहाँके भले रतिकविहारी तजि अनंत न जाँकेगो ।
जाँकेगो अवध निज जनम गमाँके तहाँ जाँकेगो सु कीरति परमपद पाँकेगा ॥ १ ॥

छंद मत्तगयद् ।

पोदन कू नृण के पारे अर ओन्न को पट द्वै बकरीक ।
भोजन नाम मिठै कबहु कबहुक मय फल द्वै कदरीक ॥
सपति को परवस यहै स महादुख देह निदेहन्त्यके ।
तादिन लक दद जो विभीषण हाथ वदा रघुनाथ बलीके ॥ १ ॥
वेद विरद महामुनि सिद्ध सखोक गुरामुर गोक उज्ज्यो ।
आर कहाकहु सीय हरी तबहु करुणानिधि कोष निवाज्यो ॥
सेवक धाम ते छाहि उमा तुलसी क्यो राम गुनाव तुझान्यो ।
तोनों न दाहि दत्ता दसकपर जोगे विभीषण लात न मान्यो ॥ १ ॥

मातको मोह न द्रोह दुमातको तातको सोच न गात दहेको ।
 राजको लोभ न प्रानको क्षोभ न बंधु विछोह न ओधि रहेको ।
 नेक न जीवमें आवत केशव सोच न लंकमें सीय रहेको ।
 ता रन भूमिमें राम कहै मोहिं सोच विमीषण भूप कहेको ॥ २ ॥

(भक्तमाल)

(हनुमानजी की कथा)

(२) हनुमानजी को प्रभु ने निज का दास बनाया । भक्तवत्सल श्रीरामचंद्र
 स्वामी ने निज मुख से फरमाया कि हे हनुमान् ! तू मेरा सच्चा पायक है ।

“तू म्हारो खरोरे सिपाई रे हनुमन्ता तू म्हारो खरो रे सिपाई”
 “गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई । बार बार प्रभु निज मुख गाई”

सोरठा ।

सेइय श्रीहनुमान, भुक्ति मुक्ति हरिभक्ति प्रद ॥

जनरक्षक भगवान, वीर धीर करुणायतन ॥ १ ॥ (भक्तमाल)

(जाँबवन्तजी की कथा)

(३) जांबवानजी भालू थे परन्तु उनकी भगवान् में सच्ची प्रीति पाई गई ।

दोहा ।

बलि बंधत प्रभु बाढेउ, सो तनु वरणि न जाइ ।

उभय धरीमें दीन्ह मै, सात प्रदक्षिण धाइ ॥ १ ॥ (भक्तमाल)

“दुष्टी अशत्रूँ वेद छिन्नू बहु रुदन्नू अज्ज ए” ।

हा हा विपन्नू हुय प्रसन्नू धारि तन्नू कर्जँ ए ।

“मच्छा हय्त्रीवूँ भक्ति सीवूँ निगम कीवूँ ठाम ए” ।

पेसा गोविंदू ॥ ९ ॥

(हयग्रीवावतार की कथा)

(१) दुष्ट शंखासुर ब्रह्माजी से वेद छीनकर लेगया । जब ब्रह्माजी ने हाहा-
 कार कर बहुत रुदन किया तब भक्तिके सीम विष्णुनारायण प्रसन्न हो उनके कार्य
 के वास्ते हयग्रीव अवतार धारण कर वेदों को पीछा ला ब्रह्माजी के सुपुर्द किये ।

१ इस छन्दमें दो कथाएँ हैं । २ अशन=भोजन । ३ विष्णु । ४ काज=कार्य ।
 ५ हयग्रीव ।

(मच्छावतार की कथा)

(२) इसी प्रकार किसी कल्प में मच्छावतार धारण कर राजा सत्यव्रत को उपदेश दे वेदों को ली अस्त्राजी को मोपे ॥ ९ ॥

(श्रीमद्भागवतस्कन्ध ८ अध्याय २४)

वरदान पाए शिव रिद्धाए भस्म भाए विक्रक ।
महा कष्ट पाए ऊठ बाए दीन बाए शरक ।
शिया सयाण बाए बाए हत्यो ताए छामे ए ।
ऐसा गोविन्द० ॥ १० ॥

(महादेवजी और भस्मासुरकी कथा)

भस्मासुर नामक असुर ने महादेवजी को रिद्धा कर मनभारता विकराल वरदान प्राप्त किया । बाद में शरक उस भस्मासुर से महाकष्ट पाकर दीन हो उठ भागे तब भगवान् आप आकर पावतीरा रूप बना उसे छल तत्क्षण उस दुष्ट को मारबाछा ।

पण्डितोंके पुत्र वृकासुर उपनाम भस्मासुरने नारदजी के कहने से शरीर को अग्निमें होम आगुतौप महादेवजी प्रसन्न कर क्रूर वरदान मागा कि जिसके शिरपर हाथ धरू वही भस्म होजाय । भोलेनाथने कह दिया तथास्तु । तब तो उस दुष्टने शिव ही पर हाथ फेरना चाहा । वरदी परीक्षा होजाय और पावती भी हाथ लग जाय । अब तो भगे कैलासपति वह भी लगा पीछे । इस तरह से शरकको दुखित देख भगवान् पावतीका रूप धारण कर बाछे प्यारे वृक । कहा जारहाई मैं तो कबकी तेरी इतजारीमें लगी हू । वह मोहित हो हाथ कँचा कर नाचने लगा । हाथ शिरपर आवे ही वस सुआमिल खातमा उसके भस्म होने से महादेव प्रसन्न हुए । प्रभु ने कहा हेभोलेशभो ! ऐसा वरदान दुष्टों को मत दिया करो । इति ।

प्रीडा समई गल्ल अदू प्राह फदू रच ए ।
वरप्यो गयदू हून जिदू शूड मई सध ए ।
ररो कहदू हरि हरदू मेदि ददू धाम ए ।
ऐसा गोविन्द० ॥ ११ ॥

(गजेन्द्र की कथा)

जब गजेन्द्रने श्रीदार्थ समुद्रमें प्रवेश किया तब ही ग्राहने फंदा रचकर गजेन्द्र को अंदर खींचा। शरीर डूब गया। केवल शूडमें ही सच्चाई रही। उस समय गजेन्द्र ने रररर ऐसा पुकारा। पुकार सुनते ही हरि अवतार धारण कर उसके कष्ट को हर लिया और गजग्राह के परस्पर का क्लेश मिटाकर दोनों को परम धाम दिया।

कवित्त।

पोढे निज भौन में सुधान में कृपानिधान एते गज वीन बानि परी आन कान में ।
कठत ही अचान कमला हू न पाए जान एक पानि चक्र उपधान एक पान में ॥
ताही अवसान तजे तारक पयान में स दौरिबे अपान प्रेन्यो चक्र कौ अगानमें ।
ग्राह गज तान में न कीनी दील आन में हकारभो सुवान में रकार भो विमानमें ॥ १ ॥

दोहा ।

हरे चरै तापहि बरे, फरे पसारहिं हाथ ।

तुलसीं स्वारथ भीत जग, परमारथ रघुनाथ ॥ १ ॥

बड़े वीनको दुख सुनत, देत दया उर आन ।

हरि हाथी सँ कब हुती, कह रहीम पहिचान ॥ २ ॥ (भक्तमाल)

द्विज भयो वेल्हू अजामेल्हू कामकेल्हू वाम प ।

जमदूत खेल्हू काल वेल्हू कंठ मेल्हू ग्राम प ।

सुत हेत हेल्हू नामलेल्हू कर उबेल्हू साम प ।

पेसा गोविंदू ॥ १२ ॥

(अजामिल की कथा)

एक अजामिल नामक ब्राह्मण वेद्व्या के साथ काम क्रीड़ा में बड़ा विह्वल हो गया था। जब अंत के समय में जमदूतों ने आकर अपना खेल खेला ही। तब कंठ के मिलते हुए ग्राम से अर्थात् दवे कंठ से पुत्रके वास्ते हे राम नारायण। ऐसा नाम लेकर हेला किया तब राम महाराजने उसको जमदूतों से बचाकर परमधाम दिया।

कवित्त।

क्रीडन पै भृंग जैसे भृंग पै विहंग जैसे निपुल विहंग पै ज्यों वाज जोरवार है ।

वाजपै ज्यों मारजार मारजार पै ज्यों खान खान पै तैरखु तापै गज मतवार है ॥

१ विह्वल । २ वेला=समय । ३ स्तर । ४ उबारना । ५ जरख ।

गज पर सिंह जैसे सिंह हूँ मैं सारबल चारबल हूँ मैं जैसे सरभ उदार है ।
सरभ मैं जैसे नरसिंह भाखे रघुराज पापन मैं जैसे हरिनामको उच्चार है ॥ १ ॥

दोहा ।

शक्ति जित्ती हरिनाम मैं, पापदहन की होय ।

सेतौ पातक पातकी, करि न सकत जग कोय ॥ १ ॥ (भक्तमाल)

लाखा गृहाय जालदाय पाडुमाय राख य ।

द्रोही खपाय समर साय विजेताय भाख य ॥

दोषण मिटाय पुराण गाय सदा स्थाय भार्म य ।

येसा गोविंदू ॥ १३ ॥

(पांडवों की कथा)

दुर्योधन ने पांडवों को लाखागृह के अंदर जल देने में बड़ी कोशिश की, परंतु जिन श्रीकृष्ण ने माता सहित पांडवों की रक्षा की और समर में स्वयं सहायक हो शत्रुओं को खपाकर विजय करवाई, और कुछ गोलक आदि दोषण मिटा जिन पांडवों की कीर्ति पुराणों में विस्मृत की । देखो जिन कृष्ण महापुरुष की कृपालुता कि अर्जुन सखा तो था ही, परंतु इसके सिवाय आपने अर्जुन को अपनी बहन सुभद्रा परणाकर अपना बहनोई भी बना लिया । धन्य है प्रभु धन्य है आपकी दयालुता को ।

(भक्तमाल)

सभ्भा मैझारी दुष्ट ख्यारी कर उघारी काज य ।

हा हा पुकारी पाडु नारी लाज म्झारी आज य ।

अम्बर वघारी प्रीति पारी कष्ट टारी बाम य ।

येसा गोविंदू ॥ १४ ॥

(द्रौपदीजी की कथा)

सभा के बीच दुष्ट दुःशासन ने द्रौपदी को बेहजती के साथ उधाड़ी करना चाहा, उस समय आर्त नाद से द्रौपदी ने पुकारा (अर्जी स्वीकारो खेही सावरिया करुणासिंधु मुरारी) हे प्रभो ! मेरी लाज आज की ही है अथात् आज लाज चली जायगी । तब आर्तहरण दीनदयाल ने प्रीति पाडने के लिये वस्त्र वधार कर द्रौपदी का कष्ट टाला ।

कवित्त ।

कोई ना सगैया कोई बात ना कहैया कोई गति ना पुछैया ओरहू को ना तकैया है ।
बादि मे सहैया हाय दैया न गोसैया कोई मुखको देखैया नहीं सीखको दिवैया है ॥
द्रौपदी विचारै रघुराज आज जाती लाज सब है खरैया पै न टेर को सुनैया है ।
विपति हरैया मेरी पतिको रखैया एक द्वारिका बसैया बलभद्रजीको भैया है ॥ १ ॥

सवैया ।

एकहि आश भरोस है एकहि एकहि है बल विक्रम मेरे ।
एकहि जोग संजोग है एकहि और कुरोग कुजोग घनेरे ॥
त्रास को नास को सोच कछु नहीं एकहि सोच लगै हिय हेरे ।
संकट में रघुराज दयानिधि आये नहीं हरि द्रौपदि टेरे ॥ १ ॥
कैधों पुकार गई उतलों नहीं कैधों विचार्यो नहीं निज दासी ।
सेवक की सरनाई तजी किधों की करनाई ते हूँगे निरासी ॥
हाय हरी दुम कैधे भये निडुराई कहां यह पाह है खासी ।
द्वारका वासि सुनो रघुराज न लागति लाज जो होयगि हासी ॥ २ ॥

कवित्त ।

गिरिगई गरुई गदा धों गिरिधारीजू की कैधों कौनो जंगमें सरंग कहुँ लै गयो ।
कुंठित भयो है खल्ल मोथरा के चक्रभयो कैधों गरुडासनको गरुडहु खूँवगयो ॥
एरे दई कैसी भई दया धों विसारी दई मेरी ना पुकार गई नाथ काह ज्वैगयो ।
रघुराज कैधों आज द्वारिका विलासीजूको विरद बखान हाय हासी हेत हूँगयो ॥ २ ॥

दोहा ।

अस विचारि मन में बिलखि, दोऊँ हाथ उठाय ।
कृष्णा कृष्ण पुकारती, कहाँ गये हरि हाय ॥ १ ॥

कवित्त ।

जानतीहुँ जियमें जरुर मशहूर यह कुरु कुल संतति विशेष बधि जावैगी ।
परम प्रचंड चक्र चपल चलाई जीति देहौ सब राजि धर्मराज की कहावैगी ॥
ऐहो दोरि द्वारिका ते द्वारिका विलासी वेगि रघुराज पांडुपुत्र कीर्ति छिति छावैगी ।
फेरि पछितैहो मोहि बहुत दुखैहो जदुराज लाज गए पुनि लाज नहीं आवैगी ॥ ३ ॥
“जायगी लाज तुम्हारी रे नाथ मेरो क्या विगारैगो” ।

कवित्त ।

दुर्जन दुशासन दुकूल गयो वीनबंधु वीन हैकै इपददुलारी यों पुकारी है ।
छाँदे पुरुषारथको ठाढ़े पति पारम से भीम महा भीम प्रीवा नीचे करिडारी है ॥
अम्बर ज्यों अम्बर अपार कियो बंशीधर भीम कर्ण द्रोण सोभा यों निहारी है ।
सारी मध्य नारी है कि नारी मध्य सारी है कि सारी है कि नारी है कि सारीही की नारी है ॥ ४ ॥

कबै आप गयेथे विसाहन बजार बीच कबै बोलि जुलहा बनाये दर पटसे ।
नदजी की कामरी न काहु वसुदेवनू की तीन हाथ पटुका लपेटे रहे फट से ॥
मोहन भनत यामें रावरी बढाइ कहा राखडीनी धान धान ऐसे नटखट से ।
गोपिनके लीने तब चीर चोरि चोरि अब जोरि जोरि देन लागे श्रौपरीके पटसे ॥ ५ ॥

दोहा ।

प्राहि तीन कहि श्रौपरी ऊँच उठायो हाथ ।
हुससी कियो इग्यारहों वसन बेध यहुनाथ ॥ २ ॥
कहा करै बेरी प्रबल जो सहाय रघुवीर ।
दस हजार गज बल हठ्यो घट्यो न दसगज चीर ॥ ३ ॥ (भक्तमाल)

ईक सिद्ध दीनू रोरभीनू प्रीति फीनू कान ए ।
मन घाछ लीनू पुर नवीनू अभय दीनू दान ए ।
“चिन सुरतवेनू भक्तिमेनू सिद्ध सेनू फाम ए” ।
येसा गोपिदू ॥ १५ ॥

(सुदामाजी की कथा)

(१) एक सुदामा नामक दीन दरिद्र ब्राह्मण ने श्रीकृष्णचंद्र महाराज से प्रीति कर मनयाछित वस्तु पाई और जिन दयालु ने अपने मित्र के लिये सुदामा नामक नवीन पुरी देकर अभय दान दिया ।

कवित्त ।

आवधि है लाज भारी जात इनराजसू पै बसन समाज देखि खरो मरजाइये ।
एकही पिछेरी सोतो छोर छोर कष्टि रही ओढिये निशा कों जासैं प्रात उठ हाइये ॥
मेढ ऐसी नाहि जो छेजैये भगवतजू पै अन्तक भई है नारि कोत्रे समझाइये ।
देह पर मांघ जोलैं नासिकामें द्वांस तोली बढी उपहास मोंधि भित न सताइये ॥ १ ॥

सवैया ।

हैं करतार हों तोषा कहां कबहु नहि सीजिये कहुके टोटे ।
और लिखो जनि कहुके भागमें मित्रके काज महीप निपोटे ॥
सहु सो जानत है अपने जिय भागिवेते कहु और न छोटे ।
जो गयो मांगन तू बलिद्वारमें चाहितें द्वैगयो बावन छोटे ॥ १ ॥
‘मति मोनि मति माणि जाको नाम मांगना’

सिसिर के पाला को न व्यापत कसाला तिहूँ जिनके अधीन एते उदित मसाला हैं ।
तान तुक ताला हैं विनोदके रसाग्र हैं मुसाला हैं दुसाला ओ बिसाग्र चित्रसाला हैं ॥१०॥

“मंदिर देख डरे हो मुसामा मंदिर देख डरे हो”

कवित्त ।

याहीते जनमभरि गयो नहिँ श्यामजू पै पनाइनि मेरो कपो वाक्य नहिँ माने हो ।
जाहु जाहु छे रही न मानती अनाज खाय ऐंढी मेंढी वात मेंतो गोविंदकी जाने हो ॥
द्रौपदीको चीर दिये गोपिन के छीन लिये ग्राह ते बचायो गज रंगभूमि माने हो ।
ब्राह्मणी समेत कहूँ खेत तैं उपाच्यो घर यात हूँ बचायो वाक्ये कछोँ में न माने हो ॥ ७ ॥
रग्यो बाहि ठाड मेरो गांउ नाड मेरेही को बीहों को निखर मेरे निकट बसैयाको ।
हाय कोइ आइ हते पापी क्षितिराइ क्षुटि छीनो मेरो ग्राम अय तापी है मढैयाको ॥
विरधि निकेत हते साहिबी समेत बस्यो कहाँ गइ इहैं कैसे पाऊ म छगैयाको ।
कौन करियाद छुने कौन मेरी याद करे कैसे गोहराज दर द्वारका कन्हैयाको ॥ ८ ॥
चौतरा उजारि काहुँ बानीकर धाम कीनों छानतो छवाय डारी छाइ चित्रसारीजू ।
ओ हौँ होतो घर तोपे काहेको वनन देतो होनहार ऐसी छोटी दशाही हुमाछीजू ॥
होतो होतो काहल हलाहल दिखाय करि जाहङ उठाइ देतो देह मुख गारीजू ।
छोमकी सवारी दुख भूखकी दलनहारी भैया बनवारी काहुँ सोऊ मार डारीजू ॥ ९ ॥
आछिन के यूप ज्यों ज्यों आहर से बोले थाय त्यों त्यों डरपाय पग आगेको न देत है ।
पकित न ज्योतिवि न बंध ना न कौतुकी हूँ रानी जो मुलावति है कहो कौन हेत है ॥
द्वारिका के राजाते मिळैतैं घर छीनोगयो रानी कहा छीनेगी पत्न्यो न मेरो खेत है ।
मोक्षो कहा नातो तुम जाइ कहो बातैं मोहिँ भूखि न मुहातो खेऊ ऐसे परकेत है ॥ १० ॥

बोद्धा ।

भीन द्वारते निकसिके, आइ तिय पिय पास ।

फैल रग्यो दशहूँ दिखन, कोटिन चर प्रकाश ॥ १ ॥ (भक्तमाल)

(श्रुतदेवजी की कथा)

(२) भक्ति के मर्म को जाननेवाला धन्य है श्रुतदेव कि जिसने भगवत सेवा कर अपना मनोरथ सिद्ध किया ।

(भक्तमाल)

विदुर सदाइ प्रेममाई भक्तिमाई शुद्ध य ।

छिलका अचाई पाइ लुगाई प्रसन्नताई तद्वय ।

राजा भुँजाई तजी साँई यहाँ न लाइ दाम य ।

पेसा गोविंदू ॥ १६ ॥

(विदुरजी की कथा)

विदुरजी सदैव प्रेम में मग्न होकर शुद्ध भक्ति किया करते थे । उनकी स्त्री विदुरानीजी ने भगवान को केलों के छिलकों का भोजन करवाया, तब प्रसन्न हो विदुरजी की स्त्री के ताई बाह लुगाई अर्थात् धन्य है तू इस प्रकार आपने प्रसन्नता दी । आहा हा जिन प्रभु ने राजा दुर्योधन के यहां छप्पन प्रकार के अमूल्य पकवानों को छोड़ा और विदुर के घर छदाम की कोड़ी भी न लगाकर छिलकों का भोजन किया ।

दोहा ।

अहह ! भइल मैं बावरी, रही न तनु सुधि नेक ।
ऐसी सुधि भूली कि नहि, छिलका सार विवेक ॥ १ ॥
कह्यो विदुर सों तब हरी, ये छप्पन पकवान ।
मिष्ट मोहि लागत नहीं, वे छिलका न समान ॥ २ ॥
ततवेत्ता तिहुँलोक में, भोजन किये अपार ।
कै शबरी कै विदुर घर, रुच पाये दोय बार ॥ ३ ॥

कवित्त ।

ठानी मिश्रमानी जब दुर्योधन माधव की बाजी गजराज निजराने को बने रहे ।
पालक पिछोने रचे मोति मनिमाल खचे चौकन में चंदसे वितान हू तने रहे ॥
नारी छत्रधारिन की गारी तहा गायवे कूं आई दर्शकाज नृप चाहत घने रहे ।
छोड पाक धीके प्रभु राजी शाक हीके जीके विदुर घरलीके नीके नेहमें सने रहे ॥ १ ॥
आपनी विभूति को दिखावे दूनो दोर शोर गाजे और बाजे सहसाजे गजबाजी काँ ।
गुलके गलीचे विछे अतर सुगंधि सिचे शालिग वगीचे वनवाये जो मिजाजी काँ ॥
चारि विधि पाक रचि नोति कृष्णचन्द्रजू काँ तौपै दुर्योधन की देखि दगाबाजी काँ ।
खारी तजि ताजी तर विदुर पघारे घर भूरि भये राजी यदुराज भलि भाजी काँ ॥ २ ॥

दोहा ।

भावते की लात भलि, अण भावत को नेह ।
कोने काम कमालिया, फागण बूठो मेह ॥ ४ ॥
मान सहित मरिबो भलो, जो विष देत बुलाय ।
अहमद अमी न पीजिये, आदर विना अघाय ॥ ५ ॥
दादू आदर भाव का, मीठा लागै मोठ ।
बिन आदर व्यंजन बुरा, जीमण वाला ठोठ ॥ ६ ॥

(भक्तमाल)

भीष्म सखेन् अङ्गि मत्तू गद्दी अत्तू राख ए ।
 आयुखे हत्तू भक्तपत्तू दर्शदत्तू पास ए ।
 मेले मुक्तू रामरत्तू गोपगत्तू गाम ए ।
 पेसा गोविन्दू ॥ १७ ॥

(भीष्म पितामह की कथा)

जो भीष्मजी ने दृढ़ अवल प्रतिज्ञा की थी वह अंत में रखली । उनकी प्रतिज्ञा सत्य रखने को भक्तपति भगवान ने शस्त्र हाथ में धारण कर समीप में जा दर्शन दिया । और रामरतमक्त जिस गोप्यगति (मुक्ति) में प्राप्त होते हैं तिस मुक्ति में भीष्मजी को भेजे ।

पद ।

जो म सुरपुरि सुवन कहाँ तौ प्रण सभा मध्य अक्ष गाँ ॥
 कौरव पांडव भीष्म दुहु दल हरि पूजन अक्ष ठाँ ॥ १ ॥
 घोषित कनन हवाय नाय को रण रज बसन उढाँ ॥
 पांडव सेन मारि गोविंद अंग चदन कोष चढाँ ॥ २ ॥
 विविधि वरन को विपुल विकसित विविध माल पहिराँ ॥
 सनमुख शत्रु सवारि सहस्रन कीरति सुरभि छुँपाँ ॥ ३ ॥
 सबहि त्रिविक्रम को तुरत तहँ विक्रम भीष दिखाँ ॥
 पारय सखा समीप जायके प्राण निवेद लगाँ ॥ ४ ॥
 सकल जगत में खीचि प्रीति की भीरी आजु खवाँ ॥
 विजय बात चलवाय समर महँ जय दक्षिणा दिवाँ ॥ ५ ॥
 रथसो रथ मिलाय माधव को ध्वज चामरहि चलाँ ॥
 नख सिख निरखत रूप अनूपम नैन निराजन अँ ॥ ६ ॥
 बार बार धनि दह प्रत्यचा अनुपहि बाज बजँ ॥
 रथ मद्धक करि दे परदक्षिण तर आनंद उपजाँ ॥ ७ ॥
 जहुवर कर ॥० आजु अवशि में चक्र प्रसादहि पाँ ॥
 अर्जुन सर पजर जजर है गिरि सनमुख फिर नाँ ॥ ८ ॥
 मदि विधि रण प्रथको करि पूजन त्रिभुवन में जस छाँ ॥
 श्रीधुराज कृपा हरि की लहि वरनस हरिपुर जाऊ ॥ ९ ॥

पद ।

अनुपति फिरि फिरि हृदय यस्यासि ।

बार बार अनुपहि ओलावत मायत वदन उचारी ॥

धा मरि गये किधौ जीवत हो बोलहु आंख उधारी ।
 कहत रहे अस वचन सभामहँ मैं गांभीवहि धारी ॥
 दंड द्वैक महँ कौरव दल को करिहों अवसि संहारी ।
 सो प्रण की सुधि भूळि गये अब कत दीन्हो धनु डारी ॥
 उठहु, उठहु अब चेत करहु तन तेरी बहु बडवारी ।
 आखु पाखव कुलकी मरजादा लगी तोहि महँ सारी ॥
 धर्म भूप तव बल चढ़ि आयो दै दुंदुभि प्रचारी ।
 होत बिथिल अब तोहि समर महँ को करिहैं रखवारी ॥
 कादर सरिस बिथिल निरखत तोहि विलखत बुद्धि हमारी ।
 कैसे के अस विक्रम महँ जग कीरति चली तिहारी ॥
 सखा साँच हमसों तुम भाखहु भलकै मनहि बिचारी ।
 किधौ बिजै अभिलास अहै कछु किधौ मानि लिय हारी ॥
 जामैं जात होइगी तुम्हरी सोइ माति करन हमारी ।
 श्रीरघुराज तोहि सम मेरे कौन भीत हितकारी ॥

पद ।

धावत आवत सन्मुख हरिको भीषम निरख परम सुख पाग्यो ।
 तजिबो बिबिख बंध कर दीन्हो, अनिमिष सुषमा निरखन लाग्यो ॥
 शेर कर जोरि हुलस करि बोल्यो मुख, धन्य धरा महँ मोहि करदीनो ।
 निज जन जानि दयानिधि निज प्रन टारि मोर प्रण पूरण कीनो ॥
 आवहु आवहु अब न रुको कहूँ मारहु चक्र अवसि मोहि काहीं ।
 बिते सातसे संवत जग में अस अवसर हों पावों नाहीं ॥
 समर मरण अस पुनि तव सन्मुख पुनि तव चक्रहितें जो पाजं ।
 तो सुर असुर चराचर देखत हौं वैकुण्ठ निसान बजाऊ ॥

श्लोक ।

एतेहि देवेश जगन्निवास नमोस्तु ते शार्ङ्गगदासिपाणे ।
 प्रसन्न मां पातय लोकनाथ रथादुदग्राद्भुतशौर्य सख्ये ॥ १ ॥
 स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञामृतमधिकर्तुमवहतो रथस्थः ।
 धृतरथचरणोऽभ्ययाचलद्गुहिरिव हंतुमिमं गतोत्तरीयः ॥ २ ॥

कवित्त ।

करीही प्रतिज्ञा अभ्यप्रेरक प्रतोद विना लोहक छुकं न युद्ध आदि की कहानी है ।
 ताहि को विसार चक्र संदन को धारि चले भीषम पै ताहीवार रसा अकुलानी है ॥

ताहि समुझायेकू बटिहैं सुखो है पद धूज मत दास की प्रतिज्ञा उर आनी है ।
पदको यो अभिप्राय बड़े भोग झूठ बोलैं ताको भग छोडि देवो नीतिकी निहानी है ॥ १ ॥
(भस्माल)

आँवा न झालू अस्सरालू बीच चालू मिथ्र ए ।
राय्या दयालू "मृगबालू अरी कालू द्वध्र ए" ।
"खेचर करालू समर जालू रखे थालू जाम ए" ।
पेसा गोखिदू ॥ १८ ॥

(सिरियादे की कथा)

(१) आँवेके बीचमें मिथ्रीके बच्चोंको जिस दयालुने रखलिये कराल ताप
उन को मिलकुल न लगने दी ।

देख हिरण्यकशिपुके नगरमें रामनाममें टेक बाजी सिरियादे नामक एक कुलाल
की स्त्री रदती थी उसके खिड़के हुए नावके में मजारी ने बच्चे देविये, और यह भी
अज्ञात धोक में अग्नि लगा दी तब तो अग्नि की ज्वाला से बिट्टीका सङ्घर्षाट व बच्चों
का बिलबिलाट देख आँवे के भीतरफ रामनाम की कार लगा दी इस वार्ता को प्रहला
दजी देख रहे थे आँवा के ठंडे होत हुए देखते हैं तो बच्चे खेड कर रहे हैं ।
बस प्रह्लादजी को वही रंग लग गया । और वह सिरियादे विधातु रामभक्तों में
अग्रगण्य हुई । इति ।

(मृगबाल की कथा)

(२) मृग के बच्चों को बचाने के लिये शत्रुस्त्री काल को जिन परमाराम ने
नाश कर दिया ।

छोट छोटे मृगबालकोंपर एक व्याध ने बड़ी घात बिचारी एक तरफ तो फौसी
बिछारी दूसरी तरफ भ्रान झुकादिये तीसरी बानू अग्नि लगा दी चौथी दिशमें आप
धनुष पर बाण चढाके बैठ गया । इस समय में उन अजायब बच्चों के दीनदयाल
प्रभु के सिवाय कान रखक हैं बालक्यों की विनम्र सुनते ही जगरिपता ने अग्नि से तो
फासी जलारी और वषा से अग्नि बुझा दी इधर सर्प के रुसने से व्याध मरगया मर
ते हुए व्याध की मुट्ठी खुलने से बाण छूटा उस से कुत हतोराम बस मृगबाल
निभय होगये । बाह बाह धन्य है कभी भगवत ने रक्षा की है । इति ।

(टीटोदी की कथा)

(३) महामारत के कराल समर जाल में टीटोदी की "विशिष्टि किटोवीटी
टिबी टिम" ऐसी प्रकार सुन तत्क्षण गजघट डार उस के बच्चों को जिस जगरिपता
ने बचालिये । इति ।

आरत्ति हरणू अभय करणू नमो शरणू सत्त ए ।
 ऐसा अकरणू अतिरतिरणू वेद वरणू नित्त ए ।
 हम व्याधि जरणू धरा धरणू वचन फुरणू काम ए ।
 ऐसा गोविंदू० ॥ १९ ॥
 नमो नमामी अंतर्यामी सर्व स्वामी सृष्टि ए ।
 वंदौ सदाई सुखदाई चित्त आई इष्ट ए ।
 अनाथनाथो सदा साथो तोहि हाथो हामै ए ।
 ऐसा गोविंदू० ॥ २० ॥

हे आर्तिहर ! हे निर्भय करनेवाले ! हे सत्य शरण ! आपको नमस्कार हो । आप अकर्ता हैं । और अधम उधार हैं । ऐसा आपका नित्य वेद वर्णन करते हैं । हे धराधर ! मैं व्याधि से जल रहा हू । तिस व्याधि के निवृत्तिरूपी कार्य में आपका वचन सत्य हो । हे अतर्यामी ! हे सर्वसृष्टि के स्वामी ! आपको बारबार नमस्कार हो । मैं सदैव आपकी वदना करता हूँ । आप सुखदायक हैं । मेरे चित्तमें यही प्रिय है । हे अनाथो के नाथ ! सदैव आप मेरे साथ हैं मेरी उमग आपके हाथ है ।

दोहा ।

जैसे सूतर पूतली, चित्रकार चित्राम ।

मैं अनाथ ऐसे सदा, तुम इच्छा सोइ राम ॥ १ ॥

जैसे कठपुतली डोरी के आधीन है, जैसे चित्र चित्रकार के आधीन है तैसे सदैव मैं अनाथ आपके आधीन हू । हे रामजी ! जैसी आपकी इच्छा हो वही करें ।

खलसायक साहिक जना, दीनबंधु देवाधि ।

द्यालवाल शरणागती, तुमसे पति हम व्याधि ॥ २ ॥

हे खलभक्षक ! हे जनरक्षक दीनबंधु ! देवाधिदेव ! यह दयालवाल आपके शरणागत है । आप जैसे तो पति और मैं व्याधिग्रसित भला यह कैसे हो सकता है ।

सहायक विश्वावीस हरि, गायक वेद पुरान ।

लायक पायक शरण सुख, यह तब नीति निधान ॥ ३ ॥

वेद पुरान गाते हैं कि लायक जो पायक कहिये सेवक है उसकी वीसही विश्वा पूर्णरीति से हरी सहायता करनेवाले है । शरणागत को सुख देना यह आपकी नीति है । क्यों कि सब के आप आश्रय हैं ।

जुग जुग योही आसरो, तुम रक्षक महाराज ।

तारण विरद अनादि तब, यह मेरो अर काज ॥ ४ ॥

जुग जुग में यह एक आपका ही आवय है । हे महाराज ! आप रक्षक हैं । भक्तबनों को तारणा यह एक आपका अनादि विरद है तो अब मेरा यह कार्य है क्यों डील करते हैं ।

छंद सारसी ।

काज मेरो तुमो चेरो मेरि झैरो दरद ए ।

करि है न हेरो शरण केरो सदा तेरो विरद ए ।

“नामा न घेरो सदैव फेरो गड उबेरो साज ए ।”

भक्ती बघारु विरद वारु सत सारु काज ए ॥ जी सत० ॥ १ ॥

मेरा कार्य है और मैं आपका दास हूँ । मेरों के दरद करके जो मैं कायल होगया हूँ सो इस दरद को मिटाओ । प्रभो ! मेरा हेरा (पीड़ा) मत करो अर्थात् मेरी करणी मत देखो (नति देखो करणी हमारी राज लेखो विरद मुपरी) सिवाय आपके मेरे दूसरा किसका शरण है ॥ मेरे तो सदैव आपही का विरद (बाना) है ।

(नामदेवजी की कथा)

नामदेवजी को नहीं घुमाया किन्तु मंदिर को फर दिया और उनके लिये गऊ को उबार इत्यादि आपने भक्त की विजय करावाई, क्योंकि आप भक्ति के बघारनेवाले हो । विरद की बार (सहायता) करनेवाले हो और सतों के काम सारनेवाले हो ।

(भक्तमाल)

जमुना गंडीरु सङ्ग जँजीरु झाल खीरु ना जले ।

बालद बडीरु धर शरीरु नीरु नीरु हरि मिले ।

निर्मय कनीरु ब्रह्मपीरु शब्दसीरु गाज ए ।

भक्ती बघारु० ॥ २ ॥

(कबीर साहबकी कथा)

जिन कबीर साहब के गहरी जमुनाजी के बीच में जजीरे झरगाई, तथा

१ जीव जीव के आसरे, जीव करत है राज ।

तुलसी खुबर आसरे क्यों निगहेणो काज ॥ १ ॥

२ इसजन्मने दो कथाएँ हैं । ३ छेर=कायन । ४ घर । ५ गहरी । ६ शब्दसीर=शान्ति ।

खीरों की झाल में नहीं जले, तथा उन कबीर साहब के लिए आपने शरीर को धारण कर बालद वहीर (विदा) करदी, वह कबीर साहब अंतमें नीरमें नीर मिलै ऐसे हरि में मिलगए । ब्रह्ममें स्थिर ऐसे जो निर्भय कबीर ताकी जो शब्द सीर (बाणी) वह आजपर्यंत गर्जना कर रही है ।

साखी ।

कबीर राम नाम के पटंतरे, देवा कूं कुछ नाहिं ।
 क्या ले गुरु संतोषिये, हौंस रही मन माहि ॥ १ ॥
 कबीर राम नाम छाहूं नहीं, सद्गुरु सीख दईह ।
 अविनाशी कूं याद करि, आत्म अमर भईह ॥ २ ॥
 कबीर सत्यनाम तिहुँलोक में, रामनाम ततसार ।
 सो विचार हिरदै धन्या, शोभा अनंत अपार ॥ ३ ॥
 कहै कबीरा मैं कथा, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
 राम नाम निज मंत्र है, सबका यह उपदेश ॥ ४ ॥
 कबीर कहताहूं कह जातहूं, सुणता है सब कोय ।
 राम कहे भल होयगा, नहिंतर भला न होय ॥ ५ ॥
 कबीर आपण राम कह, औरां राम कहाय ।
 जा मुख राम न संचरे, ता मुख लोह जबाय ॥ ६ ॥
 कबीर छट सके तो छटि ले, राम नाम की छट ।
 पीछे ही पछिताहिगो, जब तन जासी छट ॥ ७ ॥
 कबीर सुपने ही बरबायके, जे मुख कहै जो राम ।
 वाके पग की पानही, मेरे तन को चाम ॥ ८ ॥
 कबीर आंखदियों झाई पबी, पंथ निहार निहार ।
 जीभदियां छाला पढ़या, राम पुकार पुकार ॥ ९ ॥
 कबीर आंख्यां प्रेमक साँइयां, जण कह दूखदियांह ।
 रामदेही कारणै, रो रो रातदियाह ॥ १० ॥
 कबीर हम तुम में दूंदत फिर, काहे मिलो न राम ।
 हिरदा भीतर तू बसे, सकल तुम्हारा काम ॥ ११ ॥
 कबीर सुमरण मारग सहज का, सद्गुरु दिया बताय ।
 सास सास संभारतां, इक दिन मिलसी आय ॥ १२ ॥
 कबीर सुमरण सार है, और सकल जंजाल ।
 आदि अंत सब सोधिया, दूजा दीसै काल ॥ १३ ॥
 कबीर ज्ञान कये कथि भैर, काहे करै उपाय ।

जुग जुग योही आसरो, तुम रक्षक महाराज ।

तारण विरद अनादि तब, यह मेरो अब काज ॥ ४ ॥

जुग जुग में यह एक आपका ही आश्रय है । हे महाराज ! आप रक्षक हैं । भक्तजनों को तारणा यह एवं आपका अनादि विरद है तो अब मेरा यह काय है क्यों डील करते हैं ।

छंद सारसी ।

काज मेरो तुमे चेरो मेटि झेरो दरद ए ।

करि है न हेरो शरण केरो सदा तेरो विरद ए ।

“नामा न धेरो सदन केरो गड उबेरो साज ए ।”

भक्ती बघारु विरद पारु सत सारु काज ए ॥ जी सत० ॥ १ ॥

मेरा काय है और मैं आपका दास हू । नेत्रों के दरद करके जो मैं कायल होगया हू सो इस दरद को मिटाओ । प्रभो ! मेरा हेरा (पीछा) मत करो अथात् मेरी करणी मत देखो (मति देखो करणी हमारी राज लेखो विरद मुणसी) सिषाय आपके मेरे दृष्टा किसका शरण है ? मेरे तो सदैव आपही का विरद (बाना) है ।

(नामदेवजी की कथा)

नामदेवजी को नहीं घुमाया कि तु मंदिर का फेर दिया और उनके लिये गऊ को उबार इत्यादि आपने भक्त की विजय करवाई, क्योंकि आप भक्ति के बघारनेवाले हो । विरद की पार (सहायता) करनेवाले हो और सतों के नाम सारनेवाले हो ।

(भक्तपाल)

जमुना गँदीरु शङ्ख जँजीरु झाल खीरु ना जले ।

बालद वहीरु धर शरीरु नीर नीरु हरि मिले ।

निर्मय कवीरु ब्रह्मधीरु शब्दसीरु गाज ए ।

भक्ती बघारु ॥ २ ॥

(कबीर साहबकी कथा)

जिन कबीर साहब के गहरी जमुनाजी के बीच में जजीरें श्रवण हैं, तथा

१ जीव जीव के आसरे जीव करत है राज ।

मुलसी एगुर आसरे, क्यों विगमो काज ॥ १ ॥

२ इसछन्दमें दो कथाएँ हैं । ३ शेर=कामर । ४ घर । ५ गहरी । ६ शब्दसी

र=बाणी ।

“सहस्र बात की एक बात है, आदि र अंत विचारी ।
भज रमतीत राम भव पारा, कहा पुरुष कहा नारी ॥”

साखी ।

कबीर जाके हिरदै हरि नहीं, सिख साखा की भूख ।
से नर उभा सूखसी, ज्यों दाहे दाघा रुंख ॥ १९ ॥
कपीर बात बनाय र जग ठग्या, मन पर बोध्या नाहिं ।
वाको स्वारथ लेगया, फिर चौरासी माहिं ॥ २० ॥
कबीर कहते सो करते नहीं, मुह के बडे लवार ।
काला मुंहडा होयगा, साई के दरवार ॥ २१ ॥
कबीर कथनी मीठी खाडसी, करनी विषकी लोय ।
कथनी कथ करनी करै, सब विष अमृत होय ॥ २२ ॥
कबीर करनी की किरकी नहीं, कथनी कथै अपार ।
या वाता क्यों पाइये, साहिब को बीदार ॥ २३ ॥
कबीर करणी बिन कथनी कथै, अज्ञानी दिन रात ।
कूकर ज्यों भोंकत फिरै, सुनी सुनाई बात ॥ २४ ॥
कबीर एकोहं आपुहिं भयो, द्वितिया दीन्हों कौंट ।
एकोह कासों कहै, महापुरुष की टोंट ॥ २५ ॥ इति ।

कोपे दुर्वासा अहं ख्वासा हतूं दासा राज ए ।
सुदर्श जासा प्राण ग्रासा कंप व्यासा भाज ए ।
मुरदेव पासा भई हासा जन निवासा वाज ए ।
भक्ती वचारू० ॥ ३ ॥

(दुर्वासाजी की कथा)

बड़े अहंकारी ऋषि दुर्वासा कुपित हो बोले कि मैं इस दास अंबरीष राजा को मार डालूंगा, तब जिन का दास अंबरीष है उन्हीं भगवान का सुदर्शन चक्र मुनि के प्राण का ग्राहक हुवा । जब तो व्यास (दुर्वासा) कंपायमान हो भागने लगे और उनकी तीनों देवताओं के पास बड़ी हांसी हुई, तब पीछा भक्त अंबरीष के निवासस्थान में ही आ वाजे अर्थात् जहां भक्त का निवास स्थान था वहां ही आकर विराजे । (भक्तमाल)

१ पाठान्तर टकार के स्थान में चवर्गका चतुर्थाक्षर है । २ ख्वाहिश=इच्छा ।
३ सुदर्शन चक्र । ४ तीन ।

सजुह हमको यो कछा, सुमरण नरै सहाय ॥ १४ ॥
 कबीर प्रेम विना घीरज नहीं, विरह विना वैराग ।
 नाम विना पावे नहीं, मन मनसा को थाग ॥ १५ ॥
 कबीर सोझी विन सुमरण नहीं, भय विन भजन न कोय ।
 पारस चिन्त पढ़दा रक्षा लोह न कचन होय ॥ १६ ॥
 कबीर कठिनाइ खरी सुमरता हरि नाम ।
 झुझी ऊपर नट विद्या, गिरु सो नहीं ठाम ॥ १७ ॥

स्वरण ।

‘जे कोइ चाहै परमधाम को, सुणज्यो शब्द हमारा ।
 दोय अछरसे करो दोखी, सब उतरये भव पारा ॥’
 ‘ररकार से मुरत बिलषी, कोटिक सुन्य दियाइ ।
 या विन शब्द विशेष बतावै, ताकी मूझ भाइ ॥’
 ‘कह कबीर सुणो हो साधो प्रगट कहु बजाइ ।
 रामनाम सो सार साद है और कथन सब बाइ ॥’
 ‘रामनाम सब कोइ भाखै, ता बिच बहुत विधाना ।
 भज रमतीत राम सरस्वी, वेहद ब्रह्म समाना ॥’
 ‘परिधरि मेख ज्ञान महुँ आसी, धरसी छाप हमारी ।
 सत गुरु सम हुइ हुइ परमोषे, कहा पुरुष कहा मारी ॥
 घर घर ज्ञान ध्यान धन होसी घटघट मादविबाइ ।
 कल कू छाब भखेगा कूकस विरला बीज अराधू ॥’
 राम नाम सतबीज शब्द है, बाकू पूठ न दीजो ।
 जे कोइ वाद बकै बहुतेरा, समझवूख चुपरीजो ॥
 बैडमान बहुतेरा होसी रागा पणित ज्ञानी ।
 जागत सोसी जरम जिगोसी, सब परजा अभिमानी ॥
 बीत राम विरअ जन होसी दर्शन परसन करी ।
 सार शब्द कू येन चलेगा, कलिजुय मेख बिकारी ॥
 विन दरसा परसा विन बहुता होसी ब्रह्म गियानी ।
 बीज विना बहु ज्ञान कयेगा, धोखे की नीसानी ॥
 परजा पछ कूतन की करसी, सारपखी जन कोइ ।
 तअ जग भाव निरंतर वासा, समझ मिलेगा सोइ ॥
 कर्तम उपासी करम विअसी, सो जासी जय द्वारा ।
 हम करता भज करता हुवा और न को उपकार ॥
 राम कहेया सो निबहैगा उअटि रहे जो माका ।
 यथाभूय बहुतेरा हेगा, रामभजन के आका ॥

“सहस्र बात की एक बात है, आदि रु अत विचारी ।
भज रमतीत राम भव पारा, कहा पुरुष कहा नारी ॥”

साखी ।

कवीर जाके हिरदै हरि नहीं, सिस साखा की भूख ।
से नर उभा सूखसी, ज्यों दाहे दाधा रुख ॥ १९ ॥
कवीर बात बनाय रु जग ठग्या, मन पर बोध्या नाहिं ।
बाको स्वारथ लेगया, फिर चौरासी माहिं ॥ २० ॥
कवीर कहते सो करते नहीं, मुद्द के बडे लवार ।
काला मुहडा होयगा, साई के दरवार ॥ २१ ॥
कवीर कथनी मीठी खाडसी, करनी विपकी लोय ।
कथनी कथ करनी करै, सब विष अमृत होय ॥ २२ ॥
कवीर करनी की किरकी नहीं, कथनी कथै अपार ।
गा वातां क्यों पाइये, साहिब को दीदार ॥ २३ ॥
कवीर करणी विन कथनी कथै, अज्ञानी दिन रात ।
कूकर ज्यों भोक्त फिरै, सुनी सुनाई बात ॥ २४ ॥
कवीर एकोहं आपुहिं भयो, द्वितिया वीन्हों कौंट ।
एकोहं कासों कहै, महापुरुष की टांटे ॥ २५ ॥ इति ।

कोपे दुर्वासा अहं ख्वासा हतुं दासा राज ए ।
सुदर्शे जासा प्राण त्रासा कंप व्यासा भाज ए ।
मुरदेव पासा भई हासा जन निवासा वाज ए ।
भक्ती वधाऊ० ॥ ३ ॥

(दुर्वासाजी की कथा)

बडे अहंकारी ऋषि दुर्वासा कुपित हो बोले कि मैं इस दास अंबरीष राजा को मारडालूंगा, तब जिन का दास अंबरीष है उन्हीं भगवान का सुदर्शन चक्र मुनि के प्राण का ग्राहक हुवा । जब तो व्यास (दुर्वासा) कंपायमान हो भागने लगे और उनकी तीनों देवताओं के पास बड़ी हासी हुई, तब पीछा भक्त अंबरीष के निवासस्थान में ही आ बाजे अर्थात् जहां भक्त का निवास स्थान था वहां ही आकर विराजे ।

(भक्तमाल)

१ पाठान्तर टकार के स्थान में चवर्गका चतुर्धाक्षर है । २ ख्वाहिश=इच्छा ।
३ सुदर्शन चक्र । ४ तीन ।

करि यख राजू रूपि समाजू वेद गाजू गाव ए ।
 नहिं शख बाजू पाडुकाजू सतराजू आव ए ।
 छे पच कोजू भई बाजू भम्म भाजू राज ए ।
 भक्ती बघारू० ॥ ४ ॥

(वाल्मीकजी की कथा)

गजना के साथ वेदोंको गानेवाले अर्थात् सामग ऋषिसमाजने राजसूय यज्ञ
 नाया तो श्री यज्ञ पूर्ति का शख नहीं बजा, तब तो पाद्यों के काय सिद्धि के
 सतराज (वाल्मीकि) आते भये, जिनके पाच मास लेते ही शख की
 आवाज होने से राजा युधिष्ठिर का क्रम बुर होगया ।

शख नहीं बाज्यो ताको कारण यही है भूप
 आयो ना अनम्य दास एक वो हमारे है ।"

कवित्त ।

चाकर तिहारो झारे भवन तिहारो रोज नगर निवासी है तिहारो चिरकालको ।
 यथा लाभ तोपी तन रोषित न कहूँ वे है अदोषित अनाख भक्त ह्यारे जगजाल
 साधुन को छूट खात खातभे विमन बुद्धि, नेही नहीं देह रोह बालक ॥ बालको ।
 जाति को शेषच महिपाल वाल्मीक नाम, मोहि प्राणप्यारे दुखें कारक तिहारको ॥

दोहा

विप्र द्वादश कोटिको, सबको माप्यो मान ।

शख बजायो घरकरे, खेई न काज्यो कान ॥ १ ॥

(भक्तमाल)

प्रतिमा बुलाई सोंच पाई गग आई भवन ए ।
 तन में दिव्वाई नौगुणार्ई जद सार्ई सचन ए ।
 रैदास सार्ई देह थाई जीम जाई जाज ए ।
 भक्ती बघारू० ॥ ५ ॥

(रैदासजी की कथा)

जन रैदासजी ने प्रतिमा को अपने पास बुलसी तब ब्राह्मणों को
 पाया । तथा जिन रैदासजी के भवन में गंगा आई, और जब रैदासजी
 नवगुणार्ई (यज्ञोपवीत) अपने शरीर में दिव्वाई तब तो पीतावर पहन
 जितने ब्राह्मण आये वे दे तयामही जपन करने लगे, तथा भोजन

समयमें रैदासजी के प्रभाव से जिन ब्राह्मणों की देह रैदास साईं होकर अर्थात् रैदास का ही स्वरूप बनकर बैठ बैठकर भोजन करगये ।

(भक्तमाल)

पीपा समर्तू अगम गच्छू भक्त चरितू नैक ए ।
इच्छा फिरच्छू सोइ सच्छू आप रच्छू एक ए ।
मृगराज कौमी शिष्य स्वामी मुक्तिगामी जाज ए ।
भक्ती वधारू० ॥ ६ ॥

(पीपाजी की कथा)

अंगम है गति जिनकी ऐसे समर्थ पीपाजी के अनेक चरित्र हैं । भक्त पीपाजी की जो इच्छा फुरती वही सत्य हो जाती और आप निज स्वरूप में रत रहते थे । देखो उत्तम कामनावाला मृगराज (सिंह) जिन स्वामी पीपाजी का शिष्य हुवा, तथा मुक्ति जानेवालों के लिये तो वह साक्षात् जहाज रूप थे ।

(भक्तमाल)

गायाँ चराई भातखाई रामराई रम्म ए ।
खेती निपाई पात्र माई विना चाई शैम्म ए ।
धन्नो धनाई प्रभूताई जना गाई छाज ए ।
भक्ती वधारू० ॥ ७ ॥

(धनाभक्त की कथा)

जिन धनाभक्तके लिये रामराय ने भातका भोजन कर प्रसन्न हो गौवें चराकर खेल किया, तथा जिनके लिए श्यामने विना ही बोई हुई उनके पात्र में खेती निपजायदी, उन धनेजी की धन्यता व प्रभुता भक्तोंकरके गाई हुई आज दिन संसार में कैसी शोभित हो रही है ।

(भक्तमाल)

सूँतर खड़गू सार नगू जन प्रतगू राख ए ।
“कर माँग दगू जिये जगू दुष्ट अगू खाख ए” ।
“फिर अश्व अगू” “चढे सगू समर लगू वाँज ए ।”
भक्ती वधारू० ॥ ८ ॥

१ कथा याल अन अर्थ है, घृत प्रसंग मिलाय ।

२ रजव ऐसी भौतिसे, चारों वरण जिमाय ॥ १ ॥

३ कामना । ४ श्याम । ५ सूत्र=काष्ठ । ६ वाजी=घोड़ा ।

१ इसछन्दमें चार कथाएँ हैं ।

(चौहान भुवनजी की कथा)

(१) चौहान भुवनजी काष्ठ की तलवार रखते थे । जब रानाजी ने परीक्षा ली तब परीक्षा के समय में म्यान के निकलते ही जिनकी तलवार बीजलसार के समान हो गई इस प्रकार प्रभु ने भक्त की प्रतिज्ञा रखी ।

(अरिछु)

“भइ तलाया गोठ, जुरे जहँ चढ़वै ।
परचौ निज है आहु खाव है लखखँ ॥
परमेधर पति राखि बात नहिँ कहनकी ।
बिजुरी ज्यों तरवार चमकी भुवन की ॥ (भक्तमाल)

(हरिभक्त ब्राह्मण की कथा)

(२) एक हरिभक्त ब्राह्मण से दुष्टों ने मार्ग में दगा किया । ब्राह्मण तो भगवत् कृपा से उसी जगह जी गया और दुष्टों के शरीर की खास होगई ।

(भक्तमाल)

(घाटम जी की कथा)

(३) घाटम भक्त के बास्ते राममहापूजने अश्व के अग का रंग पलटा दिया ।

(भक्तमाल)

(जैमलजी की कथा)

(४) जैमलजी के बास्ते स्वयं आप भगवान् कौज के सुग राजाके घोड़े पर चढ़ कर समर (युद्ध) को उलूषन करते भये अर्थात् शत्रुओं को भगाकर जैमलजी की जीत करवादी ।

(भक्तमाल)

नृप दुष्ट खरखी गरल दरखी इष्ट पखखी सो लए ।
धिन प्रेम छकी राम रखखी निर्भे यकी बोल ए ।
मीरा सरखखी गोपि अखखी जगत नरखी लाज ए ।
भक्ती बधाऊ ॥ ९ ॥

(मीरांगई की कथा)

दुष्ट एने ने भद्रकरी के साथ विषको चरणामृत कहलाकर भिजवाया तब इष्ट का है पक्ष जिनके ऐसी मीराबाई ने उस विष को चरणामृत समझकर ले लिया धन्य है, प्रेम में छकी निमयधकी मीराबाई बोलती गई कि मेरे राम रखक हैं ।

कहते हैं कि मीराबाई गोपीके समान थी जमी तो उसने जगत लाज को छोड़दी ।

(मीराबाई की सासू ने कहा कुलदेवी को शीस नवाओ)

सचैया ।

पल काटो सही इन नैनन के गिरधारि विना पल अन्त निहारै ।
जीभ कटै न भजै नंदनदन बुद्धि कटै हरि नाम विसारै ॥
मीरौ कहै जरि जाहु हियो पदकंज विना पल अंतर धारै ।
शीश विना ब्रजराज नवै वह शीशहिं काटि कुवां किन डारै ॥ १ ॥

दोहा ।

मीरां सुत जनम्यो नहीं, सिखख न मूंज्यो कोय ।
नाम रहैगा नाम से, सुणो सयाने लोय ॥ १ ॥ (भक्तमाल)

हुंडी माहेरो करि घणेरो सुतन केरो व्याव ए ।
सभ्भा मँझारी भूप नारी लियाँ झारी आव ए ।
नरसी सदासी माल थारी नीर प्यारी पा जए ।
भक्ती वधाऊ० ॥ १० ॥

(नरसीजी की कथा)

प्रसुने नरसीजीके लिए हुंडी सिकारी, तथा उन की दोहिती के विवाह में जिन राममहाराज ने घणा (बहुत) कर माहेरा भरा, तथा स्वयं भगवान् राजा की प्यारी राणी वनकरजल की झारी ले सभा के बीच में आकर कहने लगे कि, हे नरसी ! सदाकाल से यह माला तुम्हारी ही है लो पहिनो ऐसे कह जल पा गए ।

दोहा ।

नरसिहिं बीन्ही रीझिकै, माला नंदकुमार ।
राखि लियो अपनी शरण, विमुखनि मुख दै छार ॥ (भक्तमाल)

हाथी चुवाए पन्यो पाप असुर थाप दास ए ।
पाती फिराए दरश घाए साँच आप जास ए ।
दादू दयालू हुय कृपालू जीव जालू भाज ए ।
भक्ती वधाऊ० ॥ ११ ॥

(दादू दयाल की कथा)

महात्मा दादूजी के समुख हाथी ओढने पर परचा होने से पातशाह चरणों में पडकर दास होता भया । “दादू दर्शन जो कोइ जावै तो साते भीडी एक भरवै” इस लेख पत्र के (काई शब्द) के स्थान में (नहीं शब्द) होगया । जब इस प्रकार लेख फिरने से हजारों पुरुष दशन के लिए गए तब तो पातशाह को पूरा ही सौच आगया । ऐसे दादू दयाल कृपालु होकर अनंत जीवों के जाल को तोड़ते भए ।

स. १६०१ को गुजरात अहमदाबाद में आपने जन्म लिया । ईश्वरस्वरूप महात्माओं के कुल का कोइ कारण नहीं होता । इन्होंने भी तो यहाँतक हट करपी कि मच्छ कच्छ बराह घरीर भी धारे । परंतु दादूजी महाराज ने तो उत्तम ब्राह्मणकुलमें ही घरीर धारण किया । परम दयालु परमात्मा ने बूडणरूप धारणकर सिरफ ग्यारह वर्ष की अवस्था में दादूजी को दशन पान प्रसाद दे अतद्वान हुए तबतो ऐसी अद्भुत अनोखी झाकी को देख आपका मन मुग्ध होगया । सब दशन की चाट में निहल हो पद पाने लगे । (आज सलोना मोहि देखन देरे पत्र पत्र में बलिहारी तेरे) आपने पञ्जबी भाषामें एक पद बहुतही अच्छा बिरहका वर्णन किया है ।

पद ।

आवरे सज्जणों आव सिरपर धरि पौंद ।
 जानी मेंढा जिंद असाव ।
 तू रावै दा राव वे सज्जणा आव ॥
 इत्थों उत्थों जित्यों किर्यों हां जीवा तो बाल वे ।
 नीयों मेंढा आव असाव ।
 तू लालों सिर लाल वे सज्जणों आव ॥
 तन भी डेवों मन भी डेवों डेवों प्यड पराण वे ।
 सचा साइ मिलि इत्याई ।
 जिन्दा करों कुरवाण वे सज्जणों आव ॥
 तू पाक सिर पाक वे सज्जणों तू खों सिर खू ।
 दादू भावै सज्जणा आवै ।
 तू भीठ महबूब वे सज्जणों आव ॥ इति ।

इत्यादि बिरह वाणी का वर्णन करतेहुए खाना पीना सब छोड़ उस सांवली सरत क छिये तड़पने लगे, उससमय प्रेमाधीन प्रभु ने उनकी अत्यंत आवता देख अपना गद्दी सलोना रूप दिखा और आकाश वाणी से कहा कि हे दादू ! तू यह स्थान छोड़ दे, कारण इस स्थान कू ज्यों ज्यों देखता है त्यों त्यों तेरे बिरहसमुद्र बढ्यता है । अब तू

सांभर चला जा वहाँ भजन कर मेरी आज्ञा है। तब तो दादू दयाल भगवद् आज्ञा से अहमदाबाद छोड़ सांभर आय विराजे और भजन करने लगे। यहाँ पर अनेक परचे हुए उन परचों का परिचय दादूजी महाराज की परची में हैं। फिर वखनाजी की प्रार्थना से आप नराना ग्राम में पधार गए। गरीबदासजी अधिकारी शिष्य हुए यह आपके औरस पुत्र थे। सं० १६३२ में इन का जन्म हुआ था। और दासजी, तथा सुंदरदासजी, मोहनदासजी, जनगोपालजी, रज्जवजी, वखनोजी, साहुसेनजी, बाजींदजी और काजीमहम्मद आदि बड़े बड़े पहुँचे हुए शिष्य हुए जिनकी बाणी बहुत ही सार-गर्भित और वैराग्योत्पादक है। आजकल इस पंथके तुल्य सिवाय कबीर और नानक पंथ के दूसरा बृहत् कोई पंथ नहीं है। सांभर के निकट भराना में सं० १६६० को शरीर छोड़ आप परम धाम पधारे।

साखी ।

१. आपा भेटै हरि भजै, तन मन तजै विकार ।
२. सब ही सँ निर्वैरता, दादू यो मत सार ॥ १ ॥
३. एक राम के नाम विन, जिवकी जरनि न जाय ।
४. दादू केते पचि मरे, करि करि बहुत उपाय ॥ २ ॥
५. राम नाम गुरु शब्द से, रे मन पेल भरम्म ।
६. निह करमी से मन मिल्या, दादू काट करम्म ॥ ३ ॥
७. दादू देख दयालु को, सकल रहा भरपूर ।
८. रोम रोम में रमि रहा, तू जनि जाने दूर ॥ ४ ॥
९. जब मन लागे रामसों, तब अनत काहे को जाय ।
१०. दादू पाणी लूण ज्यूं, ऐसे रहे समाय ॥ ५ ॥
११. घीव दूधमें रमि रह्या, व्यापक सबही ठौर ।
१२. दादू वक्ता बहुत है, मधि काढे ते और ॥ ६ ॥
१३. केते पारिख पचि मुये, किमत कही न जाइ ।
१४. दादू सब हैरान हैं, गूंगे को गुड़ ख्वाइ ॥ ७ ॥

बाली सवाई तुले ताई ग्रीति भाई दास ए ।

“मैसाँ मँगाई और थाई व्याज माँई छाँस ए ।”

“बलवाँ जिसाई जसू वाई राम राई न्वाज ए ।”

भक्ती बधाऊ ॥ १२ ॥

१ नाक में पहरे की ।

१. इसछन्दमें तीन कथाएँ हैं ।

रामराय सदैव प्रति सत्तों के सहायक है। अथवा सत्तों की सहायता करनी यह रामरायकी सदा प्रतिज्ञा है। वह समर्थ सदैव रक्षा में ही हैं। उन दयाद्रको छोड़ किसके पास भागें। अर्थात् जिसके पास जावें उसके भी तो राम रक्षक है। जिनके राम रक्षक हैं उनका क्या तीन लोक में नाश हो सकता है। उसके लिए सब प्राणी मा जाये माइ हैं।

साखी ।

पूछे समर्थ सतगुरु, आगे राम सहाय ।
 अनतकोटि सेंट घीस पर, रामा विप्र न काय ॥ १ ॥
 अबर दूँ भूत कमावे, कछा वचन गुरु देव ।
 रामदास सासो तजो, कर सतनकी सेव ॥ २ ॥
 रिचि छिचि दासी रामदास, चरण रही लपटाय ।
 आवे आवे सहज में रहो राम त्रिलोक ॥ ३ ॥

कहा देश देश राम प्रदेश है परमेशू सग य ।
 दुष्टी विचेसू करि अनेसू खोम लेसू फग य ।
 सोई मरेसू जन निर्मसू सुखावेसू आज य ।
 भक्ती घघारू ॥ १७ ॥

देश प्रदेश विदेश कहा ही रहो, परमेवर सग में है। रामदासजी महाराज के वास्ते एक दुष्ट धाड़वी ने बुरी नजर से देखा कि कहाँ चले गये इन को राखेके बीच ही खोस लेऊगा, अथवा इनके कंग कहिये आभूषण उनको खोस लेऊगा, अथवा इनको खास क कहिये मस्तक काट लेऊगा, वे मेरे हाथ से बच नहीं सकते हैं। इसप्रकार विचार करता हुआ वह दुष्ट तीन ही दिनमें एक ली के हाथ से मार गया। रामदासजी महाराज निभय हो मुखपूर्वक पीछे स्थान को घघार जाते भए।

साखी ।

काहूके तो राजवर काहू के बल देव ।
 रामदास के रामवर, एक तुम्हारी बल ॥ इति ।

कहा घाट यादू सुखस ठादू मुज बेरादू राम य ।
 गुरु रामदास चरित गासू नित निवासू नाम य ।
 लज्जा सदासू आदि आसू कली कासू राज य ।
 भक्ती घघारू ॥ १८ ॥

श्रीदयालुजी महाराज फरमाते हैं कि रामजी के विगट रूप होने से क्या घाट क्या वाट । मेरे लिए तो सब सुख का ठाट है । मैं तो गुरु रामदासजी महाराज के चरित गाऊंगा, क्योंकि मेरे तो नित्य उनके नामका ही निवास है । सदैव से आपही के हाथ मेरी लाज है । और आदि अनादि से राज ही की आशा है तो फिर कली कैसा अर्थात् कलियुग मेरा करही क्या सकता है ।

सोरठा ।

श्री गुरु समर्थ आप, एक भरोसो आसरो ।

राममंत्र जप जाप, दालवाल एके मही ॥ १ ॥

दोहा ।

सदाकाल समर्थ धणी, रक्षक राम दयाल ।

कठिन कली कारण कृपा, हरिविन कौन संभाल ॥ १ ॥

मेरे तो वे दयालु राम महाराज सदैवकाल के समर्थ धणी हैं और वही रक्षक हैं । इस कठिन कलिकाल मे विना ही कारण कृपा करनेवाले हरि के विना दूसरा कौन संभाल करनेवाला है ।

दोहा ।

नमो नमामी नाथ तू, निर्धार आधार ।

लज्जा राखण रामजी, आनंद अगम अपार ॥ २ ॥

हे नाथ ! आप के अर्थ नमस्कार हो ! नमस्कार हो ! ! आप निराधारों के आधार हैं । हे रामजी ! आप लाज को रखनेवाले हैं । आप आनन्दस्वरूप हैं । अगम हैं और अपार हैं ।

प्रसन्न जना अपवर्ग सुख, शरणै प्रति पालंत ।

दालवाल शरणागती, क्यों नहि अरि जालंत ॥ ३ ॥

शरणागत की प्रतिपाल करने मे ही भक्तों की प्रसन्नता है और वही उनके लिए मोक्ष सुख है, तो दालवाल आप के शरणागत है इस शरणागत के व्याधिरूप शत्रु को क्यों नही जलाते हैं ? ॥

कर्म बडा कि हरि बडा, यह अचरज मोहि आय ।

हरि तो लेख अलेख है, साधु वचन यो जाय ॥ ४ ॥

नारि पलट नर तनु भयो, जन तुरसी के हेत ।

अकरण करण दयालु धिन, अपना को सुख देत ॥ ५ ॥

१ मोक्ष । २ कई महात्मागण यह कथा जन तुरसीजीकी बतलाते हैं ।

(गोस्वामी तुलसीदासजी की कथा)

कम बड़े हैं कि हरि बड़े हैं इस में मेरे को आश्चर्य आता है । इस विवाद में साधुओंक वचन तो यों प्रमाण देते हैं, कि हरि तो लेख को भी अलेख कर देते हैं जैसे गोस्वामी तुलसीदासजीके वास्ते नारीरूप पलट कर नरतनु हो गया ऐसे अकारण कारण दयालु हैं । धन्य है आप अपने जनको सुख देते हैं ।

कवित्त ।

प्रेम की सार काव्य भेदन की सार चारु, चातुरी चमत्कार सार रस सानी में ।
प्रेम की पढावनी बढावनी विरति ज्ञान, अन्तमें चढावनी श्रीराम रजधानी में ॥
भानी भालक कुम्भक हाल रंक राज दानी कहै रसरंगमणी मोदता मिनी में ।
पाइ है न प्रानी राम भक्ति सुखखानी मति धो न रति मानी बसी तुलसी की बानीमें ॥१॥
व्यासने पुराण गायो कपिल मुसायो साह्य शीतलने गायो न्याय तर्क जहा तौई के ।
जैमिनि करमकाह योग को पतञ्जलिने, साङ्गिऊ भक्ति भने साधन सुझाई के ॥
गङ्गा वेदांत भाषे मध्वाचार्य द्वैत बाख ऐसे रसरंग मत बाद सब झई के ।
रामाकार काव्य कव्यो जग भक्तिभाव नन्वो राम प्रेम पाले पन्वो तुलसी गोसाई के ॥२॥

श्लोक ।

धीप्राचेतसरूपिणे सुकवये कोदण्डसूत्रापिने ।

भाषाकाव्यविधायिने स्वजनताभाष्योपविचक्षिने ॥

धीरामामृतवर्षिणे जनकजाप्रेष्ठजुरागाभये ।

तस्मै धीशुरवे नमोस्तु तुलसीदासाय गोस्वामिने ॥ १ ॥

(रामायणमाहात्म्य)

जुग जुग पाळत जन पखो, साचा करण सयाल ।

सो नियल या जगतर्म, जाके बल गोपाल ॥ ६ ॥

“(परित्राणाय साधूना)” ऐसा जो आपका वचन है उसको सत्य करने के वास्ते जुग जुग में भक्तजनों की पक्ष पालते हैं । इस जगत में जिसके गोपाल का बल है सो क्या निबल है ?

राम सदा सुख रजना, भय भजन भरतार ।

करुणामय कारणकरण, धारक वारण धार ॥ ७ ॥

हे राममहाराज ! आप सदा सुखरूप हैं चित्त के रजन कता हैं और भय भय के भजन कता हैं, तथा जगत को भरण पोषण कर आप ही तारते हैं और आपही जगत् के कारण जो शुनिव्यादि पंचमहाभूत तिन के करनेवाले हैं । हे प्रभो ! आप करुणामय हैं तभी तो वारण जो गजद तिसके धार कहिये समय

मैं आपने हरि अवतार धार उस गजेन्द्र की वारक कहिये वार की अर्थात् सहायता की । तथा वारक कहिये कष्ट स्थानमें उम गजेन्द्रकी वार की ।

बुहो जात भवसिंधु में, मोहादिक जल पार ।

व्याधि ग्राह मोकूँ गह्यो, अब हरि करण उधार ॥ ८ ॥

ससाररूपी समुद्रविषै मोहादिक जलकी तरंगों में बहा जा रहा हूँ । व्याधिरूप ग्राहने मेरे को पकड़ लिया है, सो हे हरे ! मेरा अब आप ही उद्धार करनेवाले हैं ।

हूँ संतों के शरण को, तू संतों आधीन ।

लायक पायक साँच तब, दीन सहायक दीन ॥ ९ ॥

मैं किन संतों के शरण हूँ कि जिन संतों के आप आधीन हो रहे हैं । क्योंकि सच्चा जो आपका पायक कहिये सेवक है वह आपके लायक है सो हे दीनबन्धो ! आप दीन सहायक हैं और मैं दीन हूँ अब देरी काहेकी है ?

माधोदास दयालु के, प्रसन्न भये धिन राम ।

क्यों नहिं बंदत जगत यश, नैरव सेवक ताम ॥ १० ॥

(मैदानी माधोदासजी की कथा)

हे राम दयालु ! मैदानी माधोदामजी के वास्ते आप प्रसन्न होते भये । धन्य है जिनका सेवक भैरव है । तिनका यश जगत में क्यों न बढ़नीय हो ?

जैसलमेर के राज्यातर्गत बारू ग्राम में माधोसिंहजी नामक जाति के चोहान एक राजपूत रहा करते थे । वह वीसों आदमियों के संग पूगल तथा वीसलपुर के बीच के जंगल में डेरा डाल सिंध की वार (उजाड़) में धाड़ा दोड़ कतारें छूट लिया करते थे । इस वजह से इनका बड़ा धाका पड़ता था । एक समय यहा दुष्काल पड़ने के वजह सिंध से नाज की लड़ी हुई कतार चची आरही थी, जहा इन धाड़वियों का डेरा था उनके पास ही जंगल में एक कूआ बना हुआ था उसपर कतार का पड़ाव अकसर हुवा करता था । विचारे उन लोगों ने भी वहाँ रात्रि में कतार डाल दी, और रोटी बाटी बनाते हुए फिकर करने लगे कि भाई ! ऐसा न होजाय कि माधोसिंह आकर अपने को छूट लें । यदि ऐसा होगया तो घर में चाल बचे और अपने सब मारे भूख के मरजायेंगे । इनकी बातों को पास में ही माधोसिंहजी सुन रहे थे । आप के हृदय में दया आगई तुरत उनके पास गये । माधोसिंहजी को देखते ही यह लो यह आगये यों कह सब रोने लगे तब तो आपने दिलासा दी कि रोओ मत मैं नहीं छूटगा । तुम फोरन लदकर चले जाओ । ऐसा न हो कि मेरे साथवाले तुम को छूट लें ऐसा कह बंदूक तलवार आदि जितने आपके शस्त्र थे वह सब तोड़ तुझाय लंगोटी लगाय उसी जगह धूणी पर बैठ सगवालों को विलमाने के लिये रात भर लकड़िये जलाकर प्रकाश करते रहे । लकड़ियों के छूट जाने से कपड़े जला जला

तबका कर दिया। प्रातः काठ सगवाले हेरु इकठे हुए। पूछनेपर उन लोगों से आपने कहा कि, बस अपना सीर आजसे टांगया है। अब मेरा सीर तुम से नहीं है किंतु ईश्वर से है। यों कह उस जगल में वहीं भजन करने लगे। बारह वर्ष व्यतीत होने पर आकाशवाणी हुई कि जायत के महत वैष्णव मोहनदासजी तबन भगपात घाट पर निवास करते हैं उनको गुरु करो जाओ। तब उजैन आए भगवदक्षी आशानुसार मोहनदासजी के शिष्य हुए। शुरूने मैदानी माधोदासजी आपका नाम रखा। कई दिन वहां निवास कर पीछ आए। बीकानेर से पश्चिम सात कोस कोस देसर तालावर क्षेत्रपाल भैरव के पास ही धूनी लगाकर बैठ गए। राजी में भरव ने कहा ए सातु। यहां से हट कर दूर बैठ जा। आपने चर्र विछा जगती हुई धूनी लक्षमें उठा भैरव से कहा यह बोको मेरी पकाऊ तो वहां तक पहुँचा दे। जब भैरव उठाने लगा तो भैरव का हाथ पकाऊ से दब गया तब तो लमा चिहाने आर बोस कसूर माफ करो मैं आपका दास हूँ, मुझे बचा के आप का शिष्य बनालो। एसी विनय सुन आपने दया कर उसको सुखी किया और शिष्य बनाकर खेमदास नाम रखा। उसका मलीन पाना पीना सब छुड़वा दिया। अब तो भैरव तन मन से सेवा करने लगा। यों करते कई दिन चले गये तब तो माधोदासजी की सिद्धाई देखने के लिये दशहजार साजुओंकी जमात रात्रि में जाइ आर याँले गुरुमाई माधोदास। सुसाँदय होते ही अतीतों के लिये भोजन मुझारे यहां ही होगा। यों कह जहाँ तहाँ आसन डेरें लगादिए। अथरात्रि के समय भैरव गुरुमहाराजकी आज्ञासे मुस्तान सहर में बनिये के यहां सीरे का कणव रंभा हुआ पका था उठा गया। भगवद्वेग लगाकर महात्माओं को भोजन कराना शुरू किया। तीन दिन तक लगातार सत भोजन करते रहे परंतु कदाव तो नहीं खूग तब तो माधोदासजी से माफी माग सतोंमें अपना अपना रखा लिया। तब माधोदास जी महाराज ने कहा भैरव! मैं प्रसन्न हुआ कुछ माग। भैरव ने कहा मेरे को तो मेरे ही खान पान की बायब आरही है। सुधी मिलजाय। आशकी टहल करने को एक चैत्र ला दूंगा। महाराज ने कहा तेरा प्रारथ ही मव है मैं क्या करूँ तू जाने। भैरव गुरंत मुस्तान गया। जिस सेठ का कणव लाया था उसीके लक्षके को उठालाया। महाराज का टहलवा कर दिया। कई दिन के बाद यात्रा के लिए मुस्तान से सेठ खेडमदेसर आया, देखता है तो कदाव पर अपना और पिताका नाम सुना हुआ है। इतने में लक्षके की तरफ देखता है तो अपना ही मादस होता है। चकित होके बोला मामला क्या है! तब भैरव ने कहा यह कदाव आर लक्षका मुझारा ही है। माधोदासजी महाराज की सेवा के लिए मैं गया हूँ। तब सुन वह सेठ अपना अहो भाग्य समझ राजी सुधी के साथ उस लक्षके को महाराज के चवाकर पीछ चलाया। माधोदासजी महाराज ने शिष्य बना उसका नाम मुदरदासजी रखा। महाराज के घाम पधारनेपर मुदरदासजी गरीबर हुए। माधोदासजी महाराज के अनेक परचे हुए हैं।

एक समय माधोदासजी महाराजके दर्शन करने को बीकानेरके राजा कोडमदेसर आए । महाराज को तिजारी चढ रही थी । आपने वह तिजारी गूदड़ी को भुलाकर दरवार से बात चीत करनी शुरू की । पासमे पड़ी हुई गूदड़ी थरथर धूज रही है । राजा के पूछनेपर तिजारी का सब वृत्तान्त कह सुनाया तब तो राजाने अपना अहोभाग्य समझा कि मेरे राज्य में ऐसे सिद्ध महात्मा विराजते हैं । यह वृत्तान्त बीकानेर पुरानी ख्यात में लिखा हुआ है ।

कोडमदेसर की गद्दी सिंहथल गद्दीकी दादायुक्त गद्दी है ।

इति ।

जर नरहरियानंद के, कर दुर्गा आधीन ।

नितका ढोया ईंधणा, अकरण करण नवीन ॥ ११ ॥

(नरहरियानंदजीकी कथा)

भक्त नरहरियानंदजीके लिये आपने दुर्गाको आधीन करदी । विचारी दुर्गाने निल लकड़ियों की भारी ढोई जिस अकरण ने यह नवीन करण किया ।

(भक्तमाल)

चंद्रहास को राखियो, केती कष्ट दयाल ।

मात आदि चरणा परी, महिपति भक्त विशाल ॥ १२ ॥

(चंद्रहासजीकी कथा)

जिस दयालु ने कितने ही कष्टों से चंद्रहास को रखलिया । मातादि जोगिनियें भी जिस चंद्रहास राजाके चरणों में पड़ी वह चंद्रहास एक विशाल भक्त होता भया ।

श्लोक ।

विपमस्मै प्रदातव्यं त्वया मदनशत्रवे ।

कार्याकार्यं न कर्तव्यं कर्तव्यं किल मत्प्रियम् ॥ १ ॥ (भक्तमाल)

नंददास के हेत जो, गऊ जिवाई राम ।

भये खिसाने विप्र सच, जनके सारे काम ॥ १३ ॥

(नंददासजीकी कथा)

जिन राम महाराज ने नंददासजी के वास्ते गऊ को जिवादी । सब ब्राह्मण जिनके ऊपर नाराज हो गये थे तो भी भगवानने भक्त का काम तो सिद्ध करही दिया ।

(भक्तमाल)

दग्ध देह कमध्वज तणी, किवी पारपद आन ।

चार चलावो शरण सुख, जन महिमा भगवान ॥ १४ ॥

(कमध्वजजीकी कथा)

भगवान के पारषद हनुमानजीने आकर भक्त कामध्वजके मृतक शरीरको जलाया । शरणागतको जीतेजी सुख दिया और अंतमें उसका अच्छा हलावा चलावा किया । इस प्रकार भगवानने भक्त की महिमा बढ़ाई । (भक्तमाल)

हरि पुर से आये जना, पाय गये परसाद ।

लालाचारज प्रसिद्ध जग, चकित रहे असाद ॥ १५ ॥

(लालाचार्यजीकी कथा)

वैकुण्ठ से हरिजन आकर लालाचार्य के यहा प्रसाद पा गये । इस प्रकार लालाचार्यकी आपने जगत में प्रसिद्धि करवाई । इस बात को देखकर दुष्ट तो हजे बजे से रह गए । (भक्तमाल)

करमायाई के सदन, भाय भई परसाद ।

नाम दुगाई प्रगट जग, अकरण करण अगाद ॥ १६ ॥

(करमायाईकी कथा)

करमायाई के घर में जिन भगवानने आवमय प्रसादका भोग लगाया । करमायाई जाति की जाटणी एक साधारण स्त्री थी परंतु उनका नाम जगत में प्रगट कर दिया । ऐसे वे भगवान अकरण करण में गभीर हैं ।

नहि बिद्या कुल जाति अचार ।

रामहि केवट प्रेम प्रियार ॥”

धाबल ओट धीचको धलके ।

अपणा दे कपडा ओगम ॥”

(भक्तमाल)

कहलौं घरणू सत जरा, गति अगाध परमेश ।

मो धल यो ही आसरो निभय गुरु उपदेश ॥ १७ ॥

सतों का यश वहाँ तक वणन करू ? क्योंकि परमेश्वर की गति अगाध है । मैं तो गुरु महाराजके उपदेश से निभय हूँ । मेरे यही बल है और यही आश्रय है ।

नवग्रह चौंसठ जोगिणी, वाहन धीर पर्वत ।

काल भक्ष सबको करे, हरि शरणे डरपत ॥ १८ ॥

ताकी दासी तापत्रय, मो घट व्याधि जराय ।

जोनराय जानो सबै, यह विरद केरो जाय ॥ १९ ॥

तुम पालक सामे सदा, आगे अबे अनत ।

कर्म विडारण तारणा, नमस्कार भगवत ॥ २० ॥

नवग्रह चौंसठ जोगिनी से लेकर वावन वीर पर्यंत काल सबको भक्षण करता है वह काल भी भगवद्भक्तों से डरता है। तिसकाल की दासी जो ताप-त्रय रूपी व्याधि सो मेरे घट को जला रही है, हे जानराय ! आप सब जानते हो कि ये विरद किसका जा रहा है। आप वही पालक है कि जिन्होंने पहिले सदैव रक्षा की और कर रहे हैं और करेंगे। हे कर्मों को विडारणे वाले जगत को तारणेवाले भगवत ! आपको नमस्कार हो।

व्याध एक माय्यो मिरग, ब्याल डस्यो तरु छॉय।

ठपा भरत शुक्र सुनि गिरा, नाम प्रगट उरमाँय ॥ २१ ॥

उभय वार श्रवणा सुणे, उभय वार मुख गाय।

अंतकाल ऐसो भयो, ततछिन भए सहाय ॥ २२ ॥

जमकिंकर बंधे महा, बंध छुडाई ताय।

हरिपुरवासी आयके, लेखे न्याव चुकाय ॥ २३ ॥

एके चेले अघ सबे, एके चेले नाम।

ऐसी विधि भव तारणा, निर्भय दीधो धाम ॥ २४ ॥

(एक व्याध की कथा)

एक व्याध मृग को मारकर वृक्ष की छाया में आके बैठा। बैठते ही साँप ने उसे डस लिया। उस समय प्यासे मरते हुए उस व्याधने एक सुवे की गिरा सुनी, सुनते ही उसके हृदय में नाम प्रगट आया। दो वार तो नाम को कानों से श्रवण किया और दो वार ही मुख से नाम लिया तो उसका अतकाल ऐसा हुआ कि तत्क्षण भगवान् उसके सहायक होगये। जमदूतो ने उसको बड़े बधनों से बाध दिया था तो भी भगवत्पारपदों ने आकर उसके बध छुड़ा दिये और हिसाब कर उसका इन्साफ चुकाया। तकड़ीके एक पलड़े में तो उसके सब पाप रक्खे और एक पलड़े में भगवन्नाम रक्खा तो पापवाला पलड़ा हलका होगया, इस प्रकार भवतारकने उस व्याधको निर्भय धाम दिया।

मेरी विरियां कहा भयो, दीनबंधु दातार।

करहु कृपा अब औरसी, विगरत कौन बुँहार ॥ २५ ॥

हे दीनबन्धु दानी ! अब मेरे वक्त क्या हो गया। औरोंपर जैसी कृपा करी है वैसी कृपा मेरेपर भी करो, अधवा औरसी कहिये खास अतःकरणसे कृपा करो, क्योंकि यह व्यवहार अब किसका विगड रहा है ?

सोरठा ।

उलटा समझे राम, जोखीणो साचो कन्यो ।

शरणागत दुख ताम, यह कारण अबही भयो ॥ १ ॥

आतो अवे न कोय, अजहुँ मैं नाहीं सुन्यो ।

यह तो कदे न होय, रार गमावण रामजी ॥ २ ॥

हे रामजी महाराज ! आप समझे तो सही परतु उलटा समझ गए ।

ताप फरीर को दृष्ट-एक फरीर राखे २ जा रहा था उसने चाहा कि अगरसे खुदा चन्नेके लिए मुझे एक पोछा देदे तो कैसा अच्छा हो । ऐसा सकल्प कर आगे को बढ़ा तो क्या आश्चर्य देखता है कि एक राजपूत के चढ़नेको घोड़ी भी उसने बटेरा दे दिया । राजपूत गगन में राख पै खावा विचार करता है कि कोई मजदूर मिलनाय तो बटेरे को उठा ले । अकस्मात् फरीरपर निगाह पड़ी और कहा कि फरीर साहब ! बटेरे को उठा लो बलात्कार उठा कर चले । अब चलते चले फरीर साहब विचारते हैं कि खुदा ने घोड़ा तो दिया पर उठे समझ गये । मैंने बोके पर चढ़ना चाहा था पर उसका पोछा मुझपर चढ़ गया ।

इसी प्रकार श्रीधालजी महाराज फरमाते हैं कि, आप भेरी विनय को समझे तो सही पर उलटे समझ गए । मैं तो जन्ममरणरूप व्याधि को भेटना चाहता था परतु वो तो वहीं रही उलटी नेत्रों की व्याधि आ लगी ।

तथा हे प्रभो ! चौबे वाला आख्यान आपने साचा कर दिखाया ।

('इक चौबे हुते छने होने चले तहां होय दुबे द्वै गाठ के छोये ') एक चौबे थ उनको यह खबर मिली कि अमुक देश में चौबेनो छाने कहते हैं । आप छद छाने होने को निकले सो चले चले एक और ही जगह पहुंचे तो वहां सुना कि चौबे को हुम्मे ही कहते हैं । अब वह चाबा वहा विचार करता है कि मैं अपने देशमें चौबे कहगता था । छाने होने को खाना हुआ परतु उठे यहाँ आकर दो गाठ के छो हुम्मे ही बन बैठ ।

इस प्रकार श्रीधालजी महाराज फरमाते हैं कि हे प्रभो ! मैं अपने समय को सुखपूर्वक बिता रहा था तब मैंने चाहा कि भगवत् भजन कर जन्म मरणरूपी रोग को मिटादू ऐसा निश्चय कर प्रयत्न किया तो करते ही नेत्रोग्यावस्था से रहित हो नेत्रों की पीड़ा से पीडित होगया, किंतु आरोग्य अवस्था को गांठसे गमा दु खी बन बैठा, सो यह आख्यान सचाही आपने कर दिखाया क्या ? प्रभो ! शरणागत को दुःख होना यह कारण तो अब ही हुआ है ऐसा न तो कभी आगे होगा और न अन्यत्र कहीं ऐसा है और न अवतक मैं ने सुना, यह तो कदापि न हो कि रामजी महाराज नेत्रों को गमा दें ।

१ आख्यान । २ नेत्र सकलार, लडाई । ३ यह आर्त्त बचन है ।

बोल न जाणूँ कोय, अल्प बुद्धि मन वेग तें ।

नहि जाके हरि होय, यातो मैं जाणूँ सदा ॥ ३ ॥

हे महाराज ! अल्पबुद्धि होने से मैं बोलना कोई नहीं जानता केवल मन के वेग से आल बाल कर रहा हूँ । जिसके कोई नहीं उसके हरि होवें हैं यह तो मैं सदैव से जानता हूँ, और वस इसीपर मैं निर्भर हूँ ।

तब जन शरणे आय, हनूँवँश इक डाँवरो ।

नाभा नाम सहाय, चइमा खुल संजय सही ॥ ४ ॥

जन पद पंकज धूर, चख उर मन मंजन क्यो ।

राम शब्द भरपूर, ताहि नेत्र ऐसे खुले ॥ ५ ॥

मुरवेला सूझंत, अद्भुत वरण्यो ब्रह्म पद ।

हरि शरणे जूझंत, द्यालवाल यह आसरो ॥ ६ ॥

(नाभाजी की कथा)

हनुवश का एक नाभा नाम बालक भक्त आपके शरण आया उस नाभे की आपने सहायता की, उसके हृदय के नेत्र खोल उनको सच्चा सजय बना दिया । जिस नाभाजी ने महात्माओं के चरणकमल की धूली से नेत्र, हृदय और मन को मंजन किया और राम शब्द की भरपूर ध्वनि की तो उनके नेत्र ऐसे खुल गए कि तीनकाल (भूत भविष्यत वर्तमान) की वार्ता सूझने लग गई, तब उन ने अद्भुत ब्रह्मपद का वर्णन किया इस प्रकार मैं भी तो हरि शरणे जूझ रहा हूँ, क्यों कि यही आसरा द्यालवाल के है ।

“श्री नाभा नम उदित शशि, भक्तमाल सो जान ।

रसिक अनन्य चकोर है, पान करै रस यान ॥” (भक्तमाल)

पावन पतित अनेक, समर्थ याही चोज है ।

पापी हुलस विशेष, अवकी वेर उवारियै ॥ ७ ॥

अनेक पापियों को पवित्र करना समर्थवानों के तो एक चोज है और इस बात का पापियों को विशेष हर्ष है तब तो मेरी यह प्रार्थना है कि अव की वेर इस पापी को भी उवार लें ।

“भक्तबल को विरद सुनि, रज्जव दीन्हो रोय ।

जब सुनियो पावन पतित, रख्यो नचीतो सोय ॥ १ ॥”

यह जानत महाराज, शरणागत भेटण अंदा ।

राम गरीबनिवाज, विप्रहरण मंगल सदा ॥ ८ ॥

१ लड़का । २ नेत्र । ३ चमत्कारपूर्ण उक्ति । ४ आनंद की उमंग । ५ कष्ट, मनकी व्याधि ।

श्रीरामखेदधर्मप्रकाश-

यह मैं जानता हूँ कि राम महाराज शरणागत के दुःख को भेटनेवाले हैं,
गरीब निमाज हैं, विग्रह हरता हूँ और सदैव मगल करता हूँ ।

दोहा ।

भक्तिरस जामें सकल, छंद सारसी जान ।

हरि सरवर हुआ जना, मुक्ता नाम निधान ॥ १ ॥

भाव नीर निरमल सदा, परिमल भवसिंधु पार ।

रामदास जन रमरक्षा, रक्षा अखैं सुख सार ॥ २ ॥

कृष्णासागररूपी दिव्य सरोवर में भक्ति के सारे रहस्य समाए हुए हैं,
जिसमें उद सारस है, भक्त हंस है, नाम मोतियाँ की निधि है, भाव निर्मल
जल है, भवसिंधु से पार होना ही मधुर सुगंध है ऐसे सरोवर में जो रामनक
समुदाय रमण करते हैं वे मोक्ष सुख को प्राप्त होते हैं ।

मन कलियो मोह सिंधु में, काल ग्राह अब तत ।

अप लायक स्थायक सदा, नमस्कार भगवत ॥ ३ ॥

मोहरूपी समुद्रमें कलीजा हुआ जो मनरूपी हाथी तिसरी पापरूपी तट
चालकर चालरूपी ग्राह खच रहा है, अब उसरी सहायता करने में आपका
समर्थ है, हे भगवत ! आपको सदैव नमस्कार हो ।

उद रोमकदी ।

ममो भगवत संभारण कारण गति अपार न कोण लही ।

भय दुःख विचारण काज सुधारण पार उत्तारण एक सही ॥

चल पाँह पधारण अघ्न निवारण जाव जिवारण धन्य धरो ।

भय के दुःख टार उधार अपपर पार गजेंद्र जेम करो ॥ हरि० ॥ १ ॥

रक्षा करनेवाले हे भगवत ! आपको नमस्कार हो, आपकी अपार गती का
किसने पार पाया ? ।

ससार के दुःखों को दूर करनेवाले, काय को सुधारनेवाले, पार उतारनेवाले
एक सत्यस्वरूप आप ही हैं ।

हे ग्राह के बल को नधारनेवाले ! हे पापों को निवारण करनेवाले प्रभो !
आप तो बैरल जीरा को जिलाने के वास्ते अनतार धारण करते हैं ।

हे हरे ! ससारके अपार दुःख को तार किस प्रकार जल में डूबत हुए गजेंद्र
का उद्धार किया तैसे ही मेरे को पार करो ॥

१ रहस्य । २ उत्तम गय । ३ अत्रय । ४ गति=लीला, माया । ५ अप=पार ।
६ यपु=घरीर । ७ जगमें पटा हुआ । ८ जिमि=तैसे ।

महा मत्त मनंगय रत्त अनंगय अंध कुसंगय में मतयूं ।
ता पंच प्रसंगय वाम भुवंगय काम कमंगय से हत यूँ ॥
विष अंग तरंगय ग्रीष्म अंगय मोह सुरंगय होय गैरो ।
भवके दुख टार० ॥ २ ॥

महा उनमत्त मनरूपी हाथी कामदेव में रत होकर अंधा हुआ कुसंगति में मत्त होगया ।

इसीलिए वह मन पंच प्रसंगोंसे अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध से, स्त्रीरूपी सर्पिणी से, और काम के बाणों से मारा गया ।

विषय के आठ अंग हैं वही मानो विष की लहरें जिस मनके अंग में उठ रही हैं, और काम करके तपायमान जो स्त्री का अंग है वही मानो ग्रीष्म ऋतु है, तिस करके तप्त हो रहा है । अब वह मन स्त्रीसबधी मोह रंग में रंगीज कर गर रूप होगया है अतएव हे नाथ ! अब आप इससे उबारो ।

प्रकृति पँचीस तेतीस प्रचंडय मंड स मंडय पिंडे इता ।
हुय थंड विहंडय जीव स डंडय सूर प्रचंडय मन्न मता ॥
तत्काल विकराल विह्वल सङ्गपण व्याधि गिराह सनाह बुरो ।
भवके दुख टार० ॥ ३ ॥

पचीस प्रकृति, अन्नमयादि पचकोष, और तीन गुण ये सब मिल कर तेतीस होते हैं इन्हीं से बड़ा प्रचंड ब्रह्मांड बन गया और यही पिंड में है (पिंडेषु ब्रह्मादे)

उक्त प्रकृति आदि समूह विचल होकर जीवों को सुखदुःखरूपी दंड दे रहा है । तिस समूह में मत्त जो मन है सो प्रचंड शरवीर है ।

इतने ही में उछल कर विकराल व्याधिरूप ग्राह ने तो तत्काल विह्वलही करदिया, इसका बंधन बहुत बुरा है, हे प्रभो ! इस दुःख से आप पार करें ।

१ मन । २ हस्ती । ३ अनग=कामदेव । ४ बाण । ५ गर=एक प्रकार का बहुत कड़वा और मादक रस जिसका व्यवहार प्राचीन कालमें होताथा । ६ स्त्रीका स्वरण, कीर्तन, परिहास, निरीक्षण, गुप्तभाषण, भोगनेका सकल, भोगनेका दृढ़ निश्चय, और आठवां स्त्रीसंग अर्थात् दृढ़ निश्चय कीहुई क्रियाकी सिद्धि । ७ प्रकृति, महत्तत्त्व, अहंकार, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, पांचज्ञानेन्द्रियाचकर्मेंद्रि, मन, पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, जीवात्मा । ८ ब्रह्मांड । ९ शरीर । १० समूह । ११ विहंड=विचलना । १२ उछलना । १३ ग्राह । १४ बंधन । १५ अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय । १६ सत्त्व रज तम ।

जग जाल असराल सँभाल छले इन भयस्य सदा भयसिंधु मही ।
नभ नाल तँताल धरौल मिले त्रयलोक सुरपति विद्धि सही ॥
कइ रसस डोंढाल दींचाल उंगालण होय अमे खल खाण नरो ।
भवके दुख टार० ॥ ४ ॥

इस काल ने ससाररूपी समुद्र में इस जगत जाल को लगातार सदा सँभाल
सँभाल कर छला ।

नभचर, जलचर, थलचर, इन सहित तीनलोक, तथा इन्द्र, ब्रह्मा आदि
तथा दाढ़ोंवाले, बड़े बड़े शरीरवाले, तथा मनुष्यों को खानेवाले राक्षस आदि
ये सब जिसकाल के अनक रमवाले आस हो चुके हैं उस काल से हे राम
महाराज ! आप अमय करो ।

जग जनु जनम्म अनत कपट्य महा दुपट्य काल हुआ ।
जिष अघ करण्य मृत्यु हरण्य पूर वरण्य आयु हुआ ॥
अत नाहि तटक्य प्राण सटक्य छोडि घटक्य सीर टरो ।
भवके दुख टार० ॥ ५ ॥

प्रथम तो जगत जीवों के जन्म में अनत कष्ट है फिर इस जीव के खाट
हाल होते हैं ।

इस जीव को पाप तो अपने तरफ खाचते हैं । मृत्यु अलहरी खुशी मनानी
है । और आयुके वर्ष पूरे होनेतक दवा दारु दकर वैद्य न्याये ही विचारे गरीबों
को उग उग कर मनमें रानी होते हैं ।

जब अतमें नाही तटकती है, घटकों छोड प्राण सटरते हैं, तब इस प्राणी
का सब से सीर टल जाता है, उस समय में उस प्राणी को ससार से पार उता
रनेवाले एक आप ही हैं ।

राम श्वास दमोदम दु ख दमोदम राम रमोरम जान सबे ।
म्रैह प्राह गमोगम जीव भमोभम एक तमोतम ओर नबे ॥
यह दीन सँभो राम कया न करो किमु राज नमोनम धीर धरो ।
भवके दुख टार० ॥ ६ ॥

इस प्रकार श्वास तो दम दम में घट रहा है । दु ख का हमला पर हमला
हो रहा है । हे रमतीतरामजी ! तिसको आप सब जानते हैं ।

१ निरंतर । २ मक्षक=काँड । ३ नभचर । ४ जलचर । ५ थलचर ।
६ सुरपति इन्द्र । ७ विधि=ब्रह्मा । ८ रस=खाद । ९ दाढ़ोंवाले । १० बड़ेशरीरवाले ।
११ चवाना । १२ अमय । १३ दुष्ट=दुष्ट । १४ दवा=औषधि । १५ रमतीतराम ।
१६ म्रह म्रह की प्रति । १७ समय । १८ शक्ति ।

शरीररूपी गृहगृह के प्रति गमन करते हुए जीव बारंवार संसार में भ्रमण कर रहे हैं, सो उन जीवों की रक्षा करनेवाले हे प्रभो ! एक आप ही आप हैं, (न वे) किंतु वे शरीर रक्षा नहीं कर सकते हैं ।

यह दीन का समय है, इस दीन के चित्त को स्थिर क्यों नहीं करते हैं ? इस समय आप किस प्रकार धीरज धारण कर रहे हैं ? आपको नमस्कार हो नमस्कार हो ।

परिवार न वारण सार संभारण तारण कारण आय लियो ;
आरोह खंगारण धाय धैरारण चक्र चलारण काज कियो ॥
धिन आप अपारण सोइ विचारण ढेर उचारण एक ररो ।
भवके दुख टार० ॥ ७ ॥

परिवार ने जिस गजेन्द्र की सार संभार न ली तब उस को तारने के लिए अवतार धारण कर गरुड़पर चढकर चले, फिर पृथ्वी पर दोड़े, तब भी जल्दी न पहुँचने पर चक्र चलाकर गजेन्द्र का कार्य सिद्ध किया ।

एक र र र इस प्रकार की ढेर उच्चारण से ही जिस गजेन्द्र का उद्धार कर दिया ऐसे आप को धन्य है, आप अपार हैं, आप का विचार भी अपार है ।

गोविंद आनंद नमो चंद वंद पुरंद सुखंद समंद सदा ।
मो मंद मनंद गमो सिंध तद् लयंद शयंद उरंद मुंदा ॥
हृद जिंद निकंद सिकंद सौंदोगति अंद समंद दुरंद हरो ।
भव के दुख टार० ॥ ८ ॥

आनंदस्वरूप हे गोविंद ! आपको नमस्कार हो । कैसे हैं आप ? चंद्र तथा इंद्र करके वंदित हैं, और सदा सुखसमुद्र हैं ।

आप प्रसन्नता के साथ हृदयकमल में शयन कर रहे हैं, उनकी गम लेने के वास्ते मेरा मन बड़ा सुल्ल है, उनकी गम तो सिद्ध पुरुष ही लेते हैं ।

जो हृद के शरीर हैं वे सब नाशवत हैं । हृद के अंदर जितने जीव हैं उनके लिये तो वह (हृद) अपार समुद्र है, इसलिये हे मोक्षमूल ! उस अतिम अवधि रूप हृद का हरण करो ।

१ गजेन्द्र । २ गरुड़ । ३ पृथ्वी । ४ पुरंदर=इंद्र । ५ सुल्ल, मूर्ख, खल । ६ मन ।
७ गम=खोज । ८ सिद्ध=महात्मापुरुष । ९ लेना । १० शयन करना । ११ उर=हृदय । १२ प्रसन्नता । १३ अवधि । १४ शरीर । १५ नाश । १६ रुंध=मूल ।
१७ सद्गति=मोक्ष । १८ अंदर=भीतर । १९ दुरंद=अपार ।

छद छप्पय ।

द्वे हरण गोविंद तरण भवसिंधु विभवभर ।

नमस्कार आधार भूल नहिं परत निशमर ॥

आह दुखाह अयाह अबै शरणागति तेरी ।

दीनबधु आनद डेर यह सुनिये मेरी ॥

निराधार आधार हरि पारवार पावन पतित ।

घालघाल शरणागती कैरी सैंरी सो मुनि कथित ॥ १ ॥

हरण शोक को हरनेवाले हे गोविंद ! हे ससाररूपी समुद्र से तपनेवाले ! हे विश्वभर ! आपको नमस्कार हो । हे प्राणों के आधार दिनरात मेरे से आप मुलाए नहीं जात हो । अथाह दुख ने मेरे को ग्रहण कर लिया है । अब आपकी ही शरण है ।

हे दीनबधु आनंद रूप ! मेरी यह डेर सुनिए । ह पतितपावन हे हर ! ससाररूपी समुद्र में निरधारों के एक आपही का आधार है । यह घालघाल आपकी शरणागत है । मुनिलोग कहते हैं कि गजद की बेला सरगइ तो हे प्रभो ! क्या मुझ घालघाल की बेला नहीं सैली ?

दोहा ।

नाहि न दूजो आसने यह दुख भेटण आप ।

दासत जग माया दुखद तीन लोक रैय ताप ॥ १ ॥

तीन लोक को दुख देनेवाले जो तीन ताप इन स माया जगत का जला रही है । सिवाय आप के दूजा कोई आश्रय नहीं है । हे राम ! इस दुख को भेटनेवाले आप ही हैं ।

छद रोमकदी ।

धय ताप सँताप दुखाप दुखरुत पाप कियकर लार लगा ।

जिय छाप कलाप बिलाप भयकर वाफ हुतकर मृत्यु अगा ॥

मन सॉप शराप विशेष कायापर मोह मया घर बेश तरै ।

मनते सिध सार आधार रमोरम आप बिना कुण ताप हरै । जी ॥ १ ॥

तीन ताप के सताप से सब प्राणी दुख को प्राप्त हो रहे हैं । वह तीन ताप

१ द्वे=दुग्ध । २ निशमर अर्थात् रातदिन । ३ पारवार=समुद्र आरपार अपरंपार अनंत । ४ दूखी । ५ सिद्धहुइ । ६ तीन ताप=दैहिक दैविक और भौतिक व आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक । ७ इस छंद में उदाहरण सहित तीन तापों का वर्णन है । ८ कियकर=बोकर । ९ अग्नि । १० सजाबट । ११ विष्णु नारायण ।

यह हैं—जैसे अघासुर, घेनुकासुर आदि कस के किकरों ने लारे लगकर जिस प्रकार ब्रजवासियों को दुखी किये इस का नाम अधिभूत ताप है और यह तन की है।

कालीदह में निवास करनेवाला जो काली नाग जिस की विषाधि से मृत्यु भी अगा कहिये अगाऊ दूर हट रही है इस प्रकारकी छाप जिन ब्रजवासियों के आत्मा में लगने से जो भयंकर विलाप कलाप करना है इसका नाम अध्यात्म ताप है और यह वचन की है।

जिस महाजहरीले काली नागके लिये ब्रजवासियों का मनसे धिक्कार देना है, और विषसे मृतक बालकों के शरीर पर मोह उत्पन्न होना है इसका नाम अधिदैव ताप है और यह मन की है।

उस समय में आपने नटवर वेषधार काली को दमन कर ब्रजवासियों का दुख टाला इसी प्रकार मेरे पर भी दया कर ऐसा वेष धरो जिस से मेराभी दुःख टल जाय।

हे नारायण ! हे प्राणों के आधार ! मेरे काम को मनसे सिद्ध करो, बिना आपके मेरा कौन ताप हरेगा ?

अँतर्काल अकाल भूताल स डाकण मूठ स नाखण प्राण लिया ।

कुवै खाल जुँराल खोगाल फसावण मारग जावण मार विँया ॥

अधिभूत जँरावण तामस खाँवण और न आवण जोणि धरै ।

मनतैं सिध सार० ॥ २ ॥

अकाल मृत्यु होजाना जैसे भूत लगना, डाकन लेलेना, अथवा प्राण के लेने वाली मूठ का चलाना, कुए में गिरजाना, खाल में उतर जाना, ऊँडी खोगाल में फँसजाना, मारग चलते भयसे मरजाना, यह अधिभूत ताप हैं, तमोगुण इसकी खानि है । सो हे प्रभो ! ऐसी कृपा करो कि फिर आकर किसी भी प्रकार की योनी को न धारें ।

ज्वर व्याधि असाध्य नाख तन दूखण डैर सहकण रोग किता ।

कफजादि रजादि फियादि स सूकण वायु गंठूगण भोग जिता ॥

यह जासु रजोगण दंश अध्यात्म लाज प्रमातम काज करै ।

मनतैं सिध सार० ॥ ३ ॥

१ इस छंद में अधिभूत ताप का वर्णन है । २ गहरी । ३ भय । ४ ताप । ५ खानि । ६ इस छंद में अध्यात्म ताप का वर्णन है । ७ ताप । ८ परमात्मा ।

आठ प्रकार का ज्वर होना, असाध्य व्याधियों का होना, बाल निकलना, तथा शरीर में गडगूमड होना, गोठे में रुहरवा नामक रोग होना, तथा गुजरती आदि रितने ही होनेवाले रोग तथा कफ पित्त वात से होनेवाले रोग, प्रदर रोग, प्रमेहरोग, और यकृत (लीवर) ग्रीहादि उदररोग, तथा शोषरोग, गठिया बाधुसे आदि लगाकर बाधु के रोग आदि शिरोरोग, मुखरोग, नेत्ररोग करक जिसके जितने भोग भोगन हैं यह अभ्यात्म ताप है । रजोगुण इसकी खानि है । हे परमात्मन् ! अब राज आपही के हाथ है, इसदास का काय सिद्ध करें ।

धयाल सियाल उनाल ययाकुल धारि ययाल खुंधाल सयू ।
 धनाल विचाल गिराल असाकल ज्वाले मयाल सजाल लयू ॥
 सुराल विचाल सपट सतोगुण यह अधिदेव से घाल दरे ।
 मनते सिध सार० ॥ ४ ॥

बड़ी जोरदार काली पीली औंधीसे, शीतल से, उष्णकाल से, जलके सूकान से, वर्षाकाल से, धुधाकाल से वनके मध्यमें पर्वत के मस्तक में खड पर खड में विजली के उत्पात से, नाल साल से, तथा देवताओं की सपट से, जो ताप है वो अधिदेव ताप है । सतोगुण इस की खानि हैं । हे प्रभो ! ऐसी कृपा करो कि इस ताप से आपका बाल घाल छूट जाय ।

क्रियमाण मिलान भोगान सचित्तय प्राणि वसान सुधान जका ।
 तपतीन विधान समान दसंचित्तय मान अज्ञान मुंजान धका ॥
 तय जान भवानक हानि करे जिय यौनक पर भगवान सरे ।
 मनते सिध सार० ॥ ५ ॥

जिन जिन स्थानों में प्राणियों का निवास है वहाँ वहाँ ही तीन तापों के रीति अनुसार क्रियमाण प्रारब्ध और सचित इन तीन प्रकारके कर्मोंका डर है । जब अज्ञानी अथवा ज्ञानी दोनों ही इस क्रियमाण कर्म करके धकायमान होते हैं तब जान कहिये दूसरे प्रारब्ध और सचित ये अवस्थाएँ हानि करते हैं । उस समय में जीव का बानक एक भगवानसे ही सरता है अर्थात् भगवान ही उसके काय को सिद्ध करते हैं ।

१ बाधु । २ इस छंद में अधिदेव ताप का वर्णन है । ३ शीतकाल । ४ व्याघ्र । ५ धुधाकाल । ६ वन । ७ गिरि=पर्वत । ८ खड । ९ ज्वालमाला=विद्युत् । १० देवता । ११ इस छंदमें सचित, प्रारब्ध, क्रियमाण इन तीन कर्मोंका वर्णन है । १२ मित्रानभोगान=प्रारब्ध । १३ दहसत=खोफ । १४ ज्ञानी चतुर । १५ देव ।

उर चाय उपाय भमाय सवै घट लाय अंथाय जलाय दिया ।
 मुरझाय दिखाय जैमाय तवै शठ ताय वंधाय धकाय लिया ॥
 कइ खाय सिराय पचाय जटागनि दाय सहाय सचाय मरै ।
 मनतें सिधसार० ॥ ६ ॥

जब प्राणी के हृदय में चाह उत्पन्न होती है तब वह उसको बड़ा भटकाती है, जिस चाहरूप अगाध दावाधि ने संपूर्ण प्राणियों के घट जला दिए ।

चाह से जला हुवा पुरुष पहिले तो कुछ कर सकता नहीं । जब अंतकाल आता है तब वह मूर्ख यमदूतों को देखते ही मुरझाय जाता है, उसको वे यम-दूत बांध धक्का देकर यमलोक ले जाते हैं ।

उस यमलोकमें कितनेक प्राणियों को तो खाकर खुटादेते हैं, और कितनोंको जठराग्नि करके पचाय जाते हैं, और कोई दयाकर उन जीवों की सहायता करता है तो वे जीव सवाये मारे जाते हैं ।

(ऐसी दशमें श्री गुरुदेवजी सहायक हैं)

गुरु ज्ञान घटा बरसान सदा संग दूरि अंदा उन प्राणि मिटे ।
 उर आन मिटा हरि ध्यान सदा रंग नूर तदा तनु जाँन हटे ॥
 उर जाल सेवाल मिटायके उज्ज्वल प्रेम सुखाल अंसिद्ध झरै ।
 मनतें सिधसार० ॥ ७ ॥

जिन्होंने ज्ञान घटा बरसानेवाले श्रीगुरुदेवजी का सतसंग किया उन प्राणियों के दुःख दूरसे ही मिट गये ।

और उस सतसंगति से हृदयमें आन उपासनादि भ्रम मिटकर जिस समय भगवत् ध्यान में निरंतर जिन लोगों के नूर रंगे गये हैं उस समय वे लोग अपने शरीर की सुध बुध भूल गए हैं ।

जिन गुरुमहाराज ने सतसंगद्वारा भ्रमरूप जाल मलीनतारूप सेवाल मिटा-कर जिनके हृदय उज्ज्वल कर दिए हैं उन हृदयों में से प्रेमरूप सुंदर झरणे निरंतर झरने लग गये हैं ।

दयाल कृपाल संभाल करे जिव जाल कराल विचाल रखे ।
 जठराल उधाल खुधाल मरे नैम नाभिनमौल रसाल भखे ॥

१ चाह । २ अथाह । ३ यमदूत । ४ व्यतीत करना । ५ दया । ६ दुःख ।
 ७ ज्ञान । ८ अमिट=निरंतर । ९ जठर=उदर । १० ऊंधा । ११ खुधा । १२ छिद्र,
 आकाश । १३ नाडी । १४ रस ।

जन्ममाल धुराल दुधाल सिरज्जत कालमे क्यों न गँवाल करे !
मनते सिधसार० ॥ ८ ॥

वही दयालु राममहाराज कृपालु होकर जीवों की सहाय करते हैं और वही काल की कण्ठ शाल में स जीवों को बचाते हैं ।

जब यह जीव माता के उदर में ऊँचे मुख होकर भूखे मरता है तब जिस नामि के छिद्र है उस नामि के नाबीद्वारा यह जीव रस को भक्षण करता है ।

देखो उन कृपालु की दयालुता जन्म के पहिले ही दूध उत्पन्न करा दिया तो वह राम महाराज इस काल में क्यों नहि रक्षा करेंगे ?

छप्पय ।

काल दुकाल सँभाल करे करुणा के सागर ।
छाल असराल निकाल दरे हरि जासु कृपा कर ॥
जन्मजन्म अनन्त कहा परणत दुख जीवस ।
अथ स्वायम् महाराज राज तारण धिन पीवस ॥
राम इह हरिजन घटा यह यपा अर कीजिये ।
छालनाल शरणागती अपनो करिके लीजिये ॥ १ ॥

काल में दुकाल में वही सँभाल करते हैं जो करुणा के सागर हैं । हरि जिस पर कृपा करते हैं वह प्राणी तीनों ही समय में निरन्तर काल की शालसे टल जाता है । जन्म से मरणपर्यन्त जीवों को अनन्त दुख हाते हैं उन दुखों का कहा तक वृणन करें ? सो हे राम महाराज ! इस जीव के अब आपही सहायक हैं । राम हा तारनेवाले हैं और राम ही धनी हैं धन्य हैं । हे इन्द्ररूपी राम महाराज ! हरिजनरूपी घटा से अब वह वषा कराओ कि जिससे करुणाका सागर पूरा हो जाय । छालनाल आपका शरणागती है इस शरणागत का आप अपनाय लें ।

(एक बेर कहो कृपालु तुलसीदास मेध)

॥ इति श्रीग्रन्थकरुणासागरसंपूर्णम् ॥

इत्युपपम्

१ जन्म । २ प्रथम । ३ दुग्ध । ४ समय । ५ राजा । ६ दुष्कृत । ७ असराल = निरन्तर । ८ जन्म से लेकर जिंदगी भर । ९ गुरु प्रकरण मध्यमाख परची कवित्वरत्न आनन्द आदि समस्तबाणी श्रद्धा मेधा २५००० ।

पद राग काफ़ी ।

कोण हरै म्हासी पीर रे इक करुणासागर विन । टेर ।
 या कलि में मेरो नहिं कोई, कोण बंधावै धीर है कोई वीर हमारो ॥ १ ॥
 वृषदी की टेर सुणी जव श्रवणा, अनंत बधायो चीर रे हरि लाज रखी जव ॥ २ ॥
 जल डूबत गजराज उवाच्यो, कर गहि काव्यो तीर रे ताच्यो कीर कुटुंब सब ॥ ३ ॥
 भारत में भीषम प्रण राख्यो, धाया होय वजीररे अपणेजन के हित ॥ ४ ॥
 बलि औ विभीषण भया चिरजिव कियो सिंघर शरीर रे रघुवीर विरदपति ॥ ५ ॥
 जन पूरण पर फिर कृपा कीजै, समरथ श्याम सधीर रे प्रभु लाज हमारी ॥ ६ ॥

पद

कोण सुणै गोहार रे करुणासागर विन । टेर ।
 अगुरी दई श्रवण विच काई, वीन्हो विरद विसार रे गजराज तारकर ॥ १ ॥
 विगैर कहा गुसाईं मेरो, लाजैगो विरद तिहार रे हंसै जग दे कर तारी ॥ २ ॥
 जन पूरण की सुनो वीनती, मार भावै चाहै ताररे पन्थो शरणागत तेरी ॥ ३ ॥

अथ श्रीपूरणदासजी महाराज के छुटकर शब्द ।

साखी ।

नमस्कार हरिगुरु जना, आदि अंत मध ताम ।
 तिनहीको नित करत है, पूरणदास प्रणाम ॥ १ ॥

छंद चित्तइलोल ।

संप्रदा मुख चार माहीं, प्रकट रामानन्द ।
 कठिण कलियुग माहिं कीनी, भक्ति पूरणचंद ।
 तो सुखकंदजी सुखकंद, सब सुखसारको सुखकंद ॥ १ ॥
 नमो अनंतानन्द स्वामी, अनंत हरिगुन गाय ।
 संत परचै भया सारा, प्रगट परचो ताय ।
 तो गुणरायजी गुणराय, जन जस गावणो गुण राय ॥ २ ॥
 दास कर्मचंद करण कारण, किये कर्म सब दूर ।
 ताप त्रिविधा भेट तनकी, पंच कर चकचूर ।
 तो भरपूरजी भरपूर, भक्ती भावसे भरपूर ॥ ३ ॥
 अवनि दुतियै जन दिवाकर, भरम निशि चकचूर ।
 अखंड जोत उद्योत अविचल, काल तस्कर दूर ।
 तो भलसूरजी भलसूर, मंडमें ऊगिया भलसूर ॥ ४ ॥

दास पूरण मालवी, धिन क्रिये पूरण काम ।
 लान जगदी मेढ शका, लियो मन मिसराम ।
 तो सतनामजी सतनाम, पूरणदास है सतनाम ॥ ५ ॥
 दामोदर कर दमन इन्द्रिय, पच बश करलीन ।
 शील साच सतोष शम दम, दात पदको चीन ।
 तो परवीनजी परवीन, हरिरस भजनमें परवीन ॥ ६ ॥
 दास नारायण नाम नीको, लियो द्विज अतवार ।
 सकल प्रायश्चित्त भये छिनस, कियो पेलेपार ।
 तो बलिहारजी बलिहार, नारायणनामकी बलिहार ॥ ७ ॥
 दास मोहन मोह माया, दइ सकल निवार ।
 ध्याय अपणो धणी निश्चय लियो उरमें वार ।
 तो सिधसारजी सिधसार, सारी दात कर सिधसार ॥ ८ ॥
 ध्यान माधवदास धान्यो, मंडे जाय मैदान ।
 जाकाश ओढण भूमि पोढण दर्शो दिश बखान ।
 तो परवानजी परवान, त्याग वैराग्य परवान ॥ ९ ॥
 क्रिये नख सिख सब सुन्दर, ध्यान सुन्दर धार ।
 घाद निरोध विकार परिहर, दिये इंदरमार ।
 तो चितचारजी चितचार, निरमल कियो मन चितचार ॥ १० ॥
 चरणदास विचार बाणी, राम चरणा चित्त ।
 अल्प सुख ससारको, निजनाम साचो वित्त ।
 तो बड कुत्तजी बडकुत्त, सर्ताचरणकी बडकुत्त ॥ ११ ॥
 नमो जैमलदास स्वामी, बडे धीर यभीर ।
 धार जन अवतार यज्ञी, मेढणा परपीर ।
 तो सुखसीरजी सुखसीर अमृत धारकी सुखसीर ॥ १२ ॥
 दास ज्यू कवीर चकवे, लियो निगुण नाम ।
 कियो निरणय नीरक्षीर, इस ज्यू हरिराम ।
 तो विग्रामजी विग्राम जीरा कारणे विग्राम ॥ १३ ॥
 दास बिहारी विमल्याणी, जासु शिष हरदेव ।
 तासु मोतीराम धिन, रघुनाथ सतगुरु सेव ।
 तो निज मेवजी निजमेव, पायो भक्ति को निजमेव ॥ १४ ॥
 हरिराम शिष धिन रामदासजु वार नहिं कोइ आज ।
 निरण सब निरताय निरणय, करण जीवा काज ।
 तो महाराजजी महाराज भडमें अवतरे महाराज ॥ १५ ॥

तासु गादी आन ब्राजे, प्रगट दूजेद्याल ।
 वोले अनुभव गिरा वाणी, व्यास जेम विशाल ।
 तो किरपालजी किरपाल जीवां ऊपरै किरपाल ॥ १६ ॥
 शरण आयां स्याह कीजै, दरश दीजै द्याल ।
 लाज पूरणदासकी अव, काटिये कर्मजाल ।
 तो रिछपालजी रिछपाल अपने जीवकी रिछपाल ॥ १७ ॥

॥ इति ॥

जन्मलीला ।

(पृष्ठ ३०)

अथ श्रीअर्जुनदासजी महाराज के छुटकर शब्द ।
 साखी ।

श्रीहरि गुरु हरिराम धिन, रामदास मुझ साम ।
 द्यालपुरुष पूरण प्रती, अर्जुन की परणाम ॥ १ ॥

छप्पय ।

प्रथम करों परणाम, रामदासं गुरु स्वामी ।
 दूसर श्री गुरु द्याल, अनंत जीवां हंसनामी ॥
 तीसर श्री गुरुदेव, ब्रह्म पूरण गुरु पूरा ।
 बानी विमल रसाल, भरम कर्म चकचूरा ॥
 संध्या मध्य प्रभात रट, जीव परमपद पाय है ।
 अर्जुनदासजु रावरे, चरण कमल चितलाय है ॥ २ ॥

अथ पूर्वजन्मप्रारंभः ।

दोहा ।

प्रथम राम गुरु वन्दना, पुनि सब सन्त प्रणाम ।
 हुइ प्रसन्न आज्ञा करहु, ग्रन्थ उच्चारण ताम ॥ १ ॥
 मेरे मन उपज्यो हर्ष, टीका करण उचार ।
 पूर्ण बुधि दीजै सरस, तो मै पाऊं पार ॥ २ ॥
 ग्रन्थ समुद्रहि रूप है, महान गुरु सोइ पोत ।
 मम गुरु केवट खेवसी, सहज पार जब होत ॥ ३ ॥

चाँपाई ।

पूरवसे पाताल सिधाया । पछिम घाट हुइ मेरु चढ़ाया ॥
 आकाशा सुख रहा लुभाइ । सुरति शब्द मिल केलि कराई ॥ १ ॥
 मन्छी सात समेंद तजि दीया । ब्रह्म वृक्ष चढ़ि सो रस पीया ॥
 वृक्ष अदृष्ट दृष्टि नहि आई । मूल न डाल न पात न छाई ॥ २ ॥
 मुक्ती फल आगे अद्भुता । चारया तिके अमर अवधूता ॥
 माया के गुण रहे जु लारे । सुरति शब्द गत दशमे द्वारे ॥ ३ ॥
 इग पिंगला सुपुमन मेला । त्रिकुटी सत करे नित केला ।
 ररकार धनि शून्य समानी । पच तीन चत सप्त वरानी ॥ ४ ॥
 महमाया ज्योती प्रवृत्त । सुन आतम इच्छा परसत ॥
 भाव प्रभाव निकेवल हुआ । जोगी जन्म मण से जूआ ॥ ५ ॥
 मिली बूढ़ सायर के माही । लान पूतली गत मिलताही ।
 एव बेहद है मेद न रहिया । अरण ताहि वष किमि कहिया ॥ ६ ॥

दोहा ।

सहँव अविरल उचन सुनि, उर धरि सो त्रिधि कीन्ह ।
 घट बिच औघट प्रफट हुइ, त्य तत्तजि असि चीन्ह ॥ ११ ॥

छन्द पद्वरी ।

हरु दिवस गुफा मध विराजमान । सुर पठइ अप्सरा छलन जान ॥
 तिन हाय भाव अति करे आय । नहि दृष्टि खोल देखी जु ताय ॥ १ ॥
 फिर भेंट धरी बहु सिष्ट चीज । नहि सत वस्तु उन हाय लीज ॥
 इमि अडिग मत्ति देखे दयाल । कर नमस्कार चाली सकाल ॥ २ ॥
 जन भयो ज्ञान केवल प्रकास । पर आप ओर के जन्म तास ॥
 सूझत सब करकी रेख तेम । गुरु पास उचारे वचन एम ॥ ३ ॥
 यहुँ वृथा पथी धुर आय सोइ । यहुँ सदावस्त करि सुफल होइ ॥
 श्रीरामी उचारे सुनो दास । तुम सूझत कैसे सो प्रकास ॥ ४ ॥
 श्रीराम भजन अरु कृपा आप । तो काहे कीजै दुख सन्ताप ॥
 जिन दियो जन्म सो कर संभाल । कण कीडी उजर मणहि आल ॥ ५ ॥
 विध्यास नाहि तिन दुख अपार । सुनि वचन चाल मन समझिधार ॥
 सो प्रसिद्ध भई केदिवस पाइ । गुनरधर पावन करी जाइ ॥ ६ ॥

दोहा ।

सम्बत् अठारहसे प्रसिध, वर्ष तँयाहो माल ।
 भिंगसर यमी प्रयोद्शी, रामत करी निधान ॥ १२ ॥

छन्द पद्वरी ।

पूरण सुत राखे राम धाम । तन व्याधि भई नहिं संग स्वाम ॥
 गुरु सहर बड़ोदे पहुँच जाय । वहाँ द्विज पति पत्नी पद सुनाय ॥ १ ॥
 सो रामकृष्ण के शब्द जानि । आगूँ झड़ उचरे आप वानि ॥
 इक दिवस शिष्य तन कष्ट जान । चिन्ता कर सुमरे परम ग्रान ॥ २ ॥
 जब दंडी दीन्हो दर्श आइ । क्यों सोचत हरिशंकर सुखाइ ॥
 सुनि वचन भयो आनंद अपार । सब शिष्यांप्रति कहि दुख निवार ॥
 तिहि दिवस प्रसिद्धी भई एह । सो हम चरणी जो सुनी तेह ॥
 हम हैं अति बालक बुद्धिहीन । गुरु चरित अमित कुन लहहि चीन ॥

सोरठा ।

विराजे दीनदयाल, गुर्जरधर पावन करन ।
 पाछी सुरति सँभाल, फागण शुदि पूनम सरस ॥ १ ॥

दोहा ।

जो अधिकी ओछी बनी, झड़ कहूँ अक्षर मात ।
 अर्जुनदास गुलाम तब क्षमा करहु तुम तात ॥ १३ ॥

इति पूर्वजन्म ।

विरक्तशाखाप्रवर्तक—

श्रीपरसरामजीमहाराजका गुरुशिष्यसंवाद ।

साखी ।

नितप्रति गुरु वंदन करूँ, पूरण ब्रह्म प्रणंत ।
 परसराम कर वंदना, आदि अन्त मध संत ॥ १ ॥
 परसराम शुध आतमा, प्रश्न करै गुरु पास ।
 भवसागर क्योंकर तिरुँ, किम छूटै जमनास ॥ १ ॥
 जन्म मरण वेदन कटै, चौरासी मिटजाय ।
 शिख पूछै सतगुरु प्रती, सो मम भेद बताय ॥ २ ॥
 नर्क कुंड में ना पड़ै, जीतूँ मन जोधार ।
 ऐसो मुझ उपदेश दौ, सतगुरु कर उपकार ॥ ३ ॥
 मुक्ति होय इन जीवकी, अवगुण मिटै अनंत ।
 ऐसी युक्ति बताइयै, सतगुरु संत महंत ॥ ४ ॥

श्रीगुरुवचन ।

परसराम सतगुरु कहै, सुन शिष ज्ञान विचार ।
 कारज चाहै जीवको तो, कहूँ सो हिरदै धार ॥ ५ ॥
 प्रथम शब्द सुन साधुका, वेद पुराण विचार ।
 सतसगति नित कीजियै, कुलकी काण निवार ॥ ६ ॥
 पूरा सतगुरु परखकर, ताकी शरण सभाय ।
 राम नाम उर इष्ट धर, आनइष्ट छिट काय ॥ ७ ॥
 रामराम मुख जापजप, करसे कर कछु धर्म ।
 उत्तम करतय आदरो, छोडो नीचा धर्म ॥ ८ ॥
 झूठ कपट निन्दा तजो, काम क्रोध अहकार ।
 दुरमति बुझिधा परहरो, तुष्णा तामस दार ॥ ९ ॥
 राग दोष तज मछरता, कलह रूखपना त्याग ।
 सकलप विकलप भेट कर, साचे मारग लग ॥ १० ॥
 भान बडाई इरपा, तजो दभ पापड ।
 सुमरो सिरजन हारको, जासी माझी भड ॥ ११ ॥
 बुनिया घडिया देवता, परहर ताकी पूज ।
 अणघड देव अराधियै, भेटो मनकी दूज ॥ १२ ॥
 प्रतिपालण पोषण भरण, सयमें करे प्रकास ।
 निशिदिन ताको ध्याइयै, ज्यों टूटै जम घास ॥ १३ ॥
 राम नाम नौका फरो, सतगुरु खेवण हार ।
 विरदभाण कर भावको, ये भव जल हुय पार ॥ १४ ॥
 राम राम अम्मर जही, सतगुरु वेद्य सुजाण ।
 जन्म मरण वेदन कटै, पावै पद निवाण ॥ १५ ॥
 अगसे चित उलटाय कर, हरि चरणा लपटाय ।
 लख चौरासी जोनिमें, जन्म न धारो जाय ॥ १६ ॥
 मनसा घाचा कमना, रटो रैण दिन राम ।
 नरक कुडमें ना परो, पावो मुक्ति मुकाम ॥ १७ ॥
 पाँचो इन्दी पालकर, पच विषय रस भेट ।
 या विधि मनशैं जीतकर, पिय परमानन्द भेट ॥ १८ ॥

इति ।

अथ परमहंसावतंस श्रीसेवगरामजी महाराजका

झूलणा छंद ।

नर जाग जगावत सत्तगुरु, अब सोय रह्या कैसे सद्विद्ये रे ।
 शठ आग गृहै माहिं काहिं जरै, चल साधु संगति में रजिये रे ॥
 नित लागरहो निजनाम सेती, संग विषयनका तजिये रे ।
 तेरा भाग बडा भगवंत भजो, कहै सेवगराम समद्विद्ये रे ॥ १ ॥
 नर नाम निजकण छांड दिया, कण कूकस कुट्यां न पायगा रे ।
 फिर सांझी सेव विसार धरी, सेवै संवल हाथ क्या आयगा रे ॥
 मुख अमी अचम्मन नाहिं किया, नीर ओसहु नाहिं अघायगा रे ।
 कहै सेवगराम समझ विना, नर बार बीतां पछितायगा रे ॥ २ ॥
 इन देखि दया मोहि आचतु है, नर मार मुगद्वर खायगा रे ।
 यहां किये है कर्म न शंक मानी, वहां जाव कछु नहिं आयगा रे ॥
 हक पूछै हिसाब हजूर माहीं, जब लेखा दिया नहिं जायगा रे ।
 कहै सेवगराम साह चोरभया, नरजम्मके हाथ विकायगा रे ॥ ३ ॥
 देखो देखो दुनियनकी दोस्ति रे, मोहि देख अचंभा हि आतहै रे ।
 कछु सार असार विचार नहीं, शठ छांड अमी विष खातहै रे ॥
 नित भोगत भोग अघाय नहीं, फिर वेहि दिना वेहि रातहै रे ।
 सुन सेवगराम हैरान भया, कछु बात कही नहीं जातहै रे ॥ ४ ॥
 धिक धिक्क जनों हंदा जीविया है, सोइ आतम राम विसार सोया ।
 मन तन्न इन्द्री सुख चित्त दिया, दिन रैन विषय रस माहिं भोया ॥
 शठ मोह माया माहिं राखि रह्या, देख नैन नारी हंदै रूप मोह्या ।
 कहै सेवगराम समझ विना, नरतन्न रतन्न अमोल खोया ॥ ५ ॥
 कोऊ जात न पांति कुटुम्ब तेरा, घर धाम धन्या रहि जायगा रे ।
 अब मात न तात न आत संगी, सब सुत्त दारा न्यारा थायगा रे ॥
 जब जम्म जोरावर आय घेरै, तब आडा कोऊ नहिं आयगा रे ।
 कहै सेवगराम संभार सांई, पेटो जीव अकेलाहि जायगा रे ॥ ६ ॥
 यहु रूप जोवन्न तो थिर नहीं, दिन चारकि बार वजायगा रे ।
 इक रंग पतंग सुरंग बन्या सब, देखतही उड जायगा रे ॥
 टण ओसका नीर केतीक वेरां, उदै सूर हुवा शुष जायगा रे ।
 कहै सेवगराम संभार सांई, पसे जिंद तेरी चल जायगा रे ॥ ७ ॥
 नर करणा होय सो करलेवो, यहु मोसर जाण न दीजिये रे ।
 तुम सांझ करत्त सवेर करौ, दिन माहिं करौ जाम कीजिये रे ॥
 महुर्त्त करत घदीजु करौ, पलछिन्न माहीं करलीजिये रे ।
 कहै सेवग कीयां न ढील वनै, पतो सास उसासहि छीजिये रे ॥ ८ ॥

इति द्वितीय परिच्छेदः ।

अथ तृतीय परिच्छेद ।

रामरक्षा ।

ॐ अखंड मडलाकार व्याप्त येन चराचरम् ।

तत्पद दर्शित येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ १ ॥

आत्मगुरुभ्यो नमः । परमात्मगुरुभ्यो नमः । आदि गुरुदेव अस्त
गुरुदेव शरण गुरुदेव के चरणारविन्द पादुका नमोस्तु ते हरन्ते सयें
व्याधि सकल तन्ताप दुःख दारिद्र्य रोगपीडा कलह कल्पना सकल
विघ्न पड खडा ।

ॐ तस्मै श्रीरामरक्षा ररकारवाणी । अनुमय तत्त्व निभय मुक्ति
जाणी ॥ बाधिया मूल देखिया स्थूल गगन गर्जत धुनि ध्यान लागा ।
रहित तीन गुणा शील सन्तोषमें रामरक्षा हिये आकार जागा ॥ पच
तत्त्व पचीस प्रकृति पच भूतात्मा पचवाई । समदृष्टि साम घर आणि
प्राण अपान उदान ध्यान समान अनहद शब्द मिल राख पाई ॥
उलटिया सूर ग्रह डक डेढ़न किया पोखिया चन्द्र तहाँ कला सारी ।
अग्नि प्रगट भई जरा बेदन डरी जायिनी शाकिनी घेर मारी ॥ घरणि
अमर विषे पथ यहता रहै प्रेत अरु भूत दानव सहारा । बज्रकी
फोटबी बज्रना दडले बज्रका पडले काल मारा ॥ गरुड पक्षी उल्टा
नाग नागिनी जस्या विष की लहर निद्रा न झाँपे । पिंड निमल भया
पीजरै पकृत सूखा रोग मथवाय पीढा न व्यापे ॥ रोम रोम ररकार
उचरन्त याणी अयण सुणत कर चित्त भेडा । शिलमिलै ज्योति हण
कार हणकत रहै नाद बिदे मिल्या रग रेडा ॥ शून्यके नेहरे शून्य
सजता रहै आपसे आप मिल आप लागा । शरीरसे शरीर मिल
शरीर निरखत रहै जीवसे शीव मिल ग्रह जागा ॥ नैनसे नैन मिल
नैन निरखत रहै मुखसे मुख मिल बोल बोला । अचणसे अचण मिल
नाद सजता रहै शब्दसे शब्द मिल शब्द पोला ॥ निरतसे निरत
मिल निरत लागी रहै सुरतसे सुरत मिल सुरत आवे ॥ ध्यान से
मिल दम सजता रहै रगसे रग मिल रग गावे । ध्यानसे ध्यान
नले ध्यान मिल आप बनपा जपे सोई दम जाय सो लाय
। चित्तसे चित्त मिल चित्त चेतन भया उमनी इष्टिर्म भाव
॥ द्वारसे द्वार मिल शीशसे शीश मिल देह विदेह मिल मेद

मेदा । तिहुँ लोकमें घोर अंधार सब मिट गया श्वेत ही स्फटिकमणि
 हीर वेधा ॥ उघरे नैन उचरे वैन चन्द्र अरु सूर राखिया थीर थीरं ।
 हनुमत हुँकार मचती रहै यों सोखिया पकड़ वावन वीरं ॥ गंग उलटी
 चले भानु पश्चिम मिलै निकसिया विम्ब प्रकाश कीया । आत्म माहिं
 दीदार देखत रहै यों अजर अमर हुइ आप जीया ॥ खुणखणी रुण-
 झणी नादरी नाद नादं सुपुम्ना का छकै खाद खादं । चाचरी भूचरी
 खेचरी अगोचरी उन्मनी पंच मुद्रा साधन्ते सिद्धा योगेन्द्रा डरे डूंगरे
 जले थले घाटे अवघटे तसै श्रीरामरक्षा करै वाघ वाघणीका क्रोध
 जाला । चौंसठ योगिनी का काटकुटका करों खेचरा भूचरा क्षेत्रपाला ॥
 नवग्रह दूत पाखंड टारों, दुहाई फिरती रहै अलख निरंजन निरा-
 कार की, चक्र फिरिबो करै वाटमें घाटमें पंथमे घोरमें शोरमे देश
 विदेशमें राज का तेजमें सांकड़ पैसतों तसै श्रीरामरक्षा करै । जागतां
 सोचतां खेलतां मालतां सन्तका शीश पर हस्त फिरिबो करै ॥ चक्र
 लीयाँ रहै आप रक्षा करै गुप्तका जाप ले गुप्त सेवा । चन्द अरु सूर
 घर एक रहिबो करै जीतिया संग्राम देवाधि देवा ॥ फेर सूधा क्रिया
 उलट अमृत पिया विष का जहर सब दूर भागा । कमल दल कमल
 दल ज्योति ज्वाला जगै भँवर गुंजार आकाश लागा ॥ रमत सार
 सोखन्त रुधिर बिन्दु रोम नाड़ी गरजन्त गगन वाजन्त वेणु शंख शब्द
 ध्वनि त्रिकुटि दास रामानन्द ब्रह्म चीन्हन्ते ब्रह्मज्ञानी । रामरक्षा
 भणन्ते उद्धरे प्राणी ॥ लागिया विचार पारंगता पन्थे घोरे राजद्वारे
 संग्रामे संकटे सन्ध्याकाले मध्याह्ने श्रीरामरक्षा उचरन्ते उद्धरे प्राणी
 पापे न लिपन्ते पुण्ये न हारन्ते जे जपन्ते जनार्दनं मोक्ष मुक्ति फल
 पावन्ते ॥

रेखता ।

नाम परतापते कालकंटक टलै नाम परतापते कर्म खोया ।
 नाम परताप डर डाकणी ना डसै नाम परताप मन मैल धोया ॥
 नाम परतापते ताप त्रिविधा गई नाम परताप ग्रह नाहिं त्रासै ।
 नाम परताप भव भर्म भागा सबै नाम परताप दुख दूर नासै ॥
 नाम परताप जल जोगिनी चंडिका भैरवा भूत छल छिद्र नाहीं ।
 नाम परतापते विघ्न व्यापे नहीं नाम परताप तिहुँ लोक माही ॥
 नाम परताप की सन्त महिमा करै विष्णु शिव शेष ब्रह्मादि सारा ।
 दास हरिराम कहै नाम परतापते जगत जल माहिं जन होइ पारा ॥ १ ॥
 नाम निज औपधी भव व्यथा कर्मको शब्द का ध्यान इमान धारै ।
 साधु सधीर को विघ्न व्यापे नहीं प्रेमका पच दे कुपच गारै ॥

पायु गभीर विष रोग हरजाहिंगे पित्त परिवार सब दूर पीरा ।
 कफ तनु काम अरु आस आधो फिरे डहरया नहरया ज्वर जाहिं तीरा ॥
 ताव तनु तप बेलज पका-तरो पख गड गूय मोहान फोड़ी ।
 दास हरिराम कहै बात ऐसी बणी तत्त के नाम वेदज्ञ तोडी ॥ २ ॥

राम रिछक नयपड सस द्वीपों डर नाहीं ।
 राम रिछक तिहुँलोक भवन चवदं सुर्य थाहीं ॥
 राम रिछक तनुमाहि गेह क्या घनर्म वारै ।
 राम रिछक तिहुँलोक रहो कुण जन को मारे ॥
 राम रिछक छल छिद्र भूत डाकण डर नाहीं ।
 राम रिछक परताप तेजरो तनुते जाही ॥
 राम रिछक ते काल दूरि सेती कर जोडै ।
 राम रिछक तिहुँलोक पवन कुण पूछ मोडै ॥
 राम रिछक नयदेय साधुका रक्षक होइ ।
 राम रिछक तेतास साधुको यदै सोई ॥
 राम रिछक ऋषि सिद्धि साधु के खरणां वासी ।
 राम रिछक परताप पडे नहि जम फी पासी ॥
 राम रिछक शुद्धव सन सो शीश निराजै ।
 राम रिछक परताप अगम जई याजा याजै ॥
 राम रिछक परतापसे सन्त सुमरि निभय मया ।
 रामदास रट राम को अगम देश आघा गया ॥ १ ॥
 राम रिछक परताप काल दूरे ही भागै ।
 राम रिछक परताप जम्मका दूत न लागै ॥
 राम रिछक परताप जख जोमण डर नाहीं ।
 राम रिछक परताप सत निर्भय जग माहीं ॥
 राम रिछक परताप मूढ छल छिद्र न लागै ।
 राम रिछक परताप विघ्न दूरे ही भागै ॥
 राम रिछक परताप भैरवा भूत नसारै ।
 राम रिछक परताप वीर बेताल न आवै ॥
 राम रिछक परताप ताव तनु व्यापै नाहीं ।
 राम रिछक परताप रोग दुख दूर नसाहीं ॥
 राम रिछक परताप नवग्रह निकट न आवै ।
 राम रिछक परताप इन्द्र पूजा ले थावै ॥

राम रिछक परताप चोकियाँ चारों जीता ।
 राम रिछक परताप जगतमें भया बदीता ॥
 राम रिछक परताप चढ्या गढ ऊपर जाई ।
 राम रिछक परताप नोवताँ निर्भय वाई ॥
 राम रिछक परतापतें सुन सागर में रमरया ।
 रामा राम प्रतापतें काल विघ्न दूरे गया ॥ २ ॥

राम ररकार तें निजर लागे नहीं अघ मोचन करै अनंत केरा ।
 राम ररकार तें ताप व्यापै नहीं जम्मका दूत तहाँ दे न घेरा ॥
 राम ररकार तें अघ दूरां डरे राम ररकार तें काल थरके ।
 राम ररकार तें डक डाकण डरे राम ररकार तें प्रेत सरके ॥
 जंत्र अरु मंत्र लोह लाठ लागे नहीं राहु अरु केतु शनि रहत दूरा ।
 डर डफर तंतर संचार व्यापे नहीं पनग नव नाथ कहै संत पूरा ॥
 असुरसुरनमि चलै शेष धिन धिन कहै शंभु अरु विष्णु कहै सुजन मेरा ।
 सप्त पाताल उच्छाह उच्छव करै नमो ररकार परताप तेरा ॥
 भजन परताप भय काल सबका सिद्ध्या सुमर ररकारकी शरण आया ।
 जन रामा किया आपसा सहजमें अहो अपार अपार गाया ॥ १ ॥
 शरण गुरुदेव की राम रिछक सदा विघ्न भव काल जंजाल दूरा ।
 स्वर्ग पाताल आकाश मृत्यु लोकमें सहस्र बाल निर्भयसनूरा ॥
 देश परदेश घट घाट बट बाटमें रिछक रमतीत सबमें दयाला ।
 भोर कहा संझ पुल मंझ आनंद कर हरण अनेक अघ मन्न माला ॥
 असुरसुर पक्षि जलजीव चर अचर सब नवग्रह आदि सहायक सदाई ।
 एक सँवला जहाँ अनंत सँवला सदा अदा जम चोट विघ्न न कदाई ॥
 चौदह लोक पर लोक निर्भय रमत राम रमतीत बल निर्भय सादू ।
 जहाँ विचरत तहाँ मगन उद्योत अति रामजन अगम घर अगम तादू ॥
 नाटकी चेटकी जंत्र मंत्रादि सब तंत्रको जोर कोउ नाहिं लागै ।
 डाकीणी साकिणी प्रेत छल छिद्र अनंत राम परताप तें दूर भागै ॥
 राम परताप बल राम सुख संपदा राम अखूट भंडार मेरे ।
 राम आचार विचार किरिया सबै राम पुनि पाठ गरथॉन हेरे ॥
 राम सुझ धणी समर्थ शरणा सबल तात अरु मात कुल वंश सारा ।
 राम पोषण भरण राम प्रतिपाल नित सत्य ही शब्द मेरो आधार ॥
 राम संजीवन प्राण जीवन सदा आस छिनवास रग रोम रिच्छा ।
 दम ता कदम बल एक कारण करण आदिसे अंत लेवै परिच्छा ॥

एक रस एक प्रतिपाल समर्थ घणी घणी सस्तुति परणाम जाहू ।
 गर्भ सभाल कृपातु ऐसी करी काढ़ ततकाल धिन वदि ताहू ॥
 जाठरा अग्निमे मग्न आनन्द करण हरण अनेक दुख वाप वाप ।
 छाजन भोजन अनंत सुख जिण दिया जीया ता शरण मुर भेट ताप ॥
 नमस्ते नमस्ते अजब सुध रामजी जयति अनूप जन भूप देवा ।
 अगम गति अगम गति अगम आनन्द अति सत्यही शब्द नित करू सेवा ॥
 जाण धिनराय कहा गाय मुख आपणे तरण महाराज तोहि लाज स्वामी ।
 परम परलोक अहिलोक जानत नहीं करण सहाय इण लोक नामी ॥
 अपत कहा सिफ्त कहो कौन मुर उचरण शरण अनेक अनेक तेरे ।
 कोटि अनेक अनेक है यहु गुन्हा करण प्रति पाल माईत मेरे ॥
 अधर धिन सधर मम तात पूरण ग्रह चार पद अर्थ सभाल देता ।
 भक्ति अह मुक्ति वेकुठ रंग रोम रम राम भन राम भज राम कहता ॥
 राम महाराज फी गोद धरणारविन्द तीन ग्रय कालमें सत सारा ।
 जन रामा नमो शरण जाकी सदा राम रिच्छा सोइ विरद धारा ॥ २ ॥

रक्षावत्तीसी ।

दोहा ।

राम इष्ट आधार बल, राम आस विश्वास ।
 राम भरोसे रम रह्या, निभय रामदास ॥ १ ॥
 राम तेज नटपट्ट म, मुबै न हरिया दास ।
 धरण कमल छाडे नहीं, रहै सस गुरु पास ॥ २ ॥
 कहा दोखी सोखी कहा, कहा देश परदेस ।
 रामदासके रामजी, रक्षक सदा हमेश ॥ ३ ॥
 शस्त्र अस्त्र छल छिद्र जो, मूठ मज रिपु घात ।
 ब्याल सिंह दामनिदमक, रक्षा राम सु नाथ ॥ ४ ॥
 भयन गवन परचत वनी, अवघट घाट अनेक ।
 रामदासके रामजी, आस पास बल एक ॥ ५ ॥
 कृप खाड ज्वाला अग्नि, निशा चोर भय घाट ।
 रामदासके रामजी, अध धुध मँदवाह ॥ ६ ॥
 रामाय काल पावक प्रलय, शीत उष्ण मुर ताप ।
 राम दासके रामजी, रक्षक आपो आप ॥ ७ ॥

राहु केतु सूरजसुतन, अचनिपुत्र ग्रह घात ।
 विगरी में सखरी करण, तिघरी मेटण तात ॥ ८ ॥
 तात मात हित प्रसनता, रामदासके राम ।
 समर्थ प्रतिपालक सदा, खान पान आराम ॥ ९ ॥
 चिंता दीन दयालुको, मो मन सदा आनंद ।
 जायो सो प्रति पालसी, रामदास गोविंद ॥ १० ॥
 विघ्न विदारण रामजी, आनंद करण अनेक ।
 रामदास मन वच करम, तारण कारण एक ॥ ११ ॥
 दिवस मास जोगिनि दशा, गज अंतर कृत सोहि ।
 नखत जोग बाहण असम, राम इच्छा सुख मोहि ॥ १२ ॥
 लगन दुघड़ियो शुभ अशुभ, राम वार व्रतमान ।
 दिशादूल सन्मुख चन्द्र, कहा सौवण पर ज्ञान ॥ १३ ॥
 ऊठत बैठत जागताँ, सोवत स्वप्नै माहिं ।
 राम धणी प्रेरक सदा, रामदास डर नाहिं ॥ १४ ॥
 मंडप मंड आधार इक, घट विच आतम राम ।
 प्रगट पिंड रक्षा करण, रामदास विश्राम ॥ १५ ॥
 सब व्यापक पूरण कला, नमस्कार भगवंत ।
 राम इच्छा विचरत जहाँ, रामरायके संत ॥ १६ ॥
 दशौदिशा आनंद अगम, चिदानंद भगवान ।
 रामदासके रामजी, चितवन जीवन प्रान ॥ १७ ॥
 स्वर्ग मृत्यु पाताल जो, वा सुर नर अरु नाग ।
 राम रक्षा सर्वज्ञ सुदृढ, रामदास बडभाग ॥ १८ ॥
 आधि व्याधि मेटण सकल, अकल अखंडी देव ।
 रामदास ता आसरे, सुर विरंचि कर सेव ॥ १९ ॥
 सेव देव मूरति धणी, हरि आचार विचार ।
 मंत्र जाप पूजा परम, नित्यनियम गुण सार ॥ २० ॥
 तीरथ व्रत एकादशी, रामदासके राम ।
 राम पंथ संस्थान निज, क्षेत्र धाम परणाम ॥ २१ ॥
 राम धारणा राम मुख, राम हमारे ध्यान ।
 राम संप्रदा वैष्णव, पूरण ब्रह्म ज्ञान ॥ २२ ॥
 तिलक छाप माला मंत्र, नर नारायण भेष ।
 मंदिर शालग्राम यह, पूजा परम विशेष ॥ २३ ॥
 राम बोलाऊ साथ मम, सदा संगि सुखरास ।
 सजन वंधु बेली कुटुंब, राम रत्न धन पास ॥ २४ ॥

राम आसरो राम पख, दूजा बल नहिं कोइ ।
 पावन पतित दयालुजी, ता शरणे सुख होइ ॥ २५ ॥
 शरणागत प्रतिपालना, पावन पतित कितान ।
 रामदास बिन्दास यह, करणी दिश हैरान ॥ २६ ॥
 आधी पोधी रामजी, उद्यम राम रमाय ।
 राम दिशावर देश मम, रामादा सो पाय ॥ २७ ॥
 रामादा आचत सोई, रामादा सो दास ।
 राम भावना प्रसिद्धता, भवेत रामादास ॥ २८ ॥
 ज्ञान भक्ति वैराग्य सिद्धि, क्रिया जोग गुण आद ।
 राम सता आसक्तिता, घाणी मिमल अगाद ॥ २९ ॥
 मस्तक पर गुरु देवजी, हृदै विराजे राम ।
 रामदास दोनू पसा, सबगिनि पूरण काम ॥ ३० ॥
 श्वास श्वास दम दम पिचै, रक्षक राम दयाल ।
 रामा राम उचारताँ, कबे न व्यापै काल ॥ ३१ ॥
 रक्षा उतीसी रामकी, जावत हरि गुरु दास ।
 रामजेही रामदास, आनद अगम बिलास ॥ ३२ ॥

अथ आरती ।

१

ऐसी आरती घट ही म फीजे, राम रसायन निशिदिन पीजे । डेर ।
 घट ही में देवल घट ही म देवा । घट ही में सहज करे मन सेवा ॥ १ ॥
 घट ही में पाच पचीसों पडा । घट ही में जागे जोति अखडा ॥ २ ॥
 घट ही में पाती फूल चढायै । घट ही में आतम देव मनायै ॥ ३ ॥
 घट ही में शख शब्द घन तूरा । घट ही में प्रेम परस निज नूरा ॥ ४ ॥
 घट ही में गाय हरिक दासा । घट ही में पावै पद परकासा ॥ ५ ॥
 जन हरिराम राम घट माही । विन खोज्या कोइ पावै नाहीं ॥ ६ ॥

२

आरती करों गुरु हरिराम देवा । ब्रह्म बिलास अगम घर भेवा । डेर ।
 आप सत ब्रह्म व्यापारी । राम नाम विणजै बहु भारी ॥ १ ॥
 ज्ञान ध्यान अनुभव अनुसंगी । रोम रोम में झालर चागी ॥ २ ॥
 इडा पिंगला सुषुम्ण भोगी । अटल अमर अनुभव पद जागी ॥ ३ ॥
 शील सतोष साध भन भारी । सता समाधि शून्य से यारी ॥ ४ ॥
 आय रामिया शरण तुम्हारी । पल पल ऊपर प्राण अँवारी ॥ ५ ॥

३

ऐसी आरती करूं गुरु देवा । तन मन वचन सहज करि सेवा । टेर ।
 भगटे इसा परम गुरु स्वामी । आदि अंत होते निज नामी ॥ १ ॥
 ज्ञान ध्यान ऐसे गुणधीरा । सहज समाधि सदा सुष सीरा ॥ २ ॥
 सेवग संत शरण जो आवै । ज्युं मलियागर भुवंग मिलावै ॥ ३ ॥
 सतगुरु करम काटि निरवाला । मलियागर मेटै पंग ज्वाला ॥ ४ ॥
 वंदन करै हरिदेव सदाई । सतगुरु चरनकमल चितलाई ॥ ५ ॥

४

निज मनभाव आरती सारी । श्रीगुरुरामदास बलिहारी । टेर ।
 सतगुरु ज्ञान ध्यान की मूरति । सतगुरु समी और नहिं सूरति ॥ १ ॥
 ब्रह्मा विष्णु शिव सतगुरु मोई । अनंत कोटि जन परचे सोई ॥ २ ॥
 दीनदयालु जीवां के तारण । सतगुरु मोक्ष मुक्ति के मारण ॥ ३ ॥
 वारंवार करौं परणामा । परम धाम आनंद विश्रामा ॥ ४ ॥
 अष्ट विधान आरती पोड़स । दालवालके मस्तक मोड़स ॥ ५ ॥

५

आरती करूं गुरुदेव निरंजन । सगुण रूप धरे जिन अंजन । टेर ।
 धर अवतार केता जिव तारे । आयां शरण सबै अघ जारे ॥ १ ॥
 काल जंजाल जरा डर नाहीं । निरमै निजानंदपद माहीं ॥ २ ॥
 जय जय जय जैमलके नंदन । हरिरामा रामा धिन वंदन ॥ ३ ॥
 दालवाल सतगुरु परणामा । पूरणदास लिया विसरामा ॥ ४ ॥

६

ऐसी आरती करो मन ज्ञानी । पलक न विसरो सारंगपानी । टेर ।
 पांच पचीस का करो विचारा । तामें आतम राम पियारा ॥ १ ॥
 प्रेम को तेल सुरत की वाती । ब्रह्म की जोत जगै दिनराती ॥ २ ॥
 आरती गुरु गोविंदजू की करियै । कहै कवीर भव सागर तिरियै ॥ ३ ॥

७

आरती करौं पति देव मुरारी । चंवर दुरै बलिजाउं तुम्हारी । टेक ।
 चहुं दिश आरती चहुं दिश पूजा । चहुं दिश राम मेरे और न दूजा ॥ १ ॥
 आरती कीजै प्रीति लगाई । जन्म जन्म के पातक जाई ॥ २ ॥
 आरती कीजै ऐसैहि तैसे । ध्रुव प्रल्हाद करी शुक जैसे ॥ ३ ॥
 आनंद आरती आतम पूजा । नामदेव भणै मेरे देव न दूजा ॥ ४ ॥

इति आरती ।

ॐ नमः श्रीमदरियान देव्य ।

पूज्यपादाचार्य श्री १०८ श्री हरिरामदासजी महाराज
की परची प्रारम्भः ।

दोहा ।

बन्दि राम गुरुदेव को, परम मेव वरसाय ।

धान्यो यपु निज जगत हित, सो मम सदा सहाय ॥ १ ॥

चौपाई ।

बन्दी आदि पुरुष परमेस । कियो ताहि नरतनु बकसीस ॥

बन्दी परम धर्म गुरुदेव । जिन दीहो निज भक्ति सुमेव ॥ १ ॥

अनैत कोटि बन्दी हरिजनसो । ताते करो शुद्ध मनवनसो ॥

श्रीमुख भगवत कहत अनूप । हरिगुरु सन्त परु ही रूप ॥ २ ॥

दोहा ।

मति उपजावन परम गुरु, उर प्रेरक निज सार ।

नाम सहित परनालिना, वरणा करि निरधार ॥ १ ॥

छन्द मनहर ।

रामानन्द बन्दि दास वन्दन अनन्तानन्द

बन्दी कमबन्द दवाकर मुखबन्दीको ।

पूरण ही मालवी जू वामोदरदास बन्दी

नारायण रु मोहन बन्दी तजि द्वंद्वसो ॥

बन्दी जन माधोदास सुन्दर चरणदास

जैमल हरिराम बन्दि बन्दी ता नन्दको ।

बन्दी हरिदेव मोताराम रघुनाथ बन्दि

बन्दी गुरुदेव गग वारु मम जिन्दको ॥ १ ॥

छन्द इन्दव ।

जैमलदास नमो जगतारण, दास नमो हरिराम दयाल ।

जासु के शिष्य नारायणदासहि, पूज्य विहारिय प्रगाट बाल ॥

ज्ञान प्रकाश उजास भयो उर, बुद्धि लही हरिदेव निशाल ।

तासुके मातियराम नए जन, ताहि रूपा रघुनाथ रूपाल ॥ १ ॥

छन्द भुजगी ।

अइ बोध हीन प्रज्ञा हीन प्राणी । कृपा है सुनाथ दयाल बरानी ॥

कृपा है नरपन सुदास सुमेव । सरे काज सिद्ध करु सन्त सेव ॥ १ ॥

रूपा है जनं रामदासं विहारी । मनू होय आनन्द सन्तं तिहारी ।
 रूपा है हरीदेव देवं तुम्हारी । महा धी प्रकाशं करीजै हमारी ॥ २ ॥
 रूपा है सु मोती जु रामं रूपालं । समर्पों जिको मेद रीझै दयालं ॥
 रूपा है रघूनाथ कीजै निहालं । जनू देव दीजै सुवाणी विशालं ॥ ३ ॥
 रूपा है सु धू प्रह्लादं कवीरं । विराजो हृदै कोटि नन्तं सवीरं ॥
 कहौ ग्रन्थ स्वामी रूपादृष्टि कीजै । गुरु रामगंगा इसो भेव दीजै ॥ ४ ॥

सोरठा ।

लिखी पत्रिका दोइ, धरी जु आगे पाटके ।
 जो तुम आयसु होइ, तो गुण गाऊं रावरो ॥ १ ॥
 जब करि रूपा दयालु, पत्री मनवांछित दई ।
 जानि आपनो बाल, आज्ञा कीन्ही मोहिकों ॥ २ ॥

दोहा ।

शुध है अन्तःकरण जू, मन बुधि चित अहंकार ।
 वरणों सुयश दयालुको, उपजै हर्ष अपार ॥ १ ॥
 वरण न जानत मूढ़ अति, मति जैराम मलीन ।
 उर प्रेरक हुइ कहत है, सतगुरु गंग प्रवीन ॥ २ ॥

चौपाई ।

श्रीहरिराम निरंजन श्यामं । प्रगटे आइ सिंहस्थल ग्रामं ॥
 निर्गुण निजानन्द निरकारं । पूरण ब्रह्म सन्त अवतारं ॥ १ ॥
 हरि अवतार चार परकारं । जानत वेद सन्त संसारं ॥
 जिमि वपु धन्यो कृष्ण रघुनाथं । सुर नर सबजन करण सनाथं ॥ २ ॥
 अज विनती इल भार उतारण । मेटण अधरम असुर संहारण ॥
 इसि अज्ञान हरण अंधारं । प्रगट भए गुरुदाल मुरारं ॥ ३ ॥
 अनुभव कला आदि अवतारं । जा प्रताप वरणूं विस्तारं ॥
 परची सहित कथा करि प्रीते । प्रापत ज्ञान विज्ञान अद्वैते ॥ ४ ॥
 प्रथम भक्ति ऐसी जन धारी । नाम महातम ग्रन्थ विचारी ॥
 सुमरण कीन्हो श्वास उश्वासं । जब उर माहीं लह्यो प्रकासं ॥ ५ ॥
 तब सबही तें भए उदासी । जानी जगज्जाल जम पासी ॥
 यह निश्चय मनमाहिं विचारा । गुरु विन होइ न भव तें पारा ॥ ६ ॥

दोहा ।

पूछत फिरत सु जननते, ब्रह्मज्ञान कहु भाप ।
 महापुरुष जन मिलनकी, अति अ

छन्द मनहर ।

एकसमें गाम रामसर पधारत भय
 जहाँ मिले हरिके सनेही पद गाए हैं ।
 सुनिके शब्द आप कह्यो वे पुरुष कहाँ
 जब यह जन स्वामी जैमल बताए हैं ॥
 सो तो विराजमान दुलचासर गाम माहिं
 मदिमा की बेर बेर बहुत सराए हैं ।
 भारत तेँ तयै सग हैके उदराम ही के,
 ऐसे ही सुनत धाय जेज न लगाए हैं ॥ १ ॥

कुडलिया ।

स्वामी जैमल धिन सदन जहाँ पहुँचे जाइ ।
 पुर दुलचासर भूमिका सप्तपुरी सम ताइ ॥
 सप्त पुरी सम ताइ पुरी परसत फल एका ।
 हरि गुरु सस्त मिलत होहिं जिग पैड अनेका ॥
 श्रीमुखसे भगवत माहात्म्य कह्यो भागवत गाइ ।
 स्वामी जैमल धिन सदन जहाँ पहुँचे जाइ ॥ १ ॥

दोहा ।

वे पुनि पच प्रवक्षिणा, अष्ट भग परणाम ।
 स्वामी जैमलदासके परसे पद हरिराम ॥ १ ॥

कुडलिया ।

गोरक्ष के पद भलहरि पारस के पद नेम ।
 परसे जैमलदास पद शिप हरिराम सु एम ॥
 शिप हरिराम सु एम प्रेम अरु नेम प्रकाशय ।
 भान ध्यान वैराग्य आइ मिलिप सच आशय ॥
 भक्ति मुक्ति तत भावना जोग जुधि उन जेम ।
 गोरक्षके पद भलहरि पारस के पद नेम ॥ १ ॥

दोहा ।

याँ पदपकज परस करि, हस्त जोर करि जास ।
 मन तन की सब चारता, प्रश्न करी गुरु पास ॥ १ ॥

छप्पय ।

धन्य धन्य मम भाग आज अनुराग दरस्त ।
 धन्य धन्य मम भाग मिले वैराग्य पुरुस्त ॥

धन्य धन्य मम भाग प्रेम अरु क्षेम प्रकासं ।
 धन्य धन्य मम भाग जाग भय भर्म विनासं ॥
 धन्य आज मम जन्म धिन तातैं तुम दर्शन भयो ।
 जा काज सकल पूछत फिरत सो मनवांछित फल लयो ॥ १ ॥

छन्द नाराच ।

करे अभ्यास श्वास मूँदि जोग जासु धारणा ।
 धरे उपास बहुत ही विलास ब्रह्म कारणा ॥
 निजं निवास ना लह्यो कृपा सु अव्य कीजिये ।
 गुरु अगाध ज्ञान ध्यान भक्तिज्ञान दीजिये ॥ जिय भक्ति० ॥ १ ॥
 फिरे सु तीर्थ कर्त काज देश देश मज्झिये ।
 सुधाम ठाम ठाम के सनान व्रत्त सज्झिये ॥
 सही स भेद पै विना नही स राम रीझिये ।
 गुरु अगाध० ॥ २ ॥
 करी जु सेव पूज देवकी जु सो अराधना ।
 कछु जपेव नाम तेव भेव भिन्न साधना ॥
 अवे तुह्यार संग भो विचारि विद लीजिये ।
 गुरु अगाध० ॥ ३ ॥
 जंगम शेख सेवरे न भेवरे सु नाम के ।
 रंगे वरे रजोग के संगे वरे न श्याम के ॥
 असार जान पै तजे न कोइ काज सीजिये ।
 गुरु अगाध० ॥ ४ ॥
 लगाय छार वष्पुके वधाय भार जट्टिये ।
 अपार संग देखिये विकार कान फट्टिये ॥
 निराजुकार नाम के आकार में अलूझिये ।
 गुरु अगाध० ॥ ५ ॥
 जती जु जैन व्यास फेर हेर सब्व ही लहे ।
 भए उदास पेखिके परं प्रकाश ना कहे ॥
 सन्यास कान फूँक पै कहूं न मन्न धीजिये ।
 गुरु अगाध० ॥ ६ ॥
 पढ़े कुरान काजियं भुलान भर्म होइये ।
 मुलों मसीत मान ॥ ७ ॥
 नकल २
 गुरु

चदन्ति पाठ बोधका सु सोवका सिधान्तकू ।
 लियो निहारि के सवे भगत्त मेख पथकू ॥
 मिले अलेख मित मोहि आज प्रेम भीजिये ।
 गुरु अगाध० ॥ ८ ॥

दोहा ।

जोगी पटदरशण सुमग, लिप निगम यच सोध ।
 अहो देव स्वामी अगम, कहो सुगम निज बोध ॥ १ ॥

छन्द भुजगी ।

अहो देव स्वामी कहो बोध आदू । मिले कोटि अनेक जे धाम साधू ॥
 अहो देव स्वामी चिदानन्द रूप । चहुँ वेद को सार भाखो अनूप ॥१॥
 अहो देव स्वामी तुम्ह भेद सारो । बतायो अवे ग्रह भोको उधारो ॥
 अहो देव स्वामी मिलायो सु सौंइ । बुहो जातइ म भव सिन्धु मोई ॥२॥
 अहो देव स्वामी पर ज्योति भास । बहो कूरि दोष लहो लग दास ॥
 अहो देव स्वामी अभैदान आपो । दशा दोष पाप तिहुताप कापो ॥३॥
 अहो देव स्वामी निराकार नाथ । अमात अतात अभ्रात अजात ॥
 अहो देव स्वामी अरात अप्रात । अनाथ सनाथ सदात अपात ॥४॥
 अहो देव स्वामी अजोनी अमोनी । नमोनी तमोनी रजोनी सतोनी ॥
 अहो देव स्वामी नही जार पारे । सघन रहे पूर व्याप्यैक सारे ॥५॥
 अहो देव स्वामी त्रमेव अरूप । जन हेत धान्यो तत्व पच स्वरूप ॥
 अहो देव स्वामी सदा धीतराग । गिन्यो तीन लोक मुख विष्ट काग ॥६॥
 अहो देव स्वामी न ग्रहादि मेव । अहो देव स्वामी सु देवाधिदेव ॥
 अहो देव स्वामी दयाके सु कन्द । मया सोइ कीजे हरो मोह कन्द ॥७॥
 अहो देव स्वामी गहो हाथ नाथ । परा भेद दीजे सु फीजे सनाथ ॥
 अहो देव स्वामी कृपाभीन दीप । प्रकाशो हृदै सोइ मेरे समीप ॥८॥
 अहो देव स्वामी भव भीति टारो । अहो देव स्वामी पर प्रीति पारो ॥
 अहो देव स्वामी महा मोक्ष रासी । अहो देव स्वामी परेश प्रकासी ॥९॥
 अहो देव स्वामी परानन्द इश । करो सोइ साचो सु शब्द वरीश ॥
 अहो देव स्वामी शरण्य रखावो । परा प्रेम भक्ती सु नेम वधावो ॥१०॥
 अहो देव स्वामी कहो रीति ऐसी । कही जो अनत सु सन्त हि तैसी ॥
 अहो देव स्वामी अपो आदि सेवा । जिके सेव भोको मिले ग्रह देवा ॥११॥

दोहा ।

अहो देव अस्तुति अगम, इम कहु मेव न जान ।
 गायत तव यश वेद सब, निच मुग्य श्रीभगवान ॥ १ ॥

योग युक्ति तत वृवनि को, अवनि सन्त धरि छाप ।
त्रिभुवनपति तव कारणे, भवन पधारे आप ॥ २ ॥

सोरठा ।

यह तन मन अरदास, सतगुरु श्रवणों सँभलिये ।
करो ज्ञान परकास, ध्यान धारणा सब कहो ॥ १ ॥

दोहा ।

यह अस्तुति सुनि सिखन की, भए सु गुरु मस्ताक ।
उदित करण ततज्ञान उर, वदत भए पुनि वाक ॥ १ ॥
यही महातम जानियो, धन्य धन्य हरिदास ।
तुमरो भाव सु देखकरि, उपज्यो बहुत हुलास ॥ २ ॥

छन्द पद्वरी ।

आए सु वस्तु गाहक आज । सब ज्ञान ध्यान लायक समाज ॥
धन धन्य शिष्य सुरता प्रवीन । करि भिन्न भिन्न यह प्रश्न कीन ॥ १ ॥
अब कहाँ सकल मैं ज्ञान अंग । जो परापरी भाख्यो प्रसंग ॥
तुम पूछ्यो आदि सु पन्थ मोहि । है आदि पन्थ हरिनाम सोहि ॥ २ ॥
गह रामनाम की परम ओट । जिहि पन्थ मिले जन अनंत कोट ॥
तुम प्रश्न करी शिष्य कहाँ तोय । है सार वेदको ब्रह्म सोय ॥ ३ ॥
दश चार भवन व्यापक नूर । आत्मा सु एक उद्धार मूर ॥
गुरुधर्म मिलै भगवान आप । भगजाय भर्म भय दोष ताप ॥ ४ ॥
तुम अभयदान माँग्यो सु दास । सो अभयदान शिवमंत्र जास ॥
तुम मोह मिटण पूछ्यो विधान । मिटि है स मोह अद्वैतज्ञान ॥ ५ ॥
जाच्यो सु शिष्य तुम परा ज्ञान । वह पराज्ञान विज्ञान जान ॥
गुण तीन प्रकृति पाँचों पचीस । मिल एक सदन परब्रह्म ईस ॥ ६ ॥
परकाश ज्योति जहँ तेजपुंज । मिल जीव शीव दलसहस्र कंज ॥
वो भवन मिल्यो भव भीति नाहिं । रह सदा एकरस ब्रह्म माहिं ॥ ७ ॥
तैं सत्यशब्द पूछ्यो सु ईस । मैं कहाँ मान सत सत सहीस ॥
रघुनाथ सेतु बाँधत सुवार । सो सत्यशब्द तिरिगे पहार ॥ ८ ॥

दोहा ।

नाम महात्म्य जु मैं कह्यो, परचा सहित प्रकास ।
प्रेमा परा सु भक्ति के, अब लक्षण सुनु दास ॥ १ ॥
परा सु प्रेमा भक्ति पुनि, तुम माँगी शिष्य सोइ ।
हैं आनन्दहि करण प, कहाँ सँभल मैं तोइ ॥ २ ॥

प्रेमाभक्ति विधान ।

राम प्रथम सरसत रसन, दरसत चिन्ह हु पेन ।
तरसत हरिके मिलन को, जल वरसत नित नैन ॥ ३ ॥

छन्द त्रिभगी ।

जल घरपे नैना अटपट वैना गदगद शब्द होत जही ।
नहिं नीद सु रैना भूख लगैना द्वै लवलीना राम मही ॥
कबहु चक कबहु शक चित्त द्रवत प्रेम सदा ।
ऐसे उन्मत्त फहै स जच शक जनत नहिं फदा ॥

कुडलिया ।

प्रेमा भकी मं कही शिष्य यही समझाय ।
जा उर धारन करतही कमं सत्रे कटि जाय ॥
कमं सवे कटि जाय भमं भय भूत बिलावै ।
जन्म मरण तजि जीय पीय पद प्रह्न समाधै ॥
यही चिह्न दर्शाय सही जन जीव मुकी ।
शिष्य तोहि समझाय कही म प्रेमा भकी ॥ १ ॥

पराभक्ति विधान ।

दोहा ।

पराभक्ति अब फिर कहों, सुनिये चित्त लगाइ ।
स्वामी सेवक एक हुइ, रहै भिन्न दरदाइ ॥ १ ॥

छन्द त्रिभगी ।

यह परा जु भकी धम सु रकी कहा सु उकी सजुकी ।
अति आतम उकी पति अनुरकी निवट निरकी यो मुकी ॥
मिल एकमेव स्वामि विसेरु सेवक लेक सुख लहै ।
पय औ हवि मेक सो दरसेक रस पीवेक भिन्न रहै ॥ १ ॥

दोहा ।

परा जु प्रेमा भक्ति की, कही सु मं तुम प्रीति ।
सो प्राप्ती अब होनकी, गहुरि कहों सख रीति ॥ १ ॥

छन्द पदरी ।

है प्रथम सोधि गुरु उतम जास । शब्दादि ग्रन्थ ग्रन्थहि प्रकास ॥
जु गुरु ते लहत ज्ञान । सुखें ताहि परब्रह्म जान ॥ १ ॥
आरति करुणा चरण । कपट होइ तन मन अधीन ॥
सहित कर उमय । आसीन और ॥ २ ॥

श्रीहरि० परची

जा विद्ध कहै गुरु जुक्ति जोग । ता विद्ध करै हरि हित सँयोग ॥
सम आसण बैठै सहज मारि । वाँवैपर द्वै क्षण हस्त धारि ॥ ३ ॥
गुरु मंत्र जबै दै तत्वसार । धारै शिप निश्चय सार धार ॥
तब रटै श्वास उच्छ्वासराम । रट मिलै परमपद ब्रह्म धाम ॥ ४ ॥

दोहा ।

कन्यो प्रश्न अस्तूति करि, जो जो तुम जिज्ञासु ।
मैं बात सु हरि मिलन की, सो सो कही जु तासु ॥ १ ॥
ऐसे गुरु के वचन सुनि, उरके खुले कपाट ।
ज्यों दिनकर के तेजतें, गयो तिमिर सब फाट ॥ २ ॥

शिष्य वचन ।

चौपाई ।

दया करो गुरुदेव दयालं । मोकों करो तुम्हारो वालं ॥
दीजै परम प्रसादी देवं । तन मन करुं तुम्हारी सेवं ॥ १ ॥

छन्द त्रिभंगी ।

शिवमंत्र सु मेवं परं परेवं दीजै एवं परसादं ।
तुम कह्यो जनेवं बहुत तरेवं यही सिरेवं है आदं ॥
लो विरद सु मेवं शरण तमेवं शिष्य करेवं गुरुदेवं ।
जब राम रमेवं अन्तर मेवं अमर अमेवं उरदेवं ॥ १ ॥

दोहा ।

गुरुके गुण उत्तम कहे, सो गुरु मिले जु आप ।
जुक्ति सहित अव दीजिये, रामनाम को जाप ॥ १ ॥

छन्द त्रिभंगी ।

दीजै अव जापं मेटि सँतापं राम अमापं उर प्रगटे ।
सहुरु परतापं सत्य सु थापं आपं छापं पाप हटे ॥
राखो निज नेराचरणा केरा जग उरझेरा•हरलीजै ।
मेरी यह टेरा वेरंवेरा चेरा तेरा करलीजै ॥ १ ॥

दोहा ।

देत भय निज दासकों, दीक्षा जैमलदास ।
परिक्षित जैसी शुक परम, ऐसी सुनि अरदास ॥ १ ॥

छन्द त्रिभंगी ।

ऐसी अरदासा सुनी जु दासा आन उपासा हरत भय ।
अत्यार्नद रासा परम उजासा राम प्रकासा करत भय ॥

श्रीरामखेदधमप्रकाश-

दे निरमै वासा ब्रह्म बिलासा आसा पासा दूरि किए ।
उर तिमर जु नासा तेज सु भासा सहस्र प्रभासा सूर किए ॥ १ ॥

सोरठा ।

नव पट चार सुतत्र, सुमिरत शेष महेशसो ।
रामनाम निज मन, बह गुरु कह्यो जु शिपन पैं ॥ १ ॥

छप्पय ।

परपरा को धर्म गुरु उर परम गुनायो ।
दे करमे परसाद राम निज मथ सुनायो ॥
नासा निरतर ब सुरति आन घर घर हुयाते ।
जोग जुक्ति की यात कही सब परम रूपाते ॥
उर भयो जयहि मंगल परम कर्म अर्म सब कप्पिया ।
हरिरामदास को परमगुरु यह उपदेश जु अप्पिया ॥ १ ॥

दोहा ।

जो गिरिजा प्रति शिष्य कह्यो, मन सजीवन जास ।
बह उपदेश जु अप्पियो, श्रीगुरु जैमलदास ॥ १ ॥

छन्द त्रिभगी ।

भापे उपदेश चित्त गहेम तन मन पेस करताम ।
सब भेटि अँदेस काम कलेस राम रटेस हरिराम ॥
गुरु युक्ति कहेस या विधि लेस परम परेस प्रेम पिय ।
रसना सुमरेस पीयूषेस कठ प्रवेस शब्द किय ॥ १ ॥

दोहा ।

कठ निवासहि करत जु, परम प्रकाशय प्रेम ।
जय ब्यालु उर जानियो, यह जग स्वप्ने जेम ॥ १ ॥

छन्द त्रिभगी ।

जग स्वप्नो जान्यो सुमिरन ठान्यो हिरदे आन्यो अति हेत ।
गुरु यच सँत मान्यो मन परचान्यो पीव पिछान्यो निज नेत ॥
उपन्यो घेराग खामि सुवाग अतर माग लिब लाग ।
मैह परजाग जग अनुराग भूषण नाग सम लाग ॥ १ ॥

दोहा ।

अबर गिनै सु अग्नि सम भवन भाल सम लाग ।
यह वैराग्य सु उरन मध प्रगटै पूरन भाग ॥ १ ॥
कमज्या पूरव जन्मकी, निश्चय परम निधान ।
सहय जैमल महरते, प्रापति भई सु आन ॥ २ ॥

प्रापत भए सु परम पुनि, सबविधि ज्ञान विज्ञान ।
 राम रूप हरिराम को, सद्गुरु मिले सुज्ञान ॥ ३ ॥
 सद्गुरु निरख सु हरप करि, परख धर्म प्रस्तूति ।
 आप कृतारथ जानि शिष, करत भए अस्तूति ॥ ४ ॥
 नमो नमस्ते सत्तगुरु, आतम करण उधार ।
 यह परमारथ काज पर, अवनि धरे अवतार ॥ ५ ॥

छन्द त्रिभंगी ।

तो आए तनु धरिके जीव उधरिके तुम ईश्वरके अवतारं ।
 निश्चय मैं परिके गुन उर धरिके हाथ पकरिके भवतारं ॥
 सोइ सुमरिके पार उतरिके द्वै अक्षरके वरदेवं ।
 दीन्हे शिर हस्तं जय जय जस्तं नमो नमस्तं गुरुदेवं जी० ॥ १ ॥

दोहा ।

नमो नमस्ते सत्तगुरु, चारंवार प्रणाम ।
 शम दम साधन गम सहित, मम सुमराए नाम ॥ १ ॥

छन्द त्रिभंगी ।

तो राम सुमराए भर्म गमाए जुक्ति बताए ततजोगं ।
 प्रियतम परसाए सुख सरसाए सर्व नसाए दुखसोगं ॥
 मैं चित में चाए जैसे पाए निज दरसाए पुरदेवं ।
 दीन्हे शिर हस्तं ॥ २ ॥

दोहा ।

नमो नमस्ते सत्तगुरु, निजानन्द निरकार ।
 नृगुण रखाए नाम निज, तृगुण नखाए भार ॥ २ ॥

छन्द त्रिभंगी ।

तो तृगुण नखाए कर्म हकाए एक लखाए अंत्रसई ।
 निजनाम सिखाए राम पकाए अलक छकाए प्रेममई ॥
 परब्रह्म दरसाए परंपराए परे बताए मुर देवं ।
 दीन्हे शिर हस्तं ॥ ३ ॥

दोहा ।

नमो नमस्ते सत्तगुरु, करण सकल सिध काज ।
 स्वामी जैमलदासजी, जीवां तिरण जहाज ॥ ३ ॥

छन्द त्रिभंगी ।

तो जीव जहाजं दीन निवाजं राम सदाजं थिरराजं ।
 शोभा शिर ताजं परम पराजं ज्ञान समाजं महाराजं ॥

कर जोर सदाए शीश नमाए लागू पाए नरदेव ।
दीन्हे शिर हस्त० ॥ ८ ॥

दोहा ।

नमो नमस्ते सत्तगुरु, महिमा लहाँ न पार ।
त्रिभुवन सुख मैं नाँ चहाँ, रहौं चरन चित धार ॥ ८ ॥

सोरठा ।

आदि मध्य अवसान, हुइ प्रसन्न गुरु दीजिये ।
यह माँगू वरदान, सेव निरन्तर रावरी ॥ १ ॥
बहुत किए उपकार, तार लिए भव सिन्धुते ।
रामनाम ततसार, बोहित सम मम बगसियो ॥ २ ॥

दोहा ।

यह विनती निज सिखन की, सुनीं श्रवन गुरुदेव ।
करि अनुकम्पा कहत मे, सफल सफल तुम सेव ॥ १ ॥

श्रीगुरुवचन ।

कुंडलिया ।

धन्य धन्य शिष धर्म यह, कह्यो निगम लछ जेम ।
दरस्यो मम तव उरन मध, परा परम जन प्रेम ॥
परा परम जन प्रेम नेम नित क्षेम निवासा ।
बहुत बढ़ै परताप मान सत वचन सुदासा ॥
निज हरिजन दिनकर धरणि, गुप्त रहै सो केम ।
धन्य धन्य शिष धर्म यह, कह्यो निगम लछ जेम ॥ १ ॥
यह निज कृपासु वचन सुनि, प्रेम परम परकास ।
जाइपरे गुरुचरनमें, अति करुणा कर दास ॥
अति करुणा कर दास, द्रवति चित रोम हुलासं ।
चले जुगल दग नीर, सीर सुखरास विलासं ॥
गद गद होइ शरीर सब, शब्द न निकसे जास ।
कहत भए कछु वेर ते, मम तव चरन निवास ॥ २ ॥

शिष्यवचन ।

सोरठा ।

तुमरे शरण निवास, पायो जैमलदासजी ।
हमरे और न आस, स्वामी पदपंकज विना ॥ १ ॥

दोहा ।

जेहि विधि हमने प्रश्न की, तेहि विधि कही सुदेव ।
और सन्देह जु सब दह्यो, चहुरि कह्यो इक मेव ॥ १ ॥

चौपाई ।

प्रथमहि भक्ति सगुण तुम साधी । सो सब तजी कयन परसादी ॥
निगुण भक्ति लही प्रभु कैसे । सो गुरु कह्यो रूपाकरि जैसे ॥ १ ॥

दोहा ।

शभू शब्द तु हम सुन्यो, पथी रूप मिलाप ।
भिन्न भिन्न गुरुदेव अब, कह्यो रूपा करि आप ॥ १ ॥

श्रीगुरुवचन ।

चौपाई ।

सुनु शिष कह्यो यथारथ सहते । हम जब साँवतसरमें रहते ॥
वहाँ एक पन्थी जन आप । नाम गृहस्थ मोहि बतलाए ॥ १ ॥
जैतराम जल पायो बाल । ऐसे बचन कहे ततकाल ॥
जब ही जल तुम्बी भर लायो । तब मैं महापुरुष को पायो ॥ २ ॥
महापुरुष बोले पुनि वैना । मोरन पन्थ बताय सु दैना ॥
जब मैं पन्थ बतायन काजा । बख्यो सायमें ले महाराजा ॥ ३ ॥
बलत चलत पन्थनमें सगा । पृच्छ्यो एक मोहि परसगा ॥
साधन कहा फरो तुम भाई । सो मोहि अरधू कह्यो सुनाई ॥ ४ ॥
जब मैं कही ताहि विधिसारी । पाठ करू अरु सेव मुरारी ॥
सेवा पूज करी अवतोंई । निश्चय भयो कि तेरे नाँई ॥ ५ ॥
तब मैं पूछत भयो सु मेव । निश्चय मोहि बतावो देव ॥
महापुरुष सामीप्य बुलायो । राम राम निज मत्र सुनायो ॥ ६ ॥
ब्रह्म मिलन की युक्ति बताई । सेवा पूजा सकल छुडाई ॥
घारी सुरति मूँदकर नैना । लागी राम भजन लिख लैना ॥ ७ ॥
देखे नैन खोलकर जाना । महापुरुष मे अन्तरधाना ॥
तब मैं भयो उदासी मनमें । चहुँ दिशि देखन लागो वनमें ॥ ८ ॥
पूरन कृत्य छुडायो मेरो । सशय उपजि गयो बहुतेरो ॥
बिसय भयो सदन चलि आयो । चित चित्त अन जल नहि पायो ॥ ९ ॥
रजनी वीति गई जब अरधी । आप देव देखि मोहि दरदी ॥
तब ही भई पिण्ड नम्र बानी । जब मैं पूछत भयो निदानी ॥ १० ॥

तुम हो कौन कहाँते आए । मोकों यह उपदेश बताए ॥
 महापुरुष बोले नभ बानी । विरह व्यथा तेरी मैं जानी ॥ ११ ॥
 मैं हौं निजानन्द अविनाशी । पूरण ब्रह्म सकल परकाशी ॥
 तुम कारन आयो तब पुरमें । जन जाने तू जन सतगुरु मैं ॥ १२ ॥
 तो तारन आयो हे चेरा । तू है आदि अन्त जन मेरा ॥
 मान मान सतवचन हमारा । राम राम रटले ततसारा ॥ १३ ॥
 संशय डिगमिग छोड़ दहीजे । ज्ञान ध्यान में चित्त गहीजे ॥
 ऐसे वचन कहे गोविन्द । दूरि किए मेरे दुख झंझ ॥ १४ ॥
 रामनाम जपियो सुख रासं । जब मेरे आयो विश्वासं ॥
 शिष्य तै पूछयो राम प्रतापं । इहि विधि मेरे भयो मिलापं ॥ १५ ॥

दोहा ।

श्रीसतगुरु के वचन सुनि, उपज्यो अधिक सनेह ।
 ज्ञान गुष्ट सुख मिलन को, मानत भए जु एह ॥ १ ॥

शिष्यवचन ।

चौपाई ।

हितू नहि सतगुरु तुम जैसा । दीना ज्ञान गुंझ मोहि पेसा ॥
 मैं तै मेरी सकल नसाई । भक्ति भाव उर मुक्ति बसाई ॥ १ ॥
 प्रथम भए दाता हरि एहा । जिनते पाई मानुष देहा ॥
 अरु तुम दाता भया सु देवं । नाम महातम दीया मेवं ॥ २ ॥
 तुम समान सज्जन नहिं कोई । दीन्हा मुहि अक्षर गुरु दोई ॥
 रामनाम तत परम परेसं । परम इष्ट शिव सुमिरत शेसं ॥ ३ ॥
 यह उपकार कहाँ लागि गाऊं । ग्रियतम तोहि पार नहि पाऊं ॥
 हितू नही तुमसा गुरु मेरे । तन मन वारों ऊपर तेरे ॥ ४ ॥
 तुम गुरु अरथ कहे निज एकं । तन मन अनरथ मिटे अनेकं ॥
 जो गुरु तुम मिलते मुहि नाहीं । आती नहीं सुरति उर माहीं ॥ ५ ॥
 वेत्ता सतगुरु सम नहि होते । तो जग संग वृथा तन खोते ॥
 परम भाग हम दर्शन पायो । होइ प्रसन्न प्रसंग सुनायो ॥ ६ ॥
 भाखी परम सुधारस बानी । सतगुरु सबविधि ज्ञान सु जानी ॥
 धन्य गुरु मोहि दीन्ही धीरा । मेटी आन अज्ञान अधीरा ॥ ७ ॥
 तुम गुरु भूमि भानु सम भासे । मम उरके समस्त तम नासे ॥
 गुन अगमागम लहौ न पारा । विनय करौं मैं वारंवारा ॥ ८ ॥

सोरठा ।

विनती चारचार, करौ स्वामि कर जोरिखे ।
 सहस्र रूप तुम्हार, उर में रहो जु अहनिशि ॥ १ ॥
 रामनाम निजनाम, निगुण ब्रह्म सनेह जो ।
 सहस्र समये स्वाम, ध्यान ध्यान करिके कृपा ॥ २ ॥
 राम मिलन निच रेख, कहँ न राखी आप मो ।
 पुनि वैराग्य विवेक, दियो परम गुरुदेवजी ॥ ३ ॥
 प्रेमा भक्ति पुनीत, सब विधि कही जु युक्ति से ।
 परपरा की प्रीत, सो दरसाई मध्य उर ॥ ४ ॥
 दीनबन्धु गुरुदेव चारचार यह बीनवां ।
 चरणकमल की सेवा, करि अनुकम्पा बगसियै ॥ ५ ॥

कुडलिया ।

स्याही सप्त समुद्रकी पत्र जु धतू होइ ।
 कलम करत सुरतदनकी लिखत शारदा सोइ ॥
 लिखत शारदा सोइ पार गुन तोहि न पावत ।
 आप बुद्धि परमान गुरु महिमा शिष गायत ॥
 स्वामी लीजै मान अरज एसी गुदराइ ।
 पत्र जु धतू होइ समद की करौ जु स्वाइ ॥ १ ॥

सोरठा ।

विनती ऐसी रीति, शिष्य करी गुरुदेवसे ।
 देखत मे अद्वैत, एक ब्रह्म घट घट महीं ॥ १ ॥

दोहा ।

ब्रह्मज्ञानको यों भयो, शिष सतगुरु सवाद ।
 जिन जिन को जब जय मिल्यो, आगम आदि अनाद ॥ १ ॥

धनाक्षरी ।

भयो जू भगवान सुरज्येष्ठ सम्पाद आदि,
 वाशिष्ठ रामचन्द्र अर्जुन कृष्णादि कर ।
 सप्तऋषि वाल्मीकि आदि ले सम्पाद भयो,
 नारद वसुदेव भयो जैसे ब्रह्माद कर ॥
 ध्रुव से लगाइ चिन्मयेतु मुनि आदि लेके,
 सोइ यह चरती जो रीति जन फापर ।
 सदाय सज गयो ब्रह्म प्राप्ति जु भइ आन,
 गुरु शिष मिलाय भयो ज्ञान सम्पाद कर ॥ १ ॥

दोहा ।

उद्धव दसा जु श्याम जिमि, अन्तर मिले सु आप ।
गुरु जैमल हरिराम के, भयो सु एम मिलाप ॥ १ ॥

छन्द मनहर ।

निमि के मिलाप भयो जैसे नव योगिन को ।
जैसे सनकादि भयो हंस जगदीश को ॥
यदु के मिलाप भयो दत्तात्रेय मुनी को जु ।
शुक के मिलाप भयो जनक महीश को ॥
परिक्षित के ज्यों शुकदेव को मिलाप भयो ।
रघु के मिलाप भयो जडभरतीश को ॥
ऐसे हरिराम के मिलाप भयो जैमल को ।
ज्ञान वैराग्य भक्ति नाम वक्शीश को ॥ १ ॥

दोहा ।

शिष्य गुरुदेव मिलाप की, कहाँ कहाँ लगि रीति ।
गुनत चढ़ै रँग ज्ञान को, सुनत बढ़ै अति प्रीति ॥ १ ॥

छप्पय धुरमेल ।

हरिराम सदन आवत भए करि मिलाप गुरुदेव से ।
करि वन्दन करजोर शीश धरिके गुरु आयसु ।
हुइ सनाथ उर हर्ष नाथ पद अंग निवायसु ॥
करिके बहु अस्तूति धर्म निज उर मध धार ।
शिष्य सतगुरु के पास विनय करि वारंवारं ॥
इमि जुक्ति सहित सब विधि करी भक्तियुक्त तत भेवसे ।
हरिरामदास आवत भए करि मिलाप गुरुदेवसे ॥ १ ॥

सोरठा ।

दया करी गुरुदेव, जव उर ऐसी विधि वनी ।
भक्ति प्रेमरस भेव, जुक्ति सहित सबही कही ॥ १ ॥

सवैया ।

पुनि कर नमस्कार परदक्षिण आप सु संग सहित उदराम ।
श्रीगुरु तैं अति श्रेष्ठ भावसे अष्ट अंग करिके परणाम ॥
ले आयसु हरिराम परम जन आवत भए सींहथल गाम ।
जव मन युगल जु कियो मनोरथ त्यागि चलां सबही धन धाम ॥ १ ॥

नर देहन को दाव बन्यो है वृषा करी है सतगुरु स्वाम ।
 धकाधूम बहुता गृह महीं हुइ एक त भजौ हरिनाम ॥
 राम दम करि धरि ध्यान सुरति सजि विचरौ भूमध है निष्काम ।
 गुरुभ्राता ते पन्थ बहत जू ऐसे वचन कहे हरिराम ॥ २ ॥

दोहा ।

जगो सु प्रेम प्रकाश उर, मन से भण एकन्त ।
 राम रटत हरिरामजी, सदन पधारे स त ॥ १ ॥

छन्द त्रिभगी ।

सदन पधारे सब सुरा खारे लागे प्यारे हरिनाम ।
 ह्वेयेकौ न्यारे कुल व्ययहारे वचन उचारे हरिराम ॥
 नहि काम हमारे धधा खारे मोहि मुरारे उर प्यार ।
 गुरु राह घतारे मो दरखारे जग उर झारे दिनच्यार ॥ १ ॥

दोहा ।

चार दिनन को जगत सुख, अति दुख को गभीर ।
 तासैं तजि धन जाय सा, हरि भजसा सुख तीर ॥ १ ॥

चौपाई ।

जय दोले तनके सयधी । यार्हीं रहो आप निरयधी ॥
 हम भी दशण करौ तुम्हारो । ताते है कस्याण हमारो ॥ १ ॥
 करि अस्तूति कहत मे सारा । अब विनवै पुनि धारारा ॥
 धधा तुमको नाहि भुलावा । अब करइ नहि ध्यान चुलावा ॥ २ ॥
 सय रहसा तुम आज्ञा मोंई । घग्ही माहिं भनो तुम सोंई ॥
 पेसी सुनी वीनती स्वामी । रहे विराज सु अन्तर जामी ॥ ३ ॥

दोहा ।

नहीं काम कहु जगत से, राम भजन से प्रीति ।
 यो जन पढे मवन म, सकल मोह गण जीति ॥ १ ॥

चौपाई ।

कारण नहीं कहु घर बनको । चित्त परु हरि से हरिजनको ॥
 ताको मैं दृष्टा त बतावा । परम्परा इतिहास सुनावा ॥ १ ॥

सवैया ।

पुनि यहु भूष रह्यण अलरक राजा चित्रकेतु ही जान ।
 जत मत सहित भोग से निवृत जनक विदेह रहे अस्थान ॥

एक हि ज्ञान ध्यान दृढ कारण निश्चय एक हि ज्ञान निधान ।
यों हरिराम भवन के माहीं पीउ लियो उर माहिं पिछान ॥ १ ॥

दोहा ।

लव लागी हरि नाम से, अह निशि एक अखंड ।
कवहू तूटत नाहिं जू, जैसे कंठ शिखंड ॥ १ ॥

सवैया ।

एक एकन्तं भवन सु आश्रम जामें आप विराजे जाय ।
आठों हि याम अखंडित आतम रामहि राम रहे लिब लाय ॥
ज्ञान उद्योत ज्योति दिल दीपक ज्यों ज्यों दिन दिन होत सवाय ।
परम सु क्षेम उपज अंग अंग सु प्रेम अछक छक नेम सदाय ॥ १ ॥

दोहा ।

धिन हरिराम सु धर्म तुम, परम अछक छक प्रेम ।
जावत गुरु संगति करन, सप्त कोश नितनेम ॥ १ ॥

चौपाई ।

सप्त कोश नितही चलि जावै । परम पुनीत दर्श गुरु पावै ॥
रजनी रजनी वहां रहावै । आशा मांगि यहाँ पुनि आवै ॥ १ ॥
श्री सहृद सैं प्रीति जु पेसी । मानों मीन उदक पुनि जैसी ॥
संतनकी गति संतहि जानै । हृदके जीव सु कहा चखानै ॥ २ ॥

सोरठा ।

नही जानै हृदजीव, वेहदकी गति वर्णिवो ।
गुरु शिप जीव रु सीव, एक मेक उर मिल रहे ॥ १ ॥

छन्द मोतीदाम ।

मिले हरिराम सु वेहद माहिं, कभी भिन आदि सु अंत जु नाहिं ।
परब्रह्म देव वसे जन वास, लगी धुनि एक अखंड अकास ॥
अमी रस नीर चले जव एम, चिदानन्दरूप छके रस प्रेम ।
जगी सुनसागर ब्रह्म सुज्योत, इसो गुरुदेव प्रताप उद्योत ॥ १ ॥

दोहा ।

शम दम सहित जु राम रदि, पहुँचे शून्य सु गेह ।
संत स्वामि गुरुदेव से, दिन दिन अधिक सनेह ॥ १ ॥

छन्द गीतक ।

गजराज रेव तटादते, अनङ्गादि पक्षि अकाशते ।

सफरादि नीर निधादिते, पुडरीक भानु प्रकाशते ।
 जिमि बाल मातु निवासते, जिमि पक्षि नेह तरोवर ।
 जिमि भृग पुष्प सुवासते, इमि इस मानसरोवर ।
 पुनि चंद ज्या जु कमोदिनी, घन मोर चातक स्वातिज्यो ।
 गुन प्रेम नारद गानसा, सिध प्रीति जेम सिधा तसो ।
 प्रह्लाद ज्यो हरि नामसो, अनुराग सन्त एकान्तसो ।
 हरिराम श्याम सु कारणे, गुरुप्रीति हे यहि भोतसो ॥ १ ॥

दोहा ।

तरु विच गुरुदेवसे यहि मिधि लगी सुप्रीत ।
 दृष्टि एक कर देखियो, सज घट ब्रह्म अहैत ॥ १ ॥

सवैया ।

आतम दृष्टि एक करि देखे सृष्टि से नहि याद विधाद ।
 सबके जनक सकलके ईश्वर हए राम निजनाम अनाद ॥
 जनहरिराम सहज नाम राम दम अष्ट याम से लेत प्रसाद ।
 सहज समाधि अडिग मन आसन गोनिष्ठनके दहत उपाद ॥ १ ॥
 भक्ती पिना अल्प सुख भासै अन्तर ज्ञान प्रभासै दीप ।
 ऐसे गृहते रहत उदासी जैसे पथी नीर समीप ॥
 जिमि भरविन्द लिपे नहि अम्यु जु जेसे समुदर माहीं सीप ।
 जग परपच समान सु जान्यो जनहरिराम पच रस जीप ॥ २ ॥

दोहा ।

सय रह सयम बालसुमीकि सम, जत मत हनुमत जेम ।
 सी जनक विदेह सम, नन्द सुनन्द सु नेम ॥ १ ॥

छन्द गीतक ।

नहीं यो ज पदा सप्त पुरी गुरुधाम सो पंच गोंइयाँ ।
 हरिपुर सो दिखे ब्रह्म नीर प्रोत सु दाइयाँ ॥
 दिग सासता पद जासता जनसे लिये ।
 नहीं कह्यो यो समाज सो पट मास साधत या भये ॥ २ ॥
 दोहा ।

पट मास ।

श्रीगुरुवचन ।

चौपाई ।

ज्यों निशि विसिनी जलमें रहै । वसै कलानिधि नभसो वहै ॥
 यों तेरा मन मेरे पासा । दूरि नहीं कवहू निजदासा ॥ १ ॥
 अब इतनी खेचल मत करो । ध्यान सदा वाहीं तुम धरो ॥
 निश्चय कहौ सुनो यह वाचा । सत्य सत्य मानो शिप साचा ॥ २ ॥
 स्वामी वचन शीश परधान्यो । दश दिन को नितनेम विचान्यो ॥
 जब बोले स्वामी पुनि सोही । एक मासतें परसो मोही ॥ ३ ॥
 तातें तुमको श्रम नहि होवै । अरु निरताय शब्दसे जोवै ॥
 तुमतो रहो नहीं शिप छाना । ब्रह्मदेश में मिलिया प्राणा ॥ ४ ॥
 जगमें बहुत जीव चेतावो । घर बैठा हरिके गुन गावो ॥
 स्वामी ऐसी आज्ञा कीन्ही । जब सेवक मस्तक धरलीन्ही ॥ ५ ॥

छन्द मनहर ।

जैसी धरी आज्ञा रामानन्द की कवीर शिर
 जैसी धरी रज्जवहू दादूजू दयालकी ।
 जैसी धरी आज्ञा शिर खेम पुनि रज्जवकी
 धरी चतुरदास आज्ञा सन्तदास खालकी ॥
 धरी आज्ञा नामदेव द्विजके स्वरूप जूकी
 धरी आज्ञा उद्धवहू नन्दजूके बालकी ।
 अनुभव प्रकाशी सन्त हाथ जोर ऐसे शिर
 - धरी आज्ञा हरिराम जैमल कृपालकी ॥ १ ॥

चन्द्रायणा ।

धरि आज्ञा शिर सन्त सु आया भवन कों ।
 सथिर किया असमान सहज मन पथन कों ।
 आसन किया अटल सुरति सुन सौंइया ।
 परिहां उर सद्गुरु को रूप रामगुन गाइया ॥ १ ॥

दोहा ।

ऐसे जन हरिरामजू, बैठे होय निशंक ।
 एक समान सु देखिया, राजा अरु पुनि रंक ॥ १ ॥

सवैया ।

धिन हरिराम स्वामि से हिलसिल निशिदिन भजै एक निजनाम ।
 पुनि अर्धांगी चाँपा माता सीता माता जैसे राम ॥

जिमि सावित्री चतुरानन के पावती जैसे रिपुकाम ।
पतिवृत सहित करै इमि सेवा जिमि पापाके सीता वाम ॥ १ ॥
चौपाई ।

करि शिलोच्छवृत्ति अनलावे । स्वामी को परसाद करावै ॥
स्वामी करै ध्यान दिन रैन । ना काहुसे बोलै वैन ॥ १ ॥
उमन रहै अष्टही पहरो । सुरति लगी साँई सुन सहरो ॥
घा छवि मोप वरणि न जाइ । जानै हरिजन पहुँता ताई ॥ २ ॥
याँ करताँ धीता के चरसो । स्वामी अधिक धीति हरिहरसो ॥

अथ परचा ।

एक समय सुर अक्षर ध्याई । स्वामी निरुट सु बैठी आई ॥ ३ ॥
स्वामी नयन फोल करि देखी । भाषाके मन छल करिदेखी ॥
यायें उलटि थाप से मारी । स्वामी ध्यान लगाइ तारी ॥ ४ ॥
पेसी बात सुनी नरनारी । सबके भाष उपज्यो भारी ॥
आह्वा लैन बहुत शिष आष । स्वामीजीसे वचन सुनाष ॥ ५ ॥
तुमहो जत मत शुक्दे जैसा । पुनि यद्रीनारायण तैसा ॥
अरु कपीर जैसा जन पूरा । शील सधीर अडिग मति सूर ॥ ६ ॥
पेहे कहत भये जिहासी । दो आषा स्वामी सुखरासी ॥
स्वामी बात साच फरमाई । जामें कमर न राखी काई ॥ ७ ॥
आह्वा बहुत कठिन है भाई । जो ऐसी सो शीश फटाई ॥
अब साधा सो चरणा लग्या । काचा सुनत दूरि उर भागा ॥ ८ ॥
पूरय सहकार तिन देही । सो जन हूवा रामनेही ॥
पुनि स्वामीसे शीश निवाप । अपने अपने नयन सिधाप ॥ ९ ॥
पुनि स्वामी सुमिरण में लागे । आतमराम सदा अनुरागे ॥
घाँपा रभा राम गुण गावै । स्वामीजीको बहुत सरावै ॥ १० ॥
हरिके जन प्रगटे घरमाई । सबहीकु सुमरावै साँई ॥
पेसे वचन कहै अथग्या । स्वामी धिन धिन आप प्रतिग्या ॥ ११ ॥

दोहा ।

गुरु मिलियों पहली भया, एक पुत्र जन सार ।
पाँछे गिरिजानन्द जिमि, ख्या जत मत धार ॥ १ ॥

सवैया ।

पुनि स्वामी के भक्ति अकुरी नन्द विहारी जैसा नन्द ।
गुन सपन्न बुद्धिके नायक हरिके गायक रूप अनन्द ॥
नोम विहारीदास जासुको खड परगुके जैसे स्कन्द ।
जिमि कबीरके तनय कमाल अग्नीवर के नामि नरिन्द ॥ २ ॥

चौपाई ।

सो भी भजन करै दिल साचे । रामनाम से निशि दिन राचे ।
दास विहारी परम सु दीपै । सो स्वामी के रहै समीपै ॥ १ ॥

सवैया ।

पुनि स्वामीके जिज्ञासुनकी ताहि हकीकत कहूं तमाम ।
प्रथम सु दास नारायण लक्ष्मण लीन्हो जन्म जैतपुर गाम ॥
द्वारावती चले युग परसन रमते रमते सहज मुकाम ।
लाँबै ग्राम पाँवनी नाडी जहाँ आय कीनो विश्राम ॥ १ ॥
तहाँ एक पूरा जन तापै सेवादास जिन्होंका नाम ।
सो वे कहत भये जन सेती याहीं भजन करो तुम राम ॥
ल्यो प्रसाद उनको तुम वालों किसनदासके जावो ठाम ।
जब सो ग्राम टोंकलै ध्याये हरिजन नाहीं पाये धाम ॥ २ ॥
तब सो पुरी सिंहथल आये सहज स्वभाव बहत सो पन्थ ।
स्वामी को दर्शन जब पायो उपज्यो दिलमें हर्ष अनन्त ॥
आपसमाहिं युगल बतलाये सेवादास जिसा यह सन्त ।
लो आयसु अब विलंब न करनी ताते दरशै परम सु तन्त ॥ ३ ॥

चौपाई ।

आज्ञा लैन उभय जन धारी । पुनि स्वामी से अरज गुजारी ॥
स्वामी बोले परम सुजाना । छोडो सबही आन अज्ञाना ॥ १ ॥
एक राम कूं सुमरो भाई । मन निश्चय करि प्रीति सदाई ॥
जब जिज्ञासू हस्त सु जोरे । स्वामी वचन शीश पर मोरे ॥ २ ॥
तब स्वामीजी भये कृपालं । आज्ञा दीन्ही आप दयालं ॥
ले आज्ञा लक्ष्मण गो दूरी । दास नारायण रहे हजूरी ॥ ३ ॥

दोहा ।

छः के वर्ष दयालुसे, मिले नारायणदास ।
आन भर्म भय सब कटे, प्रगट्यो ब्रह्म विलास ॥ १ ॥

(श्रीरामदासजीमहाराजकीदीक्षावर्णन)

सवैया ।

पुनि स्वामी से रामा मिलिया वर्णों जिकी वारता होय ।
मुरधर माहिं लियो अवतारा हरिके प्रेरे आये सोय ।

पूरा पुरुष कहुँ नहि पाया लीने द्वादश गुरुकों जोय ॥
 जटा विभूति धन्या बहु वाना काज सन्या नहिं तातें कोय ॥ १ ॥
 पुनि नापासर ग्राम जु आये स्वामी के शिष मिलिये पेन ।
 जयतें पड़े रेखता जनका तरते पायो परम ॥ चैन ॥
 रामसेहिन से जय रामा बोलत भये सु ऐसे चैन ।
 इन शब्दनके चक्का स्वामी सो तुम मोहि बतावो सैन ॥ २ ॥

रामसेह धचन ।

चौपाई ।

पुनि सिद्धधल माहिं जु आमी । आप विराजै अन्तजामी ॥
 जाकी महिमा कहा ध्यानों । परम पारपद हरि के मानों ॥ १ ॥
 जय रामा भातुर करि आये । स्वामीजी को दशन पाये ॥
 स्वामीजीसे करि परणाम । हस्त जोरिके बोले ताम ॥ २ ॥
 करि किरपा दीक्षा मोहि दीजै । स्वामी तुम शरणागत लीजै ॥
 स्वामी कह्यो धचन जय ऐसे । तुमसे दीक्षा पलै जु कैसे ॥ ३ ॥
 तुम तो औघड़ रूप धनेहो । जटाजूट बहु तार तनेहो ॥
 रामसेही यह नहिं राखै । रामनाम रसनासे भाखै ॥ ४ ॥
 इतना कहत हाथ तय जोरे । टामन टूमन सबही तोरे ॥
 स्वामी घात हृदय सो धीही । इक सेवरु को आझा की ही ॥ ५ ॥
 कर चरचा समुझाओ सोई । याको साँच मतो जो होई ॥
 पुनि सेवक सयधम सुनायो । ज्ञानगुण करि साच लखायो ॥ ६ ॥
 आय कह्यो स्वामीसे ऐमो । है साचो मत पापा जैसो ॥
 स्वामी बहुरि कसोसी दीन्ही । दीक्षा देन परीक्षा की ही ॥ ७ ॥
 जो पीपा जैसो मत साचो । तो कयहू नहिं होवै काचो ॥
 स्वामी कह्यो सदन तुम जावो । के दिन गया बहुरि तुम आवो ॥ ८ ॥
 साची टेक होय जो तेरे । राम राम करिके मन घेरे ॥
 साधन आन सकल पुनि खोई । तय दीक्षा देसों जन तोई ॥ ९ ॥
 इतनी सुनि रामा जन पैठा । साचै मतै होय चित सैदा ॥
 पुनि स्वामी की कसणी सहिया । केते दिवस अग्र नहिं लहिया ॥ १० ॥
 जो प्रभु आझा देखो नाहीं । तो मैं प्राण तर्जुना याहीं ॥
 जय स्वामी उर दया निचारी । सेवरु को देख्यो मत मारी ॥ ११ ॥

खामी साँची प्रीति पिछानी । पीपा जिमि अन्तरमें जानी ॥
करि अनुकम्पा दीक्षा दीन्ही । यों दासन की पारख लीन्ही ॥ १२ ॥

छन्द मोतीदास ।

इसी विधि अप्पिय आयसु देव । निरन्तर जप्पिय अन्तर भेव ॥
छुडाइय जैन शक्तिय सेव । हरे तम जाल दुगत्तिय देव ॥ १ ॥
भगत्तिय दीध मुक्तिय भेव । जुगत्तिय जोग उक्तिय एव ॥
कुगत्तिय दूरि करे सब कर्म । जुगत्तिय बंधिय ज्ञान सु धर्म ॥ २ ॥
भये गुरुदेव सुदत्तिय साम । दियो जिन सर्व सिद्धान्तिय नाम ॥
वदन्तिय एम अमोलख वैन । प्रभाकर जेम छिदन्तिय रैन ॥ ३ ॥

दोहा ।

रामा मिले दयालु से, नौके वरप निधान ।
पायो पीपादास ज्यों, ब्रह्म जु ज्ञान विधान ॥ १ ॥

छन्दगीतक ।

करि वीनती गुरुदेवसे परणाम पद परसाइया ।
पुनि पंच दीन परिक्रमा अस्तूति ओध सुनाइया ॥
गुरुआमना धरि शीश जो फिर देश मरुधर धाइया ।
नित रामदास विलास यों हरिरामके गुन गाइया ॥ १ ॥

दोहा ।

श्रीसद्गुरु को ध्यान उर, लगन ब्रह्म से लाय ।
खैड़ापै निज नगर पुनि, जहाँ बैठे जन जाय ॥ १ ॥

१ अन्तर्यामी अन्तरकी, मानलई तहकीक ।

हुइ कृपालु कहने लगे, सब सन्तनकी सीख ॥ १ ॥ •

२ सन्मुख आसन सहज धरायो । मस्तक कर दे राम कहायो ॥

केवल मन्त्र अनादि अनादं । गुरु परताप भजन तत साद ॥ १ ॥

ॐ से परे निजानंद योही । वर्ण सर्वे मध अवर्ण सोही ॥

रंकार अपरम परपार । भयो मकार मात सिधकार ॥ २ ॥

अक्षर उभय सयुक्ति सदाई । ॐ महत्तल व्यूह इन मौई ॥

(श्रीराम. परची विश्राम ८)

1 सहज आसन=स्वाभाविक आसन । पालथी मारना ।

“सम आसण बैठै सहज मारि बाँवे पर द्वै क्षण हस्तधारि ।

गुरु मंत्र जवे दे तलसार, धारै क्षिप निश्चय सार धार ॥ १ ॥

(श्रीहरि. परची)

सवैया ।

इनसे आदि शिष्य उद्गारे सुनिये आगे चित्त लगाय ।
आदू अमीराम जन आदू साधू देईदास सघाय ॥
जो जो पुरुष भया जन पूरा सो सो लागा स्वामी पाय ।
जाके दिलमें राम मिलनकी ताके ऊणत रही न काय ॥ १ ॥

चौपाई ।

सुरतरु प्रगट भये कलि माहीं । ताते ऊणत रही जु नाहीं ॥
आये जीय उधारण स्वामी । धन्य धन्य तुम भक्त्यामी ॥ १ ॥

छन्द गीतरु ।

नर नारि सो नितनेमसे करि प्रेमसे परसै पद ।
महिमा करै अनुमोदसे ततयोधसे प्रगटै तब ॥
सतसग स्वामि सनेहसे मुप लेत सो अति सेयसे ।
पुनि यह धारण दास जो सत भाव सो गुरु देखसे ॥ १ ॥

सवैया ।

इगरदास जातको वीको आय सिन्धो स्वामीसे सोय ।
कहियै जिको गामको ठाकुर स्वामी को निज चाकर होय ॥
और तु प्रेमदास पुनि आदिक पीपावशी भ्राता दोय ।
सो स्वामीका भया शैक्षा कुल अभिमान भर्म कू खोय ॥ १ ॥

दोहा ।

ऐसे जीवजु आपका, लीया चरण लगाय ।
जगत जोल बन्धन दह्या, रथा राम गुण गाय ॥ १ ॥

चौपाई ।

स्वामीके जगकी नहिं आसा । सतासमाधि शून्यमें दासा ।
रामनिरजन भजन राता । पर उपकार नामका दाता ॥ १ ॥
रहे दयाजु सफल निरदावे । ऐसे रामनाम गुण गावै ॥
बठिन समय इक पेसा आया । कारण अघ बेचते काया ॥ २ ॥
तिन पुलमें हरिजन इक आयो । स्वामीजीको दशन पायो ॥
स्वामी ऐसे धवन उचान्यो । चाँपा रमा शीश पर धान्यो ॥ ३ ॥
या जन कू परसाद करावो । पीछे तुम हरिके गुन गावो ॥
तब ताका परसाद करावो । स्वामी सहित आप नहिं पावो ॥ ४ ॥

सतवासेनको प्रसंग ।

सवैया ।

सतवासेन जिसो पत साचो ताको सत्य सु कहूं विवेक ।
आप सु सहित त्रिया सुत नारी सो उन मतो विचान्यो एक ॥
नव दिवसनतें भोजन कीन्हो दीन्हो सवै सन्तको देख ।
अर्थो नकुल भयो कंचनको पांडव जिगसे कियो विसेक ॥ १ ॥

चौपाई ।

स्वामी सत्य जु राख्यो ऐसो । सतवासेन विप्रके जैसो ॥
पुनि जन चलयो माँग करि आज्ञा । स्वामी बहुरि ध्यानमें लाग्या ॥ १ ॥
पन्थ चलत सो पाछो आयो । रोक रुपैयो भेट चढायो ॥
स्वामी वात चित्त की चीन्ही । भीड़ जानिके भेट जु कीन्ही ॥ २ ॥
हमरे भीड़ नहीरे भाई । रामप्रताप आनन्द सदाई ॥
पहिले भेट करत तुम आई । तो प्रसन्न हुय लेते भाई ॥ ३ ॥
अवतो नहिं लेवां हरिप्यारा । मान मान ज्या वचन हमारा ॥
जब जन विरह करन कूं लागे । लेट गयो स्वामीके आगे ॥ ४ ॥
नीरधार चाली नैननतें । बोल्यो नाहिं गयो वैननतें ॥
धीरज धार वचन तव बोल्यो । स्वामी भेट करी मैं सो ल्यो ॥ ५ ॥
जब देख्यो व्याकुल ता जनको । स्वामी प्रसन्न कियो वा जनको ॥
ऐसे हठतें भेट रखाई । रंका वंका जेम अचाई ॥ ६ ॥

दोहा ।

तीन लोकको सुख तज्यो, औरनकी क्या वात ।
स्वामी दयालु कृपालु के, जिमि कंकर जिमि धात ॥ १ ॥

चौपाई ।

अवतो भेट आयवा लागी । सेवक चेल्या एकहि सागी ॥
हृदय हर्ष दर्शन कूं आवै । सो स्वामी को भेट चढावै ॥ १ ॥

सवैया ।

कोई आन चढ़ावै कंचन कोई आन चढ़ावै नाज ।
कोई पाट पिताम्बर चाढे कोई चीर चढ़ावै ताज ॥
कोई आन चढ़ावै करहो कोई आन चढ़ावै वाज ।
ऐसे भेट करै सिख सोई स्वामीके नित रहै समाज ॥ १ ॥
जैसे अवधपुरी के माहीं सोहत सुरन संग रघु वीर ।
अति अनुमोद होत चित आतम यों गुरु द्याल संग धरि धीर ॥

भाखत सिफत भाव उर भीजत चाखत महा प्रेम रस नीर ।
 परमारथ हित पथ बतावै स्वामी सब तैं तरक फकीर ॥ २ ॥
 राजा ररु एक सम जाने जैसे ककर तैसे हीर ।
 हरिभक्ती विन कहूँ न चाहै ज्यू पीपा रैदास फवीर ॥
 वेदद मिले रामके बहुभ यू हरिराम धर्मगुरु पीर ।
 सारण जीव समर्थ अनेकन निर्मलकर ज्यू गगानीर ॥ ३ ॥
 हल परकाश एक ज्यू भासत निशिदिन घान गरक गभीर ।
 गारे गर्ये सर्वे तनमनके मारे पकरि पच बड मीर ॥
 राम राम हरिराम बगसिके सबको किये पार भव तीर ।
 जो मिलिये सो हुये आप सम अभयदान ले रहे न फीर ॥ ४ ॥

दोहा ।

बाल विहारीदास पुनि, रटै प्रीतिकर राम ।
 दास नराण हजूरम, रहै अष्टही जाम ॥ १ ॥

चौपाई ।

दास विहारी कृप पधारे । जल कारण इमि मतो निधारे ॥
 तहाँ एक दोल्यो नर धेकी । हरिजनसे जानी नहिं नेकी ॥ १ ॥

सवैया ।

हरिजनसे सचावो करिके दुष्ट एक जिन कीनो द्वेष ।
 हरिजन देख जरे निशिवासर नहीं सुदावै साधू भेष ॥
 हिरण्यकशिपु राक्षसके जैसी तैसी इनके उरमें टेक ।
 घाल घाल कूँ नीर पासते बचन कहे कटु मूढ बिशेक ॥ १ ॥

• चौपाई ।

दास विहारी कहु नहि कहे । दुष्ट वचन हिरदैमें सहे ॥
 घालबाल यू घीरज राखी । उदव प्रती कृष्ण जिमि भाखी ॥ १ ॥
 आये पुनि स्वामीके पास । हस्त जोर करि वचन प्रकासा ॥
 याद दास अब नहिं खटावै । तातैं चलो रहों निरदावै ॥ २ ॥
 हरि सुमिरनमें विग्र न दोइ । ऐसी बुद्धि विचारो कोई ॥
 विश्रमपुर जावनके काजा । घालबाल सह शिष्य समाजा ॥ ३ ॥
 बीच ग्राम नापासर आया । ठाकुर स मुख आन बधाया ॥
 बहू आदर करिके घर लाया । गुरु चरणार्म शीश नमाया ॥ ४ ॥
 फीदी विनय सहित परससा । धिन धिन आज पधारे हसा ॥
 देवीसिंह बडुत सुख पायो । स्वामीसे करि भाव सचायो ॥ ५ ॥

दर्शन करण सकल उठ भागा । आय रु स्वामी चरणों लागा ॥
 स्वामी करै रामकी चरचा । जब आवै सबके मन परचा ॥ ६ ॥
 सबही रामभजन कूं लागा । हंस किया पलटाया कागा ॥
 देवीसिंह प्रीति विस्तारी । पुनि सो करी रसोई भारी ॥ ७ ॥
 व्यंजन कीन्हे बहुत प्रकारं । अमृत भोजन वने अपारं ॥
 लाइ पुरी मिठाई मेवा । आप किया सब अर्पण देवा ॥ ८ ॥
 देवीसिंह होय आधीना । दाल सेव करि लाहा लीना ॥
 पुनि ठकुरानी जैताँ वाई । कीन्हो भाव बहुत विधि आई ॥ ९ ॥
 स्वामी के इक राम अवाजू । दादू ज्यों सत्संग समाजू ॥
 दर्शन करि सबही जन हरपे । वचन दाल अमृत सम वरपे ॥ १० ॥
 ऐसे सन्त राम अवतारी । प्रगटे अबनि भक्ति विस्तारी ॥
 शरणागती जीव जो सोध्या । लागि रही नित पुरी अयोध्या ॥ ११ ॥

दोहा ।

देवीसिंह दयालुका, उत्सव किया अपार ।
 हुयो दास करजोर करि, विनवै वारंवार ॥ १ ॥
 साचा हरिजन सूरका, जहँ तहँ आदर होय ।
 ओत प्रोत हरिसे मिले, जगत न जानै कोय ॥ २ ॥

चौपाई ।

द्वेष किया तिनमें दुखपरिया । मुर सुत एक दिवसमें मरिया ॥
 तनधन क्षीण होन कों लागे । सोई कोपे एकण सागे ॥ १ ॥
 भक्त द्रोह हरिको नहिं भावै । जो पुनि तीन लोक मे जावै ॥
 छँडै नही सन्त को द्रोही । जाको जड़ामूलसे खोई ॥ २ ॥
 जापर जबै रामजी रूठे । ताकी सब संपत्ती लूटै ॥
 पुनि सो पाँच दिवस के माँई । घर दुर्जन को गयो विलाई ॥ ३ ॥
 रोवै बहुत करै विलपातू । हे प्रभु इसी करी क्यों वातू ॥
 ऐसो पाप कियो मैं कोई । तातैं मोपर कोपे सोई ॥ ४ ॥

दोहा ।

पुत्र मरे अति दुख पय्यो, क्षीण भयो धन साज ।
 घर छिरणाठ्यो हुयगयो, कहा मैं कियो अकाज ॥ १ ॥

चौपाई ।

जब बोले मानुष पुनि सारे । तुम अपराध न कोई पारे ॥
 स्वामी को विन काज सताए । तातैं तुम ऐसे दुख पाए ॥ १ ॥

अथ तुम चरण उसीके लागो । जन सबही जायो करि सागो ॥
 जेज करी तो है है ऐसी । होरी माहिं भई है ऐसी ॥ २ ॥
 वे स्वामी प्रहाद समाना । तुम जानो नहिं मूढ़ अयाना ॥
 सुनता बात सय मनमानी । यामे फेरफार नहिं जानी ॥ ३ ॥
 करणीदान हुकुम जय कीया । सामिल होन दोल तय दीया ॥
 पाँचों घास एकठा हूवा । संग लीया जाऊ सुत मूया ॥ ४ ॥
 जाय लया स्वामी के चरणा । वृषासि-धु कीजै अथ करणा ॥
 हम तुमको जान्यो नहिं मेया । तुमतो अलख निरजन देवा ॥ ५ ॥
 हमरो चूक पगसिये स्वामी । अथ तुम चलो सदन घणनामी ॥
 जो तुम कहो जेम करिदेखा । ज्यों त्यों करिक संग में लेसा ॥ ६ ॥
 स्वामी बछो कड़ नहिं चावै । हमका एक रामरस भावै ॥
 सो तो याही लोक सयाना । कहा सदन अथ कहा पयाना ॥ ७ ॥
 बहुरि करी अरदासा लोगू । स्वामी मेढो सरही सोगू ॥
 तुम विन गोंय अयो भयभीतू । अन्धकार जिमि विनभवेतू ॥ ८ ॥
 चन्द विना रजनी नहिं सोहे । तुम विन चाल हमारो कोहे ॥
 अथ तुम और न जानो तातू । जलसे आदि ले छोडी यातू ॥ ९ ॥
 आप प्रसन्न सोह करि लेताँ । और तुरत कागद लिखवेसाँ ॥
 बाबो उजर करण नहि पाये । हरिको खूनी सो बरसावै ॥ १० ॥
 सही आपसे यचन उचारो । अथ तुम स्वामी अवन पधारो ॥
 स्वामी सहज कही जव जानी । अथ क्यों इतनी विनती डानी ॥ ११ ॥

दोहा ।

तब लोकन विनती बहुरि, करी बहुत तजि मान ।
 हमतो शिशु मतिमूढ़ नर, तुम साक्षात सुभान ॥ १ ॥
 धूलि उछाले गगनमें, सूर न लागे कोह ।
 चर फूटै शिर पर पदै, मूढ़ सचेते सोह ॥ २ ॥
 देह देह पहिले कहै, शिरमें लगै आय ।
 यही मूढ़ की वारता, तब पीछे करराय ॥ ३ ॥

चौपाई ।

हम तो महामूढ़ हैं प्रानी । तेरी गती नाथ नहि जानी ॥
 तुम तो हो हरिके अवतार । स्वामी सरके सिरजन द्वार ॥ १ ॥
 हृदके जीव उलझिने चार । कैसे जानै मूढ़ गवार ॥
 वृषासि-धु छपा अथ कीजै । पुरी सिंहावल बेगि चलीजै ॥ २ ॥

दोहा ।

अति लघुता अनुक्रम सहित, करुणा सुनी कृपालु ।
अव लोकन के ऊपरै, करदी दया दयालु ॥ १ ॥

सवैया ।

दीन दयालु दया के सागर आवत भये अयन कूं आप ।
देवीसिंह पहुँचावन आयो अरु कीन्ही मनुहार अमाप ॥
ओर सु रामखेही सारे संग चले जपते हरि जाप ।
उत्सव करत छाल के सवही सिंहथल आये रामप्रताप ॥ १ ॥

दोहा ।

सब शिष शाखा सहित जू, राजे भवन मँझार ।
दर्शण करण दयालु के, सब आये नरनार ॥ १ ॥

छन्द पद्वरी ।

आवै सु दर्श पुनि प्रीति वान । गावै दयालु गुन हर्ष मान ॥
सत्संग स्वामि गंगा प्रभाव । न्हावै सुशिष्य चित कर सुचाव ॥ १ ॥
पद विष्णु हूँत चाली सुगंग । पुनि भई सप्त धारा सुरंग ॥
जैमल्लदास सो विष्णु रूप । भक्ती सु गंग चाली अनूप ॥ २ ॥
धारा जु सप्त पुनि सप्त द्वीप । सुरसरी भई अजके समीप ॥
जंवू सु द्वीप जहँ मिली एक । सो भरतखंड माहीं विसेक ॥ ३ ॥
मारू सुदेश आनन्द कन्द । जंगलथल हेमाचल वरिन्द ॥
परवाह पुरी सिंहथल पुनीत । तहँ भक्ति गंग विस्तरी मीत ॥ ४ ॥
जल ब्रह्म रूप गुरुदेव सोय । पुनि ज्ञान ध्यानके तट सु दोय ॥
नीलोत्पलं च जहँ सुमन नाम । तहँ रहे पेख चंद्रैक स्वाम ॥ ५ ॥
भय लाल प्रभा सन्तोष कंज । रह राज सर्व सरिता सुमंज ॥
अरु घाट घाट आवत अनन्त । झूलन्त जवै होवै अचिन्त ॥ ६ ॥
यूं देश देश के शिष्य वृन्द । पढ़ि सन्त मोक्ष पावै अनन्द ॥
गंगा न करि सकै अवर गंग । गुरु बाल करै अपने सु रंग ॥ ७ ॥

दोहा ।

भीषम तैं सुत अधिक भनि, बाल भक्ति सत्संग ।
यह यात्रा शिष परसियों, वहुरि धरै नहि अंग ॥ १ ॥

चौपाई ।

सुरधर से रामा शिष आये । मानों जिमि कंचन से ताये ॥
राम नाम सुमिरन शिर ताजू । गुरु परताप सन्या सब काजू ॥ १ ॥

अरज करी स्वामी से बेसे । रामानंदसे पीपा जैसे ॥
अब प्रभु सदन पधारो मोरे । तन मन धन अपन सब तोरे ॥ २ ॥

दोहा ।

सुनि अरजी निज शिपन की, करी कृपा गुरुदेव ।
चित्त पधारण चितवी, भक्ति पधारण मेव ॥ १ ॥

चन्द्रायणा ।

सब शिष शाखा सम पधारे चालजी ।
जहँ जहँ धारे पाँव करै तहाँ न्यालजी ॥
गाँव गाँव के माहिँ होये जु पधारणा ।
परिहा हरिजन हरिको रूप लगै जु सुहायणा ॥ १ ॥
करै रसोई बहुत चढ़ायै भेट जू ।
रामत करत सन्त पधारे ठेट जू ॥
रामा जन विधि बहुरिछु समुख आयके ।
परिहा उर उत्सव करि प्रेम लिया जु पधारके ॥ २ ॥

दोहा ।

श्रीगुरुदेव दयालु को, छीन्हा एम पधाय ।
बहुत प्रीति करि दीनती, रामदास लग पाय ॥ १ ॥
आसन बसन विछायना, हाजर किया जु आय ।
सद्शिष रामदास के, आनंद अंग न समाय ॥ २ ॥

छन्द पदरी ।

इमि करत रामदासहि उछाय । धिन धरे सदन गुरुदेव पाय ॥
बैकुण्ठ सहित मिलिये जु विष्ण । मानों सदेह गोलोक कृष्ण ॥ १ ॥
पल पलहि माहिँ वारै सु प्रान । गुरुदेव सुरति निरखै निदान ॥
मानों सु आज ऐसो उजास । जिमि शरद पूर्णिमा को सो प्रकास ॥ २ ॥
पुनि करी रसोई अति पुनीत । नाना प्रकार भोजन सु रीत ॥
इमि प्रीति सहित पुरसे जु थाल । देवाधिदेव जीमे दयाल ॥ ३ ॥

दोहा ।

रहे चाल के दिवसला, नगर खैड़ापे सोहि ।
भक्ति भाव सपति निरखि, अति प्रसन्न हिय होहि ॥ १ ॥

छन्द पदरी ।

पुनि रामदास बहु करी भेट । सब शिषाँ सहित गुरु घरण लेट ॥
मन धन सपति आदि ताम । सबके हो माळिक आप स्वाम ॥ १ ॥

तव करी एह इच्छा सु आप । सिंहथल को आवन करि मिलाप ॥
शुकदेव जेम सहुरु अचाह । करि सेवा शिष लीन्हे जु लाह ॥ २ ॥

दोहा ।

शिष तो रामा जन जिसा, दाल जिसा गुरुदेव ।
वे अचाह वे चरण रत, मिले सु एक समेव ॥

चौपाई ।

पुनि आवन की त्यारी कीन्ही । गुरु मूरति शिष हिय धरलीन्ही ॥
घणी दूर आये पहुँचावा । मन से पाछो करै न जावा ॥ १ ॥
गुरु हरिराम कह्यो जब ऐसे । जैमल कह्यो आप कूं जैसे ॥
अम्बर माहिं वसै जिसि इन्दू । वसै कमोदनि तिसि मध सिन्धू ॥ २ ॥
यूं तुम सदा समीप हमारे । हम तुम तें कवहू नहि न्यारे ॥
अब तुम पीछो करो पयानो । यह शिष सीख हमारी मानो ॥ ३ ॥
तव अस्तूति करे परणामा । फिरे सदन कूं निज शिष रामा ॥
स्वामी आये निजपुर धामू । रामत करते सहज मुकामू ॥ ४ ॥

दोहा ।

इह विधि मुरधर देश कों, करि पावन महाराज ।
आय विराजे आप यहँ, दाल महोत्सव साज ॥ १ ॥

चौपाई ।

सिंहथलपुरी अयोध्या जैसी । और पुरी नहिं कोऊ ऐसी ॥
जन साक्षात विष्णु अवतारा । दर्शन आवै लोक अपारा ॥ १ ॥

छन्द श्लोक ।

कोउ आवत कोश जु एकनतें, सतसंग दयालु सु पेखनतें ।
कोउ आवत जोजन आधनतें, गुरु ज्ञान वैराग्य सु साधनतें ॥ १ ॥
कोउ आवत कोशजु सो मुरतें, अति होय अचिन्त्य मनो उरतें ।
कोउ आवत सो जन जोजनतें, सत्संगति स्वामि प्रयोजनतें ॥ २ ॥
कोउ आवत कोशजु पंचनतें, शुभवस्तु हृदय गुन संचनतें ।
कोउ आवत जोजन डोढनतें, गुरुदेव सुसंगति कोडनतें ॥ ३ ॥
कोउ आवत कोशजु सप्तनतें, तव दाल मिटावत तप्तनतें ।
कोउ आवत जोजन दोइनतें, निज नाथ विलोकन लोयनतें ॥ ४ ॥
कोउ आवत कोश तिहूँ पटतें, ररकार सु शब्द मुखौं रटतें ।
कोउ जोजन सोइ सचा दुइतें, नित आवत दास जनुं हुयतें ॥ ५ ॥

दोहा ।

सुनि सुनि आवै सकल जन, अनुभव शब्द अयाज ।
रहै धाल महाराजके, नित सतसग समान ॥ १ ॥

छन्द त्रिभगी ।

सहृद है शरणूँ चितधर चरणूँ जामणमरणूँ भयहरणूँ ।
भवसागर तिरणूँ करजन करणूँ अशरण शरणूँ ऊगरणूँ ॥
उर अतस्करणूँ ध्यानसु धरणूँ सज बीसरणूँ मुरजाल ।
यसु यश विस्तरणूँ करसय निरणूँ परचा धरणूँ गुरुघाल ॥ १ ॥

दोहा ।

गुना चूरु तुम बगसियो, मं अति मूढ अजान ।
घाल राबरो सुयश तो, यरणे सकल जहान ॥ १ ॥

चौपाई ।

नेतराम मुरली जन दास । धीकानेर सह्रमैं दास ॥
माजन जाति राम का प्यारा । शिष स्वामी के धडे सुधारा ॥ १ ॥
जिन दरशन को मतो उपायो । घरका को नहीं दरशायो ॥
रात जगावन फीयो व्याजु । चित से लायो साधु समाजु ॥ २ ॥
प्रीती करिवे सिंहधल ध्याये । आये रातोरत चलये ॥
यहै जू समा बहुबगी सारी । स्वामी ध्यान लगाई तारी ॥ ३ ॥
पुनि सो अति दशन के प्यासी । जब सो दोनों भये उदासी ॥
बिनु दीपक दशन किमु होये । अब अय चहुरि कचन से जोये ॥ ४ ॥
दिन ऊगाला नहीं घटाओं । नाम मंदिर को लियो उठाओं ॥
पेसी करुणा देखि दयालू । अन्तरजामी भये कृपालू ॥ ५ ॥
तय सो पेसो क्रियो उजासू । मानों कोटि दिनेश्वर भासू ॥
जय दशन पायो उन दासू । हिरदै उपज्यो बहुत हुलासू ॥ ६ ॥
अद्भुत चरित देति तिन चेरू । अतिशय भये अचभै चेरू ॥
स्वामी कौन गती यह की ही । चर्म दष्टितें जाय न चीन्ही ॥ ७ ॥
हमकों दीपक आश न एकू । उदित किये मणि चन्द्र अनेकू ॥
चरणा लपट स्वामिके पासू । करत भये अस्तूति निहासू ॥ ८ ॥
नमो नमो नित ब्रह्म नमस्ते । एक अघट आदि मघ अस्ते ॥
पूरण ब्रह्म सच्चिदानन्दा । विश्वरूप ईश्वर जग वन्दा ॥ ९ ॥
ज्यों हरि मुख मुर मुवन दिखायो । हमकों पेसो चरित लखायो ॥
ज्या फवीर पडाका रखे । सेना करी नामदे लाखे ॥ १० ॥

यों तुम स्वामी कला अनंतू । वासर कियो रैन को संतू ॥
जब स्वामी बोले जन सेती । हरि कर्ता क्युं नहिं है एती ॥ ११ ॥
मेरु करै तृण तें हरि सोइ । पुनि तृण बहुरि मेरु तें होइ ॥
साचै मतै रामकों सेवै । तो इच्छा है सो करि देवै ॥ १२ ॥
याको मती अचंभो मानो । अरु तुम हरि कों समर्थ जानो ॥
यो चरित्र राखीजो छानै । कोउ जाने को नाहीं जानै ॥ १३ ॥
हमरे काम जगत से नाहीं । मिलिये राम अंतरके माहीं ॥
अब तुम दर्श कियो रे भाई । ऊणत मनमें रहै न काई ॥ १४ ॥
यों कहि द्याल समेटी माया । शिप बंदन कर शहर सिधाय ॥
स्वामी बहुरि समाधि लगाई । शून्यशहर माहीं इकताई ॥ १५ ॥

दोहा ।

श्रीगुरु हरियानन्दके, परचों को नहिं पार ।
सुने सो आसी कहन में, और हु गुप्त अपार ॥ १ ॥

छन्द त्रिभंगी ।

जैसे गोपालं संग सु वालं विधि चरितालं दिखरालं ।
द्वै विधि बछ वालं करि ततकालं हृदय कुलालं भ्रम टालं ॥
यों करन निहालं आप चालं अनुभव खालं विस्तारं ।
मेरी बुधि वालं कहाँ कहाँ परचा द्यालं नहि पारं ॥ १ ॥

दोहा ।

अगमागम गति द्याल की, मोपें लखी न जाय ।
विनती गंगारामसे, सदा रहौ शरणाय ॥ १ ॥

चौपाई ।

वारट एक स्वरूपा नामू । जाका भया अडाणा धामू ॥
सो स्वामी के दरशन आया । अति करुणाकर वचन सुनाया ॥ १ ॥
हमसो और अनाथ न कोई । जो कोउ तिहूं लोकमें जोई ॥
ठौर नहीं बैठन कूं काई । अब मैं कहा करूं जनराई ॥ २ ॥
तब स्वामी मन पेसी धारी । पीपा जैसी परम विचारी ॥
हरिजन सोई पर उपकारी । घट घट आतम राम सँम्हारी ॥ ३ ॥
जापर स्वामी भया कृपालं । तब सो कीयो बहुत निहालं ॥
होइ प्रसन्न दीक्षा दीन्ही । करुणा सिंधु कृपा इमि कीन्ही ॥ ४ ॥
स्वामी तणी कृपासे सोई । संपत्ति विविधि भांति जू होई ॥
जिनको दारिद गयो जु पेसे । पुनि सो विप्र सुदामा जैसे ॥ ५ ॥

यामें सशय नाहिं कवाई । हरिजन राम एक है भाई ॥
 तूठे घाल करी प्रति पारू । चारों तरफ लक्ष्मी दारू ॥ ६ ॥
 यों स्वरूप का दाहिद भागा । सद्गुरु की सेवामें लागा ॥
 दर्शन कियाँ इसी रस आई । भली मुक्ति बिभूती पाई ॥ ७ ॥

दोहा ।

गायो गुन गोविंद को, पायो द्रव्य अमाप ॥
 आयो साच स्वरूप को, सद्गुरु राम प्रताप ॥ १ ॥

सोरठा ।

बहुरि करी अरदास, रामदास जन आयके ।
 पावन करो निपास, सब मन भावन सद्गुरु ॥ १ ॥

छन्द तोमर ।

पुनि रामदास जु आय । गुरुदेवसे खिर नाय ॥
 अरजी ॥ कीधजु पद । पगधारिये फिर गेह ॥ १ ॥
 परकाज सारन घाल । सब प्रान के रिछपाल ॥
 निरधारके आधार । शरणाय के साधार ॥ २ ॥

श्रीगुरुवचन ।

सोरठा ।

सुनि पेसी अरदास, जब सद्गुरु धोलत भये ।
 दासा करियत दास, बार बार कारन कहा ॥ १ ॥

शिष्यवचन ।

चौपाई ।

करन करावन हम कह्यु नाहीं । व्यापक आप सकल के माहीं ॥
 प्रेरक हो तुमही तन मनके । दयासिधु बधू दीनन के ॥ १ ॥
 सोई तुम चरणन की सेवा । मैं तो दास तुम्हारो देवा ॥
 तुम तो सदा अवल हो स्वामी । पर तब वृद्ध अवस्था जामी ॥ २ ॥
 बार बार अघसर कथ पावों । तातैं या अर्जी गुदरावों ॥
 जय स्वामी अर्जी सत मानी । सेवक की अति प्रीति पिछानी ॥ ३ ॥

सोरठा ।

करि अनुकम्पा घाल, मरुधर देदा पधारिया ॥
 करण शरण प्रतिपाल, रीतिसु आदि अनादिकी ॥ १ ॥

छन्द मनहर ।

साची प्रीति जानि एक, समुच्चै पधारे श्याम
विप्र श्रुति देव अरु, नृप बहुलास के ।
जैसे जू पधारे प्रीति, हेतु भीलनी के राम
जैसे जू पधारे रामा, नन्द पीपादास के ॥
पीपा जू पधारे तहाँ, श्री रंगदास के पुनि
नारद पधारे भूप, भीम सुखरास के ।
श्याम के सनेही जन, भावना के हेतु एम
ऐसे जू पधारे हरि, राम रामदास के ॥ १ ॥

सोरठा ।

समय पधारत नाथ, खैडापा पुरकों जवै ।
आयो सन्मुख भात, साँच वचन सतगुरु कह्यो ॥ १ ॥

दोहा ।

गांव खेड़ापै जायतों, सबचातांका ठाट ।
दूध दही घृत मोकला, भरिया रहसी माट ॥ १ ॥

छन्द पद्धरी ।

पुनि रामदास करिके हुलास । आयासु वधावण परमदास ॥
सब लिये शिष्य शाखा जु साथ । चित द्रवति प्रेम रोमांच गात ॥ १ ॥
वाजन्त ढोल वाजा विशेष । सुर मे प्रसन्न सम्माज देख ॥
पुनि अष्ट अंग करते प्रणाम । यों लगे शिष्य पदपन्न स्वाम ॥ २ ॥
आनी सुगन्धि वस्तू अनूप । मृगमद हरिचन्दन पीतरूप ॥
कुंकुम कर्पूर सु काशमीर । चोवा गुलाल चन्दन अवीर ॥ ३ ॥
तिलकार्घ्य आरती करे ताम । पद पाट परत पधराय धाम ॥
सिंहासन आसन धन्यो आय । अति भाव सहित सेज्या विछाय ॥ ४ ॥
कर जोरि भये ठाढ़े सु दास । पुनि करत भये वानी प्रकास ॥
धनि धन्य आज मेरो सु भाग । पायो घर वैठाँ गुरु समाग ॥ ५ ॥

कुंडलिया ।

शिष निज रामादासके वटी वधाई एम ।
दास विदुरके द्वार जो यदुपति आवत जेम ॥
यदुपति आवत जेम तेम पतिवृत हरपाई ।
व्याकुल भई शरीर सुधी बुधि सबै भुलाई ॥
निरखि परम गुरुदेव को छके अछक छक प्रेम ।
शिष निज रामादासके वटी वधाई एम ॥ १ ॥

छन्द मनहर ।

हरप हरप मन विधि विधि भौंति भौंति
 चीज भोजन बनायो भल चित भावसे ।
 क्षीरदू मिठाई लाइ सीरो पन्चान पूरी
 चौर शकर मूग घृत करि चावसे ॥
 पेसी विधि बहुत रसाल गुरुदेवजी कू
 सुदर परोसै प्रीतिभाव के प्रभावसे ।
 जाम श्रीहरिराम रामदास जू पौन दोरे
 करे मनुहार भूगी अधिक उछाह से ॥ १ ॥

दोहा ।

यों नव दश दिन जावतों, आवन कछो अयास ।
 राखलिये अनुमोदसे, हटकरि रामदास ॥ १ ॥

चौपाई ।

स्वामी इकदिन घनमे आये । पूरव दिशि परयत नियराये ॥
 रामदास शिप साथे लागी । पंदरे बीस ओर घैरागी ॥ १ ॥
 गिरि समीप सयको बैठाये । स्वामा हाथ जहाँ सिटियाये ॥
 पुनि सो अटल वचन करमायो । सत्र शिप हू जनके मनभायो ॥ २ ॥
 तुमरा लशकर बहा न भावै । अरु शिप बहुत लगैगा पावै ॥
 ताते यहा करो सुखाना । देश विदेशों रहै न छाना ॥ ३ ॥
 रामदास पेसो तत जान्यो । सत्रगुरु वचन अटल करि मान्यो ॥
 स्वामी कछो भूमि जिन स्थानू । बाही ठौर कियो सहनानू ॥ ४ ॥
 पुनि स्वामी आसन को बाया । कई दिवसला वहाँ रहाया ॥
 भूखे भात्र सन्त भगवतू । औरों कारज करण अनन्तू ॥ ५ ॥

दोहा ।

रामदास निजदास का, सयही सान्या काज ।
 बहुत करी प्रतिपालना, चाल गरीबनिवाज ॥ १ ॥

चौपाई ।

अब आवन की इच्छा घारी । सत्र सामग्री करी तयारी ॥
 रामदास यहु प्रीति बढ़ाई । तन मन धन जो मेट चढ़ाई ॥ १ ॥
 पहली मेट सिखा जो कीन्ही । सो स्वामी आगे घरदीन्ही ॥
 स्वामी कह्यो फयो न तुम राखी । अपण करी आनकर आखी ॥ २ ॥

रामदास कह तन धन तेरा । मैं तो सदा चरण का चेरा ॥
 यों सेवा करि लाहा लीया । गुरु कों बहुत प्रसन्न जु कीया ॥ ३ ॥
 बहुत दूर पहुँचावण आए । करि प्रणाम पुनि भवन सिधाए ॥
 स्वामी शनैः शनैः मग माहीं । आये ककू गाँव जहाँ ही ॥ ४ ॥
 तहँ हरिदास वधावण आये । आय लगे स्वामी के पाये ॥
 करि अति प्रीति सदन पधराये । बहु भोजन ले भोग लगाये ॥ ५ ॥
 टैल करी अतिश्रद्धा सहितू । सेवग भया भेदसे रहितू ॥
 मग वासी चालण नहि देवै । स्वामी कों बहुते मिल सेवै ॥ ६ ॥
 स्पर्श चरण प्रशंसा गावै । रामरूप सबके मन भावै ॥
 ये हैं कपिल महामुनि ज्ञानी । इनकी कृपा मोक्ष है प्राणी ॥ ७ ॥

दोहा ।

ऐसे उत्सव द्यालके, ग्राम ग्राम में होत ।
 सबके उपजै भावना, दर्शन करन उद्योत ॥ १ ॥

चौपाई ।

स्वामी जहाँ जहाँ पदधारै । तहाँ तहाँ महिमा विस्तारै ॥
 ये तो सन्त इहाँ के नाई । अमर लोक से आए सौँई ॥ १ ॥
 नारायणदास हजूरी संग । ज्यों नन्दादि श्याम निजअंगा ॥
 पुनि हरिदेव जु शोभित ऐसे । दिव्यरूप सनकादिक जैसे ॥ २ ॥
 स्वामी अमृत वचन उचारै । जीवन के त्रय ताप विदारै ॥
 परमारथको पन्थ बतावै । जिन जिन कों हरिचरणों लावै ॥ ३ ॥

दोहा ।

साधु लच्छ भगवद कहे, ऐसे सन्त दयाल ।
 एक भवन की का कहों, त्रिभुवन करै निहाल ॥ १ ॥

चौपाई ।

रामत करते करत पयाना । सिंहस्थल आये अस्थाना ॥
 सुनि स्वामी आयाँ की वाजा । धाये जन दर्शन के काजा ॥ १ ॥
 पूछे समाचार पुनि सारा । स्वामी कहे सकल विस्तारा ॥
 जिन जिन ग्राम लिया विथामू । तिन तिनका जु बताया नामू ॥ २ ॥
 जेता दिन खेड़पै रहिया । तेता भिन्न भिन्न करि कहिया ॥
 जहाँ जहाँ मिलिये हरि प्यारे । तहाँ तहाँ के नाम उचारे ॥ ३ ॥

दोहा ।

चोतीसै पावन कियो, चाल सु मरुधर देश ।

रामदास के भावसे, दिया भक्ति उपदेश ॥ १ ॥

घरप सईके आदिले, इतने भये वदीत ।

अब भगली चणन करा, हरि गुरु रुपा समीत ॥ २ ॥

चौपाई ।

पुनि सो दिवस अष्ट दश जात । परचा भया जगत बिट्यात ॥

चार पौख परचे मे लगत । सो सुनि सुख पावै हरिभक्त ॥ १ ॥

सवैया ।

है चरघा जारी भति सुन्दर परचा मया मास इक माहि ।

हरि गुरु की अर्चा करि आए लखिमेकी मेरी भति काहि ॥

गावत ब्रह्मज्ञान वरशावै सुनता परम मोक्ष मिल जाहि ।

जो हिरदै निधै गहि राखे सो भवसागर आवै नाहि ॥ १ ॥

चौपाई ।

एक समय सय सिखा विचारी । मेलो करण सँज विस्तारी ॥

सय जनपै दीन्है समचार । ग्राम ग्राम हरिजनके द्वार ॥ १ ॥

चैत्र सु भास कृष्णपक्ष सातम् । तिथि ठहराई हरिजन जातम् ॥

मेवो धिरत शकरा लीही । विविधि भाति सामग्री कीही ॥ २ ॥

अचरज हुयो एक भति सरी । छलि नहि सकै फोड तनधारी ॥

पदर दिन मेगके शान्ति । हरियानन्द कियो तनुत्याग ॥ ३ ॥

नारायण आदिक पूज्य वास । देखत ही जन भये उदास ॥

जो मेलो आरम्भ्यै ऐसे । स्वामी बिना होय अब कैसे ॥ ४ ॥

यो मिलि सखस करी जो करणा । स्वामी सुनी परमपद शरणा ॥

राखन तीस त्रिस्रों काया । हरिसे कौल बरे यहँ आया ॥ ५ ॥

आय कियो परवेस । मेढयो सरखो शोक अँदेस ॥

ऐसे समरथ सँ दयाल । कहुनामयीकरण प्रतिपाल ॥ ६ ॥

दोहा ।

कारज क'वा करजे, शरणायक रिछपाल ।

कर याचा करतार से, आप यहाँ दयाल ॥ १ ॥

चौपाई

सबहि प्रसन्न भये शिष्य श्रुता । पुनि स्वामी पूरी अभिलाषा ॥

ज्यों सरजीव राम लघु बधू । ऐसे उर भँ भयो अनदू ॥ १ ॥

स्वामी बहुरि दिलासा दीन्ही । करुणा परम सकल पर कीन्ही ।
केती वस्तू पहिले आई । अरु चाही सो फेर मँगाई ॥ २ ॥
जलको समाधान सब कीयो । दे नाणो जु कवल करि लीयो ॥
सब सामान तयार करायो । जो चाहै सो वहाँ धरायो ॥ ३ ॥

दोहा ।

अष्ट सिद्धि नवनिद्धि रिधि, हाजर हुई सु आन ।
श्री स्वामी के भवन मध, सब विधि भरे समान ॥ १ ॥

सवैया ।

धाये सवै महोत्सव ऊपर जहँ जहँ पूगे समंचार ।
वाई भाई रामसनेही सब आये स्वामी के द्वार ॥
रामप्रताप कमी नहीं काई यहाँ धनेश तणा भंडार ।
मावै नहीं लोक पुरमाहीं ऐसो थटियो थाट अपार ॥ १ ॥
जलरो काम कठिन दरशायो साकट पलट्यो वचन गवार ।
प्यासों मरै तड़फड़ै मेलो वालक करै वारही वार ॥
द्वेषी लोक हँसी अति ठानै जानै नाहीं नाथ मुरार ।
ओरहु शिष्य चिन्त बहु आनै अव प्रभु कीजै कहा विचार ॥ २ ॥
स्वामी के धीरज मन ऐसी धना जिसी हरिसे इकतार ।
सबकों कहै करो मति आतुर तृपित नहीं राखै करतार ॥
मोकों बडो भरोसो वाको नहीं चूकै अवसर निरधार ।
यों कहि दाल विराजे आश्रम निज शिष को बैठायै वार ॥ ३ ॥
हरी हरी करि खरी प्रीतिसे दोय घरी लागि करी पुकार ।
जब नभ चढी पवन इक बदली जाको बहुत भयो विस्तार ॥
वर्षण लगी सींहथल ऊपर धरणी एक अखंडी धार ।
ठंडी मरत लोक अति धूजै मिटगी प्यास एक छिनवार ॥
तन मन प्राण दाल पर वारै करै सकल मिल जैजैकार ॥ ४ ॥

दोहा ।

जल होवै तहँ थल करै, थल जहँ जल हुय जाय ।
हरि करता क्यों नहि हुवै, हरि हरिजन के भाय ॥ १ ॥

चौपाई ।

रामजनोका रूपे निसाना । साकट जब है परे खिसाना ॥
सब पुर माहिँ उपज्या भावू । आय लगे स्वामी के पावू ॥ १ ॥

दोहा ।

चोतीसे पावन कियो, घाल सु मरुवर देश ।
 रामदास के भावसे, दिया भक्ति उपदेश ॥ १ ॥
 चरण सङ्के आदिले, इतने भये वदीत ।
 अब अगली वर्णन करा, हरि गुरु वृषा सप्रीत ॥ २ ॥

चौपाई ।

पुनि सो दिवस अष्ट दश जात । परचा भया जगत विषयात ॥
 चार पाँच परचे मे लगत । सो सुनि सुख पाव हरिभक्त ॥ १ ॥

सवैया ।

हे चरचा जानी अति सुन्दर परचा भया भास एक भाहिं ।
 हरि गुरु की अर्चा करि आसू लखिनेकी मेरी मति काहिं ॥
 गावत प्रह्लादान दरशाये सुनता परम मोक्ष मिल जाहिं ।
 जो हिरदै निबै गहि राखे सो भवसागर आवै नाहिं ॥ १ ॥

चौपाई ।

एक समय सब सिखा विचारी । मेरे करण सूँज विस्तारी ॥
 सब जनपै दी-हे समँचारू । ग्राम ग्राम हरिजनके द्वारू ॥ १ ॥
 चैत्र सु भासू कृष्णपक्ष सातम् । तिथि ठहराई हरिजन जातम् ॥
 मेवो घिरत शकरा छीन्ही । विविधि भाति सामग्री कीन्ही ॥ २ ॥
 अचरज हुयो एक अति गरी । लखि नहि सकै कोउ तनधारी ॥
 पदर दिन मेलाके आगू । हरियानद कियो तनुत्यागू ॥ ३ ॥
 नारायण भादिक दस । देखत ही जन भये उदास ॥
 जो मेरे आरज्य ऐसे । स्वामी बिना होय अब कैसे ॥ ४ ॥
 यों मिलि सकत करी जो करणा । स्वामी सुनी परमपद शरणा ॥
 राखन तीस । सखों काया । हरिसे कौल करे यहँ आया ॥ ५ ॥
 आय कियो । परवेसू । मेढ्यो सबको शोक अँदेसू ॥
 ऐसे समरथ सँ दयालू । करुणामयीकरण प्रतिपालू ॥ ६ ॥

दोहा ।

कारज क'वा कारणे, शरणायक रिछपाल ।
 कर पाचा करतार से, आप यहाँ दयाल ॥ १ ॥

चौपाई

सबहि प्रसन्न भये शि । श्रापा । पुनि स्वामी पूरी अभिलाषा ॥
 ज्यों सरजीत राम लघु बधू । ऐसे उर में भयो अनडू ॥ १ ॥

स्वामी वहुरि दिलासा दीन्ही । करुणा परम सकल पर कीन्ही ।
केती वस्तू पहिले आई । अरु चाही सो फेर मँगई ॥ २ ॥
जलको समाधान सब कीयो । दे नाणो जु कवल करि लीयो ॥
सब सामान तयार करायो । जो चाहै सो वहाँ धरायो ॥ ३ ॥

दोहा ।

अष्ट सिद्धि नवनिद्धि रिधि, हाजर हुई सु आन ।
श्री स्वामी के भवन मध, सब विधि भरे समान ॥ १ ॥

सवैया ।

धाये सवै महोत्सव ऊपर जहँ जहँ पूगे समंचार ।
वाई भाई रामसनेही सब आये स्वामी के द्वार ॥
रामप्रताप कमी नहीं काई यहाँ धनेश तणा भंडार ।
मावै नहीं लोक पुरमाहीं ऐसो थटियो थाट अपार ॥ १ ॥
जलरो काम कठिन दरशायो साकट पलट्यो वचन गवार ।
प्यासों मरै तड़फड़ै मेलो बालक करै वारही वार ॥
द्वेपी लोक हँसी अति ठानै जानै नाहीं नाथ मुरार ।
ओरहु शिष्य चिन्त बहु आनै अब प्रभु कीजै कहा विचार ॥ २ ॥
स्वामी के धीरज मन ऐसी धना जिसी हरिसे इकतार ।
सबकों कहै करो मति आतुर तृपित नहीं राखै करतार ॥
मोकों बडो भरोसो बाको नहीं चूकै अवसर निरधार ।
यों कहि घाल विराजे आश्रम निज शिप को बैठायै वार ॥ ३ ॥
हरी हरी करि खरी प्रीतिसे दोय घरी लगि करी पुकार ।
जब नभ चढी पवन इक बदली जाको बहुत भयो विस्तार ॥
वर्षण लगी सींहथल ऊपर धरणी एक अखंडी धार ।
ठंडी मरत लोक अति धूजै सिटगी प्यास एक छिनवार ॥
तन मन प्राण घाल पर वारै करै सकल मिल जैजैकार ॥ ४ ॥

दोहा ।

जल होवै तहँ थल करै, थल जहँ जल हुय जाय ।
हरि करता क्यों नहि हुबै, हरि हरिजन के भाय ॥ १ ॥

चौपाई ।

रामजनॉका रूपे निसाना । साकट जब द्वै परे खिसाना ॥
सब पुर माहिं ऊपज्या भावू । आय लगे स्वामी के पावू ॥ १ ॥

सबही स्तुती करण कौं लागे । अति आधीन होय अनुरागे ॥
 हम तुमकों जाने नहिं स्वामी । चूक बगसिये अतरजामी ॥ २ ॥
 स्वामी कहे चूक नहिं सोई । हरि सुमरो सबही सुख होई ॥
 जैजैकार करै नर नारी । धिन धिन स्वामी गती तुम्हारी ॥ ३ ॥
 पति समर्थ तुमरे बस सोई । ताल तलाव छले छिन मोई ।
 स्वामीका इमि करत बखाना । करत सबै पालर जलपाना ॥ ४ ॥

दोहा ।

नाणा साटै नीरको, नट गयो वचन उचार ।
 सो मुख महिमा उचारे, ऐसे सरजनहार ॥ १ ॥

चौपाई ।

पालर अबु तालते आवै । सब मेलो अतिही सुख पावै ॥
 स्वामी पाँच दिनालों पोये । बहु भोजन करिके सन्तोषे ॥ १ ॥
 मन घाछित सो हाजर कीया । स्वामी सब कू आवर दीया ॥
 जब प्रसन्न हुये जनसारे । आछा मोगि चले पुनि द्वारे ॥ २ ॥
 पन्थ पन्थ माहीं गुन गावै । स्वामि स्वरूप हृदयमें लावै ॥
 पुनि जब आपसमें बतलावै । स्वामी गति लखी न जावै ॥ ३ ॥
 ऐसे कहते सकल सिधाए । जेते जन उत्सवमे आए ॥
 रामदास जन मोगी आढा । लागत जान गुराफी आग्या ॥ ४ ॥
 स्वामी कह्यो रहो तुम याहीं । इन कारण ठहरे जय नाहीं ॥
 करि प्रणाम बहुत परकार । आवे मरुधर देश मँझार ॥ ५ ॥
 पुनि स्वामी मन भयो उदास । अब या नरलोकन कं घास ॥
 चित्त लग्यो अमरापद माही । जहँ जग जाल काल डर नाहीं ॥ ६ ॥
 आतुर करै पारपद जोई । भन्द सुनन्द आदि ले सोई ॥
 स्वामी कह्यो रहो सुस्तायू । कौल कियो जबही मैं आवू ॥ ७ ॥
 यों कहि सब धस्तू पहुँचावै । पाछा वेग वेग बुलावै ।
 पुनि सो चार पाच दिन माँई । जो जो जानी सो पहुँचाई ॥ ८ ॥
 सागी दिवस कोटको आयो । प्रातसमय स्वामी फरमायो ॥
 परम लोककी सोंज मँगाई । जब निश्चै सबको दरशाई ॥ ९ ॥
 आगम तीन पहर पुनि सोई । वात बिख्यात जननमें होई ॥
 भीदयालु पैकुठ पधारि । ऐसे सबही लोक उचारि ॥ १० ॥
 जहँ जहँ पुरुष खबर ॥ पावै । तहँ तहँके दशनकों घावै ॥
 यों सब हलफ चोखलो आयो । बहुरि घाट मैलीको थायो ॥ ११ ॥
 घाय और सन्त बहुतेरा । स्वामीके चरणों का चेर ॥
 दशनके कारण जू पैसे । हरिकारण आवे सुर जैसे ॥ १२ ॥

पुनि वैकुंठी आदि तयारी । सामग्री करवाई सारी ॥
 बीठू सकल चरण जू चंपै । स्वामीको तन मन धन अर्पै ॥ १३ ॥
 पुनि सो एम बिलोके नैना । स्वामी एक कह्यो जू वैना ॥
 समाचार जीवनको देना । यहँ आवै इतनाही कहना ॥ १४ ॥
 एक कहंते उठिया दोई । ले आया निज जनको सोई ॥
 ताकू समंचार कलु कहियो । सो निजदास मान उर लहियो ॥ १५ ॥
 जीवनदास समुझि यह सैनू । वदरी पास चले धरि वैनू ॥
 स्वामी कह्यो वचन पुनि त्यों ही । दूवो लाध्यो ज्युं को ज्युं ही ॥ १६ ॥

दोहा ।

स्वामी मेले पहिलही दूवो कीन्हो ताहिं ।
 बिखन्यो नाहिं जु असलमें, उन समाजके माहिं ॥ १ ॥
 ऐसा परचा अनंत है, जाका अन्त न पार ।
 गंगाराम इमि वीनवै, वरण्या मति अनुसार ॥ २ ॥

चौपाई ।

शिप दूवाके हाथ लगायो । लारै समंचार तब आयो ॥
 भगवत् ज्योंही कियो पयानो । देखत सबही लोक सयानो ॥ १ ॥
 आसण मार विराजे ऐसे । बल बलवीर विराजे जैसे ॥
 वैसेहि नैन मूँदि लिबलाई । सुरति ब्रह्म के माहिं समाई ॥ २ ॥
 आप स्वच्छंद देह तजि मानू । दशवे द्वार मिलाये प्रानू ॥
 सब ही भे अचरजयुत भाऊ । स्वामी की गति लखी न काऊ ॥ ३ ॥
 कलु इक लखी जासु के दासू । कबहु न रही तासुके प्यासू ॥
 महाप्रसाद नारायण पायो । तबही शब्द तिरकुटी आयो ॥ ४ ॥

दोहा ।

तत्क्षण लेत प्रसाद पुनि, साधु भये शिप सोय ।
 गंगाराम दयालु गति, लखी न जावै कोय ॥ १ ॥

चौपाई ।

पुनि वैकुंठ घड़यो जो मोटो । माप्यो जबै वारणो छोटो ।
 कोई कहै दूसरो कीजै । यो वैकुंठ नहीं मावीजै ॥ १ ॥
 कोई कहै भीतकों तोड़ो । कोई कहै ढहावो मोड़ो ॥
 यों संकल्प करै मनमाहीं । वात तोलमें आवै नाहीं ॥ २ ॥
 जब बोल्यो वीदो सुथारू । है स्वामीकी गती अपारू ॥
 अटकै नहीं साच सब मानो । याको मत अंदेशो जानो ॥ ३ ॥

कै तो होय गारणो चोढो । कै चैकुठ हुयजावै सोढो ॥
 यों कहि जव चैकुठ उठायो । द्वार माँह नार्हीं अटकायो ॥ ४ ॥
 उच्छव करत तहाँ चलि आये । दूवो कियो आप जिहि ठाये ॥
 घृत कपूर समिधि सब लीन्ही । दादकिया देहकी कीन्ही ॥ ५ ॥
 चली सुगन्धि बहृतही सुन्दर । मोहे सुर मुनि सहित पुरदर ॥
 घाल युवादिक ले नरनारी । सबके भाव ऊपज्यो भारी ॥ ६ ॥
 आनि आनि घृत सींचन लागे । लेत सुधूम कर्म सब भागे ॥
 जैसे पुरी अघंती माहीं । प्रेत सहस दश मोक्ष मिलाहीं ॥ ७ ॥
 ऐसे सकल पवित्र हि भये । सहजे जन्म दोष मिटगये ॥
 जय भस्मी शीतल जू होई । तय निजदास संभाली सोई ॥ ८ ॥
 सारित रहिया श्रीफल गानी । पाँच सात पटल्या जू लाधी ॥
 परचा को फोड़ पार न पावै । आदि अन्तलीं अगम लखावै ॥ ९ ॥

दोहा ।

पार लहै कुण घालको, अपरपार अनंत ।
 चिदानन्द जुगजुग महीं, सदा चिरजिव सन्त ॥ १ ॥
 यह परचे इन लोकके, सुने सु धरणे सोइ ।
 गगाराम अत्र कहत जन, सुरपुर उत्सव होइ ॥ २ ॥

छप्पय ।

संरत अठारह जान वष पुनि शुभ पतीस ।
 चैव शुद्ध सप्तमा मिले परमात्म ईस ॥
 बार ॥ शुद्ध बार ध्यान तद् ग्रह सु धान्यो ।
 आप सुछन्द शरीर पच भूतादि निवान्यो ॥
 शरणाय सीध मेले सकल अनत ॥ जीव उधारिया ।
 नरलोक घाल परित्याग तनु परम सु घाम पधारिया ॥ १ ॥

सोरठा ।

कर घन तडित प्रकाश, पुनि आकाश समाइ है ।
 ऐसो होय उजास, सन्त मिले परब्रह्म में ॥ १ ॥

छन्द पद्वरी ।

ज्यों ज्योति ज्योति मिल एक होइ । जल लवन पतरी मिन न कोइ ॥
 यों मिले दरीजन ब्रह्म माहिं । भवजलमें आवै बहुरि नाहिं ॥ १ ॥

सोरठा ।

नमो नमो हरिराम, परम घाम हरिम मिले ।
 सग सदा इक साम, आदि मध्य अवसान म ॥ १ ॥

कहाँ लगी करौं वखानि, पार न पाऊं आपको ।
बुधि मेरी तुछ वानि, सो उरहीमें थकि रही ॥ २ ॥

सवैया ।

स्वामी श्रीदयालु की परची पावै पढ़त परम विश्राम ।
मन तन दोष ताप मिट जावै सुनतां होय सकल सिध काम ॥
करि विचार धारै उर निश्चै सो जन मिलै ब्रह्मके धाम ।
शिष जैराम के उर विराजके भाखी गुरु श्रीगंगाराम ॥ १ ॥

सोरठा ।

अक्षर घट बध होय, लीज्यो सकल सुधारिके ।
सर्व सन्तजन सोय, विनती दास जैरामकी ॥ १ ॥
समत उनीसो जान, मिति अपाढ़ शुदि पंचमी ।
वार बृहस्पति मान, परची संपूरण भई ॥ २ ॥

इति श्री परची सम्पूर्णम् ।

अथ श्रीदयालुदासजी महाराज कृत ग्रन्थ प्रगटबोध ।

दोहा ।

प्रगट बोध तारण तरण, रामा राम अनाद ।
गुरु प्रसाद सद्गति मिलै, प्रगट परायण साद ॥ १ ॥

चरण ।

घट विच अघट प्रगट रट रमता, सत्त शब्द सुखदायक ।
आगै अवै भया सत जेता, सिद्ध शिरोमणि वायक ॥ १ ॥
लायक लगन कहै गुरु शिख रत, मति गति मूढ़ विचारं ।
काष्ठ मथत प्रगट हुय अग्नी, यों आतम तत निरकारं ॥ २ ॥
सद्गुरु उक्ति युक्ति रस नेता, श्वासोच्छ्वास चलाया ।
सूतर दोय रसण मिल आतम, भाव सभाव मिलाया ॥ ३ ॥
तब तत्काल प्रगट दरशाणा, एक अखंडित धारा ।
अध मध उत्तम भया प्रकाशा, कारज करण हमारा ॥ ४ ॥
विरह प्रजल उर नीर सु सोख्या, शब्द प्रगट दरशाना ।
धम धमकार टेर सुन मुरली, फुरक फुरक फुरकाना ॥ ५ ॥
पीत वदन श्वासा जु सिरानी, नागरवेल शरीरा ।
प्रेम नीर बिन ऐसे सूकत, नख शिख विचै अधीरा ॥ ६ ॥

मधुरे चैन आस शर घायल, अन्दर विरहनि तीरा ।
 आदि रु अत तलब तत सुमिरण, मन बच कर्म सधीरा ॥ ७ ॥
 अक्के मिलो परम परमानन्द, जीवनप्राण अधारा ।
 निमल करण महा सुखसागर, विरहनि का भरतारा ॥ ८ ॥
 ऊणत एक पिया भव भजन, रजन राम सनेही ।
 फीका लग्या सर्व रस रसना, प्रेमा भई विदेही ॥ ९ ॥
 लघु निद्रा आलस मिट अगा, पथी पथ अवादै ।
 धाय बधाई देऊँ मुझ सौँई, हरिवृत्त साधन साधे ॥ १० ॥
 इकदिन प्रगट अजय अति अचरज, फला अनेक सयाई ।
 गोला क्षया शब्द गेतूला, आस उध्यासा मोई ॥ ११ ॥
 रररर रोम थरर थरराट, नाभिकुमल सुलटाणा ।
 नगर उछाह नारि तरु सरजल, जन्तर तार वजाणा ॥ १२ ॥
 चार हजार नाहि घरनाभी, रररर शब्द रमाणा ।
 नख शिख पिचै एक ध्वनि रमता, मनया पयन मिलाणा ॥ १३ ॥
 लेजु सधीर भया ध्वनि उका, गमन नाद घरराणा ।
 आतम भया साध घर परचा, चरचा राम ठिकाणा ॥ १४ ॥
 कै दिन रछा नाभि घर माहीं, इकदिन करण पयाणा ।
 मन अरु पयन मिले लिव प्रेमा सुरति शब्द वरसाणा ॥ १५ ॥
 भिन भिन मेद लछा घर निश्चय, आतम तत्त्व प्रकाशा ।
 छेदत इला सप्त पातालूँ उलटा पलट तमाशा ॥ १६ ॥
 परा समीप शब्द गत रेला, रसिया सप्त पतालू ।
 पूरव उलटि पछिम दिशि आया, घट उरधा घँकनालू ॥ १७ ॥
 अमृतधार बक शर शरणा, नाद बिन्दु इक होई ।
 शब्द वेग पयोँ विन उडणा, आणेमा जन कोई ॥ १८ ॥
 लया माग अचमा मारी, आस वेग ततकालू ।
 प्रकट इकीसू मणिया छेया, सुरति शब्द उजवालू ॥ १९ ॥
 पगा चढ़पा मेरु की घाटी, सब बैराट उँचाया ।
 पाँचा प्राण सुई के नाके, सुधे रस्ते लाया ॥ २० ॥
 सब ले उक्या गमनवे माहीं, अद्भुत प्रगट अनन्दा ।
 इद्र आदि अष्ट सुर जातरु, नमस्कार कह बन्दा ॥ २१ ॥
 गूगा वायक अविरल बोल्या, राग अनेक उचारू ।
 गगन घोर वाजा तहँ अनता, कहिये कौन बिचारू ॥ २२ ॥
 वारे मेघ लगी छब चरपा, नीर बिना सर भरिया ।
 घरपी घरणि गगन द्रुय सरजल, परम पथ जन परिया ॥ २३ ॥

दशमें द्वार चढ़या अवधूता, जरा न झंपै कालू ।

जोगी नमो अजोनी अणभंग, राम शब्द मतवालू ॥ २४ ॥

गंगा तीन मिली तट त्रिकुटी, तीर्थ सबै शिरताजू ।

निर्मल न्हाय मित्या दुख जन्मा, सरिया सब सिध काजू ॥ २५ ॥

बहुच्यों जगत जन्म नहिं धरणा, ऐसा करणा स्नान ।

अनुभव परा पाठ जन उचरत, आतम अद्भुत ज्ञान ॥ २६ ॥

परगट शब्द सदा जन केरा, पहुँता साख सदाई ।

आगे अवै होयगा अवही, त्रिकुटी तख्त समाई ॥ २७ ॥

मुद्रा पंच सधे अवधूता, ज्ञान भँडार खुलाणा ।

बिलुन्हा जहाँ उलटिके आसन, सहजों आन मिलाणा ॥ २८ ॥

प्रगट श्रवण रसन चख नासा, गावों शब्द लुभाणा ।

देखन रूप भये सब निर्मल, दश दरवान मिलाणा ॥ २९ ॥

किल्लादार चारों चित चोखै, पाँचों पंच हटाणा ।

सहजाँ मिल्या शब्दके धोरै, उन्मनि ध्यान धराणा ॥ ३० ॥

परमानन्द महा सुख पूरण, ध्यान अखंडित धारं ।

झीनमें झीन तारमें तारी, सुपमण सुख अपारं ॥ ३१ ॥

निश्चल चित्त गरक गुण तीनों, त्रिगुणी मायात्यागी ।

बेहद मिल्या तजी हद रचना, परम पुरुष वैरागी ॥ ३२ ॥

बेहद वास विदेही निर्भय, अपना कारज कीया ।

बन्धन तोड़ भया निर्वन्धन, परम तत्त्व सुख लीया ॥ ३३ ॥

सहजाँ सुरति शब्द का मेला, सुन पर तख्त विराजै ।

आसण अधर अनूप अवासा, लेजु अखंडित साजै ॥ ३४ ॥

जोत उद्योत अनेक प्रकाशा, सूर अनेक छिपाणा ।

वारै कला मिली थिर सोलै, शीतल लहर समाणा ॥ ३५ ॥

सूत्र भेद रह्या नहिं कोई, सुरता परख विचारी ।

सुपमण सीप अटलपद मुक्ता, कण कारण गुण जारी ॥ ३६ ॥

सरवर शून्य हंस पर हंसा, ब्रह्म वृक्ष पर थिरता ।

निज कण नाम चुगै नित मुक्ता, कटू काल नहिं खिरता ॥ ३७ ॥

अवर्ण कहा वर्ण मे आवै, वृक्ष अनादि अगाधं ।

भक्ति विचार दोय अँक चढ़णा, मुक्ति महाफल आदं ॥ ३८ ॥

मीठा कहां तो वले न कोई, हरिया उन सम वोई ।

दीठा जिके सर्व परिपूरण, सरिया कारज सोई ॥ ३९ ॥

छाया तासु रच्यो ब्रह्मंडा, सचराचर सब जीवं ।

मंडप मंड अमंडी सोई, एक अखंडी सीवं ॥ ४० ॥

मधुरे वैन श्वास शर घायल, अन्दर विरहनि तीरा ।
 आदि रु अत तलव तत सुमिरण, मन वच कर्म सधीरा ॥ ७ ॥
 अवके मिलीं परम परमानंद, जीवनप्राण अधारा ।
 निर्मल करण महा सुखसागर, विरहनि का भरतारा ॥ ८ ॥
 ऊणत एक पिया भव भजन, रजन राम सनेही ।
 फीका लग्या सय रस रसना, प्रेमा भई विदेही ॥ ९ ॥
 लघु निद्रा आलस मिट अगा, पथी पथ अवादै ।
 धाय घधाइ देऊ मुझ साई, हरिघृत साधन साधे ॥ १० ॥
 इफदिन प्रगट अजय भति अचरज, कला अनेक सचाई ।
 गोला दुग्या शब्द गैतूला, श्वास उश्वासा मॉई ॥ ११ ॥
 रररर रोम धरर थरराट, नाभिकमल सुलटाणा ।
 नगर उछाह नारि तर सरजल, जन्तर तार घजाणा ॥ १२ ॥
 चार हजार नाहि घरनाभी, रररर शब्द रमाणा ।
 नख शिख पिचै एक ध्वनि रमता, मनया पवन मिलाणा ॥ १३ ॥
 लेजु सधीर भया ध्वनि उका, गगन नाद घरराणा ।
 भातम भया साध घर परचा, चरचा राम ठिकाणा ॥ १४ ॥
 कै दिन रछा नाभि घर माही, इफदिन करण पयाणा ।
 मन अर पवन मिले लिय प्रेमा सुरति शब्द दरसाणा ॥ १५ ॥
 भिन भिन भेद लह्या घर निश्चय, आतम तस्य प्रकाशा ।
 छेदत इला सप्त पातालू उलटा पलट तमाशा ॥ १६ ॥
 परा समीप शब्द गत रेला, रमिया सप्त पतालू ।
 पूरय उलटि पठिम दिशि आया, चढ उरधा बैकनालू ॥ १७ ॥
 अमृतधार वक झर झरणा, नाद बिंदु एक होइ ।
 शब्द वेग पलौ विन उडणा, जाणेगा जन कोइ ॥ १८ ॥
 लया माग अचभा भारी, श्वास वेग ततकालू ।
 प्रफट इकीसू मणिया छेद्या, सुरति शब्द उजवालू ॥ १९ ॥
 पगा चढ़घा मेरु की घाटी, सब बैराट उँचाया ।
 पाँचों प्राण सुइ के नाके, सुखे रस्ते लाया ॥ २० ॥
 सय ले उड्या गगनके माही, जडुत प्रगट अनन्दा ।
 इद्र आदि अष्ट सुर जातक, नमस्कार बह चन्दा ॥ २१ ॥
 गूगा वायक अघिरल बोल्या, राग अनेक उचारू ।
 गगन घोर घाजा तहँ अनता, कहिये कौन विचारू ॥ २२ ॥
 बारै मेघ लगी झब करणा, नीर विना सर मरिया ।
 वरपी धरणि गगन जुय सरजल, परम पन्थ जन परिया ॥ २३ ॥

दशमें द्वार चढ़्या अवधूता, जरा न झंपै कालू ।
 जोगी नमो अजोनी अणभंग, राम शब्द मतवालू ॥ २४ ॥
 गंगा तीन मिली तट त्रिकुटी, तीर्थ सबै शिरताजू ।
 निर्मल न्हाय मिट्या दुख जन्मा, सरिया सब सिध काजू ॥ २५ ॥
 बहुन्यों जगत जन्म नहिं धरणा, ऐसा करणा खानं ।
 अनुभव परा पाठ जन उचरत, आत्म अद्भुत ज्ञानं ॥ २६ ॥
 परगट शब्द सदा जन केरा, पहुँता साख सदाई ।
 आगे अवै होयगा अवही, त्रिकुटी तख्त समाई ॥ २७ ॥
 मुद्रा पंच सधे अवधूता, ज्ञान भँडार खुलाणा ।
 विछुन्या जहाँ उलटिके आसन, सहजों आन मिलाणा ॥ २८ ॥
 प्रगट श्रवण रसन चख नासा, गावों शब्द लुभाणा ।
 देखन रूप भये सब निर्मल, दश दरवान मिलाणा ॥ २९ ॥
 किल्लादार चारों चित चोखै, पाँचों पंच हटाणा ।
 सहजों मिल्या शब्दके धोरै, उन्मनि ध्यान धराणा ॥ ३० ॥
 परमानन्द महा सुख पूरण, ध्यान अखंडित धारं ।
 झीनमें झीन तारमें तारी, सुपमण सुख अपारं ॥ ३१ ॥
 निश्चल चित्त गरक गुण तीनों, त्रिगुणी मायात्यागी ।
 वेहद मिल्या तजी हृद रचना, परम पुरुष वैरागी ॥ ३२ ॥
 वेहद वास विदेही निर्भय, अपना कारज कीया ।
 बन्धन तोड़ भया निर्वन्धन, परम तत्त्व सुख लीया ॥ ३३ ॥
 सहजों सुरति शब्द का मेला, सुन पर तख्त विराजै ।
 आसण अधर अनूप अवासा, लेजु अखंडित साजै ॥ ३४ ॥
 जोत उद्योत अनेक प्रकाशा, सूर अनेक छिपाणा ।
 वारै कला मिली थिर सोलै, शीतल लहर समाणा ॥ ३५ ॥
 सूत्र भेद रह्या नहिं कोई, सुरता परख विचारी ।
 सुपमण सीप अटलपद मुक्ता, कण कारण गुण जारी ॥ ३६ ॥
 सरवर शून्य हंस पर हंसा, ब्रह्म वृक्ष पर थिरता ।
 निज कण नाम चुगै नित मुक्ता, कटू काल नहिं खिरता ॥ ३७ ॥
 अवर्ण कहा वर्ण में आवै, वृक्ष अनादि अगाधं ।
 भक्ति विचार दोय अँक चढ़णा, मुक्ति महाफल ॥ ३८ ॥
 मीठा कहों तो वले न कोई, हरिया
 दीठा जिके सर्व परिपूरण,
 छाया तासु रच्यो ब्रह्मंडा
 मंडप मंड अमंडी सोई

ब्रह्म आधार पुरुषर्त प्रकृति, महत्तत्ते हकारा ।
 तम रज सत्त्व उपज गुण तीनों, पच तत्त्व विस्तारा ॥ ४१ ॥
 प्रथम अकाश वायुते तेज, जल मँझ अड पकाया ।
 ता मँझ विष्णु नाभि कँज ब्रह्मा, विधिते शम्भु उपाया ॥ ४२ ॥
 छाया प्रबल होत इमि सृष्ट, माया अपरम पारा ।
 चारप्रकार फिरत सो प्रलय, जग बधाण पुहारा ॥ ४३ ॥
 घटिका एक चार युग ब्रह्मा, कहत चौकडी एही ।
 पहतर गर्यो शरु हुय ऊमर, बचदै इन्द्र दिनेही ॥ ४४ ॥
 चार हजार जात युग जिनर्म, ब्रह्मा दिवस कटीजे ।
 सूर शत साठ गर्यो हुय सम्यत, शत वष आयु लहीजे ॥ ४५ ॥
 फोड पँतीस उपज अवतारा, आयु पद्मसुत माँई ।
 अयुत सहस्र उपज आतमभू, घटिका विष्णु कहाई ॥ ४६ ॥
 द्वादश लाख विष्णु हुय जायत, शम्भु अधघटि जानो ।
 पाँच हजार चले जय ईश्वर, माया रग रँगानो ॥ ४७ ॥
 नित्य नैमित्तिक लय आत्यंतिक, छाया हृद या ताँई ।
 शक्ति शूगर तहाँ नययौवन, आप आप बिलसौँई ॥ ४८ ॥
 माया लाख अनेक अनेक, ब्रह्म उन्मेष अगाध ।
 दुकियक ध्यान मध्य यह रचना, नमो अगम गति आव ॥ ४९ ॥
 और न छौर अरु कुन कयता, कहा किणीसे जायै ।
 आदि न अंत मध्य नहिं जाकी, साक्षी सत बतायै ॥ ५० ॥
 रूप न रेख अरुग अजोनी, चढिया सिके अडकी ।
 सागर लीन पूतली गति ता, धरणत कौन असकी ॥ ५१ ॥
 अपरम अनुल ब्रह्म पर परम, इस जु वृक्ष बतायो ।
 नामी नहीं नाम कहाँ ठाहर, रमता राम रमायो ॥ ५२ ॥
 गहरा अगम निगम तत निणय, पारख जनों सदाई ।
 सबका सार मेद तत आतम, परमहंस दिखलाई ॥ ५३ ॥
 दर्पण घदन कहै बख नामी, यों जन शब्द प्रकासा ।
 सूर उद्योत परय मिट रजनी, सजनी कमल हुलासा ॥ ५४ ॥
 चन्द उदय शीतलता परगट, तरुण उदय ज्यों मदनस ।
 माया उदय रजोगुण परगट, राम उदय मिट कलमस ॥ ५५ ॥
 भोजन परख कहै घट परगट, लक्ष्मी घदन नदिखायै ।
 दग बिच हेट बचनमें ब्रह्मा, दुख तनु नाक लप्यायै ॥ ५६ ॥
 पारख कपट घदन कह परगट, देश परख मुप भासा ।
 संस्कृत रसना पय सूज, भाव दिखायै दासा ॥ ५७ ॥

सज्जन परख विघ्न विच बेली, कुलवन्ती कुल लाजा ।
 धर्माध्यक्ष दुभख में दूणा, परमारथ हित जाजा ॥ ५८ ॥
 सूरु खाग सती जल देही, आसत सिद्धि सदाई ।
 परख स्वभाव दिना केइ रहता, गरवा रीस न काई ॥ ५९ ॥
 वनिता समय शील की पारख, परगट साख शिरोमन ।
 अपनी कला दिखावत आपे, जानत सवै मनोमन ॥ ६० ॥
 साद अनादि मिल्याँ का निश्चय, परचै शब्द सतोलौं ।
 निर्गुणसार वज्र अणअक्षर, अपरमपार अतोलौं ॥ ६१ ॥
 बीजक सिद्ध मोक्षको मारग, परगट जनों सदाई ।
 नमस्कार ऐसा ततवेता, भूल न परत कदाई ॥ ६२ ॥
 जूनो द्रव्य देख अँक पावत, पिता आथ खत साखं ।
 गुरु प्रसाद साध घट निर्णय, सत्तशब्द मुख भाखं ॥ ६३ ॥
 चार प्रकार प्रगट धुर वानी, ताका भेद बताऊँ ।
 अर्थ माहिं सचको परिपूरण, गरथो पार न पाऊँ ॥ ६४ ॥
 परगट सदा साध घरहासिल, दोय अँक सत विद्या ।
 प्रथमहि गुरु पढ़ाया हमको, श्वास श्वास पर सिद्धा ॥ ६५ ॥
 जिनका दास पास नित चरणों, मन वच सुरति हमारी ।
 अनुभव वाच साच उर आतम, परमपुरुषसे थारी ॥ ६६ ॥
 खानाजाद गुलाम गुलामी, नितप्रति एकण धारा ।
 भूँडा भला रावरा चाकर, घर जाया प्रतिपारा ॥ ६७ ॥
 कवणा भाव वीनती दासा, आदि अन्त इक अंगा ।
 समता लियां सर्व सुखदायक, निश्चल चित मन चंगा ॥ ६८ ॥
 करता राम नहीं मैं करता, सदा दीनता माँई ।
 अकरणकरण उधारण समरथ, चरण शरण जन साँई ॥ ६९ ॥
 इन आशय वायक ब्रह्मवाणी, दास शिरोमणि सारं ।
 बोध अनेक प्रगट चख आतम, अरस परस दीदारं ॥ ७० ॥
 प्रथम जगत ते भयो उदासा, माया भर्म अनेका ।
 स्वप्न जंजाल तजौं कुलकर्मा, भजौं शुद्ध मन एका ॥ ७१ ॥
 प्रथम पकर मन गुरुगम धारण, सत्संगति घर माँई ।
 शान खज्ज पासी मोह वाढ़त, निर्भय खाग वजाई ॥ ७२ ॥
 सदा निशंक रहै निर्दावै, वन्धन ते निरवाला ।
 केवल मंत्र जपै उर आनंद, राम शब्द मतवाला ॥ ७३ ॥
 अन्तःकरण वासना त्यागी, शान्ती बन मँझ रहता ।
 वस्ती क्रोध कदे नहिं जावै, सत भिक्षा सत लहता ॥ ७४ ॥

उन्मनि मुद्रा गुफा शिरोमणि, सुरति शब्द का मेला ।
 ध्यान समाधि अरुडित धारण, अष्ट जाम इकवेला ॥ ७५ ॥
 गुणावतीत नमो अणभगी, घृत्त छिपे नहिं भोजन ।
 केवल भया लह्या पद जानेंद, ऐसे कहिये सो जन ॥ ७६ ॥
 त्यागी नाम सदा बैरागी, जिनको बन्दन मेरी ।
 आशा तृष्णा अह कल्पना, जीति लई गोचरी ॥ ७७ ॥
 ब्रह्म प्रकाश गिरा इन आशय, यही उदासा धाणी ।
 प्रपच धान करै सब खडन, पूरा गति सहनाणी ॥ ७८ ॥
 उर बैराट रूप भगवान, ता बिच सयै समारो ।
 समथ गिरा अजोनी आनंद, राम बिना कतु नहिं ॥ ७९ ॥
 स्थावर जगम सूक्ष्म स्थूला, सचराचर अविनासी ।
 जल स्थल धरणि पवन आकाश, परगट तेज निघासी ॥ ८० ॥
 ब्रह्माभावि फीटपय ता, धीदी गज इकसार ।
 सब भरपूर अतगतजामी, रमता राम हमार ॥ ८१ ॥
 घर धन वैश कहा परदेशों, स्वर्ग मृत्यु पाताल ।
 राम इच्छा विचरत आनन्दी, जरा न झुपे काल ॥ ८२ ॥
 कुणसा भूत प्रेत छल भयता, कुण भारत कुण ओहा ।
 सब घट जीय आपसा आपे, निदावे गत सोहा ॥ ८३ ॥
 जगहु तन मूठ नहिं माया, नवग्रह तिथि नहिं वारा ।
 नक्षत्र योग लग्नपुल बेला, कुण मडुरत अनुसार ॥ ८४ ॥
 तीनों ताप जलण नहिं पावै, आधि व्याधितें न्यारा ।
 बन्धन नमो निकन्दन साधू, मोह्या प्रीतम प्यारा ॥ ८५ ॥
 समर भया लह्या पद ऐसा, अब गुदबह सिधकारण ।
 मैं हों आदि अत मध जैसा, स्थिर आकाश अपारण ॥ ८६ ॥
 प्रथम प्रागभाव परमात्म, अन्योभन्य स जीवा ।
 प्रकट करण इच्छा भइ मेरी, पुरुष प्रवृत्तिकी सीवा ॥ ८७ ॥
 सब विध्वंस काल गति करता, प्रगट्या जेथ मिलाना ।
 तत मिल तत्त्व परम परमात्म, एकाएक टिकाना ॥ ८८ ॥
 सो आत्यतिक्रमाय कही जै, अक्षय ग्रह निकारा ।
 ता मिलियै मारग है अक्षर, सहस्र शब्द बिचारा ॥ ८९ ॥
 अव्यय धाम राम जन रमता, हम तारण हम तरण ।
 पोषण भरण मुखवे म्हायक, कारण अकरण करण ॥ ९० ॥
 अनुभव आप जु गुदबह स्वामी, इन परकार कहीजै ।
 साधु अगाध नमो गति समरथ, ता चरणों मन रहिजै ॥ ९१ ॥

के जन दास उदास संभवी, के खुदवह की धारा ।
 प्रगट वोध सर्वको मारग, राम शब्द ततसारा ॥ ९२ ॥
 चार खानि प्रगटे जिव सबही, ताकी वानी चारौं ।
 चार पदारथ सिध परमारथ, चत गत मुक्ति मिलारौं ॥ ९३ ॥
 चार अवस्था आतम उपजत, ज्ञान दृष्टि परकासी ।
 शुभ जु क्रिया जन सेव सदाई, एकाएक उपासी ॥ ९४ ॥
 द्वितिये उपज विरह उर मेले, तृतिये त्रिभुवन मोह्या ।
 चतुर्थ अरस परस मिल खेलूं, सुरता नैन संजोया ॥ ९५ ॥
 तत्पर सुख छक्या तद बोल्या, अनुभव शब्द रसालूं ।
 ज्ञान प्रकाश अंग गलताना, एकसे एक विशालूं ॥ ९६ ॥
 जीव अंकूर भक्त उर अबनी, उदय भया तत्कालूं ।
 दुइ दल खुले अक्षर दुइ आदू, चरपा प्रेम विचालूं ॥ ९७ ॥
 सहस्र ज्ञान घटा घन चरपत, भक्ति वृक्ष गरजाणा ।
 तत रत पेड मूल अविनाशी, वाणी डाल बंधाणा ॥ ९८ ॥
 ता मध अंग प्रगट उपशाखा, बडनामी विस्तारा ।
 उपमेय नहीं उपमा कैसी, कहिहौं कछु अनुसार ॥ ९९ ॥
 “नमस्कार” “गुरुदेव” सदाई, जिव सद्गति “गुरुपारख” ।
 “गुरुवन्दन” “गुरुधर्म” सनातन, चरण शरण भव तारक ॥ १०० ॥
 “सुमरणअंग” “सार (इक) सुमरण”, सुमरण चार प्रकार ।
 “अर्कल” एक अविगत को चीन्है, यह “उपदेश” सदा ॥ १०१ ॥
 ताहि प्रसाद “विरह” उर उपजत, पाऊं प्रीतम प्यारा ।
 अटपट वैन श्वास शर घायल, दरशण दो करतारा ॥ १०२ ॥
 “ज्ञानसंजोगविरह” नव जोवन, अग्नी सिन्धु जलाया ।
 मच्छी उडी अकाशां माहीं, आतम “परचा” पाया ॥ १०३ ॥
 “परचैसूर” यारि तव लागी, यह साधारण कीजै ।
 सोंज समेत ज्ञान असवारी, मिल अपना सुख लीजै ॥ १०४ ॥
 अम्मर पीव परश “पिबैपरचै”, परमानन्द संगती ।
 यह है “रस” सर्व ते मीठा, पीयो ताप न ताती ॥ १०५ ॥
 ताको “लोभ” सदाई कीजै, तत कमंडलु भर नीरं ।
 पीपी अधप तलव के धोरे, श्वासोच्छ्वास अधीर ॥ १०६ ॥
 हरि विन सर्व भया “हैरांना”, पढ़ि पढ़ि शकत कीताना ।
 आन उपाय करी सो भूला, वे सब जान अजाना ॥ १०७ ॥
 “हेरतअंग” वृद्ध विच गागर, सागर वृद्ध समावै ।
 “जरैणा” धार पार पुरुपोत्तम, भाव पदारथ पावै ॥ १०८ ॥

पाया तिकॉ वहाँ "लिव" लागी, परमपइ गलताना ।
 पाँचों तीन मत्र नहिं डोलै, यह "पतिवृत" का वाना ॥ १०९ ॥
 चेत 'चेताग्रनि' चितके माहीं बरिया स्वप्न जँजाला ।
 "मैनरी" भर्म सकल अघ भेटण, 'मनमृतक' जु गुण गाळा ॥ ११० ॥
 मन धृति त्याग वासना त्यागी, तन पर झूठ वेंधाणा ।
 "सुक्षेममारग" सन्तका चलना, दास सपूत भँडाणा ॥ १११ ॥
 "लक्ष्मीमाराग" विकट गति चलना, विचमं विघ्न अनेका ।
 "माया" तीन प्रकार बिलूधा, डाकण भक्षण विसेका ॥ ११२ ॥
 देखत तजे झीन सय खाये, "मान" सबल घट माइ ।
 "बाणरुभग" एक तिन फोकट, भूल परे सुन जाई ॥ ११३ ॥
 कहिहॉ कहा सत सय साक्षी, "कामीनर" जु ठगाणा ।
 तिरिया रूप बाघणी जानो, मदनॉ घाय बचाणा ॥ ११४ ॥
 "सहेन(हि)सुख" रामके शरणे, "साच" बाच नहिं डरणा ।
 कचन हाय बाच करि काने, साचा पार उतरणा ॥ ११५ ॥
 भ्रम जजाल अगत उलझाणो, हायों मड पुजावै ।
 "भ्रमविध्वसनग" अनेध्वर, एरु अखड़ी ध्यावै ॥ ११६ ॥
 के तन "मेख" धारि भूलाणा, मला "कुसग" न होई ।
 गगा नीर सिंधु मध मेला, छोट मिटै नहिं कोई ॥ ११७ ॥
 तेल "सुसग" इन दरशाणा, नीय चदन के सगा ।
 भीतर भिया बिना सन झूटा, बाँश गठ नहिं रगा ॥ ११८ ॥
 ऐसे रखा "असाधु" अचेतन, बायस गिरा न कीर ।
 उलू कहा सर मुख पावत, शठ अज्ञान अधीर ॥ ११९ ॥
 "साधु" सदा सबका सुपदायक, मन बच भ्रम इकधारा ।
 हसा चुगे नाम निजमोती, निपख रह ससारा ॥ १२० ॥
 "देखादेसि" करै नहिं कबहु, कुल मारग को त्यागे ।
 कीडी नाल जान जग उट्र जु जन जग पखे न लागै ॥ १२१ ॥
 जग जन अग एव नहिं कबहु, अनठ पक्षि गति जैसी ।
 पाला देस देस जल मोती, बिनस स्थिर कुण रैसी ॥ १२२ ॥
 "सार्धसाक्षीभूत" सदाई, गुणा अतीत अखडा ।
 सागर तीप रहै बिन आशय, मुका उर्ध्व समडा ॥ १२३ ॥
 ता उपमा बणन कहा गाऊ, "साधु (कि) महिमा" भारी ।
 रामहि राम और नहिं सर भर, इन्द्र जु आदि चिकारी ॥ १२४ ॥
 मध सत गह्या बिना सब स्वप्ना, "मध्ययग" जन रत्ता ।
 यह है "ज्ञानविचार" सनातन, गावै सन्त अनंता ॥ १२५ ॥

“सारंग्राही” हंस जनेश्वर, पय पानी निरवाला ।
 माया ब्रह्म करै उर निर्णय, ततदर्शी मतवाला ॥ १२६ ॥
 “पिउपहिचान” लिया घट भीतर, बाहिर कौन मनावै ।
 जोत उद्योत सर्वज्ञ अगोचर, पूरण ब्रह्म धियावै ॥ १२७ ॥
 यह “विश्वीस” पूर हरि आशा, मन वच कर्म सदाई ।
 पोषण भरण सर्व प्रतिपालन, भूलै नाहिं कदाई ॥ १२८ ॥
 चिन्ता मेदि धरो उर “धीरंज” हरि है पार उतारण ।
 “विरक्तअंग” सारकी चोटों, नटणी वस्त विचारण ॥ १२९ ॥
 गर्व निवार अगमगति अविगत, “समर्थ” करै स होई ।
 तृण ते वज्र वज्र ते तृण सम, नाच नचावै सोई ॥ १३० ॥
 हर्ष र शोक मिट्या भव संशय, “शून्यसरोवर” न्हाया ।
 जन्म र मर्ण गया किण दिशिने, अक्षर मझ समाया ॥ १३१ ॥
 “प्रेम” प्रवाह भया गलताना, “कुशब्द” लखै न कोई ।
 अजरा जरै कौन है शत्रू, मेरा मझ स कोई ॥ १३२ ॥
 “शब्द” स तीर भया मन घायल, जानै वाहन हारा ।
 ताकी वाज गगन मग निकसी, अनहद शब्द अपारा ॥ १३३ ॥
 “कर्म” अनेक मिट्या जन केरा, पाप पुण्य सब जाना ।
 “कौल” जाल ते भया निदावै, ब्रह्म समद सुख माना ॥ १३४ ॥
 “मैच्छी” नीर लह्या चित निर्मल, अघट अमर सुख पाया ।
 ऐसी प्रीति बहुरि नहिं विछुरत, कीर न जाल वधाया ॥ १३५ ॥
 सही “संजीवन” यही ज औपधि, “चित्तकपटी” कहा जानै ।
 मनतें मोट तनों पर उज्जवल, विद्रुम घोर समानै ॥ १३६ ॥
 परगट जान असल यह कमसल, मन वच कर्म बुहारौ ।
 सत्य असत्य कहो कद एकै, कुन्दन तुस्स निकारौ ॥ १३७ ॥
 “गुरुशिखअंग” मिलै जद महरम, ओतप्रोत दरसाणा ।
 वृक्ष ब्रह्म परम करदेवै, आतम तत्त्व ठिकाणा ॥ १३८ ॥
 योही “हेतुप्रीत” सत जानो, दूरापन उरमाहीं ।
 गुडनी डौर सुरति के घोरै, मेरा मुझ मिलहीं ॥ १३९ ॥
 “सूरा” होय खाग सत सुमरण, मन दुर वात हटाणा ।
 “जीवतमृतक” हुया सोपाया, अधरा अमर मिलाणा ॥ १४० ॥
 “मांसबिहारी” सोकह जानै, गोजर श्वान भुलाना ।
 हीरो जन्म “अपारख” खोयो, कोडी हाथ विकाना ॥ १४१ ॥
 “पारख” परी जिको शुधि पाई, द्रव्य हमारा येही ।
 अन्तर परख शिके इकधारा, हीर अमोलक लेही ॥ १४२ ॥

“आनंदेव” को कवे न मानै, जाहरी सन्त हमारा ।
 सो तो मिलाया ब्रह्मसुखसम्पत्ति, भूला जिके गंवारा ॥ १४३ ॥
 ऊचा नीच इसी विधि कहिये, अष्ट अंग नहिं भेदा ।
 प्रिय हरिभक्ति नीचसे नीचा, अष्ट भक्ति कहवेदा ॥ १४४ ॥
 “निर्दा” नहीं साच कह साधू, आतम अर्थ विचारो ।
 हितरी बात समस्त सुखदायक, अवगुण मिथ्या उधारो ॥ १४५ ॥
 गुण तुसार निंदे नहि साधू, रार तुसार दुखावै ।
 “व्यानिर्वरता” आपे माहीं, सब की पीर मिटावै ॥ १४६ ॥
 “सुन्दर” सार फरो अविनाशी, तुम यिन फॉन छुटावै ।
 एक आधार अजोनी आनंद, सायद सन्त बतावै ॥ १४७ ॥
 ‘उपजन अंग’ हृदै यह उपजत, माग विदेश पयाणा ।
 पोट शृंगार तज्या सुरा पावै, आतम तत्त्व ठिकाणा ॥ १४८ ॥
 नाँका नाम तिरो भयसागर, उपजन अंग सदाई ।
 “कस्तूर्यौमृग” ज्यों मत भूलो, भ्रमत मुआ दुखदाई ॥ १४९ ॥
 जावै नहीं “निगुण” शठ दुमति, पवैत सुधा मिलाणा ।
 कोटि प्रकार कहो सुख आतम, मनमुग अज्ञ बंधाणा ॥ १५० ॥
 हरि परताप जिन्हो गति ऐसी, सदा “दीनता” माई ।
 म सो नीच नीचसे नीचा, पतित उधारण सौई ॥ १५१ ॥
 यह “तनमालाभग” वारणा, कितकों दोष बताऊँ ।
 हिंदू तुरक कहा पटदशण, पदके दिशा न जाऊँ ॥ १५२ ॥
 निपट एक निजानंद आनंद, हरि गलतान दियाणा ।
 “मौला” श्वास उश्वास सुमरणा, अजपा जाप समाना ॥ १५३ ॥
 “बैली” जान जग ताँता, गुण्या आश पसारा ।
 जोगी जती सिद्ध कहा तपसी, फल तरबूज विचारा ॥ १५४ ॥
 उदय अकूर आदि सम कहवा खिर अह अवनि मिलाणा ।
 लकड़ी लगी जली जद बेरी, मूल गयो फल खाणा ॥ १५५ ॥
 “बैलि” अनादि साय घर माहीं, “बैहद” आय समाना ।
 तीन प्रकार तजी हृद रचना, अपरम परम कहाणा ॥ १५६ ॥
 सुमरण मेधा विधि अस्थान, आतम शब्द पयाणा ।
 “सुरतिविचारअंग” सब निषय, केवल सुरति समाना ॥ १५७ ॥
 “ब्रह्मसमाधि” साध पद पूरण, नव तत गले अखड़ा ।
 “मायाब्रह्म” (भयो जद) निषय, छाया “वृक्ष” अमदा ॥ १५८ ॥
 अक्षर ब्रह्म क्षरे सोमाया, गुरु परसाद प्रकासी ।
 ररवार “निगुण” (निजनामी), सगुण” जु ममो यकासी ॥ १५९ ॥

“ब्रह्मएकता” एक अभंगी, ता पर अंग न कोई ।
 सवके परे प्रगट सब माहीं, रमता राम स कोई ॥ १६० ॥
 भक्ति विलास प्रगट जन माहीं, अपरम अनुभव धारा ।
 देशकाल उपजत परसंगा, अर्थ शिरोमणि सारा ॥ १६१ ॥
 वाणी चार अंग चोरासी, उपमेय अंग अपारा ।
 परगट साख शिरोमणि साखी, सहुरु शब्द उधारा ॥ १६२ ॥
 शिव अवधूत नमो योगीश्वर, आसण लख चौरासी ।
 एता छन्दवर्ण शिव परगट, आतम एक उपासी ॥ १६३ ॥
 लख मध एक भया चौरासी, सेनापति परवानू ।
 लख चौरासी जीव उपाया, ब्रह्मा सृष्टि विधानू ॥ १६४ ॥
 पोषण भरण सर्वका पालक, विष्णुदेव सब नायक ।
 भक्त उपास दास का रक्षक, घर अवतार सहायक ॥ १६५ ॥
 केवल मंत्र सर्वको बीजक, परगट साख वतावै ।
 तारण तरण परश परमानंद, अनुभव शब्द दिखावै ॥ १६६ ॥
 परगट अंग जनाँ की वाणी, सब तत सार पिछान्या ।
 इसविधि ब्रह्म भया पारायण, महा परम सुख मान्या ॥ १६७ ॥
 अक्षर भया लह्या घर आदू, सूत्र रु तत्त्व जलाया ।
 घण सो काल खाय नहिं सकिहै, वज्र अडंक सवाया ॥ १६८ ॥
 परगट शब्द कृपा गुरु कारण, यह कमज्या जन केरी ।
 इसविधि बीजक द्रव्य दिखाया, कहा कहै मति मेरी ॥ १६९ ॥
 अवर्ण कहा वर्ण में आवै, शब्दों शब्द दिखाया ।
 रामदास सहुरु के शरणै, उर उद्योत सवाया ॥ १७० ॥

दोहा ।

अब्ध तिमिर भ्रम दृष्टिता, दूर करी गुरुदेव ।
 जन रामा आतम उदय, अनुभव पाया मेव ॥ २ ॥
 प्रगटबोध परकासिया, वाणी अंग विचार ।
 देशकाल संयुक्ति सब, खंडण आन विकार ॥ ३ ॥
 गुरु सन्मुख शिख आतमा, प्राप्ति जु जिनके होय ।
 रामशब्द धारण करै, भूल परै नहिं कोय ॥ ४ ॥
 जन अगाध वन्दन सदा, प्रगट दिखायो मोहि ।
 राम साधु छोड़ नहीं, जो कल उतथल होहि ॥ ५ ॥

इति प्रगटबोध ।

(ग्रन्थ)

“ज्ञानविवेक ग्रन्थ” जब आयो, “गुरुमहिमा” परताप दिखायो ।
 “भक्तमाल” चेतो “चेतांचनि”, “जमफौरगती” सन्त करावनि ॥ १ ॥
 “मर्न (से) राबू” करै “जगोजन” घिन, “रणजीत” सूर सन्त मरमन ।
 “अमरबोध ग्रन्थ” भव पारा, “मूलपुराण” सोक्षिया सारा ॥ २ ॥
 “उभयैज्ञान” दुर अक्षर पाया, “आदिवोध” तत अथ समाया ।
 दत्त “आफौशबोध” सबैगी, “नामैमाल” रतनाम अभगी ॥ ३ ॥
 “आत्मसार” लिया तत ताई, “ब्रह्मजिज्ञास” भया घट माँई ।
 “पद्वेशेण” का निर्णय भया, “पद्वेचीसग्रन्थ” ओर थया ॥ ४ ॥
 “बालबोध” जमठ धुर गायो, “पंचमात्रा” स्वरूप दिखायो ।
 “सोलहकला” प्रकट घट माहीं “आत्मापेलि” सजीवन ताहीं ॥ ५ ॥
 “निरालय” हरिजन पद पूरा, “नीसौणी” पदग्रन्थ निज नूरा ।
 निर्णय नाम ग्रन्थ अरथाया, साखी अग सय दर्शाया ॥ ६ ॥
 कवित देखता हरिजश जेता, कुडलिया सबैया हरि हेता ।
 ज्ञानसरोवर झूले जबही, ख-द्रायणा सोरठा सपही ॥ ७ ॥
 दास-उदास र समय खुदबह, अनुभव हरिजन चतविध लिखबह ।
 (श्रीराम-नरची विधाम १७)

इति श्रीरामखेहधर्मप्रकाश सम्पूर्णम् ।

धीरस्तु कल्याणमस्तु ।

अथ श्री १०८ श्रीकबीर साहयके अनुभव शब्द ।

कबीर प्रणमत गुरु गोविंद कू, अब जन घदी सोय ।
 पहल भये परणाम तिहिं, नमो सु आगे होय ॥ १ ॥
 कबीर सब कोउ दरपै कालसु, ग्रह्या विष्णु महेश ।
 काल डरै करतार सों, जय जय जय आदेश ॥ २ ॥

रेखता-

रामरे राम विधाम या जीवको और विधाम नहिं कोइ माई ।
 सग अरु मृत्यु पाताल छूटै नहीं जहाँ जावै तहाँ फाल छाई ।
 आसरे एक निज देवके ऊरै आनके आसरे नाहिं छूटै ।
 अचल के आसरे काल भय को नहीं आनके आसरे काल कूटै ॥
 जप्प अरु तप्प सीध भ्रत थोषण जोष अरु जप्प सय देख छोई ।
 नाम निवाण विन पार पहुचै नहीं वेद अरु पुराण सय देख जोई ।

१ योग्यता, होनेके योग्य ।

नाम परताप तिहुँ लोक छाना नहीं भौसिंधु के तिरन कूं वन्या मेरा ।
 संत अनेक तरि पार पैले गये कहै कवीर निज नाम तेरा ॥ १ ॥
 वारही वार रटि राम रस पीवणा भटकि मत भर्म में भूलि जाई ।
 जहाँ जावै तहाँ सूत सुलझै नहीं उलटि उलझै तहाँ जाय भाई ॥
 सुलटि अवजूद में पलटि मन पवन कूं परम सुखधाम जहाँ प्राण लावै ।
 कहै कवीर वहाँ अजंय विश्राम है रोमही रोम रस राम पावै ॥ २ ॥
 मन वारही वार रंकार रसना रटो सार सुखसीर निज नाम नेरा ।
 पाप का नास अरु ताप लागै नहीं चतुर अस्सी तणा मिटै फेरा ॥
 नाम परताप तिहुँ लोक छाना नहीं शेष शिव विरंचि सब साधु गावै ।
 कहै कवीर गुरु दर्ई है औपधी पीवै सो पार भवसिंधु पावै ॥ ३ ॥
 देह गुण त्यागि अरु लागि हरिनामसुं जागिरे जागि अय कहा सोवै ।
 ज्ञानसमशेर ले मारि मन मीर कूं पांच कूं पकड़ि ज्युं पीर होवै ॥
 गगन का तख्त परि जुगति कर खेलणा रोक नवद्वार ज्युं कमल फूलै ।
 कहै कवीर तहाँ काल लागै नहीं सहज दरियाव में प्राण झूलै ॥ ४ ॥
 नाम ही ज्ञान अरु ध्यान पर नामही नामही भक्ति वैराग थाई ।
 नाम ही प्रेम निज नेम सो नाम ही नाम ही जोगकी जुगति भाई ॥
 शील अरु साँच संतोष पर नाम ही नाम ही जप्प अरु तप्प कीया ।
 कहै कवीर यह हृत्य वाकी नहीं रोमही रोम निज नाम पीया ॥ ५ ॥
 फेर रे फेर मन पवन कूं घेर रे सुरत की डोर सुं जेर भाई ।
 अधः अरु ऊर्ध्व के बीच में रोकणा नाम कूं छांडि नहीं अंत जाई ॥
 निकट विश्राम निजधाम नैड़ा सही गुरां के ज्ञान तें होय पारा ।
 कहै कवीर यों नीर मुकलावणा चूहड़ी चाहका करो चारा ॥ ६ ॥
 पवन के रोकणे मन्न भी बोलता मन्न के रोकणे तन्न बोलै ।
 तन्न के रोकणे तेज में खेलिया तेज में खेल के पाट सोलै ॥
 देव छपालु तव होय छपालुता प्रेम प्रकासका सुख आवै ।
 दास कवीर तहाँ अलख जपता रहो बिना कर तांतियाँ नाद वावै ॥ ७ ॥
 जोगकी जुक्ति विन मुक्ति होवै नहीं जुक्ति विन कर्मही नाहिं छीजै ।
 जोगकी जुक्ति विन साधु पद ना लहै जोगकी जुक्ति विन कौन धीजै ॥
 सुरति मन पवन कूं फेर उलटा चलो शील अरु सांच संतोष धारो ।
 कहै कवीर यों राम रसना जपो काम अरु क्रोध मद लोभ मारो ॥ ८ ॥
 राम कह राम कह राम कह लीजियो राम विन काम नाहिं और कीजै ।
 सुरति मन पवन कूं फेर उलटा चलो रोम ही रोम रस राम पीजै ॥
 आदि ही अंत मध्य एक ही आसरा एक विन दूसरा आन नॉई ।
 दास कवीर यूँ कहत पुकारिके एक तूं एक तूं एक साँई ॥ ९ ॥

भजन के वास्ते सत जन कहत है राम रमतीत यह नाम तेरा ।
 नाम अरु ठाम कुल गाम नहि देखिये अगम अरु निगम दुइ थकत चेरा ॥
 इन्द्रियों द्वार मन वाक पशुचै नहीं सकल परकास करि रहै न्यारा ।
 रूप अरु रेख वषु भेख नहि पाइये कहै कबीर सोइ पीर धारा ॥ १० ॥
 एक बिन दूसरा दृष्टि आवै नहीं एक बिन दूसरा कौन दूजा ।
 एक बिन दूसरी सेव कहो कौन की एक बिन दूसरी कौन पूजा ॥
 पाच अरु तीन का सष मडाण है पर प्रकाश ब्रह्मड फीया ।
 कहै कबीर अप द्वैत दीसै नहीं एक ही इष्ट गुरु देव दीया ॥ ११ ॥
 अलख अल्लाह अवीह समर्थ धनी नाम नियाण ते थाह नाहीं ।
 शेष शिव विरचि ते पार पावै नहीं उदय अरु अस्त नहि धूप छाहीं ॥
 रूप नहि रेख नहि वरण वासा नहीं आप अलेख सष छोड़ दूरा ।
 कहै कबीर कहु लिख होवै नहीं लहे कोई सत्सगुन ज्ञान पूरा ॥ १२ ॥
 कथत है ज्ञान अरु ध्यान पुनि धरत है चलत विचार करि पथ माहीं ।
 सास उसास की गूढ़ी सीयता सुरति की सुई तदा अनंत जाहीं ॥
 रहै निरधार कोई द्वंद्व मं ना पवै मग्न अरु पवन का करत मेला ।
 कहै कबीर फिर फूट चाले नहीं सहज दरियाव में सहज पेला ॥ १३ ॥
 कर्म अरु भर्म ससार सष करत है पीव की परख कोई सत जानै ।
 सुरति अरु निरत मन पवन कू उलटिके गग अरु यमुनके घाट आनै ॥
 पाच कू नाथि के साथ सोई लिया अघर दरियाव का सुफ्त मानै ।
 कहै कबीर कोई सत निभय रहै जन्म अरु मरण का भर्म भानै ॥ १४ ॥
 चक्र के बीच में कमल अति फूलिया तासका सुफ्त फोर सत जानै ।
 कुल्फ तब द्वार अरु पवन कू रोकणा भुक्कुटी मध्य मत भँवर ठानै ॥
 सिंधु की घोर चहुँ ओर तहाँ देव है अघर दरियाव का सुफ्त मानै ॥
 कहै कबीर यूँ सुख सिंधु झूल है जंम अरु मरण का भर्म भानै ॥ १५ ॥
 गग अरु जमुन के घाट कू ओजले भँवर गुजार जहाँ जुग भाई ।
 सरस्वती नीर तहाँ देख निर्मल वहै आसका जल पियों पाप जाई ॥
 पाच की प्यास तहाँ देख पूरी हुई तीन की ताप तहाँ लगे नाहीं ।
 कहै कबीर तहाँ अगम का खेल है गैब का चानपा देख माहीं ॥ १६ ॥
 धोले धोल अय धुप कू है रखा धोल मन सुवटा ब्रह्म वाणी ।
 पाच कू पलट फरि तीन कू जीत ले महल चौथैतणी खबर जाणी ॥
 गगन गरजै तहाँ नीर नीसर झरे पाक पीवै कोई सतपूरा ।
 कहै कबीर मसतान माता रहै बिना मृदग तदा वजत दूरा ॥ १७ ॥
 अगम अस्थान गुरु ज्ञान बिन ना लहे लहे कोई सत गुरु ज्ञान पूरा ।
 द्वादश पलटि करि पोकशा प्रगटे गगन गरजै तहाँ वजत दूरा ॥

इला अरु पिंगला सुपुष्पा सोझि करि अधः अरु ऊर्ध्व विच ध्यान लावै ।
 कहै कवीर सोई संत निरभै रहै कालकी चोट फिर नाहिं खावै ॥ १८ ॥

छप्प्या अवधूत मस्तान माता रहै ज्ञान वैराग सूं छल्या पूरा ।
 सास उसास का पेस प्याला पियै गगन गरजै तहां वजै तूरा ॥

पूठ संसार सूं राम राता रहै जतन जरणा लियां जुगति खेलै ।
 कहै कवीर यूं पीर सूं सर खरू सहज सुखधाम में प्राण मेलै ॥ १९ ॥

संत की चाल संसार सूं भिन्न है सकल संसार में चहल वाजी ।
 हिंदू मुसलमान दोउं दीन शरहद वने वेद कत्तेव प्रपंच साजी ॥

हिंदू को नेम आचार पूजा घनी ब्रत एकादशी रहै राजी ।
 वाकरा मारि मुख मांस भक्षण करै भक्ति नहिं होत या दगावाजी ॥

सर्व वध जीव अपराध के मूल है कठिन या चूक तुम चेत याजी ।
 सर्व धर्म ऊपरै कृष्ण गीता कथी कृष्ण का कहा तू मान याजी ॥

कहा गीता पढ़ी दृष्टि खुल्ही नहीं यों वकिमुवा नर मूढ़ पाजी ।
 मुहम्मद या करीम कृष्ण कहाँ क्या फरक वहस कर सुनो कहा वीन वाजी

मुसलमान कलमा पढ़ै तीस रोजा करै वांग निवाज धुन करत गाढ़ी ।
 बकरी मुरगी जीव जहै करै गाय पछाड़ि करि कूह काढ़ी ॥

जुलूम पता करै विहिश्त काहे मिलै खून अपराध की व्याधि वाढ़ी ।
 होय हिसाब तब जाव क्या देत है ले चले फरिश्ते पकरि दाढ़ी ॥

होय तंवीर जब कठिन कुंदी करै चाम दल कष्ट तहाँ परै गाढ़ी ।
 मुहम्मद महरवान दया दिलसे करो जहां रोजा तहां विहिश्त ठाढ़ी ॥

जहाँ रब राज तहाँ बाज अनहदतणी महरपद मुहर्रममें सुरति गाढ़ी ।
 कहै कवीर जहाँ साहिबी सो करै आप तिन चीन्ह सब कुफुर छाड़ी ॥ २० ॥

तिलक माथै दिया हाथ में लाकड़ी भजन का भेव तो नाहिं पाया ।
 शील अरु सांच संतोष अंतर नहीं कनक अरु कामिनी जहर खाया ॥

गूढ़ा पहिरि करि वक्र आसन किया मच्छली गिटन सूं हेत भारी ।
 कहै कवीर जब काल गढ घेर है कौन गति होयगी जीव थारी ॥ २१ ॥

पर्वताँ दोय में जीव बहु उलझिया वनी के बीच में लूट लीया ।
 पांच पैडायताँ प्रगट पैडादिया तासकै बीच कोइ संत जीया ॥

भीर भगवंत अरु शरण गुरु देव की घाटियाँ लंघि करि पार हवा ।
 कहै कवीर यूं खेयलै सावती बहुरि विपधार में नाहिं वूवा ॥ २२ ॥

करत परतीत सो खाय गोता सही रहै निरभै तहां चोर लागै ।
 अग्नि के संग ज्यूं घीव पिलघल चलै कामिनी संग यूं काम जागै ॥

काम बलवान सब जीव अधा किया पड़या मन सारथी सग झूले ।
 कहै कवीर कोइ सत जन ऊबरे नाम निर्वाण नहि पलक भूलै ॥ २३ ॥
 तरक ससार से फरक फारक सदा गरक गुरु घान में सदा जोगी ।
 अध अर ऊर्ध्व के बीच आसन किया बक प्याला पियै रस्स भोगी ॥
 अधर दरियाव तहाँ जाय डोरी लगी महल बारीक में भोज पाया ।
 कहै कवीर यू सत निरभै भया परम सुख धाम जहा प्राण लाया ॥ २४ ॥
 देव निर्वाण तहाँ बाण लागे नही सकल काला सिरै काल देवा ।
 बिष्णु शिव शेष अज पार पावे नही बंद अर सूर दोउ करत सेवा ॥
 तेज क्षिति पवन जल रहत आभा महीं निगम हू कहत नहि पार आवै ।
 कहत अगाध सब साध सेधे सदा दास कवीर तहाँ शीश न्वावै ॥ २५ ॥
 सधा साँइयाँ एक तू अयर दूजा नही दृष्टि दीसै जिकी सध माया ।
 गुणा के दृश्य परपच सन यिनसही दीसता नही कोइ रहण पाया ॥
 यह अर महु महदादि धिर नों रहै रहैगा आदि सोई अत माँइ ।
 कहै कवीर मैं तासकी यद्गी एक भरपूर सयँझ साँइ ॥ २६ ॥
 पाव अर पलक फी आरती कौनसी रैण दिन आरती सत गावै ।
 घुरत नीसाण जहाँ मैव की झालरों मैव की घट का नाद आवै ॥
 तहाँ नीच बिन देहरा नाम निवाण है गगनका तख्त पर जुकि सारी ।
 कहै कवीर तहाँ रैणदिन आरती पातियों पाँच पूजा उतारी ॥ २७ ॥
 साँइया आप की सेव तो आप ही जान हो आप का मेघ कहो कौन पावै ।
 आपनी आपनी बुद्धि अनुमान है पचन बिलास करि लहर लावै ॥
 हसो मोहि आत है देख वा उकि को निगमहू कहत नहि पार पावै ।
 कहै कवीर हय सैन गूगातणी गूग होये सोई सैन पावै ॥ २८ ॥
 रजा तुम साँइयाँ करो सो होयगी आपकी रजा कहो कौन मेटे ।
 धूडता जीय तारे तुझे पलक में केइ असरय जुग नाहिं मेटे ॥
 उलटका पलट अर पलटका उलट है आपका खेल कहो कौन पावै ।
 पलक में भाज करि फेरि रचना करै कहै कवीर मैं रक्षा दावै ॥ २९ ॥
 खेल अवधूत का मदा अजूत है दूत परपच का लेस नाहीं ।
 गुणमयी दृश्य सब कालकी दाढमें शेष शिव बिरचि अर विष्णु तार्हीं ॥
 रहै निर्धार आधार धिर ना रहै विसर ससार आधार माहीं ।
 कहै कवीर यह खेल निश्चय किया जन्म अर मरण का भर्म जाहीं ॥ ३० ॥
 देख अवधूत का घान का घेसला कालके जाल कू दूरि तोड़े ।
 गुणमई दृश्य कू काटि पायमाळ करि पाच पचीस कू पलटि मोड़े ॥
 राग अर दोषनी भीत कू दाहि करि गरम के कोटका फेर फोड़े ।
 कहै कवीर यू भेम परकास करि सुरत अर निरत का तार जोड़े ॥ ३१ ॥

सेलियाँ वांक्रियाँ देख अवधूत की जीवता मरै सोइ ठोड़ पावै ।
 तीर खुरसाण का बहुत तीखा वहै लगै उर माहिं डिंग नाहिं जावै ॥
 राजसा माहिं गदगोल बहु ऊपज्या तामसा माहिं अंधार भाई ।
 कहै कबीर निह सत्तका तापियै जीव की वृत्ति क्युं ठीक थाई ॥ ३२ ॥
 तत्त्व कूं छाँडि निह तत्त्व कूं सब कथै भ्रम्म में पड़्या सब मेप धारी ।
 मुकुट करि जटा शिर तब जोगी भया पहर करि मुंदरा कान फारी ॥
 एक नागे भये सर्व लज्जा तजी वज्र कच्छोट कस काम जारी ।
 छेद अब जुज घर गूधरु वाय करि पाखंड केते कहुं गर्व प्रहारी ॥
 आकाश मौनि मुख उरध बाह नखी दीह निशि रहै ठाढेज वारी ।
 बंध पग खंभ से उरध मुख झूलत रहै धूम घोटत रहै कस्स कारी ॥
 अन्न भोजन तजै दूध रोगन करै वजै जग माहिं मैं दूध धारी ।
 लूण कूं त्याग करि भये अलूणिया बैठ के गुफा में लाय तारी ॥
 तिलक छापा क्रिया मूर्ति पूजा लिया शंख धुन आरती जोति जारी ।
 सेव कीन्ही सही देव, चीन्हा नही आपरा मत्त तजि जड़ पुजारी ॥
 शानी पंडित बडे गीता भागवत पढ़े कर्म की भूतना नाहिं टारी ।
 इतना विटंबसे वस्तु न्यारी रही ज्ञान की दृष्टि से लीज्यो विचारी ॥
 भरम कूं त्याग करि लागि निज परम से इसे जन कोइ निज ब्रह्मचारी ।
 कहै कबीर सोइ संत जन जौहरी काटि जम फंद सब को संघारी ॥ ३३ ॥

इत्यलम् ।

अथ श्रीनामदेवजी महाराज के अनुभव पद ।

१

जौलंगि रामनाममें हित न भयो तौलंगि मेरीमेरी करतां जन्म गयो । टे०
 लाग्यो पंक पंक ले धोवै निर्मल न होवै जन्म विगोवै ॥ १ ॥
 भीतर मैला बाहिर चोखा पाणी पिंड पखालै धोखा ॥ २ ॥
 नामदेव कहै सुरभी परहरिये मेड़ पूछ कैसे भवजल तिरिये ॥ ३ ॥

१ श्रीमद्भगवद्गीता, पिंगलगीता, शंपाकगीता, मंकिगीता, धोध्यगीता, विचख्यु-
 गीता, हारीतगीता, वृत्रगीता, पराशरगीता, हसगीता, अनुगीता, ब्राह्मणगीता, अच-
 धूतगीता, अष्टावकगीता, ईश्वरगीता, उत्तरगीता, कपिलगीता, गणेशगीता, देवीगीता,
 पांडवगीता, ब्रह्मगीता, भिक्षुगीता, यमगीता, व्यासगीता, शिवगीता, सूतगीता,
 सूर्यगीता, इत्यादि।

पद २

माह गोविंद क थाप गोविंद जाति पाति गुरु देव गोविंद । डेर
गोविंद ज्ञान क गोविंद ध्यान सदा आनदी राजाराम ॥ १ ॥
गोविंद गाथै गोविंद नाथै गोविंद भेष सदा नृत्य काछै ॥ २ ॥
गोविंद पाती गोविंद पूजा नामो भणै मेरे देव न दूजा ॥ ३ ॥

पद ३

इतना कहत तोहि कहा लागत । रामनाम ले सोयत जागत । डेर
ध्रुव प्रह्लाद इह गुण तारे । रामनाम अक्षर हृदै बिचारे ॥ १ ॥
रामनाम सनकादिक राता । रामनाम निभयपद दाता ॥ २ ॥
भणत नामदेव भाव छै पेसा । जैसी मनसा लाभ है तैसा ॥ ३ ॥

पद ४

अय तब रामनाम निस्तारै ।
साठ घड़ी में एक घड़ी रे सोई सकल अघ जारै ॥ डेर
काशी पुरी मँझ गवरापति अह निशि सदा पुकारै ।
फीट पतंग सुनत गति पायै गोविंद गुण बिस्तारै ॥ १ ॥
बजामेल मनिका शुक पक्षी रसना नाम उचारै ।
गज पशु व्याध तिरै हरि सुमिरत महिमा ध्यास बिचारै ॥ २ ॥
परम पुनीत स्वरूप हरि वासर निजजन हरि व्रत धारै ।
नामदेव कहै सोइ दास कहायै जीवतैं छिन न बिसारै ॥ ३ ॥

पद ५

राम भक्ति बिन गति न तिरनकी कोरि उपाय जो करही रे नर ।
जल सींचे करि जतन प्रवाले आव यँबूर न फलही रे नर ॥ डेर
भापा थाप और कू निंदै गर्व मान के मारे ।
फिर पीछै पछिताहुगे वीरे रत्न न मिलहि उधारे रे नर ॥ १ ॥
यह ममता अपनी जनि जानो धन जोवन सुत दारा ।
बालू के मदिर बिनस जाहिंगे झूठा करो पसारा रे नर ॥ २ ॥
जोग न भोग मोह नहि माया कहा भयो धनमें चासा ।
चरनकमल अनुराग न उपज्यो वच लग झूठी आशा रे नर ॥ ३ ॥
मनुष्य जन्म आय नहिं चेतै अघे पशु गवाय ।
तेरे शिर फाल सदा शर साथे नामदेव करत पुकारा रे नर ॥ ४ ॥

पद ६

जिह्वा बोलै तो रामहि बोल । नदितर चढ़न कषाट न खोल ॥ डेर ॥
जो बोलिये तो कहिये राम । आन बरुन से नहिं काम ॥ १ ॥

रामनाम मोरे हिरदै लेख । राम बिना सब फोकट देख ॥ २ ॥
नामदेव भणै मेरे एको नाम । रामनाम की मैं बलि जाम ॥ ३ ॥

पद ७

हरि भज हरि भज हरि भज मूल विन हरि भजन परै मुख धूल । टेर
अनेकवार पशु है अवतन्यो । लख चौरासी भर्मत फिन्यो ।
पायो नहीं कहीं विश्राम । सतगुरु शरण कह्यो नहीं राम ॥ १ ॥
राज काज सुत वित सब जाय । अविनाशी से प्रीति लगाय ।
यह अनुमान भक्त ब्रत धारै । जरा मरण भव संकट टारै ॥ २ ॥
गुण सागर गोविंद गुण गाय । अपनो विरद विसर जनि जाय ।
प्रणमत नामदेव संत सधीर । चरण शरण राखो हरि तीर ॥ ३ ॥

पद ८

रामनाम मेरे पूंजी धना । जा पूंजी मेरो लागो मना । टेर ।
साह की पूंजी आवै जाय । कवह आवै मूल गमाय ॥ १ ॥
यह पूंजी है अगम अपार । ऐसा कोई न साहकार ॥ २ ॥
जाली जलै न खाई खाय । राजा डंडे न चोर लेजाय ॥ ३ ॥
अलख निरंजन दीन दयाल । नामदेवके धन श्रीगोपाल ॥ ४ ॥

पद ९

भक्ति आप मोरे बाबुला । तेरी मुक्ति न माँगूं हरि बीडुला । टेर
भक्ति न आपै तो तन आहूं । कोटि करै तो भक्ति न छाहूं ॥ १ ॥
अनेक जन्म भ्रम तो फिन्यो । तेरो नाम ले ले उधन्यो ॥ २ ॥
नामदेव कहै तूं जीवन मोरा । तूं सायर मैं मच्छा तोरा ॥ ३ ॥

पद १०

सन्त प्रवेणी भक्ति आपिला नहीं आपिला तो प्राण त्यागिला । टेर
हमचा थाती तुम्ह वस भइला अमचा जीवला किमचा लागिला ॥ १ ॥
च्यार मुक्ति आष्टा सिधि आपूं भक्ति न आपूं दास नामइया ॥ २ ॥
नामदेव बीडुल सनमुख भक्ति आपिला मुक्ति त्यागिला ॥ ३ ॥

इत्यलम् ।

अथ श्रीरैदासजी महाराज के अनुभव

पद १

ऐसी भक्ति न होई रे भाई ।
राम नाम विन जो कछु करिये सो सब भर्म कहाई । टेर

पद २

भाइ गोविंद ह राष गोविंद जाति पाति गुरु देव गोविंद । डेर
गोविंद ज्ञान ह गोविंद ध्यान सदा आनदी राजाराम ॥ १ ॥
गोविंद गावै गोविंद नावै गोविंद मेव सदा नृत्य काछै ॥ २ ॥
गोविंद पाती गोविंद पूजा नामो भण मेरे देव न दूजा ॥ ३ ॥

पद ३

इतना कहत तोहि कहा लागत । रामनाम ले सोचत जागत । डेर
धुव प्रदाइ इह गुण तारे । रामनाम अक्षर हृदै विचारे ॥ १ ॥
रामनाम सनकादिक राता । रामनाम निभयपद दाता ॥ २ ॥
भगत नामदेव भाय है पेसा । जैसी मनसा लाभ है वैसा ॥ ३ ॥

पद ४

जय तव रामनाम निस्तारै ।
साठ घड़ी में एक घड़ी रे सोई सकल अघ जारै ॥ डेर
काशी पुरी मँझ गवपति अह निशि सदा पुकारै ।
फीट पतंग सुनत गति पार्वि गोविंद गुण विस्तारै ॥ १ ॥
अजामेल गनिका शुक पक्षी रसना नाम उचारै ।
गज पशु व्याध तरे हरि सुमिरत महिमा व्यास विचारै ॥ २ ॥
परम पुनीत स्वरूप हरि वासर निजजन हरि व्रत धारै ।
नामदेव कहै सोइ दास कहावै जीवतें जिन न विसारै ॥ ३ ॥

पद ५

राम भक्ति धिन गति न तिरनकी कोहि उपाय जो कछी रे नर ।
जल सींचे करि जठन प्रवाले आव उबूर न फलही रे नर ॥ डेर
आपा थाप और कू निंदै गर्व मान के मारे ।
फिर पीछे पछिताहुने यारे रत्न न मिलहि उधारे रे नर ॥ १ ॥
यह भमता अपनी जनि जानो घन जीवन सुत दारा ।
बालू के मंदिर बिनस जाहिगे झूठा करो पसारा रे नर ॥ २ ॥
जोग न भोग मोह नहि माया कहा भयो धनमें वासा ।
चरनकमल अनुराग न उपज्यो तब लग झूठी आशा रे नर ॥ ३ ॥
मनुष्य जन्म आय नहिं छेते अवे पशु गचारा ।
तेरे शिर फाल सदा शर साथे नामदेव करत पुकारा रे नर ॥ ४ ॥

पद ६

जिह्वा थोले तो रामहि खोल । नहिरत वदन कपाट न खोल ॥ डेर ॥
जो बोलिये तो कहिये राम । आन बरुन से नहिं काम

रामनाम मोरे हिरदै लेख । राम विना सब फोकट देख ॥ २ ॥
नामदेव भणे मेरे एको नाम । रामनाम की मैं बलि जाम ॥ ३ ॥

पद ७

हरि भज हरि भज हरि भज मूल विन हरि भजन परै मुख धूल । टेढ़
अनेकधार पशु है अवतन्यो । लख चौरासी भर्मत फिन्यो ।
पायो नहीं कहीं विधाम । सतगुरु शरण कह्यो नहीं राम ॥ १ ॥
राज काज सुत वित सब जाय । अविनाशी से प्रीति लगाय ।
यह अनुमान भक्त व्रत धारै । जरा मरण भव संकट टारै ॥ २ ॥
गुण सागर गोविंद गुण गाय । अपनो विरद विसर जनि जाय ।
प्रणमत नामदेव संत सधीर । चरण शरण राखो हरि तीर ॥ ३ ॥

पद ८

रामनाम मेरे पूंजी धना । जा पूंजी मेरो लागो मना । टेढ़ ।
साह की पूंजी आवै जाय । कबहू आवै मूल गमाय ॥ १ ॥
यह पूंजी है अगम अपार । ऐसा कोई न साहूकार ॥ २ ॥
जाली जलै न खाई खाय । राजा डंडे न चोर लेजाय ॥ ३ ॥
अलख निरंजन दीन दयाल । नामदेवके धन श्रीगोपाल ॥ ४ ॥

पद ९

भक्ति आप मोरे बाबुला । तेरी मुक्ति न माँगूँ हरि बीडुला । टेढ़
भक्ति न आपै तो तन आहुँ । कोटि करै तो भक्ति न छोड़ूँ ॥ १ ॥
अनेक जन्म भ्रम तो फिन्यो । तेरो नाम ले ले उधन्यो ॥ २ ॥
नामदेव कहै तूँ जीवन मोरा । तूँ सायर मैं मच्छा तोरा ॥ ३ ॥

पद १०

सन्त प्रवेणी भक्ति आपिला नहीं आपिला तो प्राण त्यागिला । टेढ़
हमचा थाती तुम्ह वस भइला अमचा जीवला किमचा लागिला ॥ १ ॥
व्यार मुक्ति आष्टा सिधि आपुं भक्ति न आपुं दास नामइया ॥ २ ॥
नामदेव बीडुल सनमुख भक्ति आपिला मुक्ति त्यागिला ॥ ३ ॥

इत्यलम् ।

अथ श्रीरैदासजी महाराज के अनुभव

पद १

पेसी भक्ति न होई रे भाई ।
राम नाम विन जो कलु करिये सो सब भर्म कहाई । टेढ़

श्रीरैदास० पद

भक्ति न रसवान भक्ति न कथे ध्यान
भक्ति न घनमें गुफा खुदाई ।
भक्ति न ऐसी हास भक्ति न आशा पास
भक्ति न यहु सब कुल कामिनि गाई ॥ १ ॥
भक्ति न इंद्री गाथे भक्ति न जोग साधे
भक्ति न अहार घटावे यह सब कर्म कहाई ।
भक्ति न निद्रा साधे भक्ति न वैराग्य बाधे
भक्ति नहीं यह सब वेद बडाई ॥ २ ॥
भक्ति न मूड मुडावे भक्ति न माला दिखावे
भक्ति न चरन धुवाये यह सब मुनिजन कहाई ।
भक्ति तोला न जानी जोला न आपको आप धपानी
जोड़ जोड़ करे सोई सोई कर्म चडाई ॥ ३ ॥
आपो गयो तब भक्ति पाई ऐसी है भक्ति भाई
राम मिले आप गुण लोयो कविसिद्धि सब जगवाई ।
कहै रैदास छूटी आशा तब हरि ताही के पासा
आत्मा स्थिर तब सब निधि पाई ॥ ४ ॥

पद २

परचै राम रमै जो कोई पारस परसे बुबुधि न होई । डेर
जो दीसे सो सकल विनास अण दीठे नार्हा विश्वास ।
धरण रहित कहै जो राम सो भक्ता केवल निष्काम ॥ १ ॥
फल कारण फूली बनराई उपज्यो फल तब पहुप पिलाई ।
झानहि कारण कर्म कमाई उपज्यो ज्ञान तब कर्म नसाई ॥ २ ॥
बटक बीज जैसा आकार एसयो तीन लोक रिस्तार ।
जहाँ का उपजा तहाँ समाई सहज शून्यर्म रह्यो लुकाई ॥ ३ ॥
जो मन बदे सोई बन्द अमावस मं जैसे दीसे चंद ।
जल में जैसे तूया तिरै परचै पिंड जीवै नहिं मरे ॥ ४ ॥
सो मन कौन जो मनकु खाइ विन द्वारे त्रैलोक्य समाई ।
मनकी महिमा सब कोई कहै पढित सो जो अनुभव रहै ॥ ५ ॥
कहै रैदास यह परम वेग्य रामनाम किन जपहु सभाग ।
धृत कारण दधि मथै सयान जीवनमुक्त सदा न्यान ॥ ६ ॥

पद ३

अथतो में हान्यो रे भाई ।
धकित अयो सब झाल चालतैं लोकन वेद बडाई । डेर

श्रीरैदास० पद

थकित भयौ नाचण अरु गावण थाकी सेवा पूजा ।
 काम क्रोध ते देह थकित भइ कहूं कहाँ लागि दूजा ॥ १ ॥
 राम जन होउं न भक्त कहाऊं चरण पखालुं न देवा ।
 जोइ जोइ करुं उलटि मोहि बाँधै ताते निकट न सेवा ॥ २ ॥
 पहिले ज्ञानका किया चानणा पीछे दिया बुझाई ।
 शून्य सहज में दोऊं त्यागे राम कहूं न खुदाई ॥ ३ ॥
 हरि वस है पटकर्म सकल अरु दूरव कीन्ही सेऊं ।
 ज्ञान ध्यान दोउं दूरव कीन्हे दूरव छाँडे तेऊं ॥ ४ ॥
 पाँचूं थकित भए हैं जहाँ तहाँ जहाँ तहाँ थिति पाई ।
 जा कारन में दोन्यो फिरतो सो अब घट में पाई ॥ ५ ॥
 पाँचूं मेरी सखी सहेली तिन निधि दई दिखाई ।
 अब मन फूल भयो जग महियां उलट आपमें समाई ॥ ६ ॥
 चलत चलत मेरो निज मन थाक्यो अब मोपैं चल्यो न जाई ।
 सोई सहज मिले सो सन्मुख कह रैदास बताई ॥ ७ ॥

पद ४

गाइ गाइ अब क्या कहि गाई गावन हाराकों निकट बताई । डेर
 जवलग है या तन की आशा तवलग करै पुकारा ।
 जब मन मिल्यो आश नहिं तनकी तब को गावण हारा ॥ १ ॥
 जवलग नदी न समुद्र समावै तब लग बढै अहंकारा ।
 जब मन मिल्यो रामसागर से तब यहु सिंदी पुकारा ॥ २ ॥
 जवलग भक्ति मुक्ति की आशा परमतत्त्व सुण गावै ।
 जहाँ तहाँ आश धरत है यहु मन तहाँ तहाँ कछु न पावै ॥ ३ ॥
 छाँडै आश निराश परम पद तब सुख सत कर होई ।
 कहै रैदास जासे और कहत है परम तत्त्व अब सोई ॥ ४ ॥

पद ५

रामजन होउं न भक्त कहाऊं सेवा करों न दासा ।
 गुनी जोग जिंग कछु न जानों तातें रहों उदासा । डेर
 भक्त हुआ तो चढै बडाई जोग करों जग मानै ।
 गुणी हुआतें गुणि जन कहै गुणी आपकों तानै ॥ १ ॥
 ना मैं ममता मोह न महिमा यह सब जाय विलाई ।
 दोइख विहिस्त दोउ सम करि जानों दुहुवातें तरक है भाई ॥ २ ॥
 मैं तैं ममता देख सकल जुग मैं तैं मूल गमाई ।
 जब मन ममता एक एक मन जयहि एक है भाई ॥ ३ ॥

श्रीरैदास० पद

कृष्ण करीम राम हरि राघव जब लग एक एक नहि पेखा ।
वेद कतेब पुरान कुरानन सहज एक नहि बेखा ॥ ४ ॥
जोइ जोइ कर पूजिये सोई सोई काचा सहज भाव सतहोई ।
कह रैदास भैं साहि कू पूजू जाके गाम न ठाम चाम नहि कोई ॥ ५ ॥

पद ६

भाई रे भरम भक्ति सो जान जोलों नहि साचसे पहिचान । टेर
भरम नाचण भरम गावण भरम जप तप दान ।
भरम सेवा भरम पूजा भरम से पहिचान ॥ १ ॥
भरम पद कर्म सकल सहिता भरम ग्रह धन जान ।
भरम करि करि कर्म कीये भरम की यह घान ॥ २ ॥
भरम इन्दी निग्रह कीये भरम गुफामे वास ।
भरम तोला जाणिये शून्य की करै आस ॥ ३ ॥
भरम शुद्ध शरीर तोलीं भरम नाम विनाम ।
भरम भणै रैदास तोलीं जोलों चाहि ठाम ॥ ४ ॥

पद ७

भाई रे राम कहा है मोहि चतायो सत्य राम ताके निकट न आवो । टेर
राम कहत सब जगत भुलाना सो यह राम न होई ।
कर्म नकर्म कदणामय केदाव करता नाम स कोई ॥ १ ॥
जिहि रामहि सब जग जानै भ्रम भूले रे भाई ।
आप आपतैं कोई न जानै कहै कौन से जाई ॥ २ ॥
सत तन लोभ परस जिव तन मन गुन परसन नहि जाई ।
अखिल नाम जाके ठोर न कितहु क्यों न बडो समुझाई ॥ ३ ॥
भणै रैदास उदास साही तैं करता कोही भाई ।
केवल करता एक सही कर सत्य राम तिहि ठाई ॥ ४ ॥

पद ८

ऐसो कछु अनुभव कहते न आवै साहिव मेरो मिलै तो को बिगरावै । टेर
सब में हरि है हरि में सब है हरि आपनपो जिन जाना ।
अपनी आपा साखी न दूसरि जाननद्वार समाना ॥ १ ॥
याजीगर से रहन रहीजे बाजी का मर्म अब जाना ।
बाजी खूठ साच याजीगर जाना मन पतियासा ॥ २ ॥
मन स्थिर होय तो कोई न सूझै जानै जानन द्वारा ।
कह रैदास विमल विवेक सुख सहज स्वरूप समारा ॥ ३ ॥

पद ९

नरहरि चंचल मति मोरी कैसे भक्ति करें राम तोरी । डेर
तू मोहि देखै हों तोहि देखूं गीति परस्पर होई ।
तू मोहि देखै न हों तोहि देखूं यह बुधि सब मति खोई ॥ १ ॥
सब घट अंतर रमसि निरंतर मैं देखत ही नहीं जाना ।
गुन सब तोर मोर सब अबगुन कृत उपकार न मान्य ॥ २ ॥
मैं तैं तोर मोर असमंजस कैसे करि निस्तारा ।
कह रैदास कृष्ण करुणामय जय जय जगत अधारा ॥ ३ ॥

पद १०

प्रभुजी तुम चंदन हम पाती जाकी वास अंग अंग सम्राती । डेर
प्रभुजी तुम दीपक हम वाती जाकी जोति जगै दिन राती ॥ १ ॥
प्रभुजी तुम धन वन हम मोरा जैसे चितवत चंद चकोरा ॥ २ ॥
प्रभुजी तुम मोती हम धागा जैसे सोन ही मिलत सुहागा ॥ ३ ॥
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा ऐसी भक्ति करै रैदासा ॥ ४ ॥

इत्यलम् ।

वैष्णवधर्ममंत्र ।

कवित्त ।

धूणी गिरनार मंत्र तारक धाम रामनाथ
विलास चित्रकूट हर सीता जान है ।
ऋषि विशिष्ट वेद ऋग देव हनुमान तीर्थ
क्षेत्र है धनुष बीज अग्नि वखान है ॥
रमाचारज शाखा है अनंत मुक्ति सामीप्यक
अच्युत गोत्र वर्ण शुक्ल सुख खान है ।
राघव उपासी धर्मशाला अयोध्या है पर-
दक्षिणा गोदावरी अखाड़ा निर्वाण है ॥ १ ॥

यज्ञोपवीतधारणमंत्र ।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सदृजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ १ ॥

कटी माला धारणमंत्र ।

तुलसीकाष्ठसभूते माले विष्णुजनप्रिये ।
त्वा धारयाम्यह कण्ठे कुर्व मा रामवत्सलम् ॥ १ ॥

यद्योपवीतयद्वाया सदा तुलसिमालिका ।
क्षणमात्रपरित्यागाद् विष्णुद्रोही भवेन्नर ॥ २ ॥

चरणामृतमंत्र ।

अकालमृत्युहरण सर्पव्याधिविनाशनम् ।
विष्णुपादोदक पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम् ॥ १ ॥
यकादशीमत्र गीता गगाम्बु तुलसीदलम् ।
विष्णो पादाम्बु नामानि भरणे मुक्तिदानि च ॥ २ ॥

तीर्थं प्रसादस्वीकारान्तर वैष्णवो द्विज ।
न हस्तक्षालनं कुर्यात् न तत्राचमनक्रिया ॥ ३ ॥

तुविकाकमण्डलुशुद्धिमंत्र ।

❀ जलं दहति पापानि कमण्डलुगतं तु यत् ।
गंगातोयसमं नित्यं जलपात्रं च शुद्ध्यति ॥ १ ॥

कठारीशुद्धिमंत्र ।

❀ जले चाग्निं स्थले चाग्निरग्निश्च वायुमण्डले ।
त्रिभिरग्निप्रकाशैश्च काष्ठपात्रं च शुद्ध्यति ॥ १ ॥

कई महात्माओं के आविर्भाव और तिरोभावका समय वि. सं. ।

नाम	ग्राम	प्रावर्भाव	दीक्षा	मोक्ष
श्रीशंकर स्वामी	कालपी(दक्षिण)	८४४		८७६
श्रीरामानुज स्वामी	काचीपुरी	१०७४		११९४
श्रीरामानंद स्वामी	काशी	१३५६		१५०५
श्रीकबीर साहब	काशी	१४५५		१५७५
श्रीहरीदासजी म.	डीडवॉणा	१४७५		१७००
श्रीजाभाजी	पीपासर (वीकानेर)	१५०८		१५९३
श्रीगुरुनानक साहब	पंजाब	१५२६		१५९५
श्रीजसूनाथजी	रुतरियासर (वीकानेर)	१५३९		१५६३
श्रीसूरदासजी	वृंदावन	१५४०		१६२०
श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी	काशी	१५८९		१६८०
श्रीस्वामीजी दादूदयालजी म.	नराणा	१६०१	१६१२	१६६०
श्रीसुन्दरदासजी म.	कोषाणा	१६५३		१७४६
श्रीसन्त दासजी म.	दातडा	१६८६	१७४२	१८०६
श्रीचरणदासजी म.	डहरा (अलवर)	१७६०		१८३९
श्रीजैमलदासजी म.	दुलचासर (वीकानेर)		१७६०	१८१०
श्रीदरियासाजी म.	रैण	१७३३	१७६९	१८१५
श्रीहरिरामदासजी म.	सिंहथल		१८००	१८३५
श्रीनारायणदासजी म.	सिंहथल		१८०६	१८५३
श्रीरामचरणजी म.	साहपुरा	१७७६	१८०८	१८५५
श्रीरामदासजी म.	खैदापा	१७८३	१८०९	१८५५
श्रीदयालदासजी म.	खैदापा	१८१६		१८८५
श्रीपैरशरामजी म.	जोध सूरसागर	१८२४		१८९६

१ श्रीरामब्रह्मसद्धर्मोपदेश मूलार्थ । २ विरक्तशाखाप्रवर्तक श्रीपरशरामजी म. सं. १८६० में जोध. सूरसागर विराजे । आपकी अनुभववाणी १५००० श्लोक संख्याकी है ।

॥ श्रीः ॥

संग्रह—सार ।

अथ निर्गुण भजनमाला ।



वधाया ।

॥ श्रीः ॥

संग्रह-सार ।

अथ निर्गुण-भजनमाला ।

वधावा.

१

म्हारा हरिजन आइजो म्हारे आंगणिये थानें ले मोतीडा वधाऊं । टेर ।
सुरे गायरो गोवर मंगाऊं घर आंगणियो निपाऊं ।
कंचनकलस वधाय गुरांने मोतियां चोक पुराऊं ॥ १ ॥
कदली वनरो हस्ती मंगाऊं अंवाडी झुकाऊं ।
गेहरा गदरा गुरुजी विराजै ऊपर चँवर दुलाऊं ॥ २ ॥
जल जमुनारो नीर मंगाऊं तातो तुरत कराऊं ।
चोवा चंदन और अरगजा अपने हाथ न्हावाऊं ॥ ३ ॥
नख छोल्या सा चावल मंगाऊं काचे दूध धुवाऊं ।
खीर खांड घृत अमृत भोजन अपने हाथ जिमाऊं ॥ ४ ॥
कंठी माला कड़ा किलंगी सतगुरु अरपण लाऊं ।
दिखण दिशारी मंगाय फावरिया अपने हाथ ओढाऊं ॥ ५ ॥
कहै कवीर सुणो भाई साधू आनंद मंगल गाऊं ।
भवसागर गुरु दयाल खेवटिया भवजल बहुरि न आऊं ॥ ६ ॥

२

चालो ए सइयाँ आपे गुरां ने वधावण जासां ए । टेर ।
सतगुरु स्वामी म्हारा अंतर जामी चरणों में शीस निवासां ए ॥ १ ॥
कुंकुम केसर री गार घलासां मोतिडां रो चोक पुरासां ए ॥ २ ॥
सोनेरी झारी रूपेरी थारी कंचन कलस वधासां ए ॥ ३ ॥
घर घर री सब सखियां तेड़ासां हिल मिल मंगल गासां ए ॥ ४ ॥
मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर हरिचरणा में चित लासां ए ॥ ५ ॥

३

चालो रे मनां सतगुरुजीरै चरणां । टेर ।
वा चरणों सँ आवागवन सिटत है पीछे क्या करणा ॥ १ ॥
देह धन्यां की याही है परम गति साधु संगति करणा ॥ २ ॥
चितरा चँवर करुं गुरां ऊपर मनमे ले उर धरणा ॥ ३ ॥
मीरां कहै प्रभू हरि अविनाशी छांड सकल भरमना ॥ ४ ॥

संग्रहसार

४

यथायो म्हारै नित नबलो म्हारै सतगुरुजी रो परताप । टेर ।
 सतगुरु थाया पाहुना में काँई करु मनुहार ।
 हितरा करु विछावना तन मन ऊपर चार ॥ १ ॥
 केसर चदन गार घलाऊ घर आगणो निपवाय ।
 कचन कलस यथावस्था हिलमिल भगल गाय ॥ २ ॥
 आगण बाही एलची हुयगई अम्बर रेल ।
 आज गुरुजी म्हारै पाहुना हियड़ा में कूपल मेल ॥ ३ ॥
 सद्गुरु चदन यावना सिख सतगुरुके दास ।
 सतगुरु हाठ हीरा तणी म्हारै हिरदै भयो प्रकास ॥ ४ ॥
 कहै कबीर घमैदासनें अमृत पियो अघाय ।
 यो मन सदा रलियावणो म्हारै कुण जाये कुण जाय ॥ ५ ॥

५

म्हारै मन आज उमाचो हो, रामसनेही आविया निज भाव
 यथाचो हो ॥ टेर ॥
 जम आज लेखे भयो धिन उदित अकूर हो,
 परम भाग्य परमट भयो मिल पकज सूर हो ॥ १ ॥
 पाँच सखी मेली भई मिल भगल गाया हो,
 उर सरोजके चौर में सुख रास भझाया हो ॥ २ ॥
 रग रान वाजा अनंत घर बटत यथाई हो,
 मन गुलाल अबीर चित प्रेमा सरसाई हो ॥ ३ ॥
 क्रीड क्रीड जानद भयो कोढ़ा कोड यथाई हो,
 ज्ञान भक्ति वैराग मिल मेरे घर आइ हो ॥ ४ ॥
 भावसदन ओप्यो अजग गुरुद्वय विराजे हो,
 सब मनोरथ पूर्यै हरिराम निवाजे हो ॥ ५ ॥
 रामदास धिन धिन घडी धिन मोसर ष्ठी हो,
 घाल वाल मिलज्यो सदा म्हाने राम सनेही हो ॥ ६ ॥

६

या दिनको मं बलि जाऊ हो, मिले पियारे रामजन समुद्ध
 शिर नाऊ हो ॥ टेर ॥
 करु दडोत परिग्रमा बन्दन बारवार हो,
 आज पधारे सतगुरु धिन भाग हमारा हो ॥ १ ॥
 चोपसी केरा टल्या जम दड मिटाया हो,
 भर्म जाल भव माजग्या आतम सुख पाया हो ॥ २ ॥

विधि वैकुण्ठ सदन फवै अठसठ तीरथ गंगा हो,
रामदास पदकंज परस उर भक्ति अभंगा हो ॥ ३ ॥

७

लोकां थानें लाख वधाई हो म्हारा सतगुरु आया आज
लोकां थानें लाख वधाई हो ॥ टेर ॥
भलीभई म्हारे आंगण आया, जाण पुराणो नेह ।
आनंद भयो मन भावनो म्हारे दूधां वूठो मेह ॥ १ ॥
भावतड़ा सतगुरु भेट्या भेट्या आल जंजाल ।
प्रभुजी दीनी प्रीत सूं म्हाने भक्ति श्रीगोपाल ॥ २ ॥
कर प्रणाम परिक्रमा देसां दुख दालद भव दूर ।
ऊगो सहेली आज नो म्हारे सोना हंदो सूर ॥ ३ ॥
हस्तराम प्रभु हरिमुख निरखै नैणा नैण निहार ।
बलिहारी गुरुदेवजी री मैं रही हूं लूण अवार ॥ ४ ॥

८

सइयां ज्ञानी गुरुजी वधासां हे, पेसो मोसर
चूक के फेरूं कव पासां हे ॥ टेर ॥
चित कर चंदन अगर कस्तूरी कुंकुम लेसां हे ।
करणी री केसर घोल के वाके मस्तक देसां हे ॥ १ ॥
प्रेम फुलेल ले सनमुख जासां अमी रस पीधा हे ।
गुण की गुलाल उड़ाय गुरां पर सांच को सूधा हे ॥ २ ॥
धीरज थाल धरूं ले आगे करूं मन मोती हे ।
इस विध आरती संजोय गुरां की झिगासिग जोती हे ॥ ३ ॥
पाद पितांवर पांवड़ा विछावां सिरे पधरासां हे ।
दिल की दुरमति दूरकर विनती गुदरासां हे ॥ ४ ॥
भोजन भाव जिमाय गुरां नें ले मन्दिर माहीं हे ।
तीन लोक संपति सब वारूं तोहि ऊरण नाहीं हे ॥ ५ ॥
सतगुरु शरणै अभयपद पाया अमीरस पीसां हे ।
काल करम सवै मिट जासी जुगे जुग जीसां हे ॥ ६ ॥
ज्ञान गवाड़ विच सतगुरु भेट्या भेट्या मन खतरा हे ।
सुरतराम कहाँलों जस गावै जाणूँ किया जितरा हे ॥ ७ ॥

९

सइयां सतगुरुजी रे जासां हे, सोई आज्ञा गुरुदेवकी
म्हे तो शीश चढ़ासां हे ॥ टेर ॥

कठ कमल में फूली गुल क्यारी अमीरस पीया है ।
 गुपता सा नैन गुण म्भारा खोल्या ज्यों मन्दिर दीया है ॥ १ ॥
 पूरणचन्द चौक धिच ऊगो हिरदै उजियाला है ।
 झिलमिल नूर गुणजीरा धरस्या ज्यू दीपक माला है ॥ २ ॥
 भेंवर गुजार नाम घर माहीं मगल गासा है ।
 प्रेमरा कलस गुण ने बधासा बधाई बटासा है ॥ ३ ॥
 घमकै छै गूधर बाजै छै मुरली रास रच्यो छै है ।
 तू चढ पैठी गगनरा गोपा में अबना मुन्यो छै है ॥ ४ ॥
 धिन शरणो सुखराम कहै नित फिरू हू फूली है ।
 सुपरा सागर गुरु दरियासा दुपको सब भूली है ॥ ५ ॥

१०

आयो एगावो सइया अणद बधावो म्भारे पाहुणा परम गुद आज । डेर ।
 सोनेरो सूरज सइया इण पुल ऊगो म्भारे घर बंठा गगा आई आज ॥ १ ॥
 कथा कीर्तन सइया हरि गुण गासा म्भारे आगणिये छै सतारो समाज ॥ २ ॥
 लख चौरासी सइया दुस्रदेरी पासी कोइ हुया छै यहूत अकाज ॥ ३ ॥
 इण भवसागरसे म्भारा सदगुरु ठारे कोइ आपणे पिरद की लाज ॥ ४ ॥
 सुखदेव सागर में म्भारो मनबो झुले म्भारे सन्त सदाई सिरताज ॥ ५ ॥

११

घर आज हमारे आया परम गुरु पाहुणा ॥ डेर ॥
 कचन कलश शीश घर कर में भर मोतियन को थाल ।
 जय जय शब्द होत चहुँ दिशि ते दशन दिया दयाल ॥ १ ॥
 केसर चन्दन तिलक बढ़ाऊ पुष्प माल पधराय ।
 प्रेम प्रीति सू करू आरती सखियाँ मगल गाय ॥ २ ॥
 वीण सुदम शर सहुनाई बाजा बजत अपार ।
 जरी पाट पर परत पावडा आये भवन म्भार ॥ ३ ॥
 कर दडोत शीश घर चरणा तन भन अपण कीन ।
 जन भावन सतगुरु पद परसत लाभ जनम को लीन ॥ ४ ॥

१२

सूरज सोनारो ऊगो सखीरी धिन आजनो ॥ डेर ॥
 पावन भवन करण पग धारे सतगुरु सयही सत ।
 कथा कीरतन हरि गुण गावै आनद उदै अनत ॥ १ ॥
 दरशन करत सरे नर नारी साचो राम सनेह ।
 प्रेम भाव चित चान परस्पर दुधौ वृत्त मेह ॥ २ ॥

शीत प्रसाद लेत चरणामृत उरमें अधिक उमंग ।
पावन पतित होत पल माहीं कर संतन को संग ॥ ३ ॥
संत समाज आज भल पायो दूर भया दुख द्वंद ।
जन भावन सतगुरु दर्शन तैं पायो परमानन्द ॥ ४ ॥

१३

राजभोग ।

राग गूढ़ विलावल ।

सतपुरुषांरै भोग लागै शब्द अनाहद घंटा वागै ॥ ढेर ॥
प्रेम प्रीतिसे करी है रसोई अमृत भोजन पारस होई ॥ १ ॥
कंचन झारी सुकृत थाल जीमन बैठे श्रीराम दयाल ॥ २ ॥
पाय प्रसाद अंचवन कीनो महाप्रसाद दास कूं दीनो ॥ ३ ॥
दास एक कणका भर लीनो तातें काल भयो आधीनो ॥ ४ ॥
कहै कबीर हम भये हैं सनाथ जब सतगुरु मस्तक धरिया हाथ ॥ ५ ॥

१४

सतगुरु भोजन जीमो प्यारे, अपने जनपर कृपा कीजे जाडं सदा
बलिहारे ॥ ढेर ॥

पारब्रह्म परमेश्वर स्वामी आवो कृपा धारे ।
श्री गुरुदेव दयानिधि आनंद संतनके हितकारे ॥ १ ॥
भाव भक्ति ले करूं रसोई श्रद्धा साग सवारे ।
सुरत शब्द का चौका लाजं चरण कमल बलिहारे ॥ २ ॥
करमोवाई खीच पवायो उठ परभात सवारे ।
शुचि संजम किरिया नहिं देखी प्रेम भक्ति के प्यारे ॥ ३ ॥
झूठे करकर वन सूं लाये जाति अपावन नारे ।
शवरी के फल रुचिकर पाये मीठे गिणे न खारे ॥ ४ ॥
दुर्योधनका मेवा त्यागे व्यञ्जन न्यारे न्यारे ।
साग विदुर घर रुचिकर पाये पर्णकुटी पग धारे ॥ ५ ॥
मिलनी के वोर सुदामा के तन्दुल लीने वदन पसारे ।
नामा का दूध घनाकी रोटी जुग जुग जन विस्तारे ॥ ६ ॥
मैं अजान कछु सेव न जानूं सेवा अगम अपारे ।
सनक सनन्दन अर्जुन नारद ब्रह्मादि पचहारे ॥ ७ ॥
दीन छीन मतिदीन महा जड शरण पड़यो दरबारे ।
रामदास की श्रद्धा राखो लीजे भोग मुरारे ॥ ८ ॥

पद ११

अबसर आयो यार असीनो ।

आज सुदिन भयो भाग पूरचले पायो परम रसीनो । डेर
रहू सूराम सदा रंग राती आन भरमना भागी ।

अतर तार कउहु नहिं तूटे लिय चेतन सूर लागी ॥ १ ॥

अहनिशि ध्यान धरू आत्मको एके तन मन दोई ।

ना कुल मात पिता नहि जायो इयाम हमारे सोई ॥ २ ॥

पाच पचीस मित्या निज मनसू भया अबभा भारी ।

उलटा नाद बिन्दु घरपाना गगन भरै पनिहारी ॥ ३ ॥

इला पिगला पास सहेली सुखमण सूर घरयासा ।

राम निरजन रमै अबेला शून्य महल में वासा ॥ ४ ॥

निरभे राज भयो पतनीको अजर अमर घर कीना ।

जन हरिराम मिले महारम सूर अरस परस लिय लीना ॥ ५ ॥

पद १२

म तो राम पिया सग खेलूंगा होरी ।

साधु सगत मिल कागण आयो ज्ञान गुलाल उडोरी । डेर

पाच सखी मिल खेलन निकसी आज वसत उडोरी ।

प्रेम नीर पिचकारी दिलसू छूटत अमिट सजोरी ॥ १ ॥

सूधो प्रीति चित्तको चदन केसर महिमा घोरी ।

तन वृदायन गोप ग्वाल मिल वरमा द्वार खुल्योरी ॥ २ ॥

रास विलास अरुठ सदाई बाजत द्वे घन घोरी ।

पिच पत्नी मिल तत रंग भीनी सो शिख जानत गोरी ॥ ३ ॥

इला पिगला सुखमण ना उन पायो घर घर जोरी ।

घाल्याल सतगुरु वृषार्त धुन बिन्ध ध्यान सहोरी ॥ ४ ॥

पद १३

येसे साधुसगति मिल खेलोरी होरी ।

साधुसगति अज शरर चाहे सुर नर नाग सकोरी । डेर

चोरासी फिर नर तनु पायो पूरव पुण्य मिलोरी ।

छूट गया पीछे पछितासो क्यू न सफल करलोरी ॥ १ ॥

पर हित सत पुकार कहत हैं वो जग जाल तजोरी ।

कोटि निनाणू राजा रमिया सो सुन साय भरोरी ॥ २ ॥

गुरु गम फाग खेल हुय सनमुख ज्ञान गुलाल गहोरी ।

प्रेम सजल पिचकारी छूटत नख शिख भीज रहोरी ॥ ३ ॥

चित चंदन गुरु गाल अरगजो चोवा गुन चुनोरी ।
 संधो सुरत लगाय रैन दिन अनहद नाद सुनोरी ॥ ४ ॥
 भक्ति परा जिव पाय परम पद निश्चल होय रहोरी ।
 जनम मरण फेरा मिट जावै नव तत देह दहोरी ॥ ५ ॥
 अनंतकोटि रम पार पहुंता गुरु गोविंदसे जोरी ।
 सेवगराम सतगुरु संग खेलै औ सरसाज सजोरी ॥ ६ ॥

पद १४

राम रसीले से रंग रच्यो म्हारै आज वसंत को खेल । टेर.
 प्रेम नीर पिचकारी दिलसे छूठत चहुं उर झेल ॥ १ ॥
 अधः ऊर्ध्व विच खेल मँड्यो है सुरत शब्द को मेल ॥ २ ॥
 धुनविच ध्यान ज्ञान जहाँ अनुभव जनम मरण दुख पेल ॥ ३ ॥
 छालवाल रस राम रमैयो रामदास गुरु खेल ॥ ४ ॥

पद १५

नितही वसंत नित फाग मंगल होरी खेलो । टेर.
 दया धर्म की केसर घोरी प्रेम प्रीति पिचकार ।
 भाव भक्ति से भर सतगुरु संग जनम सफल नर नार ॥ १ ॥
 क्षमा अवीर चित चंदन सुमरण ध्यान धमार ।
 ज्ञान गुलाल अगर कस्तूरी उमग उमग रंग डार ॥ २ ॥
 चरणोदक अरु महाप्रसाद अपने शीस चढाय ।
 लोक लाज कुल कौण छोडिदै निरभै निसाण वजाय ॥ ३ ॥
 कथा कीर्तन मंगल महोत्सव कर संतन से सीर ।
 कवहु न काज बिगरै नर तेरो सत सत कहत कवीर ॥ ४ ॥

पद १६

खेलन बहुरि न आवूं पेसा खेलूंगा मैं खेल । टेर.
 सुलट खेल बहु जनम वदीता अवके उलटा खेल ॥ १ ॥
 रसना कंठ हृदय हुय हिल मिल नाभि कमल रंग रेल ॥ २ ॥
 पैठ पयाल आकाश उलट चढि वंक नीझरझर झेल ॥ ३ ॥
 तृकुटी घाट न्हाय हुय निर्मल जन्म मरण दुख पेल ॥ ४ ॥
 फागुन साधु संगति गुरु समरथ सेवगराम मिल्यो मेल ॥ ५ ॥

पद १७

श्याम से खेल सखी री नित आनंद मंगल होरी । टेर.
 सुषमण होरी खेलण निकसी ज्ञान कुमकुमा घोरी ।

पद २२

ऐसी होरी को मौसर आयो ।
 सुर दुरलभ ग्रहादिक चाँद सो नर तन तैं पायो ।
 अरे क्यों हरि विसरायो । टेढ़
 जा दिन तैं हरि तैं विछुन्यो जय तैं जीव नाम धरायो ।
 प्रभु वेमुख कर मन त प्रेन्यो जोनी अनेकन धायो ।
 जहाँ जम हाथ विकायो ॥ १ ॥
 सुरपुर कचहु देव तनु पायो कचहु पाताल पढायो ।
 कचहु पनु पक्षी को तन थिर कचहु नहिं आयो ।
 पलक विसराम न पायो ॥ २ ॥
 निज मुख नाम सुधारस कू तजिके तैं विषय विष दायो ।
 हरिसो हीर अमोलख हाथ्यो काच किरच मन लायो ।
 दृया नर वेह गमायो ॥ ३ ॥
 परधस होय मूढ भरखट ज्यू निशि दिन नाच नचायो ।
 जन भायन अय राम सुमरले वेद पुराणा में गायो ।
 कहा भव माहिं भुलायो ॥ ४ ॥

पद २३

होरी खेलन की ऋतु आई ।
 सतन की सत सगत मं हरि रगन की शरि लाई ।
 उमग नहिं मनमें समाई । टेढ़
 इला पिंगला सुपमण ती सजनी रजनी में रमाई ।
 आतम रूप पिया अलबेला ताहिसे खेल खिलाई ।
 लली लपि के ललचाई ॥ १ ॥
 सुरत निरत की भर पिचकारी सुमति सखी ने चलाई ।
 मानप्रिया प्रभु के उरलागी हरष हिये लपटाई ।
 सुहागन साची कहाई ॥ २ ॥
 अध ऊरध के अबर मं अनुभव की अवीर उडाई ।
 झान गुलाल चली चहु दिशि मुकि प्रेम घटा बरपाई ॥
 नेह नदिया उमगाई ॥ ३ ॥
 आदि पुरुष अविनाशी के सगम शून्य की सेज पिछाई ।
 जन भायन तज आवन जावन पावन प्रीति बढ़ाई ।
 सखी सुख माहिं समाई ॥ ४ ॥

पद २४

होरी खेलन की ऋतु भारी ।
 नरतनु पाय भजन कर हरि को ओ मोसर दिन चारी ।
 अरे अब चेत अनारी । टेर.
 ज्ञान गुलाल अवीर प्रेम कर प्रीति तणी पिचकारी ।
 सास उसास राम रंग भरभर सुरति सरीसी नारी ।
 खेल इन संग रचारी ॥ १ ॥
 सुलटो खेल सकल जग खेलै उलटो खेल खिलारी ।
 सतगुरु सीख धार शिर ऊपर सतसंगति चल जारी ।
 भरम सब दूर गमारी ॥ २ ॥
 ध्रुव प्रह्लाद विभीषण खेलै मीरां करमा नारी ।
 जन भावन जगमें इमि खेलै सो नहि आवत हारी ।
 सखी सुन लीज्यो हमारी ॥ ३ ॥

पद २५

होरीया रंग खेलन आवो ।
 इला पिंगला सुपमण नारी ता संग खेल खिलावो ।
 सुरत पिचकारी चलावो । टेर.
 काचो रंग जगत को छाडो साचो रंग लगावो ।
 बाहिर भूल कयहू मति जावो काया नगर वसावो ।
 तवै निरभै पद पावो ॥ १ ॥
 पांचू उलट घेर घट भीतर अनहद नाद बजावो ।
 सब बकवाद दूर तज दीजै ज्ञान गीत नित गावो ।
 पिया के मन तव भावो ॥ २ ॥
 तीनूं ताप तीन गुण त्यागो संशय शोक नसावो ।
 जन भावन हित सूं नित गावो फेर जनम नहिं पावो ।
 जोति में जोति समावो ॥ ३ ॥

होरी सोरठ ।

पद २६

तुम पी रे अवधू हुय मतवाला प्याला प्रेम हरी रसका । टेर.
 बालपणो हंस खेल गुमायो तरुण भयो तिरिया चसका ।
 वृद्ध भयो कफ वायुज घेन्यो पड़्यो रह्यो नहिं जाय मुसका ॥ १ ॥
 पाप पुण्य दोय भुगतण आयो कुण तेरा और तू किसका ।
 केई दिनजीवड़ा हरी गुण गायले तन जोवन सुपना निशिका ॥ २ ॥

चकोर अग्नि को चुगता है पहले ध्यान धरे शशिका ।
 राम रसायन हरिजन पीवे और जगत गाहक विपका ॥ ३ ॥
 चोरासी सू छूट्यो चाहै तज कनक कामिनी का चसका ।
 चरणदास शुक्रदेव कहत है नख शिष्य सर्व भन्या विपका ॥ ४ ॥

पद २७

तुम सतो खेलो सभारी जग होरी मचरही बहु भारी । डेर
 जड़ चेतन दोय रूप बन्या है एक कनक दूजी नारी ।
 पाच पचीस लियों सग अयला सयला इस मिल गावे गारी ॥ १ ॥
 ग्रह कपाट है या करम कृप मं बड़ मं बड़ की तारी ।
 निगुण तार तबूरा बाजे आशा तुण्या गति न्यारी ॥ २ ॥
 पाप पुण्य दोय भर पिचकारी छूटत है वारधारी ।
 समुख हुय जो नर खेले ताके छोट लगी नहिं फारी ॥ ३ ॥
 कुमति गुलाल डार मुप भीड़े काम कला पटली मारी ।
 सुर नर मुनिजन पीर अयलिया भीज रखा सय ससारी ॥ ४ ॥
 बोया बदन और अरगजा माया की गागर भारी ।
 पट वरदान छिनचै पाखड़ा पकड़ किये सय बेगारी ॥ ५ ॥
 चतुरा फगवा देदे छूटा मूरख को लागै प्यारी ।
 कहै कबीर सुणो भाई साधो निरगुण ज्ञान गली न्यारी ॥ ६ ॥

पद २८

उठरी होरी होय रही तू कहा पब सोवैरी । डेर
 रेन गई तो जानदे सजनी दिन मत खोवैरी ॥ १ ॥
 और सखी मिल यसत बधावे तू क्या जोवैरी ॥ २ ॥
 खेलन खेल यण्यो अति नीको सय जग मोवैरी ॥ ३ ॥
 कहै कबीर सुणो भाई साधो यहुरि जन्म नहिं होवैरी ॥ ४ ॥

पद २९

सइया बेदिन कद आवैला केसू फूलेला । डेर
 केसू फूले आग मोरै कोयल जबलैरी डाल ।
 हस्ती घोड़ा माल सजाना मुपने कैसा रयाल ॥ १ ॥
 बीण वजती रह गई सजनी तूट गई सन तार ।
 बीण विचारी क्या करे गये वजावण द्वार ॥ २ ॥
 धमण धमती रहगई सीला पड़्या अगार ।
 अहरण का ठमका मिट्यारी लाव चले लोहार ॥ ३ ॥
 सदा न जोयन धिर रहै सदा न वाग फुलाय ।
 शाह अकबर कबीर गुसाइया बारी गये यजाय ॥ ४ ॥

लोय

पद ३०

चो घर सतगुरु क्यों न बतावो जिण घर सूं जिव आया वे ।
 काया छोडि चलै जव हंसो कहो नी कहाँ समाया वे टेर.
 मै मेरी ममता के कारण बारंवार ठगाया वे ।
 समझ न पड़ी ज्ञान गुरुगमकी तातें फिर भटकाया वे ॥ १ ॥
 रज वीरज दोऊं नहिं होता जद जीव कहाँ समाया वे ।
 ब्रह्मा विष्णु महेश न होता आदि न होती माया वे ॥ २ ॥
 चंद न सूर दिवस नहिं रजनी जहां जाय मट छाया वे ।
 सुरत सुहागण पाव पलूसे पीव आपणा पाया वे ॥ ३ ॥
 मेरी प्रीति पिया सूं लागी उलट निरंजन ध्याया वे ।
 कहै कवीर सुणो भाई साधो परे ही के परै बताया वे ॥ ४ ॥

पद ३१

तन घर सुखिया कोई न देखा जो देखा सो दुखिया वे । टेर.
 शुक आचारज दुखके कारण गर्भ में माया त्यागी वे ।
 घाटों घाटों सब जग दुखिया क्या गृही वैरागी वे ॥ १ ॥
 सांच कहूं तो कोई न मानै झूठी कही न जाई वे ।
 ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दुखिया जिन या मांड रचाई वे ॥ २ ॥
 जोगी दुखिया जंगम दुखिया तपसी को दुप दूना वे ।
 आशा तृष्णा सब घट व्यापै कोई महल नहिं सूना वे ॥ ३ ॥
 राजा दुखिया परजा दुखिया रंक दुखी धन रीता वे ।
 कहै कवीर सबे जग दुखिया कोई साधु सुखी मन जीता वे ॥ ४ ॥

पद ३२

अवधू जोगी जुग जुग जीवै हरि रसका प्याला पीवै । टेर.
 ज्ञान भानु अंतर में प्रगट्या भया उजाला सब सूझै ।
 परचा प्राण रमै ब्रह्मंड में या विधि कोई विरला वूझै ॥ १ ॥
 सहजाँ चढ्यो अगम को पाणी वरपै धरणि गगन भीजै ।
 सींच्या वाग धनी हरियाली उस वाड़ी मे चित दीजै ॥ २ ॥
 फूटी वास बहुत फूलन की भँवर बस्या वाड़ी के माहिं ।
 रछा लुभाय लह्या सुख सारा अव पीछा आवन का नाहिं ॥ ३ ॥
 अमर रूख कबू नहिं सूखे दावा झोला लगै न कोय ।
 मूलदास ताका फल पावै चो जोगी अमर होय ॥ ४ ॥

पद ३३

शब्द फरीर अनाहद राता में घर अकुला के जाऊगा ।
 ग्रह्या रिणु महे वर तीनू दश अतार न ध्याऊगा । टेर
 बैठा रहू न फिर कर लाऊ भूषा रहू न जघाऊगा ।
 पयवे जाय पात्र नहिं तोड़ घर बठा अधि पाऊगा ॥ १ ॥
 तीरथ जाउ न जलर्म द्वाऊ जलका जीव न सताऊगा ।
 अदसठ तीरथ गुरू लखाया घटही भीतर न्हाऊगा ॥ २ ॥
 पाती तोड पथर नहिं पूजू बेगी देउ न ध्याऊगा ।
 पात पात में है पुरुषोत्तम चाकू नहिं सताऊगा ॥ ३ ॥
 जबां चूटी औपधि नहिं सार्धू नाड़ा बेघ न लाऊगा ।
 सतगुरु बैघ मित्या अग्निनाशी ठाकू नाहिं दिखाऊगा ॥ ४ ॥
 चद सूर दोउ सम कर राखू सुन में सुरति समाऊगा ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो ब्रह्मजोति मिल जाऊगा ॥ ५ ॥

पद ३४

ऐसा ह्वाल फरीरों ह्वा सुणलीज्यो सब कोई वे ।
 स्वग मृत्यु पाताल लोकता फिकर फरीर खोई वे । टेर
 टोपी तर सुमरणा चितवन सांगी अनहद सोई वे ।
 नाम निरतर घोला पहन्या सेली सुरत सुमोई वे ॥ १ ॥
 जत कोपींद आइयथ सत का मगन मतगा सोई वे ।
 सिरजनहार तिलक शिर ऊपर सुमरण कठी पोई वे ॥ २ ॥
 धूणी ध्यान लगाय रणदिन फिकर पाबोड़ा पोई वे ।
 आशा टुप्पा अधिक लाकही धूणी माहि धसोई वे ॥ ३ ॥
 मिश्रा भाव सहज की चीपा सोली अकल न टोई वे ।
 जो मार्ग ताही को देवे ऊब नीच नहिं कोई वे ॥ ४ ॥
 सेज्या भूमि आकाश ओढ़णा जोति चद्रमा जोई वे ।
 निशि दिन पवन करत खयासी दह आसण पर सोई वे ॥ ५ ॥
 सदा उदाम रहत जगत स निस्पृही निरमोही वे ।
 तारत तीव्र बैराग्य धारणा राग द्वेष नहिं कोई वे ॥ ६ ॥
 एका एकी रहत रण दिन दिली दुमति छोई वे ।
 फहत कबीरा अलमस्त फरीरा रावरक नहिं कोई वे ॥ ७ ॥

रण सुग ।

पद ३५

फहोनी सखी साधोजी कर मिल साधो म्हायो सिरजन द्वार । टेर
 म्हावर आगणे है सखी मारी अबलारी डाल ।
 जिण पर बैठी फायली योले शब्द रसाळ ॥ १ ॥

किस विधि काली कोयली किस विधि राता नैण ।
 किस विधि आमण दूमणी क्यूं थारा मधुरा वैण ॥ २ ॥
 विरह व्यथा तन साँवली रोय रोय राता नैण ।
 राम विछोहे आमणदूमणी सुमरण मधुरा वैण ॥ ३ ॥
 थारै कोयल पोंखड़ी उड मिल क्यों नहिं जाय ।
 जाय मिल सगुणा श्याम सूं विरहनि धान न खाय ॥ ४ ॥
 गल विच डारूं गूदड़ी करलूं जोगण भेश ।
 जाय मिलूं सगुणां श्याम सूं तो साँचो उपदेश ॥ ५ ॥
 मो मे अवगुण अति घणा तुम गुणवंता श्याम ।
 दयाकर दरशण देवो कान्हड़ के पति राम ॥ ६ ॥

पद ३६

आशा में अलूझी रामैयो कव मिलै मिलियां हरिने जाण न देह ।
 अंचलो झालीने हरिने राखलूं नैणा म्हारै नीर भरेह । डेर.
 राम रहुको म्हारै मनवस्यो विसारूं पण विसन्थो न जाय ।
 एक घड़ी जो वीसरूं हिरदै खट्ट के आय ॥ १ ॥
 जव सोऊं जव दोय जणां जव जागूं जव एक ।
 सेज ढंढोरी पिव पायो नहीं हिवड़ा में पड़ गयो छेक ॥ २ ॥
 वेर लगाई म्हारा वालमा विरहिन करत विलाप ।
 कोइयक आडा होगया पूरव जनम रा पाप ॥ ३ ॥
 चालपणेरी प्रीतड़ी वृढापै लग दीठ ।
 कहै बखनो आवो हरी जरतां बुझावो अंगीठ ॥ ४ ॥

पद ३७

चालू रे विधाता थारे लेखने हरि विच लिख्यो रे विजोग ।
 करम रेख कद पालटै कव हरि मिलन संजोग । डेर.
 दव की दाधी लाकड़ी सिलग सिलग धूंघाय ।
 नास भली विरहजु बुरा मोपैं सख्यो न जाय ॥ १ ॥
 सांप लड़ो विच्छण डसो सिंहज मारो मोय ।
 अग्नि जलूं जलमें बहूं राम न छाड़ूं कोय ॥ २ ॥
 गजके हित हरि आविया प्रगट्या हित प्रहलाद ।
 चीर वधान्यो द्रौपदी बाकी राखी लाज ॥ ३ ॥
 बालखिल्य राख्या डूबता हरि धान्यो अवतार ।
 दास कवीरो वीनवै गया समंदो पार ॥ ४ ॥

आव हमारे पीतमा बलि जाउं मैं तेरे हो ।
 ज्युं चातक जल बूंदकूं विरहनि यूं टेरे हो ॥ १ ॥
 वाट तुमारी जोवतां केता दिन बीता हो ।
 तुमरे तो खातर नहीं हुय रह्या नचीता हो ॥ २ ॥
 राम विछोहैं मैं दुखी मन करत अनोहा हो ।
 पाचूं वैरण हुय रही वां कियां विछोहा हो ॥ ३ ॥
 दुख भेटण सुखसागरा निरधारां आधार हो ।
 सहजराम की वीनती घर आवो मेरा प्यारा हो ॥ ४ ॥

पद ४२

पेसी मोहि रैन विहाई हो ।
 कौन सुनै कासूं कहूं वरनी नहिं जाई हो । टेर.
 पूरण ब्रह्म विचारते मोहि नींद न आई हो ।
 जागत जागत जागियो सूते न सुहाई हो ॥ १ ॥
 कारण लिंग स्थूल की सब शंक मिटाई हो ।
 जाग्रत स्वप्न र सुषुप्ति तीनों विसराई हो ॥ २ ॥
 तुरिया पद अनुभव भयो ताकी सुध पाई हो ।
 अहंब्रह्म के कहत ही हूं यो गयो विलाई हो ॥ ३ ॥
 वचन तहाँ पहुंचै नहीं यों सैन बताई हो ।
 सुंदर तुरियातीत में सुरती ठहराई हो ॥ ४ ॥

पद ४३

सखी म्हारी नींद नसानी हो ।
 पिव को पंथ निहारतों सारी रैन विहानी हो । टेर.
 सब सखियां मोहि सीखदै मन एक न मानी हो ।
 विन दर्शन कल ना परै मन पेसी जानी हो ॥ १ ॥
 अंग क्षीण व्याकुल भई सुख मधुरी वानी हो ।
 अंतर वेदन विरह की पिव पीर न जानी हो ॥ २ ॥
 चातक ज्युं घन कों रटै मछली विन पानी हो ।
 जन तुरसी पिव विन मिले सुध बुध विसरानी हो ॥ ३ ॥

पद ४४

दरद की कासे कहिये हो ।
 वेदरदी जाणै नहीं अपने तन सहिये हो । टेर.
 पड़दे पावक परजली उर अंतर दाधी हो ।
 धूँवा झाल दीसे नहीं विरहिन डस खाधी हो ॥ १ ॥

राग सोरठ गगरी ।

पद ३८

पिया तोरे नाम तुमानी हो ।
 नाम लेत तिरता मुण्या जैसे पाइन पानी हो । डेर
 सुकृत फयद ना कियो बहु काम कमानी हो ।
 गनिका कीर पदायता बैकुण्ठ पठानी हो ॥ १ ॥
 अर्ध नाम कुजर लियो बाकी अवधि घटानी हो ।
 गदब छौड हरि जाविया पगु जूण लुडानी हो ॥ २ ॥
 जो नाम हमारे गुरु दियो सोइ वेद बखानी हो ।
 मीरा दासी धारणे अपनी कर जानी हो ॥ ३ ॥

पद ३९

पिया तैं प्रीति न जानी हो ।
 तलफ मुई तुम कारणे तुम चित्त न आनी हो । डेर
 मीनजु तलफे नीर कू नहिं जानत पानी हो ।
 दया न आई देखता मन पेसी ठानी हो ॥ १ ॥
 पढत पतगा आगम कछु दीप न मानी हो ।
 प्रीति फी रीति विचारता भइ देह फी हानी हो ॥ २ ॥
 प्रीति करी मृग नाद सू कछु नहिं ज छानी हो ।
 मुखसैं बैणु बजाय के शर मान्यो तानी हो ॥ ३ ॥
 प्रीति गयोई क्यों धनै सुनो सारंगपानी हो ।
 दास कू अग लगाइये तुम हो मुख दानी हो ॥ ४ ॥

पद ४०

काह से नेह न करिये रे ।
 नेह किया निश्चै सही बिन पावक जरिये रे । डेर
 जग की झूठी मिलनता मिल बधन परिये रे ।
 यध छोड़ निरपध हो सुख सिंधु विचरिये रे ॥ १ ॥
 यो जग पावक रूप है जाम पोंव न धरिये रे ।
 यो ही भान विचार के हरि पथ विचरिये रे ॥ २ ॥
 सुत दारा सब झूठ है येतो देखत मरिये रे ।
 तुरसी वन मन बारकै हरि नाम उचरिये रे ॥ ३ ॥

पद ४१

रागैयो मित्र हमारो हो ।
 तुम बिन बीजो को नहीं जोयो जग सारो हो । डेर

आव हमारे पीतमा बलि जाउं मैं तेरे हो ।
 ज्युं चातक जल बूंदकुं विरहनि यूं टेरे हो ॥ १ ॥
 वाट तुमारी जोवतां केता दिन बीता हो ।
 तुमरे तो खातर नहीं हुय रह्या नचीता हो ॥ २ ॥
 राम विछोहैं मैं दुखी मन करत अनोहा हो ।
 पाचूं वैरण हुय रही वां क्रियां विछोहा हो ॥ ३ ॥
 दुख भेटण सुखसागरा निरधारां आधार हो ।
 सहजराम की वीनती घर आवो मेरा प्यारा हो ॥ ४ ॥

पद ४२

ऐसी मोहि रैन विहाई हो ।
 कौन सुनै कासूं कहूं वरनी नहिं जाई हो । टेर.
 पूरण ब्रह्म विचारते मोहि नींद न आई हो ।
 जागत जागत जागियो सूते न सुहाई हो ॥ १ ॥
 कारण लिंग स्थूल की सब शंक मिटाई हो ।
 जाग्रत स्वप्न र सुषुप्ति तीनों विसराई हो ॥ २ ॥
 तुरिया पद अनुभव भयो ताकी सुध पाई हो ।
 अहंब्रह्म के कहत ही हूं यो गयो विलाई हो ॥ ३ ॥
 वचन तहाँ पहुंचै नहीं यों सैन बताई हो ।
 सुंदर तुरियातीत में सुरती ठहराई हो ॥ ४ ॥

पद ४३

सखी म्हारी नींद नसानी हो ।
 पिव को पंथ निहारतों सारी रैन विहानी हो । टेर.
 सब सखियां मोहि सीखदै मन एक न मानी हो ।
 विन दरशन कल ना परै मन ऐसी जानी हो ॥ १ ॥
 अंग क्षीण व्याकुल भई मुख मधुरी वानी हो ।
 अंतर वेदन विरह की पिव पीर न जानी हो ॥ २ ॥
 चातक ज्युं घन कों रटै मछली विन पानी हो ।
 जन तुरसी पिव विन मिले सुध बुध विसरानी हो ॥ ३ ॥

पद ४४

दरद की कासे कहिये हो ।
 वेदरदी जाणै नहीं अपने तन सहिये हो । टेर.
 पड़दे पावक परजली उर अंतर दाधी हो ।
 धूँवा झाल दीसे नहीं विरहिन इस खाधी हो ॥ १ ॥

ज्यू सूर रणखेत में लोहा तन सहिये हो ।
 व्यावर केरी पीर को ब्रह्मा किम लहिये हो ॥ २ ॥
 हुलस्या नर हासी कर वेदरदी बिचारा हो ।
 परमानन्द की चीनती सुन साहिय प्यारा हो ॥ ३ ॥

पद ४५

लगै मोहि राम पियारा हो ।
 प्रीति तजी ससार से किया मन न्यारा हो ॥ टेढ़
 सतगुरु शब्द सुनाइया दिया ज्ञान रिचारा हो ।
 भरम तिमर भागे सबे घट भया उजियारा हो ॥ १ ॥
 मैं बड़ा उस ब्रह्म का जाका धार न पारा हो ।
 ताहि भजै कोइ साधवा चिन तन मन मारा हो ॥ २ ॥
 चाख चाख सज छोडिया माया रस खारा हो ।
 राम अमीरस पीजिये छिन बारबारा हो ॥ ३ ॥
 आन देय को ब्याघसी जाके मुख छारा हो ।
 राम निरजन ऊपरे जन सुदर वारा हो ॥ ४ ॥

पद ४६

ऐसा जन रामजी को भाये हो ।
 कनक कामनी परिहरै नहि आप बघाये हो । टेढ़
 सय ॥ ते निरखैरता काहु न हुसाये हो ।
 शीतल बाणी बोल के अमृत बरसाये हो ॥ १ ॥
 कैतो मुनी होय रहै कै हरि गुण गाये हो ।
 भरम कथा ससार की सज दूर भगाये हो ॥ २ ॥
 पाँछू हट्टी बस करै मनही मन लावै हो ।
 काम क्रोध मद लोभ को खिण खोद बघावै हो ॥ ३ ॥
 सोये पद को चीन्द के बड़ा जाय समावै हो ।
 सुदर ऐसे साधु के दिग काल न आवै हो ॥ ४ ॥

पद ४७

समझ मन मूरख मैला रे ।
 बाहिर धोया क्या भयो घट भीतर मैला रे । टेढ़
 काम दिवानो यों फिरै जैसे छान्पा में छेला रे ।
 बदी बड़ी कर छोलसी छुरिया घाय सहैला रे ॥ १ ॥
 मन कहै मीठो जीमलै भाषीजै महिला रे ।
 सुख जेता दुख ऊपजै चोरसी सहैला रे ॥ २ ॥

ठकुराई दिन चारकी सुखपाल वहैला रे ।
 नाम विना पहुँचै नहीं यहां को यहां ही रहैला रे ॥ ३ ॥
 पांच संगती संगमें गुरजों वाण सहैला रे ।
 कहै कबीर समझ्यां विना कांई उत्तर दैला रे ॥ ४ ॥

राग सोरठ रायसा ।

पद ४८

पिया तुम देखो मेरी ओर हो ओर ।
 कांई होयरहे चितचोर हो चितचोर । टेर.
 ऊंचा तरवर गहरी छाया शाखा पात सदन फल लाया ।
 तापर ढाली सदन बनाया नाहिंन दूजी ठोर हो ठोर ॥ १ ॥
 पूर्व जन्म की प्रीति विचारो अवगुण मेरा चित्त न धारो ।
 ज्यूं वायस बल जहाज विचारो नाहिंन दूजी दोर हो दोर ॥ २ ॥
 भँवरी भारत माहिं पुकारी लज्जा राखी पांडवनारी ।
 मंजारी सुत अग्नि प्रजारी गज के तंतू तोर हो तोर ॥ ३ ॥
 उत्तरा जरत गरम को राखे प्रीति काज अर्जुन रथ हांके ।
 झूठे बोर भीलनी के चाखे भीषम को पण जोर हो जोर ॥ ४ ॥
 करमा खीच प्रीतिकर पायो विनतेडै विदुर घर आयो ।
 विप्र सुदामो तंदुल लायो सो लीने पट छोर हो छोर ॥ ५ ॥
 शरण आयां की सहाय करीजै बांह गह्यां की लाज वहीजै ।
 जन पूरण को दरशन दीजै गुरु मस्तक के मोर हो मोर ॥ ६ ॥

पद ४९

पिया तुम देखो मेरी पीरहो पीर ।
 तुम गुणवंता गंभीर हो गंभीर ॥ टेर.
 जग जीवन जग अंतरजामी सकल शिरोमणि सबके स्वामी ।
 विरद तुमारो है धननामी तुम सुखसागर की सीर हो सीर ॥ १ ॥
 अपने स्वारथ में रंग राता परकी पीर न जान हो दाता ।
 समरथ स्वामि निरंजन नाथा आन बंधावो धीर हो धीर ॥ २ ॥
 अजामिल कुत्ता कुं तारे बहुता अपती पतित उधारे ।
 इन सबहिन के कारज सारे मोमे कहा तकसीर हो तकसीर ॥ ३ ॥
 विनती बार बार कहा कीजै लाज विरद की राज वहीजै ।
 जन पूरण को दरशन दीजै पार उतारो तीर हो तीर ॥ ४ ॥

अवै म्हाने पार उतारो महाराज प्रभु थाने निज भगतारी आन । डेर
काम शोध मद लोभ मोहमें भूलो पद निरवान ।
बुद्धो जात ॥ भवसागर में तारो दयाम सुजान ॥ १ ॥
लख चोरासी भरमत भरमत मोड़ी पड़ी पिछान ।
अब तो शरण आयो चरणोंरी थे मत दीज्यो जान ॥ २ ॥
मं हू कुटिल अधम अपराधी भजियो नहिं भगवान ।
कह नरसी तुम पतित उधारण गावै छै वेद पुरान ॥ ३ ॥

पद ५१

ये थाके कानी जोज्यो राज अवगुण म्होरा मति देखो । डेर
अधम उधारण नाम तुम्हारो पतो मनमें हिल मिल पेखो ॥ १ ॥
माणसछा म्होने नहीं ठिक्काणो तुम बिन किणपर करा परेखो ॥ २ ॥
मजनवजी म्हाने थाका कहै छै जेज करो छो राज ओ काई लेखो ॥ ३ ॥

पद ५२

कायमा फीति ककला रे तू मोटो दातार ।
सरत सिरजीला साहिबजी तू मोटो करतार । डेर
चौदह भवन भोजै घड़े घड़त न लावै यार ।
यापै उधपै तू धणी धिन धिन सिरजनहार ॥ १ ॥
धरती अवर तै किया पाणी पवन अपार ।
बाव सूरज दीपक रूपा रेण दिवस विस्तार ॥ २ ॥
प्रह्ला शकर त किया बिष्णु लियो अवतार ।
सुर नर साधु सिरजिया करले जोर विचार ॥ ३ ॥
आप निरजन हुय रक्षा कायमो कोतरुहार ।
बाबू निगुण गुण कहै जाऊगा यलिहार ॥ ४ ॥

राग खरठ सूबा ।

पद ५३

कोई प्रीतम राम मिलावै रे ।
प्यासलगी चातक ज्यू सजनी और न कहु सुहावै रे । डेर
खदज शगार भयो पायक सम दिन दिन बिरह सतावै रे ।
है कोई ऐसा पर उपकारी हरिजीने आन मिलावै रे ॥ १ ॥
सोई साधु सो पर उपकारी मो उर साल मिटावै रे ।
स्वाति धूद ज्यों सींच सनेहा अब मोहि भरत चंचावै रे ॥ २ ॥
कहा करु करुणानिधि स्वामी अब कहु कहत न आवै रे ।
अब तुरसी बिरहनि व्याकुलता बिन दरसन बिललाव रे ॥ ३ ॥

पद ५४

वाहवारे मोज फकीरांदी । टेर.

कभी इक खासा मलमल मौसर कभी इक गुदड़ी लीरांदी ॥ १ ॥

कभी इक वासी दुकड़ा मौसर कभी इक चावल खीरांदी ॥ २ ॥

कभी इक आसण राजमहल में कभी इक गली अहीरांदी ॥ ३ ॥

वात जगत की कछु न सुहावै सीख सुणी गुरु पीरांदी ॥ ४ ॥

कहत कबीर सुणो भाई साधो चालैचाल अमीरांदी ॥ ५ ॥

पद ५५

सुलतानी मियाँ बलख बखारेदा ।

धिन या बांदी गुरु हमारे राहवताया पिवप्यारेदा । टेर.

चेरी सूती खरी विगूती चावुक चोट चकारेदा ।

पातशाह सूं किया जवाबू येही ह्वाल तुमारेदा ॥ १ ॥

सवा टोंक तन चोला पहरे पाँच टोंक तन सारेदा ।

अब तो बोझ उठावण लागा गूदड़ सेर अठारेदा ॥ २ ॥

चंगीचीज निवाले लेता ताती तुरत तयारेदा ।

अब तो ठूका पावण लागा सीला सांझ सवारेदा ॥ ३ ॥

दलवादल ले लश्कर चढ़ता पड़ती घ्रीह नगारेदा ।

अब तो प्यादा चालणलागा त्याग लिया पेजारेदा ॥ ४ ॥

इतनी तजकर लिवी फकीरी धिन आकीन विचारेदा ।

कहै कबीर सुणो भाई साधो फकर ज्ञान अखारेदा ॥ ५ ॥

राग सोरठ ।

पद ५६

वे दिन कब आवै हे माय ।

जा कारण या देह धरी मिलवो अंग लगाय । टेर.

जे जाणूं मै हिल मिल खेलूं तन मन सुरत समाय ।

या कामना करो परिपूरण समरथ हो रामराय ॥ १ ॥

मै उदास माधव नित चाहूं चितवत रैन बिहाय ।

सेज हमारी सिंह भई है जब जागूं जब खाय ॥ २ ॥

यह अरदास दासन की सुणियै तनकी तसि बुझाय ।

कहै कबीर मिलो सुखसागर मिलकर मंगल गाय ॥ ३ ॥

पद ५७

भाई मेरी हरि नहीं पूछी वात ।

पिंड माँहिलो प्राण पापी निकस क्यों नहीं जात । टेर.

पाट न खोलै मुखौ न बोलै साम नहीं परभात ।
 अबोलने में अवधि धीती काहे की कुशलात ॥ १ ॥
 स्वप्नमें हरि दरशन दीहो मैं न जाण्यो हरिजात ।
 नैन हमारे उघरि आए मरौंगी विष खात ॥ २ ॥
 रैन अघेरी विरहिन घेरी तारा गिणत बिहात ।
 काढ खड्ग कट कापलौंगी करौंगी अपघात ॥ ३ ॥
 आघन आचन कहि गये मोहि मिलनकी रयात ।
 दास मीरौ भई व्याकुल बालरुन्यो बिललात ॥ ४ ॥

पद ५८

जोगिया ने राखो रे बिलमाय । डेर
 ऊठो पाच सहेलियों लागो जोगिया रे पाय ।
 इण जोगियारे मन काहू चसी जी म्हारी नगरी छोड़्यो जाय ॥ १ ॥
 तो बिन जोगी झूपड़ीरे वाला जगल यधेली जाय ।
 इण नगरी री धातड़ी कुण कहैला आय ॥ २ ॥
 शरणे आयो बहु सुख पायो अब फ्यू छोड़्यो जाय ।
 कमर कशी परवेशने कयै मिलौगे आय ॥ ३ ॥
 शरणो त्याग्यो बहु दुख पायो दियो चोरासी मोंय ।
 कहत कबीर सुणो भाइ साधो कुण आवै कुण जाय ॥ ४ ॥

पद ५९

जोगियाजी हो मत जाज्यो घबना पेल । डेर
 आघतड़ा आनद हुचो रे जोगी जाता करगयो हेल ।
 थारा शब्द सुहावणा रे जोगी म्हारे अतर धहगयो शेल ॥ १ ॥
 म्हारो जिवड़ो धामें वसे रे जोगी ज्या दीपरु में तेल ।
 भई तो मनमें जाणियो रे जोगी करसी म्हासू खेल ॥ २ ॥
 सूरत धारी जीवनम्हारी रे जोगी योही रामत खेल ।
 रूपदास की बिनती रे जोगी कदे मिलेगो मेळ ॥ ३ ॥

राम सोरठ ।

पद ६०

मेरो मन हरि दठ नाहिं तजै । डेर
 ज्यों शुचती अनुभव प्रसवती दारुण दुख उपजै ।
 हुय अनुकूल विसार शूल शठ पुनि खल पतिहि भजै ॥ १ ॥
 इन्द्रिय लोलुप गृह पशुज्यू जहाँ तहाँ शिरनाण बजै ।
 तदपि अधम विचरे तेहि मारग तोउ न मूढ लजै ॥ २ ॥

मैं हान्यो कर जतन विविध विधि भस्तिशम प्रबल अजै ।
तुलसीदास वस होय तवै जब प्रभु प्रेरक वरजै ॥ ३ ॥

पद ६१

मन पलितैहो अवसर वीते ।
दुर्लभ देह पाय नर हरि भज कर्म वचन मन ही ते । टेर.
सहस्राबाहु दशवदन आदि नृप वचे न काल बलीते ।
हम हम कर धन धाम संचारे अंत चले उठ रीते ॥ १ ॥
सुत वनितादि जान स्वारथ रत नाँ कर नेह इन्हीते ।
अंतहु तोहि तजैगे पामर तू न तजै अब हीते ॥ २ ॥
तज अनुराग जाग जड़ मूरख त्याग दुरासा जीते ।
बुझहि न काम अग्नि तुलसी के विषय भोग रस घीते ॥ ३ ॥

पद ६२

हे हरि वो दिन क्यों न करै ।
कर करवा कोपींद कमर पट मैं ममता निचरै । टेर.
मोह द्रोह दुख सुख संशय भ्रम कामादिक बिछुरै ।
ज्ञान वैराग्य संत जन संगति यो मन विपुल धरै ॥ १ ॥
विजित इंद्रियाँ विमद मत्सर तजि क्रोधाग्नि न जरै ।
यथालाभ संतोष मानिके लोलुपता न करै ॥ २ ॥
तृष्णा दंभ लोभ हठ तजिके उत्पथ पग न धरै ।
समता सत्व शुद्धि धीरज धरि निर्भय ह्वै विचरै ॥ ३ ॥
मित्र अमित्र आपनो दूजो मैं तै चित न धरै ।
दया विवेक शील संग लेके दृढ मन मौन करै ॥ ४ ॥
तजि संकल्प विकल्प कल्पतरु तव पद ध्यान धरै ।
कर्म जाल संसृति अनेक के सो सब ही पर जरै ॥ ५ ॥
मन क्रम वचन निसारि विषयरस रामहि राम ररै ।
स्वर्ग मुक्ति ब्रह्मादि लोककी अभिलाषा न करै ॥ ६ ॥
एकाकी दृढ निस्पृह आसन गुरुवच मनन करै ।
चिन्मय निखिल अखंडरूप तव-तासूं पल न टरै ॥ ७ ॥
तूं सर्वज्ञ सर्व कारण पर निजप्रण क्यों न धरै ।
बालकृष्ण कूं दीन जानि के क्यों नहिं पार करै ॥ ८ ॥

पद ६३

अब हरि कहांगये करुणा केत । टेर.
अधमउधारण पतिताँ पावन कहत पुकान्या नेत ॥ १ ॥

नोई नरोसो लाकेसो नोई नरोसो ॥ २ ॥
 मुन मारण कर बुनोय उन्को दख न होत ॥ ३ ॥
 दामास नर जति निरुण बजह कर न होत ॥ ४ ॥

पद ६३

मजह न निरुण नम स्मरे । टेह
 मजह दण्डो बजह नरो बाणे छिह छे चिनबोर ॥ १ ॥
 बार बार बाणे दुनरोते रैन पुनार् मोर ॥ २ ॥
 दामन गिरा बजह दिन गते मुहर गजन मोर ॥ ३ ॥
 बजह नम निरुण नहि रैनो नारा चित्तत तोर ॥ ४ ॥
 हाइ पसे मानुर विरहिन जसे बह बहोर ॥ ५ ॥

पद ६४

अब हरि मूला भाई बने । टेह
 गिरति निहारन तुनरो गिरधर मुघने मित्र घने ॥ १ ॥
 नै भाषोन कहु नहि टापक तुन दिन कोन गिने ॥ २ ॥
 ज्यू त्यू कर मोहि पार उठारो मजनिधि लाज तुम ॥ ३ ॥

पद ६५

हरि गिन ये दिन जात दुखारे ।
 सेज शूतर सकल सुघ लागे जादिन तें भये न्यारे । टेह
 सुनत सखी दरवा क्रतु भाइ परसे सय वन प्यारे ।
 इनरी देह मजूताई ऊहीं गिरह बनेसो जारे ॥ १ ॥
 कोन मुने कोन या मानं उर दिव करवत सारे ।
 मन ही भाई गिरह विरहिन मूरछ नैणनल डारे ॥ २ ॥
 भारतवत चातक ज्यू सजनी सारी रैन पुकारे ।
 जन तुलसी प्रनु प्रीति जानिके घन ज्यू आन मिलारे ॥ ३ ॥

पद ६६

हरि मेरे तारण तरण जहाज । टेह
 भव भव में कोऊ चैन न पायो अब मेरी तुमही को लाज ॥ १ ॥
 आन देव पूज्या बहुतेरा सन्यो न एको काज ॥ २ ॥
 अब तो शरण राख जगतपति घयताके महाराज ॥ ३ ॥

पद ६७

एक नदियाँ एक नाल कहावत मैलो नीर भरो ।
जब मिलिगे तब एक वरण भे गंगानाम परो ॥ १ ॥
एक लोहा पूजा में राखत एक घर बधिक परो ।
सो द्विविधा पारस नहि राखत कंचन करत खरो ॥ २ ॥
एक माया एक ब्रह्म कहावत सूरश्याम झगरो ।
के याको निर्वाह करो प्रभु नहिं प्रण जात टरो ॥ ३ ॥

पद ६९

गोविंद गाढ़ाछोजी दिलझारा मीत । टेर.
प्रीति करो तो ऐसी कीज्यो ज्युं गजगीरी भीत ॥ १ ॥
कपटी सित्रसैं प्रीत न कीजै छोडचले अधवीत ॥ २ ॥
जब जम आय पकड़ लेजावै होसी बहुत फजीत ॥ ३ ॥
कहै बखतावर हरि को भजन कर निर्भय होय नचीत ॥ ४ ॥

पद ७०

ऊमर थारी जावै छै जी दियां रे दगो । टेर.
इयाही गई सपेती आई हुय गयो श्वेत बगो ॥ १ ॥
ओ संसार ओसको पानी चाल्यो जात भगो ॥ २ ॥
मात पिता सुत कुटुम्ब कबीलो स्वारथ लार लगो ॥ ३ ॥
भूप विजयकी याही है वीनती प्रभुविना कोई ना सगो ॥ ४ ॥

पद ७१

प्रिय म्हांनै लागै छै जी श्रीसिंहथल गुरुधाम ।
जहाँ रटत अहोनिशि राम । टेर.
श्रीजैमल शिष्य शिव पदसु जाहि पद विराजे संत हरिराम ॥ १ ॥
भवश्रमहारी बलिहारी विहारी शरणागति विसराम ॥ २ ॥
घिन हरिदेव देव तरु सादश तादश मोतीराम ॥ ३ ॥
श्रीरघुनाथ चेतन चरणाश्रित नरसिंहदास गुलाम ॥ ४ ॥

पद ७२

चलो चलो सखी सिंहथल घिन महाराज ।
जन हरिराम है मेघ उजागर जीवां तारण जहाज । टेर.
देव सृष्टि दरशण को आवै मन वांछित सब काज ॥ १ ॥
शिवसनकादिक और ब्रह्मादिक ऐसो वण्यो समाज ॥ २ ॥
च्यार मुक्ति अरु च्यार पदारथ इण मौसर है आज ॥ ३ ॥

भरतखंड उधार करण कु आये हैं महाराज ॥ ४ ॥
 सत हरिचंद कबीर नामदे काशी शरर राज ॥ ५ ॥
 लाखुरामक शरणे राखो अपने विद्वद की लाज ॥ ६ ॥
 राग कालिंगढो ।

पद ७३

निमिष मन ना करो न्यारो हे ।
 रुड़ो सतपुरुषारो धाम, सिंहधल लागे प्यारो हे । टेर
 सिंहधल लागे सुहावणो, धोला घोरामाहिं ।
 मानघोत शिचपुरी समसोहे, दरस्या भव दुख जाहि ॥ १ ॥
 अवधपुरी मथुरा द्वारावती, काशी गया प्रयाग ।
 तीर्थगुरुसे अधिक कोटि फल, परसे ते बडभाग ॥ २ ॥
 चेतन महन्त भये जहा चरुघे, ज्या भागीरथ भूप ।
 हरिपुरसों आये इलऊपर, भक्ती गगनरूप ॥ ३ ॥
 दयाबन्त गुणयन्ता धानी, जनकराय ज्यों जान ।
 रामचन्द्र जैसे मयादी, सत हरिचन्द्र समान ॥ ४ ॥
 तिहें गादी सोहे मनमोहे, भीभीरामप्रताप ।
 प्रीति सहित पद परसे कोइ, हरै पाप वृथ ताप ॥ ५ ॥
 रामबोकमें दिपै रवीसम, मुप शोभा जिमि चन्द ।
 शुद्धमना सतपुरुष शान्तिचित, गावत गुण गोविन्द ॥ ६ ॥
 दया करो दीनानाथ दयाल, रामप्रताप महाराज ।
 माँगू दोउंकर जोब देह मोहि, रज चरणारी राज ॥ ७ ॥
 जम जम सिंहधल गुण गाऊ, नहिं पाऊ में पार ।
 भाखै मुक्त महर यों भजन्यो, सिंहधल को आधार ॥ ८ ॥

राग कामिनी सोरठ ।

पद ७४

मतिदेखो करणी हमारी । राज लेखो विरद मुरारी । टे.
 कहाकियो गजराज धर्म नेमा । डूबत मुख रररर प्रेमा ।
 सुनतों ततकाल पघारे । वाके फद काट दुख टारे ॥ १ ॥
 कहा अजामेल कियो आचारा । वाकी करणी नाहिं लिगारा ।
 सुत हेत नारायण गायो । जमदूता पास छुडायो ॥ २ ॥
 कहा कुब्जा कियो तप भारी । वाकू सँज परापतिसारी ।
 वाकी कीरति मुख मुख गावै । शुक्र भीभागवत बतारै ॥ ३ ॥

कहा गनिका पतिव्रतधारी । सो बैठ विमान सिधारी ।
तुम पतितउधारण देवा । सुरनर मुनि लहत न मेवा ॥ ४ ॥
शरणागत लेत उवारी । यह आदूरीति तुम्हारी ।
गुरु घाल दरस बलिहारी । जन पूरण तन मन वारी ॥ ५ ॥

पद ७५

करुणानिधान सुनिये । कछु करुणा का न मेरी । डेर.
प्रहलाद के हितकारी । खंभ फाड़ के देहधारी ।
नरसिंह रूप कहायो । सब संतन के मन भायो ॥ १ ॥
गजकी अरज तुम मानी । सो तो वदत वेद वानी ।
ग्राह के जो फंद काटे । अघ कोटि कोटि दाटे ॥ २ ॥
तुम केते पतित उधारे । सो तो कविजन गिनगिन हारे ।
अब मेरी बेर राधो । तुम सूता हो कि जागो ॥ ३ ॥
मैं बेर बेर प्रभु देखूं । प्रभु बाट तुम्हारी हेरूं ।
महाराज अवधविहारी । जन रामसखे बलिहारी ॥ ४ ॥

पद ७६

बूझूं बूझूं पंडित जोसी । म्हारो राम मिलन कद होसी । डेर.
म्हारी आंख फरुके बाँई । म्हांनै साधु मिलै कै साँई ।
म्हारा पिया परदेसां छाया । किन बेरण ने बिलमाया ॥ १ ॥
म्हारी रोय रोय अंखियाँ राती । म्हारो तन दिवलो मन वाती ।
म्हारा झुर झुर पिंजर खीना । जैसे जल बिच तलफै मीना ॥ २ ॥
उड उड रे काला कागा । म्हारे पियाने घणा दिन लागा ।
बाजींदो विरह विसूरे । मेरी आस गुसाइयां पूरे ॥ ३ ॥

पद ७७

पोथी जो खोल पांडे । साजन हमारा कित है । डेर.
मैं सुणी सजन की वतियाँ । मेरे चली कलेजे कतियाँ ।
मोहि नींद न आवै सारी रतियाँ । आली आई निगोड़ी रत है ॥ १ ॥
कोई सजन संदेशा लावै । मोहि मिठोड़ी सी बात सुणावै ।
म्हारा साजन कब घर आवै । बाही सैं म्हारो चित है ॥ २ ॥
दादुर मोर कोकिला बोलै । चपला चित चहुं दिशि डोलै ।
बखने को दरशण दीजै । म्हारो योही संदेशो नित है ॥ ३ ॥

जिय सतगुरु विन दुख पावै । म्हारै नेणा नीद न आवै । टेह
 वे परम शून्यके चासी । अब यहा से भये उदासी ।
 वे अमर लोक में पहुँचा । अब राम जना यहाँ ओवता ॥ १ ॥
 अब वा सुरत कय पाऊ । भँ रात दिना बिल्लाऊ ।
 मै एक घड़ी भी न रहता । वे वायक अमृत कहता ॥ २ ॥
 अब घोरज फोण बघावै । मोहि राम अमृत कुण पावै ।
 वे पूरण ब्रह्म अवधूता । है अजुन जाको पूता ॥ ३ ॥

रग सोर ।

काई सुतो नीद घटाऊढा । वीर घाट घणी रे । टेह
 आवेली नीद मोय मत जाइयो । सोवाने रैण घणी रे ॥ १ ॥
 इन निद्रा भँ नफो नही है । पूछेला जाय घणी रे ॥ २ ॥
 अयघट घाट विषम का मारग । खाडेकी धार अणी रे ॥ ३ ॥
 मात पिता सुत नारि करीलो । तेरो कोई नाहिँ घणी रे ॥ ४ ॥
 कहै यक्षतावर सुणो मजनदजी । अयै जमसे आण घणी रे ॥ ५ ॥

शरणे आया इयाम बिहारी जी । राज ताण्वा सजेला । टेह
 अधम उधारण साहिव साचा । जे जग जान मजेला ॥ १ ॥
 आयलई में ओट राखी । प्रभु गहि साह तजला ॥ २ ॥
 ललनासखी मेरो कहा विगरंगो । राखरो विरद लजेला ॥ ३ ॥

शरणे आया री साँघरा वरग बहोला । टेह
 नैद न घट तो बड़ तो चारिद ज्ये एकरस सदा रहोला ॥ १ ॥
 ओगुण दपट धरो आजम तल हरि अग वाह गहोला ॥ २ ॥
 ललनासखी प्रभु कमल धवन सू कय मोहि वचन कहोला ॥ ३ ॥

जाऊ कहा तजि चरण तुम्हारै । टेह
 काको नाम पतित पावन जग किहि अति दीन पियारे ॥ १ ॥
 कौन देव विरदाह विरद हित दठि २ अधम उधारे ॥ २ ॥
 खग मृग व्याध पापाण विटप अह यवन कवन सुरतारे ॥ ३ ॥

देव दनुज मुनि नाग मनुज सब माया विवस विचारे ॥ ४ ॥
तिनके हाथ दासतुलसी प्रभु कहा अपनपो हारे ॥ ५ ॥

राग जैजैवन्ती ।

पद ८३

आज तो आलीरी म्हारे आंगन वधावना । टेर.
आये गुरुदेव आज करन हमारे काज ।
कंचनकलश साज सन्मुख जावना ॥ १ ॥
कंचनको थार हाथ आरती संवारनाथ ।
तिलक चढ़ाय माथ घर पधरावना ॥ २ ॥
तन मन मेट कीजै लोचनको लाभ लीजै ।
चरण पखाल पीजै भवन सींचावना ॥ ३ ॥
किये जप जोग जाग तीरथ गया प्रयाग ।
भावन हमारे भाग भये मन भावना ॥ ४ ॥

राग जैतश्री ।

पद ८४

यो तन पाहुणो रे मति कोई करो रे गुमान ।
परसूं आज क काल में रे छोड़ चलै सिजमान । टेर.
नदियां नाव संजोग है रे विछुड्यां मेलो नाहिं ।
गया सो फेर न आवसी रे समझ देख मनमाहिं ॥ १ ॥
छत्र सिंहासन छोड़कै रे मर मर गये अमीर ।
तू क्यों गाफल हो रह्यो रे काचो धार शरीर ॥ २ ॥
मोत खड़ी शिर ऊपरै रे जीवन झूठी आस ।
कहा जाणूं कव आवसी रे बाट बटाऊ आस ॥ ३ ॥
झूठी जग की मोहनी झूठा तन धन धाम ।
रामचरण अव चेतके रे सुमरो सत ही राम ॥ ४ ॥

पद ८५

राम गुण गायलै रे साजा थकां शरीर ।
पीछै याद न आवसी रे पिंजर व्यापै पीर । टेर.
जोवन थकां भज लीजिये रे जेज न कीजै वीर ।
फेर बुढापो आवसी रे नैना ढरसी नीर ॥ १ ॥
अवसर बीतो जात हैं रे ज्युं अंजरीको नीर ।
फेर न हंसो आवसी रे इण सरवर की तीर ॥ २ ॥

भाग भला सतगुरु मिल्या रे पढ़यो समद से सीर ।
 हसा होय चुग लीजिये रे नाम अमोलख हीर ॥ ३ ॥
 सन देवन को देव है रे सब पीरन को पीर ।
 सहजराम भज लीजिये रे दुख भेटण सुखसीर ॥ ४ ॥

पद ८६

भूदारा मन माँहिला रे चलणो आज कै काल ।
 झूठा झगड़ा छोडदे रे साहिव में चित चाल । डेर
 फरीदा घोर निमाणिया रे मइलौं माल न लाय ।
 खाफण सेती राखले रे और फकीरा खुलाय ॥ १ ॥
 अम्मा सौँई साब है सौँई सब सुहाय ।
 सतगुरुसेती मिलरहो रे खाफण देह कहाय ॥ २ ॥
 भणे फरीदो सामलो रे झूठो जगको नेह ।
 राम भजो भूदारा भाइयों रे माटी मिलसी देह ॥ ३ ॥

पद ८७

सजन सनेहिया रे छाव रह्यो परदेश ।
 बालपणो भोलै गयो रे पडर होगया केश । डेर
 मैं तो जाण्यो ओरही रे तैं कछु जाणी ओर ।
 तुम करसो ज्यों होयसी रे मेरी झूठी दोर ॥ १ ॥
 मैं जान्यो अक्सर भलोरे पीव मिलेंगे आय ।
 तेरे भावैं कछु नहीं रे तलफ २ मर जाय ॥ २ ॥
 मैं अबला अतिदाय दुखीरे तुम जानो सब यात ।
 जब ही दृष्टिभर देखिहो रे मेरे खुद कुशलात ॥ ३ ॥
 चातक ज्यू डेरों सदा रे देयो प्रभु जल दान ।
 सुदर विरहनि कहत है रे दो दरसन दिनमान ॥ ४ ॥

पद ८८

जारे निरमोहिया रे कहा रह्यो करवास ।
 पढ़ली प्रीत लगाय के रे अब क्यू भयो उदास । डेर
 लाड लड़ायो अति घणो रे हाँस न पूरी मोर ।
 विणजारेरी भागज्यू रे गयो घुक्रती छोर ॥ १ ॥
 घड़ी पलक जुग जात है रे क्यू कर राखू प्रान ।
 मैं तो जाण्यो सग रहै रे तैं तो तोडी तान ॥ २ ॥
 अब तो पसी कीजिये रे प्रियतम प्यारा लाल ।
 सुदर विरहनि कहत है रे दरशन दोनी क्याल ॥ ३ ॥

निर्गुणभजनमाला

पद ८९

विचाले आंतरो रे म्हारो हरि विन भाजे नाहिं ।
कहा जाणू कव भाजसी रे ऊमावो मनमाहिं । टेर.
आडा परवत वीच है रे नदियां नीर अनंत ।
पिंजर आयां पांखड़ी रे मिलमिल आऊं नित्त ॥ १ ॥
चरण विहूणो चालणो रे धरणि विहूणी घाट ।
आडा परवत हुय रह्या रे किसविधि लंघूँ घाट ॥ २ ॥
पोथी प्यारा पीवकी रे वॉचन दे नहिं नैन ।
याद करूं तो आवसी रे प्रीतम दर्शन दैन ॥ ३ ॥
कुंजर झूरे वन कुं रे चकवो पैले पार ।
वखनो झूरे रामकों रे म्हारी आवागवन निवार ॥ ४ ॥

पद ९०

रामने संदेशडोरे वालो कोइक जन लेजाय । टेर.
चित्तवंती चकितभई ज्युं मृग नाद सुनाय ।
मैं अवला आतुर भई रे वाला दरशन दीज्यो आय ॥ १ ॥
रूप विहूणी कुलच्छणी रे नारी शरणै आय ।
दीन दयाल दयानिधि देवा विरदवहोघणराय ॥ २ ॥
अंग अभूषण साझ सुंदर ऊभी सेझ विछाय ।
वेग पधारो वालमा विरहन लो वतलाय ॥ ३ ॥
अधम उधारण पतितां पावन अशरण शरण सहाय ।
सांवतराम के समरथ स्वामी घेनु वछा ज्युं घाय ॥ ४ ॥

पद ९१

घड़ी न आवडै रे वाला तुम दरशन विन मोय ।
तुम विन मोरे प्राण पियारे जीवन किस विधि होय । टेर.
दिवस न भूख रैण नहिं निद्रा विरह संतावै मोय ।
घायल ज्युं घूमूँ खड़ी म्हारो दरद न जाणै कोय ॥ १ ॥
दिन गमायो खायके रैण गमाई सोय ।
प्राण गमायो झूरके नैण गमाये रोय ॥ २ ॥
जो मैं ऐसी जाणती प्रीति कियां दुख होय ।
नगर ढंढोरो फेरती प्रीति करो मति कोय ॥ ३ ॥
पल पल पंथ निहारती नीठ रही मग जोय ।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर तुम मिलियां सुख होय ॥ ४ ॥

रेखता ।

पद ९२

जगत सब रैणका स्वप्ना । समझ दिल को नहीं अपना ।
कठिन है मोह की धारा । बुझो सब जाय ससारा । डेर
सजन परिवार सुत दारा । सबै उस रोज है न्यारा ।
प्राण जब निकस जावेगा । कोई नहीं काम आवेगा ॥ १ ॥
पता जिम डारसे फूटा । घटा ज्या नीरदा फूटा ।
ऐसी नर जान जिदगानी । चेते क्यू न फेर अभिमानी ॥ २ ॥
भूलेमत बेच तन गोरा । जगत में जीवना धोरा ।
तजो मद लोभ बतुराई । रहो नि शरु जग माई ॥ ३ ॥
सबा मत जान या देहा । लगाचो राम से नेहा ।
फटै जम जालदा घेरा । कहे गंगादास जन तेरा ॥ ४ ॥

पद ९३

इहक गुरु रामदा लागा । खरक का भम सब भागा ।
छफ्या रस प्रेम पिघ प्यारा । भया हू मगन मत घारा । डेर
प्रीति की रीति हम जानी । तलफ है मीन बिन पानी ।
भँवर का हाल है ऐसा । जिये धो कमल बिन कैसा ॥ १ ॥
घाण गुरु धानदा मान्या । फलेजा छेद कर डान्या ।
जगत का रग सब खोया । हृदय में प्रेम से खोया ॥ २ ॥
धूमे गजराज की नाई । रहै मस्तान मन माई ।
गूगो मिथान कटु खाये । मगन सुख कहत नहि आवै ॥ ३ ॥
ऐसे गुरु शरण तिप पुरो । पावे गुरु मुखी तिप सुरो ।
जगत की मेट दे आसा । कहै गुलार जन दासा ॥ ४ ॥

पद ९४

शब्द गुरु घाण भर मान्या । फलेजा छेद कर डान्या ।
सूती इक विरहनी जागी । आरत पित्र मिलनकी लागी । डेर
रोम रोम फैल गई पीरा । चलत है सास अति सीरा ।
गले मद मद से खैना । बोलत है अटपटे खैना ॥ १ ॥
बदन पर पान ज्यू पीरा । चलत है नैन में नीरा ।
दिवस कछु धान नहीं भावै । रेण डुरु नाँद नहीं आवै ॥ २ ॥
नहीं कोई महरमी मेरा । ताही सँ दाखिये बेरा ।
कहो दुख कौन से कहिये । आपने आप तन सहिये ॥ ३ ॥

निर्गुणभजनमाला

तलफ ज्युं नीर विन मीना । वे दरदी मरम नहिं चीना ।
 व्यावर की पीर कुं वंजा । करै क्या ज्ञान कुं गंजा ॥ ४ ॥
 वीती सो वैद पुनि होई । न जाणै दूसरा कोई ।
 दीनी सो महरमी होई । भेदी उर जानसी सोई ॥ ५ ॥
 दरद की पीर अति भारी । लगै नहि दूसरी कारी ।
 सेवगराम विरहनी गावै । मिल्यां पिव प्राण सुख पावै ॥ ६ ॥

पद ९५

भया हूं इश्क मस्ताना । कहै सब लोग दीवाना ।
 दिलों का दरद को जानै । कहे से सत्य को मानै । टेर.
 हम न दिन रैन रोते हैं । दमन से जान खोते हैं ।
 सूली की सेज सोते हैं । विरह के ये निसाने हैं ॥ १ ॥
 तजी खिदमत उजीरी की । पाई लज्जित फकीरी की ।
 चढा किस्ती सबूरी की । फकर के ए मकाने है ॥ २ ॥
 हम न हक़ यार है जानी । पिया हरि नाम का पानी ।
 आखिर होयगा फानी । अलू राम ही समाने हैं ॥ ३ ॥

पद ९६

लगन की बात न्यारी है । कटारी से करारी है । टेर.
 लगी मन सूरके पेसी । करी उन देखलो कैसी ।
 अनलहक यूं कही बानी । चढ़े सूली नहीं मानी ॥ १ ॥
 लगी सुलतान के भाई । बलख की तजी बादशाई ।
 अठारे लाख तजे तुरियाँ । सोलह सहस्र तजि हुरियाँ ॥ २ ॥
 जनन की पीर है भारी । न जानै वांझवा नारी ।
 लगी सो आदि अंताई । कवीर यूं कहै भाई ॥ ३ ॥

पद ९७

विरहनि मग पीव का जोवै । नहिं सुख रैण दिन सोवै ।
 पड़त है विरह का झोला । खिनक मासा खिनक तोला । टेर.
 भवन मुझे भाखसी होई । भयावन वाग था सोई ।
 शब्द पिक सेलसी अनिया । ऐसी गति आयके बनिया ॥ १ ॥
 लगत है सेज मुझे सूनी । पिया विन एकली रूनी ।
 विरह की ताप अति भारी । न लगै दूसरी कारी ॥ २ ॥
 खाना पहरना फीका । लगे नहिं स्वाद कछु नीका ।
 भूपण भुजंग जिम खावै । असन वा वसन नहिं भावै ॥ ३ ॥

आरति अत पीचकी मनमें । निमिष भर चेन ना तनमें ।
 हियो भर नैन जल आवै । दरशन कय पीच दिखलावै ॥ ४ ॥
 रैन सब धीत गई सजनी । रही अउ पीछली रजनी ।
 रहे नहिं जात यो तन ही । अउ पिय आयां ही वनही ॥ ५ ॥
 सेवग को स्वामि सुख दीजै । निपट ही अत नहिं लीजै ।
 झूरे नित आत्मा दासी । मिलो प्रभु आप अविनासी ॥ ६ ॥

पद ९८

पिया टुक देख तू मोख । तेरे चिन प्राण मैं सोख ।
 ऐसा फया हुवा बेदरदी । जरद तन होरहा हरदी । डेर
 करवत यहत है मेरे । महर कर तू न हेरे ।
 हरि हर यचन नित डेर । तिहारो पथ नित हेर ॥ १ ॥
 दिवस मोहि अघ नहिं भायै । रात्यु नींद नहिं आयै ।
 तिहारो देखयो भायै । नाथ कय दरश दिखलावै ॥ २ ॥
 किशोर जन विरह अति भारी । लगी है दरश की घारी ।
 खड़ी कयकी पुकारु रे । तेरे पर प्राण वारु रे ॥ ३ ॥

पद ९९

सजन इक भर्ज है मोरी । मुझे हैं आदिकी तोरी ।
 फलेजा फटत है माहीं । तुझे कछु खबर भी माहीं । डेर,
 ऊचके रैन दिन छाती । लिखी नहिं जात है पाती ।
 यहै नित नैन में पानी । पिया मेरी पीर नहिं जानी ॥ १ ॥
 उरावै रैन अधियारी । विजलिया खमक है भारी ।
 टहका मोर का सालै । हिये में हूक सी चालै ॥ २ ॥
 परत मुरझाय के धरती । वषत तन विरह की जरती ।
 पपैया पीव मति बोलै । सुनत मन परत है झोलै ॥ ३ ॥
 कोयलियां फूक है झीनी । मानुं मोहि सेल की सीनी ।
 कवीरो विरहनी गावै । मिल्यो प्रभु प्राण सुख पावै ॥ ४ ॥

राग बायेरा ।

पद १००

घाट घणी दिन घोषो रे चटाऊड़ा वीरा घाट घणी दिन थोड़ो रे । डेर
 ले कमची बीख ना चोरो हाक घनेरो घोषो रे ॥ १ ॥

निर्गुणभजनमाला

है घर दूर सूर घर हालो दोड़ सकै तो दोड़ो रे ॥ २ ॥
नगर पहुँचाँ निरभै होसी वीच रक्षाँ रो फोड़ो रे ॥ ३ ॥
पंथ दुहेलो संग न कोई जग में जीवण थोड़ो रे ॥ ४ ॥
आशाराम अणघड़ के शरणै मारग पायो मोड़ो रे ॥ ५ ॥

पद १०१

सतगुरुजी म्हाारा नैणोंदे आगल रहियो रे । टेर.
यो संसार मोह जल भरियो सार हमारी लहियो रे ॥ १ ॥
मो निगुणी में गुण नहिं कोई ओगुण म्हाारा सहियो रे ॥ २ ॥
इण संसार में कोई न अपणो के नेह लगाऊँ कि नेहियो रे ॥ ३ ॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर लाज विरद की बहियो रे ॥ ४ ॥

परज

पद १०२

परी सुख सुंदरि श्याम मिला वे, यारी एक लगी आतम सूँ ।
और भई निरदावै । टेर.
प्रेम भाव का पहर पटोरा सुरत निरत कर नाचूँ ।
अनहद तार तत्तझणकारा एक अखंड धुनि राचूँ ॥ १ ॥
अमल कमल का सझ सिंगारा जागूँ संजम राती ।
तन मन जोड़ करुं दासातन रहूँ रामरंग राती ॥ २ ॥
जाग्या भाग भये जग न्यारा पीव पुरातन पाया ।
जन हरिराम श्याम अरु सुंदरि अरस परस लिवलाया ॥ ३ ॥

पद १०३

मानोंगी मानोंगी गुण तेरा ऊधो मैतो मानोंगी गुण तेरा । टेर.
जादिन ते विछुरे मनमोहन हृदै वीच बसेरा ।
नैन हमारे नीर न खंडै कंचन भवन बसेरा ॥ १ ॥
जिम तिम करि कोई हरि ही लावे कर उपदेश घनेरा ।
एकवार जो हरि ही मिलावे प्राणजीवन घन मेरा ॥ २ ॥
या जीवन से मरण भलेरो यातें करो निवेरा ।
सूरश्याम प्रभु छोड चले हैं बाँध गेह का बेरा ॥ ३ ॥

पद १०४

बिन बिन मोय को कछु न सुहावै तरफन चित अति ही अकुलावै । टेर.
परी सखी हमरे प्रीतम को जाय कोई यह बात सुनावै ।
यह जोबन छीजत है छिन छिन वीत गये पर फिर नहिं आवै ॥ १ ॥

चहुत कोल घीते आचन के गिनत गिनत जियरा घवरावै ।
 हाय दैया अरियो तरसत है विरह विपत नित मोय जरावै ॥ २ ॥
 मरन न देत आश मिलवै की जीवन छिन विन नहि भावै ।
 सुध बुध सबही भूलगईरी यह दुख तो अब सह्यो न जावै ॥ ३ ॥
 मतलय को गरजी जग सारो अरजी मोरी कोन सुनावै ।
 तनमन जीति रीति सब करके भजहु राम काम धनि आवै ॥ ४ ॥
 हे जगदीश ईश विश्वभर तुम विन यह दुख कोन मिटावै ।
 करहु कृपा करुणानिधि मोर्ष मिले पिय जिय हरप न मावै ॥ ५ ॥
 धानी याहि ज्ञान कर देखै रसिक याहि रस पछ लगावै ।
 योग भोग मति दोह परु करि सुमति अजित पद सहज धतावै ॥

मगन

पद १०५

घड़ी परु विलव करो नगरी हवा राजपी ।
 ऐसो मेधासो छौड उदासी फ्यू करी । डेर
 फाया करत पुकार जगल विव फ्यू धरी ।
 पहिला कियो सनेह अरै फ्यू परहरी ॥ १ ॥
 हम मानसरोवर के हस तेरी सग ना रहौ ।
 हमहँ बटाऊ लोरु सजन तुमसे फहौ ॥ २ ॥
 धलरी अगम के देस जहा देख्या जम डरै ।
 जहाँ भन्या प्रेम का होइ हस केला करै ॥ ३ ॥
 कहै कबीर विचार समझ सत भाचना ।
 हस गया ब्रह्मलोक बहुरि नहि आचना ॥ ४ ॥

पद १०६

बलो सतगुरुजी री हाट धान बुद्धि लाइये ।
 लीजै रामजी रो नाम परम पद पाइये । डेर
 सतगुरु रुठा होय तो नुरत मनाइये ।
 हुइकर दीन आधीन गुना बरुसाइये ॥ १ ॥
 सतगुरु दीन दयाल दैणा सो सब दिया ।
 मे रही अभागण नारि अमृत तज विष पिया ॥ २ ॥
 सतगुरु ऐसा दयाल दया चित हेरवै ।
 कोट करम करि जाय पलक चित फेरवै ॥ ३ ॥
 कहै कबीर विचार समझ हिरदे धरै ।
 जुग जुग कीज राज क डुरमति परहरै ॥ ४ ॥

निर्गुणभजनमाला

पद १०७

हाथ आम की डार डगर विच क्युं खरी ।
चल्यो जा मूरख गंवार मेरी तुझै क्या परी । टेर.
पीव चल्या परदेस क पतियाँ दे गया ।
छतियाँ वजर किंवार जंजीरी दे गया ॥ १ ॥
कूंची पिया के हाथ क ताला प्रेम का ।
शील संतोष शृंगार पिया के नेम का ॥ २ ॥
काजल तिलक तंबोल क ऊपर आरसी ।
सतगुरु है सुभियान लखे मेरी पारसी ॥ ३ ॥
गगन मंडल के बीच उडै दोय पंखिया ।
राम मिलण के काज झुरै मेरी अंखिया ॥ ४ ॥
गावै दास कबीर मंगल के भावना ।
हंस चल्यो सतदेश बहुरि नहिं आवना ॥ ५ ॥

पद १०८

चली भवन के माहिं अकेली गोरियाँ ।
जाय खड़ी पिव पास हाथ जुग जोरियाँ । टेर.
चले नीर दोउ धार प्रेमकी नारियाँ ।
हिरदो सज्जल होय भूली सुधि सारियाँ ॥ १ ॥
कह न सकी मुख वैन चैन नहिं जीव में ।
जैसे चित्रकनैन रूपे जाय पीव में ॥ २ ॥
रोम रोम थरराय पोंव कर डिंगमिगे ।
साहिय देख उदास त्रास अति ही भगे ॥ ३ ॥
कहै कबीर विचार सार प्रभु लीजिये ।
विरहन को दुख देय गमन मत कीजिये ॥ ४ ॥

पद १०९

इण आंगणिये हे सखी हम खेलण आया ।
केई खेल्या केई खेलसी केई खेल सिधाया । टेर.
आवो पांच सहेलड्याँ सीवो मेरा चोला ।
मैं अवला भई विरहनी साहिव मेरा भोला ॥ १ ॥
एक निमाणी कोहड़ी जाकी नेजू है झूठी ।
नैन हमारे यूं झरै जैसे गागर फूटी ॥ २ ॥
बड़ तल आण उतारिया संगी कुरलाया ।
तुमतो तुमारे घर चले हम भये जी पराया ॥ ३ ॥

काजी मुहम्मद यू भणै अब यहाँ नहि रहणा ।
आया सदेशा मेरे राम का कटू नहि कहणा ॥ ४ ॥

पद ११०

दुख सुप्त मन नहि आणिये घट साये घबिया ।
टाल्या फिसका ना टले रघुनाथजी जबिया । डेर
सीता सरीसी मारजा रघुपति मोटा स्वामी ।
लकारो पति लेगयो वनमें विपति जामी ॥ १ ॥
हनुमानसा महाबली कारज किया मोटा ।
प्रारण्य को पाययो पाया तेल लँगोटा ॥ २ ॥
हरिश्चन्द्रसे राजधी तारावे रानी ।
काशी नगर के चोहटे शिर दियो पानी ॥ ३ ॥
नल सरीसा नर नहीं दमयतीसी रानी ।
घन घन भटवत वे फिन्या यिन अन अब पानी ॥ ४ ॥
पाँचू पाड्य रामका घन माहि विगूता ।
बैठण जागों ना मिली सुखभर नहि सूता ॥ ५ ॥
भीरू पडी महादेव म सुमन्या अतरजामी ।
भीरू को भजन भूधरो गावे नरसीलोस्वामी ॥ ६ ॥

राग आशावरी ।

पद १११

भजन यिन मिरगै ने खेत उजारा । डेर
मिरगो एक पाच है हरिणी जामें तीन छिकारा ।
अपने अपने रसके लोभी चरत है न्यारा न्यारा ॥ १ ॥
आवा खाय आमली पाई केसर केरी वासी ।
कायानगरम कलहु न राख्यो ऐसो सृगो उजाड़ी ॥ २ ॥
मन मिरगैने किस विधि राखों विद्वरत नहि विद्वारी ।
जोगी जगम जती सेवड़ा पढित पच पच हारी ॥ ३ ॥
शील सतोपकी यादु करायलो गुरुशद् रखवारी ।
फहै कबीर सुणो भाई साधो विरिया भली समारी ॥ ४ ॥

पद ११२

चित्त चंचल बहुत हमारो राम कैसे करू मैं भजन तुम्हारो । डेर
पाचको भत्री पचीस को सगी उनसे बनी है हमारी ।

मनवो पड़्यो कुमति के पीछे तजदियो ज्ञान ध्यान सारो ।
 साधु संतोंका कहा न मानै ऐसो है धूतारो ॥ २ ॥
 या मनवा को लाज न आवै साखभरै केई वारो ।
 छूटा पीछे हात न आवै जैसे द्वोर उजारो ॥ ३ ॥
 चोरी में चौकस और परनिंदा खाणेमें हुसियारो ।
 हरिजीकी भक्ति साधुकी सेवा उनसे लेरह्यो टारो ॥ ४ ॥
 शास्त्र पुराण भागवत गीता सुण सुण गयो जमारो ।
 कहै कवीर सुणो भाई साधो इन मनवारो काँइ पतियारो ॥ ५ ॥

पद ११३

अरे मन धूरत क्यों न अघावै । टेर.
 भोगत भोगत बहुत दिन बीते शांति नहीं कबु आवै ॥ १ ॥
 जिन विषयन में बहु दुख पायो जिनमें फेर उरझावै ॥ २ ॥
 यथा भ्रान्त श्रवणी सुं उरझ्यो पुनि पुनि चोटों खावै ॥ ३ ॥
 क्षण में शांति मौन गहि बैठत क्षण में फिर ललचावै ॥ ४ ॥
 धनके हित मूढन के आगे सो सो नाच दिखावै ॥ ५ ॥
 पूत मित ममता सुं बंध्यो नाना सांग बनावै ॥ ६ ॥
 सबके देखत जमने पक्यो श्रद्धा कौन छुड़ावै ॥ ७ ॥

पद ११४

मनरे क्यों नहीं राम संभारे । टेर.
 या जगमें बहु मान बढ़त है पुनि परलोक सिंधारे ॥ १ ॥
 कहा भयो सुख संपत्ति पाई अरु धन धाम चोवारे ॥ २ ॥
 धिक विद्या धन रूप बाहुबल बिन हरिनाम उचारे ॥ ३ ॥
 दृढ व्रत नेम यज्ञ तप कीना जटा लोम नख धारे ॥ ४ ॥
 जो पै रामनाम नहीं गायो लोकविडंबन सारे ॥ ५ ॥
 इत उत देखत अवध विहानी रे मन निडुर निकारे ॥ ६ ॥
 अबहु संभार कछु नहीं विगन्यो श्रद्धा वेद पुकारे ॥ ७ ॥

पद ११५

मन तूं निपट भयो सेलानी । तैं संत सीख नहीं मानी । टेर.
 तन धन जन जग संपत्ति देखिके तेरी मति बोरानी ।
 काम क्रोध मद लोभ मोह सब बन्धो फिरे अभिमानी ॥ १ ॥
 देख विचार मोत नहीं छोडै राव रंक भय पानी ।
 कित हरिश्चंद्र दधीचि गये कहाँ रहगई प्रगट कहानी ॥ २ ॥

मनुष्य देह देवन को दुर्लभ जाचत है मुनि शानी ।
 ताहू पायके व्यर्थ गमावत करत निपट नादानी ॥ ३ ॥
 प्रभुमय जग लखि नैन सफल कर राममंत्र जप यानी ।
 दान पुण्यकर कर शुचि करले होय सफल जिंदगानी ॥ ४ ॥
 शरणागत पालक सुखदायरु दीनबधु सुखदानी ।
 प्रभु स्वतंत्र को आय बचावो अपनो सेवक जानी ॥ ५ ॥

पद ११६

मन तू ऐसो नीच सगाती । डेर
 निशिदिन रहत नीच नीचन में आठ पहर दिन राती ।
 पिपयकी घात लगे अति प्यारी हरि चरचा न सुहाती ॥ १ ॥
 आवत जावत लग रही मनमें फुकरम रोपे छाटी ।
 मृगहृष्णा जग छोड़ बाबरे बड़े न सुपकी घाटी ॥ २ ॥
 बैठ सभा में भीठो बोलै मनमं राखै धाती ।
 जानबूझकर नर पड़े नरक में बीतत है दिनराती ॥ ३ ॥
 कहा कहीं इण मन फी घाती लगे न तिलभर घाती ।
 कहत कबीर सुणो भाई साधो आवागवण मिटाती ॥ ४ ॥

पद ११७

मन तोहि किसविधि कह समझाऊ । डेर
 सोनो होय तो सोगी मिलाऊ करबो ताप दिराऊ ।
 पच रग नाल जुगत स फूकू पाणी ज्यों पिघलाऊ ॥ १ ॥
 हस्ती होवै तो भावत तुलाऊ अकुश दे चलयाऊ ।
 सुरत निरत का पहर घूघरा साहिब में मिलाऊ ॥ २ ॥
 लोहा होय तो पेरण मगाऊ घणकी चोट दिराऊ ।
 ले हयोबो साट बधाऊ जभी तार कटाऊ ॥ ३ ॥
 शानी होय तो शान सुणाऊ पंडित वेद पढाऊ ।
 कहै कबीर सुणो भाई साधो फेर जनम नहिं पाऊ ॥ ४ ॥

पद ११८

मन तू विरछन की मति लेह । डेर
 काटे जाखू पैर नहीं है सींचे जाखू नेह ॥ १ ॥
 अपने छिरपर ताप सहत है ओर न को सुख देह ॥ २ ॥
 जो कोई याकू पत्यर मारै तो याहू ही फल देह ॥ ३ ॥
 कहै कबीर सुणो भाई साधो साधू का लछ पह ॥ ४ ॥

पद ११९

मन रे अब तू जग तें छूटो ।
 शीस उघाड़ो गल में कंथा करमें कमंडलु फूटो । टेर.
 फाटा पाँव मैल तन ऊपर उघरत नाहीं अँखियाँ ।
 मतवाले ज्युं धूमत डोले एक न माने सँकियाँ ॥ १ ॥
 ऐसा होय चल्या वस्ती में भिक्षा कारण डोलै ।
 पांच सात छोरा चोगड़दे वैडो कहि कहि बोलै ॥ २ ॥
 ऐसी विधि विचरै जग माहीं संग न कोई साथी ।
 धताधूत चैराग इसी विधि ज्यों मद छकियो हाथी ॥ ३ ॥
 छाँड्या खाद दिया तन आडा रामनाम लिवलाया ।
 तुलसीदास गुरु परतापे यूँ अमरापुर पाया ॥ ४ ॥

पद १२०

भरथरी भूप भयो रे चैरागी ।
 विरह वियोगी वन वन डोले सुरत शब्द सुँ लागी । टेर.
 हस्ती घोड़ा गाम गढ़ गूडर कनड़े पायक आगी ।
 जोगी भयो देख जग जातो नगर उजीणी त्यागी ॥ १ ॥
 छत्र सिंहासन चवर दुलंता राग रंग बहो रागी ।
 गोखां वैठी रंभा राणी तासुँ सुरत न लागी ॥ २ ॥
 सब सुख छोड़ भज्यो इक साँई राम नाम लिव लागी ।
 सूरवीर सेंठा पग रोप्या जरा मरण भव भागी ॥ ३ ॥
 मनसा वाचा और कर्मना गंधर्व सुत वड़भागी ।
 कहै कबीर जूझ मन अपने अमर भयो अणरागी ॥ ४ ॥

राग कालिंगदा ।

पद १२१

मना यह मोसर नीको रे ।
 देहड़ली दिन दोय करीजै कारज जीको रे । टेर.
 चोबारा चहुँ ओर अटारी चाकर भूपन चीर ।
 रंग पतंग चार दिन चंगा अंत विरंगा वीर ॥ १ ॥
 मात पिता परिवार पसारा सुत वित नारि सँजोग ।
 साजन संग सराय वसेरा वीर विराना लोग ॥ २ ॥
 हरि गुरु संत चरण की सेवा कीजै और न काम ।
 मानुष तन को मोसर मेहगो भावन भजिये राम ॥ ३ ॥

पद १२२

पग्यो जश क्यू नहीं लीजै रे । मना मुख राम रटीजै रे । डेर
ना कोई घासै जीमबी ना कोई लागै दाम ।
ना कोई पथ निहारणो बदा क्यो सुमरै नहिं राम ॥ १ ॥
काया माया पाहुणी ओर कन्या घर होय ।
राखी काढ़ फी ना रहै ऊठ चलै पत खोय ॥ २ ॥
थो मन मेरो गोदियो हुनर किया अनेक ।
मन चाछा माया रची अट लिख्या फल देख ॥ ३ ॥
सब दोषकरै कारणे देत पइसा खोल ।
बिना पइसा मुक्ति है जे कोई लेवै मोल ॥ ४ ॥
एख बोचसी भुगत कर पाइ भिनखा देह ।
सुखसारण भज राम ने अयसर आयो पह ॥ ५ ॥

राग बिलावल

पद १२३

जोगियाने दूदत जुग भयो कहू देख्यो री माई ।
कोई रे बतावे जोगी आधतो जाने लाख घघाई । डेर
पाना छाई रे जोगी रायटी फूला सेज बिछाई ।
आयो जोगी रम गयो मिला देण न पाई ॥ १ ॥
जोगियारी शोली रीरा जबी माहे माणक भरिया ।
जो मागै जाकू देत है पेसा दिल दरिया ॥ २ ॥
एक जोगी दूजो मित्र है तीजो मस्त दियाना ।
घोधा तकिया रालके धरती असमाना ॥ ३ ॥
शेष नाग सेवा करै चद्र पूरे चराकी ।
लेखण याके हाथ है कछू कादत घाकी ॥ ४ ॥
देखो जोगी री करामातची मनसा मदल यणाया ।
बिन यामा बिन थोभली असमान ठहराया ॥ ५ ॥
कहै कबीर मैं क्या कहू क्या कहिके गाऊ ।
अलख निरजन राम है बाका पार न पाऊ ॥ ६ ॥

पद १२४

मीठा लागै माधवा निजनाम तिहारा ।
से भी आसण ना रहे घरती गिलगई सारा । डेर
मनु सरीसा राजबी कुजर जोड अठारा ।
लाळ लगूरा नेजा फर हरै बाजे बब नगारा ॥ १ ॥

ऊंचा मंदिर चुणावते विच कोटिक धारा ।
 झालर वाजै देहरा जाँरा अंत न पारा ॥ २ ॥
 भीम सरीसा महाबली दल ठंभण हारा ।
 सहदेव सरीसा जोतिषी वाचै पुराण अठारा ॥ ३ ॥
 पीर पैकंवर अवलिया जोगी जंगम धारा ।
 कहै कबीर सुण साधवा हमभी चालण हारा ॥ ४ ॥

पद १२५

अब तो नाथ दया करो मेरे समर्थ दाता ।
 जीव तड़फै दरशन विना किनसों कहुँ वाता ॥ टेर.
 आठ पहर नहीं वीसरों नित डगर निहारों ।
 हों तेरे नाम के ऊपरे मेरा तन मन वारों ॥ १ ॥
 मेरा घट में तलफता जैसे घन विन मोरा ।
 लगत पियारा मित्र सों जैसे चंद चकोरा ॥ २ ॥
 वरषा विन दादर दुखी निरधन धनकाजा ।
 जनकी या गति जानके बुझावो दाशा ॥ ३ ॥
 करणी दिशा न देखियो पूरण अविनासी ।
 शरणां की प्रतिपालियो नहीं तो विरद लजासी ॥ ४ ॥
 धीरप दे अपनो करो विरहा विश्वासो ।
 कनीराम कूं दरस दो मेटो सब सौंसो ॥ ५ ॥

राग परभाती ।

पद १२६

जाग पियारे अब क्या सोवै, रेण गई दिन काहे कूं खोवै टेर.
 जो जाग्या सो भाणक पाया, मैं मंद भागण सोय गमाया ॥ १ ॥
 पियोजी चतुर मैं मूरख नारी, पियाजी की सेज कवू न सँवारी ॥ २ ॥
 मैं भोली भोलापण कीनो, भरजोवन में नाम न लीनो ॥ ३ ॥
 कहै कबीर मन तानक तैया । तज अभिमान मिलै रामैया ॥ ४ ॥

पद १२७

हिल मिल मंगल गावो मेरी सजनी । भयो परभात वीतगई रजनी । टेर.
 नाटक चेटक तजदे फेना । सतगुरु शब्द सौंच गहलेना ॥ १ ॥
 अमृत बेली मीठा फल लागा । चाखैगा कोई संत सुभागा ॥ २ ॥
 उर्ध शिखर तहाँ फूली फुलवारी । मनसा मालन करै रुखवारी ॥ ३ ॥
 कहै कबीर गुरु रामानंदा । उनकी कृपा मोय भया अनंदा ॥ ४ ॥

पद १२८

श्रीगोविन्द परमानन्द भक्तन हितकारी । टेर

वीनबधु दामोदर मधुसूदन मुरलीधर विश्वनाथ विश्वमर वृजपति वनवासी ॥ १ ॥

जनपर जब परत भीर मुस्त धरत नर शरीर क्षणभरम हस्त पीर सौंवरों बिहारी ॥ २ ॥

टेन्यो झट वीनगज धाये झट खगपति तज धन्य धन्य गरुडध्वज भक्तनभयहारी ॥ ३ ॥

हु शासन दुष्टराज नम करन चहुत आज देखरखो सब समाज आज भय मिसारी ॥ ४ ॥

करुणाकर कष्टहरन वीरोत्तम भीरधरन अब तो हू चरण शरण हैं प्रभुतिहारी ॥ ५ ॥

वेग आय लोवचाय नहिं तो यह लज जाय फिर तुम कहाकरिहो आय जब ना रहै सारी ॥ ६ ॥

हेगोविन्द हेगिरधर हेयदुपति हेभीधर ऐसे कही आगुभर दौपरी पुकारी ॥ ७ ॥

खगपति हो सवार धाये यशोदाकुमार बधादियो पट अपार झटपट असुरारी ॥ ८ ॥

धन्य धन्य ज्ञानवान भक्तों ये तुमसुजान जगमें को प्रभु धर्मध्वजाधारी ॥ ९ ॥

जो जन हैं परम भक्त हरिहरि दिनरात जपत उनको नहिं देख सकत दामोदर दुखारी ॥ १० ॥

पद १२९

वीनदुखहरन देव सन्तन मुखकारी । टेर

अजामेल गीध व्याध इनमें कहो कथन साध पथीहू पद पठात गनिकासी तारी ॥ १ ॥

धूकें चिर छनवेत प्रह्लादको उबार छेत भयहेतु बाधहेतु लकासी जारी ॥ २ ॥

तदुलसैं रीझजात घाक पात तैं अपात गिनत नाहिं सूटे फल खाटे और खारी ॥ ३ ॥

गजको जब ग्राह प्रस्यो हु शासन चिर खस्यो सभावीच दौपरी कृष्णको पुकारी ॥ ४ ॥

इतने ही हरि आगमये बचन आरुढ भये सरदास द्वार टाबो आबडो भिजारी ॥ ५ ॥

पद १३०

तू दयालु दीन हूँ तू दानी मैं भिखारी ।

हूँ प्रसिद्ध पातकी तू पापपुजहारी । टेर

नाथ तू अनाथ को अनाथ कोन मोसो ।

मो समान जारत नहीं जारत हर तोसो ॥ १ ॥

प्रह्ला तू हूँ जीव तू ठाकुर हूँ चेरो ।

तात मात गुरु सखा तू सब विधि हित मेरो ॥ २ ॥

तोहि मोहि नाते अनेक मानिये जो भावे ।

ज्यों त्यों तुलसी कृपालु चरण शरण पावे ॥ ३ ॥

पद १३१

देव दीनको दयालु दानी दूसरो न कोइ ।

जाहि दीनता सुनाय दीन देखों सोइ । टेर

मुनि सुर नर नाग असुर साहिव तो घनेरे ।

जोलों तोलों राखरे न नेक नैन डेरे ॥ १ ॥

त्रिभुवन तिहुं काल विदित वदत वेद चारे ।
 आदि अंत मध्य राम साहिवी तुम्हारे ॥ २ ॥
 पाहन पशु विटप विहंग अपने करलीने ।
 महाराज राज दशरथ के रंक राव कीने ॥ ३ ॥
 तोहि मांग मांगनो न मांगनो कहायो ।
 सुन स्वभाव शील सुजस जाचन जन आयो ॥ ४ ॥
 तू गरीब को निवाज हूँ गरीब तेरो ।
 एक वेर कहो कृपालु तुलसीदास मेरो ॥ ५ ॥

पद १३२

मोसम कोन कुटिल खल कामी ।
 तुमसे कहा छिपी करुणानिधि तुम उर अंतर्यामी । टेर.
 भरभर उदर विषय रस पीवत जैसे शूकर गामी ॥ १ ॥
 जो तन दियो ताहि विसरायो ऐसो लूण हरामी ॥ २ ॥
 जहाँ सत संग तहाँ अति आलस विषयन संग विरामी ॥ ३ ॥
 श्रीपतिचरण छोड ओरन की निशिदिन करत गुलामी ॥ ४ ॥
 पापी कोन बड़ो है मोसम सब पतितनमें नामी ॥ ५ ॥
 कीजै कृपा दास तुलसी पर सुनिये श्रीपति स्वामी ॥ ६ ॥

पद १३३

मोसम कोन अधम अज्ञानी । टेर.
 हम हमके बस प्रभु नहीं हेरे भयो देह अभिमानी ॥ १ ॥
 सेवत विषय भोग निशिदिनमें उलटे फास फसानी ॥ २ ॥
 धन धन कर ऊमर सब बीती तृष्णा नाहिं अधानी ॥ ३ ॥
 लाख सुनी मानी नहीं एकहु साधु संतकी वानी ॥ ४ ॥
 आपे की कछु सुधि नहीं राखी तक तक आस विरानी ॥ ५ ॥
 निरभैराम यह पंचरंगी चादर होत पुरानी ॥ ६ ॥

रागढोढी ।

पद १३४

एक राम विन अवर न मानूं मेरे सतगुरु यों फरमाया है । टेर.
 पाणी की भीत पवन का थंभा दशमुख भवन बनाया है ॥ १ ॥
 देवी देव चंद रवि राया सबही हरि उपजाया है ॥ २ ॥
 भक्ति किवी जाँ किया चोगणा मूरख मूल ठगाया है ॥ ३ ॥
 दारा दोलत संग न साथी ना संग सुंदर काया है ॥ ४ ॥
 विष्णुदास प्रभु तुम्हारे मिलन को हरि चरणां चित लाया है ॥ ५ ॥

पद १३५

सतगुरु कह समझाया हो ।
 परम पुरुष विन ओर न परतू पीव निरजनराया हो । डेर
 सबसे ऊपर मेरा सोंई तापर कोई न बताया हो ।
 मनसा वाचा और कर्मना वाही से चित लाया हो ॥ १ ॥
 घटधारी से प्रीति न मेरी जो अवतार कहाया हो ।
 वे हम भया वधु आप में धके जननी जाया हो ॥ २ ॥
 ब्रह्मा विष्णु महेश विचार्य वहाँ लग जाण न पाया हो ।
 बाजी माहि बीच ही अटके मोहलिये सय माया हो ॥ ३ ॥
 जहाँ गये गोरख भरथरी तहाँ धूप नहिँ छाया हो ।
 जहाँ कबीर गुरु दादू पहुँचे सुंदर वे दिस ध्याया हो ॥ ४ ॥

पद १३६

तुम सुणियो नाच यौनती दयालु दीनकी । डेर
 पूरण ब्रह्म परमात्म आगम ओपम सागरकी ।
 भीड़ पड़ी जय द्रौपदी में पत राखी है नागर की ॥ १ ॥
 भक्तबल्ल थारो विरद है पत राखजो जनकी ।
 तुमसे का ठिपाउ नाथ दात जो भरम की ॥ २ ॥
 अबिगत थारी लखी न जावे रूप यरण की ।
 दीन कहिँ मोहि राखो नाथ शरण चरण की ॥ ३ ॥

पद १३७

म सुण्यो नाच नाम तेरो पतितपावन को । डेर
 व्याध गीध भालु कीस सजन से कसाइ ।
 गनिका कुला भीलणी निज धाम को पढाई ॥ १ ॥
 डूबतही गजराज अरध नाम उधन्यो ।
 प्यादे ही उठ धाये काज चक्रसों कन्यो ॥ २ ॥
 अनेकही अधम उधारे नाम नरद्वरी ।
 दीनको उधारवेकी ढील कर्मा करी ॥ ३ ॥

राग जैनेवती ।

पद १३८

दीनबधु दीनानाच काहेते कहाये हो । डेर
 कैसे तुम द्वारिका में द्रौपदी की डेर सुनी ।
 कैसे गजराज काज नगे पाँव ध्याये हो ॥ १ ॥

कैसे तुम गनिकाके औगुण विसारे नाथ ।
कैसे तुम भीलनीके झूठे बेर खाये हो ॥ २ ॥
कैसे तुम भारथ में भीष्म को प्रण राख्यो ।
कैसे वसुदेवजीको बंधन छुड़ाये हो ॥ ३ ॥
करुणा निधान कान्ह मेरी बेर बूंदे कान ।
अशरण शरण श्याम सूर मन भाये हो ॥ ४ ॥

पद १३९

दीनबंधु दीनानाथ मेरी सुध लीजिये । टेर.
सोने को सोनेयो नहीं रूपे को रूपेयो नहीं ।
कोडी पैसो पास नहीं विणज कासूं कीजिये ॥ १ ॥
भाई नहीं बंधु नहीं कुटुम्ब कबीलो नहीं ।
पैसे कोउ मित्र नहीं जाके पास जीजिये ॥ २ ॥
हाट औ हवेली नहीं चोवारा औ महल नहीं ।
पैसे कोउ मंदिर नहीं जामें वास दीजिये ॥ ३ ॥
कहत है मलूकदास छांडदे विड़ानी आस ।
हरिको भजन कर हरिमैं समीजिये ॥ ४ ॥

पद १४०

लाखां वातां तारसी भरोसो रघुवीर को । टेर.
द्रुपदसुताकी लज्जा राखी पार न पायो उन चीरको ॥ १ ॥
रंका तान्या वंका तान्या कुल तान्यो कालू कीर को ॥ २ ॥
केता तान्या पार नहिं पाऊं तान्यो छै अधम अहीर को ॥ ३ ॥
जाझूराम कहै वालद लाये दालद हन्यो जी कवीर को ॥ ४ ॥

पद १४१

केसां हो दीनानाथने मनझारी वातां केसां हो रघुपति नाथने । टेर.
ज्ञान ध्यानसुं गुंज करांगा सतसंग मांग मांग लेसां हो ॥ १ ॥
दिलका दलीचा उरका ओसीसा खमाजी खमाजी करलेसां हो ॥ २ ॥
राजरो मिलाप खुशी दिन भावे हाजर हजूर हुय जासां हो ॥ ३ ॥
दीन कहै लवलीन भजन में तन मन थांपर बारवार देसां हो ॥ ४ ॥

राग सारंग ।

पद १४२

समझ बूझ दिल खोज पियारे आशिक हो फिर डरणा क्यारे । टेर.
सतगुरु बाण विरह का मान्या घायल होय फिर सोणा क्यारे ॥ १ ॥

जो तोरे नैणा मं नींद सतावै तकिया और बिछोणा फ्यारे ॥ २ ॥
 जो तोरे मनमं लुधा सतावै लूधा और सलूणा फ्यारे ॥ ३ ॥
 जो तू आया प्रेम गलीमें सीस दिया फिर रोणा फ्यारे ॥ ४ ॥
 साहू सेन फकीर साँइदा जादू ऊपर दूणा फ्यारे ॥ ५ ॥

पद १४३

साजन हो तेरे सग चलूगी फँट पकर इक बात कहोंगी । डेर
 जो शिर काटो तो अग न मोड़ू प्राण जाय तोइ प्रीति न तोड़ू ॥ १ ॥
 प्रीति पुराणी नेह नवेलो विछुरन है पण मिलन दुहेलो ॥ २ ॥
 काजी मुहम्मद चेरी में तेरी चल जल भई भस्म की डेरी ॥ ३ ॥

पद १४४

आव सलौना मोहि देखन देरे पल पल में बलिहारी तेरे । डेर
 सब गुण तेरा अवगुण मेरा पीय हमारी आहन लेरे ॥ १ ॥
 आव पिपा अव सेज हमारी निशिदिन देखू मैं घाट तुम्हारी ॥ २ ॥
 सब गुणवता साहिय मेरा लाड गहेला जन दादू केरा ॥ ३ ॥

पद १४५

राते माते नाम तुम्हारे काहेकी परया है हमारे । डेर
 झिलमिल झिलमिल नूर तुम्हारा परगट खेलै प्राण हमारा ॥ १ ॥
 नूर तुम्हारा नैणा माहीं तनमन लागा छूटे नाहीं ॥ २ ॥
 प्रेम मगन मतयारे माते रग तुम्हारे दादू राते ॥ ३ ॥

रग मलार ।

पद १४६

बहोनी वाला कोन विरद की लाज ।
 जे तुम सद्यो वसोटी हितकी निरणो निकसै आज । डेर
 मैं अति दुखित दीन गुरु द्विजवर अशरण शरण तुम्हारी ।
 तुमसे एक भक्ति को नातो थोरो घणो विचारो ॥ १ ॥
 साची कहु सुणो दुरचासा मोरी सुरत खतज नाहीं ।
 मोहि भक्त ऐसे बस कीनो कीर पीजरा माही ॥ २ ॥
 मख के हितनी खबर पड़ी जय भागो मनको भोर ।
 अग्रदास साचा हरिजनकी सार भज्या कछु है ओर ॥ ३ ॥

पद १४७

सुण्यो मैं भक्तवत्सल विरद तेरो ।
 जनकी घटे सौ तुम्हारी घटत है मान वचन सत मेरो । डेर

जन प्रहलाद खंभसे धांध्यो असुर चहुं दिशि घेरो ।
 खंभ फाड़ नरासिंह हुय प्रगटे नखसें उदर विदेरो ॥ १ ॥
 दुपदसुता को आण सभा विच खांच्यो चीर घणेरो ।
 वाको चीर अनत लग वधियो दुष्ट पच्यो बहुतेरो ॥ २ ॥
 स्याल कुं छोड शरण आयो सिंघकी कहाँ रह्यो भय नेरो ।
 निरभै रहै ताकुं भय नाहीं सवलै वास वसेरो ॥ ३ ॥
 कर करुणा हरिजन यूं विनवै हरि कर ऊपर मेरो ।
 कहै रैदास शरण सतगुरु की जन्म जन्म को चेरो ॥ ४ ॥

पद १४८

माया रंग वादलीरे जामें हरि चंदा दीसै नाहिं । टेर.
 लोभ मोह के वादल छाये गरज रह्यो अहंकार ।
 तृष्णा विजली चमकन लागी भीज रह्यो संसार ॥ १ ॥
 काम क्रोध की नदियां चलत हैं गहरी वहै चौधार ।
 पीर पैगंवर और अवलिया बहगया ऊंडी धार ॥ २ ॥
 ज्ञान पवन जब छूटण लागी वादल दिये उडाय ।
 कहत कवीर जब फूली कमोदिनि चंदो निकस्यो आय ॥ ३ ॥

पद १४९

लटको छोड़दे रे जोगिया असल फकीरी धार । टेर.
 पत्थर पूज्याँ हरि ना मिले रे सब कोइ पूजो जाय ।
 पूजोनी घररी घरटियां सब जग पीस रु खाय ॥ १ ॥
 मूंड मुडायोँ हरि ना मिले रे सब कोई लेवो मुंडाय ।
 छठे महीनें लूणे गाडरी सो कांई अमरापुर जाय ॥ २ ॥
 न्हायोँ धोयोँ हरि ना मिलेरे सब कोई लेवोनी न्हाय ।
 जलमें न्हावे माछली सो कांई अमरापुर जाय ॥ ३ ॥
 राख लगायोँ हरि ना मिलेरे सब कोई लेवोनी लगाय ।
 लुटे गधेडा राखमें सो कांई अमरापुर जाय ॥ ४ ॥
 नागा हुयोँ हरि ना मिलेरे सब कोई नागाहुय जाय ।
 नागा फिरे पशु जिनावरा सो कांई अमरापुर जाय ॥ ५ ॥
 लिया पातरा हाथमें रे घर घर अलख जगाय ।
 दास कवीर की वीनती हरि सुमरो लिवलाय ॥ ६ ॥

पद १५०

कोइ नाहक कष्ट करावै विन राम मुक्ति नहि पावै । टेर.
 कोइ लटक अधोमुख झूलै कोइ धूम्रपान कर फूलै ।
 कोइ पंचा अग्नि जलावै सो राजपाट को पावै ।

काशीमें करचत सारे कोइ नींद भूष तिस मारे ।
 दे ग्रहण समय गऊदान करे सनमानक मनमें भावे ॥ १ ॥
 कोइ करत गुफा में वासा वाके बहु जीवन की आसा ।
 कोइ नग्न होय कर डोले कोइ मौन पकड़ नहिं वोले ।
 कोइ घन घन फिरत उदासा वाके मनमें और ही आसा ।
 आसा जो अपनी फिरे जन्म बहु घरेक चौरासी में जाये ॥ २ ॥
 कोइ देत बहुत तन आसा धनमें रहे होय निरासा ।
 कोइ गले हिमालय माहीं सो स्वर्ग लोक को जाहीं ।
 कोइ कद मूल फल खावे उद्रिज का जीव सतावै ।
 तनको देत सुकाय करे दुर दाय ले हाथ चढ़ावै ॥ ३ ॥
 कोइ ब्यार धाम फिरि आवै मुक्ति को राह नहिं पावै ।
 कोइ तीरथ सेवे जाई वाकी आसा अरर माँई ।
 कोइ क्षपापातहि लेवै सुतहेत देहको देरी ।
 सो फलहीको पाय मरे दुखदायक जन्म गमावै ॥ ४ ॥
 कोइ शकुन सरोधा मानै ओरन को भरम धजानै ।
 कोइ होम जाप मन्त्र लावे कोइ अनुष्ठान ठहरावै ।
 कोइ जानदेव को भ्यावै वह पशुया पशू चढ़ावै ।
 सो लै सिर धबला धरे नरक में पड़े क जमपुर जावै ॥ ५ ॥
 ये रामसनेही साधू जिन श्रेष्ठो धर्म अनाद ।
 जिन झूठी तज बकयादू इक रामनाम धन लादू ।
 गुरु रामदास शरणाई जन पीथल बलि धलि जाई ।
 गुरु कन्होराज महाराज भक्ति की जाज शरण में आवै ॥ ६ ॥

पद १५१

देखोनी साधो माँघमें नदियाँ डूबीजाय कहा कहों समझाय । डेर
 एक अचभा हमने देखा कुँपमें लगगई लाय ।
 पाणी कचरा सबही जलगया मछी होगई स्थाय ॥ १ ॥

१ श्रीकबीर साहिब नामदेवजी गुरुदासजी आदि महात्माओंकी बाणीमें विषय
 अग है । परन्तु वाममार्गी (नूतन) वेसिरपैर के कष्टदायक मन पद्धत शब्द
 बनाकर कबीरसाहब आदि महात्माओंकी छाप उगा देते हैं और उनका ऊल जल्लूही
 अर्थ क्रिया करते हैं । उनके अनुयायी उन्हींको पवित्र ब्रह्मज्ञानी व साध मानते हैं ।
 दूसरे बाहे प्रज्ञाप्रनिष्ठात पूर्ण महात्माही क्यों न हो उनको स्थूल कहते हैं ।

२ ज्ञान । ३ आशा आदि । ४ समान । ५ अन्त करण । ६ ज्ञानाभि । ७ मल
 विक्षेपादि आवरण । ८ वृत्ति । ९ साह्य अर्थात् वृत्तिक वदत जाना ।

कीड़ी चाली साँसरे नैव मण काजल सार ।
हस्ती वाके गोर्द में ऊँलियो ललकार ॥ २ ॥
जल जाई थल अपनी जल में कियो न पाप ।
एक अचंभो देखियो बेटी जायो बाप ॥ ३ ॥
घड़ो न डूवै बेड़ियो हस्ती मल मल न्हाय ।
कोट कांगरे पाणी आयो पक्षी प्यासा जाय ॥ ४ ॥
साँसू कवारी वृहूँ हमल में नर्णदल फेरा खाय ।
देखण वाली पुत्र जन्मियो पाडोसण हालोगाय ॥ ५ ॥
अंडाँथा जब बोलता बच्चाँ बोले नाहिं ।
पंडित होय सो अर्थ करै अज्ञानी गम नाहिं ॥ ६ ॥
बेटी पूछै बापने अणजायो वर लाव ।
अणजायो वर नां मिलै तोरे मोरे व्याव ॥ ७ ॥
कहत कबीर सुणो भाइ साधो साची कहुं समझाय ।
या पद को कोई अर्थ विचारै तो सहज मोक्ष मिल जाय ॥ ८ ॥
इति ।

अथ विनय-वैराग्योपदेशमंजरी ।

जय जगवंदन नंद के नन्दन पांडव स्यंदन हांकनहारे ।
चर्चित चंदन कष्ट निकंदन ग्राह गयंदन ग्राह विदारे ॥
इंद्र फनिंद्र कविंद्र मुनींद्र रु छन्द गुणीगन वृन्द उचारे ।
आनंदकंद गोविंद मुकुंद करो दुख छंद निकंद हमारे ॥ १ ॥
कवित्त ।

जनम गमायो राम नामको न गायो कबु कीनो ना उपाय भवसिंधु के तरन को ।
शरण मे जैहो कौन वदन दिखैं हों हाय औगुण भैं हों गुण एको ना शरन को ॥
रसिक विहारी है न आपको भरोसो रच को सहाय शोरुनद पार के करन को ।
परो मजधार बीच हों तो निराधार अब एक ही अवार रघुराय के चरन को ॥ १ ॥

१ सूक्ष्मवृत्ति । २ आत्माका सग । ३ नवतल । ४ दग्ध होजाना । ५ निजमन ।
६ एकता । ७ मिथ्या अहंकार । ८ सूक्ष्म शरीर । ९ अन्तःकरण जलाशय मे प्रेमजल ।
१० स्थूल वैराट । ११ माया । १२ जीव । १३ मन । १४ नेत्र । १५ शुष्क-
वेदान्ती । १६ शुद्ध सत्वगुणी माया । १७ अविद्या जीवकी स्त्री । १८ वासना ।
१९ बहिर्मुखवृत्ति । २० अज्ञान । २१ वैखरी बाणी । २२ जिज्ञासू । २३ पूर्ण ।
२४ माया । २५ ब्रह्म ।

एक ही भरोसो सर आवत खरोसो यह उपर निपाद गीध अथम विचारे हैं ।
 शबरी ओ साखामृग रीछ कौन वेदपाठी जाते इनऔर कृपा खेरते निहारे ह ॥
 दीन हैं पियारे दीनबधु को स्वभाव मृदु रसिक विहारी सोही रसक हमारे हैं ।
 काहू ते न पाट पातकी हों क्यों तजेगे मोहि बेनि अपने हैं जो पे इतने उधारे हैं ॥२७॥
 व्यावहूते विद्वद असाध अजामेलहू ते प्राह ते गुहाइ कहा तिनमें गिनावोगे ।
 शबरीहू न सिद्धहू न केवट कहूको त्या न गौतम त्रिया यार्म पगधर आवोगे ॥
 रामसों कहत पदमाकर पुकार तुम मेरे महा पापन को पार हू न पावोगे ।
 सीता सी सती कू तजी क्षुद्रोइ कलक मुन साचो मैं कलझी ताहि कैसे अपनावोगे ॥ ३ ॥
 दाराक कुबोलन को सोइसो यद्येमें लोक हाथ हयकरी परी 'गेम की बनावके ।
 झुत औ सुताझी ममता के मद पाके सूरही है जातिम जोर अजारे अकरायके ॥
 काम क्रोध पाहस सो काहन कृपानसीस गाने कैदखानो घर घेरो दाव पायके ।
 हे हरि कितेहो कधी हित स हितेहो अब ऐसी ही वितहो कि चितहो चित शयके ॥
 काम क्रोध 'गेम मोह मान मद भट नाना जिनके सरवरकी कहाँत्रों सेन जोरोगे ।
 सुण्या है अपार कहू पार को न पारावार कौन के निकट सेतु करिवेको छोरोगे ॥
 सकलपाप इशान को इस हू कृपानिधान मजी है कुबोध ताहि कौनविधि फोरोगे ।
 अपको अनोच गढ बका है युक्ति मेरे लका हत नाहि ताहि बका दे तोरोगे ॥ ५ ॥
 रावरो कहावो गुण गावो राम रावराइ रोटी है हों पावो राम रावरी हि कानि हों ।
 जानत जहान मन मेरेहू गुमान बजो मान्यो म न दूसरो न मानत न मानि हों ॥
 पावकी प्रीति न भरोसो मोहि अपनोइ तुम अपनाइ हो तबही परि जानि हों ।
 गहि गुहि छीलिछालि बुद्धिहीसी भाइ बात जैसी मुख कहो तैसी जीय जब आनि हों ॥६॥
 वेदकू छदामा धना जाट राख्यो कामा छीट रंगबेसी नामा सो प्रणामी के उधारो है ।
 आपकी इज्जत सेना राख्यो है इनामतकी जूती तम तोबराकू रविदास जिन भारो है ॥
 कपराकी खातर कबीरा पै कृपा करी क्षीरगर जान अति भवसागर तारो है ।
 एते जन तारे तब कोन पैं अहसान कियो बिना भक्ति तारो तो तरिको तिहारो है ॥ ७ ॥
 तारे प्रह्लाद जन तात हू की पात सही तारे तुम घुव सो तो बारो तन गारो है ।
 तान्यो तुम मोरध्वज पुत्र पर धन्यो हरि तान्यो हरिधर सोतो नेकहू न हारो है ॥
 निपट निरंजन कहै भक्त विनीषण तारे सोतो घर फा'यो तद 'क भेद पारो है ।
 जिनही जिन भक्ति करी तिनही कू तारे तुम बिना भक्ति तारि प्रभु तारिको तिहारो है ॥ ८ ॥
 कर्म खुटेला बरणआधम टुटेला मजु भरम छुटेला जाति पाति से उटेला है ।
 दीन को जुटेला और मलीन को टुटेला सदा आन वान कान खान मान ते टुटेला है ॥
 मनको मुटेला पातकीन को पुटला चित बाह को खुटेला दूढ़ यश को छुटेला है ।
 रसिकविहारी तोहि नीकी भाति जानू राम दिव को खुटेला मी'नीको तू खुटेला है ॥ ९ ॥
 रावरी अहत्या गनिकादि टुराचारी भारी ऐसी ऐसी घनी अथम कुनारिनको रंगी तू ॥
 वायस निपाद गीध राखस अपानन ये मज कपि रीछ भूमि वृज को अंगी तू ॥

काम क्रोध लोभ मोह विवर्ष मलीन दीन दु खित दरिद्री इमि रागिन को ढंगी तू ।
 रसिकविहारी भली भाति पहिचानों राम हों तो तोहि जानू हू सदाते नीच सगी तू ॥ १० ॥
 कूबरा कसाई जाट कीर हूम नाई कोली छीपा रु चमारन की भक्ति मन भाई है ।
 गूजर गवारन कूं सगले विहार कियो ताकी तो पुरानन में कथा व्यास गाई है ॥
 गनिका और मीलनी को तारी सो प्रसिद्धवात दासी को खवासी खासी ऐसी चतुराई है ।
 नीचको निवाजवे की तुमही को परी बान मेरी जात ऊच प्रभु काहे को बनाई है ॥ ११ ॥
 गोकुल में जन्म लीनो जल जमुनाको पीनो सुवल सुमीत कीनो जाको जग जाप है ।
 भनत मुरारी जाकी जननी जसोदा जैसी उद्धव निहार नद जैसो तेहि वाप है ॥
 काम वामते अनूप तजी ब्रजचंद मुखी रीझ्यो सग कूबरी कुरूप सो भमाप है ।
 नेह वीर नयको न पंचतीर भय को न वयको न पूतना के पय को प्रताप है ॥ १२ ॥

दोहा ।

पंगुल गूंगो रोग युत वनिक श्रुधातुर जीव ।
 भय युत बालक प्रिय अचख सुनत अनाथ सदीव ॥ १ ॥

छप्पय ।

पंगु कुब्जा संपाति गूंग जमलार्जुन गावत ।
 रोगी माधवदास वनिक तिरलोचन ध्यावत ॥
 श्रुधित सुदामा विप्र भीत युत ब्रजकी भामिनि ।
 बालक ध्रुव प्रह्लाद अवल द्रुपदादिक कामिनि ॥
 है अंधसूरलों हम सुने हाथ विके तिनके हरी ।
 जग के निवास सब गुननयुत स्वरूपदास विनती करी ॥ १ ॥

कवित्त ।

ज्ञान औ विराग दोड़ पायन बिनाहू पंगु भक्ति रसना ते हीन गूंगहू निहारोगे ।
 त्रिधा ताप रोगी कमै बानिज वनिकहू मैं भूखो दसधाको केउ जन्म को विचारोगे ॥
 काल भीति बालबुद्धि आत्मा है अवला औ अंध तत्त्व अजन के बिनाहु नेक धारोगे ।
 एक अंग के अनाथ ताके विके सुने हाथ आदि अत में अनाथ नाथ क्यों बिसारोगे ॥ १३ ॥
 मनसे महीपति के मुंशी मतग मोह मदन महुरिंकी मदत मतवारी है ।
 क्रोध कोतवाल लोभ नाजर की मिसलत ज्ञान मुई की जिन मिसल विगारी है ॥
 अहंकार अहलमद करत ना रपोट भली तृष्णा चपरासी की दस्तग नित्त जारी है ।
 दीन की दरखास्त यही डिगरी न होवै केशव अरजी हमारी आगे मरजी तुम्हारी है ॥ १४ ॥

गीत ।

अद्भुत नाथ न लोपै आशा इन्द्र ब्रह्मा शंकर ले आप ।
 भावतणो लोंदारो भूखो वांदारो वांदो मा वाप ॥

कोटि २ ब्रह्माब्द जो करता कोटि २ दैत्योंका काल ।
 बोलारो साचो निरवधण गोलारो गोलो गोपाल ॥
 ईश्वर दक्षा अवमो आवै घट सूरपण निपट घणो ।
 ठावो सखल सकलरो ठाकुर तू चाकर चारुण तणो ॥
 दास ब्रह्म झूठ नहिं दाखै केशव अज सुणो वे कान ।
 तिलोचद घर रह्यो टटलवो छीपे तणी छजाई छान ॥ १ ॥

कवित्त ।

हूँ क्यों न राजा तारें घरे नहीं कजा एक तूसे महाराजा और कीन को सराहिये ।
 हूँ क्यों न भाई तारें कटू ना बसाइ एक तू ही है सहाई और कीन पास जाइये ॥
 हूँ क्यों न मित्र छनु तरब आठें याम एक राखे चरण करे नेह को निवाहिये ।
 ससाची ही ह्य एक तू ही है अनूठा धन घूमगे अगूना एक तू न ह्य चाहिये ॥ १ ॥

दोहा ।

जितने तारे गगन में, तितने घेरी होय ।
 वृषा होय श्रीराम फी, बाल न योंको होय ॥ १ ॥
 कहा करे घेरी प्रबल, जो सहाय रघुवीर ।
 दश हजार गज बल घट्यो, घट्यो न दश गज चीर ॥ २ ॥
 साइ टेढ़ी अरिझपा, घेरी रलक जहान ।
 डुकेन झोला महरदा, लखों करै सलाम ॥ ३ ॥
 लग्न मुहुरत योग बल, तुलसी गनवन काहि ।
 राम भये जेहि दाहिने, सने दाहिने ताहि ॥ ४ ॥
 गंगा जमुना सरस्वती, सात समुद्र भरपूर ।
 तुलसी चातक के मते, बिन स्वाती सब धूर ॥ ५ ॥
 सीतापति रघुनाथजी, तुम लग मेरी दीब ।
 जैसे काग जहाज को, अत न बाकु दीब ॥ ६ ॥
 काहू के घन धाम है, काहू के परिवार ।
 तुलसी मोसम दीनके, सीताराम अघार ॥ ७ ॥
 नहिं विद्या नहिं याहुअल, नहिं खरचनको दाम ।
 तुलसी मोसम पतित की, तुम पत राखो राम ॥ ८ ॥
 सब देखे परखे लिखे, बहुत कहे क्या होय ।
 तुलसी सीताराम बिन, अपनो नाहीं कोय ॥ ९ ॥
 माधव मा भय होहु मम, माधव भय होहु आन ।
 माधव मेरे उर बसो, सदा सखल सुखछान ॥ १० ॥
 धारन को वारन अहो, वार न लागी तोहि ।
 वार न कीजै हे प्रभो, वारन भटकन मोहि ॥ ११ ॥

क्या मुख ले विनती करूं, लाज आवत है मोहि ।
 तुम देखत अवगुण करों, कैसे भाऊँ तोहि ॥ १२ ॥
 मैं अपराधी जन्मका, नख शिख भन्या विकार ।
 तुम दाता दुख भंजना, मेरी करो संभार ॥ १३ ॥
 मुझ अवगुण है तुझ गुण तुझ गुण अवगुण मुझ ।
 जो मैं विसरूं तुझ को, तुम न विसारो मुझ ॥ १४ ॥
 मोमै गुण कुछ है नहीं, तुम गुण भरेहो जहाज ।
 गुण अवगुण न विचारिये, बौह गह्रां की लाज ॥ १५ ॥
 अवगुण किये तो बहु किये, करत न मानी हार ।
 भावै वंदा वखसिये, भावै गरदन मार ॥ १६ ॥

सोरठा ।

कवलौं गिणूं कृपाल, मो अवगुण गुण रावरे ।
 देखहु करन दयाल, गनिकाको सो घूँघटो ॥ १ ॥

दोहा ।

हरियो देख हरामझो, रोस न कीजै राम ।
 अब तो तेरो हुय रह्यो, और न मेरे काम ॥ १७ ॥
 बिड़द तुम्हारो रामजी, लेवहिये महाराज ।
 हरियै गुण अवगुण किया, तोही तुम कूं लाज ॥ १८ ॥
 हरियै अवगुण बहु किया, करत न कोई छेह ।
 जो तूं अवगुण याद कर, होय न छूटण केह ॥ १९ ॥
 हरियै दोषण बहु किया, शंक न मानी काय ।
 भावै तो मुझ वगसियै, भावै कुंद मराय ॥ २० ॥
 काहू के शिर को धणी, कूडा करत कलाप ।
 हरियै के शिर तू धणी, तूही माय रु वाप ॥ २१ ॥
 जन हरियै की वीनती, साँई करिये कान ।
 वंदे कूं मुश्किल धणी, साँई तुझ आसान ॥ २२ ॥
 हरियै का दिल तुझ सं, तेरा मुझ सेतीह ।
 ज्यों सोनो अरु सोहगी मिलिया अगोतीह ॥ २३ ॥
 हमसा तेरे बहुत है, तुमसा मेरे नाहिं ।
 हरियो तुझको छांडिके, और न किसपे जाहिं ॥ २४ ॥
 पाप किया से मुझ किया, हरिया फेर न सार ।
 भावै तो मुझ मेटकर, भावै दोज़ख डार ॥ २५ ॥
 कलम हमारी रामजी, होय तुम्हारे हाथ ।
 जनहरियै कूं राखिये, सदा तुम्हारे साथ ॥ २६ ॥

कबीर तेरा जोर न जुलम है, मेरा होय अकाज ।
 विबुद तुम्हारी लाजसी, शरण पट्या की लाज ॥ २७ ॥
 कबीर अक्के जे सॉई मिलै, सब दुख अपणा रोय ।
 पाहण ऊपर शीश बर, कहूँ कहणा होय ॥ २८ ॥
 कबीर सॉई मेरा सुनहगे, वृक्षगे कुशलात ।
 उन सॉई से कहणा, मेरे मनकी बात ॥ २९ ॥
 कबीर मो मरने को नेम है, मरूँ तो हरिके द्वार ।
 कबहु तो हरि पूछि हैं, कौन मन्यो दरवार ॥ ३० ॥
 जा मरनैं सों जग डरे, मेरे हैं आनद ।
 कय मरिहों कय मोटिहों, पूरण परमानद ॥ ३१ ॥
 सॉई तोसों धीनती, भावै भूल भभूल ।
 करीजिका शिर ऊपरे, करसी जिका कबूल ॥ ३२ ॥
 डाल इनै फल कू भपै, पातन कू फाड़ेह ।
 ये अचगुण पछी करै, तोउ तरार नहिं ताड़ेह ॥ ३३ ॥
 घडे दीनको दुख सुनत, देत दया उर आन ।
 हरि हाथी स्र कबहुती, कहु रहीम पहिचान ॥ ३४ ॥
 मूढ चढाये हू रहै, पन्यो पीठ कब भार ।
 रह्यो गरे पर रासिये, तोऊ हिये पर हार ॥ ३५ ॥
 हरे चरे तापहि धरे, फरै पसारहि हाथ ।
 तुलसी स्वारथ मीत जग, परमारय रघुनाथ ॥ ३६ ॥
 राम अवल्य अनन्य गति, राम बिना बेहाल ।
 बाकीलार हरि फिरत है, ज्यों जननी सग बाल ॥ ३७ ॥
 लार फिरै रक्षा करै, गिरत पकरलै बाँह ।
 जनि दुख पावै दास मम, यों जानै मन माँह ॥ ३८ ॥
 दो पैंड हरि समुख चले, हरि आवत पैंड एचास ।
 ज्यों जननी लघु बालकी, दोरि के आवत पास ॥ ३९ ॥

टीका-जैसे माता ऊपरी पर वाम करै है नीचे घर में बालक खेदै है, जहाँ ताऊ
 बाऊक अपने ख्यात में मग्न है तहाँ ताऊ माता भी चुपचाप होरही है । जब बालक
 को भूख लगी तब रोवण लग्यो तब माता भी दिगसा देने लगी । जब बालक सीढ़ी
 के नजदीक आयो तब माता को चिंता उपजी सो देखन लगी, जब बालक एक दोष
 सीढ़ी पर चढ्यो तब तो माता के थोछो भयो । अब जो गिरेगो तो हाथ पाव टूट
 जायगो । तब तो माता ऊपर से बहुत सीढ़ी उतर के बालक कू कठ लगाय डेत हैं ।

१ तुम जावो लग आठमर हम जावै लग साठ ।

तुम भ करे छठ से, हम रोहे की गठ ॥ १ ॥

दृष्टांत-तैसे माता की नाई नारायण है, सो भी सब के ऊपर अपनो स्वस्वरूप में बर्ते है । और जीव जो है सो नारायण को अज्ञ है ताते बालककी नाई अज्ञ है, सो नीचे ससार में स्त्री पुत्रादि विषय ख्याल में जबताऊ आत्मसक्त होय रह्यो है तब-ताऊ नारायण हू याकी उपेक्षा करारह्यो है, जब जीव के बालककी नाई विषय सूं वैराग्य भयो अरु नारायण की चाह भई तब विरह करिके रोवणे लग्यो तब माता की नाई नारायण हू गुरु शास्त्रद्वारा जीव कूं समझावणे लग्यो जब जीव बालक की नाई भगवत् प्राप्तिका साधनरूप सीढी के नजीक आयो तब माता की नाई नारायणहू जीवपर कृपादृष्टी सूं देखने लग्यो जब जीव बालककी नाई एक दोय साधनरूप सीढीपर चढ्यो तब माता कीसी नाई हरि दोरिके अग लगावे है ।

नित्य स्वाधीन स्वल्पमूल्य के, मन रुचि जानन हार ।

ऐसे सेवक हरि दिये तैं, भज्यो न ताहि गंवार ॥ ४० ॥

टीका-स्वल्पमूल्य=सेर नाजके १४ चाकर हैं, सेर नाज कूभी सब ही वाटि खावे है, झगर नहीं मरै है । काम ऐसो करै है हजार रुपिया का चाकर सूं भी नहीं होय । धर्म अर्थ काम मोक्ष जो मन चावै सोई अर्थ कू साधी देत हैं तातैं देखरे गंवार जीव । परम दयालू नारायण ने ऐसा सेवक दिया तो भी उन सेवकोंसेई सेवा नारायण की नहीं कराई, तू तो करेई काय की ।

पकरि रह्यो प्राणां कूं, अरु प्रेरत इंद्रियग्राम ।

सहायक सब व्यवहार में, भजत न लूण हराम ॥ ४१ ॥

टीका-देहरूप फूटा पिंजरा में चंचल प्राणरूप पक्षी कूं पकड़ रख्यो है तातैं प्राण ठहर रह्यो है । नहीं तो कबकोई कोई द्वार होके निकस जातो । फेर श्वासारूप करके बाहर जावे है तोभी शिकारी बाज की नाई ज्यांको खेंच्यो फेर उलटि के ठिकानेपर आय बैठे हैं नहीं तो नारायण बिना पवन कूं पीछो फेरने वालो कौन है ? ऐसे सब इंद्रिय समुदाय कूं आप आपके व्यवहार में नारायण प्रेरे हैं ।

झूलणा,

देह आज पड़ो चाहै काल पड़ो दिन च्यार पड़ोजी झड़ाक झड़ेगी ।

पांच पचीस पचास पड़ो दस तीस पड़ोजी खड़ाक खड़ेगी ॥

ऐस पड़ो भावे पोर पड़ो परार पड़ोजी दड़ाक दड़ेगी ।

दीन कहै कहा देहको सोच है सो वरप रहै तोही देह पड़ेगी ॥ १ ॥

फिट फिट कहै दुनि घट्ट तेरा इस घट्ट का घाट घड़ायगाजी ।

खट पट्ट ते खेद वधाय रहा झटपट्ट सिताव झड़ायगाजी ॥

केई कूड़ कपट्ट निपट्ट करे अवधूत अपट्ट अड़ायगाजी ।

सोई दीन दपट्ट झपट्ट कहै जी जम्म जंजीर झड़ायगाजी ॥ २ ॥

जिव थेट के सूलतो भूलगया यहाँ पेट के काज भटकता है ।

बहो कूड़ कपट्ट झपट्ट रह्या लालच लपट्ट लटकता है ॥

हराम के काम तो बोल करे साहब्य के नाम अटकता है ।
साईं दीन कहै आसब मती एकद के काल पटकता है ॥ ३ ॥

सर्वथा ।

गर्भ चढे पुनि सृष्ट चढे पलना पे चढे चढे गोद घना के ।
हाथी चढे फिर अभ्य चढे सुखपाल चढे चढे जीमें घना के ॥
बेरी श्री मित के चितचढे कवि ग्रह भने दिन यीते पना के ।
ईश कृपाबुझी जान्यो नहीं अज काधे चढे चले चार जनाके ॥ ४ ॥
पेट में पोदके पोढ़े मही जननी सग पोढ़ के बाल बहाये ।
ह्योहि त्रिया सग पोढ़न लागे तो सारी निदा हस खेल गमाये ॥
क्षीरसमुद्र के पोढ न हारेको ध्यान कियो न कमी चित लाये ।
पोढ़त पोढ़त पोढ रहे तो चितापर पोढ़न के दिन आये ॥ ५ ॥
बेह अचेतन प्रेतद्वी रज रेत भरी मल खेत की क्यारी ।
व्याधि की पोढ अराधिकी ओढ उपाधिकी जोढ समाधिसे न्यारी ॥
रे जिय बेह करे सुख हान हते पर तो तोहि लागत प्यारी ।
बेह तो तोहि तजेगी निदान पे तूहि तजे किन बेहकी यारी ॥ ६ ॥
बिक्रम भोज बधीचि भस्ते बलि करण कुबेर जिला धिर नाई ।
भीषम द्रोण भये दुर्योधन पचहु तत्व समुद्र सुलाई ॥
बेद कतेव पुकार कहै नर जीमगई अबतार सदाई ।
छायगई सगरे जगहु एक मोत निगोडी को मोत न आई ॥ ७ ॥
जलमें उपज्यो जलमाहिं रह्यो जल पोखत है जल डूषत नाहीं ।
तापरु जो रवि सोपत है नित कज ज्यू ताहि बेरया बिरसाहीं ॥
तैसे यो जीव विषयसग फूलत ता बिन जीव अती मुरझाही ।
हरि सु उपज्यो हरि पोखत है हरिमाहिं रह्यो हरि कू बिसराही ॥ ८ ॥
पशुअ भले उनते जग में नहि कर्म करी दुख बीज को बोधे ।
कियो भुगतें पशु बेह धरी सुख दु ख के पाप के कर्म कू धोवै ॥
आचार मलीन चरे अपनो उनके समते कोऊ भ्रष्ट न होवै ।
उनतं यो नीच भयो नर माणक गाठ के सींग रु पूछ को सोवै ॥ ९ ॥
जननी क्यों बोझ मरी इनकी जाने ऐसे पशु को पेट में राखो ।
कलक जणी अपने कुलको अधवीच नहीं न्यो गभ ते नाखो ॥
जमत ही मरि क्यों न गयो जाने जीव के रामको नाम न भाखो ।
मरेतें भलो निज मूरख को जीवत करेगो यो सरय को साखो ॥ १० ॥
आछो सो काछ कछयो तनमें मनमें नहीं आछो सो नाच यो नाच्यो ।
राम गुलाम कहावत है पै गुलाम भयो जगको दाम जाच्यो ॥

कूड़ कपट विकार भन्यो मन नेक नहीं हरि सूं भयो साच्यो ।
 कैसे के राम रीझे अब माणक यो मन रामके रंग न राच्यो ॥ ११ ॥
 आछो सो नर्त करो मन नर्तक जैसे तैं आछो यो काछ कछयो है ।
 आदर नेम करी हरि को नित चिंतन ध्यान यो नर्त अछयो है ॥
 प्रेमकरी हरि को रस पीवहु पीवत दूध ज्युं वालवछयो है ।
 माणक सूर ज्यों आगे ही दोरत नेक न धारत पांव पछयो है ॥ १२ ॥

कवित्त ।

भैया जगवासी तू उदासी है के जगतसों एक छ महीना उपदेश मेरो मानु रे ।
 ओर सकल विकल्प के विकार तजि बैठि के एकंत मन एक ठोर आनु रे ॥
 तेरो घट सरिता में तूही है कमल ताको तूही मधुकर है सुवास पहिचानु रे ।
 प्राप्ति न है है कछु एसो तू विचारतु है सही है है प्राप्ति स्वरूप यों ही जानु रे ॥ १ ॥
 करिले रे सुकृत सुमरिले रे नरहरि परिहरि ओढ़र ढरनि मोहजाल की ।
 रसरस तेरे हाथ चिंतामनि हेरे याते ओट गहिले रे प्रह्लाद प्रतिपाल की ॥
 करत कहा है कहा करिवे को आयो कहि कोहै तूं कहा है कैसी गति काल की ।
 गई सो तो गई अब रही सो तो राख मूढ एक एक लव जात लाख लाख लाल की ॥ २ ॥
 थासके भरोसे गढ मास मे निवास कियो आशा मन माहिं राखि मानत सरीरा की ।
 बडे २ सूरवीर छोड गये देख मूढ रही ना निसानी तहा साह अरु वजीरा की ॥
 मजरे निरजन दुखभंजन कुल आलम को निल्य रोज खबर लेत पाहन मे कीरा की ।
 कहै कवि प्यारामल सुमरणकी यही पल एक एक घड़ी जात लाख लाख हीरा की ॥ ३ ॥
 काहू घर पुत्र जायो काहू के वियोग आयो कहूं राग रग कहूं रोवारोव करी है ।
 जहा भानु ऊगत उच्छाह गान गीत देखे साझसमे ताही स्थान हाय हाय परी है ॥
 ऐसी जगरीति देख को न भयभीत होत हा हा नर मूढ तेरी मति कौन हरी है ।
 मानुपजन्म पाय सोवत विहायो जाय खोवत किरोरन की एक एक घरी है ॥ ४ ॥
 चौरासी समुद्र चूर मिल्यो है मनुष्यतन कहीं भूरि भागते किनारे आन्धीयो है ।
 ऐसी या अनूप देह नाक कान नेन वेन ऐन करतार जू करार कर कीयो है ॥
 ताही को तू पाय करत डावा डोल पशू ज्युं भरत पेट विषय पान पीयो है ।
 गोविंद नरदेह पाय प्रभू को न जान्यो ताथ धूरि वाके धन मे धृकार वाको जीयो है ॥ ५ ॥
 नंदकी नोनिधि घरी वीसल की वीस टरी रावन की सवै जरी खास मे समावोगे ।
 हेम हीर चीर हाथी काहू के न भये साथी वाट के बटाळ जेम ठाठ छिटकावोगे ॥
 वहा सूं न लाये हाथ यहा सूं न चालै साथ यहा ही की जोर जोर यहा ही लों खावोगे ।
 कहत है छजू पवार सुनोरे मायाके यार वैधी मूठी आये हो पसार हाथ जावोगे ॥ ६ ॥
 इत उत फिरत है हरत धरत कछु करत अनर्थ बहु जात दिन बीते है ।
 राति पड़े घरमाही आयके भोजन करि नारी कंठ लाय करि सोवत नचीते हैं ॥

ऐसे ही करत सब जन्म व्यतीत भयो राम को न नाम छेत यम स न मीते हैं ।
 माणक जुगारी मूख गोंठ कू ममाय जैसे आये बांन मूठी फिर जात हाथ रीते हैं ॥ ७ ॥
 राम को न छेत नाम धाम को भयो गुलाम दाम दाम पीछे अगि पाप बहु कीते हैं ।
 औरन को देत दु ॥ आपन्ने चहत सुख रामसु विमुख होय फिरत नचीते हैं ॥
 सुखन के काज बहु दुख को सजत साज विषय विष भेद माहिं घोरि घोरि मीते हैं ।
 राम को विचारि नरजन्म में धूरि डारि आये बाधमूठी फिर जात हाथ रीते हैं ॥ ८ ॥
 फिरत है भूले २ माया के भर्म भूले बैठे सब द्वारि अह माने जगजीते हैं ।
 जवानी के जोर माहिं मानकी मरोर माहिं कोइ कू भिने नाहिं विषय चित्त दीते हैं ॥
 मोह मद भाते अति विषय हू के रंग राते विषय के यम माहिं दिन सब बीते हैं ।
 जनम को द्वारि सब काजकू विगारिकरि आये बाधमूठी कर जात हाथ रीते हैं ॥ ९ ॥
 पाय प्रभुताइ कटु कीजिये भलाइ यह। नाहीं थिरताइ वेन मानिये कविन के ।
 यश अपयश रहिजात बीच पहुमी के मुक्क खजाना धेनी साय गये दिन के ॥
 और महिपावन की गिनती बिनावे कोन रावण से द्विगये त्रिलोकी बस जिनके ।
 चोपदार थाकर चमूपति भवरदार मंदिर मतग ये तमासे चार दिन के ॥ १० ॥
 हय हाथी हेम हीर हुरम हिरनयैनी हंसत हँकरत फिरत घर घेरे हैं ।
 बधु सुत सुता सुत सुत सुतहू के सुत सज्जन सगेन से कहत मरे मेरे हैं ॥
 चाहटा न चाकर चहुधा चहैं जोड़ीदार चोवारा न चहल बुहुल चेरी घेरे हैं ।
 तिनको तो तू है से हैं तेरे तोरि तेरा तन तन गये तिनको तो तू न ते न तेरे हैं ॥ ११ ॥
 माया के समूह मांसि बधिके शिथिल भयो मान कछो मेरो ओतो झूठो घट घेरो हैं ।
 काठ है फरेरो आनि दहैगो दरेरो सो तो पन्यो ही रहैगो सब घरनो बखेरो हैं ॥
 कुटुम्ब घनेरो बहु बैर झरु सेरो सो पखिन को रेरो जैसे दरगत बसेरो हैं ।
 चलत सबेरो दरहुच मौंसि केरो तेरो मेरो मेरो कहै यामैं कोन साज तेरो हैं ॥ १२ ॥
 एरे मन मेरे तेरे कोन डाउ हेंगे अब मेरे अजाण दीह मोबिंद नहिं गये हैं ।
 ऊठि के सबेरे साप दोरन की करी एक छेरे बहु जोरि देरे धन में लुभाये हैं ॥
 साधू कहैं बैर बैर तोहू न समझै दठ पूब भलेरे पुण्य मोसर यह पाये हैं ।
 रे २ अजाण जीव पीव ययू न हृदय रखे खेरे खखेरे काल कत नर खाये हैं ॥ १३ ॥
 कौरव दल पाडव सगर सुत जाहू जेते जात हू न जाने ज्यू तरैया परमात की ।
 बलि वैनु अवरीप मानघाता प्रह्लाद कहिये कहालों कथा रावण जजात की ॥
 वेहू न वचन पाये काल कौतुकी के हाथ भाति भाति सेना रची घने दुख घात की ।
 च्यार च्यार दिन को बचाव सब षोड करो अत छटिजैहै जैस पूतरी वरात की ॥ १४ ॥
 कासों करों मोहि मोहि मोही को परी है देव मोहन से मोही महामाया में मिलागये ।
 मीनसे मुनीस महा मनु से मनुज मानघाता सम मानी महामद सो विरागये ॥
 वासन से रावन से रामजू से खेळिखेळि सज्जन की खोपरी खिलोनाही खिलगये ।
 काटे महाकाल व्याड बली बडमद ऐसे बलि ऐसे बली ऐसे मुठासे बिलागये ॥ १५ ॥

ऊंची ऊंची चित्रसारी रंग के झरोखे भारी ताके मध्य सभा सोहै खान सुलतान की ।
 चोपदार छरी लिये बोलत अगारी खरे सेन्या जो चढत है हजारन के खान की ॥
 एते ही में औचक अचानक ही मोत आई होदा ही में फेलगई जानु लगी वान की ।
 गढ़ कोट तोड़िवे की मिसलत भूल गये मिसलत होन लगी चलन मसान की ॥ १६ ॥
 जीती दशू दिशा देश देश के नरेश जीते औज औज लाखो माल भंडार भरे रहे ।
 कंचनके आसन सुवासन सब कंचनके पलंग अवास सोतो अलग ढरे रहे ॥
 हाथी हथशालनमें घोड़े घुड़सालनमें कुलके कुटुम्ब लोक देखत खरे रहे ।
 तजी देह अचर दिगम्बर चल्थो निदान आसन विभूतिके सिंघासन धरे रहे ॥ १७ ॥
 रुनी तरुनी झूनी वही दुख झूनी माझ देखत अभूनी पथ पीलन खरी रही ।
 पाटन बिछूनी हूनी मंदिर पिशूनी तज दूनी सोभ चित्रसारी सूनीसी परी रही ॥
 कहत कल्याण वात सारी ही अलूनी भई कूनी ग्रह चिह्ननमें चूनी जरी रही ।
 जूनी तज काया हंस खूनी तो वहीर भयो मूनी अवधूतनकीसी धूनी धरी रही ॥ १८ ॥
 नितही कमातो ध्यातो लातो वन माझ साझ तातो सो न खातो रातो पहन्यो ना हटाऊसो ।
 जेतो आतो बारमें सुहातो एतो कोऊ नाहि ऐसे घुररातो मानो श्वान है कटाऊसो ॥
 माया मद मोह मातो कोडी हू न लातो दान पीछे पछितातो जब भयो है लटाऊसो ।
 राम सून रातो रे परातो अब काल आयो देखो रे खटाऊ चल्थो जात है वटाऊसो ॥ १९ ॥
 धरेही रहेंगे धरा धूरि मांझ गाढे धन भरेही रहेंगे भंडार बहु वानी के ।
 जरेही रहेंगे गजराज हू जंजीरन से खरेही रहेंगे मानों अश्वर्षय पानी के ॥
 काल आय गहै जब करैगो सहाय कौन कृष्ण रहेंगे जग जोधा मरदानी के ।
 थकै मुखवानी माया होयगी विरानी जब छाड रजधानी वासी होयगो मसानी के ॥ २० ॥
 रामको लियो न नाम दियो न कणूको दान कूर नहि खायो धाप राच रख्यो कूर में ।
 कोडी कोडी जोड़ वेसे कहायो करोरी तामें छात माखी जेम छायो मायाहूके पूर में ॥
 बाई को न भाई को न पिता हू को हूवो नाहि मलिन स्वरूप रख्यो देखियो न नूर में ।
 सांकड़ी वणाणी घाटी कालकी झपाटी लागी हालियो मडाकी हाटी खाटी रही धूर में ॥ २१ ॥
 रहा है न कोई यहा रही है न कोई यह जाने सब कोई पै न माने मोह परिगे ।
 हाथी और घोड़े जोड़े छोडे सब ठौर ठौर भौनन में माडे भूरि भाडे ते विसरिगे ॥
 कहै छविनाथ एक राम के भजन बिनु ऐसे ही विचारे जन्म कोटिन निसरिगे ।
 जगवाले जोरवाले जाहिर जरववाले जोसवाले जालिम चिताकी आग जरिगे ॥ २२ ॥
 ढहीसी सराय काय पंथी जीव वस्यो आय रत्न त्रय निधि जामे मोक्ष जाको घर है ।
 मिथ्या निशि कारी जहाँ मोह अधिकारी भारी कामादिक तस्कर समूहन को थर है ॥
 सोवै जो अचेत सोई सोवै निज सपदाको तहां गुरु पाहरू पुकारे दया कर है ।
 गाफिल न हूजे भ्रात ऐसी है अंधेरी रात जागरे वटोही यहा चोरन को डर है ॥ २३ ॥
 हाथी के दातन के खिलोता वने भाति भाति वाघन की खाल शिव सकर मन भावेगी ।
 मृगनकी खालनको ओढत हं जोगी जती वकरे की खाल आछापानी भर लावेगी ॥

सांभर की खालन को बोधत सिपाइ लोक महे की खाउ राव जो राजा मन भावेगी ।
 कहै दयाराम एक राम के भजन निन मानुष की खाल कहु काम नहि आवेगी ॥ २४ ॥
 खालही की खोलम अखिल क्याल खेछियेछि गाफिल है भूल्यो दोष दुख की सुसारी तैं ।
 साख साख भांति अभिलाष लखे खोटे अरु जलख उद्धयो न लखी लखन की लखी तैं ॥
 पुलकि पुलकि दन प्रभुतैं न पावी प्रीति दे दे करवाणी न रिझायो वन माली तैं ।
 झूठी झलमल की झलक ही में झूल्यो झलमल की पखाल खल खाली खाउ पाली तैं ॥ २५ ॥
 जासू तू कहत यह सपदा हमारी सोतो साधने अडारी ऐसे जैसे नारु छिन की ।
 जासू तू कहत हम पुण्य जोग पाइ सोतो नरक की साइ है बडाइ डेठ दिन की ॥
 घेर माहि पयो तू बिचारे सुख आखिनको माखिन के बूटत मिठाइ जैसे निन की ।
 ऐसे पर होहि न उदासी जगवासी जीव जगम असता है न साता एक छिन की ॥ २६ ॥
 रेतकी सी गली क्रिधों मदी है मसान कीसी अदर भयेरी जैसी कदर है शल की ।
 ऊपरकी चमक दमक पड भूपन की भोके लागी नली जैसी कली है कनैल की ॥
 औगुन की ओसी महा भौसी मोहकी कणोंसी भायासी मसरती है मुरती है मेल की ।
 ऐसी बेह याही के सनेह याही सगति सों है रही हमारी गति कोलू कैसे बल की ॥ २७ ॥
 केतीवार सिंह खान सांभर सियार सांभ सिपुर सारंग मुसा सूरि ऊदरै पय्यो ।
 केतीवार चील चमगादर चकोर चीरा चक्रवाक चातक चड्डल तन भू धन्यो ॥
 केतीवार मच्छ कच्छ भीडक मिडोरा भीन शख सीपि कोसी है जलूका जलमें सिन्धो ।
 कोल कहै जारे जिनावर तब माने घुरे यों न जाने मूढ म अनेकवार है मयो ॥ २८ ॥
 मूप चूस कहत हमारो तहखानो यह चिरिया कहत खसखानो भं बनायो है ।
 मकरी कहत यह हमारो मगसखानो भमर कहत काठ महल म उपायो है ॥
 माछर पखारी फांटे छाडिदे हमारो धाम नोर क बिलाव छिपकाइ अपनायो है ।
 ऐसे झगरे को पर सजिके गये हैं सत करता निमित्त नित्य अति सुख पायो है ॥ २९ ॥
 जिनके है परामोघर कुटी सो न धाम जाम भूसे क बिगाइ सौं न्योला जो रहत है ।
 जाजन तो मृत्तिका के फूटे खाली धान नाही तूटीसी घरेसी खाटमल जो रहत है ॥
 करकस कटोर नार कानी काली कडहारी करकस बचन बोलै अवगुन की महत है ।
 हाहारे कर्मनकी विटमना कही न जाय ऐसो गृह पाव मूढ त्याग न चाहत है ॥ ३० ॥
 चबला चलावउ ज्यों धनम विलोकिबनु जडमें कबोल भूरि भासत भगतु है ।
 पानी भूग प्यास को विगास ठग चातुरी को रेनन में जोति जैसे जुगनू जगतु है ॥
 नगर गधव को पिनाक ज्यों पुरंदर को ऐसे बनवाद मन प्रीति को पगातु है ।
 झटो हैरे झटो जग राम की दुहाइ बाहू साँचे को बनायो तात सानो सो लगतु है ॥ ३१ ॥
 दिया है प्रभुने जाम खुशी करो म्याउ कवि खाको पीवो लेवो बेवो यही रहजाना है ।
 नादशाह आदि ॥ अमीर उमराव सब कूच करगये जाका उमा ना ठिकाना है ॥
 हिलो भिगे भिगे नरैद की वा राहचलो जिदगी परासी जाम दिल बहलाना है ।
 आवै परवाना तब येने ना बहाना यहाँ नकी कर जाना फिर जाना है न जाना है ॥ ३२ ॥

मुक्ताफल कल्हार कमल तहाँ कुंदनसे मणिनसों जरी पाल चहुं और सांकरी ।
 विहरत सुर मुनि वेद धुनि उचरत सुखसुं समेटि रास विधि तहाँ हाकरी ॥
 वासी उही पुरको उदासी भयो काशीराम तोउ वह विछुरत एसी आशा हू नाकरी ।
 पन्थो कोऊ काल तातैं आन तक्यों तुच्छ ताल लख्यो ऊ मराल तो चुगोगो कहा काकरी ॥३३॥
 एकता कूं लिये भावै बैठ तू अटन कर ज्ञान धन हूते तू तो साहन को साह है ।
 आशा और तृष्णा और चिंता को विसारडार आतम स्वरूप तू तो सदाई अचाह है ॥
 मन बानी जीख्यो जब सकल जगत जीख्यो द्वंदभाव गयो ताते भयो वे प्रवाह है ।
 जैसो घर तैसो घन सदाई आनंद धन योंही बाह बाह फेर योंभी बाह बाह है ॥ ३४ ॥
 कबहु क एंठ वैठे चूतरा अडालचके कबहु क पायन हू पैनी झुन झुनिया ।
 सपति में सुकस होय विपति में दुःख होय सपति रिझाय औ विपति सिर धुनिया ॥
 सपति मे विपति औ विपति मे सपति है सपति विपति दोनूं एक देव गुनिया ।
 सपति में काँय काँय विपति में भोंय भोंय काँय काँय भोंय भोंय देखी सव दुनिया ॥३५॥
 जाँचवे न कहूं जावै राजक रिजक दावै पावै के न पावै दिल नावै दिलगीरी पैं ।
 धीरी मन धौर यादगीरी करतार हीरी पीरी हू न चहै तहाँ कहा सोभ मीरी पैं ॥
 खालिक खलक माहि और कछु देखै नाहि पन्थो रहै सीनो सीनो लग्यो सुखसीरी पैं ।
 करी आदि अत कीरी भली बछवेकी भीरी कोटिक अमीरी वारडाहं या फकीरी पैं ॥ ३६ ॥
 गुहा हू का रहना कहना नहि काहू सेती साहब से प्रीति अरु काकी परवाह है ।
 चित्तकी सुराही लिये प्रेम हू का प्याला पिये खलककी खुसालीका सदा चित चाह है ॥
 ज्ञान हू की गूढ़बी मे पेमद फकीरी फवै निपट निरंजन कहै नाम निर्वाह है ।
 चिंता चितचीरी लोभ लालच तगीरी तजी दफै दिलगीरी तो फकीरी बाहबाह है ॥३७॥

सवैया ।

धूत कह्यो अवधूत कह्यो रजपूत कह्यो तुलहा कह्यो कोऊ ।
 काहू की बेटी से बेटो न व्याहवो काहू की पांति विगार न सोऊ ।
 तुलसी सरनाम गुलाम है राम को जाको रुचै सो कह्यो कछु ओऊ ।
 मांगिके खैवो मसीत को सोइवो लेवे को एक न देवे को दोऊ ॥ १ ॥
 खेतनहीं र तिजारत नां करनी नहिं काहू की व्याह सगाई ।
 ग्रंथ बनावनो ना कछु वाग त्यों मंदिर की नहिं नीव खुदाई ॥
 दासस्वरूप न सोच या लोकको ना परलोक को सोच सगाई ।
 आज मरै तोही खूब है बांधव काल मरै तोइ खूब है भाई ॥ २ ॥

झुलणा ।

हरिनाम रटै गुरु ज्ञान थटै लपटै न जटै करतूतन को ।
 अटकै न अठै भटकै न कटै खटकै न जटै जमदूतन को ॥

घटमें घट गोतलियो घटिके घट औघट घाट अछूतन को ।
 साईं दीन कहैं मजबूत गुरु अवभूत मतो अग्रधूतन को ॥ ३ ॥
 मैझिहि मंदिर छाड दीजै वन माहिं न झूपका याध टटीदा ।
 रुखी हु सूखी हु खाय रहो काला मूढ करो जिय घट मिठीदा ॥
 रूप सिंगार तो उनहु को लोड़िये जो कोउ आशक होत लटीदा ।
 फकीर की राह कठिघ अलू पगधरतहि निकसत दूध छटीदा ॥ ४ ॥
 निशिचासर घस्तु विचार सदा मुख साव सदा करुणा धनहै ।
 अघनिग्रह सग्रह धर्म कथा न परिग्रह साधुन को गन है ॥
 कहैं केशव भीतर जोति जगै अरु बाहर भोगनको तन है ।
 मन हाथ सदा जिनके तिनके घनही घर है घरही वन है ॥ ५ ॥

बुडलिया ।

घटवेचाली घस्तु को दीन्ही जिसने डार ।
 भाये रहो उजार में भावे बीच बजार ॥
 भावे बीच बजार पन्यो रद मुद्रा न बोलै ।
 अधवा यात अनेक करे निशि चासर डोलै ।
 फटै गिरिधर कविराय चीज जो च्यारों पढे ।
 सुत दारा धन धाम गये सव तिनके खटके ॥ १ ॥
 विरक्त सोई जाण वसे वस्ती से न्यार ।
 अहनिशि आठों याम रामजी लाग प्यार ॥
 छाजन भोजन नीर जिको पर इच्छा भावे ।
 बेराचेरी तजै पक्ष के दिसा न जाये ॥
 आठ पहर चोसठ घड़ी एकाएकी रामजी ।
 जनरामा विरक्त सोई चोखेपद विधामजी ॥ २ ॥
 विरक्त कहिये भरतरी के गोपीचंद भीर ।
 दाफो बलख उजीण तजि तीनू भया फकीर ॥
 तीनू भया फकीर बलख सू पलक लगाई ।
 गिरि डूगर वनवास समयसर वस्ती आई ॥
 अणचाहिक अवधूत जन बखी शब्द की सीर ।
 विरक्त कहिये भरतरी के गोपीचंद भीर ॥ ३ ॥

दोहा ।

जोड़ी तज जोडी तजी फिर जोड़ी का त्याग ।
 रज्ज जोड़ी रामसू ते कहिये चैराग ॥ १ ॥
 तुलसी जावे दो नहीं घर घरनी धन हीन ।
 ताफो वन बसियो मलो कर करवा कोपीन ॥ २ ॥

दमड़ी चमड़ी बीच में हरिया विवरो होय ।
दमड़ी सूं दावा किसान चमड़ी मां कर जोय ॥ ३ ॥

कुंडलिया ।

खंडी हंडी हाथ में बंडी सी कोपीन ।
रंडी दिस देखै नहीं काया दंडी कीन ।
काया दंडी कीन दीन वायक नहिं वोले ।
भोग योग संयुक्त उक्त वह मन में तोले ॥
उर धर गुरु को ज्ञान मोह ममता सब छंडी ।
सो वैरागी राम कहै हरिराम अखंडी ॥ १ ॥
तीनटूक कोपीन के अरु भाजी विन नोन ।
तुलसी रघुवर उर वसै इंद्र वापुरी कौन ॥ १ ॥
कवीर सात गांठ कोपीनके मन में रहै निशंक ।
राम अमल मातो रहै गिनै इंद्र को रंक ॥ २ ॥
कर अरु जीभ लंगोटड़ी यह तीनों वसरखख ।
निरभय होय निशंक रम वैरी मारो झखख ॥ ३ ॥

कवित्त ।

कोऊ राजहंस उडिआयो हो समुद्रहूते, वीतगये वासर समुद्र फिर जावणो ।
ताही मघ बीच एक भन्यो हो सुभगसर, रैन विसराम लेय भोर उडजावणो ॥
कहै करजोर ताल बैठे रहो कोउ काल, राज बैठे डेरो पाल लगत सुहावणो ।
चरण कहत सर काहेको विलाप करै, रोक्खो नों रहै गोरे विदेशी हस पावणो ॥ १ ॥

दोहा ।

मत हो समंद उतावलो, लांवी छोल न लेह ।
आपेही उडजावसां, पांख संचारण देह ॥ १ ॥
हंसा सरवर मत तजो, जो जल खारा होय ।
डावर डावर डोलतां, भला न कहसी कोय ॥ २ ॥
सरवर हंस मनायले, नेड़ा थका बहोड़ ।
जा वैठां रलियावणा, तासूं तान न तोड़ ॥ ३ ॥
रहताने वरजूं नहीं, जाता न लाऊं बहोड़ ।
सरवरमें भोती घणा, तो हंसा लाख करोड़ ॥ ४ ॥
और घणा ही आवसी, चिड़ी कमेड़ी काग ।
हंसा फेर न आवसी, सुण समदर मंद भाग ॥ ५ ॥
जा जल तूं पाछो जा, तुझ मुझ रह्या न रंग ।
कड़वा बोल्या बोलड़ा, फेर न मिलसी अंग ॥ ६ ॥

पाल कहै रे सायरा लागै आज पुरोह ।
मैं हसता हस ने कह्यो वो जातो रख्यो परोह ॥ ७ ॥

सोरठा ।

मनमेलू गयो मार हितरूपी हथियार से ।
सक्यो न आप समाद निखल ययो निरजना ॥ १ ॥
शिप हुतो क शरीर पिंजर हुतो क प्राणिया ।
घरै न यो मन धीर नाम निरजन के यिना ॥ २ ॥
बेला यारी चिन्त फहो किणीने दारबु ।
मिले न बूजो मित नब खड फिरु नारायणा ॥ ३ ॥
बेला इतरी घूक मरता तँ मूचो नहीं ।
हिवड़े हालै हुक नीद न आवै नारायणा ॥ ४ ॥
सामल ज्यो सेणाह वैणा धीसरसा नहीं ।
नित हुरसी नैणाह मैमत सायण मेह ज्यू ॥ ५ ॥
धारे बरणा धाम चलवतरो मन या बसै ।
सेयगरो सतराम अनदाता छेहलो अवै ॥ ६ ॥
मोती हुतो अमोल पीछडतों पहिया बचन ।
बलबैत धारा बोल खारा निशिदिन टटकसी ॥ ७ ॥
अडा अनड तणाह माले यिन ही मेलिया ।
पखी पोख यिनाह जीवै किणविध जेठवा ॥ ८ ॥
ताला सजड जड़ेह कूची ले काने करी ।
ऊधडसी आवेह जडिया रहसी जेठवा ॥ ९ ॥
प्यारी ना कोई पूत बधव ना कोई बेनदी ।
बोला हुवा जमदूत नाम छुड़ासी नानिया ॥ १० ॥
मात तात ने भीत सगा सजन नाती सरय ।
जम लेजासी जीत नाम छुड़ासी नानिया ॥ ११ ॥
कण माणक कोठार पटा गोंच घर परगना ।
या सू नाहिँ उबार नाम छुड़ासी नानिया ॥ १२ ॥
बसतर ढाल बन्दूक पाखरिया कमधज पड्या ।
करसी कूफा कूक नाम छुड़ासी नानिया ॥ १३ ॥
तोप तमचा तीर हाथी अथ्व हजार सू ।
चलै न बालम धीर नाम छुड़ासी नानिया ॥ १४ ॥
हाजर हुसी हकीम पलक न खुलसी प्राणरी ।
जैवरो लेसी जीम नाम छुड़ासी नानिया ॥ १५ ॥

लेसी तन धन लूट डग देखत दोफाररा ।
 ताँता जासी तूट मोह तणा जव मोतिया ॥ १६ ॥
 करसी कूका कूक हाथो हाथ हकावसी ।
 फलसे चाहिर फूँक कोई न चलसी कानिया ॥ १७ ॥
 लीन्ही करणी लार पाप पुण्य हरि जाप री ।
 ओ तन देवो उतार मृतक कहै सब मीरिया ॥ १८ ॥
 तागो लेसी तोड़ बंधन कोइ बाँधे नहीं ।
 चाँपर चलयो चहोड़ मरहट हक में मीरिया ॥ १९ ॥
 घड़िया घट जेताह जाता सह दीसै जगत ।
 जन धन तन जेताह सब ही अंत सिधावसी ॥ २० ॥

दोहा ।

कहँ जाये कहँ ऊपजे कहां लडाये लाड़ ।
 क्याजानूँ किस खाडमें पड़े रहेंगे हाड़ ॥ १ ॥
 अर्ब खर्ब लों द्रव्य है उदय अस्त लों राज ।
 जो तुलसी निज मरन है तो आवहि किहिकाज ॥ २ ॥
 लाड़ू तू परलोकरो कर साधन ततकाल ।
 हालंता नह लागसी ताली इतरी ताल ॥ ३ ॥
 छहसो सहस्र इकीस दम जावत है दिन रात ।
 एतो तोटो तास घर काहेकी कुशलात ॥ ४ ॥
 जाणाहै रहणा नहीं चलणा विश्वा वीस ।
 रज्जव तनक सुहाग को कोन गुथावै शीस ॥ ५ ॥
 आंख झपंती ना लहै अस मुख माहिं गिरास
 लख लख लानत नानगा दमदा करै विश्वास ॥ ६ ॥
 छींकत डेरी पग दियो पीछे दीनो रोय ।
 असगुन तो पहिले भयो कुशल कहांते होय ॥ ७ ॥
 सुन प्राणी सदगुरु कहै देह खेह की खानि ।
 धरै सहज दुख दोष को करै मोख की हानि ॥ ८ ॥
 जसवंत शीशी काचकी जैसी नरकी देह ।
 जतन करंता जावसी हरिभज लावा लेह ॥ ९ ॥
 जसवंत वास सरायका क्या सोचत भरि नैन ।
 श्वास नकारे कूचके वाजत है दिन रैन ॥ १० ॥
 दश दुवारका पीजरा तामें पंछी पौन ।
 रहन अचंभा है जसा जात अचंभा कौन ॥ ११ ॥

सम्मन रोये कान को इसै सु कोन विचार ।
 गये सो आपन के नहीं रहे सो आपन द्वार ॥ १२ ॥
 नदी किनारे देखिये सम्मन सब ससार ।
 के उतरे के उतरिके बुरुचा घोंघि तयार ॥ १३ ॥
 पान झडता देखिके हँसी जु कोंपलियाँह ।
 मो चीती तो चीतसी घीरी वापडियाँह ॥ १४ ॥
 केइ फूले केइ फूलिगे सुंदर नये नयेह ।
 केते बाग जहान में लगी लगी सूख गयेह ॥ १५ ॥
 धन जोवन का मत करो गुमाना जानो तरुवर पाका पाना ।
 लागै वायु अत झड़ पडना तो ते पर पता क्या करना ॥ १ ॥
 बहुत गई थोरी रही नारायण अथ चेत ।
 काल चिरैया चुग रही निशिदिन आयु खेत ॥ १६ ॥
 काल करतो आजपर आज करतो नथ ।
 अवसर धीतो जात है फेर करेगो कथ ॥ १७ ॥
 रात गमाई सोयकरि दियस गमायो खाय ।
 हीरा जन्म अमोल था कचड़ी चढ़े जाय ॥ १८ ॥
 धन जोवन यों जाहिगे जिन मिथि उडत कपूर ।
 नारायण गोपालभज क्या खाटे जगधूर ॥ १९ ॥
 हाथ जोरि हाजर रहे जिनके सन्मुखकाल ।
 नारायण पैसे नृपति परे कालके गाल ॥ २० ॥
 जिनके सहज हि पग धरत रज सम होत पपान ।
 नारायण तिन को कहँ रह्यो न नाम निसान ॥ २१ ॥
 रे मन क्या भटकत फिरे भज भीनदकुमार ।
 नारायण अथ भी समझ भयो न कटू विगार ॥ २२ ॥
 ऊठ फरीदा जागरे झाड़ू देह मसीन ।
 तू सोये रर जागता किसविधि चने परीत ॥ २३ ॥
 ऊठ फरीदा जागरे जागन की कर घोष ।
 यह दम हीरा लाल है गिन गिन रर को सोष ॥ २४ ॥
 कहताहों कह जातहों कहा बजाऊँ दोल ।
 दबास दनास में जात है तीन छोक को मोल ॥ २५ ॥
 आयु नेजर देह घट जातकूप भव माहि ।
 शेष संभाले सो धारिहे सुधरै विगरे नाहि ॥ २६ ॥

टीका=नरद्वय मं भ्रमतो बराऊँ प्यास भर दे जाने उबाव में कूप मिल गयो
 विलस नेत्र बाहिर रही है वह भी गई तो कश्च नेत्र प्राण खनही गया ।

बहुत गई थोड़ी रही अजहं चेतै नाहिं ।
 रे जड़ फिर कित पावही यो औसर जग माहिं ॥ २७ ॥
 काम को किंकर हुइ रह्यो वाम को भयो गुलाम ।
 दाम दाम से बंधियो पामर भज्यो न राम ॥ २८ ॥
 द्वै वातन को भूल मति जो चाहै कल्यान ।
 नारायण एक मोत कूं दूजे श्रीभगवान ॥ २९ ॥
 नारायण द्वै वात को दीजै सदा विसार ।
 करी बुराई और ने आप कियो उपकार ॥ ३० ॥
 कविरा कहै कमाल कूं दो वार्ता लिख लेह ।
 कर साहिबकी बंदगी भूखे कूं कछु देह ॥ ३१ ॥
 देह धरेको एह फल देह देह कछु देह ।
 आगै हाट न वाणियां लेना होय स लेह ॥ ३२ ॥
 खाय खुलाय लुटायदै करले अपना काम ।
 चलती विरियाँ रे नरों संग न चलै छदाम ॥ ३३ ॥
 गांठी होय सो हाथ कर हाथ होय सो देह ।
 देह खेह हो जायगी फिर कोन कहेंगो देह ॥ ३४ ॥
 धन दीये धन नाँघटै नदियाँ घटै न नीर ।
 अपनी आंखै देखलो यों कहै दास कबीर ॥ ३५ ॥
 तुलसी पंछिन के पियां सरवर घटै न नीर ।
 धर्म किये धन ना घटै जोसहाय रघुवीर ॥ ३६ ॥
 कुंजर मुख ते गिर पड़्यो घट्यो न ताहि अहार ।
 लाखों कीड़ी ले चली पोखन को परिवार ॥ ३७ ॥
 लेवे कूं हरिनाम है देवेकूं अनदान ।
 तरने कूं आधीनता डूवन कूं अभिमान ॥ ३८ ॥
 माया मेरे रामकी धरणीधर की देह ।
 पूंजी विराने साह की करसैं जशकर लेह ॥ ३९ ॥
 पानी चाढ़ो नाव में घरमें वाढ़ो दाम ।
 दोनों हाथ उलेचियै यही सयानो काम ॥ ४० ॥
 खाया सोतो खूटग्या खरच्या सोई साथ ।
 जशवंत धर पोढाविया माल विड़ाणै हाथ ॥ ४१ ॥
 सर्व सुनत प्रिय लगत है दान मान जुधवात ।
 स्वरूपदास कहियो सुगम करियो कठिन दिखात ॥ ४२ ॥

सोरठा ।

बहुताई वादे बालों बोली नहीं ।

नाली सूँधी नेह कारण ता कूकी करण ॥ १ ॥

गीत ।

धावरज्यो खाज्यो विलसज्यो हिम्मतद्वै तो दीज्यो हाथ ।

दियाँ बिना जातो नहिं दीठो सोनो रूपो साध ॥ १ ॥

साजों पर्गा आपरी सपत मखों पाज्यो मीठी ।

जोड़णहारै छार जावतों दोलत किणी न दीठी ॥ २ ॥

घाघो खुलावो भलपण खाटो जिनघर सपत जेती ।

मेलण काज इसो नहिं मिलियो रावण के मुख पकरती ॥ ३ ॥

बोयो कहि दियाँ ऊबरसी गाढी जिहाँ गमाणी ।

बीस फोड़ बीसलदे थाली पत्र गइ ऊँडे पाणी ॥ ४ ॥

(प्रेम)

परा भक्ति अरु ज्ञान मँ तनक नहीं कतुमेव ।

नारायण मुरख प्रेम है कहि शास्त्र अरु वेद ॥ ४३ ॥

परा भक्ति यागो कहि जित तित दयाम दिखात ।

नारायण सो ज्ञान है पूरण ग्रह लखात ॥ ४४ ॥

प्रेम धरावर योग नहिं प्रेम धरावर ध्यान ।

प्रेम भक्ति बिन साधियो सगही थोधा ज्ञान ॥ ४५ ॥

जेहि घट प्रीति न प्रेमरस पुनि रसना नहिं राम ।

नर आया ससार में उपज खप्या बेकाम ॥ ४६ ॥

जिहँ प्रेम प्याला पिये धूमत जिनके नैन ।

नारायण वा रूप मद छरे रहै दिन रैन ॥ ४७ ॥

रूप छके धूमत रहै तनको तनक न ज्ञान ।

नारायण दग जल भरे यही प्रेम पहिचान ॥ ४८ ॥

फुटो नैन फाटो हियो जरो सु तन केहि काम ।

अथै द्रव्य पुलकै नहीं तुलसी सुमिरत राम ॥ ४९ ॥

प्रेम छिपाया ना छिपै जा घट प्रगट होय ।

जो क मुख बोले नहीं नैन बेल है रोय ॥ ५० ॥

रहिमन अँसुवा नयन हरि जिय दुख प्रगट करेय ।

जाहि निहारो मोह सँ कस न भेद कहि देय ॥ ५१ ॥

लागी लागी क्या करे लागी नाँही एक ।

लागी सोई जाणिये करे कलेजे छेक ॥ ५२ ॥

सुरत लगी वा ध्यान में सुनत और की बात ।
 नारायण उत्तर दियो मृदुल मनोहर गात ॥ ५३ ॥
 पलक निगम मधि ध्यान धर वरुणी जटा वनाय ।
 नैन दिगंबर होरहे रूप विभूति लगाय ॥ ५४ ॥
 तन बंदूक मन जामकी हियो रिजक जिय साज ।
 प्रेम पलीता दगगई निकसी आह अवाज ॥ ५५ ॥
 जरे जरे सो जर बुझे बुझार जरेऊ नाहिं ।
 अहमद दाझे प्रेम के बुझ बुझके सिलगाहिं ॥ ५६ ॥
 धन दे नीके राख तन तन दे राखिय लाज ।
 लाज प्राण तज दीजियै एक प्रेम के काज ॥ ५७ ॥
 दारा और सिकंदर हि फूल पना महमद ।
 बहराम रु मजनू कियो प्रेम सु हहोहद ॥ ५८ ॥
 जोगी जंगम सेवड़ा सन्यासी दरवेस ।
 विना प्रेम पहुंचै नही दुर्लभ सतगुरु देस ॥ ५९ ॥
 मन पक्षी तबलनि उडै विषय वासना माहिं ।
 प्रेम वाजकी झपट में जवलनि आवै नाहिं ॥ ६० ॥
 खिनक चढै खिन ऊतरै सोतो प्रेम न होय ।
 अघट प्रेम जा घट बसै प्रेम कहावै सोय ॥ ६१ ॥
 उपजै इश्क जु अंगतें रहत अंग के बीच ।
 हाड मांस गलवो करै इश्क न जानत नीच ॥ ६२ ॥
 हाड़ गोड़ रग मांस सो तो विरहा ले चल्यो ।
 अहमद रह्यो जु सांस वाही को सांसो पड़्यो ॥ १ ॥
 अहमद अपने चोर कुं सब कोउ कहै हनेउ ।
 जो मनहरन जु मो मिलै तो बार फेर जिव देउ ॥ ६३ ॥
 दीन्हो होय सो पाइहै कहते वेद पुरान ।
 मन दे पाई वेदना बाहरे मेरा दान ॥ ६४ ॥
 नेह नगर में पग धरै फेर विचारै लाज ।
 नारायण नेही नहीं वातनको महाराज ॥ ६५ ॥
 नारायण घाटी कठिन जहाँ नेहको धाम ।
 विकल रु मूर्छा ससकियो यह मगमे विश्राम ॥ ६६ ॥
 नारायण हरि लगन में यह पांचों न सुहात ।
 विषय भोग निद्रा हसी जगत प्रीति बहुवात ॥ ६७ ॥

छप्पय ।

पारब्रह्म पतसाह ज्ञान कहिये सहजादो
 साख्यजोग अरु भक्ति घेहे उमराव अनादो ।
 और किया सब रेत जोग जिग जपतप जेते
 तीरथ अटन ज्ञान दान यम नेमसु केते
 ज्यों व्याह समय अपने सुतहि सहजादो कर गाइयो
 कहै सुन्दर सहजादो वहे पातसाह उरलाइयो ॥ १ ॥

दोहा ।

रमा शय विष धनु मुरा घेघ घेनु हय ह्येय ।
 मणि रमा गज कल्पतरु सुधा सोम आवेय ॥ १ ॥

कवित्त ।

जक्षमी है सुसुद्धि अनुभूत कीसुभ मणि वैराग्य कल्पट । शख सु वचन है ।
 ऐरावत उद्यम प्रतीति रमा उदे विष कामधेनु निजरा सुधा प्रमोद धन है ॥
 ध्यान चाप प्रेम रीति मदिरा विवेक वष पुदभाव चन्द्रमा तुरंग रूप मन है ।
 चौदह रत्न ए प्रगठ होहि तहां जहां ज्ञान के उद्योत घट सिंधु को मथन है ॥ १ ॥
 मेख मं न ज्ञान नहीं ज्ञान गुह वचन में मग्न जन सत्र मं न ज्ञान की कहानी है ।
 मय मं न ज्ञान नहीं ज्ञान कवि चातुरी मं वातन मं ज्ञान नाहीं ज्ञान कहा बानी है ॥
 तातं मेख गुहता कवित्त मय मन वात इतने अवतत ज्ञान बेतन निशानी है ।
 ज्ञानही में ज्ञान नहीं ज्ञान आर और कहू जाके घट ज्ञान सोइ ज्ञान को निदानी है ॥ २ ॥

दोहा ।

आपन कह सय स्वर्ग में, औरन नक निवास ।
 सय मत की गति सुनि भयो, दास स्वरूप उदास ॥ १ ॥
 इष्ट धर्मके भजन को, पन्यो जु जगरो आय ।
 ताते में उन्यो सरो, पन्यो ब्रह्मकुडमें आय ॥ २ ॥
 पढ़ने की हृद समझ है, समझन की हृद ज्ञान ।
 ज्ञान हृद हरिनाम है, यह सिद्धान्त उर जान ॥ ३ ॥

कवित्त ।

वैधे काहु दासीने जुगठ पुत्रने जिन एक दियो बाम्हन के एक घर राख्यो है ।
 बाम्हन कहायो तिन मय मास ज्ञाय किया दासहु कहायो तिन मय मास चाख्यो है ॥
 तपे एक वेदनीकर्म के जुगठ पुत्र एक पाप एक पुण्य नाम जिन भारयो है ।
 दुहु माहि दौर धूम दोऊ कर्म बबरूप बाते ज्ञानवतनि न कोट अभिगख्यो है ॥ १ ॥
 जेधे महिमठ में नदी को प्रवाह एक ताही मं अनेक भाति नीर की दरनि है ।
 पायर को जोर तहां भार की मसोर होत काकर की खानी तदा क्षाय की क्षरनि है ॥

पौन की झकोर तहां चंचल तरंग उठै भूमिकी निचान तहाँ भौर की परनि है ।
तैसे एक आत्मा क्षणंत रस पुदगल दुहूँ के संजोग मे विभावकी भरनि है ॥ २ ॥

दोहा ।

पलित वृद्धके शीशपर सोतो पलित न पेख ।
गई जवानी भजन विन वानी परी विशेष ॥ १ ॥

छप्पय ।

मिनख जन्म अवतार चरप चालीसां मीठो ।
कड़वो लगै पचास साठमें क्रोध हि दीठो ॥
सत्तर सगो न कोय असी में आस न काई ।
नाहिं निवे में होय हँसै सब लोग लुगाई ॥
डगडग हालै नाड़ की सादज पड़गयो खोखरो ।
सुत नारी परिवार कहै ओ मरै तो सुधरै डोकरो ॥ १ ॥
चरण प्रबल चूरता चरण अँगणे न चहै ।
पौण हाथी पेलता पोत छूटती न पहै ॥
नेणां नग निरखता नारी ओलखै न नेणा ।
श्रवण नाद सुणता साद ओलखै न सेणा ॥
वोलती जीभ वडवड वयण लड़ थड़ करती लल्लरा ।
जोवन गमाय जग निरखता जका कीध गोली जरा ॥ २ ॥
नयन श्रवण नासिका रूप रव गंध सुमुक्किय ।
रसन न रस आचरहि चरण मग चलत सुचुक्किय ॥
दंत दलित कच पलित त्वचा संवलित सलन ते ।
असन वसन बल गलित मलिन तन सकल मलन ते ॥
किय सखा सकल सुरपुर सदन लकरिपकरि विहरति विमति ।
यह दशा भई भावन तदपि तजत न जिय जीवन सुरति ॥ ३ ॥

सवैया ।

लकरी पकरी सु खरी कर में पग पंथ परे न भरे डगरी ।
न घरी भर वैठि भज्यो सु हरी कथ कूर करी जगरी सगरी ॥
नगरी तनरी सु पुरानि परी भगरी अव लूटतु हैं ठगरी ।
अवरी विरधापन वात बुरी सु अरी सम होत सबै सुतरी ॥ १ ॥

माया ।

दोहा ।

माया तो ठगनी भई ठगत फिरी सब देश ।
जा ठगनें ठगनी ठगी ता ठग को आदेश ॥ १ ॥

कबीर माया पापिणी लुल लुल लागै पाय ।
 हिरदा भीतर बैठकर काढ़ कलेजो पाय ॥ २ ॥
 कबीर माया ऊपर सींगड़ा लाया नय नय हाथ ।
 पाछे मारे लात सू आगै दाता घात ॥ ३ ॥
 कबीर माया मोहिनी मागी मिलै न हाथ ।
 मना उतारी ऊठर भागी डोलै साथ ॥ ४ ॥
 कबीर मोटी माया सब तजै झीणी वजी न जाय ।
 सिध साधक जोगी जती झीणी सबहू पाय ॥ ५ ॥
 माया नाना भाति फी हरिया जगमें जान ।
 काहू सुत बित अस्तरी काहू अनुभव पान ॥ ६ ॥

पद ।

माया जग डगनी हम जानी त्रिगुणी पाष लियां कर लैलै बोकै मधुरी बानी ॥ १ ॥
 जोगी के जोगन हुय बैठी राजा के घर रानी पडा के मूरति हुय बैठी तीरथ जायक पानी ॥ १ ॥
 केशव के कमल हुय बैठी ब्रह्मा के ब्रह्मानी, इशर के गारी हुय बैठी ह्दर के ह्दानी ॥ १ ॥
 भक्तों के भजन हुय बैठी मुक्तों के मुक्तानी लखचौरासी चुनचुनखायेतोइहि किनन पिछानी ॥ ३ ॥
 काहू के हीरा हुय बैठी काहू के मोरीदानी, दासकरीरसाहबकाबदाजिन के हाथ बिछानी ॥ ४ ॥

पद ।

धोवनियाँ हम जानी घर घुषर रही बनाय । डेर
 मारकण्डेय के लारे लागी दुर्यासा के रग में पागी
 मैना सैन चलाय पलक में कियो पाराशर खार ॥ १ ॥
 सुर तैतीसा लारे लागी शूगी ऋषि के उन में पागी
 भांडी ऋषि ऋण्डे के नीचे दियो पलक में डार ॥ २ ॥
 अजामील कालू क्या कीना परबु मछन्दर भोगल दीना
 उद्धारक तिरिया के कारण गयो ब्रह्म दरवार ॥ ३ ॥
 नवू नाथ पलका में राखी सिद्ध चौरासी जुल जुल भाखी
 कच्छ देश सलिता के बिचमें दियो गोरख शिर मार ॥ ४ ॥
 गौतम ऋषि की नारि अहिल्या दिया थाप धोवन घर घाल्या
 शशि को कलक इद्र सहस्र भग अजनि पुत्र कुमार ॥ ५ ॥
 मोहिनि रूप धन्यो भगवाना शकर होद भरे हम जाना
 ब्रह्म को नाच नचाय गवरजा लियो भस्मासुर मार ॥ ६ ॥
 घर को रूप धन्यो मृग नैनी ताणा तोष्या सो हम जानी
 उकती आम गरज दामिनि जाती उद्धारक छार ॥ ७ ॥
 काशी में फीरति सुण आई दास कबीर कथा सुनाई
 गुरु रामानंद बदन के ऊपर डारै धोवनिया थार ॥ ८ ॥

श्लोक ।

सततधृतिरप्युच्चैः शान्तोऽप्यवाप्तमहोदयो-
प्यधिगतनयोप्यन्तः स्वच्छोप्युदीरितधीरपि ।
त्यजति सहजं धैर्यं स्त्रीभिः प्रसारितमानसः
स्वयमपि यतो मायासंगात् पुमानिति विश्रुतः ॥ १ ॥

दोहा ।

तनक न रहै विरक्तता लगै दगन की थाप ।
कहुं गीता माला कहुं कहुं बटवा कहुं आप ॥ १ ॥
पण्डित पूजा पाक दिल यह दिमाग मति लाय ।
लगै जरब अंखियान की तो सवै गर्व उड़िजाय ॥ २ ॥
और ठोर जो दवत है निकसै मौसर पाय ।
जो नर नारी से दवै दवत दवत दवजाय ॥ ३ ॥
कवीर दोय घाटी दोरी खरी कही न लंघी जाय ।
जो कोउ लंघन की करै सोउ अलूझै आय ॥ ४ ॥
कवीर एक कनक अरु कामिनी विष फल दोऊ पाय ।
देखेही सों विष चढ़ै खाया सूं मरजाय ॥ ५ ॥
छोटी मोटी कामिनी सबही विष की बेल ।
वैरी मारै दाव सूं या मारै हंस खेल ॥ ६ ॥
कामिनि खोड़ो कील सुत पोरायत परिवार ।
रामचरण गृह भाकसी मोहका जड़या किवार ॥ ७ ॥
कवीर नारी कहूँक नाहरी करै निजर की चोट ।
कोइक हरिजन ऊवरै पारब्रह्म की ओट ॥ ८ ॥
कवीर नारी नहिं या नाहरी वाघण बडी बलाय ।
जीवत सोखै कालजो मुवां नरक लेजाय ॥ ९ ॥
कवीर जहाँ जलाई सुंदरी तू मति जाहि कवीर ।
भस्मीहुइ अंग लागसी सो नासवै शरीर ॥ १० ॥
कवीर राता कपड़ा पहर कर गाढ़ा बंध्या केश ।
हाथां मँहदी लायकर वाघण खाया देश ॥ ११ ॥
नारि निसरड़ी कूकरी क्या राती क्या काली ।
हिड़काव चढ्यां दोनूं बुरी क्या परकी क्या पाली ॥ १२ ॥
घरका गिणै न चारला हंस हंस देवै गाली ।
रामचरण धीजो मती या नारी चिरताली ॥ १३ ॥
विषय विगोई टीकली क्या विन टीके होय ।
नुकता माहिं निसरड़ी शरम विगाड़ै दोय ॥ १४ ॥

दिय सो गुण दिग अग्नि सो चितवन वाण समान ।
हित ठग सो मद सो मिलन सुख चुड़ैल एकधान ॥ १५ ॥

सवेया ।

राम से पूत को दे बनवास कुमति ले केरुह कय को रोई ।
जमदग्नी कि त्रिया के कहे सहस्रार्जुन ने तपस्या जो विगोई ॥
शूषनया तिय धी सुध दे दशकन्ध की साहिरी लवते खोई ।
राड तणे पुरुषाथ ते जु कहो किन को घर भाड न होई ॥ १ ॥
मुई चुडेल उतार को छेइके छोडत है फिर नाम न लेवै ।
जीवति या नित लेय उतार को छोड़त नाहि महा दुख देवै ॥
जीवति सार हरे मन देहको मुख पीछे याहि नरुं पठेवै ।

माणक जे पुधवान नहीं ऐसी जानिके याही के चरण को सेवै ॥ २ ॥

टीका=चुड़न दो प्रकार की है एक मरिक चुड़ेल भई । एक जीवती चुड़ेल बनी है
तब बही कोन होगी ? तहाँ कहै ई बाकिरी । नाहि क्यू कि बाकिरी है सो और क
छानि क दु ख देवै है घरका पुरुष पर तो दया करै है केर बल लिया या पीछे तो
छोडि देवै है । अरु यातो घरका ही पुरुष हू नागिक महा दु ख देवे है बल लिया ए
नी छोडती नाहीं । तातें बाधे या भिन्न ही है । तातें मरी चुड़ेल से जीवती में अधि
कता दिखाव है कि मरी चुड़ेल है सो अनो बल लेकर पुरुष को छोड देति है, अरु
या जीवती है सो नित मूह माग्यो अन बल आभूषणादि बल कु छेवै है तोभी पुरुष
को छोडती है नाहीं अरु या गोरका पर लोकका जो महादु ख ताई देवे है ।

साइ कहे है कि पुरुष जीवते तो या देह को सार वीर्य बलादिक मनको सार जो
धर्म, विवेक वैराग्य, ध्यान स्मरणदि ताकु पुरुष के चित्त में घटिके खेंचिछेतई,
अरु चिन्ता शोकादि महादु ख को देत है, केर मरे के पीछ की के अथ किये जो
अनर्थ ता अनर्थ करिके पुरुष को नरकादिक के विषे पडाइ के नरक यातनादि महादु ख
को देत है । ताते जो बुद्धिमान् पुरुष है सो याओ ऐसी महा अनर्थ को कारण नाहि
क या छोका चरण को न सेव । किन्तु ध्यान स्मरण चरणसेवा नारायण की ही करै ।

कुडलिया ।

पगा कर्डी सजडी जड़ी तिमण्यो कड चधाय ।
नाक फान घाली कबी दाता मेख लगाय ।
दाता मेख लगाय लक कस वेणी बाधी ।
वाजू पुणवा हाय जड़या सोना के चादी ।
एता वधन बाधिके घरमें रखी लुकाय ।
तोइ दाबी ना दवै नारी उड़ी चलाय ॥ १ ॥

छप्पय ।

कामण चढी शिकार काम घोड़े चढ़ि घरमें ।
कुच दोय लागा श्वान कोरडो बेनी करमें ।
आभूषण धरि तुपक नैन भाला अगवानी ।
मिष्ट वचन समशेर ढाल घूंघट की जानी ।
विचल्या नर कुं देखि पछाड़ै अपना बलसूं ।
पटके चरणां हेठ सार सोखै केइ छलसूं ।
सूरा सो टल नीसरै कायर कुं ले मार ।
जगन्नाथ साची कहै बड़ी शिकारण नार ॥ १ ॥

कवित्त ।

सज्जन सुजान कहूँ सुनो सबै साची वात ।
नारी और नाली एकस्यानी बनी वाली है ॥
देखत की सयानी पर मौत की निशानी फेर ।
करै धूरधानी जमजातना की जाली है ॥
आवत की आछी फेर फूटत की पाछी परै ।
रवीराम माहीं तम ऊपर उजाली है ॥
एक नाली लगे गिरि गाढ़े से गिरत जात ।
कौन गति होत जाकुं लागत छनाली है ॥ १ ॥
डेडरा से डरै सींगी मच्छ को मरोड़ डारै ।
कानन के बीच जाय कुंजर को पकरे ॥
सायर तिरत डूब जात है कठोती नीर ।
सींदरी की संके छांय सर्प को जकरे ॥
फूलन से मरै भार गिरि कुं उपार लेय ।
बड़े बड़े कुंजर पछारिवे की धकरे ॥
तोरिवे को अम्वर के तारों की हिमत रखै ।
त्रिया को विश्वास ज्ञानी नेमी जन नकरे ॥ २ ॥

श्लोक ।

बाला मासियमिच्छतीन्दुवदना सानन्दमुद्गीक्षते
नीलेन्दीवरलोचना पृथुकुचोत्पीडं परीरंभते ।
का त्वामिच्छति का च पश्यति पशो मांसास्थिभिर्निर्मिता
नारी वेद न किञ्चिदत्र स पुनः पश्यत्यमृतः पुमान् ॥ १ ॥
कान्तेत्युत्पललोचने नु विपुलश्रोणीभरेत्युन्नमत्
पीनोत्तुङ्गपयोधरेति सुमुखांभोजेति सुभूरिति ।

दृष्ट्वा माद्यति मोदतेऽभिरमते प्रस्तौति विद्वानपि

प्रत्यक्षाशुचिपुत्तिका स्त्रियमहो मोदस्य दुग्धेष्टितम् ॥ २ ॥

याजस्र जगदासुराभरमुष बङ्गालकोद्वन्धने

दृष्ट्वा नतयति क्षणेश्व सकल द्वावाञ्चितैर्लोलया ।

सम्प्रेता कुरवश्च रात्रणमुखा देत्याश्च यस्या रुते

ता द्वार निरयस्य को नु घृणुयाद्वामा सुखेप्सु कदा ॥ ३ ॥

भायत सशयानामविनयभवन पत्तन साहसानाम्

दोषाणा सन्निधान कपटशतमय क्षेत्रमप्रत्ययानाम् ।

स्वगद्धारस्य विप्रो नरकपुरमुष सर्वमायाकरण्डम्

स्त्रीयश्च देन खष्ट विषममृतमय प्राणिनामेकपाशः ॥ ४ ॥

मायाकरणी नरकस्य इण्डी तपोत्रिण्डी सुष्ठुतस्य भण्डी ।

नृणा विपण्डी चिरसेविता चेद् घृणा गत तस्य नरस्य जीवनम् ॥ ५ ॥

दर्शनाद्धरते चित्त स्पशनाद्धरते यलम् ।

सम्भोगाद्धरते धीर्य नारी प्रत्यक्षराक्षसी ॥ ६ ॥

योषानलोदधिभव मनुजस्तथायरुकान्ताङ्गना च पुरुषस्त्वप ईरित ये ।

ससगतो द्रवति चानु विह्वल्यतेऽत सग त्यजेदनिशमेव युधोऽङ्गनानाम् ॥

गौडी माध्वी तथा पैष्टी विधेया त्रिविधा सुरा ।

चतुर्थी स्त्रीसुरा ज्ञेया थयेद मोहित जगत् ॥ ८ ॥

स्त्रियो हि मूल निधनस्य पुस स्त्रियो हि मूल व्यसनस्य पुस ।

स्त्रियो हि मूल नरकस्य पुस स्त्रियो हि मूल कलहस्य पुस ॥ ९ ॥

मलमूत्रवपाह्निसम्पुटकै नपरोमकफाश्रवये सत्रु य ।

रमतेऽस्थिशिरापिशितं विचिते स रुच न रुमि प्रमदाश्रुपि ॥ १० ॥

अमेध्यपूर्ण रुमिराशिसकुले स्वभावगन्धेयशुचौ च सद्रवे ।

कलेयरे मूत्रपुरीषभाजने रमन्ति मूढा त्रिरमन्ति पण्डिताः ॥ ११ ॥

चर्मपण्ड द्विषामिघ्नमणानोद्धारधूपितम् ।

ये रमन्ति नरास्तत्र शमितुल्या कथ न ते ॥ १२ ॥

अधस्ताच्छिद्रित चम दुगन्धिपरिपूरितम् ।

मूत्रह्लिघ्नस्य तस्यार्थे मा रानन् ब्राह्मणान् चर्षी ॥ १३ ॥

काकमास शुनोच्छिष्ट स्वल्प तदपि दुर्लभम् ।

किं तेन मक्षितेनापि युधा नैव निवर्तते ॥ १४ ॥

टीका—अरे काकला को तो मांस फेर डुत्ता का मुख का ऐंझे सो भी थोड़ा पेट भरे नहीं सो भी डुत्ता का मुखमें ताते दुर्गम । अरे ऐसा मांस खाये ते कहा प्रयोगन सिद्ध होयगो क्यों के जाव अल्प पुरा भी निवर्त नहीं होत है ।

तैसे परस्त्री परधनादिक विषय है सो भी काकमांस के नोंइ अति निषिद्ध है सो भी कुत्ता सरीसा पुरुष को उच्छिष्ट है शुद्ध नार्ही । औ धनादिक की प्राप्ति स्वल्प कहिये थोड़ी है मनोर्थ पूर्ण करे इतनी नहीं सो थोड़ो भी पावणो महा मुश्किल है ताते विवेकी है सो कष्ट सहै परन्तु ऐसा विषय की इच्छा न करै ।

कवीर नारी भांडा नर्क का बुरा भला के बीच ।

उत्तम ते अलगा रहै नेड़ा रहैस नीच ॥ १ ॥

यह अस्थिन को पींजरो मांस लपेट्यो जाहि ।

ऊपर चादर चामकी भीतर भिष्टा आहि ॥ २ ॥

रज्जव तिनकी कौन गति जो नित नारीसंग ।

जाकी लघु लावण लगे अंधे होत भुजंग ॥ ३ ॥

व्यभिचारनिषिद्ध ।

सन्तु विलोकन-भाषण-विलास-परिहास-केलिपरिरंभाः ।

स्मरणमपि कामिनीनामलसिह मनसो विकाराय ॥ १ ॥

अदर्शने दर्शनमात्रकामा दृष्ट्वा परिष्वंगरसैकलोलाः ।

आलिङ्गितायां पुनरायताक्ष्यामाशासहे विग्रहयोरभेदम् ॥ २ ॥

छुप्य ।

अप्रतीति अपजश झूठ छलछिद्र मोह मंड ।

द्रोह छोह चख मान रहस्य रस दोष भोग झंड ॥

खाद वाद अरु शोक नाश प्रज्ञा दुख रासी ।

पराधीन औ चिंत कलंक दुर्जन हरखासी ॥

विरह वियोग सन्ताप तन अभरोसो अन्तःकरण ।

जनरामा पर त्रिया स्पर्श इता दोष शिरपर मरण ॥ १ ॥

कवित्त ।

जिहि पुरुष को परप्रमदासे प्रेम लग्यो अरु पुरुष से नेह लग्यो जिहि नारीको ।

नरक निवास त्रासदायक तेहिको होत जगत मे जश न रहत जारीकारी को ॥

धिक अवतार ताको होत धरणीतलपै जिनहीं लजायो कुल तात महतारी को ।

सो प्रवीण नहीं पुनि नहीं रस सागरसो चुले मे चतुरपनो पन्थो विभचारी को ॥ १ ॥

लंकेश्वरो जनकजाहरणेन वाली

तारापहारकतयाप्यथ कीचकाख्यः ।

पाञ्चालिकाग्रहणतो निधनं जगाम

तच्चेतसाऽपि परदाररतिं न कांक्षेत् ॥ १ ॥

परयोनिगते चिन्दौ कोटिपूजा विनश्यति ।
जपहानिस्तपोहानिब्रह्महत्या पदे पदे ॥ २ ॥
मद्यपाने महापाप नारीसगे तथैव च ।
तस्मात् दृढ परित्यज्य न तेऽद्य नरकं गते ॥ ३ ॥

तमासूखण्डन ।

आग्युपे विडाल तैसे तारुत तमासूखर
चापत ना चोखे माल विप मे विलम्ब के ।
चूरु जात साफी जब माफी मांग जाचें जल
आगहित लागे जाय पाय वे इलम्ब के ॥
ठठाढोल रोल मं अगर गिरि जात जरे
जाते जरि जात गद्दी गदरा ओगिलम्बके ।
चारि घरणहु को धूरु चाटन को चेता चूरु
झगये उल्लूक बेते चारु चिलम्बके ॥ १ ॥
नासका नहीं हैं घर नासना निसानी यह
कहे हम तारा माली रोहत यटारु दे ।
करी मनघार कोड औरप्रति डिप्पी रोल
पोलदख बीच आप झोपत झटारु दे ॥
नारु ह निराम जाको देखत उलाफ होत
नारु सुख पोय गिरे नरक गटारु दे ।
चिमटी चटारु भरि सुधत सटारु देर
वेर वेर देर मुख छीकत उटारु दे ॥ २ ॥

(नीति.)

छप्पय ।

घात घात मैं घात करै निजमुख प्रभुताई ।
जन जन त मित्रता जुगल बाधे समुदाई ॥
सय कामन तैं अरुचि दाय आनैं न महा पटु ।
आलसी बिपुल असाधु कहै दुरवाद बेन कटु ॥
यां राजनीति चाणन्य कहै जग प्रसिद्ध शिक्षा परम ।
राखवे योग नार्हा नृपति ऐसे पटु सेवरु अधम ॥ १ ॥

दोहा ।

पीर तीर चकरी पयर, और फरीर अमीर ।
जोय जोय राखहु पुरुष, सोगुण होय शरीर ॥ १ ॥

छोरा वन्दगी दारा हुड्दगास्तृतीयकः ।

मुठिया सींगाश्च नागा वै पष्टोतीतो मतो बुधैः ॥ १ ॥

छप्पय ।

हाकिम जिणदिन होय विधी पट मेख चणावै ।

दोय श्रवण में दिये शब्द नहिं काहि सुनावै ॥

मेख दोय चख माहिं सबल निर्वल नहिं सूझै ।

मेख एक मुख माहिं विपत्ति नहिं किणरी बूझै ॥

पदहीण होय हाकिम जवै छठीमेख तलद्वारमे ।

पांचही मेख छिटकै परी सरल वहै संसारमें ॥ १ ॥

दोहा ।

जो नृप पै अधिकारले, करे न परउपकार ।

पुनि ताके अधिकार में, रहत न आदि अकार ॥ १ ॥

धन जातों धर जावतों, त्रिया पड़तों ताव ।

तीनूं दिन है मौतका, कहा रंक कहा राव ॥ २ ॥

रण जीतण कंकण वैधण, पुत्र बधाई चाव ।

तीनूं दिन है त्याग का, कहा रंक कहा राव ॥ ३ ॥

तन संदूक गुन रख चुप, ताही दीजै ताल ।

गाहिकविन नहिं खोलियै, कुंची वचन रसाल ॥ ४ ॥

प्रशंसा ।

अद्यापि दुर्निवारं स्तुतिकन्या वहति कौमारम् ।

सद्भ्यो न रोचते साऽसन्तस्तस्यै न रोचन्ते ॥ १ ॥

पट्ट नकार ।

मौन गमन दूरी अवधि, अधचख क्रोध उचार ।

स्वरूपदास पर भाषणा, पट विधि चतुर नकार ॥ १ ॥

जैसी जाकी बुद्धि है, तैसी कहै बनाय ।

ताको बुरो न मानिये, लैन कहा से जाय ॥ २ ॥

सोरठा ।

सुधहीणो सरदार, मतहीणा राखै सिनख ।

अस आंधो असचार, राम रुखालो राजिया ॥ १ ॥

नान्हा सिनप नजीक, उमरावां आदर नही ।

ठाकर जिणनैं ठीक, रणमें पड़सी राजिया ॥ २ ॥

अथ चौरासी बोल ।

दोहा ।

नकारो नीरस वचन, नटतहिं उपजे दु ख ।

यां चौरासी जाहिगा, नटै तो चरते सुख ॥ १ ॥

मनुष्य जन्म का पाइके, टाले इतना दोष ।

जगन्नाथ नर नारिको, सुघरे लोक श्लोक ॥ २ ॥

उन्द एक पय ।

राम सुमरता थकिजे नहीं ॥ १ ॥ गुरु सेचामें थकिजे नहीं ॥ २ ॥

करणी कर गरवाजे नहीं ॥ ३ ॥ नितको नियम घटाजे नहीं ॥ ४ ॥

वानदेत अलसाजे नहीं ॥ ५ ॥ सन्त देख टलजाजे नहीं ॥ ६ ॥

लछ विन दीश नमाजे नहीं ॥ ७ ॥ साची घात उठाजे नहीं ॥ ८ ॥

नीची सगति कीजे नहीं ॥ ९ ॥ साची परिहर दीजे नहीं ॥ १० ॥

नृपसे वाद वधाजे नहीं ॥ ११ ॥ जोछी अरुल उपाजे नहीं ॥ १२ ॥

वया पालता लजिजे नहीं ॥ १३ ॥ भाग भरोसो तजिजे नहीं ॥ १४ ॥

जाप घडाई कीजे नहीं ॥ १५ ॥ दान उदक फिर लीजे नहीं ॥ १६ ॥

दान बैठ पठिताजे नहीं ॥ १७ ॥ गुरु को दान लजाजे नहीं ॥ १८ ॥

जान आसरो लीजे नहीं ॥ १९ ॥ न्याय अदल विन कीजे नहीं ॥ २० ॥

परमाथ से मुड़जे नहीं ॥ २१ ॥ ऊझड़ मारग रखजे नहीं ॥ २२ ॥

मन को मान्यो कीजे नहीं ॥ २३ ॥ दगो किसीको दीजे नहीं ॥ २४ ॥

दिन आध्या से सोजे नहीं ॥ २५ ॥ शोक भणते रोजे नहीं ॥ २६ ॥

रणम पूढ यताजे नहीं ॥ २७ ॥ हाथा कुरव घटाजे नहीं ॥ २८ ॥

अणछाण्यो जल पीजे नहीं ॥ २९ ॥ कुयश किसीको लीजे नहीं ॥ ३० ॥

झूठी कविता करजे नहीं ॥ ३१ ॥ साची कहतों डरजे नहीं ॥ ३२ ॥

झूठी निन्दा कीजे नहीं ॥ ३३ ॥ पर नारी चित दीजे नहीं ॥ ३४ ॥

घर तजि विषय कमाजे नहीं ॥ ३५ ॥ जहर जाणतों खाजे नहीं ॥ ३६ ॥

काछ विकल मग लीजे नहीं ॥ ३७ ॥ कपटी मित्रजु कीजे नहीं ॥ ३८ ॥

सम्पति में ऋण रखजे नहीं ॥ ३९ ॥ धन योजना में छरजे नहीं ॥ ४० ॥

राज पुकारा जाजे नहीं ॥ ४१ ॥ बुरी पराई कीजे नहीं ॥ ४२ ॥

घोरी जारी कीजे नहीं ॥ ४३ ॥ पूढ घणी का दीजे नहीं ॥ ४४ ॥

सूने मन्दिर जाजे नहीं ॥ ४५ ॥ जगमें बुरो कहाजे नहीं ॥ ४६ ॥

जोछी घस्ती बसजे नहीं ॥ ४७ ॥ तात्पर्य विन हसजे नहीं ॥ ४८ ॥

बुगल पादोसी कीजे नहीं ॥ ४९ ॥ घाम परायो लीजे नहीं ॥ ५० ॥

भरम्या भटका खाजे नहीं ॥ ५१ ॥ अलगा उत्तर जाजे नहीं ॥ ५२ ॥

भांग तम्बाकू खाजे नहीं ॥ ५३ ॥ उपर खेती वाजे नहीं ॥ ५४ ॥
 वेश्या के घर जाजे नहीं ॥ ५५ ॥ कुलकों दोष लगाजे नहीं ॥ ५६ ॥
 पर धन काको हरिजे नहीं ॥ ५७ ॥ नीची संगति करिजे नहीं ॥ ५८ ॥
 सुतो सिंह जगाजे नहीं ॥ ५९ ॥ चूड़ेलण वतलाजे नहीं ॥ ६० ॥
 हरिकी भक्ति विसरजे नहीं ॥ ६१ ॥ विकर्म कवहू करजे नहीं ॥ ६२ ॥
 वाद विवादू है जे नहीं ॥ ६३ ॥ हलकी वाणी कहजे नहीं ॥ ६४ ॥
 झूठी हामल भरजे नहीं ॥ ६५ ॥ वचन काढ़के फिरजे नहीं ॥ ६६ ॥
 रौंड भौंड से अड़जे नहीं ॥ ६७ ॥ गतराड़े से लड़जे नहीं ॥ ६८ ॥
 नदी बहाला तिरजे नहीं ॥ ६९ ॥ झुंगर सेती गिरजे नहीं ॥ ७० ॥
 सुणी बात फैलाजे नहीं ॥ ७१ ॥ अनजान्या फल खाजे नहीं ॥ ७२ ॥
 सुलझ्यां को उलझाजे नहीं ॥ ७३ ॥ निर्धन कों डरपाजे नहीं ॥ ७४ ॥
 अपयश कांना सुणजे नहीं ॥ ७५ ॥ चञ्चो मम्मो भणजे नहीं ॥ ७६ ॥
 जामन किसका हुइजे नहीं ॥ ७७ ॥ अरि से गाफिल रहिजे नहीं ॥ ७८ ॥
 झूठो दोषण दीजे नहीं ॥ ७९ ॥ निर्वल शरणो लीजे नहीं ॥ ८० ॥
 मूर्ख को वतलाजे नहीं ॥ ८१ ॥ धन विन अर्थ गमाजे नहीं ॥ ८२ ॥
 लेताँ देताँ लजिजे नहीं ॥ ८३ ॥ भल माणस को तजिजे नहीं ॥ ८४ ॥

दोहा ।

यह चौरासी शुभ अशुभ, कहीं ठामकी ठाम ।
 जगन्नाथ करिये सबै, जवलग गृह विश्राम ॥ ३ ॥
 इन चलगत चालै सुधर, भला कहै सब लोय ।
 निश्चय या वा लोकमें, पला न पकड़ै कोय ॥ ४ ॥
 यह चौरासी चित धरै, वह चौरासी वाद ।
 अपनी अपने हाथ है, मन माने सो साथ ॥ ५ ॥
 बार बार नरतनु नहीं, कहै शास्त्र अरु सन्त ।
 ताते सुकृत कीजिये, कै भजिये भगवन्त ॥ ६ ॥
 जैन यवन शिव धर्म कहै, करणी सुधरे काम ।
 दया धर्म इकतार से, जगन्नाथ कह राम ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीचौरासी बोल ॥

हरदम कृष्ण कहे श्रीकृष्ण कहे तू जवाँ मेरी,
 यही मतवल खातर करताहूँ खुशामद मैं तेरी,
 दही और दूध शक्कर रोज खिलाताहूँ तुझे,
 तो भी हररोज हरनाम न सुनाती मुझे,
 खोई जिदंगानी सारी सोई गुनाह माफ तेरा,
 दया मत भूले प्रभुनाम आखिर वक्त मेरा ॥ १ ॥ (दया)

नया कुछ तो खुदा या कुछ न होता तो खुदा होता,
 हुयोया मुझसे होने ने न होता मैं तो क्या होता,
 हुई मुझसे कि गालिय भरगया पर याद आता है,
 यह हर एक बात पर कहना कि यो होता तो क्या होता ॥ १ ॥ (गालिय)
 खुदा पूछेगा महशार में यह तकसीर किसकी है ।
 कहूँगा घरमला में तज्जीर मैं यह तदसीर किसकी है ॥ १ ॥
 न कुछ हम इससे सीखे हैं न कुछ हम रोके सीखे हैं ।
 जो कुछ योड़ासा सीखे हैं किसीके होके सीखे हैं ॥ १ ॥ (भजीज)

नजीर ।

दुनिया अजब बाजार है कुछ जिनसे यहा की साथ ले ।
 नेकी का दरजा नेक है यह से घदी की बात ले ॥
 आराम दे आराम ले आफात दे आफात ले ।
 मेवा दिये मेवा मिले फल फूल दे फल पात ले ॥
 कलजुग नहीं कर जुमा है यहा दिनों के ओर रात ले ।
 क्या खून सोदा नकद है इस हाथ के उस हाथ ले ॥ १ ॥
 बाढा किसी के मत लगा गो मिस्ले गुल फूला है तू ।
 धो तेरे हक मैं तीर है किस पात में भूला है तू ॥
 मत आग में दे और रू फिर घास का पूला है तू ।
 तुन रफ्त यह नुस्ता के खवर किस बात पर भूला है तू ॥ कलजुग ॥ २ ॥
 चाहे सो लेले इस घडी सय जिनसे यहा तैयार है ।
 आराम ॥ आराम है बाजार में बाजार है ॥
 दुनिया न जाने इस को मियों दरिया की यह मेशधार है ।
 औरों का बेडा पार कर तेरा भी बेडा पार है ॥ कलजुग ॥ ३ ॥
 शोखी शारत मँकरो फन्द सबका बसेखा है यहा ।
 जो जो दियाया और रू यो आप भी देखा है यहा ॥
 नेकी घदी जो कुछ करे सबका परेखा है यहा ।
 जो जो पड़ा तुलता है दिल तिल तिल का लेखा है यहा ॥ कलजुग ॥ ४ ॥
 जो ओर की वस्ती रखे उसका भी वस्ती है पुरा ।
 जो ओर की तोड़ धुरी उसका भी टूटे है धुरा ॥
 जो और के मारे धुरी उसके भी लगता है धुरा ।
 जो और की चीते धुरी उसका भी होता है धुरा ॥ कलजुग ॥ ५ ॥

जो और कूं फल देवेगा वो भी सदा फल पावेगा ।
 गेहूं से गेहूं जों से जों चाँवल से चाँवल पावेगा ॥
 जो आज देवेगा यहां वैसाही वो कल पावेगा ।
 कल देवेगा कल पावेगा कलपायगा कलपावेगा ॥ कलजुग ॥ ६ ॥
 तू और की तारीफ कर तुझको सनाख्वानी मिले ।
 कर मुश्किल आशां और की तुझ को भी आसानी मिले ॥
 तू और को मेहमान रख तुझको भी महमानी मिले ।
 रोटी खिला रोटी मिले पानी पिला पानी मिले ॥ कलजुग ॥ ७ ॥
 करले जो करना है अब यह दम तो कोई आन है ।
 एहसान में एहसान है नुकसान में नुकसान है ॥
 तुहमत में यहां तुहमत मिले तूफान में तूफान है ।
 शैतान कूं शैतान है रहमान कूं रहमान है ॥ कलजुग ॥ ८ ॥
 यहां ज़हर दे तो ज़हरले शक्कर में शक्कर देखले ।
 नेकों को नेकी का मजा मूंजी को टक्कर देखले ॥
 मोती दिये मोती मिले पत्थर में पत्थर पेखले ।
 गर तुझको यह बाँचर नहीं तो तूभी करके देखले ॥ कलजुग ॥ ९ ॥
 जो हारमें दे और को सो वह भी हारा जायगा ।
 खोवे सहारा और का उसका सहारा जायगा ॥
 यहां आज जिसके हाथ से कोई मर विचारा जायगा ।
 गाफिल न हो इस बात पर कल वो भी मारा जायगा ॥ कलजुग ॥ १० ॥
 गफलत कि यह जागे नहीं यहां साँहिवे इदराक रह ।
 दिल शाद रख दिल शाद रह गमनांक रख गमनाक रह ॥
 हर हाल में तू भी नजीर अब हर कदम की खाक रह ।
 यह वो मकां है अब सियां यहां पाक रह बेवाक रह ॥ कलजुग ॥ ११ ॥

वनजारानामा ।

टुक हिस् हवा को छोड़ सियां मत देश विदेश फिरे मारा ।
 कज्जक अजल का लूटे है दिन रात बजाकर नक्कारा ॥
 क्या भैंसा बधिया बैल सुतरे क्या गोने पल्ला सर भारा ।
 क्या गेहूं चावल मोठ मटर क्या आग धुआँ और अंगारा ॥
 सब ठाट पड़ा रहजावेगा जब लाद चलेगा वनजारा ॥ १ ॥

१ तारीफ करना । २ घड़ी । ३ नेकी । ४ दुष्ट । ५ परमेश्वर । ६ यकीन ।
 ७ मजबूत । ८ दरयाफन । ९ छुश । १० तकलीफ । ११ बेखोफ । १२ चाह ।
 १३ बटपाड़ । १४ मोत । १५ ऊठ ।

जो और कूं फल देवेगा वो भी सदा फल पावेगा ।
 गेहूं से गेहूं जों से जों चावल से चावल पावेगा ॥
 जो आज देवेगा यहां वैसाही वो कल पावेगा ।
 कल देवेगा कल पावेगा कलपायगा कलपावेगा ॥ कलजुग ॥ ६ ॥
 तू और की तारीफ कर तुझको सनाख्वानी मिले ।
 कर मुश्किल आशां और की तुझ को भी आसानी मिले ॥
 तू और को मेहमान रख तुझको भी महमानी मिले ।
 रोटी खिला रोटी मिले पानी पिला पानी मिले ॥ कलजुग ॥ ७ ॥
 करले जो करना है अब यह दम तो कोई आन है ।
 एहसान में एहसान है जुकसान में जुकसान है ॥
 तुहमत मे यहां तुहमत मिले तूफान में तूफान है ।
 शैतान कूं शैतान है रहमान कूं रहमान है ॥ कलजुग ॥ ८ ॥
 यहां ज़हर दे तो ज़हरले शकर मे शकर देखले ।
 नेकों को नेकी का मजा मूंजी को टकर देखले ॥
 मोती दिये मोती मिले पत्थर में पत्थर पेखले ।
 गर तुझको यह बाँवर नहीं तो तूभी करके देखले ॥ कलजुग ॥ ९ ॥
 जो हारमे दे और को सो वह भी हारा जायगा ।
 खोवे सहारा और का उसका सहारा जायगा ॥
 यहां आज जिसके हाथ से कोई मर बिचारा जायगा ।
 गाफिल न हो इस बात पर कल वो भी मारा जायगा ॥ कलजुग ॥ १० ॥
 गफलत कि यह जागे नहीं यहां साँहिबे इंदराक रह ।
 दिल शाद रख दिल शाद रह गमनाक रख गमनाक रह ॥
 हर हाल में तू भी नज़ीर अब हर कदम की खाक रह ।
 यह बेबाक रह ॥ कलजुग ॥ ११ ॥

देश विदेश १० ।

4 11

11

१। यज्ञिन ।

॥ १३ चाह ॥

गर है तू लफ्फी बनजारा और खेप भी तेरी भारी है ।
 अथ गाफिन तुझसे भी बढ़ता एक और बढ़ा योपारी है ॥
 क्या शकर मिथी कद गिरी क्या सोंभर मीठा खारी है ।
 क्या दाख मुनक्का सौंठ मिरच क्या केसर लोंग सुपारी है ॥ सय ॥ २ ॥
 तू येधिया लावे बैल भरे जो पूरब पच्छिम जावेगा ।
 या सूद बढ़ाकर लावेगा या घाटा गढ़ा पावेगा ॥
 घटमार अजल का रस्ते में जर भाला मार निरावेगा ।
 धन दौलत नाती पोते क्या इक कुनरा पास न आवेगा ॥ सय ॥ ३ ॥
 हर मजिल में अर साध तेरे यह जितना डेरा डाडा है ।
 जर दाम दिरमका भाडा है य इक सिपर और खाडा है ॥
 जब नायक तनका निकल गया जो मुल्कों मुल्कों हाडा है ।
 फिर टाडा है न भाडा है न हलवा है न माडा है ॥ सय ॥ ४ ॥
 जर चलते चलते रस्ते में यह गोन तरी दल जावेगी ।
 एक येधिया तेरी मट्टी पर फिर चरने घास न पावेगी ॥
 यह खेप जो तूने लारी है सय हिस्सों में बट जावेगी ।
 धी पूत जेयाई बेडा क्या बनजार्न पास न आवेगी ॥ सय ॥ ५ ॥
 क्यों नाहक दोष उठाता है इन गोनो भारी भारी है ।
 जर काल लुटेरा आन पड़ा फिर दूने है योपारी के ॥
 क्या साज जड़ाऊ जर जेवर क्या गोटे धान किनारी के ।
 क्या घोड़े जीन सुनहरी के क्या हाथी लाल अग्यारी के ॥ सय ॥ ६ ॥
 जो खेप भरे तू जाता है यह खेप मिया मत जान मयनी ।
 अर कोई घड़ी पल सायत में यह खेप बदन की है खपनी ॥
 क्या धाल फटोरे चादी के क्या पीतल के दकना दकनी ।
 क्या बरतन सोने रूप के क्या मट्टी की हडिया चपनी ॥ सय ॥ ७ ॥
 मगरूर न हो तलवारों पर मत भूल भरोसे दालों के ।
 सय पत्तातोड़ के भागेंगे मुह देख अजल के भालों के ॥
 क्या डिब्बे हीरे मोती के क्या डेर पजाने मालों के ।
 क्या धुमचे तास मुशजर के क्या तख्ते साल दुसालों के ॥ सय ॥ ८ ॥
 कुछ काम न आवेंगे तेरे यह लाल जमुर्द सीमो जर ।
 सय पूजी बाट में बिपरेगी जर आन बनेगी जी ऊपर ॥
 क्या मशनद तकिये मुल्क मका क्या चौकी कुर्सी तख्त छतर ।
 क्या माल खजाने मुल्क मका क्या दौलत इशमत् फौजे लइकर ॥ सय ॥ ९ ॥

यह धूम धड़ाका साथ लिये क्यों फिरता है जंगल जंगल ।
 इक भुनगा पास न आवेगा मोकूफ हुआ जब अन्न रु जल ॥
 घर बार अटारी चौवारे क्या खाशा तनसुख ओर मल मल ।
 - क्या चिलमन तकिये रेशम के क्या लाल पलंग क्या रंगमहल ॥ सब १० ॥
 क्यों पुख्त मकां बनवाता है है खंभ तेरे तनका पोला ।
 तू उंची गढ़ी उठाता है यहां घोर गढ़े ने मुंह खोला ॥
 क्या रेवनी खंद करंद बड़ा क्या कोट कंगूरा अनमोला ।
 क्या बुर्ज रेहकला तोप किला क्या शीशा दारू और गोला ॥ सब ११ ॥
 जब काल फिराकर चावुक को यह बैल वदन का हाकेगा ।
 कोइ नाज समेटेगा तेरा कोई गौन सिये और टांकेगा ॥
 हो ढेर अकेला जंगल में तू खाक लहद की फांकेगा ।
 उस जंगल में जब आह नजीर एक भुनगा आन न झांकेगा ॥ सब १२ ॥

धोकेकी टट्टी ।

यह पैठ अजब है दुनिया की और क्या क्या जिन्स इकट्टी है ।
 यहां माल किसी का मीठा है और चीज किसी की खट्टी है ॥
 कुछ पकता है कुछ भुनता है पकवान मिठाई पट्टी है ।
 जब देखा खूब तो आखिर को न चूल्हा भाड़ न भट्टी है ॥
 गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है ।
 हम देख चुके इस दुनिया को सब धोखे कीसी टट्टी है ॥ १ ॥
 कोइ ताज खरीदे हंस हंस कर कोइ रस्त खड़ा बनवाता है ।
 कोइ कपड़े रंगे पहिने है कोइ गुदड़ी ओढ़े जाता है ॥
 कोइ भाई वाप चचा नाना कोइ नाती पूत कहाता है ।
 जब देखा खूब तो आखिर को न रिश्ता है न नाता है ॥ गुल ॥ २ ॥
 कोइ सेठ मद्दाजन लक्खपती बज्जाज कोई पन्सारी है ।
 यहां बोझ किसी का हल्का है और खेप किसी की भारी है ॥
 क्या जाने कौन खरीदे है और किसने जिन्स उतारी है ।
 जब देखा खूब तो आखिर को दलाल न को बोपारी है ॥ गुल ॥ ३ ॥
 कोइ फूल के बैठे मशनद पर कोइ रोवे अपनी दौलत खो ।
 कोइ बोले अपना मुझसे लो और मेरा है सो मुझको दो ॥
 कोइ लड़ता है कोइ मरता है कोइ झगड़े हक और नाहक को ।
 जब देखा खूब तो आखिर को कुछ लेना एक न देना दो ॥ गुल ॥ ४ ॥

रंगमाल नज्मी आमिल है और फाँजिल मुहल्ला खाना है ।
 कोइ आमिल कामिल दाना है कोइ मस्त सिद्दी दीवाना है ॥
 ताबीज फँतीला फाल फिसूँ और जादू मंतर लाना है ।
 जय देखा रूख तो आखिर को सब हील मकर बहाना है ॥ गुल ॥ ५ ॥
 कोइ लौटे कूचे गलियों में तैयार किसी का घोरा है ।
 कोइ बाग कुआँ बनवाता है और घेर किसी ने घेरा है ॥
 नित कजिये झगड़े रहे हैं यह मेरा है यह तेरा है ।
 जय देखा रूख तो आखिर को न मेरा है न तेरा है ॥ गुल ॥ ६ ॥
 कोइ ठोपी दोप बनाता है कोइ बाँध फिर अमोमा है ।
 कोइ साफ़ बरहना फिरता है न पगड़ी है न पजामा है ॥
 कमखाय गजी और गाढ़े का नित कजिया और हंगोमा है ।
 जय देखा रूख तो आखिर को न पगड़ी है न जामा है ॥ गुल ॥ ७ ॥
 कोइ बाल बढ़ाये फिरता है कोइ सर को घोट मुढ़ाता है ।
 कोइ कपड़े रंगे पहिर्न है कोइ नग मुनगा आता है ॥
 कोइ पूजा कथा पढ़ाने है कोइ छापा सिलक लगाता है ।
 जय देखा रूख तो आखिर को सब छोड़ अकेला जाता है ॥ गुल ॥ ८ ॥
 कोइ रोता है कोइ हँसता है कोइ नाचे है कोइ गाता है ।
 कोइ छीने झपटे ले भाग कोइ घूस का डर दिखलाता है ॥
 कोइ माल इकट्ठा करता है कोइ कुजी कुस्फ लगाता है ।
 जय देखा रूख तो आखिर को सब झगडा रहा जाता है ॥ गुल ॥ ९ ॥
 कोइ घेबे भग शराय अफियून कहीं दूध दही की केरी है ।
 कोइ पल्ला सर पर लाता है कोइ लावे घेल मुकरी है ॥
 कोइ झगड़े अपनी जागाह पर यह मेरी है यह तेरी है ।
 जय देखा रूख तो आखिर कोन तेरी है न मेरी है ॥ गुल ॥ १० ॥
 कहिं पछी टेकी धूनी है कहिं घास कडव की पूली है ।
 कहिं चलनी छाज पिटारी है कहिं चूल्हा चक्की चूल्ही है ॥
 तरकारी बैंगन साग हरा गुड़गाडा गाजर भुली है ।
 जय देखा रूख तो आखिर को सब विकरी देखत भूली है ॥ गुल ॥ ११ ॥
 कहिं बान अँटेरन टाट गजी कहिं दमरख चमरख तकला है ।
 कहिं रोक रुपये का खुरदा कहिं काढी पैसा धेला है ॥
 कहिं छटना छाज पिटारी है कहिं विकता खाट खटोला है ।
 जय देखा रूख तो आखिर को न पीदी खाट खटोला है ॥ गुल ॥ १२ ॥

कोइ शिकरा बाज उड़ाता है कोइ हाथ में रखै तुतली है ।
 शहवाज कोई ले चैठा है और दौड़ किसीने दुतली है ॥
 है तार किसी के हाथों में और नाचत फिरती पुतली है ।
 जब देखा खूब तो आखिर को न रेशम सूत न सुतली है ॥ गुल ॥ १३ ॥
 अब किसका रंग बुरा कहिये और किसका रूप भला कहिये ।
 इक दम की पैठें लगी है यह अम्बोह मजा चरचा कहिये ॥
 यह सैर तमाशा देख नजीर अब जा कहिये बेजा कहिये ।
 कुछ बात नहीं बनाने की चुपचाप भला है क्या कहिये ॥ गुल ॥ १४ ॥

बुढ़ा ।

बटमार अजल का आ पहुँचा टुक इसको देख डरो बाबा ।
 अब अइक बहाओ आँखों से और आहें शैर्द भरो बाबा ॥
 दिल हाथ उठाकर जीनेसे बेवस मन मार मरो बाबा ।
 जब बाप की खातिर रोतेथे अब अपनी खातिर रो बाबा ॥
 तन सूखा कुवड़ी पीठ हुई घोड़े पर जीन धरो बाबा ।
 अब मौत नकारा आ वागा चलने का फिकर करो बाबा ॥ १ ॥
 अब जीने को तुम रखसत दो और मरने को महमान करो ।
 खैरात करो अहसान करो या पुण्य करो या दान करो ॥
 या पूरी लड्डू बँटवाओ या खासा हलवा नान करो ।
 कुछ लुप्त नहीं अब जीनेनें अब चलने का सामान करो ॥ तन ॥ २ ॥
 दिल काटो अपने जीनेसे अब और गले को मत काटो ।
 अब चाट फर्ना की टुक चक्खो और खून किसीका मत चाटो ।
 धुन छोड़ो हिस्से बखरे की तुम भाजी अपनी मत बाँटो ॥
 नाकंद बछेरे कूद चुके अब और दुलची मत छाँटो ॥ तन ॥ ३ ॥
 यह अस्प बहुत कूदा उछला अब कोड़ा मारो जेरकरो ।
 जब माल इकट्ठा करते थे अब तनका अपने ढेर करो ॥
 गढ़ टूटा लश्कर भाग चुका अब म्यान में तुम शमसेर करो ।
 तुम साफ लड़ाई हारचुके अब भागन में मत देर करो ॥ तन ॥ ४ ॥
 सर कांपा चाँदी वाल हुए मुंह पीला पलके पलट गई ।
 कद टेढ़ी कान हुए बहरे अरु आँखें भी चुंधियाय गई ॥
 सुख नींद गई और भूख घटी दिल सुस्त हुआ आवाज महीं ।
 जो होनी थी सो हो गुजरी अब चलने में कुछ देर नहीं ॥ तन ॥ ५ ॥

इस पाँच घसिट कर चलने से मत रस्ते को हिरान करो ।
 और पोपले मुह से रोटी को मत मल मल कर हलकान करो ॥
 अब आप हुए तुम पानी से मत पानी का नुकसान करो ।
 कुछ लाभ नहीं इस जीनेमें अब मरने से पहिचान करो ॥ तन ॥ ६ ॥
 गर अच्छी करनी नेक अमल तुम दुनिया से ले जाओगे ।
 तो घर भी अच्छा पाओगे और सुख से बैठे खाओगे ॥
 और ऐसी दौलत छोड़ के तुम जो खाली हाथों जाओगे ।
 कुछ बात नहीं बनाने की घबराओगे पछिताओगे ॥ तन ॥ ७ ॥
 घर बार रुपये पैसे में मत दिल को तुम खुशान्द करो ।
 या घोर बनाओ जगल में या जमुना पर आनन्द करो ॥
 मौत जो आन लताड़ेगी आखिर मकर करो या फन्द करो ।
 बस बहुत तमाशा देख चुके अब आँखें अपनी बध करो ॥ तन ॥ ८ ॥
 बोपार तो यहा का बहुत किया अब यहा का भी कुछ सौदा लो ।
 जो खेप उधर को चढ़ती हो उस खेप को यहा से लदवालो ॥
 उस राह में जो कुछ खाते हो उस खाने को भी मगवालो ।
 सय साथी पहुँचे मजिल पर अब तुमभी अपना रस्ता लो ॥ तन ॥ ९ ॥
 दो चार घडी या दो दिन में अब तन से जान निकलनी है ।
 यह हड्डी पसली जितनी है या गलनी है या जलनी है ॥
 है रात जो बाफी थोड़ी सी फोड़ दम को यह भी ढलनी है ।
 उठ बाधो कमर सत्रे से तुम को भी मजिल चलनी है ॥ तन ॥ १० ॥
 यह दौलत काम न आवेगी मत इसको तुम जजीर करो ।
 यह आक बदन की पारा है मन मार इसे अस्सीर करो ॥
 जो पार उतारे दरिया से उन यात्रों को गुरु पीर करो ।
 अब नाव किनारे आ पहुँची अब चढ़ने की तदबीर करो ॥ तन ॥ ११ ॥
 कुछ देर नहीं अब चलने में या आज चलो या काल चलो ।
 जो कपड़ लसे लेने हैं सो जल्दी बाँध सँभल निकलो ॥
 अब शाम नहीं अब सुनह हुई चू मोम पिघलकर दल निकलो ।
 क्यों नाहक धूप चढ़ाते हो बस ठंडे हि ठंडे चल निकलो ॥ तन ॥ १२ ॥
 यह ऊठ गिरावेगा यारो सन्दूक जनाजा अँधी है ।
 जब इसपे हो असवार चले फिर घोड़ा है न हस्ती है ॥
 किस नींद पड़े तुम सोते हो यह बोझ तुम्हारा भारी है ।
 कुछ देर नहीं अब आह नजीर तैय्यार खड़ी असवारी है ॥ तन ॥ १३ ॥

खुदमस्ती ।

कोइ हाल मस्त कोइ माल मस्त कोइ तूती मैना सूवे में ।
 कोइ खान मस्त पहिरान मस्त कोइ राग रागिणी धूवे में ॥
 कोइ अमल मस्त कोइ रमल मस्त कोइ शतरंज चौपड़ जूवे में ।
 एक खुद मस्ती विन और मस्त सब पड़े अविद्या कूवे में ॥ १ ॥
 कोइ अकल मस्त कोइ शकल मस्त कोइ चंचलताई हाँसी में ।
 कोइ वेद मस्त कचेव मस्त कोइ मक्के में कोइ कासी में ॥
 कोइ ग्राम मस्त कोइ धाम मस्त कोइ सेवक में कोइ दासी में ।
 एक खुद मस्ती विन और मस्त सब पड़े अविद्या फासी में ॥ २ ॥
 कोइ पाठ मस्त कोइ ठाठ मस्त कोइ भैरव में कोइ काली में ।
 कोइ ग्रन्थ मस्त कोइ पन्थ मस्त कोइ श्वेत पीत रंग लाली में ॥
 कोइ काम मस्त कोइ खाम मस्त कोइ पूरण में कोइ खाली में ।
 एक खुद मस्ती विन और मस्त सब बंधे अविद्या जाली में ॥ ३ ॥
 कोइ हाट मस्त कोइ घाट मस्त कोइ वन परवत औजारा में ।
 कोइ जाति मस्त कोइ पाँति मस्त कोइ तात मात सुत दारा में ॥
 कोइ कर्म मस्त कोइ धर्म मस्त कोइ मस्जिद ठाकुरद्वारा में ।
 एक खुद मस्ती विन और मस्त सब वहे अविद्या धारा में ॥ ४ ॥
 कोइ राज मस्त गज वाज मस्त कोइ छप्पर में कोइ फूले में ।
 कोइ जुद्ध मस्त कोइ क्रुद्ध मस्त कोइ खड़ग कुठार वसूले में ॥
 कोइ प्रेम मस्त कोइ नेम मस्त कोइ छींके में कोइ झूले में ।
 एक खुद मस्ती विन और मस्त सब जले अविद्या चूल्हे में ॥ ५ ॥
 कोइ शाक मस्त कोइ खाक मस्त कोइ खासे में कोइ मलमल में ।
 कोइ जोग मस्त कोइ भोग मस्त कोइ स्थिति में कोइ चंचल में ॥
 कोइ रिद्धि मस्त कोइ सिद्धि मस्त कोइ लेन देन की गलगल में ।
 एक खुद मस्ती विन और मस्त सब फँसे अविद्या दलदल में ॥ ६ ॥
 कोइ ऊर्ध्व मस्त कोइ अधः मस्त कोइ वाहिर में कोइ अन्तर में ।
 कोइ देश मस्त विदेश मस्त कोइ औषधि में कोइ मंतर में ॥
 कोइ आप मस्त कोइ ताप मस्त कोइ नाटक चेटक तंतर में ।
 एक खुद मस्ती विन और मस्त सब भ्रमे अविद्या जंतर में ॥ ७ ॥
 कोइ सुष्ट मस्त कोइ तुष्ट मस्त कोइ दीरघ में कोइ छोटे में ।
 कोइ गुफा मस्त कोइ सुफा मस्त कोइ तूँवे में कोइ लोटे में ॥
 कोइ ज्ञान मस्त कोइ ध्यान मस्त कोइ असली में कोइ खोटे में ।
 एक खुद मस्ती विन और मस्त सब रहे अविद्या टोटे में ॥ ८ ॥

यह लौकिक मस्त कहीं रीं घरणू है माया के दंगल में ।
 कौन करे तिनकी गिनती सब जगदू है दृढ़ सगल में ॥
 छिन में कष्ट तुष्ट इक छिन में स्थिति सदा अमगल में ।
 एक खुद मस्ती बिन ओर मस्त सब भुले अविद्या जगल में ॥ ९ ॥

॥ धाहरी ॥

विविधपुष्पगुच्छः ।

श्लोक ।

असितगिरिसम स्यात्फञ्जल सिंधुपात्रे
 सुरतरुपरशाखा लेपनी पत्रमुर्वी ।
 लिखति यदि गृहीत्या शारदा सधकाल
 तदपि तव गुणानामीश पार न याति ॥ १ ॥

प्रहादनादपरशरपुडरीकव्यासावरीपशुनशौनरुभीष्मकाद्या ।
 रुफमागदाजुनवसिष्ठरिभीषणाद्या पतानह परमभागवताभ्रमामि ॥ २ ॥
 यावन्निरजनमज पुष्प जरत भवितयामि सकले जगति स्फुरतम् ।
 तावद्भलात्स्फुरति इत इदतरे मे गोपस्य कोपि शिशुरजनपुजमजु ॥ ३ ॥

व्यानाभ्यासयशीष्टेन मनसा यन्निर्गुण निष्प्रिय
 ज्योति किंचन योगिनो यदि पर पश्यति पश्यतु ते ।
 अस्माक तु तदेव लोचनचमत्काराय भूयाच्चिर
 कालिंदीपुलिनेषु यत्किमपि तन्नील महो-(तेजः) धायति ॥ ४ ॥

अद्वैतवीधीपधिकैरुपास्या स्नानदसिंहासनलम्भदीक्षा ।
 शठेन वेतापि यय इठेन दासीकृता गोपवधूविदेन ॥ ५ ॥

शास्त्र भूरि निजस्वरूपमतये स्वापधनार्थं यपु
 स्वध्यानाय मनश्च शुद्धिमनघाल च च तीर्थादिकम् ।

तत्त्वान्यपुपदेष्टुमुत्तमगुरुन् दत्त्वानुगृह्णाति न
 संसारे तदपि भ्रमेमाह स किं कुर्यात् सर्वेश्वर ॥ ६ ॥

रे कवच केतु कदर्ययसि किं कोददटकारितै
 रे रे कोटिल कोमलै कलरवै किं त्व वृथा जल्पसि ।

मुग्धे जिग्धविद्ने ग्धमुग्धमधुरैर्लोलै कटाक्षैरल
 चेतश्चुरितचन्द्रैश्च चरणध्यानामृत वतते ॥ ७ ॥

का चिंता मम जीवने यदि हरिविभ्रमरो गीयते
 नो चेदभकजीवनार्थं जननीस्तन्य कथं नि सरेत् ।

इत्यालोक्य मुहुर्मुहुर्दुपते लक्ष्मीपते केचल
 तत्पादाजुजसेचनेन सततं कालो मया नीयते ॥ ८ ॥

नाहं विप्रो नच नरपतिर्नापि वैश्यो न शूद्रो
 नो वा वर्णो न च गृहपतिर्नो वनस्थो यतिर्वा ।
 किन्तु प्रोद्यन्निखिलपरमानन्दपूर्णामृताब्धे-
 र्लक्ष्मीभर्तुः पदकमलयोर्दासदासानुदासः ॥ ९ ॥
 आनीता नटवन्मया तव पुरः श्रीकृष्ण या भूमिका
 व्योमाकाशखखाम्बराब्धिवसवस्त्वत्प्रीतयेऽद्यावधि ।
 प्रीतस्त्वं यदि चेन्निरीक्ष्य भगवन्मत्प्रार्थितं देहि मे
 नो चेद्ब्रूहि कदापि मानय तनूस्त्वेतादृशीभूमिकाः ॥ १० ॥
 अहल्या पापाणः प्रकृतिपशुरासीत् कपिचमू-
 र्गुहोऽभूच्चाण्डालस्तदपि गमितास्ते निजपदम् ।
 अहं चित्तेनाश्मा पशुरपि तवार्चाद्यकरणात्
 क्रियाभिश्चाण्डालो रघुवर न मामुद्धरसि किम् ॥ ११ ॥

यद्यात्रया व्यापकता हता ते भिदैकता वाक्परता च नुत्या ।
 ध्यानेन बुद्धेः परता परेश जात्याऽजता क्षंतुमिदार्हसि त्वम् ॥ १२ ॥
 आत्मा नदी भारतपुण्यतीर्था सत्यावहा शीलतटा दयोर्मिः ।
 तन्नाभिपेकं कुरु पांडुपुत्र न वारिणा शुद्ध्यति चान्तरात्मा ॥ १३ ॥
 भूमौ जले नभसि देवनरासुरेषु भूतेषु देवि सकलेषु चराचरेषु ।
 पश्यन्ति शुद्धमनसा खलु रामरूपं रामस्य ते क्षितितले समुपासकाश्च ॥ १४ ॥

ये पापं शमयन्ति संगतिभृतां ये दानशृंगारिणो
 येषां चित्तमतीव निर्मलतरं येषां न मानवतम् ।
 ये सर्वान्मुखयन्ति हि प्रतिदिनं ते साधवो दुर्लभा
 गंगावद्भ्रजगण्डवद् गगनवद् गांगेयवज्ज्येयवत् ॥ १५ ॥
 अनंतशास्त्रं बहुला च विद्या अल्पश्च कालो बहुविघ्नता च ।
 यत्सारभूतं तदुपासनीयं हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात् ॥ १६ ॥
 अर्च्ये विष्णौ शिलाधीर्गुरुषु नरमतिर्वैष्णवे जातिबुद्धि-
 विष्णोर्वा वैष्णवानां कलिमलमथने पादतीर्थेऽम्बुबुद्धिः ।
 सिद्धे तन्नाम्नि मंत्रे कलिकलुपहरे शब्दसामान्यबुद्धि-
 श्रीशे सर्वेश्वरेशे तदितरसमधीर्यस्य वा नारकी सः ॥ १७ ॥

नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं प्लवं सुकल्पं गुरुकर्णधारम् ।
 मयानुकूलेन नभस्वत्तेरितं पुमान् भवार्ब्धं न तरेत्स आत्महा ॥ १८ ॥
 जातोऽहं जनको ममैव जननी क्षेत्रं कलत्रं कुलं
 पुत्रो मित्रमरातयो वसु वलं विद्याः सुहृद्वांधवाः ॥
 चित्तस्पन्दितकल्पनामनुभवन्विद्वानविद्यामयीं
 निद्रामेत्य विधूर्णितो बहुविधान् स्वप्नानिमान्पश्यति ॥ १९ ॥

यस्य तु गच्छरफाननकोटरे तपतु चोन्नतपोद्गतरपि ।

पठतु शास्त्रकवचमहर्निश नहि विचारमृते सुखमेधते ॥ २० ॥

तपन्तु तापैनिपतन्तु पर्यताददन्तु तीर्थानि पठन्तु चागमान् ।

यजन्तु यागैर्विदन्तु वादैर्हरिं विना नैव मूर्तिं तरन्ति ॥ २१ ॥

घनानि भूमौ पशवश्च योष्टे भाया गृहद्वारि जन इमराने ।

देहश्चिताया परलोकमार्गे कमानुगो गच्छति जीव एक ॥ २२ ॥

त्यक्त्याशुक जीणमथापर नरो गृह्णाति नव्य च यथोरगस्त्यत्रम् ।

शय्य जलीका च यथा तथा द्यौः देही शरीर किमिदं शोचसि ॥ २३ ॥

यश्चितित तदिह दूरतर प्रयाति यद्येतसा न गणित तदिहाभ्युपेति ।

प्रातर्भयामि यस्तु भाधिपचञ्चर्ता सोह मजामि विपिने जटिलस्तपसी ॥

न शास्त्रतुल्य नयन न सत्यसम तपस्तोपसम न लाभम् ।

विरागस्तुल्य न सुख च रागसम न दुःख कथयो यदन्ति ॥ २५ ॥

मृत्युनृत्यति मूर्ध्नि शम्भुदुरगी घोरा जराकपिणी

स्थामेवा प्रसते परिग्रहमयैर्गृधैर्जगद्गस्यते ।

धूत्या बोधजलैर्योधयद्बुल ततोभजन्य रज

सतोपा मृतसागरामसि मना इ मग्न सुख जीवति ॥ २६ ॥

न जातु कामाद्य भयाद्य लोभाद्यर्मे त्यजेज्जीवितस्यापि हेतो ।

धर्मो नित्य सुखदुःखे त्वनित्ये जीयो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्य ॥ २७ ॥

न जनको जननी न च सोदरोऽपति यल न बुल द्रविण तथा ।

सकृतधममृतेहममुत्र धै सततमेव तमेव ततश्चरेत् ॥ २८ ॥

हसस्तर्धेदुश्च नभोऽधनिजल वद्विध धायुध दिन निशा यम ।

पश्यति यद्यत्कुदते जनो हि ते जानाति मूढस्तु न कोप्ययेष्यते ॥ २९ ॥

सपूर्ण जगदेष नन्दनयन सर्वेऽपि करपट्टमा

गाग धारि समस्तगारिनिचहा पुण्या समस्ता क्रिया ।

वाच प्राकृतसंस्कृता श्रुतिशिरो वाराणसी मेदिनी

सर्वावस्थितिरस्य वस्तुविषया दृष्टे पश्यस्यसि ॥ ३० ॥

कथा इमास्ते कथिता महीयसा विताय लोकेषु यशः परेषुपाम् ।

विद्वानवैराग्यविवक्षया विभो वचो विभूतिर्न च पारमाथ्यम् ॥ ३१ ॥

स्त्राव्यापग रुमिडुजन्तुमह रुतान्त वैश्यानरानलमथामयदूतबाधम् ।

चिन्तार्कतापमथ काममुखासिपत्र दृष्ट्वापि वेदनरक न विरज्यतेऽह ॥ ३२ ॥

मेदाद्रक्षतजाकुल रुमिगणैव्यग्र शिरासन्तत

लिप्त मासचयैश्चितास्थिनिबह चर्मावृत सवत ॥

दीग्धेन परिप्लुत भवमुखासीर्णेन रोगालय

सज्जन्ते मलिन कलेवरमिव ये वैश्यते रासमा ॥ ३३ ॥

निःस्वोप्येकशतं शती दशशतं सोपीह लक्षशतं
लक्षेशः क्षितिराजतां क्षितिपतिश्चक्रेशतां वाञ्छति ।
चक्रेशः सुरराजतां सुरपतिर्ब्रह्मास्पदं वाञ्छति
ब्रह्मा विष्णुपदं हरिः शिवपदं तृष्णावर्धिं को गतः ॥ ३४ ॥
गर्जसि मेघ न यच्छसि तोयं चातकपक्षी व्याकुलितोऽहम् ।
दैवादिह यदि दक्षिणवातः क त्वं काहं क च जलपातः ॥ ३५ ॥
सर्वोद्वेगकरं मृगादनममुं संत्यज्य हा धिक् त्वया
लोकस्यानपकारिणं गिरिनीदीतीराटवीनिर्वृतम् ।
अश्रन्तं तृणमेणशाचमदयं व्याध प्रतामुं वृथा
देवो दुर्वलघातकोऽयमिति सा गाथा यथार्थीकृता ॥ ३६ ॥
कान्तं वक्ति कपोतिकाऽऽकुलतया नाथान्तकालोऽधुना
व्याधोऽधो धृतचापसज्जितशरः श्येनः परिभ्राम्यति ।
इत्थं सत्यहिना स दष्ट इषुणा श्येनोपि तेनाहत-
स्तूर्णं तौ तु यमालयं प्रति गतौ दैवी विचित्रा गतिः ॥ ३७ ॥
क्लमो न वाचां शिरसो न शूलं न चित्ततापो न तनोर्विमर्दः ।
न चापि हिंसादिरनर्थयोगः श्लाघ्या परं क्रोधजयेहमेका ॥ ३८ ॥
क्रुद्धे स्मेरमुखोऽवधीरणमथाविष्टे प्रसादक्रमोऽ-
व्याक्रोशे कुशलोक्तिरात्मदुरितोच्छेदोत्सवस्ताडने ।
धिगजंतोरजितात्मनोऽस्य महती दैवादुपेता विपत्
दुर्वारेति दयारसार्द्रमनसः क्रोधस्य क्रुत्रोदयः ॥ ३९ ॥
ददतु ददतु गालीर्गालिमन्तो भवंतः
अहमपि तदभावे गालिदानेऽसमर्थः ।
जगति विदितमेतद्दीयते दीयमानं
नहि शशकविपाणं कोऽपि कस्यै ददाति ॥ ४० ॥
रे चित्तकाक फलपुष्पविकीर्णमात्माऽऽरामं विघर्षमथ विह्वलगालयं च
शांत्यावहं निकटगं शठ संविहाय संसारभोगशमले वद किं रतोऽसि ॥ ४१ ॥
एतस्माच्च किमिन्द्रजालमपरं यद्गर्भवासस्थितं
रेतश्चेतति हस्तमस्तकपदप्रोद्धूतनानांकुरम् ।
पर्यायेण शिशुत्वयौवनजरावेषैरनेकैर्वृतं
पश्यत्यत्ति शृणोति जिघ्रति तथा गच्छत्यथागच्छति ॥ ४२ ॥
शूद्रे श्रुतिर्न सिकतासु यथा च तैलं वृक्षो न खे करतले न च रोम जातु ।
वह्नौ न शैत्यमुडुपेपि यथोष्णता वै मुक्तिर्न रागिणि तथैव बुधा वदन्ति ४३
भिक्षाशनं तदपि नीरसमेकवारं शय्या च भूः परिजनो निजदेहमात्रम् ।
वस्त्रं च जीर्णशतखंडमलाढ्यकंथा हाहा तथापि विषया न परित्यजति ४४

जिह्वा रसाय नयन सुविलोकनाय श्रोत्र तथा कलरवधवणाप चम ।
स्पर्शाय कपति सुगधदृष्टे तु नासा प्रत्ययिनोऽप्यगमिव प्रलुनत्यविब्रम्
कुरगमातगपतभृगमीना इता पचभिरेव पच ।

एक प्रमादी स कथ न हन्यते यः सेवते पचभिरेव पच ॥ ४६ ॥

घण्टा कुप्जीभूत गतिरपि तथा यष्टिशरणा
विशीणा वतालि धवणविकल धोत्रयुगलम् ।

शिर शुल चक्षुस्तिमिरपटलेखदृढमहो

मनो मे निलज्ज तदपि विषयेभ्यः स्पृहयति ॥ ४७ ॥

पत्र यथा चलदलस्य च धनुताभा

केत्वशुक च ललनाक्षिशिखानलस्य ।

शास्त्रामृगश्च कमलस्य शिरस्तथैव

त्रिच समेति तरल स्थिरता न जातु ॥ ४८ ॥

अजानन्माहात्म्य पततु शलभो दीपद्वहे

स मीनोऽप्यघानाद्वडिशयुतमक्षातु पिशितम् ।

विजानन्तोप्येते घयमिह विपज्जालजटिलान्

न मुञ्चाम कामानदह गहनो मोहमहिमा ॥ ४९ ॥

दृश फाणः सञ्च धवणरहित पुच्छविम्लो

घणी पूषक्रिन्ः दृमिपुलशतेरावृततनु ।

क्षुधाक्षामो जीण पिठरककपालापितगल

शुनीमन्वेति श्या हतमपि निहन्त्येव मदन ॥ ५० ॥

गान सकुचित गतिविगलिता भ्रष्टा च वतावलि

दृष्टिर्नश्यति वर्धते यधिरता यत्र च लाढायते ।

घाक्व नाद्रियते च बाधयजनो भार्यो न शुद्धयते

हा कष्ट पुरुषस्य जीणवयस पुनोऽप्यमित्रायते ॥ ५१ ॥

सगाहपुत्र्यमगमज्जलधिश्च धातंराष्ट्रो हतश्च तपसः स्वलितो मृगीज ।

लकाधिपस्य शकुनेश्च तथामनायास्तसात्यजेदविरत हि बुध कुसगम् ॥

नि सगता मुक्तिपद यतीना सगादशेषा प्रमचति दोषा ।

आरूढयोगोपि निपात्यतेऽधः सगेन योगी किमुतात्पसिद्धि ॥ ५३ ॥

स्वार्थ घनानि धनिज्ञात् प्रतिगृह्यतो य

हास्य भजेन् मलिनता किमिदं विचित्रम् ।

गृह्यन् परायमपि वारिनिधे पयोपि

मेघोयमेति सकलोऽपि च कालिमानम् ॥ ५४ ॥

समारम्भा भग्ना कति कति न धारस्तव पशो

पिपासोस्तुच्छेऽस्मिन् द्रविणमृगतृष्णाणवजले ।

तथापि प्रत्याशा विरमति न ते मूढ शतधा
विदीर्णं यच्चेतो नियतमशनिग्रावघटितम् ॥ ५५ ॥

फलं स्वेच्छालभ्यं प्रतिवनमखेदं क्षितिरुहां
पयः स्थाने स्थाने शिशिरमधुरं पुण्यसरिताम् ।

मृदुस्पर्शा शय्या सुललितलतापल्लवमयी
सहंते संतापं तदिह धनिनां द्वारि कृपणाः ॥ ५६ ॥

प्रथमतः पठनं कठिनं कृतं पुनरहो परदेशनिषेवणम् ।
वदति दीनमयं वचनं सदा कठिनता विधिना विदुषां कृता ॥ ५७ ॥

अर्द्धं दानववैरिणा गिरिजयाप्यर्धं शिवस्याहृतं
देवैर्यथं जगतीतले स्वरहराभावे समुन्मीलति ।

गंगा सागरमंवरं शशिकला नागाधिपः क्षमातलं
सर्वज्ञत्वमधीश्वरत्वमगमत् त्वां मां च भिक्षाटनम् ॥ ५८ ॥

जातः शूली कदनविषयात् भैक्षयोगात्कपाली
वस्त्राभावाद्गगनवसनः स्नेहरौक्ष्याज्जटावान् ।

युष्मत्सेवापरिचयवशादीश्वरत्वं मयाप्त-
मद्यापि त्वं मम नरपते ह्यर्धचंद्रं न दासि ॥ ५९ ॥

तावत्सर्वगुणालयः पटुमतिः साधुः सतां बल्लभः
शूरः सच्चरितः कलंकरहितो मानी कृतज्ञः कविः ।

यावन्निष्ठुरवज्रपातसदृशं देहीति नो भाषते
तस्माद्वाक्यमिदं मम शृणु सखे मा ब्रूहि दीनं वचः ॥ ६० ॥

रेरे चातक सावधानमनसा मित्र क्षणं श्रूयता-
मंभोदा बहवो वसन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः ।

केचिद्वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद्वृथा
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः ॥ ६१ ॥

हस्तौ दानविवर्जितौ श्रुतिपुटौ सारस्वतद्रोहिणौ
नेत्रे साधुविलोकनेन रहिते पादौ न तीर्थं गतौ ।

अन्यायार्जितवित्तपूर्णमुदरं गर्वेण तुंगं शिरो
रेरे जंबुक मुंच मुंच सहसा नीचस्य निधं वपुः ॥ ६२ ॥

लोभात्रयो निपतिता गहने स कूपे दुर्योधनश्च सबलोऽन्तकवेदम यातः ।
सद्यो वियन्ति सुगुणा गुणिनां यशश्च तस्मात्स्यजेन्नरकदं हि बुधस्तु लोभम्

संत्येते मम दन्तिनो मदजलप्रम्लानगंडस्थला
वातव्यायतपातिनश्च तुरगा भूयोपि लप्स्ये परात् ।

एतल्लब्धमिदं लभे पुनरिदं लब्धाधिकं ध्यायतां
चिन्ताजर्जरचेतसां वत नृणां का नाम शान्तेः कथा ॥ ६४ ॥

रात्रिगमिष्यति भविष्यति सुप्रभात

भास्वानुवेप्यति हसिष्यति एकज्जधी ।

इत्थ विचिंतयति कोपगते द्विरेफे

हा हन्त हन्त नलिनी गज उल्लहार ॥ ६५ ॥

शेषोऽशेषधराधरश्च गिरिशः सर्वातकश्चात्मभू

र्लाकोद्भूतिकरश्च कोणपरिपुल्लेलोफ्यसपालक ।

येऽन्ये काकभुङ्गुडलोमशमुखा योग्या स नो पुर्वते

गर्वं त्वल्पधनः क्षणायुरवशो मत्स्य करोतीत्यहो ॥ ६६ ॥

मूर्धेत्य सुखम भजस्य कुमते मूपस्य चाष्टो गुणा

निश्चितो बहुभोजकोऽतिमुपरो रात्रिदिव स्वप्रभाह् ।

कार्याकायविचारणाधरधिरो मानापमाने समः

प्रायेणामयवजितो हृदयपुमूर्ख सुख जीवति ॥ ६७ ॥

न सध्या सधत्ते नियमितनिमाज न कुस्ते

न धा मौज्जीयन्ध कलयति न या सुघ्नतविधिम् ।

न रोजा जानीते व्रतमपि हरेर्नघ कुस्ते

न फाशी मक्का वा शिव शिव न हिन्दुन ययन ॥ ६८ ॥

मूर्खस्य पच चिह्नानि गर्वा दुर्बचनी तथा ।

हठी चाम्रियवादी च परोक्त नैव मन्यते ॥ ६९ ॥

मूखस्य चाष्टचिह्नानि शीका टीका च मालिका ।

प्रतिष्ठा लम्बधोत्राणि हाजी हॉजी च योग्यता ॥ ७० ॥

सिंहो व्याकरणस्य कर्तुरहरत्प्राणाग्निपापानिने

मीमासावृत्तमुग्धमाय सहसा हस्ती मुनि जैमिनिम् ।

छन्दोज्ञाननिधि जघान भकरो बेलातटे पिंगल

ह्यक्षानावृतचेतसामतिरुपा कोऽथस्तिरश्चा गुणै ॥ ७१ ॥

बह्विस्तस्य जलायते जलनिधि कुल्यायते तत्क्षणान्

मेरु स्वरूपशिलायते मृगपति सद्य कुरगायते ।

व्यालो मात्स्यगुणायते विपरसः पीयूषवधायते

यस्यागोऽखिललोकवल्लभतम शील समुन्मीलति ॥ ७२ ॥

प्राणाघाताभिवृत्ति परधनहरणे सयम सत्यवाक्य

काले शक्त्या प्रदान युवतिजनकथामूकभाव परेषाम् ।

वृष्णाश्रोतोविभमो गुरुषु च विनयः सर्वभूतानुकपा

सामान्य सर्वशालेष्पनुपहतविधिः श्रेयसामेव पथाः ॥ ७३ ॥

सानद सदन सुतास्तु सुधिय काता प्रियालापिनी

इच्छापूर्तिधन सयोपिति रति स्वाशपरा सेवकाः ।

आतिथ्यं शिवपूजनं प्रतिदिनं मिष्टान्नपानं गृहे

साधोः संगमुपासते च सततं धन्यो गृहस्थाश्रमः ॥ ७४ ॥

सर्वौषधीनाममृता प्रधाना सर्वेषु सौख्येष्वशनं प्रधानम् ।

सर्वेन्द्रियाणां नयनं प्रधानं सर्वेषु गात्रेषु शिरः प्रधानम् ॥ ७५ ॥

किं वाससैवं न विचारणीयं वासः प्रधानं खलु योग्यतायाः ।

पीताम्बरं वीक्ष्य ददौ तनूजां दिगंबरं वीक्ष्य विपं समुद्रः ॥ ७६ ॥

नाभिपेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते मृगैः ।

विक्रमार्जितराज्यस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता ॥ ७७ ॥

धन्या द्विजमयी नौका विपरीता भवार्णवे ।

तरंत्यधोगताः सर्वे उपरिस्थाः पतंत्यधः ॥ ७८ ॥

चित्तं जीर्णैः पर्णैर्गृहमपि तथैश्वर्यविकलं

विशीर्णं चैलं चाशनमपि कदन्नं गतरसम् ।

कुरुपाज्ञा योषित् कटुवचनसंभाषणपरा

तथाप्यज्ञो लोकः क्षणमपि न हन्तोपरमते ॥ ७९ ॥

नैवात्र काव्यगुण एव तु चिन्तनीयो

ग्राह्यः परं गुणवता खलु सार एव ।

सिन्दूरचित्ररहिता भुवि रूपशून्या

पारं न किं नयति नौरिह गन्तुकामान् ॥ ८० ॥

सान्द्रानन्दपुरंदरादिविपद्मैरमन्दादरा-

दानम्रैर्मुकुटेन्द्रनीलमणिभिः सन्दर्शितेन्दीवरम् ।

स्वच्छन्दं मकरन्दसुन्दरगलन्मन्दाकिनीमेदुरं

श्रीगोविन्दपदारविन्दमशुभस्कन्दाय वन्दामहे ॥ ८१ ॥

मङ्गलं लेखकानां च पाठकानां च मङ्गलम् ।

मङ्गलं सर्वलोकानां भूयो भूयोऽस्तु मङ्गलम् ॥ ८२ ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभागभवेत् ॥ ८३ ॥

पृष्ठ	पङ्क्ति	मूल	संशुद्ध	पृष्ठ	पङ्क्ति	मूल	संशुद्ध
११३	२१	रुद्र	रुद्र	२०७	३२	रुद्र	रुद्र जग
११७	२३	सुरधर	सुरधर	२०८	२८	बीज	बीज
२०१	३	वि	वि	२१३	८	ज	ज
२०१	३	रुद्र	रुद्र	२१३	२१	साधन	साधना
२१०	१	रुद्र	रुद्र	२१५	१४	साह	से
२११	१	सो	सो	२१५	२६	काशीणी	काशीणी
२१७	१	सुरधर	सुरधर	२२३	१८	निरनै	निर्भय
२२७	१२	वि	वि	२४१	२०	नही	नहि
२२७	२८	जु	जु	२४५	३०	सुरधर	मरुधर
२३१	१२	जो	जो	२४२	३१	सुरधर	मरुधर
२३२	७	अनुसार	अनुसार	२४५	१६	सुरधर	मरुधर
२३५	५	साध	साध	२४५	१६	पभी	पभी
२३५	७	सुरधर	मरुधर	अकारण			
२३५	१६	सारंग	सारंग	अकारण			
२३५	२१	मे	मे	अकारण			
२३५	१	प	प	अकारण			

श्रीरामलेह धर्मप्रकाश ग्रंथका शुद्धिपत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	१	किना	किनासु	१११	२	वेरु	वेरु
३	१२	आपने	अपने	११२	११	हिंदु	हिंदु
१०	१२	अवनीरति	अपनीपत्नी	११०	१०	दशम	दशम
१३	१०	गौ	ऐसे	११०	१०	दशम	दशम
१५	१७	नहि	न	११५	२	कसौ	तन कसौ
१५	२०	तनमनधन	तन धन	११५	१३	की देखे	देखे
१६	२९	साधुधन	साधु	११५	१५	अ	अजपो
१९	१२	मुरधर	मरुधर	११२	२५	सुई	सुई
१९	१९	नय	तन	११३	६	आप	आप
२०	२२	मुरधर	मरुधर	११३	५	हे	होए
२१	३१	बरपाथो	बरपाथो	११३	८	बाहिरो	बाहिरी
२३	२५	सारंगी	सारंगी	११३	२०	रन	रना
२४	१	साधु	साधु	१५५	चोरुडा	अर्थर तोहेकी काटेदार	
२९	हेडिंग	परचीसार	परिचय		लगाम		
३१	२०	मुरधरा	मरुधरा	१५६	साहि	अर्थर परकना	
३३	१८	मुरधर	मरुधर	१५८	४	जल नान	जलकरनान
३३	२८	संन	सद	१५८	१३	तुमारि	तुम्हारि
३३	३२	निरधारा	निर्धाराके	१६१	२२	रामदास	रामादास
३५	१६	उत्तम	उत्तम	१६८	१	भाय	भौंय
३६	६	सकेवित्तार	सक वित्तार	१६८	४	धिरकार	धिकार
४१-६३	हेडिंग	परचीसार	परिचय	१७०	१६	पिलाया	मिलाया
६३-६९	हेडिंग	परचै	चेतावनी	१७१	२६	जिवेणी	त्रिवेणी
६३	४	नाहत	न्हावत	१७२	३	नहि अधन	नाहीं अध-
६३	२५	कोय	लोय	१७८	९	राणै	राण
६३	३३	डोली	झंखर	१८१	८	निर्मल	विमल
०	०	पसवा	पशुवा	१८२	१०	सेव	सेवा
		रोवै	रोवै	१८२	१६	ग्रह	गेह
		तिविर	तिविर	१८४	२	सुणौ	सुनिहौ
		वावरा	वावरा	१९१	२८-२९	दारुण	दाक्षण
		।मास	।मास	१९२	२७	दारुण	दाक्षण
		।नी	।नी	१९२	३०	जाय	आय

श्रीरामलेह धर्मप्रकाश ग्रंथका शुद्धिपत्र ।



पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	९	क्रिया	क्रियाजु	१३१	३	विन्दु	विन्दू
३	१२	आपने	अपने	१३३	१२	हिन्दु	हिन्दू
१०	१२	अवनीपति	अवनीपती	१३८	२०	दशम	दशामे
१३	१०	यौं	ऐसे	१३८	२८	दशम	दशमो
१५	१७	नहि	न	१३९	४	कसी	तव कसी
१५	२०	तनमनधन	तन धन	१३९	१३	की देखै	देखै
१६	२९	साधुहम	साधु	१४२	१५	अज	अजयो
१९	१२	मरुधर	मरुधर	१४२	२५	मूर्ख	मुइ
१९	१९	नब	तब	१४३	६	आप	आपा
२०	२२	मरुधर	मरुधर	१४४	५	हे	होंए
२१	३१	वरपायो	वरपावो	१४४	८	बाहिरो	बाहिरी
२३	२५	सारगी	सारगो	१४४	२०	रय	रया
२४	१	अधू	अधू	१५५	चौकड़ा	अर्थात् लोहेकी काटेदार लगाम	
२९	हेडिंग	परचीसार	परिचय	१५६	साहि	अर्थात् पकड़ना	
३१	२०	मुरधरा	मरुधरा	१५८	४	जल लान	जलकरलान
३३	१८	मुरधर	मरुधर	१५८	१३	तुमारि	तुम्हारि
३३	२८	सब	सद	१६१	२२	रामदास	रामादास
३३	३२	निरधारा	निर्धाराके	१६८	१	भाय	भौय
३५	१६	उतम	उत्तम	१६८	४	धिरकार	धिकार
३६	६	सकेविस्तार	सक विस्तार	१७०	१६	पिलाया	मिलाया
४१-४३	हेडिंग	परचीसार	परिचय	१७१	२६	जिवेणी	त्रिवेणी
६३-६९	हेडिंग	परचै	चेतावनी	१७२	३	नहि अधन	नाहीं अध-
६३	४	नाहत	न्हावत	१७८	९	राणै	राण
६३	२५	कोय	लोय	१८१	८	निर्मल	विमल
६७	३२	डोली	झखर	१८२	१०	सेव	सेवा
६८	१०	पसवा	पशुवा	१८२	१६	ग्रह	गेह
६९	९	रोयज	रोवै	१८४	२	सुणौ	सुनिहौ
७१	१३	तिमिर	तिविर	१९१	२८-२९	दारुण	दाज्ञण
७४	१४	बावरा	बावरा	१९२	२७	दारुण	दाज्ञण
७७	१	अहवास	आभास	१९२	३०	जाय	आय
८७	३३	जिदगानी	जिदगानी				

पृष्ठ	पक्षि	अनुद्ध	उद्ध	पृष्ठ	पक्षि	अनुद्ध	उद्ध
१९३	२१	दारुण	दारुण	२७७	३२	वधि	वधि जग
१९७	२३	मुरधर	मरुधर	२७८	२८	बीज	बीज
२०५	३	जिग	जग	२९३	८	जर	जन
२०६	३	परज	प्रजा	३११	२१	साधन	साधना
२२०	९	कली	कली	३१५	१४	साह	से
२२६	९	सो	शोह	३१९	२६	डाकणी	डाकणी
२२७	९	सनझदू	सनझद	३२३	१८	निरमै	निर्भय
२२७	१२	विति	रुति	३४१	२०	नही	नहिं
२२७	२८	जुरा	जरा	३४५	३	मुरधर	मरुधर
२३१	१२	जीते	जित	३५२	३१	मुरधर	मरुधर
२३२	७	अनुसार	असार	३५५	१६	मुरधर	मरुधर
२३५	५	खास	खास	३८४	१६	पशी	पशी
२५०	७	मुरधर	मरुधर	अवारादि पतादि- वानेका नोट १			
२६७	१६	सरंग	सारंग				
२६८	२१	मट	मेज	,	१३	मेला	मेख
२७३	१	धा	धा			पलाना	नागौर, पगना

१६१ पृष्ठकी विज्ञप्ति का नोट —

रीखड़ापे म तथा खैड़ापे के अन्यस्थलों में भी श्रीसिंहसमहन्तमहाराज के विराजते हुए जो बाणी पाठ होता है वह श्रीसिंहसमहन्त पाठकमालुमार ही होता है केवल श्रीपूरणदासजी महाराज श्रीअजुनदासजी महाराज तथा अपने २ टिकार्या की बाणी का पाठ विशेष होता है ।

॥ श्रीः ॥

सिंहथल खैड़ापा रामसेही थाँभायत व खालशाही रामद्वारोंका

ठिकाना पता:—



अहमदाबाद:—(गुजरात) पचमुखी हनुमानके पास (थाँ. वडलू म. की प्रशा)

अटिया—पो. पीपाड रोड (मारवाड) (थाँ. वर्तमानस्थान बोल्ल पो. पीपाड सिटी)

अंगलौर:—(गुजरात) (थाँ. ईडरकी प्रशा)

आराही:—पो. किशनगढ (राजपूताना) (खा. गूंदलीकी शा.)

आचीणा:—(मारवाड) (थाँ. वर्तमानस्थान भीनासर बीकानेर)

आसोप:—(मारवाड) (खा. शा)

आहड़ा:—पो. बालोतरा (मारवाड) (थाँ. बूडीबाडा)

आतरसूबा:—(गुजरात) (थाँ. ईडरकी प्रशा)

इंगणोद:—पो. डोडर (मालवा) (थाँ. रतलामकी शा.)

ईडर:—(गुजरात) केशरवागके सामने (थाँ.)

उदयपुर:—(मेवाड) कुम्हारोंका वास (थाँ. मोतीचौक जोधपुरकी शा.)

ऊढसर—पो. नोखा (बीकानेर) (थाँ.) श्रीनारायणदासजी महाराज भेष और अवस्थामें सवशिष्योंसे बड़े होनेके कारण मुख्य थे, गुरुदेवजी की आज्ञानुसार अपने जीवन पर्यन्त आपने अपने गुरुधाम सिंहथलको नहीं छोडा। और न अन्यत्र कोई स्थान बनाया। आपके ४७ शिष्य हुए आपके परमधाम पधारनेपर ऊढसर के मुख्य होने पर भी किसी एक को चादर नहीं उडाई गई अतएव सारेटी थाँभायतमन्तकहलाए। इनमें ८ मुख्य हुए। जिनमें ६ के ठिकाने मौजूद है। सौवतरामजी विजयरामजी सिंहथलमें रहे। यहापर सौवतराजीका एक स्थान है और विजयरामजीकी वनवाई हुई विजोलाई नामक तलाई है। (N)

ओसियाँ:—(मारवाड) (थाँ. पाँचोड़ीका आदिस्थान)

करणू—पो. खीवसर (मारवाड) (खा. दासोटीकी शा. चाखूका आदिस्थान) (S)

कापरड़ा:—(मारवाड) (थाँ. बोल्ल)

कालू—पो. लुणकरणसर (बीकानेर) (थाँ. वर्तमानस्थान श्रीडूंगरगढ) (N)

कालाउना:—पो. मिलाडा (मारवाड) (थाँ.)

किसीदेसर.—पो. भीनासर (बीकानेर) कृष्णके पास (थाँ. आचीणेकी शा)

कीतलसर:—पो. चौदारूण (मारवाड) (खा. शा.)

कुचेरा:—(मारवाड) (थाँ. नीवाज)

कूडी:—(मारवाड) (थाँ.)

केकड़ा:—(मारवाड) मालानी (थाँ. वानारावासकी शा)

कोटवन.—(वृजमण्डल) (थाँ. तीतरीकी प्रशा)

कोसाणा:—पो. पीपाड (मारवाड) ठि. सेठ धीरमल केशरीमल काँकरियाकी दुकान (खा. गुसोईसरका वर्तमानस्थान। (S) यहाँ एक और भी खा. शा. स्थान है। (S)

कोलायत—श्रीकोलायतजी पो. गजनेर (बीकानेर) श्रीरामसेही आश्रम इसमें कुल रु. २४७९५।) खर्च हुये जिनमें श्री सिंहथल समुदायकी वरफसे रु. १२२९) और श्री खैड़ापा समुदायकी तरफसे रु. ४४७) सहायताये प्राप्त हुए, बाकी—रु. २३,११०।) साधचौकसरामजीने अपने निजके लगाकर इस रामसेही आश्रमको बनवाया। जिसमें श्रीरामेश्वरदासजी महाराजकी साठ तो पहिले से ही बनी हुई थी और भी हालमें जिन्होंने उपका-

राधे कोटडिने बनबाई है उनके नाम निम्न लिखित है। नरोत्तमदासजी साधु (काख) पद्मनोदरी। खेनारामजी भवरा साधु (खेनापा) दो कोटनी। इनकी कोटडी के आगे की रोकीपर एक जल्दी कुण्डी छापारामजीने बनबाई है। रामधनजीकी धर्मपत्नी बाई पिछ्मों (बीकानेर) एक कोटडी। रेखचन्दजी (बीकानेर) एक कोटडी। रामगोपाळजीकी धर्मपत्नी बाई बाँरु (बीकानेर) एक कोटडी। रामचन्द्रजी (बीकानेर) एक कोटडी। सूरजमलजी की धर्मपत्नी बाई बाउला (बीकानेर) दो कोटनी। सेठ जगरूपदासजी रामधनदासजी (निहथळ) एक कोटनी। सेठ जगन्नाथजी करणीदानजी (नागौर) एक कोटडी। मपरानजी धर्मपत्नी बाई पाबा (बीकानेर) एक कोटडी।

कटाडिया -(मारवाड़) (हाँ)

राजवाना -(मारवाड़) (छा था) (8)

खराखू -(गुजरात) (छा सावली था)

खवासपुरा -पो गोठन (मारवाड़) (हाँ)

खारिया -भादावतोडा (मारवाड़) (हाँ नीवाजनी था)

खौगाटा -पो जमद (मारवाड़) भाखरीपर (हाँ बडल मनीरामजीम पी था) भा खरीपरके छापावा यहीं पर एक स्थान ग्राममें और है उसका वर्तमानस्थान की समान है।

खीचद -पा फलोपीहनुमत (मारवाड़) (छा पोवरणी था)

खीचसर -(मारवाड़) (छा)

खेजडका -पो पीपाइ सिटी (मारवाड़) (हाँ वर्तमानस्थान है। इसका आदिस्थान पीपावमें है)

खैदापा -पो बडल (मारवाड़) पूज्यपद श्री१०८वी आचार्यरामधाम।

खैरा -(मारवाड़) (छा खीयाटी था)

गच्छीपुरा -पो भाखीप (मारवाड़) (छा था)

गधाखू -पो खजवाना (मारवाड़) (छा देशनोक उन्वरामजीकी था) (8)

गरीला -पो चम्बळ (माछवा) (हाँ दो यवदनी था)

गानू -(मारवाड़) (हाँ तीगरीकी था) यह रामदारा सिंहपटमहतामछाराजके भेट किया हुआ है।

गारासणी -पो भाखीप (मारवाड़) (हाँ)

गिरी -(मारवाड़) (हाँ नीवाजनी था)

गीगासर -पो देशनोक (बिकानेर) (हाँ वर्तमानस्थान बेकासर) (8)

गुसाईसरछोटा -पो नापासर (बीकानेर) (छा वर्तमानस्थान कोटाणा) (8)

गुसाईसरबड़ा -(बीकानेर) (हाँ काकरी था) (8)

गुँदली -पो सिद्धनगर (राजपुताना) (छा था)

गौतमपुरा -(माछवा) छात्रपर (हाँ रव कामरी था) इनका पकस्थान शहरमें है।

गगारका -(मारवाड़) (छा गुसाईसरकी मझा) (8)

गगाशहर (बीकानेर) नईछारन महेश रिवांवा मुहता (हाँ दीवरीनी था)

११ (हाँ भापीगेनी मझा)

चतरखेडा -पो सेवनी बनापुरा (बीसगा नगर) (छा)

खाखू -पो फलोपीहनुमत (मारवाड़) ठि सेठ हीरचन्द वरचूचन्द बरडिनेनी हुजान (छा दासोशनी था) (8)

खाखौ -(मारवाड़) (हाँ जोधपुर छरसाग रनी था)

खौचोडिया -(मारवाड़) (यहाँपर दो या भावतोंके समझारे हैं)

खिझणी -पो पीपाइसिटी (मारवाड़) (हाँ खेजडकेनी था)

खीतलवाना -पो बालोतरा (मारवाड़) (हाँ बानारावासीकी था) इसका स्थान जोधपुरवापरन की है।

छापर:-पो. तालछापर (बीकानेर) (खा. लाडण्णी शा)

जयपुर:-पुराणीवस्ती यज्ञशालावावडीके पास (खा खुद)

जालौर:- (मारवाड़) वागेश्वरमहादेवके पास (खा. वालोतराकी शा.)

जैसलसर:- (बीकानेर) (थाँ वीतरीकी शा.)

जैतारण:- (मारवाड़) त्रिपोलियामे (थाँ.)

जैतपुर:-पो. अर्जुनसर (बीकानेर) (थाँ) (N)

जोधपुर:- (मारवाड़) सरसागर खरबूजा-वावडीपर परमहसजी महाराजका रामद्वारा (थाँ.) पासहीमे इनहीका भंडारनामक एक स्थान और है।

” महरोकावासमे बुधारामजी म० का रामद्वारा (थाँ.)

” नागोरीदरवाजा मालियोंका वासमें तीजोंवाँरका रामद्वारा (थाँ) बुधा. की शा) कागेकी बारी बाहिर इनका एक स्थान और है।

” मोतीचौक (थाँ. गुस्तरामजीम का रामद्वारा कोयलका वर्तमानस्थान) कागेकी बारी बाहिर इनहीका एक स्थान और है।

” घाटीमें भूरारामजीका रामद्वारा (थाँ. मोतीचौक की शा.)

” नागोरीमालियोंके वासमें विष्णुदासजीका रामद्वारा (थाँ.)

” गोलमे वाघजीभाटकी हवेलीके पास दामोदरदासजीम का मोहिलारामद्वारा (खा. शा) इसके सामनेवाला भंडारनामकस्थानभी आपका है।

जोधपुर:-राममुहछा नागोरीदरवाजे बाहिर (खा. मोहिले रामद्वारेका है) इनही का एकस्थान राममुहछेके सामने है।

” वागरमें भावनादासजीम का रामद्वारा मोहिलेरामद्वारे की शा)। चारस्थान आपके और है जिनमे दोस्थान तो इस रामद्वारेके पास हीमें है एक फते सागरकी नहरपर और एक कागेकी बारी बाहिर है। मोहिले रामद्वारेके पास शालग्रामजीका स्थान आपकी शा।

” खालशाहीरामद्वारा जूनीमालीमेलामे (खा. खुद) महरोके वासके पासही वागरमें खुद खालशाही स्थान एक और है।

” जूनीमालीमेलामें गवैया खेतारामजी का रामद्वारा (खा शा.)।

” मेहरोका वास हरिदासजीका रामद्वारा (खा. शा.)।

” रामगढी (थाँ. मोतीचौककी शा.) रामगढीके नीचे “नोहरा” नामका स्थान इनहीका है।

” वागरमें पुरखारामजी व रामलालजी का रामद्वारा रामगढीकी शा।

” कागडी परमहसजीका रामद्वारा (खा शा.)

” फतेसागरकी नहर पर युक्तिरामजीका रामद्वारा (खा. शा)

” वारियोंके वासमें त्यागीरामजीका रामद्वारा (थाँ नीवाजकी शा)

” उदयमंदिरमें भूरारामजीका रामद्वारा (थाँ खेजडलेकी शा.)

” सोजतियेदरवाजे बाहिर चतुरदासजीका रामद्वारा (खा. सीयाटका वर्तमानस्थान है)।

” किलेके नीचे आदूरामजीका रामद्वारा (खा सीयाटकी शा)

” किलेकी घाटीमें बिनतिरामजीका रामद्वारा (थाँ डांगियासकी शा.)

” चोदभोलदरवाजे मावडियोंकी घाटीमें केवलरामजीका रामद्वारा (थाँ. सरसागरकी शा.)

१ सरसागर ठिकानेके नए परमहस गद्दी बैठते हैं. तब उनके लिए सिंहावल खड़ापा दोनो महन्तामहाराजाओंके सामने रुईदार गद्दी बिछाई जाती है गद्दीकी रीति रसम कर फिर अपनी परंपराके अनुसार नाचंदर या गुगचर्म भधवा टाटके आसनपर विराजमान होते हैं।

झाकल -पो साचोर (मारवाड़) (छा छा)
 झोटाचद -पो रीची छत्तीरिच्छा (मारवाड़) (था)
 टीमलाकला -पो राधरिया सहसील छीकनी
 बनापुर डिला होशगाबाद (गर्हवाणा)
 (छा सु)

झोंगास -पो नेइतासिदी (मारवाड़) (छा
 छा) (४)

झोंगियास -पो बीसलपुर (मारवाड़) (थों)

झामडिशा -पो छत्तीरिच्छा (था रनलाम
 की छा)

झीघाडी - (मारवाड़) (छा बीसलपुरकी छा)

झीराकम्प - (गुजरात) (छा छा)

झूगरगढ -भीरुगरगढ - (बीकानेर) काळ
 के बासम (था धालुजा बरमान
 स्थान) (५)

” निगके बासम जमारामजीका रामदास
 (था काळुजी छा) (४)

” गगारामजीका रामदास (थों या
 छत्ती छा) (४)

झूमथ - (गुजरात) (थों ईडरकी प्रथा)

झोबा - (गुजरात) (छा काङ्गूरी प्रथा)

झाबा -पो मेइझारोड (मारवाड़) (थों
 बहल मनीरामजी म० की प्रथा)

झलवाडा - (मारवाड़) (था समुद्रकी छा)

झीरैरी -पो नागोर (मारवाड़) रामन्या
 लजी बालमुकुन्दजी सारङ्गरी दुवान (थों)

झाणा - (मारवाड़) (छा छा)

झडीया -पो बीकानेर (बीकानेर) (छा
 बीकानेर डुरगन्मजीकी छा)

झासोडी - (बीकानेर) (छा बरमान नेल
 का आदिस्थान) (४)

झाचोट - (बरमण्डल) थों बीकानेरी प्रथा)

झाचोट - (मेवाड़) (थों नीवाजकी छा)

देवातडा -पो पीपाङ्गरोड (मारवाड़) (था)

देवरिया - (मारवाड़) थों बहल मनारामजी
 म की प्रथा)

देवली -पो चणवल (मारवाड़) (थों
 यमुनागरी छा)

देवणोक - (बीकानेर) नए रूपके पास
 दानरामजीका रामदास (छा छा)

” सीपावठाके बासम उदयरामजीका
 रामदास (छा छा) (४)

” महनूबाका रामदास (छा
 उदयरामजीकी छा) (४)

” बाघोलास्तलापर परमहसजीम की
 गुहा (थों श्रीभीगेरी छा)

” दूगनेके बासमें उक्त परमहसजी
 महाराजका स्थान एक और है।

दहली -नीलका बट्टा राममसादजीका
 रामदास (थों बीकानेरी छा)

” सङ्गीमरीकेरास नेवलरामजीका
 रामदास (राममसादजीकी छा)

धमासिया -पो पीपाङ्गसिदी (मारवाड़)
 (छा पीपाङ्गमुगलरामजी म० की छा)

धुंताका मजळ - (मारवाड़) (थों पौचो
 बीरी छा)

मसीराबाद - (राजपुताना) (थों)

नापासर - (बीकानेर) राजपुतानेके बासम
 जाळारामजीकी क्षापी (छा छा) (४)

नागोर - (मारवाड़) बसतसागलाजानपर
 जमनादासजीकी बर्तीची (छा छा)

नीबोड - (मारवाड़) (छा पीपाङ्ग तेजरा
 मजी म० छा)

नीबेडा - (मारवाड़) (थों नीवाजकी छा)

नीबोज - (मारवाड़) (थों)

पलाना - (बीकानेर) (था) (४)

पछाना -पो भावरी (मेवाड़) (छा छी
 वाटकी छा)

पाटी - (मारवाड़) केरलादरवाजा (था)
 यहापर इनका एक औरनी स्थान है।

” (थों भावत नीवाजकाभी यहापर
 एकस्थान है)

पाकडी - (मारवाड़) (छा बीतलसरकी छा)

१ वांता थों भावत ठिकानेमें से छनी
 नौकिया चेंबरआति मयलकाजमाके एक
 “सुपथ” नामक जाला निकली है।

१ नीवाज थों भावत ठिकानेमें से छनी वां
 निया नखसीस किया हुआ है।

- पालडी:-मेड़तियारी (मारवाड़) (थां. ख-
वासपुरेकी शा.)
- पालडी:-जोधारी पो. खजवाना (मारवाड़)
(था. वडल मनीरामजी म० की प्रशा.)
- पादरू:- (मेवाड़) (खा. वालोतरेकी शा.)
- पाँचोडी:-पो. सीवसर (मारवाड़) ठि. रा-
मधनजी फूसमलजी मित्रीकी दुकान (थां.)
- पिसांगण:- (अजमेर राजपुताना) (थां
नीवाजकी शा.)
- पीपाडसिटी:- (मारवाड़) राठोलाई तलाईपर
मुगतारामजीम० का रामद्वारा (खा शा.)
- ॥ राठोलाई तलाईकेपास भक्तिराम-
जीम का नयारामद्वारा (खा शा.
इनका आदि स्थान कोशाणाकी वा-
डियामें है)
- ॥ राठोलाईतलाईके पासही वाईयोका
रामद्वारा (खा. शा.)
- ॥ इसके पासका रामद्वारा (खा. शा.)
- पुनाहना:- (वृजमण्डल) (थां. तीतरीकी प्रशा.)
- पुष्कर:- (राजपुताना) (थां. वडल मनीरा-
मजीम की प्रशा.)
- पूढोली:-पो. चन्देरी (मेवाड़) (खा. वा-
लोतरेकी शा.)
- पूजल:- (मारवाड़) (खा. पीपाड़ तेजराम-
जी म० प्रशा.)
- पोकरण:- (मारवाड़) यकोंकी पिरोल (खा.
शा.)
- पंचेवा:-पो. पीपलोदा (मालवा) (थां.
रतलामकी शा.)
- प्रतापनगर:- (चक १ यू) पो. केसरीसिंह-
पुर (वीकानेर) (खा. खुद.) (S)
- प्रान्तीज:- (गुजरात) बोकमें मुत्तरामजी म०
की वाली (था. ईडरकी प्रशा.) इनका एक
रामद्वारा कुम्हारवाडामें भी है।
- फलोधी:-मेड़तारोड (मारवाड़) (थां. कूडी-
की शा.)
- फलोधी:-इकूमत (मारवाड़) (खा. जोध-
पुर भावनादासजी म. का स्थान है।)
- फागलिया:- (मारवाड़) (खा. जालककी प्रशा.)
- फुलेरा:- (जयपुर) स्टेशनके पास रामद्वारा-
(खा. मैदसरकी शा.) (S)
- वडल:- (मारवाड़) यहापर दो धाँभयतो
के दो स्थान हैं।
- ॥ तलाईकी पालपर एकस्थान (खा.
खुद है)
- वडौडा:- (अमरावती) शुद्धेश्वरकेपास (था.
कूडीकी प्रशा.)
- वलौदा:-पो. जैतारण (मारवाड़) (थां.
जैतारणकी शा.)
- वडसारा:-पो. वरणा (गुजरात) (खा.
जोधपुर माहिलेरामद्वारेकी शा.)
- वडौदा:-पो. नामडीचौक (गुजरात) कुम्हा-
रवाडा (था. ईडरकी शा.) यहाँपर चार
स्थान इनके ओर हैं।
- वरसीसर:-पो. पलाना (वीकानेर) (थां.
ऊडसरकी शा.) (N)
- वानारावास:-पो. आसोप (मारवाड़) (थां.)
- वारणी:- (मारवाड़) (थां. वीयलकी शा.)
- वाजोली:-पो. पिसांगण (मारवाड़) (खा.
मैदसरकी शा.) (S)
- वावडी:-पो. गाधानी (मारवाड़) (खा.
खुद)
- वालोतर:- (मारवाड़) नयावास (खा. शा.)
- वाले:- (मारवाड़) (थां. वीयलकी शा.)
- वामटसर:-पो. सरपुरा (वीकानेर) (था.
कालका आदिस्थान हैं) (N)
- वासणी:-गाडेयारी पो. नागोर (मारवाड़)
(था. तीतरीकी शा.)
- वासणी:-ताड़ारी (मारवाड़) (थां. वडल-
मनीरामजी म० प्रशा.)
- वाघरासर:- (मारवाड़) (थां. तीतरीकी प्रशा.)
- वारौदा:- (मारवाड़) (थां. वडल मनीराम-
जीम० की शा.) यहाँपर थां. खवास-
पुरे का भी एकस्थान है।
- वालीसर:- (मारवाड़) (थां.) यहाँपर थां
भायत टॉगियासकी शाखाके दो स्थान
और हैं।
- वीदासर:- (वीकानेर) चौतीने कूपकेपास
(खा. लाडणीकी शा.)

धीदासर - भगवत्पात्रिका मुद्रिता (धौं वीतली)

धीसलपुर - (मारवाड़) (खा)

धीसनगर - (गुजरात) गोविन्दनकला भी
रामजी महाराजका रामदारा (धौं
बड़ल मनीरामजी म० की शा)

" धनेरोमें रामदारा (धौं जोधपुर
परसागरजी शा)

धीकानेर - ब्रह्मरामदारा (खा सुद) पासही
सामने भंडार नामकस्थान आपका एक
और है। गिनानीपर धावडीमालि
बोके दासर्म एक आपकी बगीची है।
दुगर मोमोरियल बाजेजके पास रा
मलेहीआश्रमभी आपहीवा है। (४)

" धुधाराजी बड़ीगवाड़ रूपदासजीका
रामदारा (धौं)

" " कासारामजीका रामदारा
(खा रामसरजी शा)

" " सुलरामजीका रामदारा
(खा देगुणोक प तरण
दासजी म० का है)।

" भाचारजीकी भादीक नीचे चरण
दासजीका रामदारा (खा डुरगरा
सनी का है)

" जेठकेपास ईश्वरदासजीका रामदारा
(धा ऊसरका है) (५)

" नरकुपकेपास साधुसभा नामका
रामदारा (खालाही शुभोत्तरके
आश्वारामजी का बनाया हुआ है सि
इयल खसपा भेसमें पाठशाळा छो
छनेके पिय मोह खास स्थान न
होने के कारण आश्वारामजीने आप
का बनाया हुआ उक्त "साधुसभा"
नामका स्थान बाछे पाठशाळाके
सुपरि कर नवद रुपये ८८०)
तथा अपनी कुलपुस्तके बर्तन दासन

कपडे आदि सब सामानसे सहायता
देकर इस "रामलेहीसकृतपाठ
शाळा" की आपने सबसे प्रथम
नींव डाली।

धीकानेर - मुद्रिता गूबरान वैष बाळकदासजी
का रामदारा (खा रामसरजी प्रशा)

" नयाशहर बागके मुद्रितामें आत्माराम
जीका रामदारा धा भाचीनेजी प्रशा

" जलके कूपके पास बड़ददासजीका
रामदारा (खा शा) (४)

धीकूँडोर - पो आसोप (मारवाड़) (धौं
बानारवास्तकी शा)

धीजापुर - (गुजरात) (धौं इंदरी शा)

धीडी - (छानेरी) गुडवानजी दरबाना मुख
रामदासजीका रामदारा (खा शा) (४)

धीडीवाडा - पो बाछेदेरा (मारवाड़) (धा)

धीडासर - पो नापासर (धीकानेर) (धौं)
गीगासरका बरमान (स्थान) (४)

धीडावड - (मारवाड़) (धौं)

धीदल - पो धीपासिंदी (मारवाड़) (धा
जोधपुर मोडीचौकरा आदिस्थान) और
(धौं अर्धवार बरमानस्थानभी यहीपर है)

धीदावर - (राजपुताना) चांगदरबाजा (भारती
भवन) (धौं नीबाजका बरमान स्थान)

धीदारेज - नावडनेर (मारवाड़ माछानी)
(खा शा)

धीदावतिया - (मारवाड़) (धा नीबाज)

धीदोरा - पो देनाकरा (धीकानेर) (खा
शा) (४)

धीदू - पो निवरी (मारवाड़) (धौं जोध
पुर परसागरजी शा)

धीदामडा - (मालवा) (धा धोडावकी शा)

धीधी - (मारवाड़) (धौं धोडकी प्रशा)

धीडीका - पो ईदर (गुजरात) (धा हद
ररी शा)

धीनासर - (धीकानेर) धनुमानजी के मन्त्रिके
पास छठीरामजीका रामदारा (धा
भाचीनेका बरमानस्थान)

१ धीसनगर धीरामजी महाराजके स्थिते
भीतिहयल धीपैत्रपा दोनो महन्ता महारा
जाओकी तरफसे गद्दी बगनी हुई है।

१ भारती भवन धौंवा सरस्वती (वाणी)
भवन न कि दशनाथी भवन।

भीनासारः—सारङ्गोंके वासमे लाखारामजीका रामद्वारा (खा. दासोडी) (S)
भेलू—(बीकानेर) पो. फलोधीदकूमत(मारवाड़)ठि.सेठ चोधमल सूरजमल वरडियेकी हवेली (खा. दासोडीकी शा.) दासोडी स्थानापीश कन्तीरामजी म. यहीपर निवास करते हैं । (S)
भैसवाडाः—(मारवाड़) (थाँ नीवाजकी शा)
मकलौः—पो. झारड़ा स्टेशन महेंदपुर (मालवा) (थाँ.)
मथाणियाः—(मारवाड़) (खा.)
मथुरा—वृन्दावननरवाजा मुहल्लाकागदियोंका (यू पी.) (था तीतरीकी प्रशा.)
मरोलीः—(वृजमङ्गल) (था. तीतरीकी प्रशा)
मादलियाः—(मारवाड़) (खा. पीपाड़ तेज-रामजी म० शा)
मालासः—(मारवाड़) (खा पीपाड़तेजरा-मजी म० प्र शा.)
मूँधियाड़ः—(मारवाड़) (खा. शा)
मूँडवा—(मारवाड़) लाखोलाव तलावकी पालपर (खा खुद) (S)
 ,, वागके पास मल्लकदासजीका राम-द्वारा (थाँ तीतरीकी प्रशा)
मैदसरः—पो सूरपुरा (बीकानेर) (खा. शा) (S)
 ,, एकस्थान (थाँ तीतरीकी शाखाका है ।
मंडला—(मेवाड़) (थाँ जोधपुर सरसागरकी शा.)
रतनगढः—पो. (बीकानेर) शीतलाके मढके पास (थाँ तीतरीकी प्रशा)
 ,, गढकी सफीलके पास रूपदासजीका रामद्वारा (खा. देशणोक पीराराम-जी म की शा) (S)
 ,, पीजराथिरोलके पास (खा. लाड-पूकी शा)
रतलामः—(मालवा) युरोहितजीकावास (था.)

१ रतलाम थाँभायत ठिकानेकी बाँकिया छपी और महन्त पदवी बखसी हुई है ।

रतकूडियाः—(मारवाड़) (खा. गुप्तोईसर-की शा.) (S)
रणोगामः—(मारवाड़) (थाँ. नीवाजकी शा.)
राजलदेसरः—(बीकानेर) सेवगोंके मुहल्लेमें (थाँ तीतरीकी शा)
 ,, इनके पासही (थाँ. तीतरीकी दो शाखाएँ और हैं) ।
 ,, यहीपर झूँथारामजीका एक स्थान है (देश. खा पीरा. शा.) (S)
रायपुरः—(मारवाड़) (थाँ. नीवाजकी शा.)
रासीसर—पो. देशणोक (बीकानेर) (खा. शा) (S)
रायमलाला—(मारवाड़) (थाँ.)
रामसरः—(बीकानेर) (खा शा (यहाँपर हिमतरामजीकी शोपडी था मकलौके-शाखाकी है)
रौंधेलः—(गुजरात) (था ईंदरकी प्र. शा.)
लाडणूः—(मारवाड़) कुन्धारोंका वास (खा. सीयानेका वर्तमान स्थान) यहींपर राम-मुहल्ला नामका स्थान भी इन्दीका है ।
लालमदेसरः—(बीकानेर) (थाँ) (S)
शिवकरः—पो बायडनेर (मारवाड़) (खा. सियाटकी शा)
शिवगज छावनी—(दक्षिण) (खा सिया-टकी शा)
शीलवाः—(मारवाड़) (थाँ. चोयलकी शा) ।
सरदारशहरः—(बीकानेर) (थाँ तीतरी-की शा)
समंदसरः—(बीकानेर) (थाँ)
समदड़ी—(मारवाड़) (था.)
सवराड़ः—(मारवाड़) (था नीवाजकी शा.)
सवालिया—(मारवाड़) (खा. देशणोक पीरारामजी म० की शा) (S)
सरसी—पो. नामली (मालवा) (थाँ. रत-लामकी शा.)
साचोर—(मारवाड़) (खा शा)
सामसर—(मारवाड़) खा शा)
सारुँदा—(बीकानेर) (खा. शा.)

साथीणः—ये पीपाकतिदी (मारवाड़) (धों वल्ल मनीरामजी म० शा)

॥ बाह्याका रामदास (छा गुर्छाई सरजीशा) (७)

सिणली—(मारवाड़) (या समुद्रदीदी शा)

सिणिमाका—(मारवाड़ मालानी) (धों वा लुदी शा) (४)

सिरोही—(राजपुताना) रजनवाके धामने (छा शा)

सिंहधल—ये नापासर (बीकानेर) पून्य पाद श्री १०८ श्रीपादबाबावोंका रामधाम।

सियाणा—(बीकानेर) (छा लाङ्गना आदिसान)

सियाट—(मारवाड़) (छा जोधपुर सो जलिये दरवानेवाले रामदासेवा आदिसान)

सुजानगड—(बीकानेर) (छा लाङ्गनी शा)

सूरतगड—(बीकानेर) नईमकीमें (धों कावली शा) (४)

सूरत—(गुजरात) जहाजारी (धों इर रवी प्रशा)

॥ लाडरवावा मोदीसेरी (छा जो धपुर माहिळे रामदासेवी प्रशा)

॥ योडवाक मधुरपुर जहाजमकीवा रामदास (छा जोधपुर माहिळे रामदासेकी प्रशा)

सूडसर—(बीकानेर) (धा) (४)

सोजत—(मारवाड़) दुम्हारका बास (छा पीपाक जघोतरामजी म० की शा)

सौखेडा—(माळवा) (धों रतलामकी शा)

ससारदेसर—(बावानेर) (छा शा) (७)

इसनपुर—(यू पी) (या वीतरीवी प्रशा)

हनुमानगड—(बीकानेर) (छा शा) (७)

डुरवा—(नेवाड़) (धा नीवाजकी शा)

नोट—सिंहधल चौड़ापा मेला में मेला महोत्सव आदिके लिय परम्परा से "धलवटम मण्डल" और "मारवाड़मण्डल" दो मण्डल माने गये हैं, धलवटमण्डल में मेला करनेवाले निम्नलिखित ठिकानों को पत्रिका दिया करते हैं, और मारवाड़ मण्डल में मेला करनेवाले धलवट मण्डल के ठिकानोंको छोड़कर शेषको पत्रिका दिया करते हैं। यह साधारण मेले कहलाते हैं और जिनमें दोनों मण्डलों को पत्रिका दी जाती है वे असाधारण मेले अथवा महामहोत्सव कहलाते हैं। इनके सिवाय जो सिंहधल चैत्रपक्ष के दोनों महान् महाराज को न पधराकर अपने ही ठिकाने के महत्त को पंचपक्षीस साधुओं के साथ दुकाकर चढ़र पिछोही देते हैं वह जिसनाम से पुकारा जाता है वह अनिश्चित है। श्रीसिंहधल चैत्रके मेलेपर अथवा श्रीछापा होलीफूलछोलेपर जो मंज करना चाह उसको मण्डलमें पत्रिका देनेकी कोई विशेष आवश्यकता नहीं रखीगई है। धलवट मण्डलके ठिकानों के नाम—जूसर, नरण, काठ, निसीदेसर, बीलायत, गीगासर गुसईसर छोट, गुंछाईसर बहा, गगाशहर (सबठिकाने) भाख, छपर, जैसलसर, डूगरगड (सबठिकाने) वीतरी दहीरा, दासोही, देशनोक (सबठिकाने), नापासर पलना, पाचोही, मत्तापनगर (दिवि जन् श्रीगमानगर बीकानेर) बरसीसर, बामटसर वागरासर, बीदासर (सबठिकाने), बीकानेर (सबठिकाने), बेडासर, बागेरा, भीनासर (सबठिकाने), मेह, मंससर (सब ठिकाने), रजनगर (सबठिकाने), राजलदेसर (सबठिकाने), रानीसर, रामसर, ला डूँ, लाडमदेसर, बीलवा, सरदारशहर, सारुंग, सियाणा, सुजानगर, सूरतगड, सूसर, ससारदेसर, हनुमानगर।

आपका,

रामनारायण।

